॥ अथ भगवती सूत्र पंचमाङ्ग प्रारम्भ ॥

॥ विज्ञापनम् ॥

इस अनादि अनत ससार मे अनादि काल से बारबार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि मे रहा, किसी एक अशुभ कर्मकी लघुता से जैसे पहाडी नदी मे पत्थर गुडते गुडते आपसे चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावर पणे को छोड त्रसपने बेइन्द्रियादिक में उपजता है, अथवा पंचेन्द्रियतिर्यचयोनि मे, फेर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि मे पैदा होता है, उसमे भी शक यवन म्लेच्छ देशको छोड आर्य मगधादि जो साढे पचीस देश हैं उनमे जन्म होना—आर्यदेश मे जन्म होने पर भी अन्त्यजादि जाति को छोड उत्तम जाति और कुल मे जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना—शरीर के सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म के बढजाने से होते हैं, ंधी वा परलोकसबंधी काम कुछ कर सक्ता है, इसी कारण भग आयुवाले) गौतम ऐसा कहके आयुको सब गुणो से बडा दिख और शुभकमके उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने

सुनना मिलजाने पर भी देव गुरु धर्म रूप तत्व पर सच्ची श्रद्धा होना य
... पर सच्ची श्रद्धा होना यही सम्यक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों को भी होता
...म के कम होजाने और शुभकर्म के बढने से जीवको मिलते हैं, इस हेतु अशुभकर्म
का ... और शुभकर्म के बढने मे यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभको बढाने के लिये धर्मके सेवाय और कोई भी यत्न नही है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्मके वास्ते भी परिश्रम करते रहो, कारण की धर्मी (धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इन्द्र आदि देवता भी केवल प्रशंसा, अनुमोदना और भक्ति करके अपना जन्म सफल करते हैं, इतनी ऋद्धि पाके भी उनको धर्मका सेवन दुर्लभ है, और भी धर्मी को त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चिंतामणि और कामधेनु आप से दास हो मिलते हैं, तो पुत्र, कलत्र, घर, सवारी और राज्य मिलजाना क्या बड़ी चीज है, धर्म साधन करनेवालेका दो घडी का जीना भी सफल और कार्य कारक है, परंतु धर्म हीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गम्य, अगम्य, भक्ष्य, औ भक्ष्य इत्यादि विचार रहित) का कोटी कोटी वर्ष जीना भी निष्फल औ अकिंचित्कर है, पशुवत अपना आयु पूर्ण कर मरता है, इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला, सकल कल्याण और सुगति का कारण, भवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थंकरो का कहा हुआ केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया "विना मतलब पराये

दुख को दूर करने की इच्छा,, है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते हैं, इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है । जैन दर्शन मे दया के अनेक "स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया निश्चयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबंधदया,, भेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्व दर्शनी दया का उपयोग रखते है परन्तु सर्वांशों दया का उपयोग तो जैन दर्शन ही मे स्वीकार है इसवास्ते जैन मत श्रेष्ठ भी कहाता है, दयाके सर्वांश उपयोग होनेकी रीति यह है कि जैसे भोजन के वास्ते कोई एक पक्वान्न बनाया जाय तो घृत पिष्ट चीनी इत्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होने पर भी यथाविधि यथार्थ एकठा होने से तथाविध स्वादिष्ट पक्वान्न तयार होता है परन्तु हीनाधिकवस्तु हो जाने से कदापि वैसा पक्वान्न नही होता तैसेही यथाविधि दया पालीजाय तो तथाविध धर्मोपलब्धि होय यद्यपि सर्व दर्शनों मे दयाका मान है परन्तु उस के स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर वृथा) है, जब के उसका स्वरूपही शास्त्रानुसार यथार्थ नही जानशक्ते हैं तो पालन करना कैसे हो शके, फेरफार ऐसा के—कोई कहते हैं पशुप्राण
दया है, कोई जिस शरीर को धारण करके जीव सुखी न होय प्रत्युत
होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकरदेना भी दया ही है,
को दुख देते हैं उनका नाश करना दया है, कोई बलि यागादिक
र कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दया कहते हैं, इस तरह दया

ऽकिन यह भ्रम हैं, और एकरीत से—आचारधर्म दयाधर्म क्रियाधर्म और
धर्म होता है,_इन चारो धर्मो के दान शील तप और भाव चार कारण हैं,
दान होय, मनबल होय तो शील पाला जाय, शरीर बल होय तो तप होय, और
२ ,यि ना भाव होय, यह भावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के भावधर्म का कारण ज्ञा
1 नबल है "जिस्से वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते हैं,, ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि
और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नही, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारों अनुयोग
का विचार, सप्तभगी, षट्द्रव्यविचार, आदिक सब ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त होते हैं। दशवैकालिक
में लिखा है के—ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्लेशरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दासी है, और मरुदेवी
तथा भरत महाराज वैसी अवस्यामे भी रहके जो कर्म विमुक्त हुए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो
तीव्रता सो ही अथवचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि करनेसे भी नष्ट नहीं होता
वह ज्ञानी के एकस्वासोत्स्वास में नष्ट होशक्ता है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर और क्रियागुरु को पीपल के
पान जैसा कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिंसा और सिद्धान्तोक्त समस्तक्रिया का मूल श्रद्धा नही होते
इस कारण ज्ञानोपार्जन के लिये अवश्य यत्न करना चाहिए ज्ञानके पाच भेद—मति श्रुत अवधि मनप
र्यव और केवल हैं परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र लोकालोक स्वमत

परमत का प्रकाशक अज्ञानतिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुस्समकालरूप रात्री में दीप सदृश है, उद्देश समुद्देश आज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धान की प्राप्ति होती है इस्से शुद्धात्माका आचरण आसेवन अनुभवन होता है और इस्से परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार से मुक्त हुए वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र से विरहमान जिनेन्द्रो से सुनके जीव मुक्त होते है, आगामिकालमें पद्मनाम आदि तीर्थंकरोसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छाना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीठयाई सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है—आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदिनी और सवेदिनी, जिस्से तत्व माग मे प्रवृत्ति होय उस्को आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति होय उस्को विक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उस्को निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय उस्को सवेदिनी कहते हैं यह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री अरिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमें बैठ "उप्पन्नेइवा विगमेइवा धुवेइवा,, त्रिपदी
ᅳपदी से ही गणधर द्वादशाग की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं)
ᅳान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इस्की वृद्धि और
ये वर्तमान कालमे जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय है सब से उत्कृष्ट मु
नवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति को स्वीकार करना जो

।पकार के हेतु ग्रंथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोंको और कोई श्रेष्ठ कार्य नही है, यही सब कारण सोंच श्रीमुर्शिदाबाद निवासी श्रीराय धन ़ुर ने ४५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इस्के क ़ । प्रवृत्त होंय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

बनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका।

श्रीभगवती नामक पंचम अङ्गका अनुयोग समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्गानुयोग के अनन्तर क्रमसे प्राप्त हुआ है। विवाहपण्णत्ति पंचम अंगानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भावशत्रुओं की सेना के दलन करनेसे तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक निसवाद रहित वचन होने से त्रिभुवन रूप घरके आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यशकी राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम करुणावन्त श्रमण भगवन्त श्रीमहावीर वर्द्धमानस्वामि चौबीसमें तीर्थंकर महाराजने जैसा कहा उनके पांचवे

गणधर श्राय सुधमास्वामी ने श्रीश्रमणसघ और अपनी सन्तति के लिए सूत्ररूप से सङ्कलित किया है।

तहां अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मगल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिद्वारो के निरूपण करने से होती है।

तहा पहले बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति होने के लिये फल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कटक शाखा मदन की तरह कोइ भी इस्मे प्रवृत्त न होगा, फल दो प्रकार है—प्रथम अथ का अवगम (ज्ञान) है इस्को अनन्तर फल कहत हैं, दूसरा अर्थावगम होने के बाद तत्पूवक अनुष्ठान से मोक्ष प्राप्ति, यह परम्पर फल कहाता है।

योग अर्थात् सम्बन्ध, यह कई प्रकार का होता है परन्तु इहा कौन इस्के देनेका काल और कौन इस्के देने के योग्य है ऐसा अवसर लक्षण सम्बध जानना चाहिये।

मङ्गल जो विघ्न निवृत्ति के हतु ग्रथ के आदि मध्य और अंत मे किया जाता है।

[illegible] समुदायार्थ यह है कि—अभिविधि करके कथचित्समस्तज्ञेयव्याप्ति अथवा मर्यादा अनेक पदार्थों का जुदे जुदे लक्षणो से कहना सो व्याख्या वही सुधर्मा [illegible] सो इस ग्रथमे कही है, अथवा विशेष तया जीव अजीव आदि [illegible] कही है, अथवा व्याख्यान का प्रकृष्ट ज्ञान इस ग्रथमे है, तथा

प्राप्ति इस ग्रथमे होने और विशिष्टनयप्रवाह स्पष्टप्रवाह इस ग्रथ मे कहने

जैसा नाम इसका हुआ। भगवती, व्याख्या प्रज्ञप्ति, यह पर्याय हैं।

यथार्थ (जैसा प्रदीप) अयथार्थ (जैसा पलाश) अर्थशून्य (जैसा डित्थ) भेद से त्रिधा होता है परन्तु शास्त्र का नाम यथार्थ ही होना चाहिये क्योंकि समुदायार्थ की समाप्ति वहाँइ होती है।

व्याख्या प्रज्ञप्ति यह नाम स्थापना द्रव्य क्षेत्रादि भेद स १५ प्रकार का होता है सो स्थानाग के समान इहाँभी जानना, व्याख्याप्रज्ञप्ति इहा अङ्ग का निक्षप क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अग की तरह अग होने से हुआ है इसलिए व्याख्याप्रज्ञप्ति अग ऐसा नाम हुआ। यद्यपि अग निक्षेप नाम स्थापना द्रव्य और भाव भेदसे चार तरहका होता है तथापि इहा केवल भावागहीका अधिकार है क्योंकि यह ग्रथ क्षायोपशमिकादि भाव का कारण है।

इस व्याख्या प्रज्ञप्ति पचम अङ्ग का तात्पर्य शीघ्र जानने के लिए उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्र का अर्थ म सबन्ध अथवा सूत्र का अर्थ प्रतिपादनरूप अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपणरूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारो जैसे नगर मे सुख से प्रवेश करने को चार द्वार होते हैं तेसे इस प्रवचन में प्रवेश करने को चार अनुयोगरूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं। शास्त्र को न्यासदेश के समीप करदेना सो उपक्रम लौकिक और शास्त्रीय भेद से दो प्रकार होके क्रमसे प्रत्येक नाम स्थापना

द्रव्य क्षेत्र काल भाव और आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता अर्थाधिकार और समवतार भेद से छ प्रकार है, निक्षेप अर्थात् न्यास स्थापन, ओघ नाम सूत्रालापक से तीन भेद हैं । तहां सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेप सूत्र के आलाओं का नाम ठना जैसे कि व्याख्याप्रज्ञप्ति इत्यादि । अनुगम सूत्रका स्थापनानुकूल परिच्छेद । नय अनन्तधर्मात्मक वस्तुके एक अंशका ज्ञान का कहते हैं जो उपक्रान्त नही है उसका निक्षेप नामादि नही हो सक्ता जिसका निक्षेप नही हुआ नयो से विचार भी नही होता है इसलिए इन अनुयोगद्वारो से एकश्रुत स्कन्ध, सातिरेक अध्ययनशतस्वभाव, ४२ शतक १०००० उद्देश रूप व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रकथित जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने से तत्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढने पढाने मे अवश्य यत्न करना चाहिये। परन्तु पढने का अधिकारी वही होगा जो के मोक्षमार्ग अभिलाषी गुरुका आज्ञाकारी औदीक्षालिये जिसको १५ वर्ष व्यतीत हुआ होय। व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग सूत्रदेनेका अवसर भी यही है इति शम् ।

मकसूदाबाद

अजीमगंज

राय धनपतसिंह बहादुर—

॥ विज्ञापनम् ॥

नीरज पुष्पयाः श्रीवीरदामाजिषसत्पुत्रोयधमितजातयद्यारमूनुसदीयोगुणै । स्यात श्रीलमसापसिद्धपिशयी मायासुरीयामसी नम्र तां मनामविदिताकुन्तलश्रीपादनूनू ॥ १ ॥ सद्यरकीर्तिसदारपमदृढपी सत्मीपते सोदर श्रीमद्रापयपादुरीषमपति सिद्धगुणग्रामधी । श्रीजैनागममन्दुरममकराग्राद्योपलस्थैविरम् टीकावार्तिकसपुतसुलिपिमि ममद्रूयिस्यासुमम् ॥ २ ॥ सत्वापम्यद्यतस्यसपुत्रपुमसायन्त्यधोपुस्तका गारात्पपुत्रपुम्नत्रानिमत्रनाम्नापपरमादरम् । फुत्रत्यागमपाठमप्यपठम सरसाधव मायका स्थिरचैत्रीजिनद्यासनस्यपुनर्यैर्घानधर्मद्वये ॥ ३ ॥ नागमस्यनतुमकोत्रगवतीमूत्राभिधानाधुना मामापुस्तकपाठजदपकुलीसरममादापि । दुर्योध्यःरसुपृत्तिवार्तिकधृतपाठतयामाधनं श्रीमत्पूर्बितरा मनन्दर्गावरि-त्रात्रपुष्पामपा ॥ ४ ॥ मशाप्यातिपरिममपमितरा पायवरैमुमूत स्यात्तत्रापिपविभिन्नदोषपगतोन्मादाद्यशुद्धयदि । वाग्ख्यातोप्यमुशारगुम्फिनिनवैविधि कृपादृष्टिता मिथ्यादुष्कृतमस्तुमय्यवदासम्माप्य सज्जनाम् ॥ ५ ॥

वनारस

जैनप्रभाकर

मानकचन्द्र यती

॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥ श्रीजिनाय नमः ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनन्तमसङ्गमग्र्यं सार्वीयमस्मरमनीशमनीहमिद्धम् । सिद्धं शिवं शिवकरं करणव्यपेतं श्रीमज्जिनं जितरिपुं प्रयतः प्रणौमि ॥ १ ॥ नत्वा श्रीवर्द्धमानाय श्रीमते च सुधर्मणे । सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो वाण्यै सर्वविदस्तथा ॥ २ ॥ एतट्टीकाचूर्णी जीवाजिगमादिवृत्तिलेशांश्च । संयोज्य पञ्चमाङ्गं विवृणोमि विशेषतः किञ्चित् ॥ ३ ॥ व्याख्यातं समवायाख्यं चतुर्थमङ्गम् अथावसरायातस्य विवाहपण्णत्तिरिति सञ्ज्ञितस्य पञ्चमाङ्गस्य समुन्नतजयकुञ्जरस्येव ललितपदपद्धतिप्रबुद्धजनमनोरञ्जकस्य उपसर्गनिपाताव्ययस्वरूपस्य घनोदारशब्दस्य लिङ्गविभक्तियुक्तस्य सदाख्यातस्य वज्रतवस्य देवताधिष्ठितस्य सुवर्णमणिरत्नोद्भासकस्य नानाविधाद्भुतप्रवरचरितस्य षट्त्रिंशत्प्रश्नसहस्रप्रमाणसूत्रदेहस्य चतुरनुयोगचरणस्य ज्ञानचरणनयनयुगलस्य द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकनयद्वितयदन्तमुसलस्य निश्चयव्यवहारनयसमुन्नतकुम्भद्वयस्य योगक्षेमकरयुगलस्य प्रस्तावभावकनररचनाप्रकाशकस्य शरदवस्य निगमनवचनातुच्छपुच्छस्य कालाद्यष्टप्रकारप्रवचनोपचारचारुपरिकरस्य उत्सर्गापवादवारसमुच्छलत्तुच्छघण्टायुगलघोषस्य पञ्च पदाप

दुर्मतिरवापूर्वदिग्भ्रमणवासस्य स्याद्वादविज्ञानाङ्कुशवशीकृतस्य विविधहेतुहस्तिसमूहसमन्वितस्य मिथ्यात्वाज्ञानाविरमणशत्रुरिपुबलदलनाय श्रीमन्महावीरमहाराजेन नियुक्तस्य अतिनिपुणस्यापगमायमतिप्रकल्पितस्य मुनिपोर्द्धैरनावाप्त अधिगमाय पूर्वमुनिशिल्पिकल्पितयोः चूर्णिप्रवरगुरवोऽपि
सलसाधनसमर्थयोः वृत्तिचूर्णिनामक्रियोः सदन्यथाप्य जीवाजिगमादिविविधविवरणद्वयकलेशानां सङ्घटनेन दुस्तरा
मायावरेणाविव गुरुजनवचनात्पूर्वमुनिशिल्पिकुलोत्पन्नो रसादिनोऽक्लिष्टेय वृत्ति रारभ्यत इति शास्त्रप्रस्ता
उच्यते विविधा जीवाजीवादिप्रचुरतरपदार्थविषया या आख्याविधिना कथञ्चित् निखिलज्ञेयव्याख्या नयो
स्थानानि भगवतो महावीरस्य गौतमादिविनेयान् प्रति प्रमितपदार्थप्रतिपादनानि व्याख्यास्ताः प्र
भूतानि सन्ति यस्याम् १ । अथवा विविधतया विशेषेण वा आख्यायत इति व्याख्या अजितादिपदार्थ

१। अथवा व्याख्यानां सर्वप्रतिपादनानां प्रकृष्टा प्रज्ञप्तयो ज्ञानानि यस्यां सा व्याख्याप्रज्ञप्तिः २। अथवा व्याख्याया नूतबोधस्य व्याख्यानतुरात् प्रज्ञाया आप्तिः प्राप्तिः आत्तिर्वा आदानं यस्याः सकाशात् दसौ व्याख्याप्रज्ञाप्तिः व्याख्याप्रज्ञा द्वा ८५ आ दे ४ रात्तिर्वा गणधरस्य यस्याः सा तथा ४। अथवा विवाहा विविधा विशिष्टा वा अर्थप्रवाहा नयप्रवाहा वा प्रज्ञाप्यन्ते प्रकृष्यन्ते प्रबोध्यन्ते वा यस्यां विवाहा वा विशिष्टसन्ताना विबाधा वा प्रमाणाबाधिता प्रज्ञा आप्यन्ते यस्यां विबाधा वा प्रज्ञप्तिः यथार्थप्ररूपणा विवाहप्रज्ञप्तिः विवाहप्रज्ञाप्तिः विबाधप्रज्ञप्तिः विबाधप्रज्ञाप्तिर्वा ५। इयञ्च भगवती त्यपि पूज्यत्वेनाभिधीयत इति इह व्याख्यातारः शास्त्रव्याख्यानारम्भे फलयोगमङ्गलसमुदायार्थादीनि द्वाराणि वर्णयन्ति तानि चेह व्याख्याया विशेषावश्यकादिभ्यो ऽवसेयानि शास्त्रकारास्तु विघ्नविनायकोपशमनिमित्तं विनेयजनप्रवर्त्तनाय च शिष्टजनसमयसमाचरणाय वा मङ्गलाभिधेयप्रयोजनसम्बन्धा नुदाहरन्ति तत्र च सकलकल्याणकारणतया ऽधिकृतशास्त्रस्य श्रेयोभूतत्वेन विघ्नाः सम्भवन्तीति तदुपशमनाय मङ्गलान्तरव्यपोहेन भावमङ्गल मुपादेयं मङ्गलान्तरस्या नैकान्तिकत्वा दनात्यन्तिकत्वाच्च भावमङ्गलस्य तु तद्विपरीततया ऽभिलषितार्थसाधनसमर्थत्वेन पूज्यत्वा दाह च—किंपुनरमवेगतिय भवतव्यग्गाभिशयाण । तद्विपरीयभावे तेणविसेसेणतपुज्जं ॥ १ ॥ भावमङ्गलञ्च तपःप्रभृतिभेदभिन्नत्वेनानेकविधत्वेपि परमेष्ठिपञ्चकनमस्काररूपं विशेषतो पादेयं परमेष्ठिना मङ्गलत्वलोकोत्तमत्वशरण्यत्वाभिधाना दाह च—चत्तारिमङ्गलमित्यादि ॥ तत्र नमस्कारस्य च सर्वपापप्रणाशकत्वेन सर्वविघ्नोपशमहेतुत्वा दाह च—एसपञ्चनमस्कारः सर्वपापप्पणासणो । मङ्गलाणञ्चसर्वेषां प्रथमंभवतिमङ्गलम् ॥ १ ॥ अतएवायं समस्तश्रुतस्कन्धानामा दा वुपादीयते अतएवाय तेषां मध्यन्तरतया ऽभिधीयते

पोर्वापरमाममिगम' । देवदेवजिनेनसा सुधाभ्युतरेवता । वात्तिकप्पषमासस पञ्चैवमनुसारत ॥ १ ॥ समवायनामे चोथोअंग अयो, जिने विवाहपन्नत्तीनाम पंचमांगकहोछे । ते विवाहपन्नत्ती पूंकहीये ? विविधप्रकारना नानाप्रकार जीवादिपदार्थ जीभगवांते देवें गौतमादिशिष्यने पूछ्या प्रश्नपरते तेरवमे तेविवाहपन्नत्तीकहीये पवरा विविधप्रकारना समूहपणानं प्रवाहसघनो प्रवाहरूपीये चौहनेविषे तिका विवाहपन्नत्तीकहीये वली एह भगवती

यदाह—सोमग्रसुयवसपव्रतरभूतेति ॥ अत आन्तरया दायेव परमेष्टिपञ्चकनमस्कार मुपदर्शयन्नाह ॥ नमोअरहंताणमित्यादि ॥ तत्र नमइति नैपा
तत्वं पदं द्रव्यभावसङ्कोचार्थ आह च—नवाइयपदम् द्रव्यभावसंकोचपयत्थो ॥ नमः करचरणमस्तकसुप्रणिधानरूपो नमस्कारो भवत्वित्यर्थ । केभ्यइत्या
ह अर्हद्भ्यः अमरवरविनिर्मिताशोकादिमहाप्रातिहार्यरूपा पूजा मर्हन्ती त्यर्हन्तो यदाह—अरिहंतिवंदणनम सणाणिअरिहंतिपूयसक्कार । सिद्धिगम
णंचअरहा अरहंतातेणवुच्चंति ॥ १ ॥ अत सोप्य रहस्य चतुर्थ्यर्थेपष्ठी प्राकृतशैलीवशा द्विद्यमानवा रह एकान्तरूपो देशो अन्त मध्य गिरिगुहा
दीनां सर्ववदितया समस्तवस्तुस्तोमपतप्रच्छन्नत्वस्या भावेन येषान्ते अरहोन्तरो ऽत सोप्यो ऽरहोन्तर्भ्यो ऽथवा ऽविद्यमानो रथ स्यन्दनः सकलपरि
ग्रहोपलक्षणभूतो अन्तश्च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषान्ते ऽरथान्ता अत सोप्यो ऽथवा ऽरहतामतिक्वचिद प्यासक्ति मगच्छद्भ्यः क्षीणरागत्वात् द्य
था ऽरहयद्भ्यः प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषयसम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकस्वभाव मत्यजद्भ्य इत्यर्थः अरिहंताणमितिपाठान्तरम् तत्र कर्मारिहन्त
भ्यः आह च—अठविहंपियकम्म अरिभूयंहोइसयलजीवाण । तंकम्ममरिहंता अरिहंतातेणवुच्चंति ॥ १ ॥ अरुहंताण मित्यपि पाठान्तरम् तत्र रोहद्भ्यो
ऽनुपजायमानेभ्य क्षीणकर्मबीजत्वात् आह च—दग्धेबीजेयथात्यन्तं प्रादुर्भवतिनांकुर । कर्मबीजेतथादग्धे नरोहतिभवांकुर ॥ १ ॥ नमस्कार्यता चैपा
भीमभवगहनभ्रमणभीतभूतानां मनुपमानन्दरूपपरमपदपुरपथप्रदर्शकत्वेन परमोपकारित्वादिति ॥ नमोसिद्धाणंति ॥ सितं बद्धं अष्टप्रकारं कर्मेन्धनं
ध्मातं दग्धं जाज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा अथवा षिधुगतौ इतिवचनात् सेधन्तिस्म अपुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्

॥ॐ॥ णमोअरहंताणं णमोसिद्धाणं

द्विविधपरमेष्टि नमस्कार मंगलमथैकथीयेते । नमाकशीये नमस्कार कृपा केहने? अरहंताण अरहंता अरहंतनेकाणि ते
नवाद्रिमहाप्रातिहार्यरूप पूजानेयोग्य ते अरहंत कहीये । तथा अष्टकर्मरूप वैरो हण्या ते अरिहंत । तथा
संसाररूपा वहने? सिद्धाण सिद्धनेकाणे अष्टप्रकारकर्मबंध शुक्लध्यानरूप अग्निवरो बाल्योजे ते मोक्षपहता

व्यसाधवः सव्वसाधवोवा ॥त सोव्य' ममीलोएसव्वसाहूणमितिप्राविस्याठ तत्र सर्वग्रहस्य देशसर्वतायामपि दर्शना

दर्पारि० त्यं मुच्यते लोके मनुष्यलोके नतु गच्छादौ ये सर्वसाधव तेभ्यो नमइति' एषाच नमनीयता मोक्षमार्गसाहायककरणेनो प

कारित्वात् भाहच–भसहायसहायत्त करंतिमेसंजमंकरेंतस्स । एएणकारणेणं नमामिहसव्वसाहूणंति ॥ १ ॥ ननु यद्यय संक्षेपेण नमस्कार स्तदा सि

द्धसाधूनामेव युक्त स्तद्ग्रहणे न्येषा मर्ह्यदादीना ग्रहणा यतो ऽर्हदादयो न साधुत्व व्यभिचरन्ति ? अथविस्तरेण तदा ऋषभादिव्यक्तसमुच्चारण

तो ऽसौ वाच्यःस्यादिति ? नैव यतो न साधुमात्रनमस्कारे ऽर्हदादिनमस्कारफल मवाप्यते मनुष्यमात्रनमस्कारे राजादिनमस्कारफलवदिति' कर्त

व्यो विशेषतो ऽसौ प्रतिव्यक्तितु नासौ वाच्यो ऽशक्यत्वादेवेति । ननु यथाप्रधानन्याय मङ्गीकृत्य सिद्धादि रानुपूर्वी युक्ता य सिद्धाना सर्वथा कृतक

त्यत्वेन सर्वप्रधानत्वा ? नैव मर्हदुपदेशेन सिद्धानां ज्ञायमानत्वा दर्हतामेवच तीर्थप्रवर्तनेना त्यन्तोपकारित्वा दित्यर्हदादिरेष सा' नन्वेव माचा

र्यादे सा प्राप्नोति क्वचित्काले भाचार्येभ्यः सकाशा दर्हदादीनां ज्ञायमानत्वादिति भतएव तेषामेव चात्यन्तोपकारित्वा ? नैव भाचार्याणा मुपदे

शदानसामर्थ्य मर्हदुपदेशतएव नहि स्वतन्त्रा भाचार्यादय उपदेशतो ऽर्थज्ञापकत्व प्रतिपद्यन्ते भतो ऽर्हन्तएव परमार्थेन सर्वार्थज्ञापका स्तथा ऽर्हत्प

रिषद्रूपाश्चैवा चार्यादयो ऽत सा वमरुत्याऽर्हन्नमस्कारप्रयुक्त उक्तंच–वयकोद्दयिपरिसाए पच्चमित्तापच्चमरएरस्सोत्ति ॥ एव ताव त्परमेष्ठिनो नम

स्कृत्या धुनातनजनाना मुतज्ञानस्या त्यन्तोपकारित्वा तस्यच द्रव्यभावश्रुतरूपत्वा द्भावश्रुतस्यच द्रव्यश्रुतहेतुकत्वा त्संज्ञाक्षररूपद्रव्यश्रुतनमस्कुर्वन्ना

ह ॥ नमोबंभीएलिवीएत्ति ॥ लिपिः पुस्तकादा वक्षरविन्यासः सा चाष्टादशप्रकारापि श्रीमन्नाभेयजिनेन स्वसुताया ब्राह्मीनामिकाया दर्शिता ततो

ब्राह्मी त्यभिधीयत भाहच–लेहलिवीविहाण जिणेणबंभीएदाहिणकरेण । इत्यतो ब्राह्मीति स्वरूपविशेषण लिपेरिति नन्वभिमतशास्त्रस्यैवमङ्गल

णमोबंभीएलिवीए

रइभावित्वे । नमोएलिवीए ब्राह्मीलिपिने पुस्तकादिकनेविषे भक्षरस्थापनारूप तें भठारेप्रकारे ऋषभदेवें पोतानीपुत्री ब्राह्मीने देखाडी तेमाटें ब्राह्मी

प्रतिषेधादयः

स्तारिकमङ्गलमानयग्यादिशपमासे। मर्थं किंतु शिष्यमतिमङ्गलपरिग्रहार्थं मङ्गलोपादानं शिष्टसमयपरिपालनाय चेत्युक्तमेवेति अभिधेयादयः पुनरस्य सामान्येन व्याख्याप्रज्ञप्तिरिति नामैवास्याहेति तेपुनर्नोच्यन्ते ततस्य श्रोतृप्रवृत्त्यादीष्टफलसिद्धेः तथापि इह भगवता ऽर्थव्याख्याभिधेय तयोक्ता सामान्य प्रज्ञापना बोधोवा ऽनन्तरफल परम्पराफलस्तु मोक्षः तथा स्या प्रवचनस्यावेय फलतया सिद्धो नद्यास साक्षात् पारम्पर्येणवा मत्र मायाङ्ग तत्प्रतिपाद्यित्व मुरसदत्त धनासस्यप्रसङ्गः तथा यमेव सम्यग्भो मद्गुतास्य शास्त्रस्येद प्रयोजनमिति॥ तदेव मस्यशास्त्रस्यै कश्रुतस्कन्धरूपस्य मातिरकाध्ययनगतस्यनायस्य उद्देशरुदशसहस्रीप्रमाणस्य पद्त्रिंशत्प्रमाणसहस्रपरिमाणस्या ऽष्टाशीतिसहस्राधिकलक्षद्वयप्रमाणपदराशे संग्रहादीनि दर्शितानि अथ प्रथमे शत ग्रन्थान्तरपरिज्ञापयाध्ययने दशो देयकामवति उद्देशका याध्ययनार्थदशानिपायिनो ऽध्ययनविभागाः। उद्दिश्यते अप धानविधिना शिष्यस्या थार्थेन यथे तावन्त मध्ययनभाग मधीयेवमुद्देशा सम्यो इत्यका स्ताय सुखपरवसरकादिनिमित्त माद्याभिधयाभिधानद्वा रेन मङ्गलात् विभागायामाह॥ रायगिहेत्यादि॥ अधिकृतगाथार्थो यद्यपि वक्ष्यमाणोद्देशकदशकाभिगमे स्वयमवायगम्यते तथापि यासाना सु गायथोपाय मनिरीयते तत्र रायगिहेत्यादि सुत्तसम्प्येकयनत्या प्राज्ञयहेनगरे वक्ष्यमाणोद्देशकस्यार्थो भगवता श्रीमहावीरेण दर्शित इतिव्याख्ये यं एव मन्यत्रापी सुयिमत्तयन्तता यसेया॥ चलयत्ति॥ चलमविषयः प्रथमोद्देशकः चलमाणेचलिए इत्याद्यर्थेनिर्णयायत्यर्थः॥ दुक्खेत्ति॥ दु

रायगिह चलण १ दुक्खे २

निवि अहोगे। पाठन मेहनिवोबिशार्थं जिणवरभासदाहियवार दति। मामाविपिन स्वरूप विषेय आपणो, हिवि मनगोमानसिणोएक, एभगव ेपमहस्रप्रमाणके, पद्वेलाख अठ्यासीमहस्रप्रमाणके। हिवे प्रथमशतके दश उद्देशा श्रीमहावीरदेवे राजग्रहनगरने विषे कह्या। चलण। चलमाणेचलिए इत्यादि। चलन विषयपयमो निश्चयरूप पहिलो उद्देशो नव प्रश्नों आणवो १। दुक्खेत्ति। गो समवेदै। इत्यादि प्रश्नो निश्चय पूछ्यो ते बीजो उद्देशा २। कंखपओसेय कांक्षा मिथ्यात्वमोहनीयकर्मने उद

न्त। स्वयकृत दुःखं वेदयतीत्यादि प्रश्ननिर्णयार्थ इत्यर्थः ॥ कंखपओसेति ॥ कांखा मिथ्यात्वमोहनीयोदयसमुत्थो ऽन्यान्यदर्शनग्रहरूपः । जीवपरिणाम सएव प्रकृष्टो दोषो जीवदूषण कांखाप्रदोष तद्विषय तृतीयः जीवेन भदन्त। कांखामोहनीय कर्म कृत मित्याद्य र्थनिरूपणार्थ इत्यर्थः चकार समुच्चये ॥ पयइत्ति ॥ प्रकृतयः कर्मभेदा चतुर्थोद्देशकस्यार्थः कतिभदंत। कर्मप्रकृतय इत्यादिश्चासौ ? ॥ पुढवीउत्ति ॥ रत्नप्रभादिपृथिव्यः पंचमेवाच्याः कतिभदंत। पृथिव्य इत्यादिश्च ? सूत्रमस्य ॥ जावतेत्ति ॥ यावच्छब्दोपलक्षितः षष्ठः यावतो भदंता। ऽवकाशांतरा त्सूर्य इत्यादिसूत्रश्चासौ ॥ नेरइएत्ति ॥ नैरयिकशब्दोपलक्षित सप्तमो नैरयिको भदंत। निरये उत्पद्यमानइत्यादिश्च तत्सूत्र ॥ बालेत्ति ॥ बालशब्दोपलक्षि तोऽष्टम एकान्तबालो भदन्त। मनुष्यइत्यादि सूत्रश्चासौ ॥ गुरुएत्ति ॥ गुरुकविषयो नवमः कथं भदन्त। जीवागुरुकत्वं मागच्छन्तीत्यादिश्च ? सूत्र मस्य चशब्दः समुच्चयार्थः ॥ चलणाउत्ति ॥ बहुवचननिर्देशा चलनाद्या दशमोद्देशकस्यार्थाः तत्सूत्र चैव मन्यतीर्थिका भदंत। एवमाख्याति चलत् अचलित मि त्यादीनि प्रथमशतोद्देशकसंग्रहविभागार्थः ॥ तदेव शास्त्रोद्देशे कृतमंगलादिकृत्योऽपि प्रथमशतस्यादौ विशेषतो मंगलमाह ॥ नमोसुयस्सत्ति ॥ नमस्का

कंखपओसेय ३ पगइ ४ पुढवीउ ५ जावते ६ णेरइए ७ बाले ८ गुरुएय ९ चलणाउ १० ॥ णमोसुयस्स ॥

ये भव्यभव्य इत्यमपदवपरिणाम तेहिज प्रश्न आठा अपवे एक जोपरूपक तेवीचा प्रश्न हेभगवन् जीवें कांखामोहनीयकर्मकीधुं ? इत्यादि। प्रश्ननिरूपण तीजो ३ । च शब्द समुच्चयमां। पगइ। प्रकृति कहता कर्मभेद हेभगवन् केतली कर्मप्रकृति ? इत्यादि प्रश्न चौथो ४। पुढवीमीत्ति। रत्न प्रभा पृथिवी हेभगवन् केतली छे ? इत्यादि प्रश्ननिर्णय पांचमा ५। जावतेत्ति हेभगवन् जेतले आकाशे अंतरे सूर्य उगताथीय तेनिर्णयरूप छठो ६। नेरइए। हेभगवन् नरकनेविषे नारकी उपजे किंवा अनारकी उपजे ? इत्यादि प्रश्न सातमो ७। बाले। बालीपए कातबाल हेभगवन् मनुष्यइत्यादि ? प्रश्न आठ मा ८। गुरुए। हेभगवन् किया जीवभारीहोय ? इत्यादि प्रश्ननिर्णय ते नवमो उद्देशो ९। चलणाओ। हेभगवन् अन्यदर्शनी इमकहे, चलमाणे चलित ए इत्यादि प्रश्न ? निर्णय त दशमोउद्देशो १ ॥ इत्यादिक प्रथमशतोद्देशक भावार्थ ॥ णमोसुयस्सेत्ति। नमस्कारहुओ केहने ? श्रुतने ? श्रुत द्वादशांगीरूप

रोतु भुताय द्वादशाङ्गीरूपाया इत्यवचनाय । मन्विष्टदेवतानमस्कारोमङ्गलार्थोभवति नचभुतमिष्टदेवतेतिकथमयमङ्गलार्थइति? अत्रोच्यते भुतमि
ष्टन्वते याइता ममस्करणीयत्वा स्थितम् नमस्कुर्वन्तिच भुत मर्हन्तो नमस्तीर्थायेति वचनात् तीर्थंच भुत ससारसागरोत्तरणाधारत्वकारणत्वा स
ाधारत्वेमैवच सङ्घस्य तीर्थंशब्दाभिधेयत्वात् तथा सिद्धानपि मङ्गलार्थं महतोनमस्कुर्वन्त्येव—कातव्यममीकार सिद्धाणमजिणरतुणोमिता । इतिव
चनादिति एवताव इत्यथमशतोद्देशकाभिधेयार्थसेवाः प्रागुदर्शित सातय यथोद्देशं निर्देश इतिन्याय माश्रित्यादित प्रथमोद्देशकार्थप्रपञ्चोवाच्य स
स्वगुरुपर्यंक्रमलक्षण सम्बन्ध मुपदर्शयन् भगवान् सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिन माश्रित्येदमाह ॥ तेणंकालेणंतेणंसमएणमित्यादि ॥ अथ कथ मिदमव
सीयते यदुत सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिन मभिसम्बन्धयन्नसुक्तवानिति? उच्यते सुधर्मस्वामिवाचनायाएवा नुवृत्तत्वा दाहच–तित्थञ्चसुहम्माउ निर
पच्चाणयरासेसा ॥ सुधर्मस्वामिनश्च जम्बूस्वाम्येव प्रधानशिष्यो इत सामायिते पर्यायना प्रवृत्तेति तथा षष्ठाङ्गे उपोद्घात एववृश्यते यथाकिस सु
धर्मस्वामिनमति जम्बूनामा प्राह ॥ जइण भंते । पञ्चमस्स अङ्गस्स विवाहपन्नत्तीएसमत्ते भगवया महावीरेण पढमठे पक्षे छठस्सर्ण भंते। के अट्ठे
पण्णत्तेति ॥ तत एव मिहापि सुधर्मैव जम्बूनामान मत्युपोद्घात मवश्य मभिहितवा नित्यवसीयतइति अथ चोपोद्घातग्रन्थो मूलटीकाकृता समस्तथा
र माश्रित्य व्याख्यातो व्यस्ताभिः प्रथमोद्देशक माश्रित्य व्याख्यायते प्रतिक्षत मत्युद्देशक मुपोद्घातस्येह शास्त्रे नेकधाभिधानादिति अथच प्राग्
व्याख्यातो नमस्कारादिको ग्रन्थो वृत्तिकृता न व्याख्यातः कुतोपि कारणादिति ॥ तेणकालेणंति ॥ तेइति प्राकृतशैलीवशा तस्मिन् यत्र तन्नगर मा
सीत् यं कारो न्यथापि वाक्यालङ्कारार्थो । यथा–इमाणं भंते । पुढवी इत्यादिषु काले अधिकृतावसर्पिणीचतुर्थविभागलक्षणे ॥ तेणंति ॥ तस्मिन् य
त्र भौ भगवान् धर्मकथा मकरोत् ॥ समएणंति ॥ समये कालस्यैवविशिष्टे विभागे अथवा तृतीयैवेय तत स्तेन कालेन हेतुभूतेन तेन समयेन हे

तेणकालेण तेणसमएण

वत श्रीसुधर्मस्वामी पातानाश्रित्य अभूवत इमक्केदे । तेणकालेण॥ कराणावसंवारे ते भवसप्पिणो कावन। सुसम

पुरू एकारः प्रथमैकवचनमजव । कयरेयागमइदिसकवेत्यादावित्र–ततश्च रायगृहनाम नगरं ॥ होत्थेति ॥ अभवत् नन्विदानी मपि तत् नस्ती त्यतः कथमुक्त मभवदिति ? उच्यते वक्षकग्रंथोक्तविभूतियुक्त तदैवा भव मतु सुधर्मस्वामिनो वाचनादानकाले ऽवसर्प्पिणी स्या रकासस्य तदीयभुनप्रावानां हानिभावात् ॥ वसद्वेति ॥ इहस्यानक नगरवर्णको वाच्य ग्रंथगौरवभयादिह तस्यालिखितत्वात् सर्वेव–रिद्ध त्थिमियसमिद्ध ॥ रिद्ध पुरजवनादिभि वृद्ध स्तिमित स्थिर स्वचक्रादिभयवर्जितत्वात् समृद्ध धनधान्यादिविभूतियुक्तत्वा तत पदत्रयस्य कर्मधार यः ॥ पमुइयजणजाणवए ॥ प्रमुदिता हृष्टाः प्रमोदकारवस्तूना सद्भावा ज्जनानगरवासव्यलोका जानपदाश्च जनपदभवा तत्रागाता सतो यत्र त त्पमुदितजनजानपदमित्यादि रौपपातिका स्तव्यास्यानो ऽप्रदुजयः ॥ तस्सवति ॥ पष्ठयाः पचम्यर्थत्वा त्तस्मा द्राजगृहनगरात् ॥ वहियत्ति ॥ वहि स्तात् ॥ उत्तरपुरच्छिमत्ति ॥ उत्तरपौरस्त्ये ॥ दिसीभाएत्ति ॥ दिशां भागो दिग्भागो वा भागो मममभक्तस्य दिग्भाग सात्र गुणसिलकनाम ॥ चेइय ति ॥ चित लेप्यादिचयनस्य भावः कमवेति चैत्य सज्ञाशब्दत्वा देवबिंबं तदाश्रयत्वा तद्गृहमपि चैत्यं तच्चह व्यतरायतन नतु भगवता मर्हता माय

रायगिहेणाम णयरेहोत्था यण्णओ तस्सणरायगिहस्सणयरस्स
वहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए गुणसिलएणामचेइएहोत्था

सगमाभाम चौथा भरानेविवे । तेवंसमएवं । चवाकालकारे चेसमयनेविषे भगवंत कचाकाहे ते समये । रायगिहेणामणयरेहोत्था ॥ राजगृह,, इसेनामे नयरेकहतां नगरहाता हुवो इहां वर्तमानकाले राजगृहनगरछे तोपणि अतीतकाले नगरमां चेहवो वर्णकहतो तेहवो वर्तमानकाले नथी ववस ल्पिणी काल माटे प्रभावओ । वण्णओ । वर्णकतेवनगरावपसेणीथी जाणवा । तस्सणरायगिहस्सणयरस्सवहिया । चवाकालकारे हमसबेकालपणी तेहने राजा राजगृहनगरने बाहिर । उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । उत्तरपूर्वमा दिशिना भाए विभागनेविषे पतलेईशानकोणनेविषे गुणसिल इसेनामे व्यन्तरायत ना चेत्यप्रद्दे विम चवा निराक्त आयतन सामयत हुवा । ततवसेचिपराना । तिहां राजगृहनगरे नेचिकनामे राजाहे वेपर निचवो पन पुस्तक

तम ॥ चोत्पत्ति ॥ अत्रूव इदच यकाव्याख्यास्यते तत्भायः सुगमत्वा वित्यवसेयमिति ॥ तेणकालेणतेणंसमएणसमणेति ॥ श्रमतपसिखेदेचेतिवचनात् श्राम्यति तपस्यतीति श्रमण अथवा सह शोभनेन मनसा वर्त्तत इति समनाः शोभनत्वच मनसो व्यास्यातं सावप्रसावान् मनोभावत्वस्या सय स्यात् सुगतवा। यथा जवस्येव मरुतिजायत सभोवा सर्वभूतेषु समच इत्यनेकार्थस्त्वा प्रातूभा प्रवर्तत इति समणो निरुक्तिवशात् ॥ भगवति॥ भगवा नैश्वर्यादिगुणः पूज्य इत्यर्थः ॥ महावीरेति ॥ वीरः शूरवीरविक्रांतावितिवचनात् रिपुनिराकरणतो विक्रांतः सच चक्रवर्त्यादिरपिस्या दतो विशि ष्यते महा चासौ दुर्जयांतररिपुतिरस्करणा द्वीरश्चेति महावीर एतच देवै भगवतो गौणनाम कृतं यदाह—अयलेभयभरवाण खंतिसमेपरीसहोवस ग्गाणं देवगकरमहावीरेति ॥ आदिकरेति ॥ आदौ प्रथमतः श्रुतधर्ममाचारादिग्रथात्मकं करोति तदर्थप्रणायकत्वेन प्रणयती त्येवंशील आदिक रः ॥ आदिकरत्वा चासौ किंविध इत्याह ॥ तित्थयरेति ॥ तरति तेन संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचन तदव्यतिरेका चेह संघ स्तोपच तत्करणशी लत्वा तीर्थंकरः तीर्थंकरत्वच तस्य नान्योपदेशपूर्वक मित्यत आह ॥ सहसंबुद्धेति ॥ सह आत्मनैव स्वार्थ अनन्योपदेशत इत्यर्थ सम्यक् यथाव द्बु द्धो ज्ञेयोपादेयहेयवस्तुतत्व विदितवानिति सहसंबुद्धः सहसंबुद्धस्य चास्य प्राकृतस्य सतः पुरुषोत्तमत्वा दित्यत आह ॥ पुरिसोत्तमेति ॥ पु रुषाणां मध्ये तम तेन रूपादिना तिशयेनोद्धृतत्वा दूर्ध्ववर्तित्वा दुत्तमः पुरुषोत्तमः अथ पुरुषोत्तमत्वमेवास्य सिंहाद्युपमानत्रयेण समर्थयन्नाह ॥ पु

तत्थणसेणिएराया चिल्लणादेवी तेणकालेण तेणसमएण समणेभगवमहावीरे आदिगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे

माहे नवो । चिल्लणादेवी । वलणानामे राणीहे । तणकालेण । अवसर्पिणीनाम चोथाआरानेविषे ॥ समणेभगवमहावीरे । श्रमणतपस्वी ऐश्वर्यादिगुण वंत पण्य इसव महावीर इसनामें । आदिगरे । श्रुतधर्मआचारांगादिसूत्रनो आदिनो करणहार । तित्थगरे ॥ तरीयें जेणे तेभणीतीर्थ प्रवचन तथा सं घाधतीन परउपदेश विना हेयापादेयवस्तुस्वरूप जाण्युं । पुरिसुत्तमे । पुरुषमांहि उत्तम रूपादिअतिशयेंकरी अथवा उच सिंहनीपरें सौर्यगुणेंकरीसहित तेमाटे पुरुषसिंह । पुरिसवरपुंडरीए । पुरुषमांहिवरश्रेष्ठ प्रधान श्वेतकमलनी परें

... खिद पुरुष दासीसिंहयेतिपुरुषसिंहो' लोके महि सिंहे शौर्य मतिप्रकृष्ट मन्युपगत मतः शौर्य च उपमान कृत शौर्य तु भगव। ८ ~स्ये प्रत्यनीकद्वेन प्राप्यमावस्या प्यनीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरीरकुब्जताकरत्वाचेति तथा ॥ पुरिसव रपुण्डरीएत्ति ॥ वरपुण्डरीकं प्रधानधवलसहस्रपत्र पुरुषो वरपुण्डरीकमिवेति पुरुषवरपुण्डरीकं धवलत्व चास्य भगवतः सर्वाशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च शुभानुभावैः शुद्धत्वात् अथवा; पुरुषाणां तत्सेवकजीवानां वरपुण्डरीकमिव वरच्छत्रमिव यः सन्तापातपनिवारणसमर्थत्वात् छत्राकारवत्वा च स पुरुषवरपुण्डरीकमिति तथा ॥ पुरिसवरगंधहत्थित्ति ॥ पुरुषएव वरगंधहस्ती पुरुषवरगंधहस्ती यथागंधहस्तिनो गंधेनापि समस्तेतरहस्तिनो भ ज्यत तथा भगवत सद्भाविहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षमरमरकादीनि दुरितानि नश्यंतीति पुरुषवरगंधहस्तीत्युच्यत इत्यत उपमात्रयाः त्पुरुषो त्तमो सो भवति पुरुषोत्तमएव किंतुलोकस्याप्युत्तमो लोकनाथत्वा देतदेवाह ॥ लोगनाहेति ॥ लोकस्य सञ्चिभव्यलोकस्य नाथः प्रभु लोकनाथो नाथत्वंच योगक्षेमकारित्वं योगक्षेमकृत्राथइतिवचनात् तथा स्या प्राप्तस्य लोकस्य सम्यग्दर्शनादे र्योगकरणेन लब्धस्यच परिपालनेनेति लोकना थत्वच यथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपना देवेत्यतआह ॥ लोगपईवत्ति ॥ लोकस्य विशिष्टतिर्यग्नरामररूपस्या तरतिमिरनिराकरणेन प्रकृष्टप्र

पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुण्डरीए पुरिसवरगंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगहिए लोगपईवे

गजभारेकरो सत्रधाम पापरहित तमाटे ॥ पुरिसवरगंधहत्थी ॥ पुरुषमांहि प्रधान गन्धहस्तीसमान जिमगंधहस्तीगीगन्धे अनेरा हाथी नासे तिम भ गवन्त जेजेदेशनेविषे विचरे तिहांतिहां ईतिदुर्भिक्षादिपरचक्रनासें ॥ लोगुत्तमे ॥ भव्यजीवनेमांहि प्रभावेकरी उत्तमछे ॥ लोगनाहे ॥ दर्शनोकप्राप्ते पामनेविषे मागगामी सवस्तुभव्यजीव नावना तेहभवी नाथकहीये योगक्षेमना करणहारछे विशेषाने अणपाम्यानवी तेहने पमाडेछे ते योग कहीये पर्मेजिके पामे धमसाधीछे तेहने पालणको खेमकहावानरीये मनर्मूकिरपदू उपजावेते खेमकहीये तेवदूनना नामीकरे तिमभोलोकनाथ कहीये ॥ दशताम षट्विधजीवनिकाय तेहने रक्षाने करवें हितकारी ॥ लोगपईवे ॥ दर्शनोकप्रकरीये मध्योपदेशजीव तेहने धर्मनो प्रवक्ताछे तेह

मयतृइयंलोकमाश्रित्याह ॥ लोगपज्जोयगरेति ॥ लोकस्य लोक्यतइतिलोको

कालाकारितया स्प्रदीपस्य प्रदीपः इदंविशेषणं ग्रहलोकमाश्रित्योक्तं मयतृइयंलोकमाश्रित्याह ॥ लोगपज्जोयगरेति ॥ लोकस्य लोक्यतइतिलोको

भवा व्युत्पत्त्या लोकालोकस्वरूपस्य समस्तवस्तुस्तोमस्वभावस्या खकमातमलकलमिव निखिलजावस्वभावावभासनसमर्थकेवलालोकपूर्वकप्रवचन

प्रजापदसमयतमेनप्रद्योत प्रकाशं करोती त्येवंशीलो लोकप्रद्योतकरः, उक्तविशेषणोपेतस्य मिहिरहरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेन प्रवसी

ति कास्यविशेप? इत्याशङ्कायां तद्विशेषाभिधानायाह ॥ अभयदएति ॥ अभयं दयते ददाति प्राणापहरणरसिक उपसर्गकारिप्राणिनी त्यजपदम

प्रजयाया। सर्वप्राणिजयपरिहारवती दया मुकम्पा यस्य सोऽभयदयी हरिहरमिहिरादयस्तु नैवमितिविशेषः एकेवल मसाधपकारिता तदन्येषांवा,

ऽनयपरिहारमात्र करोती त्यपि स्वयंप्राप्तिमपि करोतीति दर्शयन्नाह ॥ चक्खुदयत्ति ॥ चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानं शुभाशुभार्थविभागोपदर्शकत्वात्

पदार्थ-चक्षुमन्तसमेवइ येश्रुतज्ञानचक्षुषा सम्यक्तदेवपश्यन्ति भावानुवेयेतराम्भरा: ॥१॥ तद्ददातीति चक्षुर्दयः, यथाहि—लोके कान्तारगतानां म्वौ

रैर्विलुप्तधनानां न्यस्तचक्षुषा च्चक्षुरुद्घाटनेन चक्षुर्दत्वा वाञ्छितमार्गदर्शनेनो पकारी भवत्येव मयमपि संसारारण्यवर्तिनां रागादिरिपुविलुप्तधर्म

धनानां कुवासनाच्छादितसम्यग्लोचनानां तदपनयनेन श्रुतचक्षुर्दत्वा निर्वाणमार्गे यच्छ त्युपकारीति दर्शयन्नाह ॥ मग्गदएत्ति ॥ मार्ग सम्यग्द

र्शनज्ञानचारित्रात्मकं स्वरमपदपुरपथ स्दयतइति मार्गदयः यथाहि—लोके चक्षुरुद्घाटन मार्गदर्शनञ्च कृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवं स्थानं प्राप

यन् परमोपकारीभवती त्यवमयमपीति दर्शयन्नाह ॥ सरणदएत्ति ॥ शरणं त्राणं नानाविधोपद्रवोपद्रुतानां तद्रक्षास्थानं भाव परमार्थतो निर्वाण

लोगपज्जोयगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए

न ए प्रदीपसमान । लोगपज्जोयगरे । एवा लोकालोकना भावना तेज़ने पक्षासूर्यसमानछे जिमसूर्यलोकालोकप्रकाशकरी जगमांहि सघले उद्योतकरेय तिम

ना धुवेश्वर; एतले त्रिभुवनमें चक्षुरूपी आप्रयोगी रचे। अथवा, समस्तलोकालोकस्वरूपनेविषे प्रद्योतकरें । अभयदए । ए

यता, दयाप्रतेदीयेते । चक्खुदए । श्रुतज्ञानरूपचक्षु दे तेभणी । मग्गदए । ज्ञानदर्शनचारित्ररूप मोक्षमार्गना दा

तद्गतरात नरणादयः हारम्बदायकत्वमस्य धम्मदेशयंर्वेत्यतमाह ॥ धम्मदेसएत्ति ॥ धम्म मुतचारित्रात्मकं दशयतीति धम्मदेशकः ॥ धम्मदएत्ति ॥ पाठान्तरं; तत्र धर्म्मं श्रुतचारित्ररूपं ददत इति धम्मदयः धम्मदेशनामात्रेणापि धर्म्मदेशक उच्यत इत्यतमाह ॥ धम्मसारहित्ति ॥ धर्म्मरथस्य प्रव तकत्वेन सारथिरिव धम्मसारथिः यथा रथस्य सारथी रथं रथिनं मश्वांश्च रक्षति एवं भगवान् चारित्रधर्मांङ्गानां संयमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षो पदेशा धम्मसारथि भवतीति तीर्थान्तरीयमतमाश्रित्यापि धर्म्मसारथ्यं सम्भवतीति विशेषणमाह ॥ धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीति ॥ अथ समुद्रा श्चतुर्थे च हिमवान् एते चत्वारोन्ता पृथिव्यन्ता एतेषु स्वामितया भवतीति चातुरन्तः स चासौ चक्रवर्ती च वरश्चासौ चातुरन्तचक्रवर्ती राजातिशायी धर्म्मविषये वरचा तुरन्तचक्रवर्ती धम्मवरचातुरन्तचक्रवर्ती यथाहि-पृथिव्यां समस्तराजातिशायी वरचातुरन्तचक्रवर्ती भवति तथा भगवा न्धर्म्मविषये शेषप्रणेतृणा मध्ये सातिशयत्वा तथोच्यत इति । अथवा धम्मएव वर मितरचक्रापेक्षया कपिलादिधर्म्मचक्रापेक्षया चातुरन्त म्दानादिभेदेन चतुर्विभाग त्वात् सर्वा वा नरकादिगतीनां मन्तकारीत्या चतुरन्तं तदेवचातुरन्तं चक्रं भयाराति च्छेदा तेन वर्त्तितुं शीलयस्य सतथा एतश्च धर्म्मदेशकत्वादिविशेष णकदम्बकं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्याह ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेत्ति ॥ अप्रतिहते कटकुड्यादिभि रस्खलिते अविसंवादकत्वात्; तत एव वा पिकत्वाद्वा वरे प्रधाने ज्ञानदर्शने केवलाख्ये विशेषसामान्यबोधात्मके धारयति यः सतथा, छद्मवान् प्येवंविधसंवेदनसम्पद्युपेतः कैश्चि दभ्युपगम्य

धोहिदए धम्मदए धम्मदेसिए धम्मनायगे धम्मसारहिए धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहय वरनाणदंसणधरे

तारवे। सरणदए। नानादिकउपद्रव आवम रचामान एतवे निर्भयद्वीपे तेमाटे सरणदए। बोहिदए। सम्यक् चारित्रूप तेहना देणहार। । धम्मदए। चारित्रूप धमना देणहार। धम्मदेसिए। श्रुतचारित्ररूपधर्मनो उपदेशक। धम्मनायगे। धमना नायक ठाकुरछे। धम्मसारहीए। ध र्मरूपरथ प्रवर्त्तावामे सारथीसमान। धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी। जिम पृथिवीनेविषे समस्त राजामांहि चक्रवर्त्ती प्रधान तिम धर्मनायकमांहि भ गवान् चक्रवर्त्ति। चक्रना चक्रवर्त्ति चारदिशिना अंतकरे पांच समावे तिम भगवंत चारगतिना अंतकरे। अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे। भिला

ते सर्वमिथ्योपदेशत्वा मोपमार्गानवतीति मिथ्यात्वप्रतिपादनायाह—अथवा—कथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं सम्पन्नम् ? अत्रोच्यते आवरणाभावा देतमेवास्यावेदयन्नाह ॥ वियट्टछउमत्येति ॥ व्यावृत्तं निवृत्तं मपगतं छद्म शठत्व मावरणंवा यस्यासौ व्यावृत्तछद्मा, छद्माभाव श्चास्य रागादिजयाज्जात इत्याह ॥ जिणेति ॥ जयति निराकरोति रागद्वेषादिरूपा नराती निति जिनः, रागादिजय श्चास्य रागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएव भवतीत्येतदस्याह ॥ जाणएति ॥ जानाति छाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायकः, ज्ञायकत्वमनेनास्य स्वार्थसम्पत्त्युपायउक्तो ऽधुनातु स्वार्थसम्पत्तिपूर्वकं परार्थसम्पादकत्वं विशेषणचतुष्टयेनाह ॥ बुद्धेत्ति ॥ बुद्धो जीवादितत्त्वमबुद्धवान्, तथा ॥ बोहएत्ति ॥ जीवादितत्त्वस्य परेषां बोधयिता, तथा ॥ मुत्तेत्ति ॥ मुक्तः बाह्याभ्यन्तरग्रन्थग्रन्थिना मुक्तत्वात्, तथा ॥ मोयएत्ति ॥ परेषां कर्मग्रन्थिना मोचयिता । अथ मुक्तावस्था माश्रित्य विशेषणान्याह ॥ सव्वन्नू सव्वदरसीति ॥ सर्वस्य वस्तुस्तोमस्य विशेषरूपतया ज्ञायकत्वेन सर्वज्ञः, सामान्यरूपतया पुनः सर्वदर्शी, मतुमुक्तावस्थायां दर्शनान्तराभिमतपुरुषवद्दविषय ज्ञानत्व एतत्पदद्वय मपि कदृष्यतइति । तथा ॥ सिवमयलमित्यादि ॥ तत्र शिवं सर्वबाधारहितत्वा दचलं स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहेत्वभावात् अरुजं मविद्यमानरोगं तन्निबन्धनशरीरमनसोरभावात् अनन्तं मनन्तार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षय मनाशसाद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात्

वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहिए मुत्ते मोयए सव्वन्नू सव्वदरिसी सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह

[illegible] प्रधान केवलज्ञान केवलदर्शन तणा धारक छे भगवंत ॥ वियट्टछउमे ॥ निवर्त्तयाछे छद्मस्थपणो जेहवको ॥ जिणे ॥ रागादिकजीत्या जिणे ते जिन छाद्मस्थिकज्ञानधारीको भणिये ॥ जाणए ॥ जाणे जीवादितत्व ॥ बुद्धे ॥ बूझ्या ॥ बोहिए ॥ जीवादितत्व अपरने बुझावे ॥ मुत्ते ॥ बाह्याभ्यन्तर ग्रन्थथी मूकाणा ॥ मोयए ॥ औरकोवाने बाह्य अभ्यन्तरथी मूकावे ॥ सव्वन्नू ॥ सर्वपदार्थ जाणेवारो ॥ सव्वदरिसी ॥ सर्व देखे देखणेवारो । मुक्तिअवस्थाभावी [illegible] सर्वतमवसम्मलाबाह ॥ सर्वबाधारहित चलवानो अभाव रोगरहित अनन्तपदार्थविषयस्वरूपको सादिअपर्यवसितको अनेरा पनरपि पावचानशो बोलावसतार नहीकरे ॥ सिद्धगइनामधेयं ॥ मोक्षनाव ॥ नो गति सकलअर्थपूरा जिनो प्रशस्तनामधेयगी

॥ ९ ॥ रपूर्णस्या त्पौर्णमासीचन्द्रमण्डलवत् प्रभ्याग्राथं परेषा मपीह्लादकारित्वात् ॥ सिद्धिगइनामधेयंति ॥ सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति यस्यां सा सिद्धिः साचासौ गम्यमानत्वा द्गतिश्च सिद्धिगति सदेव नामधेयं प्रशस्तनाम यस्य ततथा ॥ ठाणंति ॥ तिष्ठति अनवस्थानमिबन्धनकर्माभावेन सदावस्थितो भवति यत्र तस्थान जीवकर्मवो जीवस्य स्वरूप लोकाग्रंवा जीवस्वरूपविशेषणमितु लोकाग्रस्य आधारधर्माधा माधारे ऽप्यारोपा दवसयामि तदेवभूतं स्थानं ॥ संपाविउकामेत्ति ॥ यातुमना नतु तत्प्राप्तस्तत्प्राप्तस्याकारकत्वेन विवक्षितार्थाभा प्ररूपणासम्भवात् प्राप्तुकामइतिच यदुच्यते ततुपचारा दन्यथाहि निरभिलाषाएव भगवन्त केवलिनो भवन्ति—मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनादिति ॥ जावसमासर णेति ॥ ताव द्भगवद्वर्णको वाच्यो याव त्समवसरणं समवसरणवर्णकइति स च भगवद्वर्णकएव ॥ भुयमोयगभिगनेलकज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिकुरुंब निचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरए ॥ भुजमोचको रत्नविशेषो भृङ्गः कीटविशेष अङ्गारविशेषोवा नैलं नीलीविकारः, कज्जल मषी,प्रहृष्टभ्रमरगणः प्रतीत, एतएव स्निग्धः कृष्णच्छायो निकुरंबः समूहो येषान्ते तथा तेच ते निचिताश्च निबिडा कुञ्चिताश्च कुण्डलीभूता प्रदक्षिणावर्ताश्च मूर्द्धनि शिरो जायस्य सतथा एव शिरोजवर्णकादिः ॥ रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालकोमलतले ॥ इति पादतलवर्णकान्तः शरीरवर्णको भगवतो वाच्यः, पादतलवि शेषणस्य चायमर्थः, रक्त लोहित मुत्पलपत्रव, त्कमलदलवत् मृदुकमलवच्च, सुकुमालानां मध्ये कोमलं, तलं पादतलं यस्य स तथा तथा ॥ अठ सहस्सवरपुरिसलक्खणधरे आगासगएणचक्केण आगासगएणछत्तेण आगासगयाहि चामराहि आगासफलिहामएणं सपायपीढेणं सीहासणेण ॥ आ काशस्फटिक मतिस्वच्छ स्फटिकविशेष तन्मयेन उपलक्षणत इतिगम्य ॥ धम्मझएणपुरओपकड्ढिज्जमाणेणं ॥ देवैरितिगम्यते ॥ चउद्दसहि समणसाहस्सी हि छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धिसपरिवुडे ॥ साहस्सीशब्दः सहस्रपर्यायः सार्द्ध सह तथा विद्यमानतयापि सार्द्धमितिस्या दत उच्यते सपरि

मप्पुणरावत्तिय सिद्धिगइनामधेय ठाणसंपाविउकामे जाव समोसरण

। ठाणसंपाविउकाम । ञाबाबकाम केनोचनाकमनगयात कोचनाकाम तिर्वाकानामेरव्यावत । जावसमासरण । मारत्समासरणमा वर्णक जिम ए

गता परिवारितइति, ॥ पुव्वाणुपुव्विंचरमाणे ॥ क्रमयागुपूर्व्यादिना ॥ गामाणुगाम दूइज्जमाणे ॥ ग्रामश्च प्रतीतो ऽनुग्रामश्च तदनन्तरग्रामो ग्रामानुग्राम तन्यम् गच्छन् ॥ सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए तणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगि ण्हइ उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइत्ति॥ समवसरणवर्णकेच, समणस्स भगवओ अंतेवासी बहवे समणा भगवतो अभ्येगइया उग्गपव्वइयाइत्यादि ॥ साध्व्यादिवर्णको वाच्य, तथा असुरकुमारा शेषभवनपतयो व्यन्तरा ज्योतिष्काः वैमानिका देवाश्च, भगवतः समीप मागच्छन्तो वर्णयितव्याः ॥ परिसानिग्गयत्ति ॥ राजगृहा द्राजादिलोको भगवतो वन्दनार्थं निर्गत सन्निर्गमश्चैवं ॥ तएणं रायगिहे णगरे सिंघाडगतिगचउक्कच च्चरचउम्मुहमहापहपहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवंखलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे इह गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणेविहरइ त सयं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्सविसवणयाए किमगपुण वंदण णमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए ॥ इत्यादिर्वाच्यो याव भगवंत नमस्यति पर्युपासतेचेति एष राजनिर्गमो न पुनर्निर्गमश्च तत्पर्युपासना चौपपातिकग्रन्थाद्वाच्या ॥ धम्मोकहिओत्ति ॥ धर्मकथेह भगवतो वाच्या साचेयं—तएणं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो चिल्लणापमुहाणयदेवीण तो सेय महइमहालियाए परिसाए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए धम्मं परिकहेइ तजहा अत्थिलोए अत्थिअलोए। एव । जीवाअजीवा यथेमोक्खे ॥ इ त्यादि तथा ॥ जहाणरगागम्मती जीवाणामयेयवायरणसारीरमाणसाइदुक्खाइतिरिक्खजोणीए ॥ इत्यादि ॥ पडिगयापरिसत्ति ॥ लोकः स्वस्थान गतः प्रतिगमश्च तस्या एवं वाच्यः ॥ तएणसामहइमहालिया ॥ महइ परिसा ॥ महति ॥ महती आलयप्रत्ययस्य स्वार्थिकत्वा दतिशयातिशयगुर्वी महत्यपर्यु प्रशासतामयामपर्यन्त् । महायानावा सतपूजाना महाधावा परिषत् महापपदिति समणस्स भगवओमहावीरस्स अंतिए धम्मं सो

परिसाणिग्गया

साविमया॥ पर्षदा बारह भेदो चार देवगो चारदेवीओ चतुर्विधसंघ। धर्माव्विभो। भगवतीधमकह्यो। तजहा अत्थि

सामम॰॰८॥ ग्समग ३ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदइ नमसइ २ एववयासी सुयक्खाएणं भंते । निग्गंथेपावयणे इत्यिव यज्ञेवेद ममखेवा माहणेया परिसधम्ममाइक्खितए एववइत्ता जामेवदिसिं पाउब्भूया तामेवदिसिं पडिगयत्ति ॥ तेणमित्यादि ॥ तेनकालेन तेनसमयेन श्रम णस्य भगवतो महावीरस्य ॥ जेठेत्ति ॥ प्रथमः ॥ अंतेवासित्ति । शिष्य अनेन पदद्वयेन तस्य सकलसङ्घनायकत्वमाह ॥ इंदभूएत्ति ॥ इन्द्रभूतिरि ति मातृपितृकृत नामधेय ॥ नामेति ॥ विज्ञप्तिपरिणामात् नाधेत्यर्थः अन्तेवासी किल विवक्षया श्रावकोऽपि स्यादित्यत आह ॥ अणगारेति ॥ नास्यागार विद्यत इत्यनगारः अयञ्च १ अगीतगोत्रोऽपि स्यादित्यत आह ॥ गोयमगोत्तेणत्ति ॥ गौतमसगोत्र इत्यर्थः, अयञ्च तत्कालोचितदेहमा नापेक्षयान्यूनाधिकदेहोऽपि स्यादित्यत आह ॥ सत्तुस्सेहेत्ति ॥ सप्तहस्तोच्छ्रय अयञ्च लक्षणहीनोऽपि स्यादित्यत आह ॥ समचउरससंठाणसंठिएत्ति ॥ समं मानं उपरि अधश्च सकलपुरुषलक्षणोपेतावयवतयासुस्य तत्र चतुरस्रञ्च प्रधानं समचतुरस्र, अथवा समाः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणाविसंवा दिन्य चतस्रोऽश्रयो यस्य तत्समचतुरस्रं अश्रयस्त्विह चतुर्दिग्भागोपलक्षिताः शरीरावयवा इति अन्येस्त्वाहुः—समा अन्यूनाधिका चतस्रो प्यश्रयो यत्र तत्समचतुरस्रं अश्रयश्च पर्यंकासनोपविष्टस्य जानुनो रन्तरं आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरं दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुनश्चान्तरं वामस्कन्ध

धम्मोकहिओ परिसापडिगया । तेणकालेणं तेणसमएणं समणस्सभगवओमहावीरस्स

जेठेअंतेवासी इंदभूतीणाम अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे समचउरससंठाणसंठिए

थोए एवं प्रोषा अथोवा अथसोक्ते इत्यादि । परिसापडिगया । पर्षदासंघधोताना भवदेवदेवी पोतानां स्थानकनेविषे गया । तेणकालेणं । तेकालनेविषे । तेणसमएणं । तेसमयनेविषे । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमणतपस्वी ऐश्वर्यादिगुणयुक्त महावीरस्वामीनो ॥ जेठेअंतेवासी । वडा समीपने विषे रहे नारा प्रथमशिष्य । इंदभूतीणाम । इन्द्रभूति एहवुं मातापिताए दीधोनामछे जेहनो वररचिय एतावतासाधु । गोयमगोत्तेणं अणगारे ॥ गोतमनामा गोत्रनो धरनार । सत्तुस्सेहे । सातहाथनको शरीरछे जेहनो । समचउरंससंठाणसंठिए । सर्वलक्षणसंयुक्त सम ठाम चारे अंशछे जेहना एहवे समचउ

स्यदिति आगुन भणा तरमिति अन्येत्वाहु-विस्ताराख्येपयोः समत्वात् समचतुरस्रं तच्च तत् संस्थानम्या कारः समचतुरस्रसंस्थान तेन संस्थितो व्य वस्थिता य मतया अथवा दीर्घसंहननाऽपि स्यादित्यतआह ॥ वज्जरिसहनारायसंघयणत्ति ॥ इह संहननं अस्थिसञ्चयविशेष वज्रादीना लक्षण मिद्-रिसनापराइपदा वज्रपुवकिसयपियावाशि । उभओमक्कडबंधो नारायतवियाणाहित्ति ॥ १ ॥ तत्र वज्रञ्च तत्कीलिका कीलिकाउसम्पुटोपम सामर्थ्ययुक्तत्वात् ऋषभञ्च लोहादिमयपट्टवद्काष्ठसम्पुटोपमसामर्थ्यान्वितत्वा द्व्रयश्च तथासौ नाराचञ्च उभयतो मर्कटबन्धनियन्त्रकाष्ठसम्पुटोपम सामर्थ्योपेतत्वात् वज्रऋषभनाराचं तत्संहनन मस्थिसञ्चयविशेषो गुणसामर्थ्ययोगा द्यस्यासौ वज्रऋषभनाराचसंहननः अन्येतुकी लिकादिमत्त्व मस्था मत्र वदन्ति अयञ्च निम्नवर्णो पि स्यादित्यतआह ॥ कनकपुलयनिघसपम्हगोरे ॥ कनकस्य सुवर्णस्य ॥ पुलगत्ति ॥ यः पुलको लव स्तस्य योनि कषः कषपट्टकरेखालक्षणः तथा ॥ पम्हत्ति ॥ पद्मपक्ष्माणि केसराणि तद्वद्गौरो यः सतथा, वृद्धव्याख्यातु-कनकस्य न लोहादे र्यः पुलकः सारो व र्णातिशय सारप्रधानो यो निकषो रेखा तस्य यत्पक्ष्म बहलत्वं तद्वद्गौरो यः सतथा अथवा ।कनकस्य यः पुलको द्रुतत्वसति बिन्दु स्तस्य निकषो व र्णतः सदृशो य सतथा ॥ पम्हत्ति ॥ पद्म तस्य चेह प्रस्तावा त्केसराणि गृह्यन्ते ततः पद्मवद्गौरो यः सतथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः अय ञ्च विशिष्टचरणरहितोपि स्यादित्यतआह ॥ उग्गतवत्ति ॥ उग्र मप्रधृष्य तपो ऽनशनादि यस्यसउग्रतपा यदन्येन प्राकृतपुंसा मनसापि चिन्तयितु

वज्जरिसहनारायसंघयणे कणगपुलगणिघसपम्हगोरे उग्गतवे

एस मेंवावे मध्यिमावे । वज्जरिसहनारायसंघयणे । धातमासंचार विसेष तेसघयण बलवद्रोमे कीलिया आपभवदोये पाटो नारायवदोये विदुपासे मध्यबध एइना वज्जऋषभनाराचनां करवहार । कनकपुलगनिघसपम्हगोरे । सुवर्ण कसोटी विषे कस्योदोय पद्म कमलनीपरे गौरवर्णछे देहनी यकी जेहनी ज्ञानपूर्वक तीव्र तप वलीयुं उपना उपतप करवामाटि ॥ दित्ततवे ॥ दीप्त आज्वलमान कर्मरूपीया वनदहवा भणी जेहनें । जेनेतपेकरी कर्म तपावीयेते तत्ततप कहीये । महातवे । आशंसादिदोषरहित तेमाटोतप । उराले । प्रधानतपें

क्षमा युक्त इत्यर्थः ॥ दित्ततवेत्ति ॥ दीप्तं ज्वलत्समानमिव कर्म्मवनगहनदहनसमर्थतया ज्वलितं तपो धर्म्मध्यानादि यस्य सतथा ॥ तत्ततवेत्ति ॥ तप्तं तपो यनासौ तप्ततपा एवंहि तेन तत्तपस्तप्तं येन कर्म्माणि सन्ताप्यन्ते न तपसा स्वात्मापि तपोरूप सन्तापितो यतो ऽन्यस्पर्शपृष्टमिव भातमिति ॥ महातवेत्ति ॥ महाप्रशस्ततपा दोषरहितत्वात् महाप्रशस्ततपाः ॥ उरालेत्ति ॥ भीम उग्रादिविशेषणविशिष्टतपःकरणात् पार्श्वस्थानां अल्पसत्त्वानां भयानकत्वमित्यर्थः अन्यत्वाहुः ॥ उरालेत्ति । उदारः प्रधानः ॥ घोरेत्ति ॥ घोरो निर्घृणः परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशमाश्रित्य निर्दय इत्यर्थः अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरमाहुः ॥ घोरगुणेत्ति ॥ घोरा अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य सतथा ॥ घोरतवस्सित्ति ॥ घोरैस्तपोभि स्तपस्वीत्यर्थः ॥ घोरबंभचेरवासित्ति ॥ घोरं दारुणं अल्पसत्त्वे र्दुरनुचरत्वात् यद्ब्रह्मचर्यं तत्र वस्तुं शीलं यस्य सतथा ॥ उच्छूढसरीरेत्ति ॥ उच्छूढं उज्झित मिवोज्झितं शरीरं येन तत्संस्कारत्यागा त्सतथा ॥ संखित्तविउलतेयलेसेत्ति ॥ संक्षिप्ता शरीरान्तर्लीनत्वेन ह्रस्वतांगता विपुला विस्तीर्णा अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थत्वा त्तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य सतथा मूलटीकाकारस्तु ॥ उच्छूढसरीरसंखित्तविउलतेयलेसेत्ति ॥ कर्म्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति ॥ चउदसपुव्वित्ति ॥ चतुर्दशपूर्वाणि विद्यन्ते यस्य तेनैव तेषां रचि

दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेस्से चउद्दसपुव्वी

यासमादि धन्यजीवने भयउपजे । घोरे । निर्दय परीषह इन्द्रियादिरिपुविनाशवामथी निर्दय ते घोरकहीये । घोरगुणे । अनेरेजीव आदरी नसके एहवा आचारना मूलगुणछे जेहना । घोरतवस्सी । घोरतपेकरी तपस्वीछे । घोरबंभचेरवासी । घोरदारुणअनेरे अल्पसत्त्व जीवे आचरता दोहिलो एहवा ब्रह्मचर्यनेविषे वसताशील ॥ उच्छूढसरीरे ॥ शरीरनो शोभारहित छांड्यो देहनी शुश्रूषा जिणे ॥ संखित्तविउलतेयलेस्से ॥ शरीरमांहि संक्षेपीछे घणे क्षेत्रप्रमाण वस्तुदहनसमर्थ तेजोलेश्याजिणे एविशिष्टतपथी उपजे ॥ चउद्दसपुव्वी ॥ उत्पादादि चउदे पूर्वना भणनार ॥ चउनाणा

तत्वा दसो चतुर्दसपूर्वी अनेन तस्य श्रुतकेवलितामाह सचावधिज्ञानादिविकलोपि स्यादतभाह ॥ चउनाणोवगएत्ति ॥ केवलज्ञानवर्ज्यज्ञानचतुष्क समन्वितइत्यर्थः उक्तविशेषणद्वययुक्तोऽपि कश्चि न्न समग्रश्रुतविषयव्यापिज्ञानो भवति चतुर्दशपूर्वविदां षट्स्थानकपतितत्वेन श्रवणादित्यतआ ह ॥ सव्वक्खरसन्निवाइत्ति ॥ सर्वेच ते अक्षरसन्निपाताश्च तत्संयोगाः सर्वेषां वाक्षराणां सन्निपाताः सर्वाक्षरसन्निपाता स्तेयस्य ज्ञेयतया सन्ति स स र्वाक्षरसन्निपाती, श्रव्याणिवा श्रवणसुखकारीणि अक्षराणि सांगत्येन नितरां वदितुं शीलमस्येति श्रव्याक्षरसन्निवादी सच एवगुणविशिष्टो भगवान् वि नयराशिरिव साक्षादितिकृत्वा शिष्याचारत्वाच्च समणस्सभगवओमहावीरस्स। अदूरसामंते विहरतीति योग तत्र दूरंच विप्रकृष्टं सामन्तञ्च सन्नि कृष्टं तन्निषेधाददूरसामन्तं तत्र नातिदूरे नातिनिकट इत्यर्थः, किंविधः सतत्र विहरतीत्यतआह ॥ उड्ढंजाणुत्ति ॥ ऊर्ध्वं जानुनी यस्य सऊर्ध्वजानुः शु द्धपृथिव्यासनवर्जनात् औपग्रहिकनिषद्याया अभावाच्च उत्कुटुकासनइत्यर्थः ॥ अहोसिरेत्ति ॥ अधोमुखो नोर्ध्वं तिर्यग्वा विक्षिप्तदृष्टिः किन्तु नियतभू भागनियमितदृष्टिरितिभावः ॥ झाणकोठोवगएत्ति ॥ ध्यान धर्म्यं शुक्लंवा तदेव कोष्ठ कुसूलो ध्यानकोष्ठ स्त मुपगत स्तत्र प्रविष्टो ध्यानकोष्ठोपगतो यथाहि–कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्त मविप्रसृतं भव त्येवं सभगवान् ध्यानतो ऽविप्रकीर्णेन्द्रियान्तःकरणवृत्तिरिति ॥ संजमेणति॥ संवरेण॥ तवसत्ति॥ अनशना

चउणाणोवगए सव्वक्खरसण्णिवाती समणस्सभगवओमहावीरस्स
अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोठोवगए संजमेणतवसा

सयए ॥ केवलज्ञानवर्जित चारज्ञाननाधरनार ॥ सव्वक्खरसन्निवाई॥ सर्वअक्षरना संयोग तेहना जाणहे । अथवा, श्रवणसुखकारी अक्षरनो समासे करीने वचनानायोगके जेहनो समवसे । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने। अदूरसामंते। अतिवेगळानथी अति
 । जेवा आगुवे जेहना पगने उत्कटुकासनबेठाछे । अहोसिरे । अधोदृष्टि भूमिमेविषे । झाणकोट्ठोवगए । धर्मध्यान शुक्लध्या
 नरूप कोठामांहिवाक्यो धान्य तदुपरचो वीषरियो विस ध्यानमांहिरहता इन्द्रियमननाविकार पसरेनथी ।

त्रिया ~~~ नृपयार्यों सुसो निग्रुंथ्यः सयमतपोयहर्णं चानयोः प्रधानमोक्षाङ्गत्वख्यापनार्थं प्रधानत्वञ्च सयमस्य नवकर्मानुपादानहेतुत्वेन त
पसश्च पुराणकर्मनिर्जरणहेतुत्वेन प्रवर्तिनाभिनवकर्मानुपादानात् पुराणकर्मक्षपणाच सकलकर्मक्षयलक्षणो मोक्ष इति ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइत्ति
वासयन् वासमं सिमुतीत्यर्थः ॥ ततस्सेति ॥ ततो ध्यानकोष्ठोपगतविहरणानन्तरं समितिवाक्यालङ्काराय ॥ सेइति ॥ प्रस्तुतपरामर्शार्थं सस्मस्तु सा
मान्यावस्य विशेषावधारणायमाह ॥ भगवंगोयमेति ॥ किमित्याह ॥ जायसड्ढेइत्यादि ॥ जातश्रद्धादिविशेषणः समुत्तिष्ठतीतियोग स्तत्र जाता प्रवृत्ता
श्रद्धा इच्छा वक्ष्यमाणार्थतत्त्वज्ञानंप्रति यस्यासौजातश्रद्धः तथा जातः संशयो यस्य स जातसंशयः संशयस्त्वनवधारितार्थंज्ञानं सचैवं तस्य भगवतो
जातो भगवताहि महावीरेण चलमाणेचलिएइत्यादौ सूत्रे चलदर्थं चलितोनिर्दिष्टः तत्र च यएव चलन् सएवचलितइत्युक्तः ततश्चैकार्थविषया वे
तो निर्दिष्टौ चलन्निति वर्त्तमानकालविषयः चलितइतिचा तीतकालविषयः तत्रोऽत्र संशय कथंनाम यएवार्थोवर्त्तमानः सएवातीतो भवतीति? वि
रुद्धत्वा दनयोः कालयोरिति तथा ॥ जायकोउहल्लेति ॥ जातं कुतूहलं यस्य सजातकुतूहलो जातौत्सुक्य इत्यर्थः कथं नेतान् पदार्थान् भगवा
न् प्रज्ञापयिष्यतीति तथा ॥ उप्पन्नसड्ढेति ॥ उत्पन्ना प्रागभूताऽसती भूता श्रद्धायस्य सउत्पन्नश्रद्धः, अथ जातश्रद्ध इत्येतावदेवास्तु किमर्थं मुत्पन्न
श्रद्ध इत्यभिधीयते प्रवृत्तश्रद्धत्वेन उत्पन्नश्रद्धत्वस्य लब्धत्वात् अत्रमुत्पत्या श्रद्धा प्रवर्त्तत इति? अत्रोच्यते हेतुत्वप्रदर्शनार्थं, तथाहि—कथं प्रवृत्तश्रद्ध

अप्पाणंभावेमाणे विहरइ तएणं सेभगवंगोयमे जायसड्ढे जायसंसये सञ्जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे

। भगवान ॥ भगवंतराजगृहनगरउपासेंगले। तपसा । तपेकरी पुराणकर्म निर्जरे एहवा योगीतवमासो ॥ अप्पाणंभावेमाणेविहरइ। आत्माने भावतो थ
को विचरे। तएणंसेभगवंगोयम। तिवारे ते भगवंत गौतम । जायसड्ढे। प्रवर्त्तिछे श्रद्धा तत्त्वार्थजाणवी वांछा जेहने । जायसंसए। प्रवर्त्तिछे संशय
चलमाणेचलिए' चलमाणेचलिए' इहां वर्त्तमानकाल अने अतीतकाल बेउंकिमघटे एहवा । सञ्जायकोउहल्ले । प्रवर्त्तिछे कौतुकजेहने जाणी
एवपदार्थप्रश्नीवारवार्ते एहवा उत्सुकपणो । उप्पन्नसड्ढ। तत्त्वार्थजाणवानीश्रद्धाजेहने जिनवाणी जाणवानिप्रवर्तिननी । उप्पन्नसंसए । उपनोछे संदेह

उच्यते यत उत्पन्नमङ्कुरति हेतुत्वमदर्शन मोचितमेव वाक्यालङ्कारत्या तस्य यदाहुः—प्रवृत्तदीपामप्रवृत्तभास्करां प्रकाशचन्द्राम्बुबुधे विभावरीम्। इव यद्यपि प्रवृत्तदीपत्वादेवा प्रवृत्तभास्करत्व मवगत तथापि प्रमदसभास्करत्व प्रवृत्तदीपत्वादे हेतुतयो पन्यस्तमिति॥ उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले इतिप्राग्वत् तथा सजायसड्ढेत्यादि पदषट्क प्राग्वत्, नवर मिह समुदायः प्रकर्षादिवचनो यथा—सञ्जातकामोबलसन्निधिभूत्या मानात्प्रभ्राजिः प्रतिमानमानाय। येन्द्रैश्वर्यप्रकर्षेण वाचेन्द्रः कार्तवीर्यइति अन्येतु—जायसड्ढेत्यादिविशेषणद्वादशकं मव व्याख्यान्ति जातामङ्गायस्य प्रष्टुं च जातश्र द्धः किमिति जातप्रवृत्त्यतमाह' यस्माज्जातसंशय इव वस्त्वेवसा देववेति अथ जातसंशयोऽपि कथमित्यतमाह यस्मा ज्जातकुतूहल कथंना मा स्याय मवन्तोऽस्ये इत्यभिप्रायवानिति, एतच विशेषणत्रय मवग्रहापत्तया द्रष्टव्यमेव, मुत्पन्नसञ्जातसमुत्पन्नश्रद्धत्वादय ईहापायधारणाभेदेन वाच्या, अन्येत्वाहुः—जातश्रद्धत्वाद्यपेक्षयो त्पन्नश्रद्धत्वादयः समानार्थो विवक्षितार्थस्य प्रकर्षप्रवृत्तिप्रतिपादनाय स्तुतिमुखेन मन्यकसोक्ता, नचैव पुनरुक्तदोषाय, यदाह—वक्तार्पयन्यादिषि रागिसमनाःस्तुवंस्तथाभिन्नम्। यत्पदमसकृद्रूते सत्पुनरुक्तनदोषायेति ॥ १ ॥ उट्ठाएउट्ठेत्ति ॥ उ त्थाम मुत्था ऊर्द्ध वर्तनं तया उत्थया उत्तिष्ठति ऊर्द्धो भवति, उट्ठेइत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयते, यथा वक्तु मुत्तिष्ठतइति, तत साहुधम्मे शयो ऊ मुत्थायेति ॥ उट्ठाएउट्ठेइति ॥ उपागच्छती स्युतरक्रियापेक्षया उत्थानक्रियायाः पूर्वकालसान्निधानाय उत्थायोत्थायेति, आमत्ययेन मि

उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले उट्ठाएउट्ठेति उट्ठाएउट्ठेत्ता

विशेष चेहने। उप्पन्नसाधहवे। उपनाहेकोतूहलविमेषचेहने। सजायसड्डे। सजातनाहिवे विशेषवो भवर्ती यहा बोधा चेहने॥ सजायससए। संजात विशेषवो भवर्तीहि संदेहचेहने। सजायकोउहल्ले। विशेषवो भवमीहे कोतूहलचेहने। समुप्पन्नसड्ढे। विशेषवो उपमीहे यथा चेहमे॥ समुप्पन्नसंसए॥ विशेषवो उपमीहे संशयचेहने॥ समुप्पन्नकोउहल्ले॥ विशेषवो उपना कोतूहल चेहने तिर्यकारषें॥ उट्ठाएउट्ठेत्ति॥ उत्तम कायको उठे उठोने उभा

थोभे उभाथईने॥ जेवेयसमणेभगवंमहावीरे॥ जिहां श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीछे॥ तेणेवउवागच्छइत्ता॥ ति

द्यतीति ॥ जेणेवेत्यादि ॥ इह प्राकृतप्रयोगा व्यत्ययादा ॥ येनेति ॥ यस्मिन्नेव दिग्भागे श्रमणो भगवान् महावीरो वर्त्तते ॥ तेणेवत्ति ॥ तस्मिन्नेव दिग्भागे उपागच्छति, तत्कालसामीप्यतया वर्त्तमानत्वा दागमनक्रियाया वर्त्तमानविभक्त्यानिर्देशः कृत, उपगतवानित्यर्थः, उपागम्यच श्रमणं ३ कर्म्म तापन्नं ॥ तिक्खुत्तोत्ति ॥ त्रीन् वारान् त्रि कृत्वः ॥ आयाहिणपयाहिणंकरेइत्ति ॥ आदक्षिणा द्दक्षिणहस्ता दारभ्य प्रदक्षिणः परितो भ्राम्यतो दक्षिणएव पार्श्वदक्षिणप्रदक्षिणो तं संकरोतीति ॥ वंदइत्ति ॥ वन्दते वाचा स्तौति ॥ णमंसइत्ति ॥ नमस्यति कायेन प्रणमति ॥ णच्चासन्नेत्ति ॥ न नैव अत्यासन्नो ऽतिनिकटः अवग्रहपरिहारा दत्यासन्नेवा स्थाने वर्त्तमानइति गम्यम् ॥ णाइदूरेत्ति ॥ न नैवा तिदूरो ऽतिविप्रकृष्टो ऽनौचित्यपरिहारात् नातिदूरेवा स्थाने ॥ सुस्सूसमाणेत्ति ॥ भगवद्वचनानि श्रोतु मिच्छन् ॥ अभिमुहेत्ति ॥ अभि भगवन्त मभीकृत्य मुखमस्ये त्यभिमुखः, तथा ॥ विणएणत्ति ॥ विनयेन हेतुना ॥ पंजलिउडेत्ति ॥ प्रकृष्टः प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलि हस्तन्यासविशेषः कृतो विहितो येन सो ऽन्याहिता

जेणेवसमणेभगवंमहावीरे तेणेवउवागच्छइ उवागच्छित्ता समणंभगवंमहावीरं
तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता
णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे

ज्यांवे तिहांआवीने ॥ समणंभगवंमहावीर ॥ श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्रते ॥ तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणंकरेइकरेइत्ता ॥ त्रीणवार दाहिणे हाथथकी मांडीने प्रदक्षिणा त्रण्यवार करे करीने ॥ वंदइ ॥ स्तुतिकरे वचनेकरी ॥ णमंसइ ॥ कायायेकरी नमस्कारकरे ॥ वंदित्ता ॥ स्तवीने ॥ णमंसित्ता ॥ नमस्कारकरीने ॥ णच्चासण्णे ॥ अतिपासनहुकडानही । णातिदूरे ॥ अतिदूर वेगलापणि नही ॥ सुस्सूसमाणे ॥ भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना वचनसांभलवा वांछता ॥ णमंसमाणे ॥ नमस्कारकरतो ॥ अभिमुहे ॥ भगवंतसन्मुख सुखकरी ॥ विणएणं ॥ विनयथी आशातनाटालताथका ॥ पंजलिउडे ॥ हाथजोडमाथेलगाडी ॥ पज्जुवासमाणे ॥ सेवाकरताथका पर्युपासनासेवाभक्तिनो विधिकरी ॥ एवंवयासी ॥ इमकहताहवा । सेणूणंभंते ॥ तेनिश्चे

दिसाणा स्माञ्जलिरत ॥ पज्जुवासमाणेत्ति ॥ पर्युपासीनः सेवमानो ऽनेन च विनेयकर्तव्येन भवर्गविधि रुपदर्शित आह च–विद्राविणयापरि व ज्झिएहिंगुतेहिंपञ्जलिउडेहिं। भतियजुमासपुव उवउत्तहिंसुणेयव्वति ॥ १ ॥ एवमयासित्ति ॥ एव वक्ष्यमाणप्रकार वस्तु भवादी मुक्तवान् ॥ से इति ॥ तत् यदुक्त पूर्वे सलमलितमित्यादि ॥ बूयति ॥ एव मर्थे तत्र तत्र स्यैवव्याख्यातत्वात्, अथवा से इति शब्दो मागधदेशीप्रसिद्धो ऽथश शर्थे वर्तते, अथशब्दस्तु वाक्योपन्यासार्थः, परिप्रश्नार्थोवा यदाह–अथप्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु, ॥ भूनमिति निश्चित मंतंति ॥ भुरो रामगच ततस हेमवन्त। कस्यावरूप सुखस्वरूपेतिवा प्रविकल्पावेसुखेचेतिवचना स्माकतज्जैस्यावा भवस्य संसारस्य भयस्यवा भी त रन्तहतुत्या ज्ञवान्तो भयान्तोवा। तस्यामन्त्रणं, हेभवान्त। हेभयान्त। भ्रान्। वा भासादिदीप्यमान भ्राजीप्तावितिवचनात्, भ्राजमाना वा दी प्यमान भ्राजृदीप्तावितिवचनात्, अयञ्च आदित आरभ्य भतेत्ति पर्यन्तो ग्रन्थो भगवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गस्य प्रथमशतस्य प्रथमोद्देशक स्य सबन्धाय भनिहितः, अथा नेनसम्बन्धना यातस्य पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्ये दमादिसूत्रम् ॥ चलमाणेचलिएइत्यादि ॥ अथ केनाभिप्रा येव भगवता सुधर्मस्वामिना पञ्चमाङ्गप्रथमशतप्रथमोद्देशकस्या र्थानुकथन कुर्वता चलनवाचक सूत्र मुपन्यस्त नान्यामीति? अत्रोच्यते इह चतुर्पु पुरुषार्थेषु मोक्षाख्यःपुरुषार्थो मुख्यः सर्वातिशायित्वात्, तस्यच मोक्षस्यसाध्यस्य साधनानाच सम्यग्दर्शनादीना साधनत्वेना व्यभिचारित्वा मुज

पज्जुवासमाणे एववयासी सेणूणन्नते चलमाणे चलिए १

हे भगवन् कल्याणरूप सुखस्वरूप एहवो मुगता भार्गव सवच आपना, अव परासको श्रीसुधर्मास्वामीये "चलमाणेचलिए" एहवोग्रन्थ सूत्रनी आदि भा ष्या भनेरामन्द चार्तिभाख्या हसपूछा? उत्तर, पुरुषार्थ विद्माहि मुख्य मोच, तेहनो साधवो सार तेतो कमनेचवे अपडो ते कमनाचयनाभणुक्रम च हिनामचो एचमैमबा तेवारे "चलमाणेचलिए" चलमाणेचलियो लेकम यापचो क्षितियमो चलामाघा भोगवा सन्मुखथया तेचमचलिएकहिये गवालयको भोगवचाव भसत्वातसमयवर्गेचे तिहाजे पहिलो चलमसमय तेहनेविषे चलनामांथी तेचलोकहीये जि

मनियमस्य प्राधना कार्यं सद्भि रिष्यते, उभयनियमस्त्वेव सम्यग्दर्शनादीनि मोक्षस्यैव साध्यस्य साधनानि नान्यस्या र्थस्य, मोक्षश्च तेषामेवसा धनानां साध्यो नान्येषामिति, तत्र मोक्षो विपक्षक्षया तद्विपक्षश्च मत्र सकमुक्ष्य कर्माणि तानमः सम्बन्ध सोपात्त कर्मणां प्रक्षये यमनुक्रम उक्तः चलमावेत्यादि ॥ तत्र ॥ चलमावेति ॥ चलत् स्थितिक्षया दुदय मागच्छत्, विपाकाभिमुखीभव दात्कर्मेति प्रकरणगम्यम् तच्चलित मुदितमिति व्यपदिश्यते चलनकालो ह्युदयावलिका तस्याश्च कालस्या सङ्ख्येयसमयत्वा दादिमध्यान्तयोगित्व कर्मपुद्गलानां मप्यनन्ताः स्कन्धा अनन्तप्रदेशा त्मका ते क्रमेण प्रतिसमयमेव चलन्ति तत्र योसौ वाद्यचलनसमय स्तस्मि चलदेव तच्चलित मुच्यत कथपुन सद्वर्तमानस्य दतीत भवती ? त्यत्रोच्यते —यथा— पट उत्पद्यमानकाले प्रथमतन्तुप्रवेशे उत्पद्यमानएवो त्पन्नोजयतीति उत्पद्यमानत्वं च तस्य प्रथमतन्तुप्रवेशकाला दारभ्य पट उत्पद्यत इत्येव व्यपदेशदर्शना त्सकलतन्तुवेशो त्पन्नत्व मुपपत्त्यामसाध्यते तथाहि—उत्पत्तिक्रियाकालएव प्रथमतन्तुप्रवेशे ऽसावुत्पन्नो यदि पुन

र्नोत्पन्नोऽभविष्य तदा तस्याःक्रियाया वैयर्थ्यमभविष्य निष्फलत्वा दुत्पाद्योत्पादनार्थाहि क्रियाभवन्ति, यथाच प्रथमेक्रियाक्षणे नासावुत्पन्न स्तथो त्तरेष्वपि क्षणे ष्वनुत्पन्नएवासौ प्राप्नोति, कोह्युत्तरक्षणक्रियाणा मात्मनि रूपविशेषो येन प्रथमसमये नोत्पन्न स्तदुत्तराभिस्तूत्पाद्यते यतः सर्वदैवा नुत्पत्तिप्रसङ्गः दृष्टाचोत्पत्ति रन्त्यतन्तुप्रवेशे पटस्य दर्शनात् अतः प्रथमतन्तुप्रवेशकालएव किञ्चिदुत्पन्न पटस्य यावचोत्पन्न मतदुत्तरक्रियणोत्पा द्यते यदि पुनरुत्पाद्येत तदा तदेकदेशो त्पादनएव क्रियाणां कालानान्च क्षयः स्यात्, यदिहि तदंशोत्पादननिरपेक्षा न्याः क्रिया भवन्ति तदोत्तरांशानुक्रमं मुत्पद्येत नान्यथा, तदेव यथा पट उत्पद्यमान एवोत्पन्न स्तथैवा सङ्ख्येयसमयपरिमाणत्वा दुदयावलिकाया आदिसम या स्यन्वति चलदेव कर्मचलित, कथ यतो यदिहि—तत्कर्मचलनाभिमुखीभूत मुदयावलिकाया आदिसमयएव नचलितं स्या तदा तस्या द्यस्य चलनसमयस्य वैयर्थ्यंस्या तत्रा चलितत्वात् यथाच तस्मिन् समये नचलित तथा द्वितीयादिसमयेष्वपि नचलेत् कोहि तेषा मात्मनि रूपविशेषो

पम प्रथमसमये मचलित मुत्तरेषु चलतीति । अतः सर्वैवा चलनप्रसङ्गः, चलित चान्त्ये समये चलन स्थितिपरिमितत्वेन कर्मोऽभावान्युपगमात्
चत चावलिकाकालादि समयएव किञ्चिचलित यच तस्मिं चलितं तमोत्तरेषु समयेषु चलति, यदितु तेष्वपि तदेवाद्य चलन भवे सदा तस्मि
मेव चलने सर्वेषा मुदयावलिकाचलनसमयानां क्षयः स्यात्, यदिहि तत् समयचलननिरपेक्षाण्यन्यसमयचलनानि भवन्ति तदो तरचलनानुक्रमत
मुत्येत नान्यथा, तदेवं चलदपि तत्कर्मचलितमवतीति ॥ १ ॥ तथा ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ उदीरणानाम अनुदयप्राप्त चिरेणा यामिना
कालेन यद्वेदितव्य कर्मदलिक तस्य विशिष्टा ध्यवसायलक्षणेन करणेना क्रष्योदयेप्रक्षेपणं, सापा सङ्ख्यसमयवर्तिनी तथाच पुनरुदीरणया उदीर
णा प्रथमसमयएवो दीर्यमाणं कर्म्म पूर्वोक्तपक्षदृष्टान्तेनो दीरितं भवतीति ॥ २ ॥ तथा ॥ वेइज्जमाणेवेइएत्ति ॥ वेदन कर्म्मणो भोगो ऽनुभव
इत्यर्थः, सच वेदन स्थितिक्षया दुदयप्राप्तस्य कर्म्मण उदीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य भवति, तस्यच वेदनाकालस्या सङ्ख्यसमयत्वा दाद्यसमये
वेद्यमानमेव वेदितं भवतीति ॥ ३ ॥ तथा ॥ पहेज्जमाणेपहीणत्ति ॥ प्रहाणंतु जीवप्रदेशैः सह संश्लिष्टस्य कर्म्मण स्तेभ्यः पतन, एतद्प्यसंख्येयसमय
परिमाणमेव तस्यतु प्रहाणस्या दिसमये प्रहीयमाणं कर्म्म प्रहीणं स्यादिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ छिज्जमाणेछिन्नेत्ति ॥ छेदन तु कर्म्मणो दीर्घकालाना

उदीरिज्जमाणे उदीरिए २ वेदिज्जमाणेवेदिए ३ पहेज्जमाणे पहीणे ४

म चपना पुष्वते चेपविषे तत् पुष्वा तेपुर्वाणवाओवे पड़िवाततुनीघपेखासे एपिचलावं ।१। उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदन उदयभाआणवी चर्चे चा
गासो वासे वेदवे तेहवसम यमाध्यवसायचपविकरो पाकर्षी उदेयाचोवे तेउदीरणाकरोये ते चसंख्यातसमये वर्त्ते ते तिवे उदीरणायेवरो प्रथमसम
य जे उदीरणामांयो चर्म ते उदीरणाचयाव तेमप्रथमसमयमीघपेचासे पूर्वकओ वयगोदृष्टांत तिचगीपरे आवबो । ३ । वेदिज्जमाणेवेदिए । वचावमनो
भोगवा चनुभवस्थम्; ते चसंख्यातसमयवीसवर्त्ते तिहां प्रथमसमये वेदवामांथो जेकर्म तेवेदोण कहीये प्रथमसमयनीघपेचावे पूर्वकओ वचनो दृष्टांत ते
यथा जोवप्रदेशसहितमिल्यो कर्म तेहनो जोवप्रदेशवको पतन ते पुण चसंख्यातसमयेवर्त्ते तिहां प्रथमसमये प्रहीयमा

स्थितीना प्रस्ताकरणे तथापवर्त्तमानविधानेन करणविशेषेण करोति, तदपिच च्छेदम संख्येयसमयमेव तस्य स्वादिसमये स्थितित च्छिद्यमान कम्म च्छिन्नमिति ॥ ५ ॥ तथा ॥ भिज्जमाणेभिन्नेति ॥ भेदस्तु कम्मण शुभस्या शुभस्यवा तीव्ररसस्या पवर्त्तनाकरणेन मन्दताकरण मन्दस्य चोद्वर्त्तना करणेन तीव्रता करण सो,पिचा संख्येयसमयएव, ततश्च तदाद्यसमय रसतो भिद्यमान कर्म्मभिन्नमिति ॥ ४ ॥ तथा ॥ डज्झमाणेदड्ढत्ति ॥ दाह स्तु कर्मदलिकद्रव्यणां ध्यानाग्निना तद्रूपापगमन मकर्म्मत्वजननमित्यर्थ तथाहि—काष्ठस्या ग्निना दग्धस्य काष्ठरूपापगमन भस्मात्मनाच प्रव म दाह सोपा कर्म्मणोऽपीति, तस्या प्यन्तर्मुहूर्त्तवर्त्तित्वेना सख्येयसमयस्यादिसमये दह्यमानदग्धमिति ॥ ७ ॥ तथा ॥ मिज्जमाणेमळेति ॥ म्रिय माण मायुःकर्म मृतमितिव्यपदिश्यते, मरण ह्यायुःपुद्गलानामाय सोपा सख्येयसमयवर्त्ति भवति तस्यच कम्मणः प्रथमसमया दारभ्यावीचिकमरणे मा शुरुण मरणस्यजावा म्रियमाण मृतमिति ॥ ८ ॥ तथा ॥ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णेति ॥ निर्जीयमाणं निसरा मपुनर्भावेन क्षीयमाणकर्म्मनिर्ज्जीर्ण

छिज्जमाणेछिन्ने ५ भिज्जमाणेभिन्ने दज्झमाणेदड्ढे ७ मिज्जमाणेमळे ८ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ९

नवम ते मधोच थवतां प्रथमाथकीचे पूर्वोक्त पयाछेत तेहनीपरे ॥४॥ छिज्जमाणेछिन्ने ॥ तथा छेदनथकता दीर्घकालस्थितिकर्मनी प्रकाशकरीनी ते अपवर्त्तनानामकरणविशेषेकरी करें ते पणिवलेण असंख्यातसमयवर्त्ती तेहने पहिले समयेस्थितिकर्मनो छेदमान छेद्याथकोके ॥ ५ ॥ भिज्जमाणेभिन्ने ॥ तथा भेदकहिये शुभनो अथवा अशुभ कर्मना भेदनो तीव्ररसने अपवर्त्तनाकरणेंकरी मंदपणे करवो मंदरसने उद्वर्त्तनाकरणेंकरी तीव्ररसकरवो ते पणि असंख्या तसमये वर्त्ते तिहां पहिले समये रसथी भिद्यमानकर्म भेद्योकहिये ॥ ६ ॥ दज्झमाणेदड्ढे ॥ तथा दाहकहिये कर्मरूपियाद्रव्यनो ध्यानाग्नियेंकरी तद्रूप अपनयन थकमपणोंकरिवा जिम काष्ठअग्निकरी बाल्या तेमकरूप तिम कर्मने पणि ते पणि असंख्यातसमये वर्त्ते तेपहिले समये बालता थोडा कर्मतेबाल्यो कहो से पूर्ववत हरीत ॥ ७ ॥ मिज्जमाणेमळे ॥ तथा मरणकहिये आउखापुद्गलना क्षय ते मरवामाड्या ते मूवोकहीये तेपणि असंख्यातसमयेवर्त्ते तेहना अथवा प्रथमसमयथी मारभी आवीचिमरणेकरी प्रतिसमयमरणना भावथको मरवामांड्या ते मूया पूर्वोक्त पटहरीत ॥ ८ ॥ णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे ॥

चीकमिति व्यपदिश्यते निर्जरयस्या सर्वेयसमयप्राविस्वेन तत्प्रथमसमयएव घटनिष्पत्तिदृष्टान्तेन निर्जीर्णत्वस्योपपद्यमानत्वादिति, घटदृष्टान्तश्च सवपदेषु सम्भावनिकोवाच्यः ॥ ९ ॥ तदेव मेतान्नवपदान् गौतमेनभगवता भगवान् महावीरः पृष्टःस एवाच ॥ इतेत्यादि ॥ अथकस्माद्भगवन्तं गौतमः पृच्छति? विरचितद्वादशाङ्गतया विदितसकलश्रुतविषयत्वेन निखिलसंशयातीतत्वेनच सर्वज्ञकल्पत्वात् तस्य, आहच–सखाईएणभवे साहइजंवाप रोऽपुच्छेज्जा । णयणंअणाइसेसी वियाणईएसछउमत्थोत्ति? ॥ १ ॥ नैव मुक्तगुणत्वपि छद्मस्थतया नाभोगसम्भवात् यदाह—नहिनामानाभोगः छद्मस्थस्येहकस्यचिन्नास्ति । यस्माज्ज्ञानावरणं ज्ञानावरणप्रकृतिकर्मेति ॥ १ ॥ अथवा जानतएव तस्यप्रश्नः सम्भवति, स्वकीयबोधसंवादनार्थं अज्ञलोकबोधनार्थं शिष्याणांवा स्ववचसि प्रत्ययोत्पादनार्थं सूत्ररचनाकल्पसम्पादनार्थंचेति, तत्र ॥ इतागोयमेत्ति ॥ इतइति कोमलामन्त्रणार्थो दीर्घत्वंच मागधदेशीप्रभव मुभयत्रापि, चलमाणेइत्यादेः प्रत्युच्चारणन्तु यदेव पठित मित्यादीना स्वाभिमतत्वप्रदर्शनार्थं, यद्वा पुनराह—इतागोयमाइत्य प इतइति, एवमेतदि त्यभ्युपगमवचन यदभिमत तत्प्रदर्शनार्थं चलमाणेइत्यादि प्रत्युच्चारितमिति, इह यावत्करणस्थानि पदानि सुमती तान्येव, एव मेतानि नवपदानि कर्माश्रित्य वर्तमानातीतकालसामानाधिकरण्यजिज्ञासया पृष्टानि निर्णीतानिच, अथै तान्येव चलनादीनि प रस्परतः किं तुल्यार्थानि भिन्नार्थानि वेति? पृच्छां निर्णयञ्च दर्शयितुमाह ॥ एएणंभन्ते ॥ इत्यादिव्यक्त नवरम् ॥ एगठत्ति ॥ एकार्था न्यनन्यवि

हृतागोयमा चलमाणेचलिएजावणिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे एएणन्नतेनवपदाकिंएगठा

तदा चोथपदेषुगवो यम निजरयामांचो येमक्षायरयामांचा ते कमनिजरा वगसाचोचो चहोसे तेपथि वसज्यातसमयभावोवे, प्रथमसमयनो चपेचाये तेणी पूर्वोक्तपठ हशते ए वसहशत गर्वेयपदे जाणवो । ८ । इसे गौतमेपछ्या ? भगवंते वाच्या । हतागोयमा । चलमाणेचलिए जावणिज्जरिज्जमाणे निज्जिणे । इत इसा कोमलामंत्रणे,भयवा इत कहता हेगौतम वे भय इमहीज चलमाणेचलिए, पाववामांचो ते पावोजवकोवे यावत् निजरवामां योते निजराजाणोवे, यसीगौतमवडे एमभतनवकर्मभपिकारोने वतमानभतीतकालसमानाधिकरणेपूछ्या तेनिर्णयकोधा यपि। एएणंभंतेनवपदावि

पयाथि यत्प्रयोजनानिवा ॥ नाणाघोसत्ति ॥ इह घोषा उदात्तादय ॥ नाणावंजणेत्ति ॥ इह व्यंजना न्यक्षराणि ॥ उदाहृति ॥ उताहो निपातो विकल्पार्थः ॥ नाणठत्ति ॥ भिन्नाभिधेयानि, इह च चतुर्भंगीपदेषु सुष्ठा, तत्र च कानिचि देकार्थो न्येकव्यंजनानि यथा क्षीरक्षीरमित्यादीनि ॥ १ ॥ तथा न्यानि एकार्थानि नानाव्यंजनानि, यथाक्षीरं पय इत्यादीनि ॥ २ ॥ तथा नेकार्थो न्येकव्यञ्जनानि, यथा गोव्यमाहिषाणि क्षीराणि ॥ ३ ॥ तथा न्यानि नानार्थानि नानाव्यञ्जनानि' यथा घटपटशकटादीनि ॥ ४ ॥ तदेव चतुर्भंगीसम्भवेपि द्वितीयचतुर्थभंगकौ प्रथमसूत्रे गृहीतौ परिदृश्य मानननानाव्यञ्जनतया सदृश्यो रसम्भवात् निर्वचनसूत्रेतु चलनादीनि चत्वारिपदा न्याश्रित्य द्वितीया, विद्यमानादीनितु पञ्चपदान्याश्रित्य चतुर्थ इति, ननु चलितादीना मर्थानां व्यक्तभेदस्वा त्कथ मायानि चत्वारि पदा न्येकार्थानी ? त्याशङ्क्याह ॥ उप्पन्नपक्खस्सत्ति ॥ उत्पन्न मुत्पादो नावे

णाणाघोसा णाणावंजणा उदाहु णाणठा

एयहा चाणापासा । हेभगवन् एकवपदर्थं एकना एक मथवे, एकमयोजमहे वापगम्य इत्योउदात्त अनुदात्त स्वरित एमम्ह मात्मात्र वावचा उचारव रूपतेपृदावशवे, वाचा तेवर्मा जुदा२ मववा भ्रजमहे । उदाहु निपात विकल्पार्थेछे एतले ववा वावड़ा नानाप्रकारना मथवे । वाचा मा नाममकारना या उचार, वा नानामकारना ब व्यंजनयकार इहां चउभंगी वांचवो मी एकमघ्द एकमय एकव्यंजन जिमखीरखीर इत्यादि १ तथा एकमर्थ मनेकव्यंजन यथा खीरपय इत्यादि २ तथा मनेक मथ एकव्यंजन यथा मय गाय महिषीनो खीर ३ तथानाना मथ नानाव्यंजन यथा घट पटादि ॥ इहां चउभंगीमो संभवछे तोपवि बीजी चौथीमांगो ग्रह्यो, बीजाहीजमांगाना मर्संभववको एसूत्रनेविषे चलनादि चारपद माश्री बीजोभांगो मनेविद्धिज्जमाणे इत्यादि पंचपदभाश्री चौथोमांगो वांचवो । भगवतवछे हेगौतम च चलमाणेचलिए तेकम चउत्थभियये एपहिलो १ । ए उदीरयमाणे उदीरिये तेकम उदीरिओवछोवे एबीजो २ ॥ तथा वि वेदमाणेवेदिये तेकम वेदंवछिये एत्रीजो ॥ पहिछीजमाणेपहीणे तेकम प हीनवद्ध कहोजे एचोथो ॥ १ ॥ ए एव च० चारिपद ए एकार्थवाचा । एहोमो एकमवछे, वा मनेक प्रकारना वो घोष उदात्तादिक तथा वा नानाप्रकारना व व्यंजन

त्प्रत्ययविधानात् तस्य पद्य परिग्रही ग्ङ्गीकार' पदपरिग्रहइति धातुपाठादिति, उत्पन्न पद इदच पद्गा तृतीयायत्वा तुल्यक्रपदेव सत्या राङ्गीकारेव उत्पादाख्यं पर्यायं परिगृह्य कार्या म्येता मुच्यन्ते अथवा उत्पन्नपदस्य उत्पादाख्यवस्तुविकल्पस्या भिधायकानी तिक्षेपः, सर्वथा मे पा मुत्पाद माश्रित्यै कार्यकारित्वा देकान्तर्मुहूर्तमध्यनाविस्वन तुल्यकालत्वा चैकार्थिकत्व मितिभावः, स पुन उत्पादाख्यः पर्यायो विशिष्टः केव लोत्पादएव, यतः क्रमचिन्तायाङ्कर्मणः प्रहाणे पसङ्कयं कवलज्ञानमोक्षप्राप्ती, तन्नेतानि पदानि केवलोत्पादविषयत्वा देकार्थोन्युक्तानि, यस्मात् कवलज्ञानपर्यायो जीवेन न कदाचिदपि प्राप्तपूर्वो यस्माच प्रधान सत्व सदर्थरव पुरुषप्रयास सत्सा त्स्सएव केवलज्ञानोत्पत्तिपर्यायो भ्युपगत, एषा म्य पदानामेकार्थानामपि सता मयमर्थः सामर्थ्यप्रापितक्रमो यदुत पूर्व मवचलति उदेतीत्यर्थः उदितश्च वेद्यते अनुभूयत इत्यर्थ तत्र द्विधा स्थितिक्षया दुदयप्राप्त मुदीरणया चोदयमुपनीतं ततचा नुभवानन्तर तत्प्रहीयत इतस्तत्वा न्नीवा दपयातीत्यर्थ एतच टीकाकारमतेन व्याख्या त मन्येतु व्याख्यान्ति स्थितिबन्धाद्यविशेषितसामान्यकर्माश्रयत्वा देकार्थिका न्येतानि केवलोत्पादपक्षएव साधकानीति चत्वारि चलनादीनि प दा न्येकार्थिकानी त्युक्ते शेषा स्यनेकार्थिकानीति सामर्थ्यादवगतमपि सुखावबोधाय साक्षा त्प्रतिपादयितुमाह ॥ छिज्जमाणेत्यादि ॥ व्यक्त मव

णाणाघोसा णाणावजणा । गोयमा । चलमाणेचलिए उदी
रिज्जमाणेउदीरिए वेइज्जमाणेवेइए पहेज्जमाणेपहीणे एएण
चत्तारिपया एगठा णाणाघोसा णाणावजणा उप्पन्नपक्खस्स

ते भवत चलनादिक पदमे भव ज्ञानभेदवको जिम पत्तिसा चारिपद एकार्थकसा इसी पाठवाचे कहेछे । उप्पन्नपक्खस्सेत्ति चलमाणेचलिए इत्यादि चारिपद उत्पादपदे मते जिनकारण इसीविषायगवो तेउत्पादनामपर्यायविशेष केवलउत्पाद शीघ जेकारणवो कर्मचितानेविषे कर्मने क्षयथके यस मार्ग एककेवलज्ञान मोक्षमोष, तिहांचारिपद केवलउत्पादविषयको एकार्थ कह्या, जेकारणे केवलज्ञान पर्यायजीवे पहिलेकिवारे पाम्योनथी य

र्। मापद्यति ॥ सामायानि मानार्थेस्यं स्वेव छिद्यमानं छिन्नमित्येत स्पद स्थितिबन्धाश्रय' यतः सयोगिकेवली मन्तकाले योगनिरोध कर्तुकामो वे दनीयनामगोत्राख्याना तिसृणां प्रकृतीनां दीर्घकालस्थितिकानां सयापवर्तनया न्तर्मौहूर्तिक स्थितिपरिमाण करोति तथा भिद्यमानंभिन्नमित्येत स्प मनुभागबन्धाश्रयं तत्रच यस्मिन् काले स्थितिघात करोति तस्मिन्नेव काले रसघातमपि करोति केवल रसघात स्थितिखण्डकेभ्यः क्रमप्रव तेभ्यो ऽनन्तगुणाभ्यधिको ऽतो ऽनेन रसघातकरणेन पूर्वस्मा द्भिन्नार्थेपद भवति तथा दह्यमान दग्धमित्येत स्पद प्रदेशबन्धाश्रय प्रदेशबन्ध स्त्वन न्तानामनन्तप्रदेशानां स्कन्धानां कर्मत्वापादन तस्यच प्रदेशबन्धसमयःसस्कानां पञ्चह्रस्वाक्षरोच्चारणकालपरिमाणया ऽसङ्ख्येयसमयया गुणश्रेणीरचनया पूर्वेरचितानां शैलेश्यवस्थायामविसमुच्छिन्नक्रियध्यानाग्निना प्रथमसमयादारभ्ययावदन्त्यसमय स्ताव त्प्रतिसमयं क्रमेण सङ्ख्येयगुणवृद्धानां कर्मपुद्ग लानां दहन दाहो ऽनेन दहनार्थेनेद पूर्वस्मा त्पदा द्भिन्नार्थेपदं भवति दाह शब्दश्चा त्र्यपारूढोपी ह मोक्षचिन्ताधिकारा न्मोक्षसाधन उपलक्ष णमयिपयपव गत्तव्यति तथा म्रियमाण मृतमित्येतत्पद मायुःकर्मविषय यत आयुष्कपुद्गलानां प्रतिसमयं क्षयोमरण मनेनच मरणार्थेन पूर्वपदे भ्यो भिन्नार्थत्वा द्भिन्नार्थेपद भवति, तथा म्रियमाण मृतमित्यनेना युःकर्मक्षय यत कर्मैव तिष्ठ ज्जीवती त्युच्यते कर्मैवच जीवादपगच्छ न्म्रियत इत्युच्यते, तथमरणं सामान्येनो क्तमपि विशिष्टमेवा भ्युपगन्तव्य यतः संसारवर्तीनि मरणा न्यनेकशो ऽनुभूतानि दुःखरूपाणिचेति किन्तैर्मरणैरिह पुनः

छिज्जमाणेछिण्णे भिज्जमाणेभिण्णे डज्झमाणेदड्ढे मिज्जमाणेमए णिज्जरिज्जमाणे

मेकेसमयाम प्रयाम समो चौथमो मयावपर्व केवमप्रानमिमितेवाके तेवारचवी तेविज केवलज्ञानोत्पत्ति पर्यायकरी । केवलपक्षिमो तेचवे केवली वे दउदयावे पने उदयपाम्या ते वेदीयें मनुभविये इत्यय । तेवेजस्थितिपकवकी उदीरणावेंकरी उदयपाम्यो ते मनुभव्यापावे मपोवज्ञाय, तेमाटे उत्पाद पचे एशारिपदपकायकह्या । पकवा स्थितिबंधादि परियेपित सामान्यकम पाचयकवो एकावले वेदनोत्पादपमनां साधवावे ते उत्पन्नपचे कमपिता ये तेहन् मपोमयन् तेहयो ॥ वि एपदनेविये स्थितिनोविपमकह्या । तथा भि दयो रसनोविमसकह्या । द० देशोकम दावरूप विमसकह्यो मि

पदे पुनरय मरय मन्त्यं सर्वकर्मक्षयस्वरूपं भपवमहेतुभूतमिति वियर्तितमिति । तथा निर्ज्जीर्यमाणंनिर्ज्जीर्णमित्येतत्पदं सवकर्माभावविषयं य
ता सवकर्मनिर्जरणं न कदाचिद् प्यनुभूतपूर्वं जीवेनेति यतो ऽनेन सर्वकर्माभावरूपनिर्ज्जरणार्थेन पूर्वपदेभ्यो भिन्नार्थत्वा द्भिन्नार्थं पद भवति य
येतानि पदानि विशेषतो नानार्थान्यपि सन्ति सामान्यत कस्यपदस्या भिधायकतया प्रवृत्तानी ? त्यस्या माशङ्कायामाह ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥
विगतं विगमो वस्तुनो ऽवस्थान्तरापेक्षयाविनाशः ' सएव पक्षो वस्तुधर्म स्तस्यवा पक्षः परिग्रहो विगतपक्ष स्तस्य विगतपक्षस्य वाचकानीतिशेषः, विगत
स्थिता शेषकर्माभावो भिमतो जीवेन तस्या प्राप्तपूर्वतया त्यन्तमुपादेयत्वा तदर्थस्याध पुरुषप्रयासस्येति, एतानि चैव विगमार्थानि भवन्ति, छिद्य
मानपदेहि स्थितिखण्डनं विगम उक्तो, भिद्यमानपदे त्वनुभावभेदो विगमो, दह्यमानपदे त्वकर्मताभवन विगमो, म्रियमाणपदे पुन रायु कर्माभावो
विगमो, निर्ज्जीर्यमाणपदे त्वशेषकर्माभावो विगमउक्त, सर्वेष मेतानि विगतपक्षस्य प्रतिपादकानी त्युच्यन्ते एवञ्च यत्पञ्चमाङ्गादिसूत्रोपन्यासे प्रेरित
मुत केनाभिप्रायेणेद सूत्र मुपन्यस्तमिति ? तत्केवलज्ञानोत्पादसवकर्मविगमाभिधानरूपसूत्राभिप्रायव्याख्यानेन निर्णीतमिति, एतत्सूत्रसवादि
नियुक्तिगाथार्थोप्याह–उप्पज्जमाणकालं उप्पन्नविगयपविगच्छन्तं । दवियपणवयतो तिकालविसयविसेसेइत्ति ॥ १ ॥ उत्पद्यमानकालमित्यनेन प्राथ
मया दारभ्यो त्पन्नसमयं याव दुत्पद्यमानस्यस्ये त्वा द्वर्तमानभविष्यत्कालविषयं द्रव्य मुक्त, मुत्पन्न मित्यनेन तु अतीतकालविषय, मेव वि
गतं विगच्छदि त्यनेनापीति ततयो त्पद्यमानादिप्रकारापन्न सजगवान् द्रव्य विशेषयति कथ त्रिकालविषय यथा भवतीति सवादगाथाय ' यस्मेतु

णेणिज्जिम्मे एगणपचपदा णाणठा णाणाघोसा णाणावंजणा विगयपक्खस्स

दर्शनावृतमना यथावएरिणम । तदा विष्वरिक्षमाचे इहसर्वकमना विगमकथा इखेवारचे विगवपचे एकार्था ॥ ए यह पं पांचे ई पदने
नावद्वा नानापयपवृत्ताय ॥ नाना नानाप्रकारना घोसा घोषउदात्तादिक ॥ नाना नानाप्रकारना व्यंजना व्यंजनपद ॥ विगयपक्खस्स० वि
गतधर्मो पक्षस्यातिरा पेचाये विनाश तेहनोरूपच परिग्रह ते विगतपक्षकहीये एपंचपद विगतपक्षनो वाचक छे ए नवपदने विषे पर्यायोछे ॥

कर्मेतिपदस्य मूत्रे मभिधाना चलमादिपदानि सामान्येन व्याख्यान्ति न कर्मापेक्षयैव, तथाहि ॥ चलमाणेचलिएत्ति ॥ इह चलन मस्थिरत्वपर्यायेण वस्तुन उत्पादः ॥ वेइज्जमाणेवेइएत्ति ॥ व्यजमान कम्पमान व्येजित कम्पित मणुकम्पन इतिवचनात् व्येजममपि तद्रूपापेक्षयो त्पादएव ॥ उदीरिज्जमाणेउदीरिएत्ति ॥ इहो दीरण स्थिरस्य सत प्रेरण तदपि चलनमेव ॥ पहेज्जमाणेपहीणेत्ति ॥ प्रहीयमाण प्रभ्रश्यत् परिपतदित्यर्थ , प्रहीण प्रभ्रष्ट परिपतितमित्यर्थ इहापि प्रहीण चलनमेव चलनादीना चैकार्थत्वं सर्वेषा गत्यर्थत्वात् ॥ उप्पन्नपक्खस्सत्ति ॥ चलत्वादिना पर्यायेणो त्पन्न स्वसद्धपक्षस्याभिधायका न्येतानीति , तथा छेदनदहनमरणनिज्जरणा न्यकर्मार्थान्यपि व्याख्येयानि, तद्व्याख्यानञ्च प्रतीतमेव भिन्नार्थता पुन रेवामर्थ–कुठारादिना लतादिविषयश्छेद तोमरादिना शरीरविषयो भेदो, अग्निना दार्वादिविषयो दाहो , मरणन्तु प्राणत्यागो, निज्जरा त्वतिपुरातीभवनमिति ॥ विगयपक्खस्सत्ति ॥ भिन्नार्थान्यपि सामान्यतो विनाशाभिधायका न्येतानीत्यर्थः , नच वक्तव्य किमेते चलनादिभि रिहनिरूपिते रतत्वरूपस्यादेयामिति मतस्वरूपस्याभिधुत्वात् तदभिज्ञेय मिथ्यनयमतेन वस्तुस्वरूपस्य प्रज्ञापयितु मारब्धत्वा–तथाहि–व्यवहारनय चलित मेव चलितमितिमन्यते निश्चयस्तु चलदपि चलितम् अत्र बहुवक्तव्यं तच विशेषावश्यका द्विशेषा जिज्ञास्यमामक्रमाभिवरिताचावसेयमिति , इहा द्ये प्रश्नोत्तरसूत्रद्वये मोक्षतत्त्व विन्तित, मोक्षः पुन जीवस्य, जीवाश्च नारकाद्य चतुर्विंशतिविधा, यदाह—नेरइयाअसुराई पुढवाइवें दियादओचेव पचेंदियतिरियनरा वंतरजोइसियवेमाणी २४ ॥ १ ॥ तत्र नारका तावत् स्थित्यादिभि र्चिन्तयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ निर्गत मयमिष्टफल कर्म येभ्य ते निरया स्तेषुजया नैरयिका नारका तेषा नैरयिकाणां ॥ भतेत्ति ॥ भदन्त ॥ केवइयकालस्सति ॥ कियाकालो कालदेति कियत्काल

णेरइयाणंभंतेकेवइयकालंठिई पणत्ता । गोयमा । जहणेणंदसवाससहस्साइंठिई

पाळे मागधी भाषा विषे तेमाय तो जीवमेदाय जीवते नारको पाक्रिदेरे चउवीसदंडक बतावे तेचउवीस दंडकना नाम । नारकी असुरादि ११ पृथिव्यादि १६ बेइंद्रीयादि १८ पंचेंद्री तिर्यंच २ मनुष्य २१ व्यंतर २२ ज्योतिषी २३ वैमानिक २४ इति ॥ हिवे नारकीनी स्थितिपूछे छे १ नेरइयाण

र्न किपरकामंयापत् ॥ ठिइत्ति ॥ स्थितिरायु कर्मवशात् नरके स्थानम् ॥ पण्णत्तेति ॥ प्रज्ञप्ता प्ररूपिता भगवद्भि रन्यतीर्थकरैर्येति प्रश्नः ॥ गोयमे त्यादि ॥ निर्वचनं व्यक्तमेव नवरं ॥ दसवाससहस्साइति ॥ प्रथमपृथिवीप्रथमप्रस्तटापेक्षया ॥ तत्तीसंसागरोवमाइति ॥ सप्तमपृथिव्यपेक्षयेति मध्य मात जघन्यापेक्षया समयाद्यधिका मामध्य गम्येति अनन्तरं नारकाणां स्थितिरुक्ता तेषोच्छ्वासादिमन्त इत्युच्छ्वासादिनिरूपणायाह ॥ णेरइया यमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ॥ केवइकालस्सत्ति ॥ प्राकृतशैल्या कियत् कालात् कियता कालेनेत्यर्थः ॥ आणमंतित्ति ॥ आनन्ति अनप्राणने इतिधातुपाठा न् मकारस्यागमिकत्वात् ॥ पाणमंतित्ति ॥ प्राणन्ति याआद्यौ समुच्चयार्थौ एतदेवपदद्वयं क्रमेणाह स्पष्टयन्नाह ॥ ऊससंतिया णीससंतिवेति ॥ यदुक्तं आनन्तितदेवोक्तं मुच्छ्वसन्तीति तथा यदुक्तं प्राणन्तितदेवोक्तं निःश्वसन्तीति अथवा आनमन्तिप्राणमन्तीति यमुपकृत्वे इत्यस्या ने कामत्वेन प्रमनायत्वात् अन्येत्वाहुः-आनन्तिया प्राणन्तिवेत्यनया ध्यात्मक्रिया परिगृह्यते उच्छ्वसन्तियानिःश्वसन्तिवेत्यनेन वाह्येति ॥ जहा उस्सासपएत्ति । एतस्य प्रश्नस्य निर्वचनं यथोच्छ्वासपदे प्रज्ञापनायाः सप्तमपदे तथाध्याख्यं तद्वेदं ॥ गोयमा सययसंतयामेव आणमंतिवा पाणम

पण्णत्ता । उक्कोसेणतत्तीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । णेरइयाणंभंतेकेवइयका

लस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा णीससंतिवा ॥ जहाउस्सासपदे

नारकोनो । भंते । हेभगवन् णेरइयाणं केतलाकालनी । ठिइ । स्थिति । पण्णत्ता । कही स्थिति ते मर्यादानाम गवाम समकसनी फल तेहने नारकोना योगे इतिप्रश्न ? उत्तर, हेगोतम । जहन्नेणं । जघन्यथकी दसवाससहस्साइं । दसहजारवर्षनी ठिइ पण्णत्ता स्थितिकही । एह रत्नप्रभा पृथिवीना प्रथम प्रस्त र आश्रीनेजाणवो ॥ उक्कोसेणं । उत्कृष्टी तेत्तीसं । तेत्रीस । सागरोवमाइं । सागरोपमनी । ठिइपण्णत्ता । स्थिति । कही ते सातमी पृथिवीनी अपेक्ष ये जाणवो ॥ ते प्राणना मामामामे पूछे ते अधोपूछेछे ? णेरइयाणं । नारकीने । भंते । हेभगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आणमंतिवा पाणमंति वा । अभ्यंतर सासलेवो । ऊससंतिवाणीससंतिवा । बाहिरउसासले । अथवा आणमंतिवा ऊससंतिवा अनेपाणमंतिवा एहनो पर्याय णीससं

तिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा इति ॥ तत्र सतत मनवरतं यतितु-क्षितादि ते ऽतिदुःखव्याप्तस्यच निरन्तरमेवो च्छ्वासनि श्वासौ इवयेते सतत त्वच प्रायो वृत्यापि स्यादित्यतआह ॥ संतयामेवत्ति ॥ सन्ततमेव नैरन्तमपोपि तद्विरहो स्तोतिभावः दीर्घत्वम्वेह प्राकृतत्वात् भायमगतीत्यादेः पुनरुचारणं शिष्यवचने मादरोपदर्शनार्थं गुरुणि राद्धिपमाणवचनादि शिष्या सन्तोषवन्तो भवन्ति तथाच योमःपुन्येन प्रश्नमयकार्यनिर्णया दिषु घटन्ते लोके वादेययचना भवन्ति तथाच प्रश्नोपकार स्तीर्थोमिवृद्धियेति भय तेषामेवाहारप्रश्नयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त न वरम् ॥ भाहारट्ठित्ति ॥ भाहारं भर्थयन्ते प्रार्थयन्त इत्येवंशीला भर्थीवा प्रयोजनमेषामस्ती त्यर्थिन भाहारेण भोजने माथिम भाहारस्य भोजन स्या र्थिन भाहारार्थिनः ॥ जहापन्नवणाएत्ति ॥ भाहारट्ठी इत्येतत्पदप्रभृति यथा प्रज्ञापनाया चतुर्थोपाङ्गस्य ॥ पढमएत्ति ॥ भाद्ये ॥ भाहारउ देसएत्ति ॥ भाहारपदस्या ष्टाविंशतितमस्य उद्देशकः पदस्यदेशोया द्वाहारोद्देशक स्तत्र भणितम् ॥ तहाभाणियव्वत्ति ॥ तेन प्रकारेण वाच्यमिति। तत्र नारकाहारवक्तव्यतापा बहूनि द्वाराणि भवन्ति तत्सङ्ग्रहार्थं पूर्वोक्तस्थित्युच्छ्वासलक्षणद्वारद्वयदर्शनपूर्विका गाथामाह ॥ ठिइगाहा ॥ व्या स्या स्थितिर्नारकाणां वाच्या उच्छ्वासयतौक्तावेव तथा ॥ भाहारत्ति ॥ भाहारविषयो विधिर्वाच्यः सर्वेवम् ॥ नेरइयाणं भंते। भाहारट्ठी हं ताभाहारट्ठी ॥ नेरइयाण भंते। केवइ कालस्स भाहारट्ठे समुप्पज्जइ ? ॥ भाहारार्थे भाहारप्रयोजन माहारार्थित्वमित्यर्थः ॥ गोयमा। नेरइयाणं

णेरइयाणजतेमाहारठी । जहापन्नवणाए पढमसए माहारुद्देसए तहाजाणियव्व ॥ गाहा ॥
ठितिउस्सासाहारे किंवाहारेइसव्वउवावि । कइभागसव्वाणिव कीसवजुज्जोपरिणमंति ॥ १ ॥

तिवा ऊवासयासपरे। एमिमपवचा मोहि सातमेंपटें आवे तिमवांचवा, ते इम। संतत सतवा ॥ मेनिरंतर समयमावना विरह विनाषे घवा दुषमाठें ॥ नेरइयाणं। नारकीने। भंते। हेभगवन्। भाहारठी। भाहारनाभर्थीहे, भाहारना वांछक छे ॥ जहा। जिम पन्नवणाए। पन्नवणानो चतुर्थोपा मां पदना। पढमसए। पहिला शतकनो। भाहारउद्देसए। भाहार उद्देशामांहि जिमकह्यो छे। तहाभाणियव्वं। तिमजाणवो। गाहा। ठिति। स्थितिनारकी

दुविहे आहारे पण्णत्ते ॥ अभ्यवहारक्रियेत्यर्थः ॥ तंजहा आभोगनिव्वत्तिए अणाभोगनिव्वत्तिए ॥ तत्रा भोगो ऽभिसन्धि स्तेन निर्वर्तितः इत्त आभो गनिर्वर्तित आहारयामीती च्छापूर्वकइत्यर्थ अनाभोगनिर्वर्तित आहारयामीति विशिष्टेच्छा मन्तरेणापि प्रावृट्काले प्रचुरतरप्रस्रवणाद्यभिव्यङ्ग्य शीतपुद्गलाद्याहारवत् ॥ तत्थणं जसे अणाभोगनिव्वत्तिए सेणं अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ अनुसमयं प्रतिक्षण सन्ततातितीव्रक्षुद्वेद नीयकर्मोदयत ओजआहारादिना प्रकारेणेति ॥ अविरहिएत्ति ॥ ऋजुसूत्रनयापेक्षया पादपि न विरहित अथवा प्रदीपकालोपयोग्याहारस्य सकृद्ग्रहणे पि प्रोगो भूममर्यस्या इतो ग्रहणस्यापि सातत्यप्रतिपादनार्थं अविरहितमित्याह ॥ तत्थणं जेसे आभोगनिव्वत्तिए सेणं असंखेज्जसमइए अंतोमु हुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ असंख्यातसामयिकः पल्योपमादिपरिमाणोपि स्यादतआह ॥ अंतोमुहुत्तिएत्ति ॥ इदमुक्तंभवति आहारयामी त्यभि लाष भतया गृहीताहारद्रव्यपरिणामतीव्रतरदुःखजननपुरस्सर मन्तर्मुहूर्त्ता न्निवर्ततइति ॥ किमाहारेंतित्ति ॥ किंस्वरूपंवा वस्तु नारका आहारय

न्तीति वाच्यं ? वाचकः प्रसूत्रे तभेदं प्रश्ननिर्वचनसूत्र ॥ नेरइयाणं भंते । किमाहारमाहारेंति ? गोयमा । दव्वओ अणंतपएसियाइं ॥ अनन्तप्रदेशवन्ति पुद्गलद्रव्याणीत्यर्थं तदन्यथा अयोग्यत्वात् ॥ खेत्तओ असंखेज्जपएसावगाढाइं ॥ न्यूनतरप्रदेशावगाढानिहि न ग्रहणप्रायोग्याणि अनन्तप्रदेशावगाढा नितु न सन्त्येव सकलस्यापि लोकस्य असंख्येयप्रदेशप्रमाणत्वात् ॥ कालओ अण्णतरठिइयाइं ॥ जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थितिकानीत्यर्थः, स्थितिश्च आहारयोग्य स्कन्ध परिणामेऽवस्थानमिति ॥ भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आहारेंति ५ । जाइं भावओ वण्णमंताइं आहारेंति किं ताइं एगव ण्णाइं आहारेंति जाव किंपंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा । ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि आहारेंति जाव पंचवण्णाइंपि आहारेंति विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइंपि आहारेंति जावसुक्किलाइंपि आहारेंति ॥ तत्र ॥ ठाणमग्गणं पडुच्चेति ॥ तिष्ठन्त्यस्मि न्नितिस्थानं सामान्यं यथा — एकवर्णं द्वि वर्णमित्यादि ॥ विहाणमग्गणं पडुच्चेति ॥ विधानं विशेषः कालादिरिति ६ । जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइंकिं एगगुणकालाइं आहारें

ति जाव दसगुणकालाइं आहारेंति संखेज्जगुणकालाइं असंखेज्जगुणकालाइं अणंतगुणकालाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकालाइंपि आहारेंति ७। एवं जावसुक्किलाइं ११। एवं गंधतोवि १३। रसतोवि १८। जाइं भावओ फासमंताइं ताइं ठाणमग्गणं पडुच्च नोएगफासाइं आहारेंति नोदुफासाइं आहारेंति नोतिफासाइं आहारेंति ॥ एकस्पर्शादीनि असंख्येया आत्मप्रदेशिकतासूक्ष्मपरिणामात्या ग्रहणायोग्यत्वात् ॥ चउफासाइं आहारेंति जाव अट्ठफासाइं आहारेंति ॥ बहुप्रदेशिकताबादरपरिणामात्या ग्रहणयोग्यत्वादिति ॥ विहाणमग्गणं पडुच्च कक्खडाइंपि आहारेंति ॥ जाव लुक्खाइंपि आहारेंति १९। जाइं फासओ कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइं आहारेंति ? गोयमा ! एगगुणकक्खडाइंपि आहारेंति जाव अणंतगुणकक्खडाइंपि आहारेंति २०। एवं अट्ठवि फासा भाणियव्वा अणंतगुणलुक्खाइंपि आहारेंति २७ जाइंभंते ! अणंतगुणलुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइं आहारेंति ? गोयमा ! पुट्ठाइं आहारेंति नो अपुट्ठाइं आहारेंति २८। पुट्ठानीति ॥ आत्मप्रदेशस्पर्शनमिति तत्पुनरात्मप्रदेशस्पर्शन अवगाहक्षेत्राद् बहिरपि भवति अत उच्यते ॥ जाइं भंते ! पुट्ठाइं आहारेंति ताइं किं ओगाढाइं आहारेंति अणोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! ओगाढाइं नो अणोगाढाइं ॥ अवगाढानीति आत्मप्रदेशैः सह एकक्षेत्रावगाढानीत्यर्थः २९ ॥ जाइं भंते ! ओगाढाइं आहारेंति ताइं किं अणंतरोगाढाइं आहारेंति परंपरोगाढाइं आहारेंति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं नो परंपरोगाढाइं आहारेंति ॥ अनन्तरावगाढानीति येषु प्रदेशेषु आत्मावगाढः सोऽत्रैव यान्यवगाढानि तान्यनन्तरावगाढानि अन्तराभावेनावगाढत्वात् मानिच-तदन्तरवर्तीनि तान्यवगाढत्वात् परम्परावगाढानीति ३० ॥ जाइं भंते ! अणंतरोवगाढाइं आहारेंति ताइं किं अणूइं आहारेंति बायराइं आहारेंति ? गोयमा ! अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति ॥ तत्राणुत्वं बादरत्वं चापेक्षिकं तेषामेव द्वारयोग्यानां स्कन्धानां प्रदेशवृद्ध्या बहुत्वं भवसेयं ३१। जाइं भंते ! अणूइंपि आहारेंति बायराइंपि आहारेंति ताइं किं उड्ढं आहारेंति एवं जवेवि

तिरियंपि? गोयमा! उड्ढंपि आहारेंति एवं अहेवि तिरियंपि ३२। जाइं भंते! उड्ढंपि आहारेंति अहेवि तिरियंपि आहारेंति ताइं किं आइमाहारेंति मज्झे आहारेंति पज्जवसाणे आहारेंति? गोयमा! तिहावि ॥ प्रथमसमयः आभोगनिर्वर्तितस्याहारस्य अन्तर्मुहूर्तिकस्य विमध्यावसानेषु सर्वत्रा हारयन्तीति ३३॥ जाइं भंते! आइं मज्झ अवसाणेवि आहारेंति ताइं किं सविसए आहारेंति अविसए आहारेंति? गोयमा! सविसए नो अविसए आहारेंति ॥ तत्र स्वः स्वकीयो विषयः स्पृष्टावगाढानन्तरावगाढरूपः स्वविषय स्तस्मिन् आहारयन्ति ३४॥ जाइं भंते! सविसए आहारेंति ताइंकिं आणुपुव्विं आहारेंति अणाणुपुव्विं आहारेंति? गोयमा! आणुपुव्विं आहारेंति नो अणाणुपुव्विं आहारेंति॥ तत्रानुपूर्व्या यथासन्नमनतिक्रम्य ३५॥ जाइं भंते! आणुपुव्विं आहारेंति ताइंकिं तिदिसिं आहारेंति जाव छद्दिसिं आहारेंति? गोयमा! नियमा छद्दिसिं आहारेंति॥ इह नारकाणां लोकमध्यवर्तित्वेन षण्णामप्यूर्ध्वादिदिशामलोकेनानावृतत्वात् षट्स्वपि दिक्ष्वाहारग्रहणमस्ति तत उक्तं नियमात् षड्दिशि वि

कृष्णादिविशेषणास्तु लोकान्तवर्तिषु पृथिवीकायिकादिषु दिशामवस्य द्वयस्य एकस्या वालोकेनावरणे भवन्तीति' यद्यपि वर्णतः पञ्चवर्णानी त्यायुक्तं तथापि प्राचुर्येण यद्गुणगन्धादियुतानि द्रव्याण्याहारयन्ति तानि दर्शयति ॥ ओसण्णकारणं पडुच्च ॥ बाहुल्यलक्षणकारणमाश्रित्य तत्र महदशुभानुभावमेव कारणमिति॥ वण्णओ कालनीलाइं गन्धओ दुब्भिगंधाइं रसओ तित्तकडुयरसाइं फासओ कक्खडगरुयसीयलुक्खाइं॥ एतानि च प्रायो मिथ्यादृष्टय एवा हारयन्ति न तु भविष्यत्तीर्थकरादयइति अथ तानि यथास्वरूपाण्येव नारका आहारयन्त्यन्यथावे? त्यस्यामाशङ्कायामभिधीयते ॥ तेसिं पोराणे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे विप्परिणामयित्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंसइत्ता॥ विपरिणामादयो विनाशार्थत्वे ऽप्येकार्थाएव ध्वनयः॥ अन्नेय अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे रसगुणे फासगुणे उप्पाइत्ता आयसरीरोगाढे पोग्गले सव्वप्पणयाए आहारं आहारेंति सव्वप्पणयाएत्ति॥ सर्वात्मना सर्वे रात्मप्रदेशै रित्यर्थः ३६ व्याख्यात सूत्रे सङ्ग्रहगाथायाः किंवाहारेंतीतिपदं अथ सव्वठवावीति व्या

स्यायते तत्र सवता सवप्रदेशै नैरयिका आहारयन्तीति' वापीतिवचना दृजीत्व माहारयन्ती त्यपिवाच्यं तथैवं ॥ नेरइयाणं भंते। सव्वओ आहा रेंति सव्वओ परिणामेंति सव्वओ ऊससंति सव्वओ नीससति अभिक्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससति अभिक्खणं नीससति आहच्च आहारेंति ? ४ हंता गोयमा । नेरइयासव्वओ आहारेंति १२ सव्वओत्ति ॥ सर्वात्मप्रदेशैः ॥ अभिक्खणंति ॥ अनवरत पर्याप्तत्वेसति ॥ आहच्च त्ति ॥ कदाचि असद्वेदा अपर्याप्तकावस्थायामिति ३७ तथा ॥ कइभागंति ॥ आहारतयोपात्तपुद्गलानां कतिप भाग माहारयन्तीतिवाच्यं त चैव ॥ नेरइयाण भंते । जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेसि पोग्गलाणं सेयालंसि कइभाग आहारेंति कइभागं आसाएंति ? गोयमा । असंखेज्जभाग आहारेंति अणंतभागं आसाएंति सेयालंसिति ॥ एष्यत्काले ग्रहणोत्तरकाल मित्यर्थः असंखेज्जइभागमाहारेंतीत्यत्र कचि व्याचष्टे मवादिमयमवृद्धग्रासग्रहवत् कांचित् गृहीतासङ्ख्येयभागमात्रान् पुद्गला माहारयन्ति तदन्येतुपतन्तीति' अन्येत्वाचक्षते अनुसूत्रमपदर्शनात् स्वस रीतया परिणतानां असङ्ख्येयभाग माहारयन्ति अनुसूत्रादि – मवादिमयमवृद्धग्रासग्रहवत् गृहीतानां शरीरत्वेना परिणताना माहारतोमेष्यति शरीरतया परिणतानामपि केषांचिदेव विशिष्टाहारकार्यकारिता ता मभ्युपगच्छति सुगुनयस्ना तस्येति अन्ये पुनरित्थ मभिदधति ॥ असंखे ज्जइभागमाहारेंतित्ति ॥ शरीरतया परिणमन्ति शेषास्तु किट्टीभूय मनुष्याभ्यवहृताहारव द्विनाशमुपयान्ति न शरीरत्वेन परिणमन्तीत्यर्थः ॥ अण तभागंआसाएंतित्ति ॥ आहारतया गृहीतानां अनन्तभाग मास्वादयन्ति तद्रसादीन् रसनादीन्द्रियद्वारे णोपलभन्त इत्यर्थः १८ सव्वाणिवत्ति ॥ द्वारे तत्र सर्वाण्येवा हारद्रव्या ण्याहारयन्तीतिवाच्य वाशब्दः समुच्चये तथैवं ॥ नेरइयाण भंते जे पोग्गले आहारत्ताए परिणामेंति तेसिं च सव्वे

जो कहवो अथमे १ उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम उष्मासाकारे। सासासास कहवा निरंतर आहारे अनाहारना-मर्थी निंव,वारेर। वाी आहार करे समतोपादि। समस्ते आत्माने प्रदेशेकरी आहारते॥ कतिभागं। केतला आहारे आहार निमित्त केतला पुद्गल ग्रह्या तेहना असङ्ख्यातमो भा

आहारेंति णोसव्वे आहारेंति ? गोयमा ! सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति ॥ इह विशिष्टग्रहणगृहीता आहारपरिणामयोग्या एव ग्राह्या तत्क्षिप्तशेषा इत्यर्थः अन्यथा पूर्वापरसूत्रयो विरोधःस्यात् इहापैव व्याख्या यदाह अन्यत्रास्तुतेनविय तहेवअहरंवियासवानत्थि । किकालिमाकुठंगो विठो त्रिदिवमनादिर्ह ३८ ॥ १ ॥ कीसत्ताअञ्झोपरिणमतितित्ति ॥ द्वारगाथापद तत्र ॥ कीसत्ति ॥ पदावयवे पदसमुदायोपचारात् ॥ कीसत्ताएत्ति ॥ दृश्य किं स्यतया किं स्वभावतया कीदृशतयावा कामकारेण किंस्वरूपतयेत्यर्थः वाशब्दः समुच्चये ॥ भुज्जोत्ति ॥ भूयोभूयः पुनःपुनः परिणमन्ति आहारद्रव्याणीति प्रकृतं इत्येतद्वाच्यं तत्रैव ॥ नरइयाण भंते ! जेपोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जोभुज्जो परिणमति ? गोयमा ! सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अपियत्ताए असुभत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभि ज्झियत्ताए अहत्ताए णोउड्ढत्ताए दुक्खत्ताए णोसुहत्ताए एएसिं भुज्जोभुज्जो परिणमंति ॥ तत्र अनिष्टतया सदैव तेषां सामान्येना वाञ्छततया तथा-ऽकान्ततया सदैव तद्भावना कमनीयतया, तथा-ऽप्रियतया सर्वेषामेव द्वेष्यतया, तथा-ऽमनोज्ञतया कथया अमनोरमतया, तथा-ऽम नोम्यतया चिन्तयापि अमनोगम्यतया तथा-ऽनीप्सिततया आप्तुमनिष्टतया, एकार्थो वैतेशब्दाः ॥ अनिच्छियत्ताएत्ति ॥ अभिध्येयतया वसेत्सत्या दवस्येन पुनरप्यभिलापनिमित्ततया, अहत्ताएत्ते नेतव्ये अशुभत्वेमत्यर्थः ॥ अहत्ताएत्ति ॥ गुरुपरिणामतया ॥ णोउड्ढत्ताएत्ति ॥ नोलघुपरिणामत यति अङ्गगाथायः, इदव अङ्गविगाथाविवरणसूत्रं क्वचित्सूत्रपुस्तकएव दृश्यतइति, अथ नैरयिकाहाराधिकारा तद्विषयमेव प्रश्नसूत्रमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ पुव्वाहारियत्ति ॥ ये पूर्वमाहृताः पूर्वकाले एकीकृताः सङ्गृहीता इतियावत्, अन्यथवृत्तावा ॥ पोग्गलत्ति ॥ स्कन्धाः ॥ परिण

न पावरे पनतामाम माध्यर्दे । सब्बाविया । समसा आहारनो द्रव्य आहारे आहारपरिणाम जाग पुद्गलमाथा । कोसव । किसमकारेकरीने । भुज्जोभु ज्जो । वर्षावर्षो । परिणमति । १ परिणमे इन्द्रियपणे दुःखपणे परिणमे एहनो विस्तारपन्नवणा मांहिथी जाणवो । विवेचारनोना आहाराधिकारमको

पति ॥ ते परिणता पूर्वकाले शरीरेणसह सम्पृक्ता परिणतिं कृता इत्यय इतिप्रथमः प्रश्नः १। इहच–सर्वत्र प्रश्नत्वं काकुपाठा दवसम्यते , तथा ॥ आ मर्हारिंयाति ॥ पूर्वकाले आहृता मङ्गृहीता अभ्यवहृताया ॥ आहारिज्जमाणत्ति ॥ येच वर्तमानकाले आह्रियमाणाः सङ्गृह्यमाणा अभ्यवह्रियमा णाः पुद्गलाः ॥ परिणयत्ति ॥ ते परिणता इतिद्वितीयः २। तथा ॥ अणाहारियत्ति ॥ ये ऽतीतकाले ऽनाहृता ॥ आहारिज्जस्समाणत्ति ॥ ये चानागतकाले आहरिष्यमाणाः पुद्गला स्तेपरिणता इतितृतीयः ३। तथा ॥ अणाहारिया अणाहारिज्जस्समाणेत्यादि ॥ अतीतानागतकालयोरि यानिपथा गतुयः ४। इहच यद्यपि चत्वारएव प्रश्ना उक्ता , तथाप्येते त्रिपष्टिः सम्भवन्ति , यतः पूर्वोक्ता आह्रियमाणा आहरिष्यमाणा अ नाहृता अनाह्रियमाणा अनाहरिष्यमाणाश्चेति षट् पदानीह सूचितानि , तेषुच एकैकपदाश्रयणेन षड्द्विकयोगे पञ्चदश, त्रिकयोगे विंशति य

णेरइयाणन्तेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जमाणापोग्गलापरिणया २ अणा हारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ३ अणाहारियाअणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया ४

आहारविषय प्रश्नचारि कहेछे ? नेरइयाणं । नारकीने भते । हेभगवन् । कांई पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया । जेपूर्वकाले शरीर संघाते एकीकोधा स म्प्रा अथवा आहार्या जेपहेला मन्दे स्कंधते परिणाम्या एपहिलोप्रश्न १ तथा आहारिया आहारिज्जमाणा । पूर्वकाले आहार्या समस्त आ व र्तमानकाले आहारकरेछे अथवा समग्रहे ते आमम्या । पहला परिणमा परिणम्या एबीजो प्रश्न १ २ तथा । आणाहारिया । अतीतकाले सम्ग्रहान थी आहारानथी आहारिज्जमाणा । अनागतकाले आहारसे संग्रहसेव पोग्गला । पहला परिणया परिणम्या एत्रीजोप्रश्न १ ३ तथा । अणाहा रिया । अतीतकाले आहारानथी संगृह्यानथी अने अणाहारिज्जस्समाणापोग्गलापरिणया । अनागतकाले पणि आहारसेनथी संगृहसेनथी ते प रमपरिणम्या एचोथाप्रश्न १ ४ इहां सूत्रने प्रश्नचारिकह्या तथा बेसठिभांगा एहभांगाथते देखाडेछे अतीतकालें अणाहारा १ वर्तमानकाले आहारेछे २ आगामिकालें आहारसे ३ इम अणाहार्या ४ अणाहारेछे ५ अणाहारसे ६ ए ६ पदकह्या । तेहमेलिमे संयोगी ६ द्विक योगी १५ त्रिकसंयोगी २

तुफयोगे पञ्चदश पञ्चकयोगे षट् षड्योगे एकइति प्रश्नोत्तरमाह ॥ गोयमेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं ये पूर्वमाहृता स्ते पूर्वकालस्य परिणता च शरीरान्तरमेव परिणामभावात् १। ये पुन राहृता आह्रियमाणाश्च ते परिणता, आहृतानां परिणामभावादेव परिणमन्तिच, आह्रियमाणाना परिणामभावस्य वर्तमानत्वादिति २। वृत्तिस्तातु द्वितीयः प्रश्नोत्तरविकल्प एवंविधो दृष्टो, यदुत आहृता आहरिष्यमाणाः पुद्गलाः परिणताः च रिणंस्यन्तेच यतो यं तत्रैवं व्याख्यातो यदुत येपुन राहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्तेषां कश्चित्परिणताः परिणताश्च ये सम्पृक्ताः शरीरेण सह यत् मतायत् सम्पृक्ष्यन्ते, कालान्तरेतु सम्पृक्ष्यन्ते, तेपरिणंस्यन्तइति, येपुन रनाहृता आहरिष्यन्ते, पुन स्ते नोपरिणता, अनाहृतानां सम्य ग्भावेन परिणामाभावात्, यदा त्वाहरिष्यन्ते, ततः परिणंस्यन्ते, आहृतस्या वश्यंपरिणामभावादिति, ३ चतुर्थे त्वतीतभविष्यदाहरणाक्रिया या अभावेन परिणामाभावो दवसेयइति एतदनुसारेणैव मान्दर्शितविकल्पाना मुत्तरसूत्राणि वाच्यानीति अथ शरीरसम्पर्कलक्षणपरिणामा

गोयमा णेरइयाणपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया १ आहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला परिणयापरिणम तिय २ अणाहारियाआहारिज्जस्समाणापोग्गला णोपरिणयापरिणमिस्सति ३ अणाहारियाअणाहारिज्ज

चतुष्कमध्ये १६ पंचम ६ इस० १ इमस्य ६१ इवो भगवत उत्तरकहेछे—हेगौतम। नेरइयाने। नारकीने। पुव्वाहारिया। पूर्वकालेआहारया समग्रा पाममापरिणया। पुदगले परिणम्या अन्तरालेश परिणामनो भावथको १। अने आहारिया। जे पूर्वकाले आहारयाछे। आहारिज्जस्समाणा पोग्गला अने वर्तमानकाले आहारेछे ते पुद्गल। परिणया। परिणम्या अने परिणमेछे। परिणमतिय। २ आह्रियमाणने परिणमभावनो वर्तमानछे २ तथा अणाहारिया। अतीतकालेआहारयानथी संग्रहणनथी अनेअनागतकाले। आहारिज्जस्समाणा। आहारस्ये अणहस्ये। पोग्गला। ते पुद्गल। णोपरिणया। प रिणम्यानथीछे पूर्वं अग्रहणथी अने। परिणमिस्सति। परिणमस्ये मूलगने अनंतरे ३। अणाहारया तथा अतीतकाले आहारयानथीं समृद्धिमानथी अने अणाहारिज्जस्समाणा। अनागतकाले पणि आहारस्ये नथी। पोग्गला। तेपुद्गल। णोपरिणया। परिणम्यानथी। णोपरिणमिस्सति। परिणमस्ये पणि

त् पुद्गलाना च्चयादयो भवन्तीति तद्दर्शनार्थं प्रश्नस्कार ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ चयादिसूत्राणि परिणामसूत्रसमानीति कृत्वा तिदेशतो ऽधीता मीति सथापि ॥ जहापरिणया तहा चियाबीत्यादि ॥ इह च पुस्तकेषु वाचनाभेदो दृश्यते, तत्र न सम्मोह कार्यः, सर्वत्राभिधेयस्य तुल्यत्वात् केवल म्परिणतसूत्रानुसारेण प्रश्नसूत्राणि व्याकरणानि च मतिमता च्चयानीति, तत्र चिताः शरीरे चयंगता उपचिताः पुन पंपुष्ट प्रदेशसामीप्येन शरीरेचितामवति उदीरितास्तु स्वभावतो ऽनुदितान् पुद्गलान् उदयप्राप्ते कर्मदलिके करणविशेषेण प्रक्षिप्य या न्वेदयते, उदीरणालक्षण वद नकरणेनाकृष्य उदयदिज्जइउदीरणा एसा ॥ तथा वेदिताः स्वं रसविपाकेन प्रतिसमय मनुभूयमानाः अपरिसमाप्ता शेषानुभावाइति तथा निर्जीर्णाः कारस्न्येन तुसमयमक्षेपतद्विपाकतामियुक्ताइति ॥ गाहत्ति ॥ परिणतादिसूत्राणां सङ्ग्रहणाय गाथा भवति, साचेय परिणयत्यादि व्याख्यातार्था नवर एकैकस्मिन् पदे परिणतचितोपचितादौ चतुर्विधा आहृता १। आहृताः आह्रियमाणाय, २। अनाहृता आहरिष्यमा

रसमाणापोग्गलाणोपरिणया णोपरिणमिस्सति ४ णेरइयाणजतेपुव्वाहारियापोग्गलाचिया ॥ पुच्छा ॥ जहा परिणया तहा चियावि एव चिया उवचिया उदीरिया वेइया णिज्जिण्णा ॥ गाहा ॥ परिणताचियायउवचिया

नर्थी ॥ हिवे शरीर संबन्धव परिणामवंत पदगलो वक्षाहिब छवे त देखाडवानो प्रश्नकरेछे—नेरइयाणभंते। नारकीने हेभगवन्! पुव्वा हारिया। पूर्वआहारिया। पोग्गलाचिया। तेपुद्गल ते चियाकहीये चयपर्याप्याछे शरीरकेविषेचिया। पुच्छा ॥ ए प्रश्न पूछ्यो हिवे उत्तर कहेछे— जहा। जिम। परिणया। परिणम्या। तहा। तिहांतिम। चियावि। चयपाम्या। एवं। इम। चिया। चयपाम्या। उवचिया। नाठाविस्ता पर्यंहवि पाम्या। उदीरिया। स्वभावे उदयनथीपाम्या यनेते उदयपाम्या। वेइया। पोताने रसविपाके प्रतिसमये भोगव्या। णिज्जिण्णा। रसपरिणामेकरी निज रा योपप्रदेशथी अशरीया। गाहा। परिणय। गाथा। जिमपरिणामे परिणम्या। चिया। चयपाम्या। उवचिया। पर्यंहवियापाम्या। उदीरिया। भावेकरी उदी रिया। वेइया। भावेकरीवेदिया। णिज्जिण्णा। इमचवबोधा तेहनो शानिष्टव करीने। एक्केक्कम्मिपदम्मि। एकेकापदनेविषे चारि चारिभेदपुद्गलना

नाय १। ममावृता ममावरिष्यमाखावे ४। त्येव चतूरूपाः पुद्गला भवन्ति, प्रमानिर्वचनव्यिपया स्युरिति पुद्गलाधिकारादेवमा महादभमू
वीमाद ॥ मरइयार्थ मते। कइविहा पोग्गलाभिज्झतीत्यादि ॥ व्यक्त मवरं ॥ भिज्जसिति ॥ तीव्रमन्दमध्यमतया नुभागभेदेन भेदयन्तो भवन्ति
गुह्नतमकरणापवतमकरणान्या मन्दरसा स्तीव्ररसा, स्तीव्ररसास्तु मन्दरसा भवन्तीत्यर्थ उत्तरं ॥ कम्मदव्ववग्गणमहिकिचति ॥ समानजातीयद्र
व्याणां राशि द्रव्यवगणा मायौदारिकादिद्रव्याणां मध्यस्तौ स्यतमाह—कर्मरूपा द्रव्यवग्गणा कम्मद्रव्याणाणा; वर्गणा कम्मद्रव्यवर्गणा तामधिकृत्य
तामाश्रित्य वमद्रव्ययग्गणामाश्रित्येत्यर्थः कर्मद्रव्याणामेयच मन्देतरानुभावचिन्तास्ति न द्रव्यान्तराणा मितिकृत्वा कर्मद्रव्यवर्गणा मधिकृत्येत्युक्त
॥ चयूचयचापराभेयति ॥ चैवशब्दः समुच्चयार्थ स्तत्र चचचच बादराय सूक्ष्माय स्थूलायेत्यर्थः सूक्ष्मत्वं स्थूलत्व चैषां कर्मद्रव्यापेक्षयैवा वग
न्यथं मान्यापेक्षया, यत औदारिकादिद्रव्याणा मध्य कर्मद्रव्यास्येव सूक्ष्माणीति, एव मयोपचयोदीरणावेदनानिर्जराः शब्दायभेदेन वाच्याः

उदीरितावेइयायणिज्जिणा । एक्किक्कम्मिपदम्मि चउव्विहापोग्गलाहोंति ॥ १ ॥ णेरइयाणन्ते कतिविहा पोग्गलाभिज्झति गोयमा कम्मदव्ववग्गणमाहिगिच्च दुविहापोग्गलाभिज्झति तजहा अणूचेव बायराचेव १

तेजिम। चउव्विहापोग्गलाहोंति। चाउरया १ चाउरिहे २ चपाचरया ३ चपाचरमे ४ एचारकहवा। तिवे पुद्गलो अधिकारयको ए मठार
चमूचनेके—चेरइयापभते। नारकीने हेभगवन्। कतिविधपोग्गला। चेतनापुद्गल विसेभकारे करीने ? भिज्जति। अनुभाग भवेकरी ने भेदायछे तीव्रमं
दमध्यभेदेकरी भेदपामे पुद्गलभेदनाच इत्यथ, उहतन अपवत्तन करणकरी मन्दरस तीव्ररसथाय, तीव्ररस मन्दरसथाय इतिमर्थ ? गोयमा। हेगोतम। समान
जातीय द्रव्यानो राशिते द्रव्यवगणा कहीये तिवा औदारिकादि द्रव्यनेपणिछे तेमाटे कहेछे—कम्मदव्ववग्गणमहिगिच्चदुविहा। कर्मरूप द्रव्यवर्गणा ममचा
कमद्रव्यनो वर्गणा ते वाणीने कमद्रव्यनेज मन्दतरानुभावचिताछे पणिद्रव्यांतरनेनथी तेमाटे कमद्रव्यवर्गणा अधिकरीने इमकह्यो ए विहु प्रकारेकरीने। पो
ग्गलाभिज्झति। पुद्गलभेदपामे। तंजहा। तेजिम। अणूचेव। अणुते सूक्ष्मपुद्गल। बादराचेव। बादरते स्थूलपुद्गलकहीये सूक्ष्मपणु स्थूलपणु ए बोते कर्मद्रव्य अपेक्षा

किणुभयसूत्रे उपचयसूत्रेच ॥ माहारद्रव्यवर्गणमधिकृत्येति यदुक्तं तत्राय मभिप्रायः, शरीर माश्रित्य चयोपचयौ प्राख्याख्यातौ, तौचा हारका द्रव्येष्वेव भवतो नान्यतो अतआहारद्रव्यवर्गणा मधिकृत्ये त्युक्तमिति, उदीरणादयस्तु कर्मद्रव्याणामेव भव, न्त्यत स्तत्सूत्रे पूत्त कर्मद्रव्यवर्ग मधिकृत्येति ॥ उवाहिंसुत्ति ॥ अपवर्तितवन्त, इहापवर्तनं कर्मणा स्थित्यादेरध्यवसायविशेषेण हीनताकरण, अपवर्तनस्य चोपलक्षणत्वा दुद्व

णरइयाणन्तेकतिविहापोग्गलाचिज्जति गोयमा आहारदव्वमग्गणमहिकिञ्च दुविहापोग्गलाचिज्जति तजहा अणूचेव बायराचेव २ एव उवचिज्जति ३ णेरइयाणन्तेकतिविहापोग्गलाउदीरति गोयमा कम्मदव्ववग्गणमहिकिञ्च दुविहापोग्गलाउदीरति तजहा अणूचेव बायराचेव ४ सेसाविएवचेव भाणियव्वा । वेदंति ५ णिज्जरति ६ उयट्टिसु ७ उयट्टंति ८ उयट्टिस्सति ९ सकामिसु १० सकामंति ११ सकामिस्सति १२ नि

से जाव का पवको वा पवेसायमवो, अमाट पोद्गलादि द्रव्यमाहि श्रमद्रव्यवोल सूत्रवे । नेरइयाणंभंते । नारकीने हेभगवन् ! कइविहा । केतला प्रकार पोग्गला । चिज्जति । पुद्गल चिर्ये इतिप्रश्न १ गोयमा । हेगोतम । इहाए अभिप्राय शरीरआश्रयी ने चय उपचय पूर्व कह्याछे ते चय उपचय आहारद्रव्यवोल ग्र वे अणवा मदूने तेहीज कहेछे—आहारदव्ववग्गणमहिकिञ्च । आहारद्रव्यवर्गणा आश्रयीने अधिकरीने । दुविहापोग्गलाचिज्जति । बिहुंप्रकारेपुद्गल चिर्ये । तंजहा । तेकहेछे—अणूचेव । अणुकहता सूक्ष्म बेअसोगम्य १ । बायराचेव । बायर कहता स्थूल चरमचक्षुगोचर इत्यर्थ २ । एवं । इम । उवचिज्जति । उपचया मे इहिवामे ३ । नेरइयाणंभंते । नारकीने हे भगवन् । कइविहेपोग्गले । केतलेप्रकारे पुद्गल । उदीरेंति । उदीरणापामे इति प्रश्न १ । गोयमा । उत्तर हे गौ तम । उदीरणादिक कम । दव्ववग्गणमहिकिञ्च । द्रव्यमेज हुवे तेमाटे कम कर्मद्रव्य वर्गणा आश्रयीने । दुविहे पोग्गले । बिहुंप्रकारे पुद्गल उदीरणापामे तंजहा—अणूचेव । सूक्ष्म । बायराचेव । मोटा ४ । सेसाविएवचेव । शेष बाकता अमकारना इमिपरे । भाणियव्वा । कहवा ए इम । वेदेंति । वेदे ५ । निज्जर ति । कमनिर्जरा कर्मनू ते निजरनूकरीये ६ । उवहिंसु । अपवर्तितवंत हता अपवर्त्तमते कमस्थिति आदिकनू अध्यवसाय विशेषेकरी हीनकरणं इहां

ततमपीह दृश्यं, तत्र स्थित्यादि वृद्धिकरणस्वरूप ॥ संकामेसुत्ति ॥ सङ्क्रमितवन्त साम्प्रं सङ्क्रमणं मूलप्रकृत्यभिन्नाना मुत्तरप्रकृतीना मध्यवसायविशे षेण परस्परं सञ्चारणं, तथाचाह — मूलप्रकृत्यभिन्ना· सङ्क्रमयतिगुणतउत्तरा।प्रकृतीः मत्वासामूर्तत्वा दध्यवसायप्रयोगेण ॥ १ ॥ अपरस्त्वाह मोमूलभाउयंगमु दसणमोहचरित्तमोहंच । सेसाणपगडण उत्तरविहिसंकमोभयणिज्जो ॥१॥ एतदेव मिदिग्यते यथा कस्यापि स्सद्वेद्य मनुभवतो ऽनुज कम्मपरिणति रेवविधा जाता, येन तदेव सद्वेद्य मसद्वेद्यतया सङ्क्रामतो स्येव मन्यथापि योज्यम् ॥ निधत्तेसुत्ति ॥ निधत्तान् कृतवन्त, इह च वि श्लिष्टानां परस्परतः पुद्गलानां निचय कृत्वा धारणं तृविशुद्धस्सेन निधत्त मुच्यते, उद्वर्तनापवर्तनव्यतिरिक्तकरणाना मविषयत्वेन कर्मणो वस्था नमिति ॥ निकाइंसुत्ति ॥ निकाचितवन्तो नितरां बद्धवन्तइत्यर्थं, निकाचनञ्च तथामेव पुद्गलानां परस्परविशिष्टाना मेकीकरण मन्योन्यावगाहि ता, वह्निप्रतप्तप्रतिहन्यमानसूचीकलापस्येव सकलकरणाना मविषयतया कर्मणो व्यवस्थापनमिति यावत् ॥ जिव्वतीत्यादि ॥ पदानां सङ्ग्रही

हृत्तिसु १३ निहत्तिंति १४ निहत्तिस्संति १५ निकाइंसु १६ निकायंति १७ निकाइस्संति १८। सङ्ग्रेसु वि

भममतनां उपकारकको उत्तम पचिवेरू उत्तमते स्थित्यादिकमू नथारथू। उयहिसु। स्थित्यादिकमू शोभवरथू मतोतकासे १ उवहेंति । स्थित्यादिक बों नबरे वर्तमानकाले २। उवहिस्संति । स्थित्यादिकर्वीग वरसे भनागतकाले ३ । सङ्कामेंति । मूलप्रकृति भभिन्न उत्तरप्रकृति बौंने भध्यवसायविशेषेकरो मां शा मांहि संचारिया सङ्क्रामण कर्योंमे संक्रमायो मतीतकाले ।१ संक्रमायें वर्तमानकाले। संक्रमायस्ये भनागतकाले ११ । निहत्तिसु। जीवरा पुद्गलकर्म ने माहा मांहि निचय करतां एकठो धारया तेहने कठियनें निधत्तकर्योंमे मतीतकाले एकठायाम्या १२ निहत्तिति । २ वर्तमानकाले एकठायापेंहे निहत्तिस्संति १। १३ भनागतकाले एकठा थापस्ये । निकाइसु ०। १४ निकाचितकर्म जिम सइना सुच्या भग्निमांहि तपावीने ठपोने तिवारे गाढा कठिनहाय निकाच्या मतीतकाले। निकायति। निकाचे वर्तमान काले। निकाइस्संति १। १८ निकाचस्ये भनागतकाले। सङ्ग्रेसुवि कमद्व्यकमकमवि थिप ।एवं सङ्क्रमद्व्यकमथा भगोचार करीने कहवो । माशा । माया । मेदिय । मेदिया । चिका । चिक्षा । उवचिया । पुष्टवोधा । उदीरिया। उदीरि

यथा ॥ नेरइयत्यादि ॥ गाथा गतार्थी नवरं अपवर्त्तनसङ्क्रमनिधत्तनिकाचनपदेषु त्रिविधः कालो निर्देष्टव्यः, अतीतवर्त्तमानाऽनागतकालनिर्देशेन तानि वाच्यानीत्यर्थः इह च अपवर्त्तनादीनामिव भेदादीनामपि त्रिकालता युक्ता न्यायस्य समानत्वात् केवल मविवक्षया न तन्निर्देश सूत्रे स्तइति अथ पुद्गलाधिकारा दिदं सूत्रचतुष्टय माह ॥ नेरइयाणमित्यादि व्यक्त नवरं ॥ तेयाकम्मत्ताएत्ति ॥ तेजः कार्म्मण शरीरतया तद्रूपतये त्ययः ॥ अतीतकालसमयत्ति ॥ कालरूपः समयो नतु समाचाररूपः कालोपि समयरूपो नतु वर्णादिस्वरूपइति परस्परेण विशेषणा त्काल समयः अतीत कालसमयो ऽतीतकालस्य चोत्सर्प्पिण्यादे समयः परमनिकृष्टों ऽशो तीतकालसमय स्तत्र ॥ पडुप्पन्नत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नो वर्त्तमानो मो

कम्मदव्वमग्गणमहिकिच्च ॥ गाहा ॥ भेदियचिताउवचिता उदीरितावेदियायणिज्जिणा । उव्वट्टणसंकामण णिहत्तणिकायणेतिविहकालो ॥ १ ॥ णेरइयाणन्ते जेपोग्गला तेया कम्मत्ताए गिण्हति तेकिं तीतकालसमए गिण्हति पडुप्पणकालसमए गिण्हति अणागयकालसमए गिण्हति गोयमा णोतीतकालसमए गिण्हति पडु

पावे। दिवाय। वेदिया। विव्विषा। निजरा। उवट्टव। होनकरा। संकामव। संक्रमाव्या। निहत्तव। समूहकरा। निकायव। निकाचना एसवपदे ति विहकालो १। अतीतअनागतवर्त्तमानरूप त्रिविधकालकहवूं ॥ हिवे पुद्गलना अधिकारथकी एचारसूत्रकहेछे—नेरइयाणंभंते। नारकी हेभगवन्। जे पुद्गलतेयाकम्मत्ताए। अपूहस तेजस शरीर तथा कार्मणशरीर तथा कार्मणशरीरें करीने ग्रहेछे एतावता तैजसकार्मण शरीररूप पुद्गल। गिण्हति। ग्रहेछे। तेकिं। तेस्यूं अतीतकालरूप समयपणि समाचाररूप नहीं कालनो समय ते परमपणि समयरूपपणि वर्णादिरूपनहीं तेमाटेमाहि वि शेषणथी कालसमयइति अतीतकाल जे उत्सर्प्पिण्यादिकना समय ते परमनिकृष्टअंश ते अतीतकाल समयकहिये तेअतीतकाल समयेग्रहेछे। पडुप्पन्न काल समए गिण्हंति। ग्रहेछे। अनागतकालसमए गिण्हति। अनागतकालसमये ग्रहेछे इतिप्रश्न?। गोयमा। हेगौतम। णोतीतकालसमए। अतीतकालसमये। गिण्हति। नग्रहेनहीं १। पडुप्पन्नकालसमए। वर्तमानकाल समये करीने। गिण्हंति। ग्रहे। णोअणागयकालसमए। अनागतकाल

तीतकालेत्यादी अतीतानागतकालविषयप्रश्नप्रतिषेधो विषयातीतत्वा द्विषयातीतत्वञ्च तयो र्विनष्टानुत्पन्नत्वेना सत्वादिति प्रत्युत्पन्नस्य भिमुखाम् गृह्णाति मान्यान् ॥ गहणसमयपुरक्खडेति ॥ ग्रहणसमयः पुरस्कृतोवर्त्तमानसमयस्य पुरोवर्त्ती येषान्ते ग्रहणसमयपुरस्कृताः प्राक्तस्या येय निर्देशो ऽन्यथा पुरस्कृतग्रहणसमया इतिस्यात् ग्रहीष्यमाणाइत्यर्थः उदीरणाच पूर्वकालगृहीतानामेव भवति ग्रहणपूर्वकत्वा दुदीरणायाः यतउक्त अतीतकालसमयगृहीता मुदीरयन्तीति गृह्यमाणानां ग्रहीष्यमाणानां चागृहीतत्वा दुदीरणाभाव सातउक्त ॥ नोपडुप्पन्नेत्यादि ॥ तव

प्पन्नकालसमएगिरहृति णोअणागयकालसमएगिरहृति १ णेरइयाणन्नतेजेपोग्गला तेयाकम्मत्ताएगहिएउदी रति तेकिं तीतकालसमयगहिएपोग्गलेउदीरति पडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपोग्गले उदीरति गहणसमय पुरक्कडपोग्गले उदीरति गोयमा तीतकालसमयगहिएपोग्गले उदीरति णोपडुप्पन्नकालसमयघिप्पमाणेपो ग्गलेउदीरति णोगहणसमयपुरक्कडेपोग्गलेउदीरति २ एव वेदति ३ णिज्जरति ४ णेरइयाणन्नतेजीवाओकिंच

मनये करोमि । गिरहति । गृह्णाति । नेरइयाण भंते । नारकीने हेभगवन् । जेपोग्गला । जेपुद्गल । तेयाकम्मत्ताए । तेजस कार्मणपणे । उदीरति । उदीरे । तेकितीयकालसमयगहीए । तेस्यूं अतीतकालसमये गृह्या । पोग्गले । पुद्गल । उदीरंति । उदीरे । पडुप्पन्नकालसमए । वर्त्तमानकालसमये । घे प्पमाणे । लेताथका । पोग्गले । पुद्गल । उदीरंति । उदीरे । गहणसमय पुरक्खडे । ग्रहणसमयथकी आगलसमये । पोग्गले उदीरंति । पुद्गलनी उ दीरणाकरे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । तीयकालसमय गहीए । अतीतकालसमय गृहीत । पोग्गले । पुद्गलप्रते । उदीरंति । उदीरे । णोपडुप्प न्नकालसमए घेप्पमाणे । वर्त्तमानकालसमये ग्रहीष्यमाण अथवा ग्रहीता । पोग्गले । पुद्गल तेहनी । उदीरंति । उदीरणाकरेनहीं । गहणसमय पुरक्खडे पोग्गले । जेग्रहणसमयथको पुद्गल आगल्ये जेसमय तेहनेंपिण गृह्यसे जेपुद्गल तेहनी । उदीरंति । उदीरणाप्रकरे । एवं । इम । वेदेंति । वेदे । निज्जरेंति । इमजनिर्जरे वेदनानिर्जरा सूत्रेपिण उत्पत्तिएहीज जाणवो । त्रिणे कर्माधिकारथकी एषट्सूत्रीकहेछे—णेरइयाणंभते । नारकी हेम

मारिमाणाम्रूपो रुप्पवे पापपत्तिरिति अथ कर्मापिकरादेवेप महसूत्री ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्ताव नवरं ॥ जीवाओकिचलियति ॥ जीवप्र
देशान्य चलितं तेषामयस्थानशील तदितर मचमित तदेव वधाति यदाह—कृत्स्नैर्देशैः स्वमदे शास्यरागादिपरिणतोयोग्य । बधातियोमध्येतोः क
मप्रेशालारयणमम ॥ १ ॥ एव मुदीरणायेन्मापयतमासकमगमिपतमिकाचनानि जाख्यानि मिर्वरातु पुद्गलाना निरनुभावीकृताना मासमदेशे

लियकम्मयधति श्यचलियकम्मयधति गोयमा णोचलियकम्मयधति श्यचलियकम्मश्रधति १ णेरइयाणन्नतेजी
वाउंकिचलियकम्मउदीरति श्यचलियकम्मउदीरति गोयमा णोचलियकम्मउदीरति श्यचलियकम्मउदीरति २
एय येदति ३ उपट्टति ४ सकामति ५ निहत्तति ६ णिकायति ७ सबेसुश्यचलियणोचलिय ॥ णेरइयाणन्नते
जीवाउ कि चलियकम्माणिज्झरेंति श्यचलियकम्माणिज्झरेंति गोयमा चलियकम्माणिज्झरेंति णोश्यचलियकम्म

गमन् । जीवात् । जीवप्रदेशमध्ये । किमचलितकर्म । सूचमसूक्ष्म ते । बधति । बधं भगवन् । अचलितकर्म । जीवप्रदेशमध्ये चलनवो तेकम । बधति । वां
धे । इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम । चालितकर्म । तेजमयमने यामेवारो चलितकर्म । बधति । बांधेनहीं । अचलितकर्म । अचलितकर्म । बंधति
बांधे । एमूकपहिमोचयो १ । नेरइयाणभते । नारको हेभगवन् । जीवाषो । जीवप्रदेशमध्ये । किचलितकर्म । चलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे
अचलितकर्म । अथवा जीवप्रदेशमध्ये अचलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगोतम । नोचलितकर्म उदीरेंति । चलित कर्म
नो उदीरणा करेनहीं । अचलितकर्म । अचलितकर्मनो । उदीरेंति । उदीरणाकरे एवोभोमूचकयो २ । एव । इम । वेदेंति । वेदे एवोभो ३ । उपहि
ति ४ । होमवरता । सकामेंति ५ । सकमावे । निहत्तेंति ६ । धारणो । णिकायेंति ७ । निकाचे । सव्वेसु । एसवनेविषे । अचलित । अचलितकर्मनेवो
चोचलितं । नवोचलितकर्मं । हिवे पाठमो सूत्रकहे—नेरइयाणभंते । नारकीने हेभगवन् । जीवाषो । जीवप्रदेशमध्ये । किचलितकर्म । सूचलित
कर्म । निज्जरेंति । निज्जरे । अचलितकर्म । बाअचलितकर्म ८ । निज्जरेंति । निज्जरे इतिप्रश्न, । उत्तर । हेगोतम । चलितकर्म । चलितकर्म । निज्जरेंति ।

न्यः शातन माच नियमा चलितस्य कम्मणो मापचितस्येति इह सङ्ग्रहणीगाथा भन्धोदये त्यादि मोंगितार्थों केवल मुदयस्थाने नोदीरणा गृहीतेति उक्ता नारकवक्तव्यता अथ चतुर्विंशतिदण्डकक्रमागता मसुरकुमारवक्तव्यतामाह ॥ असुरकुमाराणमित्यादि ॥ तत्रासुरकुमारवक्तव्यता नारकवक्तव्यताव सया, यतः ॥ ठिइआहाराइत्यादि ॥ गाथोक्तानि सूत्राणि ४७ ॥ परिणयचियेत्यादि ॥ गाथागृहीतानि ६ ॥ भेइयचियेत्यादि ॥ गाथा गृहीतानि १८ ॥ बंधोदयेत्यादि ॥ गाथागृहीतानि ८। तदेव द्विसप्ततिः सूत्राणि नारकप्रकरणोक्तानि, त्रयोविंशता वसुरादिप्रकरणेषु समानि

णिज्जरेंति ८ ॥ गाहा ॥ बंधोदयवेदोयट्ट सकम्मणणिहत्तणिकाएसु । अचलियकम्मतुनवे चलियजीवाउणि ज्जरए ॥ १ ॥ असुरकुमाराणन्नंते केवइयकाल ठिई पणत्ता गोयमा जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई पणत्ता

निजरे पण्ि। चामचनिषकाच। मेचलितकम। निजरेंति। निजरेमबी एपाठसूचकथा। इहांगाथा। संगृहणीमाथाकहेछे—बंधति। मयाकममा गृह ण १। उदय। उदयतेविपाक वेदनवम उदयेमबी पाम्यो ते भावमों उदयेंभावीये तेउदीरणा २। वेद। तथा वेदयो ३। अपह। कममाविश्यादि अध्यव साय विशेषकरोकोमकरवं ते अपवर्तन ४। संक्रमे। मवेधकमते भसवेधपणे संकमावे ते संक्रामणकहोये ५। तव। तथा। निहत्त। वोखरा पुदग लना मांहामांहि समूहकरी धारवूं ते निधत्त ६। निकाए। वोखराने पुदगल तेमांहोमांहि एकीभावकरीये एनिकाचण जिमसूईनो समूह अग्निसूं त पावी कूटी एकीभावे कीजे तिम ए जाणिये ७। अचलियकम्मतभने। अचलितकर्मसंवंधे भने आठमो सूत्र निजरा। चलिय। चलितकर्म। जीवाओ जीवप्रदेशथी। निज्जरए। निजराकरे ८ एनारकीनो वक्तव्यताकही। हिवे चउवीस दंडक क्रमागत असुरकुमारनो वक्तव्यता कहेछे—असुरकुमारा ण। अमरनिकायने विषे रूपवंत अने कुमारनो परेक्रीडे तेहना देव ते असुरकुमारदेव कहीये, असुरकुमारनो। भंते। हेभगवन्। केवइयकाल। केत लाकालनो ठिइ पणत्ता। स्थिति कही इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा। हेगोतम। जहन्नेणं। जघन्यता। दसवाससहस्साइं। दशसहस्रवर्षनो। ठिइ पणत्ता। स्थिति कही। उक्कोसेणंसातिरेगसागरोवमं। उत्कृष्टपणोतो एकसागरोपम भाभेरो स्थितिकही ते उत्तरस्त्रेणीना असुरेन्द्र ने आश्रीने, जाणवो। वली गो

नवरं विशेषोयं ॥ उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवममिति ॥ यदुक्तं साइरेगसत्तं मसुरकुमारराज मास्रित्योक्तं यदाह—चमर १ बलि २ सार १ महियं १ तिमत्तद्धपोयाबत्ति ॥ सहाना स्तोकाना मुपरी तिगम्यते स्तोकलवं चैव माचयते—हठस्सयबवगस्स निरुवकिठस्सजतुणो ॥ एगोऊसासवी साम एसपाणुत्तिवुच्चइ ॥ १ ॥ सत्तपाणूनिसेपाथे सत्तथोवानिसेलवे । लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तवियाहिएत्ति ॥ २ ॥ इद जघन्य मच्छासादि त जघन्यस्थितिकाना मित्या वगन्तव्य मुत्कृष्ट चोत्कृष्टस्थितिकाना मित्येति ॥ चउत्थभत्तस्सत्ति ॥ चतुर्थभक्त मित्येकोपवासस्य सञ्ज्ञा ततः श्रास्यो

उक्कोसेणसाइरेगसागरोवमं । असुरकुमाराणंभंते केवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नी ससंतिवा । पुच्छा । गोयमा जहन्नेणसत्तण्हथोवाण उक्कोसेणसाइरेगस्सपक्खस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । असुरकुमाराणंभंतेआहारट्ठी हंता आहारट्ठी । असुरकुमाराणंभंते केवइयकाल स्सआहारट्ठेसमुप्पज्जइ गोयमा असुरकुमाराणंदुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगणिव्वत्तिएय अणाभो

तमपूछेहे । असुरकुमाराय भंते । असुरकुमार देवयवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आणमंतिवा । सासासास कमूले ४ । पुच्छा । इसीप्रश्नको भा तिवारे भगवंतकहे । गोयमा । हेगौतम । जघन्य । जघन्यथको । सत्तह थोवाय । सातेथोवे एकलवथाइति आगमोक्त ॥ रोगरहित पुरुषने सा ते सासोसासे एक थोव कहीये । उक्कोसेणं । उत्कृष्टथको तो । साइरेगस्सपक्खस्स । एकपखमाझेरे । आणमंतिवा । सासोसासलेवाय उत्कृष्टस्थिति आ श्री जांणवा ॥ । असुरकुमाराय भंते । असुरकुमारदेवता हेभगवन् । आहारट्ठी । आहारार्थी मोज्यवांछकहे आहारनो अभिलाषीये अथवाजकहे जेहनेते आहारार्थीकहीये । हंतिमच्छ, उत्तर । वाक्येते । हंता । हांमहानुभाव । आहारट्ठी । आहारनाअर्थीवांछकहे, वली गौतमपूछेहे—असुरकुमारायभंते । असुरकुमारने हेभगवन् । केवइयकालस्स । केतलेकाले । आहारट्ठे । आहारनीवांछा । समुप्पज्जइ । उपजेतिवारे भगवंतकहा—गोयमा । हेगौतम । असुर कुमाराय । असुरकुमार देवताने । दुविहे । बेप्रकारना । आहारे । आहार । पण्णत्ते । कह्या । तंजहा । तेकहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । जाणता जेआहारकरी

गणिव्वत्तिएय । तत्थण जेसेअणाभोगणिव्वत्तिए सेअणुसमयअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ । तत्थणजेसेआ
भोगणिव्वत्तिए सेजहण्णेणचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणसाइरेगस्सवाससहस्सस्सआहारठेसमुप्पज्जइ । असुरकुमा
राणंतेकिमाहारमाहारेंति गोयमा दव्वओअणंतपएसियाइंदव्वाइं खेत्तकालभावपण्णवणागमेण सेसंजहाणेरइ
याण जाव तेणतेसिपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा सोइंदियत्ताए सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए इठ

निवत्तितकरोये ते अभोगनिवर्तित कहीये । अणाभोग । अजाणता आहार ते अनाभोगथको । निव्वत्तिएय । निवर्त्यो ते अनाभोगनिवर्तित कहिये । तत्थण । तिहांजे आहरमांहे, वरसे वाक्यालंकारे । जसेअणाभोगनिव्वत्तिए से । तेजोव अणाभोग अणजाणता आहारनकरे ते अनाभोगनिवर्तित आहार । सेअणुसमय । ते जोव समयसमय प्रते । अविरहिए । अविरहितपणा करे तेहने समये २ अनाभोगनिवर्तित । आहारठे । आहारनुं अर्थ समुप्पज्जइ । ऊपजे । तत्थणंजेसे । तिहांजे २ आभोगनिव्वत्तिए । आभोगे जाणता आहारनो निवर्तितकरे । सेजहणेण । ते जघन्यथकीतो । चउत्थभत्त स्स । चतुर्थभक्ते एक उपवासभो संग्रहे एकदिनेआहारकरो पछे बीजोदिन अतिक्रमी चौथेदिनथको आहारकरे । उक्कोसेण । उत्कृष्टथकीतो । साइरे गस्स । मातिरेकवार्द्ध अधिक । वाससहस्स । वर्षसहस्रे । आहारठे । आहारनोवांछा । समुप्पज्जइ । उपजे चतुर्थभक्तते जघन्यस्थिति आश्रयोछे अनेसा धिकवर्ष सहस्र ते उत्कृष्टस्थितिआश्रयो जाणवो, वली गौतम पूछे—असुरकुमाराणमते । असुरकुमार हेभगवन् । किमाहार । कोर आहारमक्ष आहारेंति । आहारेमुखे इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । दव्वओ । द्रव्यथी । अणंतपएसियाइंदव्वाइं । अनंतप्रदेशात्मक द्रव्यप्रते आहारे । खेत्तकाल भावपण्णवणागमेण । खेत्रकाल भावथी जिम श्रीपन्नवणाउपांगमांहे कह्यूं छे — तिम विचारवो । सेसं । शेष बाकीता । जहा । जि म । णेरइयाण । नारकोने पूर्वकह्या विचार तिम इहांपणि करवो । जाव । यावत् । तेण । तेआहारथको । तेसिं । तेअसुरकुमारदेवताने । पोग्गला । पुद गल । कयापणमथम कोसता । भुज्जो । फिरीतरे वारवार । परिणमति । परिणमे पुछवीय । इमपूछ्यां , उत्तर । गोयमा । हेगौतम । सोइंदियत्ताए

वरि पञ्च दिन नूका शरात भातिक्रम्य तृतीये मुक्तातिनाय' नागकुमारयक्कव्यताया ॥ उक्कोसेणं देसूणाइं दोपलिओवमाइंति ॥ यदुक्तं सदु

णाण इच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए णोअहत्ताए सुहत्ताए णोदुहत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । असु
रकुमाराणंभंतेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणया असुरकुमाराभिलावेण जहाणेरइयाणं जावचलियकम्मंणिज्जरेंति
णागकुमाराणंभंते केवइयकालं ठिइपण्णत्ता गोयमा जहण्णेणंदसवाससहस्साइंठिइपण्णत्ता उक्कोसेणंदेसूणाइंदो
पलिओवमाइं । णागकुमाराणंभंते केवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । गो

[illegible] मानसिका । [illegible] । मनोरम [illegible] । सवप्पताए । मनोरमइ मनाहरपणेंकरी । इट्ठताए । सवथगा
[illegible] पवावको । इच्छियताए । इच्छितकरी [illegible] मवदायोपचाथी । अभिज्झियताए । वारंवार इच्छवाय तेभणी अभीलाखवाये । उड
[illegible] । अधताए । भलोप [illegible] मारकोनो पवेचाये । सुहताए । सुखभावे मनुष्यनो पवेचाये । णोदुहताए ।
[illegible] । भुज्जोभुज्जोपरिणमति । वारवार परिणमे भयातावे नमो
[illegible] । पुव्वाहारियापोग्गलापरिणया । पूर्वपणा पुद्गल पुट थपुष्टरूप ते परिणया
[illegible] नारकीने भाखावें पूर्वपू तिम असुरकुमारने विषे पण
[illegible] । असुरकुमारनो [illegible] कहो । हिवे नागकुमारनो
[illegible] । केतले कालनो स्थिति कही ? एहि प्रश्नकोधें उत्तर
[illegible] । स्थिति कही ए मामान्यपणनो पवेचापें । उक्कोसेण
[illegible] उत्कृष्टस्थिति [illegible] कहवो , वली गौतम पूछेछे—

यमा जहस्रोणसत्तरहयोयाण उक्कोसेणमुक्कतपुक्कतस्सञ्चाणमतिवा पाणमतिवा ऊससतिवा नीससतिवा । णागकुमाराणत्तंश्चाहारठी हता श्चाहारठी । णागकुमाराणत्तंकेवइयकालस्सश्चाहारठेसमुप्पज्जइ गोयमा णागकुमाराणदुविहेश्चाहारेपणत्ते तजहा श्चाभोगणिव्वत्तिएय श्रणाभोगनिव्वत्तिएय । तत्यणजेसेश्रणाभोग

नागकुमाराणभते । नागकुमारदेवने हेभगवन् ! केतरयकालस्सभावमंतिवा ४ । केतलेकाले सासोसास हुवे दतिमश्न, उत्तर । गोयमा । हेगौतम । जघ न्यमतपदसाताव । अधन्ये सात स्तोके सासोसास कोधको समय्यसिति माय्यचोने । उक्कोसेणमुहुत्तपुहुत्तस्सभावमंतिवा ४ । उत्कृष्टथको तो बेथोससे तिहुनर सासोसासे एक मुहूत्त ते पथकहे बेथको मांडी नवतांई सम्भाविमेवनी सितोतमांहि पथन संघाते ए उत्कृष्ट स्थितिनांवचोने हुवे, वली गौत म पूछेछे—नागकुमाराणभते । नागकुमारने हेभगवन् ! आहारठी । आहारनो वांछक ? हता । जिम तू कहे ते तिमज इसे अर्थे इंता हको कहीयेछे आहारठी । आहारनोवांछक, वली गौतम पूछेछे—नागकुमाराणभते । नागकुमारने हेभगवन् ! केवइयंकालस्सआहारठे । केतलेकाले आहारनो इच्छा समुप्पज्जइ । ऊपजे इसे पूछ्यापछी उत्तर । गोयमा हेगौतम ! नागकुमाराणं दुविहे आहारे पणत्ते । नागकुमारने दिवुभेदे आहार कह्यो । तजहा । ते कहेछे—आभोगनिव्वत्तिएय । पर्याप्ता वस्थायें तत्त्वावस्थाये जांणता आहारकरे ते आभोगनिवर्त्तित । अणाभोगनिव्वत्तिएय । अपजवाणे समसे अ पर्याप्ता वस्थायें अथवा जांणतां आहारकरे ते अनाभोगनिवर्त्तित । तत्थणंजेसेअणाभोगनिव्वत्तिए । तिहां जे अनाभोगनिवर्त्तित आहारकरे । सेअणु समयंअविरहिए । तेत्रोव समय समय प्रतें अविरहितथका करे निरंतरकरे । आहारठे । ते अविच्छिन्नपणे निरतर आहाराभिलाष । समुप्पज्जइ । ऊप जे । तत्थणं जेसे आभोगनिव्वत्तिए । तिहां जे आभोगनिवर्त्तित आहार करे । सेजहन्नेण चउत्थभत्तस्स । ते जघन्य चतुर्थभक्त एकांतरे आहारनो इच्छा ऊपजे । उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स । उत्कृष्टथकोतो दिवसपृथक्त्व बेथोमांडी नवतांई पृथक्त्व कहीये तेतले । आहारठे समुप्पज्जइ । आहारनो इच्छा ऊ

भवन्य तह्वाविशेषः समयमसिद्धः ॥ एव सुवस्कुमाराणति ॥ मागकुमाराणामिव सुपर्णकुमाराणामपि स्थित्यादि वाच्यं इदम्च कियदूर यावद्वाच्य मित्याह ॥ जायथणियकुमाराणति ॥ यावत्करणात् विद्युत्कुमारादिपरिग्रह एषां चेहायक्रमो यथेयः – असुरा १ नाग २ सुवस्सा ३ विज्जू ४ अग्गी ५ दीव ६ उवहीय ७। दिसि ८ वाउ ९ थणियाविय १० दसजेयाभवणवासीय ॥१॥ अथ भवनपतिवक्तव्यतानन्तर दण्डकक्रमायात पृथिव्यादीनां स्थित्यादि निरूपयन्नाह ॥ पुढवीत्यादि ॥ अस्य भावनस्पतिसूत्रा अयर ॥ अतोमुहुत्ततित ॥ मुहूर्तस्या अत रन्तर्मुहूर्त्तं भिन्नमुहूर्त्तमित्यर्थः ॥ उक्को सबं बावीस वाससहस्साइति ॥ यदुक्त तत् खरपृथिवी माश्रित्या वगन्तव्य यदाह – सण्हाय १ सुद्ध १२ वालुय १४ मणोसिला १६ सक्कराय १८

णिसुत्तिए सेणंगुसमयश्चविरहिएणआहारठेसमुप्पज्जइ तस्यणंजेसेआभोगणिव्वत्तिए सेजहन्नेणचउत्थभत्तस्स उक्कोसेणदिवसपुहत्तस्सआहारठेसमुप्पज्जइ सेसजहा असुरकुमाराणं जाव चलियकम्माणिज्जरेति ॥ एवं सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणति ॥ पुढविकाइयाणंभंते केवइयंकालंठिईपण्णत्ता गोयमा जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणबावीसवाससहस्साइं । पुढविकाइयाणंतेकेवइयकालस्सआणमंतिवा पाणमंतिवा ऊ

पत्रे। यम जहा। यावता सर्व जिम। असुरकुमाराणं। असुरकुमारने कह्या तिमसघलवह्यो। जाव चलितं कर्म। यावत् चलितकर्म। निर्जरेति। नि र्जरे चयघरे इत्यर्थ। एवं सुवर्णकुमाराणवि। इम सुवर्णकुमारनेपणि कहवा। जावथणियकुमाराणंति। यावत् स्तनितकुमार तांई कहवो। ए सुवर्ण पतीनो वक्तव्यताकही ॥ हिवे दण्डकक्रमायत पृथिवीनो वक्तव्यता कहेछे—पुढविकाइयाणं भंते। पृथिवीकायनो हेभगवन्। केतलाकालनीस्थिति कही हेगोयम। उत्तर। जीवमा जघन्य अंतर्मुहूर्त। हेगौतम। जघन्यथको अंतर्मुहूर्त। उक्कोसेणंबावीसं वाससहस्साइं। उत्कृष्टथको बावीसहजारवर्ष खरपृथिवीकायआश्री कही। पुढविकाइयाणंभंते। पृथिवीकाय हेभगवन्। केवइयकालस्स आणमंतिवा। केतलेकाले सासोश्वास लें मूके इसे गौतम पूछाथका भगवंत उत्तर कहेछे – मायमा वेमायाए आणमंतिवा ॥ । हेगौतम। केहवा श्वासोश्वासनो मर्यादानथी विविध मात्रा काल विमात्र एतले

सरपुढवी र२ । एगंधारसवीरम मोलसघडारयाओसति ॥ १ ॥ वमायाएति ॥ विपमा विविधावा मात्रा कालविभागो विमात्रा तया इदमुक्तं भवति विपमकाला पृथिवीकायिकाना मुच्छ्वासादिक्रिया इयत्कालेति निरूपयितु शक्यते ॥ अहाणेरइयाणमित्यतिदेशात् ॥ कोलरं भवक्ष्यपमो गाहाइ कालसुं समयरठिईयाइ इत्यादि ॥ वृत्य ॥ निव्वाघाएणं छद्दिसिति ॥ व्याघात आहारस लोकान्तनिष्कुटेषु सम्भवति नान्यत्र ततो निष्कुट्यो ऽन्यत्र पदसु दिक्षु कथं वस्तुषु पूर्वादिदिक्षु ऊर्ध्व अधश्च पुद्गलग्रहणं करोति तस्य स्थापना ॥ वाघायंपडुच्चत्ति ॥ व्याघात प्रतीत्यमापातस्य निष्कुटेषु तत्र च ॥ सियतिदिसिति ॥ स्यात्कदाचित्तिसृषु दिक्षु आहारग्रहणं भवति, कथं यदा पृथिवीकायिको ऽधस्ताने उपरितनेवा

सससतिघा नीससतिवा गोयमा वेमायाएआणमतिवापाणमतिवा ऊससतिवानीससतिवा । पुढविकाइयाणं भंते आहारठी हंतागोयमा आहारठी । पुढविकाइयाणंभंतेकेवइयकालस्सआहारठेसमुप्पज्जइ गोयमा अणुसमयअविरहिएआहारठेसमुप्पज्जइ । पुढविकाइयाणंभंतेकिमाहारमाहारेति गोयमा दव्वओजहाणेरइयाणं

पृथिवीकायाने एतलेकाले सासोसास पइवो कहो सवोये नहीं ४ वलो गौतम पूछे । पुढविकाइयाणंभंते आहारठी । पृथिवीकायना जीवने हेभदन्त । आहारनोइच्छावे ? भगवंत कहेछे—हंतागोयमा आहारठी । हांगौतम पृथिवीकायना आहारनो अर्थीछे । पुढविकाइयाणं भंते केवइय । पृथिवी कायना जीवने हेभगवन् । केतले । कालसु आहारठे समुपज्जइ । काल आहारनोइच्छा ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अणुसमयं अविरहिय अणुसमये सातत्यपणे अविरहित निरंतर । आहारठे समुपज्जइ । आहाराभिलाष ऊपजे । पुढविकाइयाणं भंते । पृथिवीकायना जीव हेभगवन् ! किमाहार माहारेति । स्युं आहार आहारे ले इमज इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा दव्वओजहा णेरइयाणं । हेगौतम ! द्रव्यथी जिम नारकीने पूर्वेकह्यो तिम इहांपणि जाणवो । निव्वाघाएणं छद्दिसिआहारपडुच्च । व्याघात आहारनो लोकांतनिष्कुटनेविषे संभवे बीजेस्थानके नहीं तेमाटे लोकना निष्कुटामो बीजेस्थानके छदिसिना आहारछुवेते जिम पूर्वादि ४ ऊर्ध १ अधो १ एव छदिसिनो पहलग्रहण करे व्याघातभाग्यो लोकांतने सूये । सिय

कोणे वस्थितः स्या तदा ऽधस्ता दलोकः पूर्वदक्षिणयो श्वालोक इत्येवं तिसृषा मलोकेना वृतत्वा तदन्यासु तिसृषु पुद्गलग्रहण मेवमुपरितनकोणे पि वाच्यं यदा पुन रष उपरि चालोको भवति तदा चतसृषु दिक्षु यदातु पूर्वादीमा पश्चां दिशा मन्यतरस्या मलोकोभवति, तदा पञ्चस्वि ति ॥ फासहंजकाळाइति ॥ इह कक्खडादयो रूक्षान्ताः स्पर्शा वृष्याः ॥ सेसतहेवत्ति ॥ ञ्य नवितावक्षेप तथैव, यथा नारकाणां तथा पृथिवी कायिकानामपि तथव ॥ जाइ भंत सुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुठाइं अपुठाइं अह पुठाइं किं ठगाढाइं इत्यादि ॥ नायततित्ति ॥ नानात्वं भेदः पुनः पृथिवीकायिकानां नारकापेक्षया द्वार प्रतीत यथा ॥ कङ्जाणमित्यादि ॥ तत्र ॥ फासाइंतित्ति ॥ स्पर्शं कुर्वन्ति स्पर्शयन्ति स्पर्शेन्द्रि

णिव्वाघाएणछद्दिसिंवाघायपडुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं सियपंचदिसिं वण्णउ कालनीलपीअलोहियहा लिद्दसुक्किलाणं गंधउ सुब्भिगंधदुब्भिगंधाइं रसउ तित्ताइं फासउ कक्खडाइं ८। सेसंतहेव णाणत्तं कइभाग

तिदिसि। यदाचित् तीन दिशिना आहारले जिवारजिवारे पृथिवीकायना जीव लोकने तथाऊपरलेकूण ऊपने तिवारे जीवे अलोक पूर्वादि विदि शिये अलोक हुवे तिवारे तीनदिशिना आहारले तथा। सियचउदिसिंसियपंचदिसिं। ऊपरे तथा जीवे अलोक न हुवे तिवारे चारिदिशिनो आहार ले तथापि कदिशिमाहिलो अनेरी एकदिशें अलोक हुवे तिवारे पचदिशिना आहारले जिहां व्याघात निम्मुठ हुवे तिहां विचारो भजनाकरवो। ए भाषामनोभपोपमाशिमशाभिदसठिकाय। पनिको काइया यववर्षे तेबोल—वर्णवोकाका आहारमतुल १ नीला नीलवमससरीखा २ पीला सुवर्ण सरीखा १ काठित इसपावमन मिलसरीखा ४ धवलस्फटिक रत्नादिक सरीखा ए पचमवारे पहलआहारे। गधआसुभिगंध २। मधवको सुगंध १ दु र्गंध २ बेप्रकारे आहारे। रसपोतित्ताद ५। रसकी तिक्तादि पांच सूंठ आदिदेइ तेनोपरे। फासभावप्रकार ८। अपयो इत्यादि करके आदिदे प्रमपत आठेरगुणा। सेसंतहेव आयत। नवावी पेप नारकीनोपरे जायवो इतलाविशेष आहारमात्री एह। कइभाग आहारेंति। केतलाभाग आहारें। कइभाग फासाइं ति। केतला भाग आसाद इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हेमोतम। असंखेज्जइभाग आहारेंति। पुरसमो असंखातमो भा

मेवाहारपुद्गलानां कतिनागं स्पृशन्तीत्यर्थः अयया स्पर्शेना स्वादयन्ति, माकतमोस्या फासायन्ति स्पर्शेनया यावदति एड स्युपसजन्ताइति फासाइति ॥ इद मुक्त भवति यथा रसनेन्द्रियपर्याप्तिपर्याप्तका रसनेन्द्रियद्वारेया हारमुपन्नुजाना आस्वादयन्तीतिव्यपदिश्यते, एव मेते स्पर्शने न्द्रियद्वारभति ॥ मर्मजहानेरइयाणंति ॥ तथैव ॥ पुढविकाइयाणंभते । पुढविकारियाणोगणसा परिवया इत्यादि ॥ माण्वय व्याख्यपमिति ॥ एव जाव चउरसरकाइयाकति ॥ अनेम पृथिवीकायिकसूत्रमिवा प्कायिकादि चत्वारि सूत्राणि समानी त्युक्त, स्थितौ पुन र्विशेषो सएवाह, नवर ॥ ठिइ वणपवा भाजसति ॥ तत्र जघन्या सर्वेषा मन्तर्मुहूर्त्त मुत्कृष्टा त्वपा सप्तवर्षसहस्राणि, तेजसा महोरात्रत्रयं, वायूना त्रीणि वर्षसहस्राणि, वनस्पतीनां

आहारेंति कइभागफासाइति गोयमा असंखेज्जइभागआहारेंति अणंतभागफासाइति । जाव तेणपोग्गला कीसत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । गोयमा फासिंदियवेमायाए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति सेसजहाणेरइयाण जाव णोअचलियकम्मणिज्जरेंति एवजावचउरिंदियाण णवर ठितीयजोतस्स जाजस्स उस्सासोवेमायाए बेइ

न एतावता पतिसूक्ष्म स्तोक पाहारे। पर्नतभाग फासादिवि । पनतभाग पसंख्याताक्षो पवि पतिसूक्ष्मतर समवत पुद्गलामतें पाहारकरे । जाव तेण तेसिंपोग्गला कोमत्ताए भुज्जो २ परिणमति । यावत् तेपृथिवीकायिक जोवाने पुद्गल किसीरीते वार वार परिणमें भगेवाने इतिप्रश्न । उत्तर । गौ यमा । हेगौतम । फासिंदिय । स्पर्शेन्द्रिये पडिलीवे । वेमायाए भुज्जो २ परिणमति । विषमभावा अथवा विविधमात्रा कापाविभाग तिरेकरी एत मे मर्यादा रहीतपणाय इम वारवार परिणमें। सेसजहाणेरइयाण । अन्यपो वाक्ता जिम नारकीने कह्या तिम जाणवू तेहम । पुढविकाइयाण भते पुढविकारिया णमसा परिणवा । इत्यादि विस्तार । जाव णा अचलियकम्म णिज्जरेंति । यावत् नहीं जोवको अचलितकम निजरें एतलाता इ कहवा । एवजावचउरिंदियाण णवर ठितीयवेतव्वा । इम पृथिवी सूत्रनीपरे अप्कायादिक चारिसूत्र सरीखा कहवा यावत् चउरिंदीयाल लगे एतलाविशेष स्थितिने विषे भेदकहवा तेकहेछे—तिहां जघन्यतो सवनो अन्तर्मुहूर्त्तनी स्थिति अने उत्कृष्टीतो अप्कायनी सातसहस्रवर्ष ती

रबोति, उत्कर्षेणं पृथिव्यादिक्रमेण–बावीसाइंसहस्सा १ सत्तसहस्साइं २ तिन्निहोरत्ता ३। वाएतिन्निसहस्सा ४ दसवाससहस्सियावणस्सति ५॥ १॥ बेइंदियाणठिइजयिकजऊसासोवेमायाएत्ति॥ वक्तव्य इतिशेष स्थितिश्च द्वीन्द्रियाणां द्वादशवर्षाणि, द्वीन्द्रियाणां माहारसूत्रे, यदुक्तं – तत्थणजे से भाजोगनिव्वत्तिए॥ सेणं असंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए भाहारट्ठे समुप्पज्जइति॥ तस्य यमर्थः, असङ्ख्यातसामयिक भाहारकालो भवति यथा पल्योपमस्यादिरूपो न्यसो त्यत उच्यते भान्तर्मौहूर्तिक सत्रापि विमात्रयान्तमुहूर्तसमयासङ्ख्याततया सङ्क्षेपजेत्वा दिति॥ बेइं

दियाणठितीजाणियव्वा ऊसासोवेमायाए। बेइंदियाणआहारेपुच्छा अणाभोगणिव्वत्तिएतहेव। तत्थणजेसे आभोगणिव्वत्तिए सेणंअसंखेज्जसमइए अंतोमुहुत्तिएवेमायाए आहारट्ठेसमुप्पज्जइ सेसतहेव जाव अणंत भागआसायंति। बेइंदियाणजेपोग्गलेआहारत्ताएगिण्हंति तेकिंसव्वेआहारेंति णोसव्वेआहारेंति गोयमा

उत्कृष्टनो तोम भहाराणि बाउकायनो तोमसहस्रवर्ष वनस्पतीकायनो दसहस्रवर्ष पृथिवीप्रमुखनी पांचेनी भेली स्थिति कहेछे—बावीसाइंसहस्सा १ सत्तसहस्साइं २ तिन्निहोरत्ता ३ वाएतिन्निसहस्सा ४ दसवाससहस्सियावणस्सा। बेइंदियाणंठितीभाणियव्वा। पंचथावरनो वक्तव्यताकहो। द्वि वे इंद्रियादिकहेछे—बेइंद्रीनो स्थिति बारेवरसनो कहवो। ऊसासावेमायाए। सासो सासपणि मर्यादा रहितहोय। बेइंदियाणं भाहारे पुच्छा। प्रथादिने भाहारनो पृच्छा भाहारनो प्रश्नबोधी। भणाभोगनिव्वत्तिए तहेव। भणाचिंता भाहार करेते सामाहारनो भपेक्षायेंकरी पण्णवा भोगा हार तो सयमाहेंनेहि तोमसोवे कहवो। तत्थणं जेसे भाभोगनिव्वत्तिए सेणंभसंखेज्जसमइए। तिहांजे ते भाहारकरे तेभसंख्यातसमयिक भाहारका भपुने तेता भसमय्थिरोभासनपि भसंख्यात समयिकछे तेमाटेकहेछे—भंतोमुहुत्तियवेमायाए भाहारट्ठेसमुप्पज्जइ। तिहांपणि वेमायाएं भंतर्मुहूर्तने वि षे समय भसंख्यात पर्वेकरी। सेसतहेव। भणंताभाग तिहांलगेकहवो। जावभणंतभागभासायंति। यावत् पूर्वोक्तसर्वकहवो भनंतभाग भाहारेताव में कहवो। बेइंदियाणंभंते जेपोग्गले भाहारत्ताए गिण्हंति। बेइंद्रिय हेभगवन्! जेपुद्गल भाहारपणे यहे ग्राम। तेकिं सव्वेभाहारेंति। तेसर्व सर्व

रियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते लोमाहारे पक्खेवाहारेयत्ति ॥ तत्र लोमाहारः सर्वतोपततो वर्षादिषु यः पुद्गलप्रवेश अमूत्रादवगम्यतइति, प्रक्षेपा हारस्तु कावलिक तत्र प्रक्षेपाहारे अवगो ऽपर्याप्तएव शरीरा दन्तर्वर्त्तिस विध्वस्तं स्पर्शरसनाभ्यां अतएवाह ॥ जे पोग्गले पक्खेवाहार ताए गेण्हंतीत्यादि ॥ अणेगाइचणं भागसहस्साइति ॥ असङ्ख्याभागा इत्यर्थः ॥ अणासाइज्जमाणाइति ॥ रसनेन्द्रियतः ॥ अफासाइज्जमाणाइति स्पर्शनेन्द्रियतः ॥ अपरत्यादि ॥ अत्यद तदेव दृश्यम् ॥ अपरेअपरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावत्ति ॥ व्यक्तम् ॥ सव्वत्थोवापो

थेइंदियाणदुविहेआहारेपण्णत्ते तजहा लोमाहारेयपक्खेवाहारेय जेपोग्गलेलोमाहारत्ताएगिण्हति तेसव्वेअप रिसेसिएआहारेंति जेपोग्गलेपक्खेवाहारत्ताएगिण्हति तेसिणपोग्गलाणअसखेज्जइभागआहारेंति अणेगाइच णभागसहस्साइअणासाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइ विद्धसमावज्जति एएसिणभतेपोग्गलाणअणासाइज्ज

पुनम आहारे। आसज्य आहारति। विशा सवआहारमर्थी एमअबोधा उत्तर। आयमा। हेमीतम। बेइंद्रियाच दुविधे आहारे पयत्ते तजहा। बी इंद्रियने स्पर्शन रसनवतने बेप्रकारे आहार कह्या तेकहवे—लोमाहारेय पक्खेवाहारेय। लोमाहार प्रक्षेपाहार तिहांलोमाहार जिके आवयवो वर्षादि कालने विषे जेपुद्गलप्रवेश थाय तेमूत्रगम्यछे प्रक्षेपाहारते कवलरूप तिहां प्रक्षेपाहारनेविषे कवा अपर्याप्तावस्था जेशरीरथको मांहि तथा बाहिर विध्वंसपामे स्पर्श सम्बन्धी अतएव आह—जेपोग्गले इत्यादि। जेपुद्गल लोमाहारपणे ग्रहेछे। तेसर्वे अपरिसेसिए आहारेंति। जेसव अपरिशेष आहारे समस्तमा अवयवे। जेपोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हति। प्रक्षेपाहारते कवलाहार जेपुद्गल अमपाहारपणे ग्रहेछे। तेसिणं पोग्गलाणं असंखेज्जइभाग आहारेंति। तेह पुद्गलमते अनेक रूपथकी असंख्यातमोभागमते आहारपणे। अणेगाइचणभागसहस्साइ। अनेक सहस्र भागकहस्य। अणा साइज्जमाणाइ। अनास्वादमानरसनेन्द्रियेकरी आस्वादियानथी। अफासाइज्जमाणाइ। अस्पृश्यमानस्पर्शनेन्द्रियेकरी स्पर्शीनथी। विद्धसमावज्जइ। वि ध्वसपामे। एएसिणंभते आयुष्मन् अनास्वाद्यमानाय। एहोम हेभगवन् पहसाने रसनेन्द्रिये अनास्वाद्यमानाने। अफासाइज्जमाणाय। सर्वने

ग्मला मवासाएज्ञमावेत्यादि ॥ ये प्रमास्वाद्यमानाः केवल रसनेन्द्रियविषया से स्तोका अस्पृश्यमानाना अनन्तभागवर्तिन इत्यर्थ , ये स्वस्पृश्य मानाः केवलं स्पर्शनविषया सेनन्तगुणाः रसनेन्द्रियविषयेभ्यः सूक्ष्मादिति ॥ तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईयत्ति ॥ तथैव ॥ अल्पेव म तोमुहुत्तं उक्कोसेण तइंदियाणं एगूण पन्नासराइंदियाइं चउरिंदियाण छम्मासा ॥ तथा आहारेपि नामास्व सम ॥ तेइंदियाण भंते । केपोग्ग

माणाण अफासाइज्जमाणाणय कयरे२हितोअप्पावा ४ गोयमा सव्वत्थोवा पोग्गलाअणासाइज्जमाणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा बेइंदियाणंभंतेपोग्गलाआहारत्ताएगिण्हंति तेण तेसिंपोग्गलाकीसत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति गोयमा जिब्भिंदियफासिंदियवेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति । बेइंदियाणंभंतेपुव्वाहारियापोग्गलापरिणयातहेव जाव चलियकम्मंणिज्जरेंति । तेइंदियचउरिंदियाणंणाणत्त

न्द्रिय भवन्तप्रमाणाने एविज्ञमाणे । कयर २ हिता मप्पावा । कव २ बहुआ थावाय । बहुआया । घणाबाय । तुल्लावा । सरीखाबाय । विसेसाहिया वा । विसेषाधिकछेय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । सव्वथोवापाप्रवा अणासाइज्जमाणा । सबको थोड़ा पुद्गल से केवल रसनेंद्रियने विषयछे ते अस्पृश्यमान पुद्गलने अनंतभागवर्तीछे तेमाटे तेथकी । अफासाइज्जमाणा अनंतगुणा । अस्पृश्यमान केवल स्पर्शनविषयछे ते अनंतगुणा रसनेंद्रिय विषय पुद्गलथको । बेइंदियाणं भंते पाम्मला । हवो गौतम पूछे—बेइंद्रियजीव हेभगवन् । पुद्गलमते । आहारत्ताएगिण्हति । आहारपणे अण्णपणे पणे । तेणंतेसिंपोग्गलाकीसत्ताए । ते ते पुद्गल बेइंद्रियजीवने किसोतरे । सुभ्भासुभ्भापरिणमति । वारवार परिणमेए प्रश्न । उत्तर भगवंतकहेछे—गो यमा । हेगौतम । जिब्भिंदिय फासिंदियवेमायाए । रसनेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये विमायाने अनेकप्रकार कालविभागपणे । भुज्जो २ परिणमंति । वारवा रपरिणमे । बेइंदियाणं भंते । बेइंद्रियजीवने हेभगवन् । पुव्वा हारिया पोग्गला परिणया तहेव । पूर्वआहारयापुद्गलपरिणम्या परिणमे इत्यादिक पूर्व व ख्याने तिमजकहवा । जावचलियं कम्मं णिज्जरेंति । यावत् चलितकर्म निर्जरे क्षयकरे । तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए । तेइंदिय चउरिंद्रियने

मे आहारताए गेवईति इत्यत आरभ्य तावत् सूत्रं वाच्य यावत् ॥ अणेगाइचव भागसहस्साइ आघायाइज्जमाणाइ इत्यादि ॥ एतच्च घ्राणेन्द्रिय मपूरापेक्षया ज्ञातुमाप्नवामीति प्रतिरिक्त मतो नानात्व एव मल्पबहुत्वसूत्रे परिणामसूत्रेण चतुरिन्द्रियसूत्रेषुतु परिणामसूत्रे ॥ चक्षुरिन्द्रिय साय पाविंदियसाय ॥ इत्यधिकमिति नानात्वमिति पञ्चेन्द्रियतिर्यक्सूत्रे ॥ ठिइ जविरुवंति अवसेय मतोसुत्त उक्कोसेणं तिन्निपलिओवमाई

ठिइए जाव अणेगाइचणंनागसहस्साइ अणाघाइज्जमाणाइ अणासाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइ विद्ध समायजति । एएसिणंभंतेपोग्गलाणअणाघाइज्जमाणाण अणासाइज्जमाणाण अफासाइज्जमाणाणयपुच्छा गोयमा सव्वत्योवापोग्गलाअणाघाइज्जमाणा अणासाइज्जमाणाअणंतगुणा अफासाइज्जमाणाअणंतगुणा ते इदियाणघाणेदिय जिब्भिदियफासिंदिय वेमायत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । चउरिंदियाणचक्खिदियघाणि

नानात्वमिति ते इस अवशेषं मतोसुत्त उक्कोसेण इ दियाण छमासपवदियाइ ॥८ दिगचउरिंदियाण अमासाआहारेविसेषपदि नानात्व जाव अणेगाइ वर्णमाननवस्माइ । यावत् अनेक एतावता यथा भागसहस्र । अघायारत्वमानाइ । अनाघ्रायमाण ते घ्राणेंद्रिये । अनासाइज्जमाणाइ । अनास्वाद्य मानते रसनेंद्रिये । अफासाइज्जमाणाइ । अस्पृश्यमानते स्पर्शनेंद्रिये । विध्वंसमावज्जति । विध्वंसविनाशपामे । एएसिणं भंते । एतने हेभगवन् । पोग्गल नाण अनाघाइज्जमाणाण । पदगलान अनाघ्रायमानाने । अनासाइज्जमाणाण । अनास्वाद्यमानाने । अफासाइज्जमाणाणय पुच्छा । अस्पृश्यमानाने मा हामांहि अल्प बहुत्व इत्यादिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम । सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा । सर्वथी थोड़ा पुद्गल अनाघ्रायमान घ्राणेंद्रिये । अनासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अनास्वाद्यमान रसनेंद्रिये ते अनंतगुणा । अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । अस्पृश्यमान पुद्गल स्पर्शनेंद्रिये ते अनंत गुणा । तेइंदियाण । तेइंद्रीने । घाणिंदिय । घ्राणेंद्रियने । जिब्भिंदिय फासिंदिय । जिह्वेंद्रिये स्पर्शनेंद्रिये । वेमायत्ताए । अनेकविध मात्राविभागपणे । भु ज्जो २ परिणमति । वारंवार परिणमे । चउरिंदियाण । चउरिंद्रियने । चक्खिंदिय । चक्षुरिंद्रिये । घाणिंदिय । घ्राणेंद्रिये । जिब्भिंदिय । जिह्वेंद्रिये ।

इत्येतद्रूपा स्थितिं प्रज्ञप्ता ॥ उस्सासोत्ति ॥ उच्छ्वासो विमात्रया वाच्यइति तथा सियअपम्बेन्द्रियावा माहारार्थप्रति यदुक्तं ॥ सक्कोसेव सडजत स्सति ॥ तद्देवकुरूत्तरकुरुतिर्यक्षु सम्यत, मनुष्यसूत्रे यदुक्त मष्टमभक्तस्येति तद्देवकुर्वादिमिथुनकनरा नाश्रित्य समवसयमिति, ॥ वाणमंतराण

दियजिब्भिंदियफासिंदियत्ताए भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । पचिंदियतिरिक्खजोणियाणठिईभाणिऊण ऊसासोवे मायाए आहारोआभोगणिव्वत्तिए अणुसमइयअविरहिए अणाभोगनिव्वत्तिए जहन्नेणअंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेण छट्ठभत्तस्स सेसजहाचउरिंदियाणं जाव चलियकम्मंणिज्जरेंति एवमणुस्साणवि णवरं आभोगणिव्वत्तिए जह न्नेणअंतोमुहुत्त उक्कोसेणअट्ठमभत्तस्स सोइंदिय ५ वेमायाएभुज्जोभुज्जोपरिणमति सेसतहेव जावचलियक

फासिंदियत्ताए । स्पर्शेन्द्रिये । भुज्जोभुज्जोपरिणमंति । वार २ परिणमे । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण । पचेंद्रियतिर्यंचयोनियाने । ठिई भणिऊण । स्थि तिमते कहयो ते जहन्नेंअंतोमुहुर्त उत्कोसें तिनिपलियोपमाइं एहयोक्तिति कहीये । ऊसासोवेमायाए । उस्सास विमात्रायें मर्यादारहित कहयो । आहारोभयाभोगनिव्वत्तिए । आहारते भक्त ते अनाभोग अजाणपणे करता । अणुसमइय अविरहिया । अनुसमय प्रतिसमय तेसावस्यअपावर्त्तनेभणे विरह विना ते निरंतरकरे । आभोगनिव्वत्तिया । आभोगे जाणपणें करे ते आभोगनिवर्त्तित कहीये । जहन्नेण अंतोमुहुत्त । जघन्यथी अंतमुहूर्त करी उत्कोसेण छठ्ठ भत्तस्स । उत्कृष्टो षष्ठभक्त ते देवकुरुउत्तरकुरुना तिर्यंचआश्री जांणवो । सेसंजहा चउरिंदियाणं । शेष जहाथी जाणो ते जिम चउरि न्द्रिय कह्यूं तिम जांणवूं । जावचलियकम्म निज्जरेंति । यावत् जीवप्रदेशथी चलितकर्मनो निर्ज्जरे क्षयकरे । एवं मणुस्साणवि । इमहीज तिर्यंचनीपरे मनुष्यनेपणि जांणवो । णवरं आभोगनिव्वत्तिए । एतला विशेष जाणवा आहारनिवर्त्तकरे । जहन्नेण अंतोमुहुत्तं । ते जघन्ये अंतर्मुहूर्त । उक्कोसेण अट्ठमभत्तस्स मारंदिय । उत्कृष्टो अष्टमभक्ते एपणि देवकुरु उत्तरकुरु मनुष्यआश्रीजांणवा युगलने हुवे पांचमा आरा जान तसोच इंद्रिय । वेमायाए भुज्जो २ परिणमति । वेमात्राए वार २ परिणम शरीर पुष्टकरे । सेसतहेव । शेषवाकता तिमहीज । जावचलियकम्मं निज्जरेंति । यावत् चलितकर्म

मित्यादि ॥ वाणमंतराणां स्थिती नामात्वं ॥ प्रथममाते ॥ स्थितेरवशेष मायुष्कवक्त मित्यथः, मायुक्त माहारादियसु यथा – नागकुमारादीनां तथा सूर्यं व्यन्तराणां नागकुमाराणाञ्च प्रायः समानधर्मत्वा, तत्र व्यन्तराणा स्थिति जघन्येन दशवर्षसहस्राणि, उत्कर्षतस्तु पल्योपममिति ॥ ज्योतिषाणामपीत्यादि ॥ ज्योतिष्काणा मपि स्थिते रवगमं तथैव यथा – नागकुमाराणा, तत्र ज्योतिष्काणां स्थिति जघन्येन पल्योपमाष्टभाग उत्कर्षेण पल्योपमं वर्षलक्षाधिकमिति, नवरं ॥ उस्सासत्ति ॥ केवल मुच्छ्वास सर्वा न नागकुमारसमानः, किंतु यथयमाय सथावाह ॥ जहन्नेय मुहुत्तपुहुत्तसेत्यादि ॥ पृथक्त्व मित्युच्यति रानवम्य लाव पञ्चपर्यं मुहूर्तपृथक्त्व माहिया मुहूर्ताः, यथोत्कृष्टं तदष्टौ नववेति, आहारोपि

अणिज्जेरिति वाणमंतराणठिइएगागत्त अवसेसजहाणागकुमाराण एवजोइसियाणवि णवर उस्सासोजहणे णमुहुत्तपुहुत्तस्सउक्कोसेणविमुहुत्तपुहुत्तस्स आहारोजहण्णेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणविदिवसपुहुत्तस्स से

निर्जरेयवारे। वाणमंतराव ठि[illegible]। वाणमंतरने आयुष्य पर्वा सव सरोख स्थितिमे विष नागादिभेद जाणवो। अवसेस जहा नागकुमाराणं। मेव आहारादिक वसु जिम नागकुमारने कह्यं तिम जाणवो व्यंतरने नागकुमारने प्राय समानधर्म पने स्थिति अवश्य व्यंतरने दशसहस्र वरस उत्कृष्ट एकपल्योपमनो। एवजोइसियाणवि। इमनागकुमारनो परे ज्योतिषी जांणवा स्थिति जघन्यै पल्योपमनो आठमो भाग उत्कृष्ट एक पल्योपम लाख वरसे अधिक। नवरं उस्सासो जहन्नेण मुहुत्तपुहुत्तस्स। एतलो विशेष उस्सास जघन्येपणि मुहूर्त पृथक्त्व बेथकी मांडी नवलगें न पृथक्त्व मरजादे पणिहवा जघन्ये मुहूर्त जाणवा। उक्कोसेणविमुहुत्तपुहुत्तस्स। उत्कृष्टपणो पणि मुहूर्त पृथक्त्व सासो स्वासले इहां उत्कृष्टेमुहुर्त पृथक्त्व आठ तथा नव मुहूर्त जाणवा। आहारो जहन्नेण दिवसपुहुत्तस्स। आहारपणि जघन्य दिवस पृथक्त्व बेथी मांडी नवलगें पृथक्त्वसंज्ञाये तेजघन्ये बे तथा तीनदिवस जाणवा। उक्कोसेणवि दिवस पहुत्तस्स उत्कृष्टपणि दिवसपृथक्त्व ते आठ तथा नवदिन जाणवा। सेसतचेव। शेषवाणवो ति मज पूर्ववत्। वेमाणियाणंठिई भाणियव्वा ओहिया। वेमानिकनी स्थिति कहवी ओघिक एतले सामान्ये सव भाखी तिहम जघन्यथी एकपल्योपम

विज्ञापितमेव तथाचाह ॥ आहारोइत्यादि ॥ वेमाणियाणंठिईजाणियव्वाठहियत्ति ॥ औघिकी सामान्या सावपल्योपमाद्विका, त्रयस्त्रिंशत्सागरो पमास्ता तत्र जघन्या सौधर्मे भावित्यो तकृष्टा चानुत्तरविमानानीति, उच्छ्वासप्रमाणंतु जघन्यं जघन्यस्थितिकदेवा नामित्ये तत्तु उत्कृष्टस्थिति का भावित्येत्यर्थ यथमाथा– जस्सजइसागराइं तस्सठिईतत्तिएहिपक्खेहिं ॥ ऊसासोदेवाणं वाससहस्सेहिं आहारोत्ति ॥ १ ॥ तदेतावता पन्येनोक्ता चतुर्विंशतिरदण्डकक्रमता इयमेव वेपुचित् सूत्रपुस्तकेषु ॥ एवंठिईआहारोइत्यादिना ॥ प्रतिदेशवाक्येन दर्शिता सावेतो विवरण

सतच्चेय वेमाणियाणठिईजाणियव्वाठहिया उस्सासोजहन्नेणंमुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएपक्खाण आ हारोआभोगणिव्वत्तिओ जहन्नेणदिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेणतेत्तीसाएवाससहस्साणसेसतच्चेव जावणिज्जरेंति ए वंठितीआहारोयजाणियव्वो ठितीजहाठितीपदेतहाजाणियव्वा सव्वजीवाण आहारोयजहापन्नवणाएपढमे

माहिदेर उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपम पर्यंत ते जघन्य सौधर्मथाको उत्कृष्ट अनुत्तरविमान आश्रीने जाणवा। उस्सासोजहन्नेण मुहुत्तपहुत्तस्स। उ स्सास जघन्ये मुहूर्त पृथक्त ते जघन्य सौधर्मनीस्थिति आश्रीने जाणवो। उक्कोसेणं तेत्तीसाएपक्खाण। उत्कृष्टो तेत्रीसपक्ष ते उत्कृष्टस्थिति अनुत्त र देव आश्रीने जाणवा। आहाराभोगनिव्वत्तिया जहन्नेण दिवसपुहुत्तस्स। इम आहारपणि जाणवो निवर्तित जघन्ये दिवस पृथक्त होय ते जघन्य स्थिति आश्री जाणवो। उक्कोसेणं तेत्तीसाएवाससहस्साण। उत्कृष्टो तेत्रीससहस्रवर्ष ए उत्कृष्ट स्थितिआश्री जाणवो इहां गाथा जस्सजइसाग राइं ठिईतस्सतत्तिएहिपक्खेहिं। ऊसासोदेवाणं वाससहस्सेहिआहारोइति। १। सेसतंचेव। शेषसर्व तिमज जाणवा। जावणिज्जरेंति यावत् चलि तकर्म निर्जरे। एवंठिती आहारोय भाणियव्वा। इम स्थिति आहारपणि जाणवो। ठितीजहाठितीपदे तहा भाणियव्वा। स्थिति जिम स्थितिपद जिम पन्नवणामांहि कह्याछे तिम कहवू। सव्वजीवाणं। सर्वजीवने। आहारोवि जहा पन्नवणाएपढमे आहारउद्देसए तहा भाणियव्वो। आहार जिम पन्नवणामाहे तीया उपांगनेविषे पहिले आहारने उद्देशे विचार्याछे तिम इहांपणि कहवो। एताधाकत्तो। इहांथकी जाणवो यावत् चउवीस दंड

मन्या दयमेयति उत्ता नारकादिधर्मवत्साम्पते मथारम्भपूर्विकोति भारम्भनिरूपणायाह ॥ जीवाणंभंते । किं आयारंभेत्यादि ॥ आरम्भो जीवोपघात उपद्रवणमित्यर्थः सामान्येनवा आश्रवद्वारमवृत्ति सत्र आत्मान मारभन्ते आत्मनावा। स्वय मारभन्ते इत्यात्मारम्भा तथा परमारभन्ते परेणवा रम्भयन्तीति परारम्भा तदुभय मात्मपररूप तदुभयेनवा। रभन्तइति तदुभयारम्भा आत्मपरोभयारम्भवर्जिता त्वनारम्भा इतिप्रश्नः अथोत्तर स्पष्टमेव नवर् अस्ति शब्दस्याव्ययत्वेन बहुत्वार्थ त्वादस्ति विद्यन्ते सन्तीत्यर्थः अथवा अस्ति अय मथो यदुत ॥ एगयत्ति ॥ एकका एके केचन त्ययः जीवा आत्मारम्भा अपीत्यादौ अपिशब्द उत्तरपदापेक्षया समुच्चये स चात्मारम्भत्वादिधर्मावा मेकाश्रयताप्रतिपादनार्थः। भिन्नाश्रयताप्रति पादनार्थोवा एकाश्रयत्वच कालभेदेना वगन्तव्य तथाहि—कदापि दात्मारम्भाः कदाचि त्परारम्भाः कदाचि तदुभयारम्भा एतएव नो अनारम्भा

जीवाणंभंते किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा गोयमा अत्थेगइयाजीवाआयारंभाविपरारंभावितदुभ

आहारगसएतहाजाणेयव्वा एतोआढत्तोणेरइयाणजतेआहारगो जावदुक्खत्ताएभुज्जोभुज्जोपरिणमंति जीवा

ज। परारंभभते भावारंभ। नारको हेभगवन्। आहारनो भर्यो छे। जाव दुक्खताए भुज्जो २ परिणमंति। यावत् दुःखपणे अप्रीतिपणे वार २ परि णमे पहिला नारकोनो कथ्यतावको ते आरम पूर्वकछे तेमाटे आरभनिरूपण करेछे। जीवाणं भते किं आयारभा। जीवा ए इसे वाक्यालंकारे हे भगवन्। स्वजीवना घात आपपणे करे ते आत्मारभी छे। परारभा। अनेरापास जीवघातकरावे ते परारंभीछे। तदुभयारभा। आपपणेपणि जीव घातकरे अनेरापासेपणि करावे ते तदुभयारभी छे। अनारंभा। जीवनाघात नकरे न करावे न अनुमादे ते अनारभीछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हे गौतम। अत्थ गइया जीवा आयारभावि। केईएक जीव पोतासे अर्थे आत्मारभी पणि छ आपपणेज सघलीने जीवको घातकरे छे। परारंभावि। परारंभीपणि जीवघात करावछ। तदुभयारंभावि। तदुभयारंभीपणिछे आपपणे जीवघातकरे अनेरापासपणि जीवघात करावे। णो अणारंभा। प णि अनारभा नथी। अत्थेगइयाजीवा। हे केईएक जीव। णोआयारभा। नथी आत्मारभी आपपणे जीवना घातनकरे। णोपरारभा। नथी परार

निग्रायपत्व त्वेव मक जीवा मसयताइत्यर्थ, मात्मारम्भावापरारम्भावेत्यादि मपेकस्वनाघस्वात् जीवाना भेद मसम्भावपमाह ॥ सेकेवठेणति ॥ मप कम कारसमत्यप ॥ दुविहापन्नत्ति ॥ मया चाम्पीय केवलिजि रनेम समस्तसर्वविदा मताभेदमाह मतभेदेतु विरोधिवचनतया तेषा मसत्य वचमतापत्तिः पाटनिपुणम्नपाजिधायकविरुद्धयचमपुसपकदम्वकवदिति, प्रमत्तसयतस्पहिमुनो शुभय योग स्या स्सयतत्वात् प्रमादपरत्वा चेत्य

यारम्भाग्नि णोश्रुणारम्भा अत्थेगइयाजीवा णोआयारम्भा णोपरारम्भा णातदुभयारम्भा अणारम्भा। सेकेणठेण भंतएवयुच्चइ अत्थेगइयाजीवाआयारम्भावि एवपडिउच्चारेयव्वं गोयमा जीवादुविहा पणत्ता तजहा ससार समावणागाय असंसारसमावणगाय तत्थणजेतेअसंसारसमावणगाय तेणसिद्धा सिद्धाणणोआयारम्भाजाव अणारम्भा। तत्थणजतेमसारसमावणगा तेदुविहा पणत्ता तजहा सजयायअसजयाय। तत्थणजेतेसजया

भी यमगापाम आवयात मवराबे। भातद्मयारम्भा। नहीं तदुभयारम्भा आपमोवघात नकरे भनेरापासपथि मकराबे। भचारम्भा। एतवामाठे भगा रभाहे। मेकरइभभने एवक्हर। गोतम पूछेछे तेसे यचें हेभगवन्। इमकह्यूं। भत्थेगइयाजीवा चायारम्भावि। केतलाएक जीवप्राणी भाभारम्भी पथिछे पातावे मप मारम्भकरे। एवंपडिउच्चारेयव्वं। इमसर्व पूर्वोक्त तिमपाछिलूं कहवूं इमभ्रम भागलपथि सघलापि कहवूं उत्तर। गोयमा। हेगोतम। जो वादुविहापचत्ता तजहा। जीव बेप्रकारना कह्या में भगवत मम्य केवलीयें एतले समस्त तोर्थंकरना मतने विषे भरनभेँ इमकह्यूं तेकहेछे—संसारसमा वचगाय। एतजीव देव १ मनुष्य २ तिर्यंच ३ नारकी ४ रूप चारियतिने विषे संसरचकरे तेसंसारसमापन्नकहिये। भससारसमावन्नगाय। जी चा जीव चारिगतिमयेमाहि एतले मुक्तिगया ते भससारसमापन्न कहिये। तत्थ प जेते भसंसारसमावन्ना। तिहां जे इसे बावाहकारे जेजीव चारि गति रूप ससार तिहां यकोवार भमाभमीने समस्त कर्मक्षयरूप आगम पाम्यां। तेयंसिद्धा। ते मनेरेभेदे सिद्ध कह्या। सिद्धाणं नो भायारम्भा जाव भणारम्भा। तेमिह भात्मारम्भी नहीं एतले परारम्भी पथ नहीं तदुभयारम्भी पथि नहीं एतावता सिद्ध सर्वथा भारम्भ रहितछे। तत्थणं जेते संसारसमा

तमाइ ॥ सुभजोगपडुच्चति ॥ सुभयोगउपयुक्ततया असुपत्तवादिकरणं असुभयोगस्तु तदेवानुपयुक्ततया आह च—पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइ
तसाणं । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपिविराहओहोइ ॥ १ ॥ तथा—सव्वोपमत्तजोगो समणस्सउहोइआरम्भोत्ति ॥ अतः शुभाशुभौ योगावात्मारम्भादि

तदुविहा पन्नत्ता तंजहा पमत्तसंजयाय अपमत्तसंजयाय तत्थणजेतेअपमत्तसंजया तेणणोआयारम्भा णोप
रारम्भा जाव अणारम्भा । तत्थणजेतेपमत्तसंजया तेसुहजोगपडुच्च णोआयारम्भा णोपरारम्भा जावअणारम्भा ।
असुहजोगपडुच्च आयारम्भाविजावणोअणारम्भा तत्थण जेते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारम्भावि

अथवा । तिहां अनंतरेअथा, वेग्रह तेमांहि जे ससार चतुर्गति भ्रमण तेहनेविषे रह्याछोव । तेदुविहा प त । तेबिप्रकारे बेभेद कह्या तेकहेछे—संयया
संयता । तिहां संयतोवकाय । एकजीव संयता कहता संयमी जोवाजोव चारित्र रहित पहिले गुणठाणे वर्त्तं ते । तमवं जेतेसंजया तेदुविहा प तं । तिहां संयतो
य भर्संजवाय । एकजीव संयता कहता संयमी जीवाजीव चारित्र रहित पहिले गुणठाणे वर्त्त ते । प्रमत्तसंयत छट्ठागुणठाणानेविषे वर्त्त ते । अपमत्तसंजयाय । अप्रमत्त
संयतप्रमाद रहित साधु सातमा आदिदेई अनठाणानेविषे वर्त्तं । तत्थणजेते अपमत्तसंजया । तिहां प्रमत्त अप्रमत्तबेमां जेजेते अप्रमत्तसंयमी सप्त
मादिगुणठाणे वर्त्त तेसाधु । तेणंणोआयारम्भा । ते साधु नथी आत्मारम्भी पोते आरंभ नकरे अप्रमादी भणीला । णो परारम्भा । ते परारम्भी पणि नथी
जाव अणारम्भा । यावत् तदुभयारंभीपणि नथी एतावता अनारम्भोछे । तत्थणजेतेपमत्तसंजया । ते बिहुंमांहे जे प्रमत्तसंयती ते शुभ अशुभ वियोग
होय तिहां । तेसुहजोगंपडुच्च । ते पडिलेहण आदि सावधानपणे करे ते अंगीकार करोने । णो आयारम्भा णोपरारम्भा जावअणारम्भा । नथी आत्मार
म्भी नथी परारम्भी नथी तदुभयारंभी अने आरम्भरहितछे एतावता अनारम्भोछे । असुहजोगंपडुच्च आयारम्भावि जाव णोअणारम्भा । पडिलेहण आ
दि उपयोग रहित अयत्नाए करे यथा—पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं । पडिलेहणापमत्तो छण्हंपिविराहओहोइ ॥ १ ॥ तथा सव्वो
पमत्तजोगो समणस्सहोइआरम्भोत्ति ॥ तेभणी आत्मारम्भी छे परारम्भी छे तदुभयारम्भी छे पणि अनारम्भीनथी एतले शुभ अशुभ योग तेहोज आरंभ

कारम्भमिति ॥ अविरइपडुच्चेति ॥ इहा यस्मात्काे यद्य व्यमयतानां सूक्ष्मैकेन्द्रियादीनां नासारम्भकात्विस्व साक्षादस्ति तथा व्यविरति स्मती स्येत दस्तितेषां नहि ते तता निवृत्ता मतो संयतानां मविरति सत्र कारम्भमिति मिवृत्तानां कथमपि दास्माद्यारम्भकत्वे प्यनारम्भकत्व मदाह—वा अपाप्तमस्तवे विराहयासुत्तविहिसमस्स ॥ सत्तोवविज्जरफला अज्झत्थविसोहिजुत्तस्सति ॥ १ ॥ सेतवठेणति ॥ अथ तत्र कारखेमेत्यर्थ , अथ मात्मारम्भकत्वा दिस्वमथ नारकादि चतुर्विंशतिदण्डके निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त नवर ॥ मणुस्सेत्यादौ ॥ अयमयः मनुष्येषु

जाव णोअणारम्भा सेतेणठेणगोयमा एववुच्चइ अत्थेगइयाजीवा जाव अणारम्भा ॥ णेरइयाणन्नतेकिआया रम्भा परारम्भा तदुभयारम्भा अणारम्भा गोयमा णेरइया आयारम्भाविजावणोअणारम्भा सेकेणठेणन्नतेएववु च्चइ गोयमा अविरतिपडुच्च सेतेणठेणजावणोअणारम्भा एवजावपंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्साजहाजी

वा कारकजीवना । तत्र जे ते प्रसंयताने पविरति पडुच । जिवा थबे ते वेपरमाव असंयतो छे ते अविरति आश्रीने एतावता अविरतीछे ते आयारम्भापि जाव ना अणारम्भा । आत्मारम्भीछे यावत्मन्दे तदुभयारम्भी छे पवि अनारंभी नथी । सेतेणठेण । तेणे कारणे करी । गोयमा । हेगौतम ! एववुच्चइ । इम प्रकारे कह्यु । अत्थेगइयाजीवा जाव अणारम्भा । केतलाएक जीव आत्मारम्भी आदिदेइ यावत् यदि आरम्भरहितछे एतलावार अथवा नेरइयाणभंते किंआयारम्भा परारम्भा तदुभयारम्भा अणारम्भा । किंवे आत्मारम्भवादि एक तेवीज नारकादि चउवीसदण्डके कहेछे—नारकी हेभगवन् ! आत्माने पर्व आरम्भपापकरे अथवा अनारम्भीछे पारकेआसे आवयकार्यकरे बेजने पर्व पापकार्यकरे अथवा अनारम्भीछे आरम्भरहितछे इतिप्रश्न भगवंत कहिछे—गोयमा । हेगौतम ! नेरइया आयारम्भाविजाव णोअणारम्भा । नारकी आत्मारम्भीपणि आरम्भवतछे इम यावत् परारम्भीपणिछे तदुभ यारम्भीपणि छे पणि आरम्भरहित नथीज एतावता अनारम्भी नथी । सेकेणठेणभंते एववुच्चइ । तेणिसे अर्थ हेभगवन् । इमकह्य इतिप्रश्न भगवंतकहेछे— गोयमा । हेगौतम नथी विरति जेहने ते अविरती कहिये अविरति पडुच्च आत्मारम्भी आदिदेइ तोनेहछे पणि अनारम्भीनथी । सेतेणठेणजाव णोअ

सयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तभेदाः पूर्वोक्ताः सन्ति तत स्ते यथाजीवा तथा ध्येतव्याः किन्तु ससारसमापन्ना इतरेच ते न वाच्या भवतीत्यस्मा देव तेषा मित्येतदेवाह ॥ सिद्धविरहियएत्यादि ॥ व्यन्तरादयो यथा नारकास्तथा ध्येया असंयतत्वसाधर्म्यादिति, आत्मारम्भकत्वादिभि येस्सै जीवा निरूपिता स्तेच सलेश्या अलेश्याच भवन्तीति सलश्या स्ता सैरेव निरूपयन्नाह ॥ सलेसाजहाओहियत्ति ॥ लेश्या कृष्णादिद्रव्यसान्निध्यजनितो जीवपरिणामो यदाह—कृष्णादिद्रव्यसान्निध्यात् परिणामोयमात्मन । स्फटिकस्येवतत्राय लेश्याशब्दः प्रयुज्यते ॥१॥ तत्र सलेश्या लेश्यावतो जीवाः ॥ जहाओहियत्ति ॥ यथा नारकादिविशेषणवर्जिता जीवाअधीता ॥ जीवाण भंते । किं आयारम्भा परारम्भेत्यादिना ॥ दण्डकेन तथा सलेश्या जीवा अपि वाच्या, सलेश्यानां मससारसमापन्नत्वस्या सम्भवेन ससारसमापन्नक त्यादिविशेषणवर्जितानां शेषाणां संयतादिविशेषणानां तेष्वपि युज्यमानत्वा तत्रचाय पाठक्रम ॥ सलेसाण भंते । जीवा किं आयारम्भेत्यादि ॥ तदेव सब भवर जीवस्थाने सलेश्याइति वाच्यमिति, अयमेको

वाणवरसिद्धविरहितानाणेयव्वा वाणमंतराजाववेमाणिया जहाणेरइया सलेस्साजहाओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स काउलेसस्स जहाओहियाजीवा णवरपमत्तअप्पमत्ताणभाणियव्वा तेउलेसस्सपम्हलेसस्ससुक्कलेस

यारम्भा । तथैवारम्भ यावत्प्रत्यें एभाव व विरतिपत ते अणारम्भो हुवे पणे वे अविरती ते अणारम्भीनथी इत्यर्थ । एवंजाव पंचिदिय तिरिक्खजोणिया । इम यावत् शब्दे असुरकुमार आदिदेइ पंचेंद्रिय तिर्यच यांगिक सर्गे जाणवो अविरति पणाथी आत्मारम्भी परारम्भी तदुभयारम्भी होय पणि अणारम्भी नथी इमकहवो । मणुस्सा जहाजीवा णवर सिद्धविरहिया भाणियव्वा । मनुष्यनेविषे संयतासंयत प्रमत्ताप्रमत्त ए चारभेद पूर्वे कह्याछे—तेमाटे जिमसग ने जीवकह्योकह्या तिममनुष्य जाणवा आरंभामे एतलोविशेष सिद्धआरंभामे रहित तेमाटे सिद्धविना कहवा । वाणमंतरा जाव वेमाणिया जहाणेरइ या सलेस्सा जहा ओहिया किण्हलेसस्स नीललेसस्स । वाणव्यंतर आदिदेई यावत् वेमानिकतांई तिम कहवा जिम नारकीकह्या तिमज जाणवा एम व अविरतिपणे साधर्म्यथी तेमाटे आत्मारम्भपणोकरी जीवकह्या तिमे सलेशी अलेशीहुवे तेमाटे सलेशी कहेछे—लेश्यासहित तेजिमओघे सामान्यकरी

एवहका कृष्णादिलेश्यावेशात् तदप्येवं, तदेव मेते सत तत्र ॥ किण्हलेसस्सेत्यादि ॥ कृष्णलेश्यस्य नीललेश्यस्य कापोतलेश्यस्य च जीवराशो देशकको यथोपिकजीवदण्डक तथा भणितव्यः प्रमत्ताप्रमत्तविशेषणवर्ज्यः कृष्णादिषु हि अप्रशस्तभावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति यच्चो च्यते ॥ पुव्वपडिवन्नओपु पुनक्षपरीएउलेसाएत्ति ॥ तद् द्रव्यलेश्या प्रतीत्येति मन्तव्यं, तत साधु प्रमत्ताप्रमाव तत्र सूत्रोच्चारणमेवं ॥ किण्हलेसाणं भंते ! जीवा किं आया रंभा ? ४ गोयमा आयारंभावि जाव नो अणारंभा से केणठेणं भंते । एवमुच्चइ ? गोयमा अविरइं पडुच्च ॥ एवं नीलकापोतलेश्यादण्डका च पीति तथा तेजोलेश्याद २ जीवराशौ दण्डका यथौघिकजीवा तथावाच्या नवरं तेषु सिद्धा नवाच्याः सिद्धानां अलेश्यत्वात्, तेचैवं ॥ तेउलेसाण भंते ! जीवा किं आयारंभा ? ४ गोयमा अत्थेगइया आयारंभावि जाव नोअणारंभा अत्थेगइया नो आयारंभा अत्थेगइया नो आयारंभा जाव अणारंभा से केणठेणं भंते ! एवमुच्चइ ? गोयमा दुविहा तेउलेस्सा पन्नत्ता तंजहा संजयाय असंजयाएत्यादि ॥ भवहेतुभूत मारम्भं निरूप्य भवाभाव हेतुभूतं ज्ञानादिधर्मकदम्बकं निरूपयन्नाह ॥ इह भविए इत्यादि ॥ अथ नवरं इहच भवे वर्तमानजन्मनि यद्गृहीतं नतु भवान्तरे तदैहभविक ज्ञानं पाठ्येद्म अतावशेषा, तेन किमैहभविकं ज्ञानं भुत ॥ परभविएत्ति ॥ परभवे वर्तमानान्तरजावि अनुगामितया य ह्रास्ते तत्पारभवि

स्स अहाठहियाजीवा णवरसिद्धाणनाभियव्वा इहभविएनाणे परभविएणाणे तदुभयभविएणाणे गोयमा

कम्हा सूत्रविमणांचवी ।।एवलेमी मोक्कलेमोने आपातलेमोने। अहा मोहियाजीवा नवर पमत्त अपमत्ताय भाणियव्वा। जिम मोधिक समुच्चये जीवना तिम भाषवा पणि एतलो विशेष प्रमत्त अप्रमत्त पणितव्वा कृष्णादि तीन अप्रशस्तभाव लेश्याने विषे संयतपणुं नथी पणे ते कहुं पुव्वपडिव नपोपुष अवधरातेषलेमो इति । ते द्रव्यलेश्या आश्री कह्युं। तेउलेसस्स पम्हलेसस्स सुक्कलेसस्स। तेउलेमीने पम्हलेमीने सुक्कलेमोने। जहा ओहियाजीवा। जिम ओधिक सामान्यवृत्ति जीव कह्या तिम कहवा। नवर सिद्धा नभाणियव्वा। एतलोविशेष सिद्ध न कहवा किरलेश्यारहितछे तेमाटे। इहभविएसतेषा जे परभविएणावे। भवहेतुभूत आरंभ कहीने भवअभावहेतुभूत ज्ञानादि कहेछे—वर्तमानभवनेविषे थेभवयन्। जेज्ञानजीव तेहबभविकज्ञान कहिये भर्ने

वं चाहोस्वित् ॥ तदुभयभविएत्ति ॥ तदुभयरूपयो रिह परलवभवयो र्भवयो यदनुगामितया वर्तते तत्तदुभयभविकं इदमेवं भपारमविका क्रियत इति परतरभवेपि यदनुपातितत्प्राप्य, इह भवव्यतिरिक्तत्वेन परतरभवस्यापि परभवत्वात्, ग्रस्वतानिर्देश येह सर्वत्र प्राकृतत्वादिति, प्रश्ननिव चनमपि सुगम भवरं ॥ इहभविएविति ॥ ऐहभविकं यदिहा धीतं नान्यत्तरभवे ऽनुयाति, पारभविकं यदनन्तरभवे ऽनुयाति, तदुभयभविकं तु य दिहाधीत म्परभवे परतरभवेचानुवर्ततइति ॥ दंसणंपि एवमेवत्ति ॥ दर्शन मिह सम्यक्त्व मवसेयं मोक्षमार्गाधिकारात्, यदाह – सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः यच ज्ञानदर्शनयोरेव प्रश्नस्या तत्र दर्शनं सामान्यावबोधरूप मवसेयमिति ॥ एवमेवेति ॥ ज्ञानव दस्यनिर्वचनान्या समवसेयं चारित्रसूत्र निर्वचने विशेष, तथाहि, चारित्र मैहभविकमेव नहि चारित्रवा निह भूत्वा तेनैव चारित्रेण पुन श्चारित्री भवति यावज्जीवतावधि कत्वा तस्य किञ्च चारित्रिका ससारे सर्वविरतस्य देशविरतस्य देवेष्वेवोत्पादा, तत्रच विरते रत्यन्त मभावा न्मोक्षगतावपि चारित्रसस्य वाभावा

इहभवियेणाणे परभविएणाणे तदुभयभविएणाणेय । दसणंपिएवामेव । इहभविएणंतेचरित्ते परभवि एचरित्ते गोयमा इहभविएचरित्ते णोपरभविएचरित्ते णोतदुभयभविएचरित्ते । एवतवेसंजमे । छसवुडेण

मन्न यनतर भवे केशाम ते पारभविकज्ञानकहीसे । तदुभयभविएचावे । इयभमपरभव केजनेशिवे ज्ञान ते तदुभयभविकज्ञानकहीये ? उत्तर । गोयमा हेगोतम! इहभवे भणे परभवे भावे भणाव ते इहभविकज्ञानपणि हाय। परभविएविपावि। जेमनतरभवे ज्ञानहोय तेपणि ज्ञानहोय । तदुभयभविएविपावे जरही भणे तेपरभवे परतरभवेपणि भनुवर्ते तेपणि ज्ञानहुवे । दसर्णपिएवामेव । जिमज्ञानकह्यो तिम दर्शनपणि जाणवूं । इहभविएभतेचरित्ते । इहभ विक हेभगवन् । चारित्रहाय भथवा । परभविएचरित्ते । परभविक चारित्रहाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगोतम! इहभविकहोय चारित्र हाय या वज्जीवपर्यन्तभावथी । णोपरभविएचरित्ते । नहीपरभविक चारित्रहाय चारित्रवतमरी दवो परभवे तेहाय चारित्रवंतनहाय । णोतदुभयभविए च रित्ते एवंतवेसंजमे । नहो तदुभयभविक चारित्रहाय एचारित्रजाता ते तपसंयम भेदथी बेप्रकारेछे तेमाटे इम तप इमहीज संयमपणि जाणवो । नहो

चारित्रवि कर्मक्षपणाया मुख्यत मोक्षेव तस्य। किम्बि त्वरत्वात् यावज्जीवमिति प्रतिज्ञासमाप्ते सदन्यस्या यामग्रहणात्’ मनुष्ठानरूपत्वाच चा रित्रस्य शरीराभावेच तद्योगा दतएवोच्यते ॥ सिद्दे नोचरित्री नोमचरित्री ॥ नोमचरित्रीत्तिच मविरते रजायादिति, प्रनन्तर चारित्रमुक्त रत च द्विधा तपः संयमभेदादिति तयोर्निरूपणायातिदश्माह ॥ एवतवेसंजमेत्ति ॥ प्रमनिवचमाभ्या चारित्रचतपः संयमी वाच्यौ चारित्ररूपत्वा त्तयोरिति ननु सत्यपि ज्ञानादेर्मोक्षहेतुत्वे दर्शनमेव पतितव्य तस्यैवमोक्षहेतुत्वा यदाह—भट्ठेणचरित्ताठ सुट्ठुयरदसणंगहेयव्वं ॥ सिज्झतिचर मसरिया देववरियावसिज्झतीति ॥१॥ योमम्येत तन्निराचयितुं प्रश्नमाह ॥ ममचलेचमित्यादि ॥ व्यक्त मपर ॥ मसयुढेमंति ॥ मसंवृतो ऽनिरुद्ध मवद्वारः ॥ मचमारेत्ति ॥ मविद्यमानचरः साधुरित्यर्थः ॥ सिज्झइत्ति ॥ सिध्यति मवाप्तचरमभवतया सिद्धिगमनयोग्यो भवति॥ बुज्झइत्ति ॥ स मय यदा समुत्पन्नकेवलज्ञानतया स्वपरपर्यायोपेता स्थिरितान् जीवादिपदार्थान् जानाति तदा बुध्यतइति व्यपदिश्यत ॥ मुच्चइत्ति ॥ सएव सञ्जात केवलबोधो भवोपग्राहिकर्म्मभिः प्रतिसमयं विमुच्यमानो मुच्यतइत्युच्यते ॥ परिनिव्वाइत्ति ॥ सएव तथा कर्म्मपुद्गलाना मनुसमय यथा यथा क्षय माप्नोति तथातथा शीतीभवन् परिनिर्व्वातीति मोच्यते ॥ सव्वदुक्खाणमंतंकरइत्ति ॥ सएव चरमभवायुषोन्तिमसमये क्षपिताशेषकर्म्मांशः सर्वदुःखाना मन्त करोतीति भण्यत इतिप्रश्नः उत्तरन्तु व्यक्त मपर ॥ गोइणठेसमठेत्ति ॥ नोमैव ॥ इयठेत्ति ॥ मय मनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षोर्थो भावः असमर्थो

न्तेस्सणगारे सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाति सव्वदुक्खाणमंतंकरेति गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण

पूछे ? असंवुडेणभंते अणगारे। असंवृत जेंचे आश्रवद्वार रूध्या नथी हेभगवन्। एहवो साधु। सिध्यति बुध्यति मुचति परिनिर्व्वाति। सिद्धगमन योग्यथाय केवलज्ञानेकरी जीवादिपदार्थजाणे भवभ्रमणथी छूटे कर्मपुद्गलक्षयथकी शीतलीभूत हुवे। सव्वदुक्खाणमंतकरेति। भाषतामाने छेहडे योग्य सामग्री पाम्यां पछे एम गौतम पूछ्यां पछी उत्तर भगवत कहेछे—गोयमा। हेगौतम। णाइणठेसमठे। एअर्थ समर्थनथी कहवेत नथी। सेकेणठेणं भंते जावअंतंनकरेति। ते किणकारणे हेभगवन्। यावत्यन्ते अंतनकरे? भगवतकहे उत्तर। गोयमा। हेगौतम। असंवुडेअणगारे। असंवृत जेणे आश्रवद्वार रूध्यानथ

वनयात् बन्धमाबद्रूपवमुद्गरप्रहारजर्जरितत्वात् ॥ भाउयवज्जाउति ॥ यस्मा देवत्र भवग्रहणे सरुदेवान्तर्मुहूर्तमात्रकालप्रमाणायुषोबन्ध सात उक्तमा
पुघत्थोइति ॥ शिढिलबंधणबद्धाउति ॥ प्रथमन्यम स्पष्टसावा बद्धतावा निपततावा तेन बद्धा भासमप्रदेशेपु सम्बन्धिता पूर्वा यस्याया मधुनतर
परिकासस्य कयम्बि दनाकादिति शिथिलबन्धनबद्धा पता यासुनाएव द्रष्टव्याः मसवृतमावस्य निम्नामप्रतावात् सा: किमित्याह ॥ घणियबंधण
बद्धाउपकरेइति ॥ गाढतरमन्यना बद्धावस्थावा । निपतायस्थावा निकाचितावा प्रकरोति प्रयम्दस्यादिकर्मापेक्षा स्कर्तुमारभ्यते यसंवृतत्वस्या
शुभयोगरूपत्वम गाढतरप्रकृतिबन्धहेतुत्वा दाहच—योगापयडिपयसत्ति ॥ दीर्घ पुन्यभावेत्वसंवृतत्वस्य सा: करोतीत्येवेति तया इस्वकालस्थि
तिका दीर्घकालस्थितिका: प्रकरोति तत्र स्थितिरूपातस्य कस्यबो ध्वस्थान ता मल्पकालामहती करोतीत्यर्थ यसंवृतत्वस्य कषायरूपत्वेन स्थिति
बन्धहेतुत्वा दाहच—ठिइमणुभागकसायउकुणइति ॥ तथा ॥ मंदाणुभावेत्यादि ॥ इहाणुभावो विपाको रसविशेषइत्यर्थः ततश्च मन्दानुभावा
परिपेलवरसाः सती गाढरसाः प्रकरोति असंवृतत्वस्य कषायरूपत्वा देवा नुभागबन्धस्यच कषायप्रत्ययत्वादितिति ॥ भप्पपएसेत्यादि ॥ भल्प स्तोक

ज्ञते जाय श्रुतनकरेंति गोयमा श्रसवुडेश्रणगारे श्राउयवज्जाउसत्तकम्मपगडीउसिढिलबंधणबद्धाउ धणिय
बंधणबद्धाउपकरेइ हस्सकालठितीयाउ दीहकालठितीयाउपकरेइ मंदाणुभावाउ तिव्वाणुभावाउपकरेइ श्र

वीं यवमासाधु । भाउयवज्जाथा सत्तकम्मपगडोधा सिढिलबंधनबद्धाथा पकरेइ हस्सकालठितीयाथा दीहकालठितीयाथो पकरेइ । भाउखामठावीनो
मातकर्मनो प्रकृतिबांधीहुवे जेमाटे भवभवनेविषे एकवार अंतर्मुहूर्तकालने विषेहीज भायुषानोबंधहे तेमाटे भाउखुं वज्यु तेवेकवो बांधोहे शिथिल
बंधनेकरोने बांधीहुवे ते गाढा बंधन निकाचितबंधन करे वली इस्वकाल वहतां थोडाकालनी स्थितिहती तेहनी दीर्घकाल घणाकालनी स्थितिकरे
पतावता घणीस्थिति करे । मंदाणुभावाथातिव्वाणुभावाथापकरेइ । वलगा जेमद् भनुभागकर्म मंदरसकर्मनी हुवे ते तीव्रभनुभाव तेकर्मनो तीव्ररसक
रे । भप्पपदेसगाथोबहुपदेसगाथापकरेइ । भल्पथोडो प्रदेश भाग कर्मदलिक परमाणु हुतो ते घणाप्रदेशभागकरे कर्मबांधे इत्यर्थ । भाउखपणंकर्मसि

म्परेशाप द्रुमदसिक्षपरिमाणं यासाता स्नया ता यद्रुमवेक्षाया: प्रकरोति प्रदेशबन्धस्यापि योगप्रत्ययत्वा दुर्सवृतत्वस्यच योगरूपत्वादिति ॥ पा उपचेत्यादि ॥ आयु: पुन: कर्मस्या रयशांश प्रबाति स्यान्न बन्नाति, यस्मा त्रिभागाद्यवशेषायुष परभवायु प्रकुत्रमित तेन यदा त्रिभागादि सदा यम्नाति यन्यदा नबन्नातीति तया ॥ असाएत्यादि ॥ असातवदनीयञ्च दु:खवेदनीय कर्म्म पुन भूयोभूय: पुन रुपचिनोति उपचित करोति ननु कर्म्मप्रस्तावात्तवभितस्या दसा तवेदनीयस्य पूर्वोक्तविशेषबन्धएव तदुपचयप्रतिपत्ते: किमतद् प्रहणेन ? स्यओ्च्यत, असवृतोऽयन्तदु:खितो भवतीति प्रति पादनेन भयजनना दसवृतत्वपरिहारार्थं मिद मित्यदुष्टमिति ॥ अणाइयंति ॥ अनादिक अविद्यमानादिकं अनादिकवा अविद्यमानस्वजन ऋणया अतीतं अपअम्युद: स्यतातिक्रान्तदु: स्यतानिमित्ततयति अणातीत, अणंवा, अणकं पापमतिशयेनेतं गत अणातीतं ॥ अणवयग्गंति ॥ अवयग्गति दे शीवचनों तवावज्ञ सात सन्निपचात् अवयग्ग अनन्तमित्यर्थ: अथवा । अवमतमासन्न मग्र मन्तो यस्य ततथा तन्निषेधा दनवमताग्र मतदेव सानाधा दनवताग्रमिति, अथवा अनवगत मपरिच्छन्न मग्र म्परिमाणं यस्य ततथा, अतएव ॥ दीहमद्धंति ॥ दपार्ईदीकासदीर्घोध्वंवा दीर्घमार्गं ॥ चाउरंतंति ॥ चतुरन्त देवादिगतिभेदा त्पूर्वादिदिग्भेदाच चतुर्विभाग तदेव स्वार्थिकाण्प्रत्ययोपादाना चातुरन्तम् ॥ संसारकंतारंति ॥ भवा रण्यं ॥ अणुपरियट्टइत्ति ॥ पुन: पुन भ्रमतीति, असवृतस्य तावदिदं फल, संवृतस्य तु यत्स्या तदाह ॥ संवुडेणमित्यादि ॥ व्यक्त अवर, संवुतो

प्पपदेसगाउ धड्ढपदेसगाउपकरेइ आउयचणकम्मसियबंधइ सियनोबंधइ असायावेयणिज्जचणकम्म नुज्जो नुज्जोउवचिणइ अणाइयचणअणवदग्गदीहमट्ठं चाउरंतसंसारकंतारअणुपरियट्टाति । सेतेणट्ठेण गोयमा

बंधइ । बपुन भागमालंबारे पासुबम विगारे बांधे । निबमा बंधइ । बिगारे नबांधे । असाबावेदनिब्बकम्म । असातावेदनीव बपुन बारम्बारका रे बम । मजामुजो बबचिनइ । बारबार बबोबबो पुट बलिट करे । अणाइबब अणवग्गदीहमद्ध । जिम ससारनी आदि नबी बपुन बारम्बारबार रे पाबे बंतनवीं होबबाब । चाउरंत संसारबतार अणुपरियट्टति । चारगतिरूप भव ससार भरण्य उजाड बारबार परिभ्रमण करे । सेतेणट्ठेण गो

नगारः प्रमत्तसंयतादिः, स च परमशरीरः स्या दचरमशरीरोवा, तत्र य परमशरीर स्तदपेक्षयेद सूत्र, य स्त्वचरमशरीर स्तदपेक्षया परम्परया सूत्रार्थो वसेयो ननु पारम्पर्येणा संवृतस्यापि सूत्रोक्तार्थस्या वश्यंभावी यतः शुक्लपाक्षिकस्यापि मोक्षोवश्य भावी, तदेव मसंवृतसंवृतयोः पस तो भेदाभावएवेति ? अत्रोच्यते सत्यं किन्तु परसंवृतस्य पारम्पर्यं मादुत्कर्षतः मसावुजवममात्र यतो वक्ष्यति ॥ अहन्निय चारित्तारादक आरा

असंवुडेणंअणगारेणोसिज्झइ संवुडेण भंतेअणगारेसिज्झइ हंतासिज्झइ जाव अंतकरेइ । सेकेणठेणंभंतेएववु च्चइ गोयमा संवुडेणंअणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओपक रेइ दीहकालठितीयाओ हस्सकालठितीयाओपकरेइ तिव्वाणुभावाओमंदाणुभावाओपकरेइ बहुपदेसगाओ अप्प पदेसगाओपकरेइ आउयंचणंकम्मनबंधइ असायावेयणिज्जंचणंकम्मंणोभुज्जोभुज्जोउवचिणइ अणादीयंचण

हवा पण संवृत अणगार सीझे । ते तेमज हे गौतम । वळी भगवंत संवृत अणगारने आश्री तेमज पूछे छे—संवुडेणंभंते अणगारेसिज्झइ । केमके माट्याकार कल्याणे चलितभोवादे आत्मा केमके हे भगवन् । एहवो बरर्णित अणगार साधु सीझे इत्यादि पूर्ववत् कहवा यावत् अंतकरे सीझे इत्यादि सवळाया इतिमत उत्तर । हंतासिज्झइ जाव अंतकरेइ । हा गौतम संवृत अणगार सीझे यावत् अंतकरे इम सर्वजाणवो । सेकेणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ । तेस्यामाटे हेभगवन् इम कह्यो संवृत अणगार सीझे । गोयमा । हेगौतम । संवृत अणगार चलितोधोडे आरमानवे एहवोसाधु आठकर्म मांहि ला पांचमो आयुकर्म टाळो सात कर्मप्रकृति ते । धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ । निविड चीकणे बंधणे बांधीहे तेप्रते सिथिलबंधनकरे ते कमडोळाकारे इत्यादि । दीहकालठितीयाओ । दीर्घकाल बहुकाले वेघस्थितिक ते । हस्सकालठितीयाओ पकरेइ । इम थोडाकालनीय स्थितिकरे । तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ । तीव्ररसने मंदरसकरे । बहुपदेसगाओ अप्पपदेसगाओ पकरेइ । बहुप्रदेश हुवे ते अल्पप्रदेश करे इम प्रदेश प्रदेश परते अल्पप्रदेश पंतकरे । आउयंचणं कम न बंधइ । प्रकृति वारित आयुक्स तेहने नबांधे । असायावेयणिज्जंचणंकम्म णोभुज्जोभुज्जो उप

सिता मतकनपागदमर्हि सिञ्झति ॥ यथा ऽसंवृतस्य पारम्पर्य तदुत्कर्षतोपार्द्धपुद्गलपरावर्तमानमपि स्या द्विराधनापक्षस्या तस्येति ॥ वीईवय इति ॥ व्यतिव्रजति व्यतिक्रामतीत्यथ अनगारः संवृतत्वा रिसध्यतीत्युक्त, यस्तु तदन्यः स विशिष्टगुणविकल सन् क्लिष्टेवः स्या भवेति प्रश्न पश्नाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यक्त व्ययर ॥ असंजपत्ति ॥ असाधुः संयमरहितोवा ॥ अविरयत्ति । प्राणातिपातादिविरतिरहित, विशेषेणवा त पमिरतो यो न भवति सो विरतः ॥ अप्पडिहयत्यादि ॥ प्रतिहत निराकृत मतीतकालकृत, निन्दादिकरणेन प्रत्याख्यातञ्च वर्जितं अनागत कालविषयं पापकर्म प्राणातिपातादि येन स प्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा तन्निषेधा दप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा अनेना तीतानागतपापक मानिषधउक्त असयतो ऽविरतदे त्यमन वर्तमानपापासंवरण मभिहित, अथवा न नैव प्रतिहत तपोविधानेन मरणकालादारात् क्षपित प्र त्याख्यात च मरणकाले प्याश्रवनिरोधन पापकर्म येन सतथा अथवा न नैव प्रतिहत सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तित , प्रत्याख्यातञ्च, सर्वविरत्यङ्गी

असंवुडेणं भंते अणगारे सिज्झइ जाव अंतं

करेइ । गोयमा नोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेणं जाव नो अंतं करेइ गोयमा असंवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ सिढिल बंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ आउयंच णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ अस्सायावेयणिज्जंच णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ अणाइयं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतससारकंतारं अणुपरियट्टइ सेतेणट्ठेणं गोयमा असंवुडे अणगारे नो सिज्झइ जाव नो अंतं करेइ । जीवेणं भंते असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओचुए पेच्चा देवेसिया गोयमा अत्थेग

निबद्ध। पमाला वेदनीयकमगते मही बारबार पुष्टकरे । अनादीयनत अनन्त दीर्घमार्ग चाउरतससारकतार वातीवयति । इमलेकनो पादि मध्ये भेहमा पारमवो एहमा दोष चातुर्गतिक ममारवातारमते व्यतिक्रमें एहवो जे समार ते अध्धकारे इतिमाव मोक्षजायदलावं। सेतेणट्ठेण गोयमा एवमय अणगार सिज्झइ जावअतकरेइ । ते तेणेकारणे हेगोतम । इणेप्रकारे संवराहे इद्रीयने एहवो अणगार साधु चरमशरीरी सोक्षे मोक्षप ते जाव इणय यावत् सवदु खनाअंतकरे अणगार ते मंयतपणाथी मोक्षे इसोकथी तेहवो मोक्षो तेविशिष्टगुण विकलथका स्यूं। जीवेणंभंते असंजए अ विरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे। हेवलें अथवा नवले इसा प्रश्नकरेछे—हेभगवन् असाधु संयमरहित प्राणातिपातादि विरतिरहित अनीकम्मा पाप निंदाकेकरी तथा पच्चखाणेकरी पापकर्म जेणे । इओचुते। इहांथो मनुष्यतिर्यंच मरी। पेच्चा देवेसिया। परभवे देवताय। गोयमा। हेगोतम !

करणत पापकर्मंघानाचरणाद्युक्तं कर्म येन स तथा ॥ इहेति ॥ इतः प्रज्ञापकप्रत्यक्षात् तिर्यग्भवात् मनुष्यभवाद्वा च्युताः मृताः ॥ पेचत्ति ॥ जन्मान्तरे देव स्यादिति प्रश्नः ॥ जेइमेजीवत्ति ॥ य इम प्रत्यक्षासन्नाः पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्या वा ; ॥ गामेत्यादि ॥ ग्रामादि प्रविकरणभूतेषु, तत्र ग्रामो जनपदप्रायजनाश्रितस्थानविशेष, आकरो लोहाद्युत्पत्तिस्थानं, नकरं करवर्जितं, निगमो वणिग्जनप्रधानं स्थानं, राजधानी यत्र राजा स्वयं वसति खेटं धूलीप्राकारं कर्बटं कुनगरं, मडम्बं सर्वतो दूरवर्ति सन्निवेशान्तरं, द्रोणमुखं जलपथस्थलपथोपेतं, पत्तनं विविधदेशागतपण्यस्थानं, तच्च द्विधा जलपत्तनं स्थलपत्तनं चेति, रत्नभूमि रित्यन्ये, आश्रमं तापसादिस्थानं, सन्निवेशो घोषादि रेषां द्वन्द्व स्तत स्तेषु, अथवा

इएदेवेसिया अत्थेगइएणोदेवेसिया सेकेणठेण जाय इतोचुते पेच्चाअत्थेगइएदेवेसिया अत्थेगइएणोदेवेसिया
गोयमा जेइमेजीवा गामागरनगरनिगमरायहाणिखेडकब्बडमडम्बदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु अकामतण्हा

चेतनाएकरहवाय । परभवमाहा चाहेदेवेमिया । चेतनाएक देवता नथाय । सेकेणट्ठेणजावइतोचवे । ते केम कहो भगवन् ! इमकहे यावत् इहांथकी चवो मरीने । पेचा परभवेगएदेवेमिया । एक कोइएक जीव देवताथाय देवतापणे उपजे । परभवेगएणोदेवेमिया । चेतनाएक जीव देवता नथाय । गोयमा हेगोतम । जेइमजीवा । जे ए प्रत्यक्ष जीव पचेंद्री तिर्यंच मनुष्य । गामआगरनगरनिगमरायहाणिखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसन्निवेसेसु । जे ए प्रत्यक्ष जीव पचेंद्री तिर्यंच मनुष्य गामदेशने पामरजन आश्रितथाय जिहां रह्या बुद्धयादिगुण ते गाम बोलाइं सातधातुना उत्पत्ति स्थानक तेआगर कर रहिततेनगर जिहां वाणिया प्रधान तेनिगम जिहां स्वयमेव राजावसे कोटसहित तेराजधानी जिहां धूलिना आथाकोट तेखेट कुत्सितनगर ते कब्बड वसतीथी दूरथाय सरल वासपराई तथा तीन सराव थाय तेमडंब जलमार्गना नगरे जलथकी वस्तु आवेछे द्रोणमुख पट्टण ते नानाप्रकारना देशथी वस्तु आवे तेबेप्रकारे एकजलपत्तन बीजाथलपत्तन एकने आइथ रत्नभूमिपण कहेछे—आश्रम तापसादिस्थान चोरादिकनां ग्राम ते सन्निवे । अकामतण्हाएअकामछुहाए । अकाम निर्जरा मनमनिवाश्रविना तृषा क्षमे मनभिलापविना क्षुधासमे भूखेपीडाता अकामवृद्धयापडे । अका

मामाद्यपा य सम्यिग्या स्मे तथा तपु ॥ अकामतहायति ॥ अकामाना निर्जराद्यनभिलाषिका सता, तृष्णा सद्, अकामतृष्णा तया, एव मका मगुपा ॥ अकामब्रह्मचेरवासेवति ॥ अकामाना निर्जराद्यनभिलाषिका सतां अकामोवा निरभिप्रायो ब्रह्मचर्येण स्त्र्यादिपरिभोगाभावमात्रलक्षणेन यामा रात्रौ शयन मकामब्रह्मचर्यवासो भ तेन ॥ अकामअस्नानकस्वेदजल्लमलपङ्कपरिदाहेवति ॥ अकामा ये अस्नानकादय स्तेभ्यो य परिदाह मनया तम तत्र स्वेद प्रस्वेद पारिव लगतिवेति यल्लो रजोमात्र मलः कठिनीभूत रजएव, पङ्को मलएव स्वेदेनार्द्रीभूतइति ॥ अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालति ॥ प्राकृतत्वेन विशेषिरिचामा दल्पतरया भूयस्तरया बहुतर कालं यावत्, वाशब्दौ देवत्व प्रत्यल्पेतरकालयोः समताभिधाना र्थौ कथन इयस्वे सामान्यतः सत्यपि अल्पतरकाल मकामनिर्जरावता मविशिष्ट त स्या वितरपारस्तु विशिष्टमिति ॥ अप्पाणंपरिकिलेसितित्ति ॥ विचापायति ॥ कालमासेति ॥ कालो मरण, तस्य मास प्रक्रमादवसरः कालमास स्तत्र ॥ काल किच्चेति ॥ मृत्वा ॥ वाणमंतरेसुत्ति ॥ वनान्तरेषु यमयिद्यावेय नया धर्मागमकरणा ह्यानमन्तरा। व्यन्तराः – वनेषु भवा वामा स्तेषत व्यन्तराः संति वानव्यन्तरा स्तेपा मेते वानमन्तरावा च

ए अकामतण्हाए अकामबंभचेरवासेण अकामसीतातवदंसमसग अण्हाणगसेयजल्लमलपंकपरिदाहेण अप्पतरोयाभुज्जतरोयाकाल अप्पाणपरिकिलेसति परिकिलेसइत्ता कालमासेकालकिच्चा अन्नयरेसुवाणमंतरेसुदेवलो

अबभचेरवासेन। धनमिमते जो प्रमुखना भाव चितवता ब्रह्मचर्य पाळे। अकामे सीतातप दंसमसग। अणो मनपभिलापविना शीत टाढि आतप तापका डाँस मसा इत्यादिकनो पराभव खमे। अण्हाणगसेयजल्लमलपंकपरिदाहेण अप्पतरोवा भुज्जतरोवा कालं अप्पाणंपरिकिलेसति। कालने घण इमजिणारमि थाडोकाळ अथवा घणोकाळ आत्माने कलेशकरे। परिकिलेसइत्ता। कलेशकरीने पीडाकरीने। कालमासे। मरण तेहना अवसर तेहनेविषे। कालकिच्चा। कालकरीने। अन्नयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति। अनेरा वाणव्यंतरमांहे वननेविषे रहे तेमाटे वाणव्य

तम्मेपु श्चनोकेपु देयाश्रयपु ॥ देयताण्डयवसारोजयतितित ॥ अेइमेहत्यत्र मध्यप्रोपादाना ते दवतयोपपसारो प्रयन्तीति द्रष्टव्य ॥ तसिति ॥ य श्यनोक प्रज्ञामनिश्चारायम्ना दयतयो स्पद्यन्त तेषामिति ॥ मेजदाबामरसि ॥ सेति ॥ अथ यथा येनप्रकारेण ॥ नामेति ॥ सनावने वाक्यालङ्का रेया ॥ यइति ॥ यामस्यबाय: अमङ्कारापययवा ॥ इहति ॥ इह मत्यमोके ॥ असोगयणेइयति ॥ असोकवन, इतिवान्द उपमदर्शने, अनुस्वार मापः संधिप्र प्राकृतत्यात् याइति विकल्पार्थ अथया असोगवणइत्यत्र प्रथमैकवचनकृत एकार इयशब्दस्तु वाक्यालङ्कारे, अशोकादयस्तु प्रसिद्धास्य, नयर ॥ सत्तवण्णेति ॥ सप्तपर्ण: सप्तच्छद इत्यर्थः ॥ कुसुमियति ॥ सञ्जातकुसुम ॥ माइयत्ति ॥ मयूरित, सञ्जातपुष्पविशेषमित्यर्थः ॥

एसुदेयत्ताएउअयतारोजयति । केरिसाणन्नते तेसिंवाणमतराणदेवाणदेयलोगा पन्नत्ता गोयमा सेजहानामए इहमणुस्सलोगमि असोगवणेइवा सत्तवणवणेइवा चपयवणेइवा चूयवणेइवा तिलगवणेइवा लाउयवणेइ वा निग्गोहवणेइवा छत्तोहवणेइवा असणवणेइवा सणवणेइवा अयसिवणेइवा कुसुंभवणेइवा सिद्धत्थयवणे

तर वसोये त व्यतरनेनिये देवतापर्वे अपअवतार वाय अपआइत्वव । केरिसाण भते तेसि वाणमतराण देवाण देवलोका पन्नत्ता । कोहवाले हे भगवन् । त वाणमनिजरायको व्यतरदेवता मांहि अपना ते वानव्यतरदेवताना देवमाक वाया एतस व्यतरीकदेवताना भवन केहवाले इतिप्रश्न । गोयमा । हे गोतम । सेजहानामए । ते यथानामेति वाक्यालंकार । इहमणुस्सलोगमि । एह मनुष्यलोकनेविषे । असोगवणेइवा । अशोकवृक्षना वनी इवा वाक्यालंकारे वा अथवा । सत्तवण्णवणेइवा । सप्तपर्ण माटो पुष्पजातिविशेष तेहना वन अथवा । चपयवणेइवा । चपकवन अथवा । चूयवणेइवा । आंबावन । तिलग वणेइवा । तिलकवृक्षनावन । लाउयवणेइवा । तूबविशेष तेहना वन पाठांतरे लौगवन । निग्गोहवणेइवा । वडवृक्षना वननेविषे । छत्तोहवणेइवा । वृक्षवन । असणवणेइवा । असणवृक्षविशेष तेहना वन । सणवणेइवा । शणवृक्षनावन । अयसिवणेइवा । अलसीवृक्षनावन । कुसुंभवणेइवा । कुसुंभव न । सिद्धत्थवणेइवा । धोलासरसव तेहनावन । बंधुजीववणेइवा । बापडियाफूल विशेष तेहनावन । नियकुसुमिय । सदैव बारेमास फूलावका । मा

सयइयत्ति ॥ सवकित सञ्जातपल्लवस्व पकुरवदित्यर्थः ॥ मवइयत्ति ॥ स्तबकितं संजातपुष्पस्तबकमित्यर्थः ॥ गुलुइयत्ति ॥ सञ्जातगुल्मक, गुल्मकश्च लतासमूहः ॥ गुच्छियत्ति ॥ सञ्जातगुच्छ गुच्छ एव समूह यद्यपिच स्तबकगुच्छयो रविशेषो नाम कोश घीत तथापीह पुष्पपत्रकृतो विशेषो भावनीयः ॥ जमलियत्ति ॥ यमलतया समश्रेणितया तत्तरूणां व्यवस्थितत्वा त्संजातयमलत्वेन यमलितं ॥ जुवलियत्ति ॥ युगलतया तत्तरूणां सञ्जातत्वेन युगलितं ॥ विणमियत्ति ॥ विशेषेण पुष्पफलभरेण नमित मितिकृत्वा विनमितं ॥ पणमियत्ति ॥ तेनैव नमयितु मारब्धत्वा त्प्रणमितं प्रणष्ट्यस्या दिकर्मार्थत्वा दिति तथा सुविभक्ता अतिविभक्ता सुनिष्पन्नतया पिंडयो सुञ्जो मञ्जर्यश्च प्रतीता तापुवा वतंसका शेखरका स्तान् धारयति य स सुविभक्तपिंडीमञ्जर्यवतंसकधर ततः कुसुमितादीनां कर्मधारयइति ॥ सिरीएत्ति ॥ श्रिया वमलक्ष्म्या ॥ उव

इया यधुजीवयणेइया निश्चकुसुमियमाइयलयइयथवइयगुलुइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमिय सुविभत्तपिंडिमंजरिवडिंसगधरे सिरीए अतीवअतीवउवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिठइ । एवामेवतेसिंवाण मंतराणदेवाणदेवलोया जहन्नेणं दसवाससहस्सठिईएहिं उक्कोसेण पलिओवमठिईएहिं वहुहिं वाणमंतरोहिं

इत्यादिका । मञ्जरी पुष्पाणां गुच्छ । विवक्ष । नित्यं पुष्पाणि । गुलुइय । लतासमूह । गोच्छिय । पत्रसमूह । जमलिय । समश्रेणीतयरच्या । जवलिय । द्वाभ्यांयुगल एकठाम्हे । विणमिय । फूलफलने भारेनम्यां । पणमिय । भारेकरी प्रकर्षेनम्यां । सुविभक्त । अतिभलेठ । पिंडिमंजरिवडिंसधरे कुंभियां मंजरी मस्तकपरमां धरणहार मस्तके मुकुट तेहमते धरे । सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ । वनखंडोवारो अतिशे अतिशे ह शोभायमान ते वनखंडे एतलेश्या सहस्रपणे रहे । एवामेवतेसिंवाणमंतराणं देवाणं देवलोया । इमज नियेतेहना वाणमंतर देवताना देवलोक पूर्वकथा तेहवाज जांणवा । जघन्येन दसनामसहस्र हितोएहिं । जघन्यको दससहस्र १ वर्षनी स्थितिवाधको स्थितिकरीने । उक्कोसेण पलिओवम हितोएहि । माजना उत्कृष्टको पल्योपमनी स्थिति वांधवो । बहुं हैं वाणमंतरेहि । बहु वाणमंतर । देवेहि य । देवेंकरी । देवीहिय । देवीय

कोजेमाचेति ॥ इह द्विवचन मार्गीस्वे मज्ञत्वे इत्ययः ॥ आइसति ॥ क्वचित्प्रदेशे देवानां देवीनाञ्च वृन्दे रात्मीयात्मीयावासमर्यादामुल्लङ्घनेन व्या

सा, व्याप्नोत्र मर्यादावृत्तिः, तथा क्वचित्तु ॥ विस्महति ॥ तैरेव पूर्वैर्मिथावाससीमोल्लङ्घनेन व्याप्ता विशब्दो विशेषवाची, ॥ उवत्थडति ॥

उपस्तीर्णा उपशब्दः सामीप्यार्थ गृहूय आच्छादनार्थं सतत उत्पतद्भिः निपतद्भिर्या नवरतक्रीडासक्तैः रुपर्युपरिच्छादिता ॥ सथडति ॥ संस्ती

र्णाः सशब्दः परस्परसमीपार्थे, सतत क्वचि तैरेव क्रीडमानैः रम्योन्यस्पर्धया समन्तात् यतद्भिः राच्छादिताइति ॥ फुडति ॥ स्पृष्टा आसनशयनरम

णपरिभोगद्वारेण परिभुक्ताः स्फुटावा ; समकाशा व्यन्तरसुरनिकरमिरणविसरनिराकृतान्धकारतया ॥ अवगाढगाढति ॥ आड अवगाढा सैरे

व सकलक्रीडास्थानपरिभोगनिश्रितमनोभि रपोपि व्याप्ता, गाढावगाढा इतिवाच्ये प्राकृतत्वा दवगाढगाढा, इह देवत्वयोग्यस्य जीवस्यानि

धानेन तद्याग्यः सामर्थ्या दवसीयतएवेति ॥ धत्येगइए मोदवेसिए इत्यतस्याद्या सुत्तस्य पदस्य निर्वचनं कृत द्रष्टव्यमिति, यथो देसकनिगमना

देवेहिय देवीहिय आतिस्सा वितिस्सा उवत्थडा सथडा फुडा अवगाढगाढसिरीए अतीवअतीवउवसोभेमा

णा उवसोभेमाणा चिठति । एरिसगाण गोयमा तेसिवाणमंतराण देवाणदेवलोगा पण्णत्ता सेतेणठेणगोय

करोमे । आतिश्चा वितिश्चा उवत्थडा सथडा फुडा अवगाढसिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति । आपणो मरजादासगो देव देवीमे पृहवरोने

ब या आपणीभूमिको मरजादाअबो व्याप्या आकादेवदेवी अगरभाभाया परस्पर मनो दूरसगो रमता सवारामो परे पावरा परथा आसन

सयन रमन भामसारेवरो मानमती तथा भवभार सघात सवसकोल भभिसाया देवता मोबाहमे व्याप्या गाढ प्रकृषपवरेश सभोहवरो भतीव २

सामता २ यथा रहेछे । एरिसमाय । एहवा मेसमवर्णासाप वत्ते । गायमा । गोतम । तेसिबाबमतराय देवाय देवलोगा पवता । तेहमा बागव्यतर

देवना देवलाक भवन वाद्या । सेतेयहय गायमा एवबुच्चइ । ते तेबेबारथे हे गोतम इम रुवेमबारे कहुं । जोवेय भसवए । जीव भसवगो । जावदेवेसि

या । यावत् देवतापणेऊपजे । सेवमते २ तिमवब गोयमे । वामें पूज्य सोभगवतेकह्यं इसो इमजह भवथा नबो । एतले समपतनो महुमाग देवाया

येमाह ॥ सेव भंते । सेवभंतेत्ति ॥ यम्माया पूर्वं तत्प्रमवद्भिः प्रतिपादितं तत् एव मित्यमेव भवन्त । नान्यथा, अनेन भगवद्वचने बहुमान दर्शयति द्विर्वचनञ्च प्रतिसत्यमस्त, एव कृत्वा भगवान् गौतमः श्रमण भगवत महावीरं वन्दते नमस्यतिचेति ॥ प्रथमशते प्रथमोद्देशकविवरण समाप्तमिति ॥ १ ॥ व्याख्यात प्रथमोद्देशको ऽथ द्वितीय आरभ्यते, अस्य चेव सम्बन्ध प्रथमोद्देशके चलनादिधर्मक कर्मोक्त सदेवेह निरूप्यते तथो द्वकार्यसङ्ग्रहस्या ॥ दुक्खेयत्ति ॥ यदुक्त तद्विहोच्यते तदमस्तावनार्थश्च पूर्वोक्तमेव ग्रन्थ स्मरयन्नाह ॥ रायगिहे इत्यादि ॥ पर्ववत् ॥ जीवणमित्यादि ॥ तत्र ॥ सयकडदुक्खति ॥ यत्परकृत तद्वेदयतीति प्रतीतमेवातः स्वयकृतमिति पृच्छतिस्म ॥ दुक्खति ॥ सांसारिक सुखमपि वस्तुता दुःखमिति दुःखहेतुत्वा दुःखं कर्म वदयतीति काकुपाठा त्प्रश्नः नियवनं तु यदुदीर्ण तद्वेदयति अनुदी

माएववुच्चइ जीवेणञ्चसजएजावदेवेसिया सेवभंतेभंतेत्तिभयवगोयमे । समणभगवमहावीरवंदइ णमसइ व
दित्ता णमंसित्ता सजमेणतवसा अप्पाणभावेमाणेविहरइ पढमसएपढमोउद्देसोसम्मत्तो ॥ १ ॥
रायगिहेणयरेसमोसरण परिसाणिग्गया जावएववयासी जीवेणभंते सयकडदुक्ख वेदेइ गोयमा अत्थेगइ

रमवशी भगवत गौतम । समर्थ भवव महावीरवंदर । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने वांदे । नमंसइ नमस्कारकरे वंदिता । वांदोने । नमंसित्ता । नमस्कारकराने । सयमेन तपसायप्पाव भाविमावे विहरर । सयमेकरी अनाश्रवरूपाजेनवो तपेकरी पुरातनकर्म निर्जरे एहवा श्रीगोतमस्वामी आत्माने भावतायका विचरे । पढमसए पढमोउद्देसा सम्मत्ता । १ । प्रथमशते प्रथमउद्देशना विवरणा समाप्तमिति ॥ १ ॥ पहला दिन कह्या तेहम उ'पणा वेतुभयो दु:खनो अधिकार कहेछे—तथा उद्देशकाव संपइपि भावानेविषे । दुक्लेति । इशोतेवयो तेकहेछे—रायगिहेनगरे समासरण । राजगृह नगरे श्रीमहावीरस्वामी समोसर्या । परिसाणिग्गया जावएववयासी । परिषदा वांदोने आपआपने घरेगया पूवलोपरे गोतमस्वामि श्रीमहावीरस्वामीने वांदीने यावत् इम कहे ताम्रने कहवा । जोवेणभंते सयकडं दुक्ख वेदेइ गायमा । जीव हे भगवन् । जेने जे जीवे कर्म ते

मरपदि कर्मणो वेदनमेव नास्ति' तस्मा दुदीणवेदयति नानुदीर्णं, नचयन्धानमनरमेवोदेति, मतो मद्यं वेद्यमपि एवं वेदयति, एक नवेदय मी त्यनं व्यपदिश्यत मवश्यं यद्यमथव कर्म—कलापकमाय ममोक्सो भत्यीतिवचनादिति ॥ एवं जाव वेमाणिए इत्यनेन चतुर्विंशतिदण्डका मूचितः, मथैव ॥ मेरइयणं भंते। सयंकडमित्यादि ॥ एव मकरणेम दण्डक सया बहुत्वे मान्यः, सर्वेय ॥ जीवाणं भंते सयकडं दुक्खं वेदंतीत्या दि ॥ तथा मरइयाणं भंते। सयकडं दुक्खमित्यादि ॥ नन्वेकत्व पौर्या बहुत्वेपि सवथेति किं बहुत्वमसेमति ? मत्रोच्यते क्वचि द्दसु न्येकत्वयु

यवेदेइ अत्येगइयनोवेदेइ सेकेणठेणन्नतेएववुच्चइ अत्येगइयवेदेति अत्येगइयनोवेदेति गोयमा उदिन्नवेदे ति णोअणुदिन्नवेदेति। सेतेणठेणएववुच्चइ गोयमा अत्येगइयवेदेइ अत्येगइयणोवेदेइ एवचउवीसदण्डएण जायवेमाणिए। जीयाणन्नतेसयकडदुक्खवेदेति गोयमा अत्येगइयावेदेत्ति अत्येगइयाणोवेदेति। सेकेणठेण न्नतेएवयुच्चइ गोयमा उदिन्नवेदेति णोअणुदिन्नवेदेति एव जाव वेमाणियाजीवेण न्नतेसयकडआउयवेदेति

मवेदे इमाना प्रमिटवे पनि पातेजीवा दुक्ख मवेदे इतिमश्न। हेगोतम। मत्येगइयवदेइ। केतलाएकजोव सकृतकर्मवेदे। मत्येमइयणोवेदेइ। केतलाएक जोव सकृतकर्म दुःख मवेदे। सेकेणट्ठेणभंते एवंवुच्चइ। गौतम पूछेछे—ते स्यामाटे हेभगवन्! इम कह्यु। मत्येगइएवेदेति। केतलाएक वेदे। मत्येग इयनावेदेति। केतलाएक सकृतदुःख मवेदे। गोयमा। भगवतकहइ—हेगौतम! उदिन्नं वेदेति। उदयमाव्यतेकर्म वेदे। पी मणुदिन मवेदेति। मह्यो उदय माव्या तेकम वेदेनहीं। मेतेणट्ठेणं एववुच्चइ। तेणकारणे इमकह्यु। गोयमा। हेगौतम। मत्येगइय वेदेइ। केतलाएक जीव सकृतदुक्ख वेदे। म त्येगइयणावेदेइ। केतलाएकजीव सकृतदुःख मवेदे उदय माव्या तेमाटे। एवचउवीसदण्डएण। इम चउवीसदण्डकनेविपे कहवो। जाव वेमाणिए। याव त् वेमानिकलगे जाणवा ए एकवचनपाठी कह्या। हिवे बहुवचनपाठी कहेछे—जीवाणभंतेसयकडदुक्खंवेदेति। जीव हेभगवन्! पोते कृतदुक्खवेदे इ तिमश्न भगवतकहेछे—गोयमा। हेगौतम! मत्थेगइयावेदेति। केतलाएक जीव सकृतकर्म वेदे। मत्थेमइयाणा वेदेति। केतलाएक जीव सकृतदुक्ख

स्वयो र्वविशेषो दृष्टो यथा–सम्यक्त्वादेरेक जीव माश्रित्य षट्षष्टिसागरोपमाणि साधिकानि स्थितिकाल उक्तो नानाजीवा माश्रित्य पुनः सर्वा द्वेति, एव मत्रापि सम्भवे दितिप्रकृत्या व्युत्पन्नो मतुष्ट, भत्यन्ताव्युत्पन्नमतिशिष्यव्युत्पादनार्थत्वा द्वेति यथा पुःप्रधानत्वा न्नारकादिव्यप देशस्या पुराश्रित्य दण्डकद्वयम् ॥ जीवणमित्यादि ॥ एतस्य चेयं वृद्धोक्तभावना, यदा सप्तमपिता मायुर्बंद्ध पुनश्च कालान्तरे परिणामविशेषा तृ तीयपरवीप्रायोग्यं निर्वर्तित वासुदेवेनेव, ततादृश मङ्गीकृत्योच्यते पूर्वबद्ध मपि मवेदय त्स्मुदीर्णत्वा तस्य, यदायुम येनैवयद्बं तत्रैवो त्पद्य ते तदा वेदयतीत्युच्यते, तथैव तस्यो दितत्वादिति अथ चतुर्विंशतिदण्डक माहारादिभि र्विरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त श्चवर ॥ म

गोयमा ख्रत्थेगइयवेदेति ख्रत्थेगइयणोवेदेंति जहादुक्खेणदोदण्डगा तहाच्याएणवि एगत्त पोहत्तिया एगत्तेण जाव्र वेमाणिया पुहत्तेणवितहेव । णेरइयाण भंते सव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा सव्वेसमुस्सासणिस्सासा गो

मवदे। सेकेणट्ठेणभते एववघर। भातमकहेव— ते श्यामाटे हेभगवन् इमकह। गोयमा। हेगोतम। उदिर्णवेदेति। उदयपाम्या ते वेदे। णोणदिन्न वेदेति। नहो उदयपाम्या ते नवेदे। एवंजाववेमाणिया। इम चउवीस दण्डक यावत् वैमानिकलगे। जोवेणंभते सयकड पाउय वेदेति। ढिवे नार कादिकने पायु कम प्रधानपणे तेमाटे माउषा पात्री दण्डकविधे कहेहे—जोव हेभगवन् स्वयंकृत भायुमतें वेदे भगवत कहेहे—हेगोतम। पत्थेगइ य वेदेति। केतलाएक वेदे उदय पाम्यू ते वेदे इत्यथ। पत्थेगइयो वेदेति। केतलाएक नवेदे उदयपाम्या विना नवेदे। जहादुक्खेण सोदण्डगा। जिम दुःखनेविषे वेदकवक्त्रा एकवचने बहुवचने पथवा उदयपाम्यू वेदे उदयमाम्या ते वेदेनही। तथा पाउपणविशेदण्डगा। तिम पाउषानेविषेपवि दोय दण्डक कहवा। एगत्त। एकवचनपायो एकजीव। पोहत्तिया। बहुवचनपात्रो घणा जोव। एगत्तेणं जाव वेमाणिया। एकवचने एकजीव पाणी याव त् वैमानिकतांई जाणवा। पुहत्तेणवि तहेव। बहुवे घणा जोव पाणी पणि तिमजोव पतले वैमानिकतांई कहवा। नेरइयाणभंते सव्वेसमाहारा। हिवे चउवीसदण्डक पाहारादिकरी कहेहे—नारको हेभगवन्। सगला सरीखा पाहारवंतछे। सव्वेसमसरीरा। सगला सरीखे शरीरेछेय। सव्वेसमु

हासरीरायअप्पसरीरायेत्यादि ॥ इहास्पत्व महत्त्वम्या वेदितं तत्र जघन्यमस्पत्व मगुलासङ्ख्येयभागमात्रत्व सुत्कृष्टन्तु महत्त्व मप्यधनुः शतमा नत्व मतच भवधारणीयशरीरापेक्षया, उत्तरवैक्रियापेक्षयातु जघन्यमगुलसङ्ख्येयभागमात्रत्व मितरत्तु धनुःसहस्रमानत्वमिति एतेनच किसमस रीरा इत्यत्र प्रश्न उत्तरमुक्त शरीरविषमताभिधानेसति आहारोच्छ्वासयो र्वैषम्य सुखप्रतिपाद्य भवतीति शरीरप्रश्नस्य द्वितीयस्यानोक्तस्यापि प्र श्नं नियमन मुक्त यथा आहारोच्छ्वासप्रश्नयो र्निर्वचनमाह ॥ तत्थणमित्यादि ॥ ये यतो महाशरीरा स्ते तदपेक्षया बहुतरा न्पुद्गला नाहारयन्ति महाशरीरत्वादेव दृश्यतेहि लोके बृहच्छरीरो बह्वा श्यस्वल्पशरीरश्चा स्पभोजी हस्तिशशकवत् बाहुल्यापेक्ष चेदमुच्यते अन्यथा बृहच्छरीरोपि

यमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेण भंते एवमुच्चइ णेरइयाणोसव्वेसमाहारा णोसव्वेसमसरीरा णोसव्वेसमुस्सासणि स्सासा गोयमा णेरइयादुविहा पण्णत्ता तंजहा महासरीरायअप्पसरीराय तत्थणजेतेमहासरीरातेयबहुतराए

च्छासनिश्वासा । भगवाने सरीखा उश्वास नीसासवाला पणवे भगवती भगवंत कहे—गौतम । वेगोतम । नोइणट्ठेसमट्ठे । एअर्थ समर्थनथी कुणअर्थ इत्यथ । सेकेणट्ठेणंभंते एवमुच्चइ । ते कियेकारण हेभगवन् । इमकह्य । नेरइयाणोसव्वेसमाहारा । नारकी सर्व सरखा सरीखा आहारनावंत नथी । नो सव्वेसमसरीरा । सरखा सरीखे सरीरे नथाय । नोसव्वेसमुस्सासनिस्सासा । सरखा सरीखे उश्वास नीसासे नथाय इसेपूछ्यो भगवंत कहे । गोयमा । हेगोतम । नेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय । नारकी बेप्रकारे कह्या ते कहेछे—इहां अल्पपणुं तथा महत्वपणुं अपेक्षा स हितछ तिहां जघन्य अल्पपणुं अगुल असंख्यातमा भाग शरीर अ उत्कृष्ट महत्वपणुं पांचसे धनुषमान ए भवधारणीय शरीरनी अपेक्षाये कह्य उत्तर वे क्रिय शरीरनी अपेक्षाये जघन्य अगुलने असंख्यातमें भाग शरीर उत्कृष्ट सहस्रधनुष हुवे तेमाटे नारकी महाशरीरवंतछे कोइक अल्पशरीरवंतछे एवं वेभेदे । तत्थणं जेतेमहासरीरा तेबहुतराए पोग्गले आहारेंति । तिहां पूर्वोक्त वेपक्षमाहें जे महाशरीरीछे ते घणातघणा पुद्गलनो आहारकरे लोकमांहि पणि दीसेछे मोटाशरीरनो घणो घणां पुद्गलनो आहारकरे हाथीनोपरे तथा शशलानोपरे ते नारकी असातावेदनीय कर्मसहितछे तेजिम मोटाशरी

काये दल्प मभाति चल्पशरीरापि कश्चित् भूरि भुंक्ते तथाविधमनुष्यवत् नपुनरेवमिह बाहुल्यपक्षस्यैवा श्रयणात् तेच नारकाउपपातादिसंक्लेशा भुक्त्वा द्वन्यत्र संक्लेशोदयाभावेऽपि तस्यैवं कालेन यथा–महाशरीरा दुःखिता तीव्राहाराभिलाषाय भवन्तीति ॥ बहुतराए पोग्गले परिणामेंतित्ति ॥ आहारपुद्गलानुसारित्वात् परिणामस्य बहुतरा नित्युक्तं परिणाम श्चाहारो व्याहारकार्य मितिकृत्वोक्त', तथा ॥ बहुतराए पोग्गले ऊससंतित्ति ॥ उच्छ्वासतया गृह्णन्ति ॥ नीससंतित्ति ॥ निःश्वासतया विमुञ्चन्ति महाशरीरत्वा देव दृश्यतेहि–इहमहाशरीर सज्जातीयेतरापेक्षया बहूच्छ्वासनिःश्वासइति दुःखितोपि तथैव, दुःखिताश्च नारकाइति, बहुतरा सानुच्छ्वसन्तीति, तथा आहारस्यैव कालकृतं वैषम्यमाह ॥ अभिक्खणं आहारेंतित्ति ॥ भाजीक्ष्ण्यं पौनःपुन्येन यतो महाशरीरः स तदपेक्षया शीघ्रशीघ्रतराहारग्रहणइत्यर्थः ॥ अभिक्खणं ऊससंतिअभिक्खणं नीससंतित्ति ॥ एतेहि महाशरीरत्वेन दुःखिततरत्वा दभीक्ष्ण मनवरतमुच्छ्वासादि कुर्वन्तीति, तथा ॥ जेतेइत्यादि ॥ येते इह ये इत्येतावते वार्थसिद्धौ यतेइत्युच्यते तद्भाषामात्रमेवति, ॥ अप्पसरीराअप्पतराए पोग्गले आहारेंतित्ति ॥ ये यतो ऽल्पशरीरा स्ते तदाहारणीयपुद्गलापेक्षया ऽल्पतरान् पुद्गला नाहार

पोग्गले आहारेंति बहुतराए पोग्गले परिणामेंति बहुतराए पोग्गले ऊससंति बहुतराए पोग्गले नीससंति अभि क्खणं आहारेंति अभिक्खणं परिणामेंति अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं नीससंति तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेणं

रतां अणोजाय तेमहाकुंभाका तोभाहारतां अभिलाषीहुवें । बहुतराए पोग्गलेपरिणामेंति । मोटाशरीरना नारकीने घणापुद्गल शरीरे परिणमे आ हारपुद्गलने अनुसारकवो परिणामने बहुतरपणूंकह्यं । बहुतराए पोग्गले । इम नारकी घणापुद्गल वारवार । ऊससंति । ऊससें उसासरूपें ग्रहे । बहु तराए पोग्गले नीससंति । अन्त घणापुद्गल वारवार नीससे निसासरूपेंधरे तथा आहारनोज कालकृतवैषम्य कहेछे । अभिक्खणं आहारेंति । वारवार आहारग्रहे । अभिक्खणं परिणामेंति । एमोटाशरीरना घणो घणें अतिदुःखितपणा वारवार परिणमे । अभिक्खणं ऊससंति । घणो अतिदुःखकवो वार वार ऊसासले । अभिक्खणं नीससंति । वारवार नीसासादिकरे । तत्थणं जेते अप्पसरीरा । तिम पूर्वोक्त वैषम्यमाहि जे अल्पशरीरी छोटाशरीरनाधणी छे

यन्ति अल्पशरीरत्वा देव ॥ आहच्चआहारंतीति ॥ कदाचि दाहारयन्ति कदाचि आहारयन्तीति, महाशरीराहारपदवामतरालापकम्। ...

मान्तरासतयेत्यर्थः ॥ आहच्च ऊससंति आहच्च नीससंतीति ॥ एते अल्पशरीरत्वेनैव महाशरीरापेक्षया अल्पतरदुःखत्वा दाहत्य कदाचि स्यातर

मित्यर्थः, उच्छ्वासादिकुर्वन्ति यच्च नारकाः सप्ततमे वोच्छ्वासादिकुर्वन्तीति, मायुक्तं तन्महाशरीरापेक्षये त्यवगन्तव्यमिति, अथवा अपर्याप्तका

से अल्पशरीराः सतो लोमाहारापेक्षया मा हारयन्ति, उच्छ्वासापर्याप्तकत्वेनच नोच्छ्वस त्यन्यदा त्वाहारयन्तुच्छ्वसन्तिचे त्यत आहत्याहारयन्त्या

दत्योच्छ्वसतीत्युक्तं ॥ सेतेणठ्ठणगोयमा ! एवमुचेव नरइया सव्वेनोसमाहारस्यादि ॥ मिगमनमिति, समकम्मसूत्र ॥ पुव्वोववन्नगायपच्छोववन्नगा

यति ॥ पूर्वोत्पन्नाः प्रथमतरमुत्पन्ना स्तदन्येतु पश्चादुत्पन्ना तत्र पूर्वोत्पन्नानामायुष सदन्यकर्मणाम्च प्रभुतरवेदना दल्पकर्मत्व, यथा दुत्पन्ना

अप्पतराएपोग्गले आहारेंति अप्पतराएपोग्गले परिणामेंति अप्पतराएपोग्गले ऊससति अप्पतराएपोग्ग
ले णीससति आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससति आहच्च णीससति सेतेणठेण गोयमा

नारकाजाय। तेभअप्पतराए पामसे आहारेंति। तेनारकी च इस पाञ्चालकार थल्पतर थोडापुद्गलनो आहारकर तेवाटा शरीरमाट महाशरीरनो अ

पेक्षायें थाडा दुःखनां भणी छे तेमाटेज इम तेनारकोनें। अप्पतराएपामसे परिणामेंति। अल्पतर थोडापुद्गल परिणमें थोडा आहारमाटे तेनारको। अ

प्पतराए पामसे ऊससति। अल्पतर थोडापुद्गल उसासपणे ग्रहें। अप्पतराएपामसणीससति। अल्पतर थाडा पुद्गल नीसासपणें धरे॥ आहच्च आहारें

ति। रहो २ आहारकरें अंतरासहित आहारकरे। आहच्च परिणामेंति। अंतरासहित परिणमें रहो २ परिणमें। आहच्चऊससति। अंतरासहितऊ

ससे उसासपणे। आहच्चणीससति। अंतरासहित नीसासपणे। सेतेणठ्ठेणं गोयमा। ते तेणेप्रयोजनें हेगौतम ! एवमुचेव। इमकह्युं। नेरइयाणोसव्वे स

माहारा। नारको सगला सरीखा आहारवंत होवनहीं। जावणीसव्वेसमुच्छासणीसासा। यावत्शब्दे सगला समशरीरनहीं सगला समउसास नीसास

वतनहीं॥ हिवे नारकोने कर्मप्रश्न पूछेछे। नेरइयाणंभते सव्वेसमकम्मा। नारको हेभगवन् ! सगला सरीखा कर्मवतछे उत्तर। गोयमा। हेगौत

नाम्न नारकाका मायुकाधीना मस्मतराका वेदितव्या न्महाकर्म्मेत्वं यतव सूत्र समानस्थितिका ये नारका स्तानङ्गीकृत्य प्रवीत, मन्ययापि रत्नप्र भाया मुत्कृष्टस्थिते नारकस्य बहु म्यायुषि क्षयिते पल्योपमावशेषेव तिष्ठति तस्यामेव रत्नप्रभायां दशवर्षसहस्रस्थिति नारको ऽन्य कश्चि दुत्प न्न इतिकस्वा मायुत्पन्न पल्योपमायुष नारक मपेक्ष्य क्लिवषु ख्वल्प महाकर्मेति, एव वर्षसूत्रे पूर्वोत्पन्नस्या ल्प कर्म्म सत स्नस्य विशुद्धो बस्

एव वुच्चइ णेरइयाणोसह्वेसमाहारा जाय णोसह्वेसमुस्सासणीसासा । णेरइयाण न्नते सह्वेसमकम्मा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण न्नते एवं वुच्चइ गोयमा णेरइयादुविहा पन्नत्ता तजहा पुह्वोववन्नगाय पच्छोवव न्नगाय तत्थणजेतेपुह्वोववन्नगा तेण अप्पकम्मतरागा तत्थणजेतेपच्छोववन्नगा तेणमहाकम्मतरा सेतेणठेण

म। चारचोइसमा। एवम समवर्णी। सेकेणठेणभते। ते केणवें हेभगवन् एमकहा। एवमचार। सब नारको सरीखा कमवंत नहीं उत्तर। गोयमा। हे गौतम। णेरइया दुविहा पन्नत्ता तजहा। नारकी बेभेदे कह्या तेकहेछे—पुह्वोववन्नगाय। एक पूर्वे पहिला ऊपना ते पूर्वोपपन्न कहीये। पच्छोववन्न गाय। जेनारको पछे ऊपना एबोवा भेद २। तत्थणं जेतेपुह्वोववन्नगा तेण। जेपूर्वोक्त वेपममाहि तेपूर्वे ऊपना तेनारको थवप थोडा कमवंतछे ते किम जेपूर्वे ऊपना तेहने आयु कम तथा थोडाक्रम बचा वेयाछे थोडाछे तेमाट। अप्पकम्मतरागा तत्थणजेते पच्छोववन्नगा तेणंमहाकम्मतरा। पहपछवर्णी रहे तेमाटेमहाकर्मी कह्या एसूत्र सरीखो स्थितिना धणी जेनारको ते पमोत्तारकरोने कहोछे अथवा रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कोई एक नारक जीवनो उत्कृष्टो एकसागरोपमनो स्थितिछे तेमाहें पल्योपमस्थिति भोगवो बेव एकपल्योपमरहोछे एतले तेहीज रत्नप्रभा नारकीनेविषे दशसहस्रवर्षनो स्थिति नो जीव ऊपना ते पूर्वे ऊपनापल्योपमशेषआयुष्यनारकोनी अपेक्षायें ए महाकर्मी कहियेछे एतावता थोडोकर्मीछे इस वर्षसूत्रनेविषे पनि कहवो सेतेणठेणं गोयमा एवंवुचइ। ते तेणेकारणे हेगोतम इमकह्यु। हवे गोतमपूछेछे—णेरइयाणंभते सह्वेसमवण्णा। नारको हेभगवन्। सघला सरीखावर्णे

यथानुत्पन्नस्य च अनुक्रमत्वा दविशुद्धतरोवक्तव्यमिति एवं लेश्यासूत्रेपि, इहच लेश्याशब्देन नायलेश्यायाधा भावरूपलेश्यातु वर्णद्वारेण यो व्यति ॥ समवेयणति ॥ समवेदनाः समानपीडाः ॥ सम्मिभूयत्ति ॥ सम्मा सम्यग्दर्शनं, तद्वन्त सञ्ज्ञिनः सञ्ज्ञिनोभूताः सञ्ज्ञिस्वभूताः, सञ्ज्ञी

गोयमा एवबुच्चइ णेरइयाणन्नतेसव्वेसमवद्मगा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणतहच्चेव गोयमा जेतेपुव्वोव वद्मगा तेणविसुरुवद्मतरागा तहेव सेतेणठेण गोयमा णेरइयाण न्नंते सव्वेसमलेस्सा गोयमा णोइणठेस मठे सेकेणठेण जाव णोसव्वेसमलेस्सा गोयमा णेरइयादुविहा पन्नत्ता तजहा पुव्वोयवद्मगाय पच्छोववद्म गाय तत्थणजेतेपुव्वोयवद्मगा तेणविसुरुलेसतरागा तत्थणजेतेपच्छोववद्मगा तेणच्चाविसुद्धलेसतरागा सेतेण

हीय उत्तर। गोयमा। हेगौतम! नारकाः समस्ता। एयब समवर्णा मुजनहीं। सेकेणद्वेण तहेव गोयमा। ते प्रकारे हेभगवन्! इमरद्ध इत्यादि सर्व पूठिलोपरे कहवा हेगौतम! जेते पुव्वोववद्मगातेविसुद्धवद्मतरागा। जेपूर्वे उपना ते तेहने अल्पकर्म बांधोरयाछे तेमाटे अबाधबद्ध जे पछे उपना ते हने बांधनमले तेमाटे निमलबबल तहने। तहेव। एसव तिमवचनवा। सतेणद्वेण गोयमा। त तेणप्रकारे हेगौतम! नारकी सर्व समवर्ण नहीं। णेर इयाणंभते सव्वेसमलेस्सा। नारका हेभगवन्! समस्ता सरीखो लेस्याना सर्वोने लेश्यामध्ये भावलेश्या कहवी। गावमा। हेगौतम। णोइणद्वेसमद्वे। एमर्थ समवर्णी मुजनहीं। सेकणद्वेण। ते सेंकारणे हेभगवन्! इम कहा। जाव णोसव्वसमलेस्सा। यावत् नारकी सगलाई समलेस्सानहीं। गोयमा। हेगौतम! णेरइयादुविहा पन्नता तजहा। नारकी बे प्रकारना कह्या ते कहेछे—पुव्वोववन्नगाय। एक नारकी पूर्व उपनाछे। पच्छोववन्नगाय। बीजा नारकी पछे उपनाछे। तत्थणंजेते पुव्वोववन्नगा। तिहां बेपक्षमांहि जे नारका पूर्व उपनाछे। तणविसुद्धलेसतरागा। ते नारकी विशुद्धलेस्यावन्त। जेणे तेमने कर्मभाटे निमलनेस्यावतहवा। तत्थणंजेतेपच्छोववन्नगा। तिहां बेपक्षमांहे जेत पछे उपनाछे। तेण अविशुद्धलेसतरागा। ते नारकी अविशुद्धलेस्यावाले बहुकर्मभाटे निमलसमानतमहीं। सेतेणद्वेण गावमा। तेमाटे हेगौतम! नारकी सर्व समलेस्यानहीं। णेरइयाणमते सव्वेसमवेदणा। नारकी हे

नूता अथवा असञ्ज्ञिनः सञ्ज्ञिनोभूताः सञ्ज्ञीभूताः विभत्ययोगात्, मिथ्यादर्शन मपहाय सम्यग्दर्शनमन्नमा समुत्पन्नात्तियावत् तेषां पूर्वंकृतकर्मविपाक मनुसरता महोमहदुःखसङ्कटमिद मकस्मा दस्माक मापतितं, न कृतो भगवदर्हत् प्रणीत सकलदुःखक्षयकरो विषयवि षमविषपरिभोगविप्रलब्धचेतोभि र्धर्म इत्यतो महदुःखं मानस मुपजायते, अतो महावेदना स्ते ऽसञ्ज्ञीभूतास्तु मिथ्यादृष्टय स्तेतु स्वकृतक र्मफलमिद मित्येव मजानन्तो ऽनुपतप्तमानसा अल्पवेदना इत्यरिस्येव अन्येत्वाहुः सञ्ज्ञिनः सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियाः सन्तो भूता नारकत्व मताः सञ्ज्ञीभूता स्ते महावेदना स्तीव्राशुभाध्यवसाये नाशुभतरकर्मबन्धनेन महानरकेषूत्पादात् असञ्ज्ञीभूतास्तु अनुभूतपूर्वासञ्ज्ञिभवा स्तेषा सञ्ज्ञित्वा

ठेणं गोयमा । णेरइयाण ज्ञत सम्मसमवेदणा गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण ज्ञते गोयमा णेरइयादुविहा पणत्ता तजहा सण्णिभूयाय असण्णिभूयाय तत्थणजेतेसण्णिभूयातेणमहावेदणा तत्थणजेतेअसण्णिभूया तेण

भगवन् । सघलासघेला वेदनावत पोताने थाय । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । नाइणटेसमटे । ए अर्थ समर्थ नथी युक्त नथी । सेकेणटे भंते । ते हे भगवन् । एम किम कहो छो ते वेदनाने अर्थे । गोयमा । हेगौतम । णेरइयादुविहा पण्णत्ता तंजहा । नारकी बेभेदे कह्या तेकहेछे—सण्णिभूयाय । सम्यग्दृष्टी नारकी तथा मनो । असण्णिभूयाय । मिथ्यादृष्टी नारकी तथा अमनो । तत्थणजेतेसण्णिभूया तेण महावेयणा । तिहां बेपक्षमांहि जेनारकी मिथ्यात्वगतपछी सम्यग्दर्शन पाम्या तेहने पूर्वकृत कर्मविपाक संभारवाथी महादुःख ते । किमने । अकस्मात् सकटमांहे पड्या तेहथी पश्चात्तापकरीने परिवर्तपण्यो धर्म न पाम्यो ते तिहवारे सम्यग्दृष्टीने मानसी दुःखघणो । तत्थणजेते असण्णिभूया तेणं अप्पवेयणतरागा । तिहां पूर्वोक्त बेपक्षमांहे असंज्ञीभूत कहिये मिथ्यादृष्टी ते पोतानां कीधाकर्म पामे पश्चात्ताप मानसीपीडा थोडीवेदें तेमाटे अल्पवेदनावंतकह्या अथवा बीजोएक इमकहेछे—संज्ञी पंचेंद्रिय थका मरी नारकपणुं पाम्या ते संज्ञीभूत कहीये ते महावेदनावंत कह्या तेकिम तीव्रअशुभअध्यवसायें अनें अशुभकर्मनो बंधकीधो तेणेकरी नरकनेविषे उप ना अनें असंज्ञीभूत ते उपना तेणे पहिला असंज्ञीपणो भोगव्यो तेमाटे अल्प अशुभअध्यवसाय मथता ते रत्नप्रभाने विषे उपजे तेमाटे असंज्ञीनो अ

देवा त्यस्तामुन्नाध्यवसायाभावा दुःखप्रभावा मनतितीव्रवेदननरकेषू त्पाद्य दल्पवेदना, अथवा। सञ्ज्ञीभूता पर्याप्तकीभूता असञ्ज्ञिनरत्वपर्याप्तका सोच क्रमेण महावेदना इतरत्र नवन्तीति प्रतीयतएवेति ॥ समकिरियत्ति ॥ समा तुल्याः क्रिया कर्म्मबन्धनिबन्धनभूता आरम्भिक्यादिका येषान्ते समक्रियाः ॥ आरम्भियत्ति ॥ आरम्भः पृथिव्याद्युपमर्द्दः स प्रयोजन कारण यस्याः सा आरम्भिकी ॥ पारिग्गहियत्ति ॥ परिग्रहोधर्मोपकरणवर्ज्जवस्तु स्वीकारो धर्मोपकरणमूर्च्छाच, स प्रयोजनं यस्याः सा पारिग्रहिकी ॥ मायावत्तियत्ति ॥ माया अनार्ज्जवं सुपलक्षणत्वात् क्रोधादिरपिच सा प्रत्ययः

अप्पवेयणतरागा सेतेणठेणं गोयमा । णेरइयाणं भंते सव्वेसमकिरिया गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंते गोयमा णेरइयातिविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मद्दिठीय मिच्छद्दिठीय सम्मामिच्छद्दिठीय तत्थणजेतेसम्म द्दिठी तेसिणं चत्तारिकिरियाउ पन्नत्ताउ तंजहा आरम्भिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया

वेदावे अल्पवेदनावंत होय अथवा असन्नीभूत अपर्याप्ता तेहनें महावेदना होय अने असन्नीने अपर्याप्ता तेहने अल्पवेदनाहोय ते तेणेअर्थे हेगोतम ! इम कहूं नारकी समस्त सरीषा वेदनावंतनथी । सेतेणठ्ठेणं गोयमा । वली गौतम पूछेछे—नारकी हेभगवन् सगला सरीषो क्रिया कर्मबंधनहेतु आरंभिकी आदिदेई होय । उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णोइणट्ठेसमठ्ठे । एअर्थ समर्थनथी सुअर्थनथी । सेकेणट्ठेणंभंते ते केणेअर्थे हेभगवन् इमकह्यु नारकी समक्रिया नथी उत्तर । गोयमा । हेगौतम । णेरइयातिविहापन्नत्ता । नारकी तीनप्रकारें कह्या । तंजहा सम्मद्दिठीय । तेकहेछे—सम्यग्दृष्टी समकिती चौथे गुणठाणे वर्त्ते छे । मिच्छद्दिठीय । मिथ्यादृष्टी पहिले गुणठाणे छे । सम्मामिच्छद्दिठीय । सम्यक्मिथ्यादृष्टी मिश्रभावे वर्त्ते । तत्थणंजेतेसम्मद्दिठी । तेपूर्वोक्त तीनमध्यें जेनारकी सम्यग्दृष्टीछे समकितीछे । तेसिणंचत्तारिकिरियाओ पन्नत्ताओ तंजहा आरंभिया । तेहने तेनारकीने आरंभिया कर्मबंधनहेतु कह्या तेकहेछे—पृथिव्यादिकने उपद्रव तेहीज कारणछे जेहनो तेआरंभिकी । पारिग्गहिया । परिग्रह ते धर्मोपकरणवर्जित वस्तुनो धर्मोपकरणनो अथवा धर्मोपकरणनेविषें मूर्च्छा ते पारिग्रहिकी क्रिया । मायावत्तिया । अनार्जवपणा उपलक्षणथी क्रोधादिकपणि तेहीज प्रत्ययकहीये कारणछे जेहने तेमायाप्र

कारंभ यस्याः सामायामत्यया ॥ अप्रत्याख्यानक्रियेति ॥ अप्रत्याख्यानेन निवृत्त्यभावेन क्रियाकर्मबन्धादिकारणं अप्रत्याख्यानक्रियेति पञ्चक्रियाः
कुर्वन्तीति ॥ क्रियन्ते कर्मकारणभूतयोगाः तन्तजयन्तीत्यर्थः ॥ मिथ्यादर्शनप्रत्ययेति ॥ मिथ्यादर्शन प्रत्ययो हेतु यस्याः सा मिथ्यादर्शनप्रत्यया ननु
मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगाः कर्मबन्धहेतव इति प्रसिद्धिः, किन्तु आरम्भादयस्ते भिहिता इति कथमविरोधः? उच्यते आरम्भपरिग्रहशब्दाभ्या
योगपरिग्रहो योगानां तद्रूपत्वा च्छेषपदैस्तु शेषबन्धहेतुपरिग्रहः प्रतीयतएवेति, तत्र सम्यग्दृष्टीना यतस्तएव मिथ्यात्वाभावात् शेषाचतु पञ्चा
वि सम्यग्मिथ्यात्वस्य मिथ्यात्वेन सह विवक्षितत्वादिति ॥ सप्तसमाउपाइस्यादि ॥ प्रश्नस्य निर्वचनसूत्रं भावनाक्रियते निबद्धरूपवर्णसहस्र

तत्थणजेतेमिच्छद्दिठी तेसिणपचकिरियाउंकज्जंति तजहा आरंभिया जाव मिच्छादसणवत्तिया एवसम्मामि
च्छद्दिठीणपि सेतेणठेण गोयमा । णेरइयाणंतेसव्वेसमाउया सव्वेसमोववन्नगा गोयमा णोइणठेसमठे सेके

सविको क्रिया करोछे । पञ्चक्खाणक्रिया । पञ्चक्खाण निवृत्तिने अभाव कर्मबन्धादिकारण अप्रत्याख्यानकीक्रिया ४ । तत्र जेते मिच्छद्दिठी
तिहां पूर्वोक्त तेम पञ्चमाहि जेमिथ्यात्वीछे । तेहिपञ्चकिरियाकरेछेति तंजहा आरंभिया जावमिच्छादसणवत्तिया । तेहने पांचक्रियाकाने तेयकेवे
पारंभकीक्रिया इत्यादिक आरंभो पण पूर्वलीपरे करवा यावत् पांचमे मिथ्यादर्शन कारणछे जेहनो ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी कहिये ५ । एवं सम्मामि
च्छद्दिठीनवि । इम सम्यग्दृष्टीनेपणि पांच इहां मिश्रदृष्टीने मिथ्यात्वेकरीने क्रिया थोडीछे । सेतेणठेणगोयमा । तेमाटे हेगोतम नारकी सगला समकि
याकरमहो । वली गोतमपूछेछे—णेरइयाणंतेसव्वेसमाउया । नारकी हेभगवन् । सगला बराबर आउखावतछे । सव्वेसमोववन्नगा । सगला सरीखा आप
मांहे एकेवारे उपनाछे भगवन्त कहेछे—गोयमा । हेगोतम । आरम्भ समहे । एणम समयनही युक्तनही । सेकेणठेणंभंतेएवंवुच्चइ । ते स्यामाटे हेभगवन्
समकाले नारकी सगला समाउया समोववन्नगानही उत्तर । गोयमा । हेगोतम । णेरइयाचउव्विहापन्नत्तातंजहा । नारकी चारप्रकारे कह्या तेकहेछे—
तदेवइराणमसमाउयाससमाववन्नगा । केतलाएक नारकी सरीखा आउखावे जिम केजोर दगम इस्तवपने आउखेछे पनेउपनापणि केन्न जोग पछेकने च

प्रमाणायुषो युगपदुत्पन्ना इतिप्रथमभङ्गः, तेष्वेव दशवर्षसहस्रस्थितिषु नारकेषु एके प्रथममुत्पन्ना अपरेतु पश्चा दिति द्वितीयः, अन्ये विषमा युभियद् केचित् दशवर्षसहस्रस्थितिषु, केचित्तु पञ्चदशवर्षसहस्रस्थितिषु त्वपरे पुनर्युगप दितितृतीयः, केचिद् दशसागरोपमस्थितयः, कश्चित्तु दशवर्ष सहस्रस्थितय, इत्येवं विषमायुषो विषममेव चोत्पन्ना इतिचतुर्थः, इह संग्रहगाथा-आहारांसु ३ समा कम्मेवण्णलेसाए । वेयणकिरि याए आउयउववत्तिचउभंगी ॥ १ ॥ असुरकुमाराणं भंते । इत्यादिना असुरकुमारप्रकरण माहारादिपदनवकोपेत सूचितं, तच नारकप्रकरणवन्नेयं, एतदेवाह ॥ नवरमित्यादि ॥ तत्र नारकसूत्रे नारकसूत्रसमानेपि भावनाविशेषेण लिख्यते, असुरकुमाराणां महाशरीरत्वं भवधारणीयशरी

णठेणन्नतेएवयुच्चइ गोयमा णेरइयाचउव्विहा पण्णत्ता तंजहा अत्थेगइयासमाउयासमोववण्णगा अत्थेगइया समाउयाविसमोववण्णगा अत्थेगइयाविसमाउयासमोववण्णगा अत्थेगइयाविसमाउयाविसमोववण्णगा सेतेणठेण गोयमा । असुरकुमाराणन्नतेसव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा जहाणेरइयातहाभाणियव्वा णवरं कम्म

पनाके ते समाउया समाववन्नगा कहीये एकहिवाभांगा १ । अथवा केइ समाउया विसमाववन्नगा । कइएक नारकीना जीव सरीखे आउखेहे जिम केटलाएक दशसहस्रवर्षने आउखेहे विषम उपनाछे एकपहिलेसमये उपना बीजा बीजेसमये अथवा समयांतरे उपनी एबीजाभांगा २ । अथवाकेइ विसमाउया समाववन्नगा । केतलाएक नारकीनाजीव विषम आउखेहे जिम एकजीव दशसहस्रवर्षने आउखेहे बीजो इग्यारसहस्रवर्ष आउखेहे प ने एके समये उपनाछे एत्रीजाभांगो ३ । अथवाकेइ विसमाउया विसमाववन्नगा । केतलाएक नारकीना जीव विषम आयुखे जिम एकादशसहस्रव र्षने आयु एने एकसागरोपमने आयुखे उपनापणि विषमछे एकपहिले समये उपना बीजो समयांतरे उपनो एचोथोभांगो ४ । सेतेणट्ठेण गोयमा । ते तेणेअर्थे हेगोतम । नारकी सगला समाउया समाववन्नगा नहीं ॥ हिवे गोतम असुरकुमरनो असुरकुमारनो प्रश्न करेछे-असुरकुमाराणं भंते सव्वेसमा हारा । असुरकुमार हेभगवन् ! सगला सरीखा आहारवंतछे । सव्वेसमसरीरा । सगला सरीखे शरीरेछे इत्यादि जिम असुरकुमार प्रकरणेपिपि

रापचया जघन्यतोऽङ्गुलासङ्ख्येयभागमात्रत्वं महाशरीरत्वन्तु सर्वतः सहस्रप्रमाणत्व मुत्तरवैक्रियापेक्षया स्वल्पशरीरत्व जघन्यतोऽङ्गुलसङ्ख्येयभाग मात्रत्व, महाशरीरत्वं तु सर्वतो योजनलक्षमानत्वमिति तत्रैते महाशरीरा बहुतरान् पुद्गला नाहारयन्ति मनोभक्षणलक्षणाहारापेक्षया देवा नां शुभोत्साहप्रचानव प्रमाणापेक्षयाच शास्त्रेभिर्दृष्टो वस्तुना विपरीतत ततो ऽल्पशरीरपाल्पाहारपुद्गलापेक्षया बहुतरो स्ते ता नाहारन्तीत्या दिभाव्यत् अभीक्ष्ण माहारयन्ति अभीक्ष्ण मुच्छ्वसन्ति च यत्र ये चतुर्थादि रूप योहारयन्ति स्तोकसप्तकादे श्रोपरि उच्छ्वसन्ति तानाश्रित्या भीक्ष्ण मित्युच्यते उत्कर्षतो ये सातिरेकवर्षसहस्रस्यो परिष्टाहारयन्ति, सातिरेकपक्षस्योपर्युच्छ्वसन्ति ता नधीकृत्यै तेषामल्पकालीनाहारोच्छ्वासत्वेन पुनः पुन राहारयन्तीत्यादि व्यपदेशविषयत्वादिति तथा अल्पशरीरा अल्पतरा न्पुद्गला नाहारय न्त्युच्छ्वसन्तिचा अल्पशरीरत्वादेव अस्पुन स्ते या कादाचित्कस्य माहारोच्छ्वासयो स्तथा शरीराहारोच्छ्वासान्तरालापेक्षया बहुलमान्तरालत्वा तत्र अन्तराले तेना हारादि कुर्वन्ति, तद

यसुरलेस्सात्थपरिग्गहोयद्वात पुव्वोववन्नगा महाकम्मतरा अविसुद्धवन्नतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगाप सत्था सेसतहेव एवजावथणियकुमाराणं पुढविकाइयाणं आतेसद्देसमवेदणा हताासमवेदणा सेकेणट्ठेणजतेसद्दे

नवपद वक्तव्या। असुरकुमारा तथा भाणिवव्या। किम तेनारकीना भकरवने विषे कहा पणि एतलाविशेष असुरकुमारने शरीरनो जघन्यथी ते भव धारणीय शरीर अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो भाग मात्र अने महाशरीरपणु उत्कृष्टथी सातहाथ प्रमाण उत्तरवैक्रियशरीरनी अपेक्षायें जघन्यपणु अ ल्पथी अंगुलना असंख्यातमोभाग महाशरीरपणु उत्कृष्टथी लाखयोजन मात्र तिहां जे महाशरीरवंत ते घणापुद्गलने आहारे मनोभक्षण आहारनी अपेक्षाये। अभिक्ष्ण आहारेति। इहां चतुर्थादिकें आहारे। अभिक्ष्ण उससति। ते सातस्तोक आदिकें आहारे उत्कृष्टथी जे साधिकवर्षसह सें आहारे तेसाधिकपखें उसासले इत्यादिक नारकीनी अपेक्षायें असुरकुमारने विपरीतकहवा तथापि नारकी जेपूर्वें उपना तेहपापकर्म सहतरमाच अमतरवेनी कह्या अने असुरकुमार जेपूर्वें उपना ते। महाकम्मतरा अविसुद्धवन्नतरा अविसुद्धलेसतरा पच्छोववन्नगापसत्था। महाकर्मी वक्तव्यं अ

म्यत्र पुन गौत्येव वियक्तभावितिति महाशरीराणां मव्याहारोच्छ्वासयो रन्तरालमस्ति किंतु सद्भव मित्यादियपायादेवा मौल्व मिरयुक्त' सिद्धम्व महाशरीराणां तेषा माहारोच्छ्वासयोरल्पान्तरत्वं मल्पशरीराणान्तु महान्तरत्वं यथा—सौधर्मदेवानां सप्तहस्तमानतया महाशरीराणां तयोरन्तरं मगोव पपमत्स्पप पपहयम्य मनुत्तरसुराणाञ्च हस्तमात्रतया ल्पशरीराणां प्रयस्त्रिंश द्वर्षसहस्राणि प्रयस्त्रिंशदेवप पक्षाइति, गृपाञ्च महा शरीराणां ममीक्ष्णाहारोच्छ्वासाभिधानेमा स्परिस्थितिकस्य मवसीयते, इतरेषान्तु विपर्ययो वैमानिकवदेयति, मथवा ; लोमाहारापेक्षया मवीक्ष्ण ममुसमय माहारयन्ति, महाशरीराः पयाप्तकावस्थाया उच्छ्वासस्तु पयोत्तमानेमापि भवम्परिपूर्णमवापत्तया पुनः पुन रित्युच्यते, मपर्याप्तकाव स्थायां स्वल्पशरीरा लोमाहारतो माहारय न्त्योजमाहारतश्च इत्यादिसि कदाचि त माहारयन्ती त्युच्यते, उच्छ्वासापर्याप्तकावस्थायाञ्च नो च्छ्वस न्त्यन्यदातू च्छ्वसन्तीत्यत उच्यते माहत्योच्छ्वसन्तीति ॥ कम्मवन्नलेसाउपरियचोपप्रस्छेति ॥ कर्म्मादीनि नारकापेक्षयाविपर्ययेणव्याख्यानि तथाहि नारका य पूर्वोत्पन्ना स्तेऽल्पकर्म्माणः शुभतरवर्णा शुभतरलेश्या उक्ता असुरास्तु य पूर्वोत्पन्ना स्ते महाकर्म्माणो ऽशुद्धवर्णा अशुभतरलेश्याश्चेति, कथं येहि पूर्वोत्पन्ना असुरा स्ते ऽतिमदपदर्पाध्मातचित्ततया नारकान् मनेकप्रकारया यातनया यातयन्त प्रभूत मशुभ कर्म्मसञ्चिन्वन्तीत्यतो विपीयन्ते त महाकर्म्माणः मथवा ये बहुायुष स्ते तिर्यगादिप्रायोग्यञ्चम्मप्रकृतिबन्धमा म्महाकर्म्माण स्तथा मशुद्धवर्णा अशुभलेश्याश्च ते पूर्वो त्पन्नानां हि जीवस्या शुभकर्म्मवशः शुभा वर्णा स्तद्याच प्रवतीति, पश्चादुत्पन्ना स्त्वल्पायुषो ऽल्पकर्म्माणो शुभतरकर्म्मणा मबन्धात् शुभकर्म्मणाम

सभन्तरमेवायतन तेहिम च पूर्वे उपना त वर्णा वडपना उपको वर्णा पशुभकम संचिके तेमाटे महाकर्मी अथवा तिर्यंच प्रमुखना आयु बाधा तेमना बमबत मधा पशुभकम पशुभलेश्या ते पहिला उपना गभकम चीकणा माटे पछेउपना तेव तिर्गंचा'दकनो आयु बाधीनवो अथवा शुभकर्मबंधी अथवा मबी तेमाटे वर्णादिकशुभवेदना सूत्रनेविषे नारकीनो परे असुरकुमारछे तथापि भावनानेविषे विशेषछे ते कहछे—जितेसमोभूत ते महावेदनावंतछे

त्तीव्रत्वात् शुभयवोदयः स्युरिति वेदनासूत्रञ्च यद्यपि नारकाणामिव असुरकुमाराणामपि तथापि तद्भावनायां विशेषः असुराय ये सम्यग्दृष्टयः स्त महावेदना चारित्रविराधनाजन्यचित्तसन्तापात् अथवा सम्यग्दृष्टयः सञ्ज्ञिपूर्वभवाः पर्याप्ताश्च ते शुभवेदना माश्रित्य महावेदना, इतरे त्वल्पवेदनाइति, एवं नागकुमारादयो व्यौचित्येन नवदशकाद्याख्या ॥ पुढविकाइयाणं आहारकम्मवण्णलेस्सा जहा नेरइयाणंति ॥ यस्यामपि सूत्राणि नारकसूत्राणीव पृथ्वीकायिकाभिलापेनाध्येयानि इत्यर्थः केवलमाहारसूत्रे नानात्वं पृथिवीकायिकानां अगुलासङ्ख्येयभागमात्रशरीरत्वे ऽप्यल्पशरीरत्व मितरथैव भागमवधना इवसय ॥ पुढविकाइय पुढविकाइयस्स अणाहारपयं पज्जत्तापज्जत्तेहि ॥ तेषामहाशरीरा लोमाहारतो बहुतरान् पुद्गला नाहारयन्ती स्पुभुञ्जन्ति वा मीरयमहाशरीरत्वादेव अल्पशरीरा अल्पाहारोच्छ्वासत्व अल्पशरीरत्वादेव, कादाचित्कत्वञ्च तयोः पर्याप्तकेतरावस्थापेक्ष मवसेयं तथा कर्मादिसूत्रेषु पूर्वपश्चादुत्पन्नानां पृथिवीकायिकानां कर्मवर्णलेश्याविभागो नारकैः समएव वेदनाभि

जे पूर्व भवनेविषे चारित्रविराधनाथी उपनो चित्तसंतापथी अथवा पूर्वभवे सम्योदृष्टा अथवा पर्याप्ता ते शुभवेदनाभाश्री महावेदनावंतकह्या अने असञ्जीमें अल्पसाता वेदनीहवे तेमाटें अल्पवेदनावंतकह्या। सेसंतहेव। बाकता सर्व तिमज कहवो। एवआवत्थणियकुमाराण। इमनागकुमार पाटिदेइ सम्पूर्णितकुमारपर्यंत कहवा। पढविकाइयाण आहारकम्मवण्णलेस्सा जहा नेरइयाणं। पृथिवीकाइया जीवने आहार कर्म वर्ण लेश्या एपारेंई सूत्र नारकसूत्रऔपरे कहवा परं आहारसूत्रनेविषे एतली भावनाकरवी पृथिवीकाइयाने अंगुलनो असंख्यातमो भाग शरीरछे तेमाटि अल्पशरीर महा रोरपणं भावमवचनथी प्रमाणकरवा वेदना क्रिया सूत्रनेविषे नानात्व देखाडेछे। पुढवीकाइयाणभंते सव्वे समवेयणा। पृथिवीकाय हेभगवन्! सर्वे सरीखी वेदनावाला इतिप्रश्न उत्तर भगवंत कहेछे—हंतासमवेयणा। हां गौतम पृथिवीकाया सर्वने सरीखी वेदनाछे। सेकेणट्ठे भंते समवेयणा। ते स्यें कारणे हेभगवन्! पृथिवीकायिक सर्वनी सरीखी वेदना भोगवे भगवंत उत्तर कहेछे। गोयमा। हेगौतम। पुढवीकाइया

यथोक्तं नानात्व मतव्वाह ॥ पुढविकाइयाणभंते । सव्वेसमवेयणेत्यादि ॥ असण्णित्ति ॥ मिथ्यादृष्टयो ऽमनस्कावा , ॥ असण्णिभूयत्ति ॥ असञ्ज्ञीभूतां
अमनस्कना या जायते तामित्यर्थः एतदेवाह्यनत्ति ॥ अविदायत्ति ॥ अनिर्धारयन्ता वेदना वेदयन्ति वेदना मनुभवन्तोपि न पूर्वोपात्ताशुभकर्म
परिणति रियमिति मिथ्यादृष्टित्वा दवगच्छन्ति विमनस्कत्वाद्वा मत्तमूर्च्छितादिवदितिभावः ॥ माईमिच्छदिट्ठित्ति ॥ मायावन्तो हि तेषु मायं
या त्पद्यन्ते यदाह—उम्मग्गदेसओम ग्गनासओगूढहियय माइल्लो सढसीलोयससल्लो तिरियाउंबंधईजीवोत्ति ॥ १ ॥ तत सो मायिन उच्यन्ते , अथवा
मायेह अनन्तानुबन्धिकषायोपलक्षण मतो ऽनन्तानुबन्धिकषायोदयवन्तो ऽतएव मिथ्यादृष्टयो मिथ्यात्वोदयवन्तयइति ॥ ताणन्तियइयाठत्ति ॥ तेषा

समवेयणा गोयमा पुढविकाइयासव्वेअसण्णिअसण्णिभूया अणिदाए वेदणवेदेंति सेतेणठेणं पुढविकाइयाणं सव्वेस
मकिरिया हंता समकिरिया सेकेणठेणंभंतेपुढविकाइया गोयमा पुढविकाइयासव्वेमाईमिच्छदिट्ठी ताणणेय
तियाणपंचकिरियाओकज्जंति तंजहा आरम्भियाजावमिच्छादंसणवत्तिया सेतेणठेणंपुढविकाइयासमाउयासमो

सर्व्वे असञ्ज्ञीअसञ्ज्ञीभूत अविदायवेदनावेदेंति सेतेणठेण । सघलाजीव असञ्ज्ञी असञ्ज्ञीभूत मिथ्यात्वीने मनरहित असञ्ज्ञीमाटे वेदनावेदीय तेहनो वेदे
तेहोजभावे निद्धारविना वेदना भोगवे पणिपूर्व्वउपार्या अशुभकर्म तेहनोएपरिणाम छे एहवूं जाणें मिथ्यादृष्टिपणोथी मनरहितपणाथी ते तेणे
अर्थे इसकारणे हो गौतम पूछेछे—श्रीमहावीरस्वामी प्रते । पृथ्वीकायाभंते सर्व्वे समकिरिया हंतासमकिरिया । पृथिवीकायिकजीव हेभगवन् सघ
ला समकिरियावंतछे हांगौतम पृथिवीकायिक सघला सरीखीकिरियावंतछे गौतमकहेछे । सेकेणठेणंभंते पुढविकाइया । ते किसेअर्थे हेभगवन् पृथिवीका
यिक सर्व्वेसमकिरियाछे उत्तर । गोयमा । हेगौतम । पृथ्वीकाया सर्व्वे माईमिच्छदिट्ठी । पृथिवीकायिक सघला मायावंतजीव मायें उपजे मिथ्यादृष्टीछे य
था उम्मग्गदेसणाय मग्गनासणामूढहियय माइल्ली सढसीलायससल्लो तिरियाउंबंधणजीवा ॥ १ ॥ ताणंणियतियाण पंचकिरियाओकज्जंति तंजहा । ते पृथि
वीकायिकने निश्चे निरंतर पंचक्रियालागे ते कहेछे—आरंभियाजावमिच्छादिट्ठी । आरंभकीक्रिया १ मातंगमें परिग्गहकी २ मायाप्रत्ययिकी ३ अप्र

पृथिवीकायिकाना मैंगतिक्या मियता नतु प्रिप्रमृतया पर्म्मैवेत्यय ॥ सेतेयहेवंसमाकिरियत्ति ॥ निगमनं ॥ आवचउरिंदियत्ति ॥ इह महाशरीरस्य मितरस्य स्वस्वायमात्मानुसारेया यवयं आहारय द्वीन्द्रियादीना मसपलपकोपीति ॥ पचिंदियतिरिक्खजोणियाजहाणेरइयत्ति ॥ प्रतीत नवर मिहमहाशरीरा मतीन्ह माहारयन्ति उच्छ्वसन्तिचेति यदुच्यते तत्सङ्घ्यासवर्षायुषो पेक्ष्येत्यवसेय तथैव दर्शना वा सङ्घातवर्षायुष स्तेषा प्रचे पाहारस्य पष्ठस्या परि प्रतिपादितत्वात् मल्पशरीराणां त्वाहारोच्छ्वासयो कादाचित्कत्वं वचनप्रामाण्यादिति, लोमाहारापेक्षयातु सर्वेषा

थयसागा जहाणेरइयातहाजाणियहा जहापुढविकाइयातहा जाव चउरिंदिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहाणेरइया णाणत्तंकिरियासु। पचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते सव्वेसमकिरिया गोयमा णोइणठेसमठे सेकेणठेण भंते गोयमा पचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पणत्ता तजहा सम्मद्दिठी मिच्छाद्दिठी सम्मामिच्छा

त्वाप्यानको ॥ मिथ्यादृग्नप्रमयिको ए पचइमो। सेतेणठेण पुढवी काइया समायवा समाययवगा पहावेरात्या तहाभावियत्वा। ते तेणेमर्थे इमवस्तु हसो योतम पूर्वेक—पथिवीकायिक सघमरीर्षे भाव्यथे छरोपाउपमाहे जिममारकीकरा तिमपृथिवीकायिकनीयोपपचि मवया तिमशेष इहां प वि चउभगो मावहो। जहापुढवीकाइया तहाजावचउरिंदिया। जिम पथिवीकायिक वाहा तिम बायतयुष्पे पप्पावतेजबाव माठपाय वनस्पती जाव बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्रीसर्वे इमजवदवा इहां महायरीरपर्णु पनें पन्पशरीरपर्णु माता मातानो मवगाहनाने मनुसारे कहवू माहार बेइन्द्रीने पा न्द्रेइने पइन प्रदेप ममनपविवुचे। पचिंद्रितिरिक्खजोणिया जहाणेरइया णाणत्तं किरियासु। पचेंद्री तिर्यंचयोनिक जीव जिम नारकीकहा ति म जाणवा इहां मोटाशरीरना धणो पभिक्ख माहारेंति इत्यादि जे कह्योये ते सख्यात वर्षायुषनी पपेक्षायें जाणवो विशेष ते क्रियाने विषे जाणवा तेहाज देखाडेले। पचिंदियतिरिक्खजोणियाणभंते सव्वेसमकिरिया। पचेंद्री तिर्यंचयोनिक हेभगवन्। भगवा समक्रियावंत सरीखी क्रिया कहता क राय जेहना भगवतकहेछे—णोइणठे। हेगौतम। णाइणठेसमठे। पपर्थ समर्थ नही युक्त नथी। सकेणठेण भंते। ते स्याथ? हेभगवन् तिर्यंचयोनिया

मप्यजीरल मिति पटल मव मस्यक्षरीरापाग्तु य स्कादाचित्कत्व व वपपासकत्वे सोमाहारोच्छ्वासयो रजवनेम पर्यासकत्वेव तद्धायेना वसेयमि ति तथा कम्मसूत्रे यत्पूर्वोत्पन्नाना मस्यकामत्व मितरपाम्सु महाकमत्वं, तदायुष्कादि तद्ववयेधकर्मापेक्षया वसेयं, तथा वर्णलेश्यासूत्रयो य त्पूर्वोत्पन्नाना ग्रामयणाद्युक्त तत्ताऽस्यात् पश्चादुत्पन्नाना मशुभवर्णादि यात्वादवसेय, लोके तथैव दर्शनादिति, तथा ॥ सजयासजयति ॥ देश विरताः स्थूला स्प्राणातिपाताद निवृत्तत्वा दितरस्मा दनिवृत्तत्वादेति ॥ मणुस्साजहानेरइयति ॥ तथा वाच्या इतिगम्य, नानात्य भेदः पुनरय

दिठी तत्यणजेतेसम्मदिठी तेदुविहा पणत्ता तजहा असजयाय सजयासजयाय तत्यणजेतेसजयासजया तेसिणतिणिकिरियाउकज्जति तजहा आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया असजयाणचत्तारि मिच्छादिठी णपच सम्मामिच्छदिठीणपच मणुस्साजहाणेरइया णाणत्तजेमहासरीरातेआहच्चआहारेति १ जेअप्पसरीरा

मत ममविघनवो । उत्तर। गायमा। जगौतम पचिदियतिरिक्खजाविमा तिविहा पणत्ता तत्रका। पचेंद्री तिर्यंचयोनिकजीव तीनभेदे कह्या ते क हेछे – सम्यग्दृष्टी । सम्यग्दृष्टी चौथे पांचमे गुणठाणे रह्याते । मिच्छादिट्ठी । मिथ्यादृष्टी पहिलेठाणे रह्याते । सम्मामिच्छदिट्ठी । मिश्रदृष्टी त्रीजेगुणठाणे हुवे । तत्थणजेते सम्मदिट्ठी । तिहां पूर्वोक्त तीनमध्यमांहे जे सम्यग्दृष्टी समकितीछे। ते दुविहा पणत्ता तंजहा। तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—अस जयाय। पाप पमजतो विरतिरहित चोथेगुणठाणे रह्या । संजया सजयाय। देशविरती स्थूल प्राणातिपातथकी निवर्त्याछे तेमाटे संयती सूक्ष्म थकी निवर्त्यानथी तेमाटे असंयती कह्या। तत्थणजेतेसजयासजया। तिहां पूर्वोक्त बेमध्यमांहे जिके संयतासंयती देशविरतीछे। तेसिणंतिणिकि रियाओ कज्जति तंजहा। तेहाने तीनक्रिया उपजे ते कहेछे—आरंभिया। आरंभथकी क्रिया। परिग्गहिया। परिग्रहथकीक्रिया २। मायावत्तिया। मा यामध्यथकीक्रिया ३। असंजयाणचत्तारि। असंयती चौथे गुणठाणे तेहने तीन पहिली चौथी अप्रत्याख्यानथकी एवंचारिक्रियालागे। मिच्छदिट्ठीणप च। मिथ्यादृष्टीने चारि पहिली पंचमी मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी एवं ५ लागे। सम्मामिच्छदिट्ठीणपंच। मिश्रदृष्टी त्रीजेगुणठाणे रह्या जीवने मिथ्या

तत्र ॥ मनुष्याणां सूत्रे । सर्वसमाहारका इत्यादि ॥ प्रश्न ॥ गोयमा णो इणट्ठे समट्ठे ॥ उत्तर ॥ जाव दुविहा मणुस्सा पण्णत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय तत्थ जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारंति एवं परिणामंति ऊससंति नीससंति ॥ इह स्थाने नारकसूत्रे अभिक्खणमाहारंती त्यधीतं किंतु आहच्चेत्यधीयते महाशरीराणि देवकुर्वादिमिथुनका खलु कदाचिदेवा हारयन्ति, कावलिकाहारेण, षष्ठभक्तस्याहारोक्तिवचनात् अल्पशरीरा स्वजीवक अल्पस्य बालाना तथैव दर्शनात् सम्मूर्छिममनुष्याणां अल्पशरीराणां मनवरत माहारसम्भवाच्च यदेव पूर्वोक्त

तेणंप्पतराएपोग्गलेआहारेंति ४ अभिक्खणंआहारेंति सेसंजहाणेरइयाणं जाववेदणा। मणुस्साणंभंतेसव्वेस

तोनीपरे पणक्रियासार्थे। मणुष्याअहारेण्वा आपन जेमहासरीरातआहार आहारेंति ४। मनुष्यने जिम नारकीने कह्या तिमजाणवो एतलोविशेष छे ते कहेछे— मणुष्यामतेसव्वसमाहारगा इत्यादि प्रश्न। गोयमा णाइणट्ठे समट्ठे इत्यादि। उत्तर। जाव दुविहा मणुस्सा पण्णत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय तत्थणंजेते महासरीरा बहुतराए पोग्गले आहारेंति एवं परिणामेंति ऊससंति नीससंति। इहां आगळे नारक सूत्रनेविषे अभिक्खण आहारेंति इसाकह्या पणे इहां आहच इसो कह्यो तेमहाशरीरवंत देवकुरु युगलयेन आदि युगलियाकह्या ते किवारे ते आहारेछे कावलिकाहारेण अट्ठम भत्तस्य आहारोक्ति वचनात् । जेअप्पसरीरातेअप्पतराए पोग्गले आहारेंति ४ अभिक्खणंआहारेंति। जे अल्पशरीरना धणी ते अल्पतर पुद्गलआहारे वारंवार आहारे एअल्पतरनें वारंवार ते बाळकनी अपेक्षायें ते तेहवा बाळकनेविषे पणिदीसेछे समूर्छिम मनुष्यने अल्पशरीरीने निरंतर आहारनो सं भवछे जेहवो पूर्वे कह्यो तेहने युगलादिकाय ते योवनपणाथी आहवा अथवा समूर्छिमनी अपेक्षायें जाणवो। सेसंजहाणेरइयाणं जाववेदणा। आगतोसव जिम नारकीने विषे कह्यु तिमकहवा यावत् वेदनासूत्र तांसुधी। मणुस्साणंभंते सव्वेसमकिरिया। वळी गौतम पूछेछे मनुष्य हे भगवन् सगळा सरीखा क्रियावंतछे। उत्तर। गोयमा। णोइणट्ठे समट्ठे। एअर्थ समर्थ नथी। सेकेणट्ठेणंभंते। ते किणेहेतुयें हे भगवन् इमकह्यो उत्तर। गोयमा। हेगोतम। मणुस्सातिविहा पण्णत्ता तंजहा। मनुष्यना त्रणभेद कह्या ते कहेछे—सम्मद्दिट्ठी। समकितदृष्टी समकिती १। मिच्छदिट्ठी। मिथ्या

स्यात् मनुष्याणां सातातिचारसम्मूर्छिमापेक्षयायेति ॥ सरागसंयति ॥ क्षीणानुपशान्तकषाया ॥ वीयरागसंयति ॥ उपशान्तकषायाः क्षीण

मकिरिया गोयमा णोइणट्ठेसमट्ठे सेकेणट्ठेणन्नते गोयमा मणुस्सातिविहा पणत्ता तंजहा सम्मद्दिठी मिच्छ
द्दिठी सम्मामिच्छादिठी तत्थणजेसम्मद्दिठी तेतिविहा पणत्ता तंजहा संजयाय असंजयाय संजयासंज
याय तत्थणंजेसंजयातेदुविहा पणत्ता तंजहा सरागसंजयाय वीयरागसंजयाय तत्थणजेतेवीयरागसंजया
तेणंअकिरिया तत्थणजेतेसरागसंजया तेदुविहा पणत्ता तंजहा पमत्तसंजयाय अपमत्तसंजयाय तत्थणजेते
अपमत्तसंजया तेसिणएगा मायावत्तियाकिरियाकज्जइ तत्थणजेतेपमत्तसंजया तेसिणदोकिरियाकज्जइ तंजहा

दृष्टिमिथ्यात्वी २ । सम्यामिथ्यादृष्टी । सम्यग्मिथ्यादृष्टी मिश्रदृष्टी ३ । तत्थण जेत सम्यग्दृष्टी । तिहां पूर्वोक्त तीनपदमाहे जे ते समकितीछै ते । तिविहा पण्णत्ता तंजहा । तेहना तीनभेद कह्या ते कहेछे—संजयाय । संयतो सर्वविरती प्रमत्तादि अयोगीगुणठाणें वर्त्ते ते । असंजयाय । असंयती केवल सम्यग्दृष्टी ते अनुपयुक्तत्वें ग्रा । संजयासंजयाय । संयतासंयतो तेयावत्देशविरती पांचमे गुणठाणें वर्त्ते श्रावकवेषधारी ते । तत्थणजेतेसंजया ते दुविहा प ण्णत्ता तं जहा । तिहां पूर्वोक्त तीन पदमाहि जे संयती सर्वविरती प्रमत्तादि गुणठाणें वर्त्ते तेहना अभेद कह्या ते कहेछे—सरागसंजयाय । अद्यनष्टया अक्षमा उपशमाभावो अभाव ते सरागसंयमी कहिये । वीतरागसंजयाय । जेणें कषाय उपशमाव्या अथवा खपाव्या हुवे ते वीतरागसंयमी कहिये । तत्थणजेते वीतरागसंजया । तिहां पूर्वोक्त वेपदमाहे जणें कषाय उपशमाव्या तथा खपाव्या हाय ते वीतरागसंयमी । तेणंअकिरिया । तेहने वीतरागपणैकरी आरंभादिकनो अभाव तेमाटे अक्रियकछे । तत्थणजेतेसरागसंजया । तिहां पूर्वोक्त वेपदमाहे जणे कषाय उपशमाव्या तथा खपाव्या नथी ते सराग संयमी । तेदुविहापण्णत्ता तंजहा । तेहना अभेद कह्या ते कहेछे—पमत्तसंजयाय । प्रमत्तसंयती छट्ठे गुणठाणें वर्त्ते ते कहीये । अपमत्तसंजयाय । अप्रमत्त संयमी ते सातमें गुणठाणें वर्त्त तेकह्या । तत्थणजेते अपमत्तसंजया । तिहां पूर्वोक्त वेपदमाहे जे अप्रमत्तसंयती सातमेगुणठाणें वर्त्ते । तेसिणं एगा माया

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मनायाद्क्रिया ॥ [illegible] ॥ प्रमत्तसंयतामा मेकैव मायाप्रत्यया क्रिया ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मनालकषायस्यादिति ॥ पारनिपति ॥ प्रमत्तसंयतानाम्च सप प्रमत्तयोग पारम्भ इतिकृत्वा
[illegible] मायाप्रत्ययकि ॥ वाणमतरज्योतिषवैमानिका [illegible] असुरकुमाराति ॥ तत्र शरीरस्या स्वल्पमप्यस्ये स्वायगाहनानु
[illegible] असुरकुमारा ॥ [illegible] मगिनूया मशायपया [illegible] एत्येव मपोता व्यन्तराम

[illegible] मायाप्रत्ययाय तत्य गजेतेग जयामजया तेसिगद्याद्मात्र तिणिकिरियाउकज्जति अ्रसजयाण
पमारिसिरियाउरगानि मिच्छद्दिठीगपच मम्मामिच्छद्दिठीणपच वाणमतरजोइसयेमोणियाजहा असुरकु

[illegible] विजित्ते [illegible] एक मायावत्तिओ क्रिया लागे कषाय योगनिमित्ते तेमाटे । तत्यणजेते
[illegible] । [illegible] । तेमिण दो किरियाकज्जते तंजहा पारंभियाय मायावत्तियाय । तेहने बेक्रियापूर्वे सेकहेछे सव
[illegible] पारम्भो क्रियाशाय १ [illegible] मायावत्वविकोडोय २ । तत्यणजेतेसंजयासंजया । तिहां पहिला सूत्रने प
[illegible] पांचमेगुणठाणे वर्त्ते । तेमिणं पादिमाचो तिणिकिरियापोकज्जति । तेहने पहिलो तीनक्रिया लागे पार
[illegible] तथा । पचत्तयार्पचणारिविरियापोकज्जति । पर्सयतो केवल सम्यगदृष्टो चोथे गुणठाणे वर्त्ते ते
[illegible] लागे । [illegible] । मिथ्यादृष्टोने पारम्भकोपादि पांच क्रिया लागे । सम्मामिच्छद्दिठीपण जाणम
[illegible] । मिथ्यादृष्टोने चोथे गुणठाणे छे तेहनेवलि पांचक्रिया लागे वानव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक ए त्रिण पण
[illegible] पातापोतानो अवगाहनाने अनुसारे जाणवा । पवरं वेदणाए णाणत्त । एतलो
[illegible] । मायोमिच्छद्दिठीउववन्नगाय पप्पवेयणतरा । मायोपणे मिथ्यादृष्टी जयमा तेहने

पि तथैवाध्येतव्या, यतो ऽसुरादिषु व्यन्तरान्तेषु देवेष्वसञ्ज्ञिन उत्पद्यन्ते, यतो ऽल्पेयो देशाश्च वदयति ॥ असञ्ज्ञिन असंख्येयं भवनवासीसु उक्तोसेणं यावमंतरेसुत्ति ॥ तेषा सुकुमारमकरणोक्तयुक्ते रत्नप्रभा नयन्तीत्यवसेय यत्तु प्रागुक्तं सञ्ज्ञिनः सम्यग्दृष्टयो ऽसञ्ज्ञिन स्त्वितरदिति, न हुउ व्याख्यानमाश्रयेवति ज्योतिष्कवैमानिकेषु त्वसञ्ज्ञिनोमोत्पद्यन्ते, ऽतोयेदनापदसवधीयते ॥ दुविहाजोइसियामायिमिच्छद्दिठीउववण्णगायेत्यादि ॥ तत्रमायिमिथ्यादृष्टयो ऽल्पवेदना इतरेच महावेदना शुभत्वतमात्यित्वेति, एतदेवन्द्योपन्नाह, भवर ॥ वेमणाएइत्यादि॥ अथ चतुर्विंशतिदण्डक मथ सइयानेरविशेषण माहारादिपदं निरूपयन् दण्डकमुक्तमाह ॥ सलसायजते। वरइया सवेसमाहारगत्ति ॥ अनेना हारशरीरोच्छ्वासकर्म्मवर्णले सम्पायदनाक्रियापयायाल्पपूर्वोक्तनवपदोपेतनारकादिचतुर्विंशतिपददण्डको लेश्यापदयिशेषितः सूचित, सइन्यच कृष्णलेश्याविविशापिता पू वोक्तनयपदोपेता मव यथासम्भव नारकादिपदाखकाः षड्दण्डकाः सूचिता सदेव मतया सहाना दण्डकाना सूत्रसङ्क्षेपार्थं यो यथा ध्येतव्य स्तां तया दर्शयन्नाह ॥ ज्ञोहियाणमित्यादि ॥ तत्रौघिकानां पूर्वोक्तामा निर्विशेषणानां मारकादीनां, तथा सलेश्यानां मधिकृतानामेव, शुक्ललेश्याना तनयमदण्डकव्याख्याना मया ग्रयाया सेवोगमः सदृशः पाठः पलेश्यः शुक्लेश्यप्र त्वेयविषविशेषणकतएव तत्रैव, औधिकदण्डकसूत्र इनयो

मारा णन्नर वेदगाएगाणत्त मायीमिच्छद्दिठीउववणगाय अप्पवेयणतरा अमायीसम्मद्दिठीउववणगाय म हावेयणतरात्ताणियव्वा । जोइसवेमाणियाय। सलेस्साण ज्ञते णेरइयासव्वेसमाहारगा ओहियाण सलेस्साण सु

पन्न दाश रेश्मा ते सातावेदनो पाओ जाणवो। ममायीसम्मद्दिठीउववणगाय महावेयणतरा भाणियव्वा। ममाईपणे सम्मदृष्टी अपना तेहने विषे ते सातावेदनीय पविचतर थाय शरतो स्थितिमाटे सम्यग्भाव माटे। जोइसवेमाणियाय। ए ज्योतिषी वैमानिकनेविषे असरकुमारवो विशेष जाणवो सलेश्यापमते येरइया सवेसमाहारगा। लेश्यासहित जे नारकोप्रमुख जीव ते सलेशी केमवन्। नारकोसमकाली एवसरीखो आहारके। योहियाण। प्रमुखमोनना पूछ गो। सलेश्याण। सेआसहितने। सक्लेश्याण। शुक्ललेश्योने। एएसिण तिण्ह एकोगमो। ए त्रिणनो एक सरखो गमो जाणवो

मूलमितिकृष्ण तथा ॥ नम्मत्वि ॥ इत्येतस्य वक्ष्यमाणपदस्येह सम्बन्धः ग्रास्य शुक्ललेश्यास्ति सएव तद्दण्डके ध्यतव्य, सतेह पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योमनुष्या वैमानिकाश्च यास्या नारकादीनां शुक्ललेश्याया अभावादिति॥ किण्हलेसनीललेस्साण वि एगोगमो ॥ चौधिकदण्डकवेत्यथ, विशेषमाह णवर॥ वेयणा इत्यादि ॥ कृष्णलेश्यादण्डके मायसङ्ग्याद्दण्डकेव वेदनासूत्रे ॥ दुविहा नेरइया पन्नत्ता सन्निभूयाय असन्निभूयायत्ति ॥ औघिकदण्डकाधीत ना ध्येतव्य असंज्ञिनः प्रथमपृथिव्या मेवोत्पादा दसन्नीखलुपढममितिवचनात् प्रथमायाञ्च कृष्णलेश्यायो रभावा तर्हि किं मध्येतव्यमित्याह ॥ मायीमिच्छदिट्ठिउववण्णगायेत्यादि ॥ तत्रमायिनो मिथ्यादृष्टयः महावेदना भवन्ति यतः प्रकर्षपर्यन्तवर्तिनीं स्थिति मशुभा तेनिर्वर्तयन्ति मक्षायाश्च तस्यां महती वेदना सम्भवतीतरेषान्तुविपरीतति तथा मनुष्यपदे क्रियासूत्रे यथा औघिकदण्डके ॥ तिविहामणुस्सा पन्नत्ता सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा सरागसंजया वीयरागसंजयाय तत्थणंजेतेसरागसंजया ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा पमत्तसंजया अपमत्तसंजयायत्ति ॥ पठितं तथापि कृष्णलेश्यादण्डकयो नाध्येतव्यं कृष्णनीललेश्ययोर्ह्यपि अपमत्तसंयतस्य निषिद्धत्वात् यदाभ्यते — पुव्वपडिवन्नओपुण अन्नयरोयउलेस्सासुति ॥ न तत् कृष्णादिद्रव्यरूपा द्रव्यलेश्या मङ्गीकृत्य नतु कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यजनितात्मपरिणामरूपा भावलेश्या मेतच्च प्रागप्युक्त मिति एतदेव दर्शयन्नाह ॥मणुस्सेत्यादि॥ तथा कापोतलेश्यादण्डकोपि नीललेश्यादण्डकवदध्येतव्यो नवरं नारकपदे वेदनासूत्रे नारका औघिक

काउलेस्साण एएसिणतिण्हएक्कोगमो कण्हलेसणीललेस्साणपिएगोगमो णवरं वेदणाए मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नगाय अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगायभाणियव्वा मणुस्साकिरियासु सरागवीतरागअपमत्तापमत्ताणभाणियव्वा

पाठकवचा । वकृष्णलेश्यावाणपि एकोगमा । कृष्णलेश्यो नीललेश्यो ए बेहना पणि एगोगमा एतले सरीखो पाठ कहवो । णवरं वेदणाए । एतलो विशेष देखाडेछे । मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नगाय । मायीपणे मिथ्यादृष्टी छपना तेहने महावेदना हुवे उत्कृष्टी स्थितिनें पामें तिवारे मोटी वेदनाने भोगवे । अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगाय भाणियव्वा अमायीपणे सम्यग्दृष्टी छपना तेहने अल्पवेदना हाय इत्यादिकहवू । मणुस्साकिरियासुसरागवीत

दण्डकवद्व वाच्या भावार्थ ॥ मरइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मिनूयाय असम्मिनूयायत्ति ॥ असञ्ज्ञिमो प्रथमपृथिव्युत्पादेन कापोतलेश्याश्च भवा इतव्याश्च ॥ काउलेसाणयात्यादि ॥ तथा तेजोलेश्यापद्मलेश्याश्च अस्यओघविशेषस्य सि त मारभ्य यथौधिको दण्डक साधा तयो दण्ड की प्रणितव्यौ, तदमिता वैव नारकाणां विकलेन्द्रियतेजोवायूनां चाद्या स्तिस्रएव, भवनपतिपृथिव्यम्बुवनस्पतिव्यन्तराणां माद्या श्चतस्र, प ञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्याणां पट्, ज्योतिषां तेजोलेश्या, वैमानिकानां तिस्रः प्रशस्ताइति, आह च—किण्हानीलाकाऊ तेऊलेसायभवणवंतरिया । जोइ समोहम्मीसा णतेऊलेसामुणयव्वा ॥ १ ॥ कप्पेसणकुमारे माहिंदेचेवबंभलोगेय । एएसुपम्हलेसा तेणपरंसुक्कलेसाउ ॥ २ ॥ तथा पुढवीआउवणस्सइ बायरपत्तेयलेसचत्तारि [तेजोलेश्यासमाः] गब्भयतिरियनरेसु छल्लेसा तिन्निसेसाणं ॥ १ ॥ केवलमौघिकदण्डके क्रियासूत्रे मनुष्या सरागवीतरागवि शेषणा भणीता, इहलेश्याप्रकरणेषु तथा न वाच्या तेज पद्मलेश्ययो वीतरागस्या सम्भवा च्छुक्ललेश्यायामव तस्यवीतरागस्यसम्भवा त्प्रमत्ता प्रमत्त

फाउलेस्साणवि एमेयगमो णवर णेरइए जहाओहिएदंडए तहाभाणियव्वा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा जस्सअत्थि जहा

ओह तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सरागा वीयरागा न भाणियव्वा । भावार्थ— जिम कृष्णलेश्यावालो दंडक कहो तिम नीललेश्यानो पिण कहवो ते सूत्रें उक्त छ। काउलेश्याना पिण एमेवगमो णवर णेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा । कापोतलेश्यानो पिण एहीज गमो कहवो परंतु नारकी जिम औघिक दंडके कह्या तिम कहवा ते इम नेरइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सन्निभूया असन्निभूयात्ति । असन्नीया पहिली पृथिवीयें उपजवेकरी कापोतलेश्याना सम्भवे तथा । तेउलेश्या पद्मलेश्या जस्स अत्थि तेहनी जहा ओहिया तहा भाणियव्वा । तेजोलेश्या पद्मलेश्या जेहनें हुवे ते जीवनें जिम औघिक दंडके कह्या तिम ते बेहुना कहवा ते लेश्या जिमके तिनें कहेवे नारकी एकेन्द्रिय तेउ वाउ विकलेन्द्रियने तो नथी एहवें भवनपती पृथिवी अप् वनस्पती व्यंतर ने ए च्यारलेश्या हुवें पंचेंद्री तिर्यंच म नुष्यने छलेश्या हुवे ज्योतिषीने तेजोलेश्या हुवे वैमानिकनें त्रिणशुभलेश्या हुवे । णवर । एतलाविशेष जे सर्व औघिकदंडकनेंविषे । मणुस्सासराग

ता सूक्ष्मतराणि प्रागेव दर्शयन्नाह ॥ तेउलेसापम्हलेसेत्यादि ॥ माइत्ति ॥ उद्देशकोदिता सूत्रार्थसङ्ग्रहगाथा गतार्थापि सुखबोधार्थं मुच्यते, दुःख मायुय नई थे बयमती त्वक्त्वयुत्यान्यां इयफयत्तुदयमुक्तं, तथा ॥ आहारेत्ति ॥ नेरइयाविसमाहारा इत्यादि ॥ तथा ॥ विसमकम्मा ॥ तथा ॥ विसमवण्णा ॥ तथा ॥ विसमलेस्सा ॥ तथा ॥ विसमवेयणा ॥ तथा ॥ विसमकिरिया ॥ तथा ॥ विसमाउयासमोववन्नगत्ति ॥ गाथार्थः, ॥ मायन्न लइया नारका इत्युक्त मथ लेश्यानिरूपयन्नाह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्रा स्वामि कम्मपुद्गलाना लेशनात् सलेश्या लेश्या, योगपरिणामा, लेसा यो गनिरोधे लेश्याना मभावात् योगश्च शरीरनाम कम्मपरिणतिविशेषः ॥ लेस्साणबीअउद्देसउत्ति ॥ प्रज्ञापनायां लेश्यापदस्य चतुरुद्देशकस्येह द्विती याद्देशको लेश्यास्वरूपावगमाय भणितव्यः प्रथमइति क्वचित् दृश्यते सोपपाठइति अथ कियदूरं यावदित्याह ॥ जावइड्ढी ॥ ऋद्धिवक्तव्यतो याव त् भवाय सद्धेयतः ॥ यइयं मते । लेसाउ पण्णत्ताउ गोयमा ? छल्लेसाउ पण्णत्ताउ तंजहा कण्हलेसाई ॥ एव सर्वत्र प्रश्न उत्तरं च वाच्य ॥ नेरइयार्ह

उड्ढि तह नाणियव्वा णयरं मणुस्सा सरागवीतरागा णनाणियव्वा। गाहा दुक्खाउए उदिन्ने आहारे कम्म वण्णलेस्सा य समवेयणसमकिरिया समाउए चेव बोधव्वा ॥ १ ॥ कइणं तेउलेस्साउ पण्णत्ताउ गोयमा छलेस्साउ पण्णत्ताउ

वीतरागा नभाणियवा। सराग वीतराग शिवपर्वे बला इहां ते मनुष्य तेत्र गयसरवानेविषे वीतरागपणाना असमवकी प्रकलेश्याने विषेज वीत रागपणानो सभवछे प्रमत्त अप्रमत्त कहवा। गाहा। दुक्खाउए उदिन्ने। बीजो उद्देशाना दिको मांडी सूत्रार्थ माथा तेहनो भवती अनुक्रमे बला तेहीलबे पनि भवायबोधमणी बबो कहियेछे—दुःखपाणए उदय भाष्य ते वेदे ए एकवचन बहुवचनेवाची इवबा नारकाना तथा आहारेत्ति नेरइ य अभते कि समाहारा तथा विसमकम्मा तथा विसमवण्णा तथा विसमलेस्सा तथा विसमवेदणा तथा विसमकिरिया तथा विसमाउयासमोववन्न गत्ति इत्यादि आगला पूर्वे सलेशीमारवीथे इसीबबा तेमाटे तेहलेश्या कहीयेछे—जिहां आत्माने विषे कर्मपुद्गलना संश्लेषपणानो हेतुपणाकरीये। कइणंभते लेस्सापण्णत्ताउ। केरयो केमगवन्। लेश्याकरी इतिमय। उत्तर। गोयमा। हेगौतम। छलेश्याओ पण्णत्ताओ तंजहा। कृष्णलेश्या जेहनी ते कहीये—

सिभिकरएसेस्सा ३ तिरिक्खजोणियाणं ६ एगिंदियाणं ४ पुढविआउवणस्सईणं ४ तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं ३ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ण ६ ॥ इत्यादि वक्तव्य यावत् ॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण कयरे २ हिंतो अप्पड्ढिया वा महिड्ढियावा ? गोय मा ! कण्हलेसेहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया नीललेसेहिंतो काउलेसेत्यादि ॥ अथ पश्चात् पठ्युक्त मणुवते इत्यादिवचनविप्रलब्धो यो मन्यते च नारादयपि भव एकपैव जीवस्या वस्थानमिति तद्बोधनार्थं प्रश्नयन्नाह ॥ जीवस्सणमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं किंविधस्य जीवस्येत्याह भावितस्य मनु ष्य नारकादे रित्येव विशेषितस्य ॥ तीतद्धाएति ॥ अनादौ अतीतेकाले कतिविध उपाधिभेदा त्कतिभेदः संसारस्य भवा द्भवान्तरसञ्चरणलक्षणस्य संस्थान मवस्थितिक्रिया तस्य कालो ऽवसरः संसारसंस्थानकाल, अमुष्य जीवस्या तीतकाले कस्यां कस्यां गतावबस्थान मासीदित्यर्थः, अत्रोत्तरम् चतुर्विधउपाधिभेदा दितिभावः तत्र नारकभवानुगतसंसारावस्थानकाल स्त्रिधा शून्यकालो ऽशून्यकालो मिश्रकालश्चेति तिरश्चां शून्यकालो नास्ति

तजहा लेस्साणबीतउद्देसउन्नाणेयव्वो जावइड्ढी । जीवस्सण भंते तीयद्धाएआदिट्ठस्स कइविहेसंसारसंचि ट्ठणकालेपन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहेसंसारसंचिट्ठणकाले पन्नत्ते तजहा णेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले २ तिरि

लेस्यानबोधा उद्देसया भाणियव्वा जावइड्ढी । पन्नवणानेविषे लेश्यापदना बीजा उद्देशाथो जाणवो । एएसिणंभंते जीवाणं कण्हलेस्साण जावसुक्कलेस्साणय कयरे कयरेहिंता अप्पड्ढिया वा महिड्ढिया वा गोयमा कण्हलेस्सेहिंतो नीललेस्सामहिड्ढिया नीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्ढिया इत्यादि । हिवे जे ए एम एकजीवामने पर्यसरी पर्यपर्यायपामे तेहने संसुभावपाने कहेछे—जीवस्सणंभंते तीयद्धाए आदिट्ठस्स कइविहेसंसारसंचिट्ठणकालेपन्नत्ते । जीव ने हेभगवन् ! अनादि अतीतकाळनेविषे जेहवोछे जोव एनारकीपादि एहवे विशेषणे सहितने अतिमेदे संसार एकभवथको बीजेभवे संचरवरूपनो रहवानीक्रिया तेहनोकाळ अवसर तेसंसारसंस्थानकाळ कहीये एतले एजीवने अतीतकाळनेविषे केहोकेहो विषेरहवा कह्यो? भगवंत कहेछे—गोयमा हेगौतम ! चउव्विहेसंसारसंचिट्ठणकालेपन्नत्ते । च्यारेप्रकारे उपाधिभेदथकी संसारभवथको भवांतरनेविषे संचरवा तेहथकाळो तेकहेछे—नेरइ

ति तेषां द्विविधो मनुष्यदेवानां त्रिविधो ऽस्ति आह च–सुण्णासुण्णोमीसो तिविहोसंसारचिट्ठणाकालो। तिरियाणमसुण्णवज्जो सेसाणहोइतिवि
होवि ॥ १ ॥ तत्र शून्यकालं तावदुच्यते अशून्यकालस्वरूपपरिज्ञानेहि सती तरौ सुखाभी भविष्यतइति, तत्र वर्तमानकाले सप्तसु पृथिवीषु ये
नारकावर्तन्ते तेषां मध्यात् यावत् नाद्यापि कश्चन उद्वर्तते नान्य उत्पद्यते तावन्मात्रा एवते आसते सकाल स्तत्र नारका न्ङ्गीकृत्याशून्यइतिमत्यते आह
च–आइट्ठसमइयाणं नेरइयाणनजावएक्कोवि। उव्वट्टइअन्नोवा उववज्जइसोअसुण्णोउ ॥ १ ॥ मिश्रकालस्तु तेषामेव नारकाणां मध्याद् एकादय उद्वृत्ता,

रइओणियसंसारसंचिट्ठणकाले मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले देवसंसारसंचिट्ठणकाले। णेरइयसंसारसंचिट्ठणका
लेणं भंते कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा सुण्णकाले असुण्णकाले मिस्सकाले। तिरिक्ख

ए ममारसंचिट्ठणकाले। नारकीनाभवने जीवरहे ते समारसंचिट्ठणकालकहीये इम। तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले। तिर्यचना भवनेविषे जीव
ना रहवा ते तिर्यचसंसारसंचिट्ठणकाल कहीये। मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले। मनुष्यना भवनेविषे जीवनो रहवा ते मनुष्यसंसारसंचिट्ठणकाल कहीये
देवसंसारसंचिट्ठणकाले। देवना भवनेविषे जीवनारहवा ते देवसंसारसंचिट्ठणकाल कहीये। नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालेणंभंते कइविहेपण्णत्ते। मध्ये गो
तमपूछेछे–नारकीसंसारसंचिट्ठणकाल हेभगवन् ! केतलाप्रकारनोकह्या इतिप्रश्न भगवंतकहेछे–गोयमा। हेगौतम। तिविहेपण्णत्तेतंजहासुण्णकाले।
नारकीसंसारसंचिट्ठणकाल त्रीणभेदे कह्या ते कहीये शून्यकालकहता विरहकाल १। असुण्णकाले मिस्सकाले। अविरहकाल २ मिश्रकाल ते उभयकाल ३
तिहां अशून्यकालनास्वरूप आख्यापवे बीजा मेलमुखे कहाये तेमाटे पहिला अशून्यकालनोस्वरूप कहीयेछे तिहां वर्तमानकाले सातमी पृथिवीनेवि
षे जेनारकीउपजे तेमांहिथी केतलातेइ कोइपणेनवो अनेनथाकोई बीजो उपजेनवो केतलाके तेतलाकाल तेनारकनेअशून्यमतिपाम्यो अशून्यकालकहीयो
ये १ आह च–आइट्ठसमइयाणं नेरइयाणनजावएक्कोवि उव्वट्टइअन्नोवा उववज्जइसोअसुण्णोउ ॥ १ ॥ मिश्रकालतेकहीये तेहि जे सातेई नरकनेविषे तेना
रकी माहिथी जीव एकादिकीनीकली मध्यंतरमें उपजी यावत् एकजेपरा तेतलातांइ मिश्रकालकहीये ३ शून्यकाल ते कहीये जिवारे कह्या समकना

याव रेवोपिशेष साव मिश्रकाल शून्यकालस्तु यदा तद्वादिष्टसामयिका नारकाः सामस्त्येनो द्धृता भवन्ति, नैकोपि तेषां शेषोस्ति स शून्य कालइति भाष्य—श्रद्देएकमिवि तामीसोपरजावएकोवि। निलविरहियवे हियहमावेविंसुणेउ ॥ १ ॥ इदंच मिश्रनारकसंसारावस्थानकाल चिंतासूत्रं, न तमव वार्तमानिकनारकभव मङ्गीकृत्य प्रवृत्त, अपितु वार्तमानिकनारकजीवानां गत्यन्तरगमनेन तत्रैवोत्पत्ति माश्रित्य, यदिपुन स्तमेव नारकभव मङ्गीकृत्ये द सूत्रं स्या तदा शून्यकालापेक्षया मिश्रकालस्यानन्तगुणतासूत्रोक्ता न स्यात्, भाष्य—एयपुणतेजीवे पडुच्चसुत्तंच

जीवियसंसारसंचिठणपुच्छा ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते तंजहा असुन्नकालेय मिस्सकालेय। मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाण। एयस्सणं भंते णेरइयसंसारसंचिठणकालस्स सुन्नकालस्स असुन्नकालस्स मीस

नारको समस्तथा मर्ततरे पहुता तेमाहिलो कोय एकहो शेषरह्या रहो ते शून्यकालकहीये भाष्य—नवर्दएकमिवि तामोसोधरइजावएकोवि छिद्दे नवहिंसयेविं यहमावेविंसुणोउ। १। इहां एतलो विशेषछे एमिश्रनारक संसारावस्थानकाल चिंतासूत्रकाजो तेजीव वर्तमान नारकभवमाश्री कह्यो नही वर्तमानकाले नेनारकीना जीव ते मर्ततरे काईने वली नरकमविषेविषे उपजे ते जीवमाश्री कह्यो जोतेजीव नारक भव माश्री कहीये तो माये अल्पबहुत्व सूत्रनेविषे शून्यकालनो अपेक्षायें मिश्रकालने अनंतगुणोकह्याछे ते नथाय भाष्य—एयंपुणतेजीवे पडुच्चसुत्तनतरसर्वसेस अतहोव्वतभवंतो भवतकालोभसंभवा। १। ए तीने भेदे नारकीसंसारसंचिठणकाल कह्यो। तिरिक्खजोणियसंसारसंचिठणपुच्छा। तिर्यंचसंसारसंचिठणनो प्रश्नकीधो तिवारे भगवंतकहेछे—गोयमा। हेगौतम! दुविहेपन्नत्ते तंजहा। बिभेदे कह्यो तेकहेछे—असुन्नकालेय। अशून्यकाल। मिस्सकालेय। मिश्रकाल २ जोय तिर्यंचने शून्यकालनथी उक्तंच—सुन्नासुन्नोमीसो तिविहोसंसारचिठणाकालो तिरियाणसुन्नवज्जो सेसाणहोइतिविहोवि। १। देवाणय जहाणेरइ याण। मनुष्यने तथा देवताने नारकीने तीनेभेदे संसारसंचिठणकालकह्यो तिमसमनुष्यने देवनेपणि शून्यकाल १ अशून्यकाल २ मिश्रकाल ३ ए तीनेभेदे जाणवो एहने हेभगवन्। नारकीसंसारसंचिठणकालने शून्यकालने। असून्य। असुन्नकालस्स कालने। मीसकालस्स। मिश्रकालने। कयरेकयरेहितो अप्पे

नन्तरं च । अत्रोच्यते तर्हि यतो प्यतकालाऽगमनयर ॥ १ ॥ कस्मादिति चे ? उच्यते येवार्तमानिका नारका स्ते स्वायुष्कालस्यान्त उद्वर्तन्ते च मप्यगमेव तदापु रत उत्पततोद्वादशमौहूर्तिकाशून्यकालापेक्षया मिश्रकालस्या नन्तगुणत्वाभावप्रसङ्गादिति, यावच – किकारवमावित्ता नेरइ याश्रमन्यमयमि । तेचिरकालसमते अश्काससेषविशति ॥ १ ॥ सवत्योवेअसुसकालत्ति ॥ नारकाणा मुत्पादोद्वर्तनाविरहकालस्यो रूपतोपि द्वारयमुहूर्तमात्रत्वात् ॥ मीसकालेअणंतगुणेत्ति ॥ मिश्रस्यो विवक्षितनारकजीवनिर्लेपनाकालो शून्यकालापेक्षया ऽनन्तगुणो भवति, यतो सौ नारकतरे यागमनगमनकालः स च त्रसवनस्पत्यादिस्थितिकालमिश्रितः सत्वमनन्तगुणोभवति, त्रसवनस्पत्यादिगमनागमनामा ममन्तत्वा स्तस्य मारकनिर्लेपनाकालो वनस्पतिकायस्थिते रनन्तभागेवर्ततइति, उक्तञ्च – थोवोअसुन्नकालो सोउक्कोसेणवारसमुहुत्तो । तत्तोयअणंतगुणो मीसोनि ल्लेवणाकालो ॥ १ ॥ यागमणगमणकालो तसाइतरुमोसिओअणंतगुणो । अहमिस्लेववकालो अणंतभागेवणस्सइस्सत्ति ॥ २ ॥ सुन्नकालेअणंतगुणेत्ति ॥ सर्वेषा विवक्षितनारकजीवानां मायो वनस्पति ममन्तानन्तकाल मवस्थानात् एतदेव वनस्पति ममन्तानन्तकालावस्थानं जीवानां नारकभवान्तरकाल उत्कृष्टो दर्शितः समयेइति उक्तञ्च – सुन्नोअणंतगुणो सोपुणपायंवणस्सइगयाणं । एवंचेवयसेस मवरद्देसिएय चोइति ॥ १ ॥ सिरिवज्जोत्ति

कालस्स कयरेकयरेहिंतोअप्पेवा बहुएवा तुल्लेवा विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुन्नकाले, मी

वा वेरा वेदायको वाबावाय । वहुएवा । घणाचाय । तुल्लेवा । सरीखाचाय । विसेसाहिएवा । विसेषाधिकवीय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम । सर्वसे थोडा असुन्नकाले । सर्वथी थोडो अशून्यकाल नारकीना जीवना उत्पादकाल उद्वर्तनाकालना विरह उत्कृष्टो बार मुहुर्तनाछे तेमाटे तेथको । मीसकाले अणंतगुणे । मिश्रकाल अनंतगुणोछे मिश्रनामविवक्षित नारकजीवनिर्लेपनाकाल ते अशून्यकालनी अपेक्षायें अनंतगुणोछे तेमाटे नारकीनो जीवोपोमांतितेविषे त्रसादि यावत् ते काल अमगमनादि स्थितिकाल मिश्रित थको अनंतगुणो हुवे ते मिश्रकालथको । सुन्नकालेअणंतगुणे । शून्य काल अनंतगुणोछे ते किम भवने विवक्षितनारकजीवाने मायें वनस्पतीकायनेविषे अनंतकालरहवावो तेहीज वनस्पतीनेविषे अनंतकालरहवू ते

यावं सव्वत्थोवे मनुष्यकालइति । सवान्तर्मुहूर्तमात्रा, अयच यद्यपि सामान्यमातरवा मुक्त, तथापि विकलेन्द्रियसम्मूर्च्छमान ... ...। १४ ।
यामेवा न्तर्मुहूर्तमात्रस्य विरहकालस्योक्तत्वात् यदाह—भिन्नमुहुत्तोविगलिंदिए सुसमुच्छिमेसुविसएव । एकेन्द्रियाणां तु उद्वर्तनोपपातविरहाभावे
न शून्यकालाभावएव, आहच–एगोसमयसमामो बहराउबहोववायमि । एगनिगोएविक एवमेसेसुविसएव ॥ १ ॥ पृथिव्यादिषु पुन ॥ मनुसमय
मसंखेज्जति ॥ वचना द्विरहाभावइति, ॥ मिस्सकालेअणतगुणेत्ति ॥ नारकवत् शून्यकालस्तु तिरश्चा नास्त्येव, यतो वार्तमानिकसाधारणवनस्पती
ना ततउद्वृत्ताना स्थानमन्यन्नास्ति ॥ मणुस्सदेवाय जहानेरइयाणति ॥ अशून्यकालस्यापि द्वादशमुहूर्तमानत्वा, अत्रगाथा–एवनरामराणवि
तिरियाणनवरिमत्थिसुन्नगु । अमिम्मयावलेवि ग्रायवमणतगुणत्थि ॥ १ ॥ एयस्सेत्यादि व्यक्त किससारएवा यस्याम जीवस्य स्या तुत मोक्षेपोति

सकालेअणतगुणे , सुन्नकालेअणतगुणे , तिरिक्खजोणियाणसव्वत्थोवे असुन्नकाले , मीसकालेअणतगुणे ,
मणुस्साणयदेवाणयजहाणेरइयाण , एयस्सण भंते णेरइयससारसचिठणकालस्स जावदेवससारसचिठणका

नारक भवना अमतकालरहू ते नारकभवना अमतकालनु अल्पबहुत्व कह्यु । तिरिक्खजोणियाणंसव्वत्थोवे । तिर्यंचमानिअमे सर्वस्तोक अशून्यकाल ते
भिन्नअंतमुहूर्त मात्र छे एसूत्र यद्यपि सामान्ये तिर्यंचने कह्यो छे तथापि विगलेंद्री यने संमूर्च्छिमने जाणवो एहनोज अंतमुहूर्तमात्र विरहकाल कह्यो
छे तथा एकेंद्रीमेतो उद्वर्तन उपपात विरहने अभावेकरी । असस्यात । अशून्यकालनो अभावछे पृथिव्यादिकनेविषे प्रतिसमय असंख्यात
तिर्यचनो विरहनोअभावछे । मीसकालेअणतगुणे । नारकीनीपरे शून्यकालनो तिर्यंचने नथीजछे जेमाटे वर्तमान समय साधारण वनस्पतीना
जीवने तिहांथी चवाने बीजा स्थानक नथीजछे । मणुस्साणय देवाणय जहा णेरइयाण । मनुष्य तथा देवने जिम नारकीनेकह्यु तिमजाणवो एहने
पणि अशून्यकाल बारमुहूर्तनोछे । एयस्स णंभंते णेरइयसंसारसचिट्ठणकालस्स जाव देवससारसचिट्ठणकालस्स जावविसेसाहियएवा । एहने हेभगवन् !
नारकी संसारसचिट्ठणकालने यावत्शब्दे तिर्यंचससारसचिट्ठणकालने मनुष्यससारसचिट्ठणकालने देवससारसचिट्ठणकालने कोण कोण थकी थोडाछाय

गङ्गायापृच्छामाह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ व्यक्त नवरं ॥ अंतकिरियंति ॥ अन्त्याच सा पर्यन्तवर्तिनीक्रिया अन्त्यस्यवा कर्मान्तस्य क्रिया ऽन्त्यक्रिया तां कृत्स्नकर्मक्षयलक्षणां मोक्षप्राप्तिमित्यर्थः ॥ अंतकिरियापयं णेयव्वंति ॥ सच प्रज्ञापनायां विंशतितमं, तच्चैवं ॥ जीवेणभंते ! अंतकिरियंकरेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा अत्थेगइए णोकरेज्जा एवंनेरइए जाव वेमाणिए ॥ भव्यः कुर्यादितरस्त्वित्यर्थः ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु वट्टमाणे अंतंकरेज्जा ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे इत्यादि ॥ नवरं ॥ मणुस्सेसु अंतंकरेज्जा ॥ मनुष्येषु वर्तमानो नारको मनुष्यीभूत इत्यर्थः, कर्मान्तं कुर्यादिति शेषः । सा दन्तक्रियायाः प्रस्तावे कश्चित् जीवादेवेषू त्पद्यते, अत उत्क्षिप्तपाजिधानाया ॥ अहन्नंतेइत्यादि ॥ व्यक्त नवरं अप्पतिपरमप्रार्थः ॥ असंज

लस्स जायविसेसाहिएया ? गोयमा ! सव्वत्थोवेमणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णेरइयसंसारसंचिट्ठणकालेअस खेज्जगुणे देवसंसारसंचिट्ठणकालेअसंखेज्जगुणे तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकालेअणंतगुणे । जीवेणं भंते अंतकिरियंकरेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइएकरेज्जा अत्थेगइएणोकरेज्जा अंतकिरियापदणेतव्वं । अहन्नंतेअस

मध्यारोपित सरीषाकाल विशेषाधिक होय इतिप्रश्न उत्तर । गायमा । हेगौतम ! सबसोथोड़ा मनुष्यसंसारसंचिट्ठणकाले । सबथी थोड़ो मनुष्यसंसारसंचिट्ठण कालकह्यो तेहथी १ । नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे । नारकीसंसारसंचिट्ठणकाल असंख्यातगुणो तेहथी २ । देवसंसारसंचिट्ठणकालेअसंखे ज्जगुणे । देवसंसारसंचिट्ठणकाल असंख्यातगुणो तेहथी ३ । तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकालेअणंतगुणे । तिर्यचयोनिक संसारसंचिट्ठणकाल अ नंतगुणा ४ । पूर्वे संसारनेविषे जीवरहे अथवा मोक्षनेविषेपणि जीवरहे इसीभावनाये पूछेछे—जीवेणंभंते अंतकिरियं करेज्जा । जीव हेभगवन् ! स मस्तकर्मक्षयरूपमोक्षप्राप्तिरूपक्रिया करे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा । हेगौतम ! अत्थेगइएकरेज्जा । केतलाएकभव्यजीव मोक्ष जाय । अत्थेगइएणोकरे ज्जा । केटलाएक अंतक्रियानकरे अभव्यमोक्षनजाय । अंतकिरियापदणेतव्वं । पन्नवणानो वीसमोपद अंतक्रियापद जाणवो कमसेपवको अंतक्रियाने अभावे नेरइएक जीव देवगतिनेविषे उपजे तेकारणे तिमेज देखाडेछे । अहन्नंते असंजयभवियदव्वदेवाणं अविराहियसंजमाणं विराहियसंजमाणं । अथ हेभग

यनवियद्व्वदेवाणंति ॥ इह भव्यद्रव्यदेवा असंयता चरणपरिणामशून्या भव्या देवत्वयोग्याः, अतएव द्रव्यदेवाः असंयतभव्यद्रव्यदेवाः समासवैवं असंयताश्च ते भव्यद्रव्यदेवाश्चेति, असंयतभव्यद्रव्यदेवा सर्वेते असंयतसम्यग्दृष्टयः किलेत्येके यतः किलोक्तं—असुवयमनुपारपि य जिसुतवोकामनिज्जराएय । देवाउयं निबंधइ सम्मद्दिट्ठीयजोजीवो ॥ १ ॥ एतच्चायुक्तं यतो मीया उत्कर्षत उपरिमग्रैवेयकेषूपपात उक्त सम्यग्दृष्टीना तु देशविरताना अपि न तत्राज्ञो विद्यते देशविरतमाययाज्ञा अच्युता दूद्रु गमनात्, मान्येतेनिह्नवा सोपा मिदंव ज्वेदेमाजिवामात् तस्मा न्मिथ्यादृष्टय एवा अभव्या भव्यावा असंयतभव्यद्रव्यदेवाः श्रमणगुणधारिणो निखिलसामाचार्यनुष्ठानयुक्ता द्रव्यलिङ्गधारिणो गृह्यन्ते ते ह्यखिलकेवलक्रियाप्रभावत एवो परिमग्रैवेयकेषूत्पद्यन्त इति असंयताश्च ते सत्य प्यनुष्ठाने चारित्रपरिणामशून्यत्वात् ननु कथं ते भव्या अभव्यावा श्रमणगुणधारिणो भवन्ती? त्युच्यते तेषामपि महामिथ्यादृशामपि मोहमादुर्नावे सत्यपि चक्रवर्तिप्रभृत्यनेकनृपतिप्रवरपूजासत्कारसम्मानदानात् साधून् समवलोक्य तदर्थं प्रव्रज्याक्रियाकलापानुष्ठानम्प्रति श्रद्धाजायते, ततश्च यथोक्तक्रियाकारिण इति, तथा ॥ अविराहियसंजमाणंति ॥ प्रव्रज्याकालात् आरभ्य अभग्नचारित्रपरिणामाना संज्वलनकषायसामर्थ्यात् प्रमत्तगुणस्थानकसामर्थ्याद्वा स्वल्पमायादिदोषसम्भवेऽप्यनाचरितचरणोपघातानामित्यर्थः, तथा ॥ विराहियसंजमाणंति ॥ उक्तविपरीताना ॥ अविराहियसंजमासंजमाणंति ॥ प्रतिपत्तिकालात् आरभ्य अखण्डितदेशविरतिपरिणामाना श्रावकाणां ॥ विरा

जयन्नवियदव्वदेवाणअविराहियसंजमाणं विराहियसंजमाण अविराहियसंजमासंजमाण विराहियसंजमास

जम् । चारित्रपरिणामवन्तो मुख्यमिथ्यादृष्टौ भव्य अथवा अभव्य नि केवलक्रियाना करणवार प्रव्यलिंगधारीजन्हा १ तेहने प्रव्रज्याकालथी आरंभी निरतीचार पूर्णचारित्र पाले ते अविराधितसंयमीकहीये तेहने सायुसमननें विराधें परिणामथा तेहथी विपरीतते विराधितसंयमीने । अविराहिय संजमासंजमाण । श्रावकव्रतलीने विराधनारहित अखंडपाले ते अविराधितसंयमासंयमीने ४ । विराहियसंजमासंजमाण । श्रावकव्रत लेइ विराधे पूर्वोक्त थी विपरीत ते विराधितसंयमासंयमीने ५ । असन्नीण । मनोलब्धिरहितने ६ । तावसाण । पडियापानखाय वाणतपस्वीने ७ । कंदप्पियाण ।

ह्रियवंत्रमासत्रमार्यति ॥ उत्कृष्यतिरेकिणां ॥ भसगीयति ॥ मनोज्ञाभिरचिताना मत्रामभिर्वरावला तथा ॥ तावसायंति ॥ पतितपत्राद्युपभोग वतां वासतपस्विनां तथा ॥ कदप्पियायति ॥ कन्दर्प्पः परिहास स यषामस्ति तेनवा ये चरन्ति ते कान्दर्प्पिकाः कान्दर्प्पिकावा व्यवहारत चरणवन्तएव कन्दर्प्पकौत्कुच्यादिकारकाः, तथाहि गाथा—कहकहकहस्सहसर्व कदप्पोअनिहुयायउल्लावा कन्दप्पकहाकहण कदप्पुवएससमाय १॥ भुमणयणवयणदसण च्छदेहिकरपायकन्नमाईहिं । ततकरेइजहहस इत्थपरोअप्पणाअहस ॥ २ ॥ वायाकुक्कुइठपुण तजपइजेणहस्सएअन्नो । नाणा विहजीवरुए कुव्वइमुहतूरएचचेत्यादि ॥ ३ ॥ भोअंमइविएगा सुखप्पसत्थासुभावअकुणइ । सोतव्विवेसुगच्छइ सुरेसुभइठचरणहीणोति ॥ ४ ॥ चतस्ते चाकन्दर्प्पिकाणां ॥ चरगपरिव्वायगमाईयति ॥ चरकपरिव्राजका धाटिभैक्ष्योपजीविन स्त्रिदण्डिन अथवा चरकाः कच्छोटकादयः परिव्राजकास्तु क पिलमुनिसूनवा स्ततेषां ॥ किव्विसियायति ॥ किल्बिष पाप तदस्ति येषा ते किल्बिषिका स्तच व्यवहारत चरणवन्तोपि ज्ञानाद्यवर्णवादिनो य थोक्त—णाणस्सकेवलीणं धम्मायरियस्ससव्वसाहूण । माईअवण्णवाई किव्विसियंभावणंकुणइत्ति ॥ १ ॥ एत तेषां तथा ॥ तिरिक्खियायति ॥ तिरश्चां गवाश्वादीनां देशविरतिभाजां ॥ आजीवियायति ॥ पाखण्डिविशेषाणां नाम्न्यधारिणां गोसालकशिष्याणा मित्यन्ये ॥ आजीवति या ये अविवे किलोकतो लब्धिपूजाख्यात्यादिभि स्तपश्चरणादीनि ते आजीविकास्तपसा जीविका इतस्तेषां तथा ॥ आभिओगियायति ॥ अभियोजन विद्या मन्त्रादिभिः परेषांवशीकरणादि अभियोगः सच द्विधा यदाह—दुविहोखलुअभिओगो दव्वेभावेयहोयनायव्वो । दव्वम्मिहोइजोगा विज्जामताभावम्मि

जमाण उवसण्णोण तावसाण कदप्पियाण चरगपरिव्वायगाण किव्विसियाण तिरिच्छियाण आजीवियाण

वजतो हासी मसवरो कदर्पवनामा कपमचारमे ८ । चरगपरिव्वायगाण । त्रिदण्डिना कपिलमुनिना सवाभोवाभे ९ । किल्बिषियाण । ज्ञानादिना मतवाद्यवर्णो तेहमे १ । तिरिच्छियाण । तिर्यंच माय गवादि श्रावकधमपाले तेहमे ११ । आजीवियाण । पाखण्डीविशेष यथा गोशालाना शिष्य तेहमे १२ । आभिओगियाण । मन्त्रादि पारिणत वशा मंत्र यथादिकना करनहार ११ । सलिगीदंसणवावन्नगाण । रजोहरणादि साधु वेषवे प

ति ॥ १ ॥ मोहम्मि वेया तेमया चरति य ते मियोगिका प्राभियोगिकावा सेव व्यवहारत यरववसएव मथादिमपोत्कारो पदाइ—कोउयभूइक
म्म पमिणापमिणमिमित्तमाजीवी । इड्डिरससायगरुअ भहिउंगमावयंकुणइति ॥ १ ॥ कौतुक सौभाग्याद्यर्थं स्नपनकं भूतिकम्म ज्वरितादिभूतिदा
नं प्रश्नाप्रश्नं स्वप्नविद्यादि ॥ मलिनगाउति ॥ रजोहरणादिसाधुलिङ्गधरता किविधाना मित्याह ॥ दसपयावयगाउति ॥ दशमं सम्यक् व्यापन्न
दृष्ट येषाम् तथा तेषां मिथ्यादृष्टीनामित्यर्थः ॥ एयमिय देवलोएसु उववज्जमाणाणमिति ॥ अनेन देवस्य वन्यत्रापि केचि दुत्पद्यन्तइति प्रतिपादित ॥
विराहियसंजमाण जहन्नेणं भवणवइसु उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ॥ इह कश्चिदाह—विराधितसंयमानां सुकुमालिकायाः सौधर्मे कल्पे इति यदुक्तं स तत्र
पटते ईशाने उत्पद्यमाना सुकुमालिकायाः विराधितसंयमायाः ईशानउत्पादश्रवणा ? दित्यत्रोच्यते, तस्याः संयमविराधनोत्तरगुणविषया बकुशत्वमात्रकारिणी

अविराहियसंजमाण जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे, विराहियसंजमाण जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं सोह

ने केहने विमाननेविषे उपजवाकहा ? एतले देवगति टाली बीजा स्थानकनेविषे पणि कोइएक उपजे इसो अपायो इतिप्रश्न भगवंतकहेछे—गो
यमा । हेगोतम ! असंयतभविकद्रव्यदेवानं । असंयतो भविकद्रव्यदेवने । जघन्येनभवनवासीसु । जघन्यथकी भवनपतीने विषे उपजवोकह्या । उ
त्कोसेनंउवरिमगेवेज्जएसु । उत्कृष्टथकी उपरिला ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकउपजे । अविराहियसंजमाणं । अविराधित साधुने । जघन्येनसोहम्मे
कप्पे । जघन्यथकी सौधर्मनामा देवलोके उपजवा होय । उक्कोसेणसव्वट्ठसिद्धेविमाणे । उत्कृष्टथकी सर्वार्थसिद्ध विमाननेविषेजाय उपजे । विराहिय
संजमाण । विराधित साधुने तथाविराधे तेहने । जहन्नेणं भवणवासीसु । जघन्यथी भवनपतीनेविषे उपजवोहोय । उक्कोसेणसोहम्मेकप्पे । उत्कृष्ट

न मूलगुणविराधकानि सौधर्मोत्पादस्य विशिष्टतरसंयमविराधनायां स्यात् यदिपुन र्विराधनमात्रमपि सौधर्मोत्पत्तिकारकस्या, तदा बकुशादी ना मुत्तरगुणादिप्रतिसेवायता कथ मच्युतादिषू त्पत्तिः स्या त्कथम्भि द्विराधकत्वा त्तेषामिति ॥ भवणवाइ वणवाइ जवणवासीसु उक्कोसेण बाय

म्मेकप्पे, श्रविराहियसजमासजमाण जहरणेणसोहम्मेकप्पे उक्कोसेण श्रच्चुएकप्पे, विराहियसजमासजमाण जहरणेणन्नवणवासीसु उक्कोसेणजोइसिएसु, श्रसरागीणजहरणेणन्नवणवासीसु उक्कोसेणवाणमंतरेसु, श्रवसेसा सव्वेजहरणेण न्नवणवासीसु उक्कोसेणवोच्छामि—तावसाणजोइसिएसु , कंदप्पियाणसोहम्मेकप्पे, चरगपरि व्वायगाण बंभलोएकप्पे, किव्विसियाणलंतगेकप्पे, तिरिच्छियाणसहस्सारेकप्पे, श्राजीवियाणश्रच्चुएकप्पे ,

बो बाधमनामा देवलोकनेविषे उपजवाहोय। अविराधिवसंजमासंजमाय। अविराधित संजमासंजमो एतले श्रावकने। जघन्येसोहम्मेकप्पे। जघन्य सोधमदेवलोकेउपजवाहोय। उक्कोसेण श्रच्चुएकप्पे। उत्कृष्टथको अच्युत बारमे देवलोके उपजवोहोय। विराधियसंजमासंजमाय। विराधित संजमा संजमोने एतले विराधित श्रावकने। जघन्येभवणवासीसु। जघन्यथको भवनपतीनेविषे उपजवोहोय। उक्कोसेणजोइसिएसु। उत्कृष्टथो ज्योतिषीने विषे उपजवाहोय ३। असन्नीण। असंज्ञिने। जघन्येण भवणवासीसु। जघन्यथको भवनपतीनेविषे उपजवोहोय। उक्कोसेणवाणमंतरेसु। उत्कृष्टथो वाणव्यंतरनेविषे उपजे। अवसेसासव्वे जघन्य भवणवासीसु। बाकीता सगलाईनो उपजवो जघन्यथो भवनपतीनेविषेजाणवो। उक्कोसेण वोच्छामि। उत्कृष्टथो उपजवो कहीयेछे—तावसाणंजोइसिएसु। तापसने उत्कृष्टथो ज्योतिषीनेविषे उपजवोहोय। कंदप्पियाणंसोहम्मेकप्पे। कामादीपनादिप्रवृत्ति वालाने उत्कृष्टथी सोधमनामा देवलोकनेविषेउपजे। चरगपरिव्वायगाणं। चरकपरिव्राजकने उत्कृष्टथो। बंभलोएकप्पे। ब्रह्मनामा पांचमे देवलोके उपजे। किव्विसियाणलंतगेकप्पे। किल्बिषीने उत्कृष्टथो लांतकनामा छठा देवलोकनेविषे उपजवोहोय। तिरिच्छियाणसहस्सारेकप्पे। आठमो देवलोक। आजीवियाणंअच्चुएकप्पे। तिर्यंचनेउत्कृष्टथो सहस्रारनामा आठमादेवलोकनेविषे उपजवाहोय। आजीविकने उत्कृष्टथो अच्युतनामा बारमे देवलोके उपजवोहोय।

मतरसुति॥ इह यद्यपि चमरयलिमारमद्दिपमित्यादियचना दसुरादयो महर्द्धिका, पलिउवममुक्कोस वतरियाव तिषपताय व्यन्तरा मल्पर्द्धिका,
लामा व्यनपव वचना न्यमीयते मणि व्यन्तरेभ्य सकाशा दल्पर्द्धयो भवनपतय केचमेति, असस्नी देवे पूर्पयतदृत्तुत्तं सया मुया इति तदायु
त्रिरूपयत्वाद ॥ कइविहेणमित्यादि ॥ व्यक्त ग्रयरं ॥ असन्निआउयति ॥ असस्नीसन् परमयप्रायोग्यमायु यंमाति तदसंस्यायुः ॥ नेरइयअसन्निआउ
यति॥ नैरयिकप्रायोग्यमसंस्यायु नैरयिकासंस्यायु रेय मन्यान्यपि, एतया सस्यायुः सम्बन्धमात्रेणापि भयति यथा-शिष्योः पात्र मसरूतस्कतस्व

अन्निउगियाअ अणुकप्पे, सलिगीदसणवावरागा उवरिमगेविज्जाएसु ॥ कइविहेण भंते असन्निआउए पराचे
गोयमा ! चउव्विहे असन्निआउए पराचे तंजहा णेरइयअसन्निआउए तिरिक्खजोणियअसन्निआउए मणुस्स
असन्निआउए देवअसन्निआउए , असन्नीण भंते! जीवेकिंणेरइयाउयपकरेइ तिरिक्खजोणियाउयपकरेइ
मणुस्सदेवाउयपकरेइ ? गोयमा ! णेरइयाउयपकरेइ तिरिक्खमणुस्सदेवाउयपकरेइ । णेरइयाउयपकरेमाणे

पाभियोगिया समुपजाये। पाभियोगिक उत्कृष्टा अच्युतनामा बारमा देवलोकने विषे उपजे। सलिंगीदंसणवावन्नगा । सलिंगी दर्शनथी भ्रष्ट
उत्कृष्टो । उवरिमगेविज्जएसु । नवमाग्रैवेयकनाई उपजवूं थाय । कइविहेणभंते असन्निआउपपन्नत्ते। असस्नी देवनेविषे उपजे इसोकह्योते आउखेकरी
तमारे अमथाघाउखा कहियेछे-केटलेप्रकारे हेभगवन्। असन्नीयवा परभव प्रायोग्य आउखोबांधे। उत्तर। गायमा। हेगौतम। चउव्विहेअसन्निया
उपपन्नते अथवा। च्यारप्रकार अमथायाना आउखा कह्या ते कहेछे—नेरइय असन्नियाउए । नारकीअसन्नियाउखूं १। तिरिक्खजोणियअसन्निया
उए। तिर्यचयोनिक असनि आउखूं २। मणुस्सअसन्निआउए। मनुष्यअसन्निआउखूं ३। देवअसन्निआउए। देवअसन्निआउखो ४। असन्नीणंभंते जीवे
कि णेरइयाउय पकरेइ । असन्नीयाजीव हेभगवन्। शूंनारकीनो आउखो बांधे ? तिरिक्खजोणियाउयपकरेइ। अथवा तिर्यचयोनिकनो आउखोबांधे
२ अथवा। मणुस्सदेवाउयपकरेइ। मनुष्यनो आउखो करे ? अथवा देवनोआउखो करे बांधे इति प्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगौतम। णेरइयाउयपक

सत्त्वसम्बन्धविशेषनिरूपणायाह ॥ असंखेत्यादि ॥ व्यक्तं सर्वं ॥ पकरेइत्ति ॥ बध्नाति ॥ दसवाससहस्साइंति ॥ रत्नप्रभाप्रथमप्रस्तर माश्रित्योक्तं ॥ सप पलिओवमस्स असंखेज्जइभागंति ॥ रत्नप्रभाचतुर्थप्रस्तरे मध्यमस्थितिकं नारकमाश्रित्येति कथं यतः प्रथमप्रस्तटे दशवर्षाणां सहस्राणि जघन्या स्थिति उत्कृष्टा नवतिसहस्राणि द्वितीये तु दशलक्षाणि जघन्या इतरा तु नवतिलक्षाणि एवमेव तृतीये जघन्या इतरा पूर्वकोटी, एवमेव चतुर्थे जघन्या इतरा तु सागरोपमस्य दशभाग एवं चात्र पल्योपमासंख्येयभागो मध्यमा स्थिति भवति तिर्यक्सूत्रे यदुक्तं ॥ पलिओवमस्स असंखेज्जइभागंति ॥ तन्मिथुनकतिरश्चो ऽधिकृत्येति ॥ मणुस्साउएवि एवं चेवत्ति ॥ जघन्यतोऽन्तर्मुहूर्तं उत्कर्षतः पल्योपमासंख्येयभाग इत्यर्थः समया सं

जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ, मणुस्साउए वि एवं चेव, देवाउए जहा णेरइ

रेइ। नारकीना आउखा बांधे १। तिरिक्खमणुस्सदेवाउयं पकरेइ। तिर्यंचनो पण आउखो बांधे २ मनुष्यनाय पण आउखा बांधे ३ देवतानो पण आउखो बांधे ४। णेरइयाउयं पकरेमाणे। असंज्ञीओ नारकीनो आउखा बांधतो थको। जहण्णेणं दसवाससहस्साइं। जघन्यथी दशसहस्रवर्षनो बांधे ते रत्नप्रभाना पहिला प्रतरमाश्री जाणवा। उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ। उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग आउखो बांधे ते रत्नप्रभाना चोथा प्रतरने विषे मध्यम स्थिति नारक आश्री जाणवूं यतः पहिला पाथडे जघन्य दशसहस्रवर्ष उत्कृष्ट नेउसहस्रवर्ष बीजे जघन्य दशलाख उत्कृष्ट नेउलाख त्रीजे जघन्य नेउलाख उत्कृष्ट पूर्वकोडि चोथे जघन्य पूर्वकोडि उत्कृष्ट एकसागरोपमनो दशमो भाग इम चारे पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ते मध्यम स्थिति छे। तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे। तिर्यंचना आउखा बांधतो थको। जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं। जघन्यथकी अंतर्मुहूर्तनो आउखा बांधे। उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ। उत्कृष्टथकी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग बांधे ते युगलिया आश्रीने जाणवो। मणुस्साउए वि एवं चेव देवाउए जहा णेरइयाउए। मनुष्यनो आउखो पण इमज जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग ते युगलियाआश्री कहवो देवतानो आउखो जिम

यमागा मिथुनव्यन्तरानाश्रित्य ॥ देवाश्चनैरयिकत् ॥ देवाइति असञ्ज्ञिविषयं देवायु रूपचारा तथा वाच्यं ॥ अज्ञानैरयिकत् ॥ यथा असञ्ज्ञिविषयं नारकायु स्तत्र प्रतीतमव भवर भवनपतिव्यन्तरानाश्रित्य तदवसेयमिति ॥ एयस्सण भंते इत्यादिना ॥ यदसञ्ज्ञायुषोः स्वग्रुत्वमुक्त तदस्य ह्रस्व दीर्घत्वमाश्रित्यति ॥ प्रथमशतद्वितीयः ॥ २ ॥ द्वितीयोद्देशकान्तिमसूत्रे मायुर्विशेषो निरूपितः, सच मोहदो

याउए । एयस्सण भंते ! णेरइयअसण्णिआउयस्स तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स मणुस्सअसण्णिआउयस्स देवअसण्णिआउयस्स कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिएवा ? गोयमा ! सव्वत्थोवेदेवअसण्णियाउए, मणुस्सअसण्णियाउएअसंखेज्जगुणे, तिरियअसण्णिआउएअसंखेज्जगुणे, णेरइयअसण्णिआउएअसंखेज्जगुणे, सेवन्न भंतेत्ति ॥ बिइउउद्देसोसम्मत्तो ॥ २ ॥ जीवाणभंते ! कंखामोहणिज्जेकम्मेकडे ? हंताकडे

ना०(भा) १ कथा तिम वा ए ना व्याख्या उत्तसहस्रप उत्कृष्टतो पल्योपमना असंख्यातमा भाग एतलाविशेष ए भवनपती व्यतरोना भायोने कहवा । एयस्सणंभंते नेरइयअसण्णिआउयस्स । एहने हेभगवन् ! नारकी असञ्ज्ञीभाउखाने । तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स । तिर्यंचयोनिया असंज्ञी भाउखाने । मणुस्सअसण्णिआउयस्स । मनुष्य असञ्ज्ञीभाउखाने । देवअसण्णिआउयस्स । देव असञ्ज्ञीभाउखाने । कयरेकयरेहिंतो जाव विसेसाहिएवा । किश २ थकी माउखाय थोडाछ सरीखाछाय विशेषाधिकछाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा ! हेगौतम ! सव्वत्थोवेदेवअसण्णियाउए । सर्वथोथोडा देवअसञ्ज्ञिआउखो १ तेहथी । मणुस्सअसण्णियाउए असंखेज्जगुणे । मनुष्य असञ्ज्ञिआउखा असंख्यातगुणा २, तेहथी । तिरियअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे । तिर्यचयोनिया असञ्ज्ञीना उखा असंख्यातगुणा ३, तेहथी । नरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे । नारकीअसञ्ज्ञीआउखा असंख्यातगुणो ४, एअसञ्ज्ञी आउखानो अल्प बहुत्व कह्यो, ते एहनो ग्रसरोचपणा आयोने कह्या । सेवंभंतेभंतेत्ति । गौतमकहेछे जे में पूछ्यू ते भगवन् आपे सा प्रमाणछे अत्यन्तमथो, ए पहिला शतकनेविषे बीजाउद्दे शानो विवरणथयो ॥ २ ॥ बीजा उद्देशाने अंते आउखानाविशेष कह्यातेमाहनेदाये हुवे ते माहनीयकर्म कहीयेछे—पहिलो संमहगाथाने

येमति प्रवती त्ततो मोहनीयविशेष निरूपयन् आदौ च सङ्ग्रहगाथाया यदुक्तं ॥ करणद्वंसत्ति ॥ तद्दर्शयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ व्यक्तं नवरं जीवानां सम्बन्धियत् ॥ कंखामोहणिज्जंति ॥ मोहयतीति मोहनीयं कर्म तच्चारित्रमोहनीयमपि भवतीति विशिष्यते काङ्क्षान्यान्यदर्शनग्रह उप लक्षणत्वाच्चास्य शङ्कादिपरिग्रहः ततः काङ्क्षया मोहनीयं काङ्क्षामोहनीयं काङ्क्षामोहनीयं मिथ्यात्वमोहनीयमित्यर्थः ॥ कडेत्ति ॥ कृतं क्रिया निष्पाद्य मितिप्रश्नः उत्तरं तु ॥ हंता कडेत्ति ॥ अकृतस्य कर्मत्वानुपपत्तेः इह च वस्तुनः करणे चतुर्भङ्गीदृष्टा यथा देशेन हस्तादिना वस्तुनो देशस्याच्छादनं करोति अथवा हस्तादिदेशेनैव समस्तस्य वस्तुनः अथवा सर्वात्मना वस्तुदेशस्य यथा सर्वात्मना सर्वस्यवस्तुनः इत्येतां काङ्क्षामोहनीयकरणमाश्रित्य प्रश्नयन्नाह ॥ सेभंतइत्यादि ॥ सत्ति ॥ तस्य कस्मात् ॥ भदंत ! किमितिप्रश्ने देशेन जीवस्यांशेन देशः काङ्क्षामोहनीयस्य कर्मणोंऽशः कृत इत्येको भङ्गः अथ देशेन जीवांशेनैव सर्वं काङ्क्षामोहनीयं कृतमिति द्वितीयः उत सर्वेण सर्वात्मनादेशः काङ्क्षामोहस्य कृत इति तृतीयः उताहो सर्वेण सर्वात्मना सर्वं कृत मिति चतुर्थः अत्रोत्तरम्, ॥ सव्वेणसव्वेकडेत्ति ॥ जीवस्वाभाव्या स्वप्रदेशावगाढतद्योग्य

सेभंते ! किंदेसेणदेसेकडे देसेणसव्वेकडे सव्वेणदेसेकडे सव्वेणसव्वेकडे ? गोयमा ! णोदेसेणदेसेकडे णोदेसेण सव्वेकडे णोसव्वेणदेसेकडे सव्वेणसव्वेकडे । णेरइयाणंभंते ! कंखामोहणिज्जेकम्मेकडे ? हंताकडे, जाव सव्वेण

विष जेटला, वैमानिकपर्यंत, ते दण्डके। जीवनेभंते कांखामोहनीयकर्मकीधोछे। जीव हेभगवन्! मिथ्यात्वमोहनीयकर्म कीधूं क्रियानीपजावे, इतिप्रश्न उत्तर। हंताकडे। हांगौतमकर्यो। सेभंतेकिंदेसेण। देसेकडे देसेणसव्वेकडे। ते कर्मने हेभगवन्! इहां वस्तुने करवानेविषे चउभंगीछे, यथा हस्तादिदेशेकरी वस्तुनादेश आच्छादे१ अथवा हस्तादिदेशेंकरी समस्तवस्तुने आच्छादे२ अथवा आत्मायेंकरी वस्तुनादेश आच्छादे३ अथवा समस्तआत्मायेंकरी समस्तवस्तुने आच्छादे४ इमचउभंगी कांखा मोहनीयकर्मकरवानेविषे कहवो तेदेखाडेछे—देश ते जीवनोअंश तेणेंकरी देश तेकांखामोहनीयकीधूं १ ए एकभांगो अथवा देश ते जीवनाअंश ते बीजाभांगा २ तथा। सव्वेणदेसेकडे सव्वेणसव्वेकडे गोयमा णोदेसेणदेसेकडे। सव्वजीव कांखामोहनीयकर्म कीधो पत्तेआत्मा

यग्रन्थनीयकमपुद्गलग्रन्थन सर्वजीवप्रदेशानां व्यापार इत्यत उच्यते सर्वात्मना सर्वं तदेककालकरणीय कांक्षामोहनीय कर्मकृत कर्मतया बद्ध
मतएवच जङ्गयप्रतिषेधइति अतएवोक्त—एगपएसोगाढं सव्वपएसेहिं कम्मुणोजोग्गं । बंधइजहुत्तहेउं तिरपएसावगाढंसि ॥ १ ॥ जीवाणंतया
कर्मण्यापत्तयाच य एके प्रदेशा समवगाढ सर्वजीवप्रदेशव्यापारत्वात् तदेकसमयग्रन्थनार्थं सर्वमितिगम्य अथवा सर्वं यत्किञ्चित् कांक्षामोह
नीय तत्सर्वात्मना कृत तदेशेनेति जीवाना मितिसामान्योक्तौ विशेषो नावगम्यत इतिविशेषावगमाय नारकादिदण्डकेन प्रश्नयन्नाह ॥ नेरइया
णमित्यादि ॥ जावितायमेव क्रियानिष्पाद्य कर्मोक्त तत् क्रियाच त्रिकालविषया तस्तां दर्शयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि॥ व्यक्तं अवरं ॥ करिसुत्ति॥
अतीतकालेकृतवन्त उत्तरम्तु हन्ता अकार्षु तदकरणे अनादिसंसाराभावप्रसङ्गात् एव ॥ करंति ॥ सम्प्रति कुर्वन्ति ॥ एयकरिस्सति ॥ अनेनच

सव्वेणंकडे, एवं जाव वेमाणियाणंदंडओणाणियव्वो ॥ जीवाणंभंते ! कंखामोहणिज्जंकम्मंकरिसु ? हंताकरिसु
तंभंते ! किंदेसेणदेसंकरिसु ? एएणंअभिलावेणंदंडओ, जाव वेमाणियाणं, एवंकरेंति, एत्थविदंडओ जाव

णा२, एवत्त सर्वपात्मार्थे सर्वकांक्षामोहनीयकर्म जीवा एवोवार्णमा ४, हेगोतम । जीवदेशकरी कांक्षामोहनीयदेश नबोधु । वाढेसेसव्वेकडे जीव
किंदेसेकडे। जीवदेशेकरी कांक्षामोहनीय सर्वनकरे सर्वपात्मायेंकरी कांक्षामोहनीयदेश नकरे। सव्वेणसव्वेकडे। सर्वपात्मायेंकरी सर्वकांक्षामोहनीय
कर्मकरे ४। नेरइयाणंभंते कखामोहणिज्जेकम्मेकडे हंताकडे। नारकी हेभगवन्। कांक्षामोहनीयकर्मकरे इतिप्रश्न हांगोतम करे। जावसव्वेणसव्वे
डे। यावत् सर्वपात्मायेंकरी सर्वकांक्षामोहनीयकर्म करे। एवंजाववेमाणियाणंदंडओभाणियव्वो। यावत् वैमानिकताई पचवीसदंडक कहवा, वली गोतम पू
छे—जीवाणं भंते कंखामोहणिज्जंकरिसु । जीव हेभगवन्। कांक्षामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीयकर्म अतीतकाले कीधूं ? हंताकरिंसु। हांगोतम कीधो
। तंभंतेकिंदेसेणदेसंकरिसु । तेहेभगवन्। मिथ्यात्वमोहनीयकर्म जीवने देशेंकरी मिथ्यात्वमोहनीयकर्म देशेंकीधो ? एएणंअभिलावेणंदंडओजावमेसा
णियाणं। इसे पाठेंकरी दंडक कहवा यावत् वैमानिकने तांलगे कहवा। एवंकरेंति। इमवर्तमानकालेपणि करेछे। एत्थविदंडओजाववेमाणियाणंएवं

भविष्यदानन्तावरयस्य दर्शितसि, कृतस्य कर्मेव यथाद्यो भवन्तीति तान दर्शयन्नाह ॥ एवचियत्यादि ॥ व्यक्त नवर चयः प्रदेशानुभागादे वद्दन मुपचय स्तदव पौनः पुन्येन मन्यस्त्वाहुः—चयनं कर्मं पुद्गलोपादानमात्र, उपचयमन्तु चितस्या बाधाकाल मुक्ता वेदनार्थ निषेकः सर्वे य–प्रथमस्थितौ बहुतरं कर्मदलिक निषिञ्चति ततो द्वितीयायां विशेषहीन एव यावदुत्कृष्टायां विशेषहीन निषिञ्चति उक्तञ्च—मोत्तूसग मयाह पढमाइठिइरयबहुतरंदव्व । ससविसेसहीण जावुक्कोसंतिसव्वासि ॥१॥ उदीरण मनुदितस्य करणविशेषा दुदयप्रवेशन वदन मनुभवन नि गरण जीवप्रदेशेभ्य कर्मप्रदेशानामाशातनमिति, इहच सूत्रसङ्ग्रहगाथा भवति साचगाहा ॥ कडेचिएइत्यादि ॥ भावितार्थाच नवर ॥ माइतिएत्ति ॥

येमाणियाण , एवंकरिस्सति , एत्थविदण्ड जाव वेमाणियाण, एव चिए चिणिसु चिणति चिणिस्सति, उवचिए उवचिणिसु उवचिणति उवचिणिस्सति , उदीरेंसु उदीरति उदीरिस्सति , वेदेंसु वेदेति वेदिस्स ति , णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्सति , गाहा ॥ कडेचिएयउवचिए उदीरियावेदियायणिज्जिसा । चया

करिष्यति । इहांपणि वर्तमानकालेपणि इमजनारकीयादि यावत् वैमानिकपर्यन्तदंडक कहवा, इम भाविकालेपणि करसे । एत्थविदण्डओजावमा णियाणं । इहांपणि अनागतकाले नारकीयादिदंडे यावत् वैमानिकतांई दंडक कहवो । एवचिए । इम यवते प्रदेश अनुभागादिकनो वधारवो १ । चिणिसु । के अतीतकाले चिण्या २ । चिणति । वर्तमानकाले चिणेछे ३ । चिणिस्सति । अनागतकाले चिणसे । उवचिए । उपचय तेहीज वारंवार पुष्टकरवो १ उवचिणिसु । अतीतकाले उपचय कीधो २ । उवचिणति । वर्तमानकाले उपचय करेछे ३ । उवचिणिस्सति । अनागतकाले उपचय करसे ४ । उदीरेंसु उदीरणा ते अणउदयमाव्याकर्मने करणविशेषे उदय आणीये उदीर्या १ । उदीरेंति । उदीरेछे । उदीरिस्सति । उदीरसे २ । वेदेंसु वेदेंति वेदिस्संति । वेदन अनुभवन् भोगवन् इत्यर्थ अतीतकाले वेद्या १ वर्तमानकाले वेदेछे २ अतीतकाले वेदसे ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरेंति णिज्जरिस्संति । निर्जरवो ते जीवप्रदेशथी कर्मप्रदेश दूरकरे वा अतीतकाले निर्जर्या १ वर्तमानकाले निर्जरे २ अनागतकाले निर्जरसे ३ । गाहा । इहि पूर्वोक्त संग्रहणीगाथा

त्तचितोपचितसूत्रे ॥ चउजयति ॥ सामान्यक्रियाकालत्रयक्रियाभेदात् ॥ तियजेयति ॥ सामान्यक्रियाविरहात् ॥ पच्छिमति ॥ उदीरितवेदितनिर्ज्जी र्णा मोहपुद्गलाश्चतिस्रय ॥ तिविसि ॥ त्रय स्त्रिविधा इत्यर्थः सम्बाद्य सूत्रत्रय त्तचितोपचितान्युक्ता मुत्तरेषु कस्मान्मोदीरितवेदितनिर्ज्जीर्णानी ति ? उच्यते कृतं चित मुपचित कर्म्म चिरमप्यवतिष्ठत इति करणादीनां त्रिकालक्रियासाध्यातिरिक्त चिरावस्थानलक्षण त्तत्स्वाथ्याश्रित्य कृता दी न्युक्ता न्युदीरणादीनांतु नचिरावस्थानमस्तीति, त्रिकालवर्त्तिना क्रियामात्रेणैव तान्यभिहितानीति जीवाः कांक्षामोहनीयं कर्म्मवेदयन्तीत्यु त्त मय तद्वेदनकारणप्रतिपादनाय प्रस्तावयन्नाह ॥ जीवाणभंतेइत्यादि ॥ व्यक्त मथर ननु जीवाः कांक्षामोहनीयकर्मवेदयन्तीति प्राग्निर्णीत कि पुनः प्रश्नः ? उच्यत वदनोपायप्रतिपादनार्थं उक्तञ्च–पुव्वभणियपिपच्छा जंभण्णइतत्थकारणमत्थि। पडिसेहोयणुण्णा हेउविसेसोवलंभोत्ति ॥१॥ तेहितेहिति ॥ तैस्तै रज्ञानान्तरभवचुतीर्थिकसंसर्गादिभि विवक्षितैः द्विवचन चेह वीप्सायां कारणैः शंकादिहेतुभिः, किमित्याह शंकि

दितिएचउजेया तियजेयापच्छिमातिन्नि ॥ १ ॥ जीवाणभंते ! कंखामोहणिज्जंकम्म वेदेंति ? हतावेदेंति । कहण्णंभंते ! जीवाकंखामोहणिज्जकम्मवेदेंति ? गोयमा ! तेहितेहिंकारणेहिं संकियाकंखिया वितिगिच्छि

भावार्थ—यहां पूर्वोक्त तीसरा है। भावचियउवचियाय उदीरियावेदियायनिज्जिया । आदितिएचउभेया तियभेयापच्छिमातिन्नि ॥ १ ॥ कोधो चिओ २ उपचय कोधा ३ उदीरिया ४ वेदू ५ निजरा ६ पहिला कृत चित उपचित चयचयिकने चारभेद तीनकालसभाश्यो एक समुचये एवंचार ते भी चि सेत प्रश्ने चिरकाल पतत्तागमो उदीरित वेदित निजरित ए तीनभेदे तीनकालवीत कहता, एहने चिरकालमपस्यानथी एविमेव जीवकांखामोहनी यकर्म वदे इसाप्रश्ना ॥ किवे तेहना वेदनाकारणकहवानेकाजे। जीवाप्रभंते कांखामोहनिज्जं कम्म वेदेंति। जीव हेभगवन् ! कांखामोहनीयकर्म वेदे इ तिप्रश्न। हतावेदति। उत्तर हागौतम ! वेदे। कहप्रभंते। किसेप्रकारे हेभगवन् ! जीवाकांखामोहणिज्ज कम्म वेदेंति। जीव कांखामोहनीयकर्म वेदे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। हेगौतम! तेहितेहिंकारणेहिं संकियाकंखियावितिगिच्छिया। तिणेतिणेकारणेकरी मिथ्यात्वीनी संगतिथकी तथा परस्य

ता जिनोक्तपन्थानुमति भवतो देशतोवा सञ्जातसंशया कांक्षिता देशतः सर्वतोवा सञ्जातान्यान्यदर्शनग्रहा ॥ वितिगिंच्छियत्ति ॥ विचि किच्छिताः सञ्जातफलविषयशङ्काः भेदसमापन्नाइति किमिदं जिनशासनं माहोस्विदि दमित्येव जिनशासनस्वरूपं प्रति मतेर्द्वैधीभावं गतो मध्यस्थापकरूपवा मतिभङ्गगताः अथवा यतएव शङ्कितादिविशेषणा अतएव मतेर्द्वैधीभावङ्गताः कलुषसमापन्ना नैतदेव मित्येव मतिवि पर्यासमङ्गता ॥ एवमिति ॥ उक्तेन प्रकारेण ॥ खलुत्ति ॥ वाक्यालङ्कारे निश्चये अवधारणेवा एतच्च जीवानां कांक्षामोहनीयवेदन मित्यमेवावसेय जिनप्रवेदितस्या सत्यत्व मत्यत्वादिति तत्सत्यतामेव दर्शयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ तदेव अवरं तदेव नृपरूपान्तरैः प्रवेदितं रागाद्युपहतत्वेन तस्मवेदितस्या सत्यत्वसम्भवा एतत्वं भूभृत तव व्यवहारतोपि स्यादित्यतमाह निःशङ्कं प्रविद्यमानसन्देहमिति अथ जिनप्रवेदित सत्य मित्य जिनाप्यवा न्यादृशो भवति न इत्ययत्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ तत्सत्त्व अवरं नूनं निश्चित ॥ एवमवधारेमाणेति ॥ तदेव सत्यं निःशङ्कं यज्जिनै प्रवेदित मित्यनेन प्रकारेण मनोमानसं मुत्पन्नं मन्दारयन् स्थिरीकुर्वन् ॥ एवपकरमाणेति ॥ उक्तरूपेण मुत्पन्न स एमकुर्वन् विदधान ॥ एवपि

या भेदसमावन्नागा कलुससमावन्नगा, एवं खलुजीवा कखामोहणिज्जकम्मं वेदेंति, सेणूणन्ते ! तमेवसच्चं णीसकं जंजिणेहिंपवेइयं, हंता गोयमा ! तमेवसच्चंणीसकं जंजिणेहिंपवेइयं, सेणूणन्ते ! एवं मणेधारेमा

गौतमा श्रमणनिर्ग्रन्थको वीतराग देवे कहेला पदार्थ प्रत्येक तेहमें विषे प्रकारान्तरपणे देशथकी तथा सर्वथकी अन्यदर्शन ग्रहवाणो कांक्षा देशथको तथा स र्वथकी अमार्ते संदेहरूपने प्राप्ता। भेदसमापन्ना। ए जिनशासनके कहवाणो तेजिनशासनमतिनो द्वैधीभावपाम्या। कलुषसमापन्ना। कलुष रूपने मतिभ्रमरूपवा एतावता एहवो मतिविपर्यास पाम्या। एवंखलुजीवा। एणिप्रकारे वाक्यालङ्कारे जीव। कांक्षामोहनीयकर्म वेदेंति। कांक्षा मोहनीयकर्मवेदे एतावता कांक्षामोहनीयमोवेदना एमहीज जाणवा। सेणूणंभंते तमेवसच्चंणीसंकं जंजिणेहिंपवेइयं। जिनप्रणीतथको जिनवचनसत्यथको ते माटेपर्यायतें देखाडेछे—ते निश्चे हे भगवन् तेहो प्रकारो निःसंदेह जेजिनप्रवेदित जिनेश्वर भगवंतकह्यो। हंता गोयमा। हांगौतम। तमेवसच्चंणीसं

इमालेति ॥ उक्तन्यायेन मम घष्टमन् मा न्यमतामि सत्यानी त्यादिचिन्तायां व्यापारयन्' चेष्टमानो वा ; विधेयषु तपोध्यानादिषु ॥ एवंसवरे
माणत्ति ॥ उक्तवदेव मनः संवृण्वन् मतान्तरेभ्यो निवर्तयन् प्राणातिपातादीन्वा प्रत्याख्यायो जीवइतिगम्यते ॥ आराहएत्ति ॥ आज्ञाया आज्ञाया
भवारूपजिनोपदेशस्य ॥ आराहएत्ति ॥ आराधकः पालयिता भवतीति अथ कस्मा त्तदेव सत्यं यज्जिनैः प्रवेदित ? मित्यत्रोच्यत, अथाय द्रव्यं
परिणामाभिधानादिति तमेव दर्शयन्नाह ॥ सेनूणमित्यादि ॥ अत्थित्तमत्थित्तेपरिणमइत्ति ॥ अस्तित्व मङ्गुल्यादे ऋजुत्वादिभावेन सत्वं उक्तञ्च
मयमसित्यरूपेण परद्रव्येणनास्तित्व । अन्यथासर्वजातानां मेकत्वप्रसज्यते ॥ १ ॥ तदेव ऋजुत्वादिपर्यायरूप मवसेयं अङ्गुल्यादिद्रव्यास्तित्वस्य
कथञ्चि दृजुत्वादिपर्यायाव्यतिरिक्तत्वात् अस्तित्वे कुल्यादेर्वा कुल्यादिभावेन सत्वे वक्रत्वादिपर्यायइत्यर्थः , परिणमति तथा भवति इद मुक्त
भवति द्रव्यस्य प्रकारान्तरेण सत्ता प्रकारान्तरसत्तायां वर्त्तते , यथा– मृद्रव्यस्य पिण्डप्रकारेण सत्ता घटप्रकारसत्तायामिति ॥ नत्थित्तमत्थित्तेपरि

णो एयपकरेमाणे एव चिट्ठेमाणे एव संवरेमाणे आणाए आराहएभवइ ? हंता गोयमा ! एव मणेधारेमाणे जावभवइ । सेणूणभंते ! अत्थित्तंअत्थित्ते परिणमइ णत्थित्तंणत्थित्ते परिणमइ ? हंतागोयमा ! जायपरिण

णमिनेर्दिपवेदित । तदेव निश्चं सत्यं निःसंदेहं जेजिनभक्तं जेजिनप्रणीत सत्यं इत्यं अभिप्रायबोधको तेषको इमे तदेवार्थे—सेणूणभंतेएवं मणे
धारेमाणे । ते निश्चे हेभगवन् ! इम मनमेविषे धरतावका इम मनमेविषे धारमानता धारणाकरतो । एवपकरेमाणे । इम निःसंदेहकरीने । एवं
चिट्ठमाणे । इम तपध्यानमेविषे प्रवर्त्तें । एव संवरेमाणे । इम भातान्ने संवरनामवर्त्ते अथवा प्राणातिपातादिक संवरता । आणाए आराहएभवति । श्री
वीतरागनी आज्ञा १ आराध पामें, आज्ञाऐकरी जिनापदेशनो आराधकजाय इतिप्रश्न । हंता गोयमा । हांगोतम ! एव मणेधारेमाणे जावभवति ।
इणेप्रकारे तदेव सत्यं निःशंकं जेजिनवाक्य इम मनमेविषे धारता यावत् आराधकजाय । सेणूणभंत अत्थित्तमत्थित्तेपरिणमइ । ते निश्चे हेभगवन् !
अस्तीत्व ते छतापणे पदार्थ घटादि पणि नपलटाय जिम आंगुली आंगुलीपणे परिणमे ते आंगुली ते आंगुली वक्रपणेपरे तिवारे पर्यायपर्याय प

समर्गति । नास्तित्व मनुष्यादरनुष्यादिनायेनामत्वं तथा मृगादिनावश्व, ततया मनुष्यादे नोस्तित्व मनुष्याद्यस्तित्वरूप मनुष्यादे नोस्तित्वे नुसारः पर्यायान्तरगामित्वरूप परिणमति यथा मृगोनास्तित्व तत्यादिरूप मृगास्तित्वरूपे पर्टरसि, अथवा अस्तित्वमिति धर्मधर्मिणो रनरा रमद्गमु धर्मित्वे मन्ये परिणमति मरमरेयनयति भात्यन्त विनाभिस्यात् विनाभस्य पर्यायान्तरमननमात्ररूपत्वात् दीपादिविमाश स्यापि तभिगत्यादिरूपतया परिणामा तथा नास्तित्व मत्यन्ताभावरूप यत् खरविषाणादि तन्नास्तित्वे ऽत्यन्ताभावएव वर्तते नात्यन्तमसत मन्नमन्नि खरविषाणमवति उक्तम्ब—नासतोऽऽपतेभावो नाजायोऽऽपतेसतः । अथवा अस्तित्वमिति धम्पनदा स्वद्रस्तित्वे सत्वे वर्तते, यथा-पटः पटत्वएव नास्तित्व वाद नास्तित्वे मस्य वसते यथा ऽपटोऽपटत्वएवेति अथ परिणामहेतुदर्शनायाह ॥ असमित्यादि ॥ अस्ति न अस्तिते परिणमति ॥ पयायः पर्यायान्तरतां याती त्ययः ॥ अस्तित्वमस्तित्तेपरिणमतसि ॥ वस्त्वन्तरस्य पयाय स्तत्पर्यायान्तरता यातीत्यर्थः पनुगमति ॥ मकारस्पागमिकत्वा त्प्रयोगप्र जीवव्यापारेण ॥ वीससहि ॥ यद्यपि लोके विस्रसाशब्दो जरापर्यायतया रूढ तथापीह स्वभावा

मइ। जतन्ते। अत्थित्तमत्थित्तेपरिणमइ , नत्थित्तणत्थित्तेपरिणमइ , तंकि पओगसा वीससा ? गोयमा

नदाय पवि मताभाव नयमदाय। नस्तित्तनस्तित्ते परिणमइ । पयतोयमु ते पयतापणे परिणमे, दर्शयारथार मवागेषरो परिणमू पस्तिपणिपरिण मे जिमअभकार मत्तिकापिण वरो मूळे ते पिंड घटपरिणामे परिणमे, ममावे यम याउम पथि वर्त्ते, ममावपर्यायांतर प्रतिभाव। हता गोयमा, घा यरिणमइ। दायोतम पांगुलोमे पांगुलीकर्रोमे पट ते पटरोजपणे परिणमे पांगुलीने पंगूठारी मास्तिह, पटमही ते पटमहीन एमखाहे। पतंम ते पस्तितपस्तिते परिणमइ। जेते हेभगवन्! ययोयमु ते छतापणे परिणमे, पर्यायते पयायान्तरपणामते थाव। नस्तित्तनस्तित्तेपरिणमइ। नास्तिपणूना स्तिरपे परिणमे पवलीयमु ते पयतापणे परिणमे, जिम कंभारने व्यापारथकी माटीको घडाथरे, पांगुली सूचीवाकोवरी घडो निपजावे। तंकिपयोग याजीमया। तेम् प्रयोगे जोगमेयापारेकरो, परिणाम अनापेवरो परिणमे, जिम प्राकासेवादल ? उत्तर। गोयमा पयोगमावित। वेगोतम। मयोगेम

र्या कृत्य स्वमात्मात्वा ह्रीमभाणतिवाभ्ये वीसमेत्युक्तमिति प्रयोगर ॥ पउगसायितति ॥ प्रयोगेणापि तदस्तित्यादि यथा—कुलालव्यापारा
न् मृत्पिण्डो घटतया परिणमति अङ्गुलिसंयुतावा वक्रतयेति अपि समुच्चय ॥ वीससायितति ॥ यथा—सुभ्राभ्र मसृणाभ्रतया नास्तित्वस्यापि
नास्तित्वपरिणामे प्रयोगविस्रसयो रेसा न्येयो दाहरणानि वस्त्वन्तरापेक्षया मृत्पिण्डादे रस्तित्वस्य नास्तित्वात् सत्सदेवस्यादिति व्याख्या
नान्तरे पीता न्येयो दाहरणानि पूर्वोत्तरावस्थयोः सद्रूपत्वादिति यदप्यजावो ऽभावएव स्यादिति व्याख्यातं तत्रापि प्रयोगेणापि तथा वि
गममापि भनायो भावमयभ्यात् न प्रयोगादेः साफल्यमिति व्याख्येयमिति अथो कस्त्यो कनयत्र समता भगवद्भिमततास्य दर्शयन्नाह ॥ ज
हातइत्यादि ॥ यथा प्रयोगविस्रसाभ्यामित्यर्थः तद्वसि तव मतेन अथवा ; सामान्येना स्तित्वमास्तित्वपरिणामः , प्रयोगविस्रसाजन्य उक्तः सा
मान्यम् विधिः क्वापि इतिज्ञायवति यस्तु न्यन्यथापि स्या इतिज्ञायवाय प्रगवामिति तमाभित्य परिणामान्यथात्वमाशङ्कमानभाह ॥ अथातेइत्या
दि ॥ तेइति तव मध्यपि अस्तित्वस्य जेय तथैवसि अथो तत्स्वरूपस्य वाचस्य सत्यत्वेन प्रज्ञापनीयतां दर्शयितुमाह ॥ सेकूकमित्यादि ॥ अस्ति

पउगसावित वीससायित । जहातेभंते ! अत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ, तहाते णत्थित्तणत्थित्तेपरिणमइ जहा तेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ तहातेअत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ ? हता गोयमा ! जहांमे अत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ तहामेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ, जहामेनत्थित्तनत्थित्तेपरिणमइ तहामेअत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ , सेणूण

रो ते पञ्चिचादि जिमयभकार इत्यादि पूर्ववत् । वीससायित । स्वभावेपविइवे वादलनीपरे । अथातेभंतेअत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ । जिम ते हेभगवन् ! व्यापारे तथा क्रियमाणे करोतुम्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमे । तथातेनत्थित्तंनत्थित्तेपरिणमइ । तिमते तुम्हारेमतेनास्तिपणू नास्तिपणे परिणमे । जथातनत्थित्तनत्थित्तपरिणमइ । जिम तुम्हारेमते नास्तिपणू नास्तिपणे परिणमे । तथातेअत्थित्तंअत्थित्तेपरिणमइ । तिमतुम्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमे भगवतकहेछे—हतागोयमा । हांगोतम । जथामेअत्थित्तअत्थित्ते परिणमइ । जिम म्हारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमे

रा मन्मिन्ने गमनीयं मद्वस्तुमत्वनेव प्रज्ञापनीयमित्यथः ॥ दोभासावगति से नूनं भंते अत्थितं अत्थित्ते गमणिज्जं मित्यादि ॥ पठगसावित्थी समाधिन ॥ इत्येतद्दल यक परिणामनदाभिधानात् ॥ जहा ते भंते अत्थित अत्थित्ते गमणिज्जमित्यादि ॥ तदा मेअत्थित्त अत्थित्तेगमणिज्ज ॥ इत्येतद्दल द्वितीया ऽस्तित्वनास्तित्वपरिणामयोः समताभिधायीति एव वस्तुप्रज्ञापनाविषयां समतावना प्रगवता नियाया स शिष्यविषयां तां दर्शयन्नाह ॥ जहातेइत्यादि ॥ यथा—स्वकीयपरकीयताऽनपेक्षतया समत्वेन विहितमिति भवत्या उपकारबुद्ध्या ते तव भवत ॥ एत्थंति ॥ तथा स्मिन् गृहपाकविद यतम्मि मयि सन्निहिते स्वशिष्ये गमनीयं वस्तु प्रज्ञापनीय तथा तेनैव समतासमप्रकारेण उपकारधियावा ॥ इहंति ॥ तथा इह परात्मनि अथवा यथा कादौ अन गमनीयं वस्तु प्रज्ञापनीयमितिमम अथवा ॥ एत्थंति ॥ स्वात्मनि यथागमनीय सुखप्रियत्वादि तथा इह परात्मनि अथवा यथा

जाणिम्रा ,

भंते ! अत्थित्तंअत्थित्तेगमणिज्जं जहापरिणमइ दोआलावगा तहागमणिज्जेणविदोआलावगा जाणिम्रा , जायतहामेअत्थित्तंअत्थित्तेगमणिज्जं । जहातेभंते! एत्थंगमणिज्जं तहातेइहंगमणिज्जं, जहातेइहंगमणिज्जंत

तदाम अत्थित्तअत्थित्तेपरिणमइ । तिम प्रकारेमते नास्तिपणू नास्तिपणे परिणमे । जहा मे अत्थित्तअत्थित्ते परिणमइ । जिम प्रकारेमते नास्तिपणू नास्तिपणे परिणमे । तहामे पवित्त पवित्ते परिणमइ । तिम प्रकारेमते अस्तिपणू अस्तिपणे परिणमे । सेपूर्वभंते अत्थित्तअत्थित्ते गमणिज्जं जहाप, परिणमइ वा पामारगा तहागमणिज्जेणवि दोआलावगा भाणियव्वा । ते जिवे हेभगवन् ! अस्तिपणू अस्तिपणे गमनीय, हलोवस् हलोपदेशीय प्रका प्रश यामर्थे परोक्षवार्थवि जिम परिणमनविपे, बेआलावा कहवा, तिम प्रकाशवाक्यनेविपे पवि बेआलावा कहवा । सेपूर्वभंते अत्थित्तअत्थित्तेगम पिउर इत्यादि- वामगे यथागमाजित ए वंते एव पाभावा गमणिज्ज भेदकहवाको तवा । जहातेअत्थित्तअत्थित्ते गमणिज्जं इत्यादि । जावतहामेअत्थित पवित्तममणिज्जं यावत्, तदा मे अत्थित अत्थित्ते गमणिज्ज, तिम प्रकारे भंते अस्तिपणे प्रकाशवायोग्य एपर्यंत कहवा । जहातेभंतेएत्थंगमणिज्जं । जिम प्रकारेमति जिम तुमारेमते मुख सुखियमने शिये पशुरूपा । तहा।तुमारेमते एत्थंस पाखंडिकादि अनविपे प्रकपे । जहाते इहंगमणिज्जं । जिम तुमारेमति

प्रत्यक्षाधिकारवाभतया एत्य मित्यस्य स्वरूपमिति गमनीय, तथा इह मित्येत स्वरूपमिति, समानार्थत्वा दुयोरपीति, कांक्षामोहनीयकर्म वेदनं मप्रसङ्ग मुक्त मथ तस्यैव बन्धमभिधातुमाह ॥ जीवाणन्ततकसेत्यादि ॥ पमायपच्चयत्ति ॥ प्रमादप्रत्यया त्प्रमत्ततालक्षणा हेतोः प्रमादश्च मद्यादिः अथवा प्रमादग्रहणम मिथ्यात्वाविरतिकषायलक्षणं बन्धहेतुत्रयं गृहीत इष्यतेच प्रमादेनत्रावा स्य यदाह – पमाओयमुणिंदेहि भणिओअट्ठभेयओ । अन्नाणंससओचेव मिच्छानाणंतहेवय॥१॥ रागोदोसोमइब्भंसो धम्मम्मियअणायरो । जोगाणंदुप्पणीहाणं अट्ठहावज्जियव्वओसि ॥२॥ तथा योगनिमित्तञ्च योगा मनः प्रवृतिव्यापारा सोनिमित्तं हेतु यंत्र त तथा बध्नतीति क्रियाविशेषणं चेद एतेनच योगाख्यचतुर्थं कर्मबन्ध हेतुरुक्त चः समुच्चये अथ प्रमादादेरेव हेतुफलभावदर्शनायाह ॥ सेणमित्यादि ॥ पमाएकिंपवहेत्ति ॥ प्रमादो भदो कस्मा त्प्रवहति प्रवर्तवहति

हंतेइत्थगमणिज्जा ? हंता गोयमा ! जहामेइत्थगमणिज्जा तहामेइत्थगमणिज्जा । जीवाणन्ते ! कंखामोहणि ज्जकम्मंबंधति ? हंता गोयमा ! बंधति । कहण्णंते ! जीवाकंखामोहणिज्जकम्मंबंधति गोयमा ! पमाद

पक्षपात पाखंडीनविषै वस्तुप्रकपावे । तथातेएत्थगमणिज्ज । तिम तुम्हारेमते सुमिथ्यादिकनेविषै प्रकपीवे ? भगवतकहेछे– हंतागोयमा । हां गोतम । ज हामेएत्थगमणिज्ज । जिम म्हारे मते सुमिथ्यादिकने प्रकपीये इत्यादि । जावतहामेएत्थ गमणिज्ज । यावत् तिम म्हारेमते सुमिथ्यादिकने प्रकपीये इत्यादि । हिवे कांक्षामोहनीयना बंध कहेछे–जीवाणं भंते कंखामोहणिज्जं कम्मंबंधति । जीव हेभगवन् ! कांक्षामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय कर्म बांधे भगवंतकहेछे–हंताबंधति । हांगोतमबांधे । कहण्णंभंते जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मंबंधति । केहकारणे करीने जीवकांक्षामोहनीयकर्म बांधे ? उत्तर । गोयमा पमादपच्चय । हेगोतम ! प्रमादप्रत्ययथी प्रमत्तताक्षणकारणथी प्रमाद ते मद्यादि अथवा मिथ्यात्व अविरति कषायलक्षण बंधहेतु तीनप्रमाद, एहनो प्रमादनेविषे अंतर्भाव छे यदाह – पमाओयमुणिंदेहि भणिओअट्ठभेयओ अन्नाणंससओचेव मिच्छानाणंतहेवय ॥१॥ रागोदोसोमइब्भंसो धम्मम्मियअणायरो जोगाणंदुप्पणीहाणं अट्ठहावज्जियव्वओसि ॥२॥ जोगनिमित्तंच । जोगप्रमुखमन व्यापार तेहीज निमित्त हेतु

कि प्रयद पाठान्तरेण कि प्रभवा ॥ जोगप्पवहेत्ति ॥ योगो मनः प्रवृत्तिव्यापार सत् प्रवहत्वञ्च प्रमादस्य, मद्याद्यासेवनस्य मिथ्यात्वादिप्रय स्य च मनः प्रवृत्तिव्यापारमन्तरेण भायात् ॥ वीरियप्पवहेत्ति ॥ वीर्यनाम वीर्यान्तरायकर्मक्षयक्षयोपशमसमुत्थो जीवपरिणामविशेषः ॥ सरीरप्पवहेत्ति ॥ वीर्यं द्विधा सकरण मकरणञ्च तत्रा लेश्यस्य केवलिनः कृत्स्नयो र्ज्ञेयदृश्ययोः केवल ज्ञान दर्शन योपयुञ्जानस्य योसा वपरिस्पन्दो प्रतिघा जीवपरिणामविशेष सदकरण तदिह नाधिक्रियते यस्तु मनोवाक्कायकरणसाधनः सलेश्यजीवकर्तृको जीवप्रदेशपरिस्पन्दात्मको व्यापारो सौ सकरण वीर्य तच्च शरीरप्रभव शरीर विना तदभावादिति ॥ जीवप्पवहेत्ति ॥ इह यद्यपि शरीरस्य कर्मापि कारण न केवलएव जीव स्त

पच्चय जोगनिमित्तञ्च । सेणञ्जते ! पमादेकिंपवहे ? गोयमा ! जोगप्पवहे । सेणञ्जते ! जोएकिंपवहे ? गोयमा ! वीरियप्पवहे । सेणञ्जते ! वीरिए किंपवहे ? गोयमा ! सरीरप्पवहे । सेणञ्जते ! सरीरे किंपवहे ?

जिहांबे इमकम बांधे एतले यावनाम जोवकमबनाहेतु कह्या । सेणभंतेपमादेकिंपवहे । ते कहेछे प्रमादकोहथकी उपजे, हेभगवन् प्रमाद किंवस्तुथकी प्रवर्ते उपजे इतिप्रश्न । गोयमा जोगप्पवहे । हेगोतम ! योगते मन प्रमुखनो व्यापार तेहथी प्रमाद उपजे । सेणभंतेजोगेकिंपवहे । ते यथा हेभगवन् ! योग केहथकी प्रवर्ते उपजे ? गोयमा । हेगोतम । वीरियप्पवहे । वीर्य ते वीर्यान्तरायकर्मक्षयोपशमथी उपनो जीवपरिणामविशेष तेहथी उपजे । सेणभंतेवीरिए किंपवहे । ते यथास्यो हेभगवन् ! वीर्य जीवपरिणामविशेष केहथकी प्रवर्ते छे गोयमा । हेगोतम ! वीर्य बेप्रकारनो छे सकरणवीर्य १ अकरणवीर्य २ तिहां अलेश्यो केवलीने समस्त ज्ञेयना तथा देखवो तेहनेविषे केवलज्ञान केवलदर्शन प्रयुंजताने जे भावपरिणाम अप्रतिघातो जीवपरिणामविशेष ते अकरणवीर्य १ तेहना इहां अधिकार नथी इहां तो मनवचनकायकरणसाधन सलेश्यजीवप्रदेशात्मक व्यापार ते सकरणवीर्य ते शरीरप्रभव शरीरविना तेहना अभावथी । सेणभंतेसरीरेकिंपवहे । ते यथा हेभगवन् ! शरीर केहथकी प्रवर्ते उपजे ? गोयमा । हेगोतम । जीवप्पवहे । जीवथकी प्रवर्ते इहां यद्यपि शरीरना कर्मपण कारणछे तिवारेपण जीवहीज कारण छे, तथापि कर्मनो कर्ता जीवछे तेमाटे जीवप्रधानथी जीवप्रभव शरीर कह्यो, । एवंच

यापि कर्मणो जीवकृतत्वेन जीवप्राधान्या ज्जीवप्रधर्ष शरीर मित्युक्तं अथ प्रसङ्गतो गोशालकमतं निषेधयन्नाह ॥ एवसइत्ति ॥ एवं सुत्थ्याये न जीवस्य काङ्क्षामोहनीयकर्मयन्धकत्वे सति घस्ति विद्यते न तु नास्ति यथा गोशालकमते नास्ति जीवाना मुत्थानादिपुरुषार्थोसाधकत्वा त्वि यतितएव पुरुषार्थसिद्धेः यदाह – प्राप्तव्योनियतिबलाश्रयेणयोर्थः सोवश्यमवतिनृणांशुभोशुभोवा । भूतानांमहतिकृतेपिहिप्रयत्ने, नाभाव्यमवति भवाविनोस्तिनाशइति ॥ १ ॥ एवहि धर्ममाविनाया नियते रभ्युपगमः कृतो भवति अप्यहस्तिपुरुषकारापलापय स्यादिति ॥ उठाणेइवत्ति ॥ उत्थानमिति वेतिवाच्ये प्राकृतत्वात्सन्धिलोपाभ्या मेवन्निर्देश तत्र उत्थानमूर्द्धीभवन इति रूपप्रदर्शने, वाशब्दो विकल्पे समुच्चयेवा ; ॥ कम्मेइव ति ॥ कम्मउरक्षेपणापक्षेपणादि ॥ बलइवत्ति ॥ बल शारीरः प्राणः ॥ वीरिएइवत्ति ॥ वीर्यं जीवोत्साहः ॥ पुरिसक्कारपरक्कमइवत्ति ॥ पुरुषकारश्च पौरुषाभिमानः पराक्रमश्च सएव साधिताभिमतप्रयोजनः पुरुषकारपराक्रमः अथवा पुरुषकार पुरुषक्रिया साच प्राय स्त्रीक्रियात प्रकर्षव ती भवति तत्स्वनायस्त्वादिति विशेषेण तद्ग्रहणं पराक्रमस्तु शत्रुनिराकरणमिति काङ्क्षामोहनीयस्य वेदन मन्यत्र सहेतुक मुक्तं अथ तस्यैवोदी रणा मन्यच्च तद्गतमेव दर्शयन्नाह ॥ सवूकमित्यादि ॥ अप्पणाचेवत्ति ॥ आत्मनैव स्वयमेव जीवो ऽनेन कारणो अन्यादिषु मुख्यवृत्त्या समन्वया चि कार उक्तो मापरस्य आहच – अणुमतोयिकस्सइ बंधोपरवत्थुपच्चयामहितीति । उदीरयति करणविशेषेण कृष्य भविष्यत्कालवेद्य मपकाय उद

गोयमा ! जीवष्पयहे, एवसइ अत्थिउठाणेइवा कम्मेइवा बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कारपरक्कमेइवा सेणू

ण भंते ! अप्पणाचेवउदीरेह अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसंवरइ ? हंता गोयमा ! अप्पणाचेवतंचेव

दपत्थिउठाणेइवा । इसयका पे समार्थी, इत्यादति रूपनिदर्शने, वाशब्द विकल्पाय । कम्मेइवा । कम गमनादि उत्क्षेपण ि, मवक्षेपणादि । बलेइ वा । शरीरनोसमर्थो । वीरिएइवा । जीवनोउत्साह, । पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । पुरुषना अभिमान पराक्रम एहनो साधना कारा पूराकीधो ते । सेणू णभंतेअप्पणाचेवउदीरेह । तेनिश्चे हेभगवन् । आपणपे निश्चे उदीरे एतलं पातेज जीव कम्मबंधादिकर्मनेविषे सुम्मके, जीवजीवेमझी, । अप्पणाचेवगरहइ ।

मावनिक्षापा प्रवेशयति, तथा ॥ गरहइत्ति ॥ चात्मनैव गर्हते निन्दती त्यतीतकालकृत कर्म स्वरूपत तत्कारणगर्हद्वारेणवा जातविशेषबोधसम् तथा ॥ संवरइत्ति ॥ संवृणोति नकरोति वर्तमानकालिक कर्मस्वरूपत तद्धेतुसंवरद्वारेणवेति यद्यपि गुर्वादीनामपि सहकारित्वमस्ति तथापि न तेषा प्राधान्य जीववीर्यस्यैव तत्कारणत्वात् गुर्वादीनाञ्च वीर्योल्लासनमात्रएव हेतुत्वादिति यथोदीरणामेवा मित्याह ॥ गर्हतइत्यादि ॥ अत्रावसर यथो दीरयतीत्यादि पदत्रयोद्देशकपि कस्मात् तंकिंउदिन्नउदीरेइइत्यादिना प्रथमपदस्यैव निर्देश कृत ? उच्यते उदीर्णोदिते कर्मविशेषचतुष्टये उदीरणामेवा मित्य विशेषकस्य सद्भावादित्यपो सु सरज्ञाना दैव तत्सूत्रमसूत्रेणहंते सवृणोती त्येतत्पदद्वय कस्मादुपात्त उत्तरत्रानिर्देश्यमानत्वात्तस्येति ? उच्यते कर्मणउदीरणाया गर्हासंवरयो प्रायउपाया वित्यभिधानार्थं एवमुत्तरत्रापिवाच्यमिति प्रमाणे पदो तरत्रप्रत्याभा होइत्या तत्र ॥ नोउदिन्नउदीरेइत्ति ॥ उदीर्णत्वादेव उदीर्णस्या प्युदीरणे उदीरणाविरामप्रसङ्गात् ॥ नोअणुदिन्नंउदीरेइत्ति ॥

उत्थानेयत्ति। जतन्नते! अप्पणाचेवउदीरेइ अप्पणाचेवगरहइ अप्पणाचेवसवरइ, तांकिंउदिन्नउदीरेइ १ अणुदिन्नंउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ ३ उदयाणतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ ४ ? गोयमा! नोउ

पापयोत्र पमोतकामे कमकोबारेत्यरहे, बार १ निंदातेकरजा। अप्पणाचेवसवरइ। पापयोत्र सवरे, वर्तमानकाले कर्म नकरे। हंतामोयमा। हांगोतम। अप्पणाचेवतचेरणादिकर्म। भाभादेकतोत्र कर्मनपकरे एम पूर्वपूर्व कह्यो, तिमज करयु। अंतअतेअप्पणा। चेते हेभगवन्। आपयपेज। चेवउदीरेइ। निंदेउदीरे। अप्पणाचेवगरहइ। आपणपेज निंदे गरहे। अप्पणाचेवसवरइ। आपणपेज निंदे संवरे। तंकिंउदिन्नउदीरेइ। ते किं उदयमाप्त उदीरे। अथवा। अणुदिन्नउदीरेइ। अणउदयमाप्त ते उदीरे। अथवा। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। उदयमाप्त उदीरणायोग्य उदयप्रापमाने कर्म पर्व एमाई तेकम उदीरे। उदयाणतरपच्छाकडकम्मउदीरेइ। जेकम उदयने अनंतरसमय तेहनोविषे पश्चात्कृत अतीतपणामते पमुंगो तेकर्म उदीरे। गोयमा। हेगोतम। नोउदिन्नउदीरेइ। उदयमाप्त ते उदीरे नही, उदयआवमाटे उदयभावमां प्रवेश ते नहवे। नोअणुदिन्नंउदीरे

इहा मुदीर्णं चिरेण भविष्यदुदीरणमभविष्यदुदीरणञ्च तन्नो दीरयति तद्विषयोदीरणाया सम्प्रत्यनागतकालत्वाभावात् ॥ अनुदीर्णंउदीरणाभविय कर्मउदीरयति ॥ अनुदीर्णं स्वरूपेण किं त्वनन्तरसमयएव यदुदीरणाभविय तदुदीरयति विशिष्टयोग्यताप्राप्तत्वात् तत्र भविष्यतीति भवा सैवम् यिका उदीरणाभविकास्येति प्राकृतत्वा दुदीरणाभविक मन्यथा भविकोदीरणमिति स्या दुदीरणायावा भव्य योग्य मुदीरणाभव्यमिति ॥ नोद

दियाउदीरेइ १ नोअणुदिन्नउदीरेइ २ अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ ३ नोउदयाणतरंपच्छाकडंकम्मउ दीरेइ ४॥ जतन्नते ! अणुदिन्न उदीरणाभवियकम्म उदीरेइ तकिंउट्ठाणेण कम्मेण बलेण वीरिएणं पुरिस क्कारपरक्कमेण अणुदिन्नउदीरणाभवियंकम्मउदीरेइ , उदाहुतंअणुट्ठाणेण अकम्मेण अबलेण अवीरिएण

२। उदयमाव्युं तेपणि उदीरे नहीं, जपंचाले उदयपावले तेकर्मेविषे उदीरणानुं साम्रर्थभावछे। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। अरूपे उदय पाम्युं नथी किंतु अनन्तरसमयमेंविषे जे उदीरणाइयोग्य तेकर्म उदीरे, विशिष्टयोगनी प्राप्तिथी, अथवा उदीरणाने भव्य कहता योग्य ते उदीरणाभव्य क होवे उदीरणा भावे कर्मउदीरे। नोउदयाणतरंपच्छाकडंकम्मंउदीरेइ। जेकर्मने उदयने अनन्तरसमय तेकर्मेविषे पश्चात्कृतकर्म अतीतपणामते पहुंतो जे तपणि उदीरेनही, तेकर्म अतीतपणाने अतीत ते गयूं, गयूं ते अनुदीरणीय थयो, इहां यद्यपि उदीरणादिकर्मेविषे कालस्वभावादिकनो कारणछे, तथापि प्राधान्यपणे पुरुषवीर्यनोज कारणपणो देखाडेछे—जतभंतेअणुदिन्नउदीरणाभवियंकम्मउदीरेइ। जे ते हेभगवन् ! उदयमाव्युं नथी अनंतरसमये ते कर्म उदीरणे तेकर्मउदीरे। तंकिंउट्ठाणेणं। तेणं उत्थानादयों। कम्मेणं। कर्मणसमादि। बलेण। शरीरमोसमर्थोई। वीरिएण। वीर्य ते जीवनो उत्सा ह। पुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार अभिमानविशेष पुरुषक्रियामेंविषेजीव जोपणाथी पोतानोविषय। अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ। एतले प्रकारेकरी अनुदयछे, अने उदीरणानुं मूलछे तेकर्म ते उदीरे उताव—अनाकालाविकतावा। इतिवचनात्, उदाहुतंअणुट्ठाणेण। अथवा ते उत्थानवि ना। अकम्मेण। कर्मविना। अबलेण। बलविना। अवीरिएण। वीर्यविना। अपुरिसक्कारपरक्कमेण। पुरुषाकार पराक्रमविना। अणुदिन्नउदीरणाभवि

द्यावंतरपक्षाकळति ॥ उदयेना मनतरसमये पश्चात्स्त मतीततां मीत य न तथा तदपि नो दीरयति तस्मातीतस्वा दत्तीतस्यथा सभ्या दस तवा मुदीरवीयत्वादिति इहच यद्यप्युदीरणादिषु कालस्वभावादीनां कारणत्व मस्ति तथापि प्राधान्येन पुरुषवीर्यस्यैव कारणत्व मुपदर्शयन्नाह ॥ उत्तमित्यादि ॥ व्यक्त नवर उत्थानादिना दीरयतीत्युक्तम् तत्र यदापन्न तदाह ॥ एवमहाति ॥ एव मुत्थानादिसाध्ये उदीरणे सतीत्यर्थ शेष तथैव कांक्षामोहनीयस्यो दीरणोक्ता अथ तस्यैवोपशमनमाह ॥ सेनूणमित्यादि ॥ उपशमन मोहनीयस्यैव यदाह—मोहस्सेवोवसमो उदयस

श्रपुरिसक्कारपरक्कमेण श्रणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ ? गोयमा ! तउठाणेणवि कम्मेणवि बलेणवि वीरिएणवि पुरिसक्कारपरक्कमेणवि श्रणुदिन्नउदीरणाभवियकम्म उदीरेइ , णोतश्रणुठाणेण श्रकम्मेण श्रबलेण श्रवीरिएण श्रपुरिसक्कारपरक्कमेणश्रणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउदीरेइ , एवसइश्रत्थिउठाणेइवा कम्मेइवा बलेइवा वीरिएइवा पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । सेणूणभंते ! श्रप्पणाचेवउवसामेइ श्रप्पणाचेवगरहइ

यच्च उदीरेइ । उदयमाप्यूनको यत्नं उदीरणामूतके ते कर्म उदीरे । गोयमा । हेगौतम ! तउठाणेणवि । तेकर्म उत्थानेंकरी पणि । कम्मेणवि । कर्मेंकरी पणि । बलेणवि । बलेंकरीपणि । वीरिएणवि । वीर्येंकरीपणि । पुरिसक्कारपरक्कमेणवि । पुरुषात्कारपराक्रमेंकरी पणि । अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्म उदीरेइ । अनुदयमें उदीरणा भव्य कर्मप्रतें उदीरें । णोतअणुठाणेणं । नहीं ते अनुत्थानेंकरी नहींचिष्टाविशेषें अकम्मेण । नहींगमनादिक्रियाकरी । अ बलेण । नहींशरीरसामर्थ्यपणें । अवीरिएण । नहींजीवउत्साहें । अपुरिसक्कारपरक्कमेणं । नहीं पुरुषात्कार पराक्रमेंकरी । अणुदिन्नउदीरणाभवियकम्मउ दीरेइ । उदयरहित उदीरणा भव्य उदीरणाविषापणि भव्यमेव कर्म उदयमार्गे । एवसंभइ । इम छता । अत्थिउठाणेइवा । छै उत्थानेंकरी । कम्मेइवा । कर्मेंकरी । बलेइवा । बलेंकरी । वीरिएइवा । वीर्येंकरी पुरिसक्कारपरक्कमेइवा । पुरुषात्कार पराक्रमेंकरी अनुदय उदीरणा भव्य कर्म उदीरे ए कांक्षा मोहनीयउदीरणाकही । हिवे कांक्षामोहनीयनाउ उपशम कहेछे—सेणूणभंतेअप्पणाचेवउवसामेइ । ते निश्चे हेभगवन् । आपणपेंज निश्चे कांक्षामोहनी

मोचउपशमाख्य । उदयक्षयपरिणामा भवदयिकौपशमिकभावं ॥ १ ॥ उपशमस्य उदीर्णस्य क्षयो मुदीर्णस्य विपाकत प्रदेशतया ननुभवनं सर्वे येव चिकचितोदयत्यमित्यर्थ भयभ्वा नाविमिथ्यादृष्टे रौपशमिकस्य सम्यक्तस्य लाभे उपशमश्रेणिगतस्यवेति ॥ भणुदिर्णउवसामेइत्ति ॥ उदीर्णस्य स्ववर्यं वेदनाउपशममाजायइति उदीर्णसद्धेयतइति यवनसूत्र तत्र उदिण्णवेएइत्ति ॥ भनुदीर्णस्य वेदमाजायात् भया नुदीर्णमपि वेदय ति तर्हि उदीर्णानुदीर्णयो को विशेषः स्यादिति वेदितस चिक्रीर्यते इतिमिश्ररासूत्र तत्र ॥ उदयाणंतरपच्छाकडेति ॥ उदयेना नन्तरसमये मत्ययारजस्य मतीतता क्रमित ततया त क्षिर्श्वरयति मदेशान्य शातयति मान्य दननुभूतरसत्वादिति उदीरणोपशमवेदननिर्झरणसूत्रोक्ताय

इ अप्पणाचेवसवरइ ? हंता गोयमा ! एत्थवितहेवभाणियव्वं , नवरं अणुदिन्नंउवसामेइ , सेसापडिसेहेयव्वातिण्णि । जंतंभंते ! अणुदिन्नंउवसामेइ तंकिंउठाणेणजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा , सेणूणं भंते ! अप्पणाचेववेदेइ अप्पणाचेवगरहइ ? हंता गोयमा ! एत्थविसच्चेवपरिवाडी , णवरं उदिण्णंवेदेइ नोअणुदिन्नं वेदेइ , एवंजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा । सेणूणंभंते ! अप्पणाचेव णिज्जरेइ अप्पणाचेवगरहइ ? हंता

यकम उपशमावे । भप्पणाचेवगरहइ । भात्मायेकरीनेज भरहे निंदे । भप्पणाचेवसवरइ । भात्मायेकरीनेज सवरे इतिमग्र, । हंता गोयमा हांगौतम । एत्थवितहेवभाणियव्वं । इहांपणि तिमज पूर्वोक्तविधि कहवो । नवरंभणुदिन्नंउवसामेइ । एतलोविशेष उदयमाव्यं तेहमें उपशमावे, उदयमाव्योते पय मीं वेदाय पणि उपशमपणामों भणावहे । सेसापडिसेहियव्वातिण्णि । बाकता बरजवा तीन भांगा, उदिन्नंउवसामेइ इत्यादि २ । जंतंभंतेभणुदिन्नंउवसा मेइ । जे ते हेभगवन् । उदयमाव्यं ते उपशमावे । तंकिंउठाणेण । ते स्युं उठाणेकरी । जावपुरिसक्कार परक्कमेइवा । यावत् पुरुषाकार । पराक्रमेकरी उपशमावे तोकहे वाडवो उदयमाव्यं तेहम वेदे तीमाटे वेदनासूत्र । सेणूणंभंतेअप्पणाचेववेदेति । ते निश्चे हेभगवन् ! भात्मायेकरीने शुभाशुभकर्म ते उदय माव्यो भात्मायेकरीनेज वेदे । भप्पणाचेवगरहइ । भात्मायेंकरीनेज गरहे । एत्थविसच्चेवपरिवाडी । इहां पणि इमहीज सगलोही परिपाटी कहवो ।

गहणगाथा – तहएकउम्मेरैंती उवसामेंतियपुवोविवीएव । वेदतिनिज्जरातिय पढमचउत्थेविंसव्वेवि ॥ १ ॥ अथ काङ्क्षामोहनीयवेदनादिकं निर्जरान्तसूत्रप्रपञ्चं नारकादिचतुर्विंशतिदण्डके नियोजयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ एवंमेव ॥ जहाओहियाजीवाइत्यादिना ॥ इहावेयंति कहणंभंतेनेरइयाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेयंति ? गोयमा तेहिंतेहिंकारणेहिं इत्यादिसूत्रं ॥ निर्जरासूत्रान्तं स्तनितकुमारप्रकरणं तेषु प्रकरणेषु सूचितं तेषुच पदपदजीवपदं स्थानपतितं तत्रतत्र नारकादिपदमध्येयमिति पञ्चेन्द्रियाणामेव प्रकृतत्वाद्यः काङ्क्षामोहनीयवेदनप्रकारा घटन्ते नैकेन्द्रियादीनां,

गोयमा ! एत्थयिसद्दोयिपरियाकी , णवरउदयाणतरपच्छाकडंकम्मनिज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइवा । नेरइया णंभंते ! कंखामोहणिज्जंकम्मंवेदंति ? जहा ओहिया जीवा तहानेरइया , जाव थणियकुमारा । पुढविकाइ

नवरउदिणवेदेइ । एतलाविशेष उदयमाव्या ते वेदे । यावत्सदिणवेदेइ । उदयमाव्या ते वेदेनहीं, अनुदयनें वेदनानों अभावछे । एवजावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा । इम यावत् पुरुषाकारपराक्रमलगें कहवो वेदमवेदीये निजरीये तेमाटे निर्जरासूत्र कहेछे—सेपूर्वभंतिपव्वपावेतविज्जरेइ । ते निर्जरे हेभगवन् ! पाद्मायेकरीनेंज कम निर्जरे । अथपावेतगरदइ । पाद्मायेकरीनेंज जरे । एत्थविसद्देविपरिताली । इहांपणि इमहीज सगली परिपाटी जाणवी । णवरउदयाणंतरपच्छाकडकम्मंनिज्जरेइ । एतलाविशेष उदयेंकरी अनतरसमयनेंविषे पश्चात्कृत अतीतपणुं पाम्यो ते तिम निर्जरे प्रदेशथीगालनकरे । एवंजावपरक्कमेइवा । इम यावत् पराक्रमतांई कहवो इविणप्रकारें विशेषण सव कहवो, । हिवे कांखामोहनीय वेदनादिकनिर्जरापर्यंत सूत्रनो विस्तार नारकादिदण्डकनेंविषे कहेछे । नेरइयाणंभंतेकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेंति । नारकी हेभगवन् । कांखामोहनीयकर्मवेदे । जहाओहियाजीवातहानेरइया । जिम ओधिकजीव कह्या तिम नारकीकहवा । जावथणियकुमारा । यावत् स्तनितकुमार तांइमें कहवो, । पंचेंद्रियनें शंकितादिदोषवहवे करी कांखामोहनीय वेदनादि हुवे पणि एकेंद्रियादिकनें शंकितादिदोषना अभावथी कांखामोहनीयकर्मनों वेदवूं नथीहुवे तेमाटे एकेंद्रियनें विषेज दिखाडेछे—पुढविकाइयाणंभंतेकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेंति । पृथ्वीकाय हेभगवन् । कांखामोहनीयकर्म वेदे । हंतावेदेंति । हा

मत सर्वा विसेषेवतद्वेदमप्रकारवर्समायाद ॥ पुढविकाइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त अक्षर ॥ एव तक्काइवत्ति । एवं अवयमाघोसेसेम तर्को विमर्शो की सिद्धमिदंमय माकतस्यात् ॥ सन्नाइवत्ति ॥ सन्ना पावमवरूप म्मार्न ॥ पन्नाइवत्ति ॥ प्रज्ञा मज्ञेयविसेषविषय ज्ञानमव ॥ मणेइवत्ति ॥ मनः स्मृत्यादिविसेषमतिभेदरूपं ॥ वइइवत्ति ॥ वाग्वचनं ॥ सेसतचवत्ति ॥ शेष तदेव यदौचिकमप्रकरणेचीत सवेद ॥ हता गोयमा ! तमेव सच्चं णी सक जं जिणेहिं पवेइय, से णूणं भंते एवं मण धारेमाणेइत्यादि ॥ तावद्वाच्य यावत् ॥ सेणूण भंते अप्पणाचेव निज्जरेइ अप्पणाचेव गरिहइइत्या दे: सूत्रस पुरिसक्कारपरक्कमेइवत्तिपर्द ॥ एवं जाव चउरिंदियाणं ॥ पृथ्वीकायप्रकरणव तप्कायादिप्रकरणानि चतुरिन्द्रियप्रकरणान्ता न्यध्येयानि

याणभंते ! कखामोहणिज्जकंमवेदति ? हतावेदति । कहणभंते ! पुढवीकाइयाकखामोहणिज्जकमवेदति ? गोयमा ! तेसिणजीवाणं णो एव तक्काइवा सन्नाइवा पन्नाइवा मणेइवा वइइवा अम्हेण कखामोहणिज्ज कम वेदेमो वेदेति । पुणते, सेणूणभंते ! तमेवसच्चंनीसक जंजिणेहिपवेइय , सेसतचेव जाव पुरिसक्कारपर

गोतम । वेदे । कथयभंते पुढविकाइयाकखामोहणिज्जकमवेदेति । किसेप्रकारे हेभगवन् । पृथिवीकायना जीव कांखामोहनीयकर्म वेदे ? । गोयमा । हेगौतम । तेसिणजीवाणा । तेह जीवने इम भाव कहीने ते नहीं । एवतक्काइवा । तक कहिये विचार तेपिं रहितछे । सन्नाइवा । अर्थावग्रहरूप ज्ञा न ते नथी । पन्नाइवा । समस्त विशेषज्ञान ते नथी । मणेइवा । मननथी स्मृतिप्रमुखविशेष मतिभेदरूप नथी । वइतिवा । वचननथी । अम्हेणकखा मोहणिज्जकम्मवेदेमोवदेंतिपुणते । अमे कांखामोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय कर्म वेदूछू एतला तेजीव नजाणे पुणवेदता थकी ते जीव कांखामोहनीय कर्म वेदे । सेणूणंभंतेतमेवसच्चंणीसकजंजिणेहिपवेइयं । ते निश्चे हेभगवन् ! साधुने इम कहवा तेहीज साच् अंकादिदूषणपरवर्जित जेजिनवचनेंवछै प्र रूप्या । सेसतंचेव । शेष बाकता तेहीज जेजीविशेषप्रकारवर्णनेपिणै कहवु । जावपुरिसक्कारपरक्कमेइवा । यावत् पुरुषाकार पराक्रमतांई कहवो । एव जावचउरिंदियाणं । इम अपकायथी मांडी यावत् चउरिंद्रीसमें कहवा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाजावमेमाणियाजहाओहियाजीवा । पंचेंद्रीतिर्यंचथी

तिपच् पञ्चन्द्रियप्रकरणादीनि तु वैमानिकप्रकरणान्तानि औधिकजीवप्रकरणवत् तदभिलापेनाध्येयानीत्यतएवाह ॥ पचेंदिएत्यादि ॥ अवसु नाम
शेषजीवानां काङ्क्षामोहनीयवेदनं निपन्नानां पुन सा न सम्भवति जिनागमावदाततुद्दित्वा तेषामिति मप्रपचाह ॥ मत्थिणमित्यादि ॥ काङ्क्षा
व्यर्थं प्रतिपाद्यते इयं पतो पटुत ममता व्रतिनः, अपिशब्दः श्रमणानां काङ्क्षामोहनीयस्या वेदनसम्भावनार्थं सोत शाक्यादयोपि भवन्तीत्या
ह निग्रन्थाः मयाद्यान्यन्तरग्रन्थात् निगताः साधवइत्यथः ॥ नाणतरेहिंति ॥ एकस्मा ज्ञानाद् न्यानि ज्ञानानि ज्ञानान्तराणि तै ज्ञानविशेषे
ज्ञानविशेषेषुवा शङ्किता इत्यादिभिः सम्बन्ध एव सवत्र तेषुचैवं शङ्कादयः स्यु यदिनाम परमाण्वादिसकलरूपिद्रव्यावसानविषयग्राहकत्वेन
मद्भुतातीतरूपा ण्यवधिज्ञानानि सन्ति तदिकमपरेण मनःपर्यायज्ञानेन तद्विषयभूतानां मनोद्रव्याणां मवधिनैव गृहत्वा ? उच्यते आगमे मनःपर्याय
ज्ञानमिति कि मत्र तत्व मिति ज्ञानतः शङ्का इह समाधिः यद्यपि मनोविषय मव्यवधिज्ञानमस्ति तथापि न मनःपर्यायज्ञान मवधा समस्तमेवास्ति

पुढविक्काइया, एवं जाव चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाजाववेमाणिया, जहाओहियाजीया। अत्थि
णंभंते! समणानिग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मंवेदंति? हंतात्थि। कहणंभंते! समणानिग्गंथाकंखामोहणिज्जं
कम्मंवेदंति? गोयमा! तेहिंतेहिं कारणेहिं, नाणंतरेहिं

निकप्रकरणने पांचेंद्रिं यावत् वैमानिकप्रकरणपर्यंत जिम औधिकजीवप्रकरणे कह्य तिम इहांपणि कहवो, शेष जीवने मिथ्यात्वमोहनीयनो वेदवो
थावो, पर ते निर्ग्रंथने न संभवे, जिनागमने निर्मलबुद्धिए वेदनो इसो पूछतो कहेछे—अत्थिणंभंते समणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदंति । वे बंसे
शाश्वतमकारे, हेभगवन्! श्रमण तपस्वी साध्वादिकपणि इहां तेमाटे कहेछे—बाह्याभ्यंतरग्रंथरहित एहवा साधु ते कांक्षामोहनीयकर्म वेदे, तेहनो उत्त
र भगवंत कहेछे—हंतात्थि। हांगोतम वेदेछे। कहणंभंतेसमणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेंति गोयमा तेहिंतेहिंकारणेहिं नाणंतरेहिं । किसेप्र
कारे हेभगवन्! श्रमणतपस्वी निर्ग्रंथ बाह्याभ्यंतरपरिग्रहरहित मिथ्यात्वमोहनीयकर्म वेदे इतिप्रश्न, हेगोतम! तेहितेहिं कारणेकरी तेकारणकहेछे—ज्ञा

नियतप्रायस्त्वा तथाहि—मन:पर्यायज्ञानं मनोमात्रद्रव्यग्राहकमवा दर्शनपूर्वकञ्च ...
योजपयाहकं दर्शनपूर्वकञ्च ननु केवलमनोद्रव्यग्राहक मित्यादि वचुवत्क्य मतोऽवधिज्ञानातिरिक्त स्मवति मनः...
सामान्यबोध तत्र यदि नामेन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तः सामान्यार्थविषयो बोधो दर्शन तदा किमेव चक्षुर्दर्शन मचक्षुर्दर्शनं मये न्द्रियाणि
न्द्रियजदा उेद सदा चक्षुपदव श्रोत्रादीनामपि दर्शनभावात् पञ्चिन्द्रियमोइन्द्रियजानि दर्शनानि स्यु भेदैरप्येवेति अत्रसमाधिः, सामान्यविशेषा
त्मकत्वा द्वस्तुन: क्वचिद्विशेषत सामिर्देश: क्वचित सामान्यत तत्र चक्षुर्दर्शनमिति विशेषतोऽचक्षुदर्शनमितिचसामान्यतो अथ प्रकारान्तरेणापिनि
र्देशस्य सम्भवे चक्षुर्दर्शन मचक्षुर्दर्शनञ्चे त्युक्त तदिन्द्रियाणा मप्राप्तकारित्वप्राप्तकारित्वविज्ञाना मनस इत्यप्राप्तकारित्वेऽपि प्राप्तकारीन्द्रियवर्गस्य

दसणतरेहिं

...तरेहि, एम ज्ञानको चोथाज्ञाननेविषे शंकाद्वारे, तेकिम ? अवधिज्ञाननोधणी परमाणुआदि सकलद्रव्य रूपी अवधिज्ञानेकरी जाणे चउदराजको
कना, अने मनपर्यवज्ञाननोधणी मन:पर्यवज्ञानेकरी अढाईद्वीपमांहि संज्ञीना मननीवार्त्ता जाणे, एतले अवधिज्ञानी अवधिज्ञानेकरी मननीवार्त्ता
जाणे, तिवारें मन:पर्यवज्ञाननो विशेष कांइनथी, एतले ज्ञाननो प्रकाशपणे एहनो उत्तर लिखीयेछे—यद्यपि सकलद्रव्यनी जाणपणो अवधिज्ञा
नीनें छे, तथा ते मन:पर्यवज्ञान नथी, तेहनो भिन्नस्वभावछे, तेकिम मन:पर्यवज्ञान मनोद्रव्यग्राहक दर्शनपूर्वक नथीछे, अने अवधिज्ञान क्षयोपशम
समनिता द्रव्यग्राहीछे, क्षयोपशम उभयग्राहीछे, अने दर्शनपूर्वकछे, पुन ते केवल मनोद्रव्यग्राही नथी इत्यादिकमाटे अवधिज्ञान मन:पर्यवज्ञान जु
दा कह्या ते ज्ञानांतरकहीये । १ । दंसणतरेहिं । दर्शनसमुच्चये इंद्रीसमुच्चयविषे करि जाणीयें ते दर्शनकहीये तोचक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन जुदा कांकहो
छे, इहां शंकानो उत्तर अचक्षुदर्शन शरीरादिकसामान्यको देखे, अने चक्षुदर्शन विशेषथी देखे इति विशेष, दोयदर्शन जाणीयेंछे, इहां सर्वज्ञे गोर
ग्रो देखवानो स्वरूप कह्योछे अथवा दर्शनसमकितनेविषे शंकापणे, उपशमक्षयोपशमनेविषे मिथ्यात्व वेदे तो ते मोहकोश्चे मिथ्यात्वछे भा

तदनुसरणीयस्य वृत्त्या तद्दर्शनस्य चतुर्भेदेनकल्पेन पदत्वमिति अथवा इमम सम्यक्त्व लक्षण सूत्र — मिच्छत्तंमसुदिन्नं संखीणमणुदियमउवसंत मित्येव सदपं क्षायोपशमिक मौपशमिक मप्येव सकलमंव यदाह — खीणम्मिउइणम्मि अणुदिज्जंतेयसेसमिच्छत्ते । अतोमुहुत्तमेत उवसमस मिस्सइयत्तीवो ॥ १ ॥ ततो नयो मेंविशेष उक्त क्षासाविति समाधिय क्षयोपशमोऽसुदीर्णस्य क्षयो नुदीर्णस्यच विपाकानुभवापेक्षयाऽउपशमस्य देशानुभवतमूरयोरस्येव उपशमेतु प्रदेशानुभवोपि नास्तीति उक्तम्च — वयइसतकम्म खओवसमिएसुनाणुभावसी । उवसतकसाओपुण वेदेइनसत देसमपि ॥ १ ॥ तथा चारित्रं चरण तत्र यदि सामायिकं सर्वसावद्यविरतिसक्षण छेदोपस्थापनीयमपि तत्स्वरूपमेव महाव्रतानां मवद्यविर तिरूपत्वा तस्को नयो भेद उक्त क्षासाविति अत्र समाधिः प्रथमचरमजिनसाधूनां माशासमाय छेदोपस्थापनीय मुक्त प्रतारोपकेहि मनाक्सामायिकाशुद्धावपि प्रताक्षरणात् चारित्रिको वयन्मारित्रस्य प्रवकपत्वा विसिशुद्धिः स्या स्सामायिकमात्रेतु तदशुद्धौ मग्न नयारित्रं चारित्रस्य सामायिकमात्रत्वा दित्येव मनाशुद्धस्य सोपा स्यादिति याहच — रिउवक्कजडापुरिमे मराखसामाइयमयमारुहण । मववयम

चारित्रतरेहि लिगतरेहि

यो नहीं ते उपशमे न क्षमच क्षायोपशमना, उपशमपवि इहि यथ्यं पहने परस्पर विशेष नकाश्यो ती इहां सदैव खपवे तेहनो उत्तर कर्मनीअनो का रच क्षायोपशम उदयमीक पनुदयविपाकनो उपशमपवि प्रदेशनो सदयवे उपशम प्रदेशमौंपवि उदय नथी इतिविशेष ॥ २ ॥ चरित्ततरेहिंहति । चारित्रभाव्यो तिहां सामायिक सर्वसावद्यनो पच्चक्खाण तिहां वसो छेदीने छेदोपस्थापनीय कहता महाव्रतमारोपीये ते किम् कारण इहां मका क पछे तेहनो प्रतित्तर भाषिमायके चारे महावक्रजीवहे, पछे भीमहावीरस्वोमीना चोथा पाँच जदवे, तिवाने समभाविवाने कारण सामायिकवेशी पसापमोवकाशिक्षोधा किवें तुमे पंचमहाव्रतचारित्र आवश्यीपवये पाको, भाष्य—रिउवंकजडापुरिमे वरामसामाइएवमावचर्न । मनवविशुद्धेषिक षा सामाइएवंतिवसार । १ । इतितृतोयपचार्थ ॥ २ ॥ लिंगतरेहिंहति । लिगते साधुनो वेष तिहां चावीसपीर्वकरन चारे लिमार पछपाने तिवापचि

सुदेयमधु सामइयछुतिसुपयाई ॥ १ ॥ तथा सिक्खासुवेय सात्र यदि मध्यमजिनै यथासम्भवसरूप सिक्ख साधूना मुपदिष्ट तदा किमिति प्रथम चरमजिनाभ्यां सममायघवलवसनरूपं तदेयोक्त सर्वेषाना मविरोधिवचनत्वादिति ? अत्रापि ऋजुजडवक्रजडऋजुप्रज्ञशिष्या नाश्रित्य भगवता तस्यो पदेश सर्येव तेषामुपकारसम्भवा दिति समाधिः तथा प्रवचन मत्रा गम सात्र यदि मध्यमजिनप्रवचनानि चतुर्यामधर्मप्रतिपादकानि कथं त्वयमेतरजिनप्रवचने पञ्चयामधर्मप्रतिपादके सर्वेषामा मविरुद्धवचनत्वा?त्रापि समाधि चातुर्यामोपि तत्वत पञ्चयामएवा सौ चतुर्थ प्रतस्य परिग्रहे नानूतत्वा योषाद्दिनासपरिगृहीता मुज्यत इति न्यायादिति तथा प्रवचन मधीते वत्तिवा प्रावचनः कालापेक्षया बहुागमः पुरुष सत्र एक प्रावचनिक एव कुरुते अन्यस्तवेमिति किमित्यत्र तत्वमिति ? समाधिरेह चारित्रमोहनीयक्षयोपशमविशेषेण उत्सर्गापवादादिज्ञाचि

पवयणतरेहि पावयणत्तरेहि कप्पतरेहि

रे, पने मध्यमाने तथा चउवीसमा तीर्थंकरनेवारे साधुने धवलावस्त्र तेपण प्रमाणसहित पहिरे, इहां परस्परविरोध दीसेछे, इहां परस्पर शंका छ पनें तेहना उत्तर इहां पणि ऋजुजड वक्रजड ऋजुप्राज्ञ शिष्य प्रबोध उपगारकारणे जाणवे भगवंत उपदेशदीधा ते लिंगंतरकहीये ॥ ३ ॥ पवयणंतरे हिइति । प्रवचन ते आगम तिहां बावीसतीर्थंकरनेवारे च्यार महाव्रत कह्या, पने प्रथमचरमतीर्थंकरनें वारे पचमहाव्रतधर्म कह्यो, इहां जिनवचनने विषे विरोध दीसेछे, अथपणि शंका उपजे तेहनो उत्तर पूछ्यो पुरिमाउज्जवडाभो इतिवचनात् जे चारिमहाव्रत ते तत्वथको पचमहाव्रतछे तेकिम स्त्री ने परिग्रह एकीभूतछे तेमाटे च्यारमहाव्रतछे पने शुद्धाशुद्धविचारीये तो पंचमहाव्रतछे, ए प्रवचनांतरकहीये ॥ ५ ॥ तथा पावयणांतरेहि इति । प्रवचनभणें अथवा जाणे ते प्रावचनकहता गीतार्थ तेहमांहि एक इमयाकेरो क्रियाकरे, एक अनेरा अनेरी क्रिया करे, इहां शुं प्रमाण ? इम शं का ऊपजे तेहनो प्रति उत्तरपूछ्यो, इहांतो चारित्रमोहनीयकर्मक्षयोपशमविशेषे करी अपवादादिभावेंकरी गीतार्थोंको विविधप्रवृत्तिप्रवर्त्तयो स र्वेपणि प्रमाणछे, एमावचनांतरकहीये ॥ ६ ॥ कप्पतरेहिइति । कल्पकहतां जिनकल्पादि सामाचारी तिहां जिनकल्पीतो नग्नतादिभावकष्टे प्रवर्त्ते अ

तत्वेनव प्रावचनिकाना विचित्रा प्रवृत्तिरिति, नाप्ती सर्वेषापि प्रमाद मागमाविरुद्धप्रवृत्तेरेव प्रमाणत्वादिति तथा कल्पो जिनकल्पिकादिसमाचार तत्र परिमाण जिनकल्पिकाना नाम्न्यादिरूपो मशाकः कल्प कर्म्मक्षयाय तदास्थविरकल्पिकानां सकपायादिपरिजोगरूपो यथाशक्तिकरवासको कष्टस्वभावः कथ कुर्म्मक्षयायेति ? इत्थ समाधिः द्वावपि कर्म्मक्षयहेतू अवस्याभेदेन जिनोक्तत्वा स्कन्धाकद्योग विशिष्टकर्म्मक्षयं प्रत्यकारणत्वादिति तथा मागः पूर्वपुरुषक्रमागता सामाचारी तत्र केपाञ्चि द्वि चैत्यवन्दना नेकविधकायोत्सर्गकरणादिकावश्यकसामाचारी तदन्येषान्तु मतयेति किमत्र तत्त्वमिति ? समाधिश्च गीतार्थोऽशठप्रवर्तितत्वा सो सर्वोपि नविरुद्ध आचरितलक्षणोपेतत्वा दाचरितलक्षण चेद — असढेणसमाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्ज । न निवारियमन्नेहिं बहुमणुमयमेयमायरियंति ॥ १ ॥ तथा मत समान एवागमे आचार्याणा मभिप्राय स्तच सिद्धसेनदिवाकरो मन्यते केवलिनो युगप ज्ज्ञानं दर्शनञ्च यथा तदावरणक्षयस्य निर्मलता स्या जिनप्रवृत्तिगमनमसतु जिन समये ज्ञानदर्शने जीवस्वरूपत्वा यथा तदावरणक्षयोपशमे समानेपि क्रमेणैव मतिश्रुतोपयोगौ नचैकतरोपयोगे इतरक्षयोपशमाभाव स्तत्क्षयोप

मग्गतरेहि मयंतरेहि

नें स्थविरकल्पीना वस्त्रपात्रादिकसहितपणु, तिर्यंकारने थोडो कष्ट तो ते बंधव किमकरे, मठे एवा जपवे तेहना प्रतिउत्तर कहेवे—जिनकल्पी पर्ने स्थविरकल्पी दोय ए धर्म्मयनिमित्ते तीर्थंकरे कह्या छे, अवस्थाभेदेकरीने कर्मान्तरबंधीये । ७ । मग्गंतरेहिति । पूर्व जे आचार्य तेहनी सामाचारी ते किसी तिहां एक आचार्य शेयवंदनाकरे घणेविधि काउस्सगकरे, तथा बीजाआचार्य ते पुनि नकरे, इहां आचार्यानी सामाचारीनी मेद का जपने, तेहनो उत्तर गीतार्थनी जे सामाचारीप्रवर्त्ते ते सर्वथा निषेध नथी, आचरितलक्षणोपेतत्वात् आचरितलक्षण ते कहीये गाथा—असढेणसमाइन्नं जंकत्थइकेणइअसावज्जं । नविवारियमन्नेहिं बहुमणुमयमेयमायरियंति । ८ । तथा मयंतरेहिति । मत ते समानछीज आगमनेविषे आचार्यनो अभिप्राय ते मत कहीये ते कुण ? ते कहेछे—तिहां सिद्धसेनदिवाकर इसो माने केवलीने ज्ञानदर्शनना उपयोग एकठोज एकसमये हुवे, तथा जिन

समस्यो रसहतः मद्पमिसागरोपमप्रमाणत्या इव कि तस्व मिति ? इत्थ समाधिः यदेवमत मागमानुपाति सदेव सत्यमिति मन्तव्य मितर त्मुन सपेक्षणीय मया यद्युक्तेन मैतदवसातुं शक्यते तदेव प्रामणीयं माचार्याणां सम्प्रदायादिदोषा इम मतभेदा जिमानाम्नु मत मेकमेया खि सदुष्य रागादिविरहितत्वात् माइच — मनुवनयपरागुणइ परायणार्थजिणाणुणप्पवरा । जिपरागदोसमोहा सणक्षदाणाइणोतेषति ॥ १ ॥ तथा मङ्गलादिसयोगजङ्का सावन द्रव्यतो नामैं का हिंसा न भावत इत्यादि चतुर्भङ्गयुक्ता, मच सत्र प्रथमोपि भङ्गो युज्यते यतः किल द्रव्यतो हिंसा ईर्यासमित्या मच्छतः पिपीलिकादिव्यापादनं मचय हिंसा सम्पद्यायोगा तथाहि — मोउपमत्तोपुरिसो तस्सठजोगपडुच्चजेसत्ता । वाव ज्जतीनियमा तेसिसोहिसउ होइति ॥ १ ॥ तत्रापेय मतः भङ्गा मचेय युक्ता एतद्भावोक्तहिंसालक्षणस्य द्रव्यनावहिंसामयत्वा द्रव्यहिंसायास्तु मर णमात्रतया रूढत्वादिति तथा मया द्रव्यास्तिकादय सात्र परिमाम द्रव्यास्तिकमतेन मित्य वस्तु पर्यायास्तिक मतेन कथ तदेवा निस्य विरुद्धत्वा

नगतरोहि णयंतरोहि

मद्दमामनच रमनहे मामदर्शनना उपयाग सुरा २ छे सर्वे समेभेविषे, ईहां प्रश्नरूपकें तेहना प्रत्युत्तर कहोछेछ, जेमत भागममे मनुसारे हुवे ते होज सत्य छै पोजा कहवायाय छे, पर्ने पाचार्यांना सम्प्रदायादिदाव मतभेदछे तथा ओवीतरागनो मत एकछे, तिहां विरहरागादि नथी तथापि त — मनुवनयपरागुणइ परायणाणजिणाणुणप्पवरा । जिपरागदोसमोहा सणक्षणाणाइणोतेषति ॥ १ ॥ तथा भगतरेहिंइति । बेभगी चउभगी तेह नो विचार, तिहां द्रव्यथको एकहिंसापणि भावथकी नथी इत्यादि चउभगी कही तिहां पहिलोभांगो कोटोवेछे ते जिम इर्यासुमतिसेतो साधुचाल तांथका पिपीलिकादि विनसे ते हिंसा मकहीय भावथको हिंसालक्षण पमागथको द्रव्यभावनो ए कथन तथाहि — जाउपमत्तापुरिसा तस्सठजो गपडुच्चजेसत्ता वाविज्जतीनियमा तेसिसाहिसयाहोति । १ । तिहां मया उपजे तिहां उत्तर एगाथामाहे हिंसालक्षणछे, ते द्रव्यभाव उभयलक्षणमय नवछे, पर्ने जिहां निरक्षणपर्णे जोवनें हवें ते हिंसावहोवे, द्रव्यहिंसातो मरणमात्रपणें कहिछे । १ । तथा णयंतरोहिंइति । नयनो विचार, तिहां

दितिमङ्का इयम्त्रा युक्ता द्रव्यापेक्षयैव तस्य नित्यत्वात् पर्यायापेक्षया चानित्यत्वात् दृश्यते चापेक्षये कत्रे कदा विरुद्धानामपि धर्माणां समा वेशो यथा – जनकापेक्षया यस्य पुत्रः सएव पुत्रा पेक्षया पितेति तथा नियमो ऽभिग्रह स्तत्र यदिमाम सर्वविरतिसामायिकं तदा किमन्येन पौरुष्यादिनियमेन सामायिकेनैव सर्वगुणावाप्त एव स्यादिति शङ्का इयम्त्रायुक्ता यत सत्यपि सामायिके युक्तः पौरुष्यादिनियमो प्रमादवृद्धि हेतुत्वादिति भाष्य – सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं । तिविहेण फासयंतो विसोहइ इति ॥ १ ॥ तथा प्रमाणं प्रत्यक्षादि तत्र भगमाम मादित्यो भूमे रुपरि योजनशतै रष्टाभिः सञ्चरति चक्षुः प्रत्यक्ष तस्य भुवो निर्गच्छतो ग्राहकमिति किमत्र सत्यमिति सन्देह ,

णियमतरेहिं पमाणतरेहि , संकिया कंखिया वितिगिच्छिया भेदसमा ।
वग्गा कलुससमावणा , एवस्स समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जकम्मं वेदंति

द्रव्यास्तिकनयमतेंकरी नित्यकहुं पर्यायास्तिकमतेंकरी किमनित्यकहुं इम विरुद्धधर्मना संभव थयो तेहनो उत्तर ए युगतछे, द्रव्यनी अपे क्षाये नित्यछे पर्यायनीअपेक्षाये अनित्यछे कीमेंछे अपेक्षायेंकरी एकठा एकदा विरुद्धधर्मनो समावेश, जिम पितानीअपेक्षाये पुत्र तेहीज पुत्रनी अपे क्षाये पिता इति ॥ ११ ॥ तथा नियमंतरेहिंइति । नियम अभिग्रहविशेष ते जिम जो सर्वविरतिसामायिकछे ते पोरिसीआदि नोकारसीआदिनो वि सो विशेषछे, इहां शंका तेहनो उत्तर पोरिसीआदि पच्चक्खाणविशेष तपअसाठागमनो गुणछे, भाष्य – सामाइयपाठिविहु सावज्जचागरूवेउ गुणकरं एवं । अपमायवुड्ढिजणग त्तणेणमाणाउविन्नेयंति ॥ १२ ॥ तथा पमाणतरेहिइति । प्रमाण प्रत्यक्षादिक, तिहां प्रत्यक्ष अनुमाने आतरो तेजिम जिम आगमप्रमाणे भूमिथो उपरि सो पाठसेंयाउंम सूर्यचाले, अने ते प्रत्यक्षे भूमिथी नीकलतो दीसेंछे इहां सदेहथयो तेहनो उत्तर दूरप णो सम्यकप्रयोगेनहीं, तिहां दृष्टिभ्रमें ॥ १३ ॥ संकिया । जिनभाषितपदार्थनेविषे शंकाथयो ॥ १ ॥ कंखिया । मिथ्यात्वमतगुणवांनी वांछा ॥ २ ॥ वि तिगिच्छिया । धर्मना फलनो संदेह उपनो ॥ ३ ॥ भेदसमावन्ना । ए जिनशासनछे अथवा बीजो जिनशासनछे तेमाटे बे मार्गपक्षनो मतिभेद उपनो

मत्र समाधि, मविसम्यक्त्वमिदं दूरतरदेशतो विभ्रमादिति ॥ प्रथमशते तृतीयोद्देशकः ॥ ३ ॥ अनन्तरोद्देशके कर्म्मैव उदीरयते दनायुक्तमिति, तस्यैवभेदादी मभयितुं तथा द्वारगाथाया ॥ पमहत्ति ॥ यदुक्त तथा जिघातु माह ॥ कइवमित्यादि व्यक्त नवर ॥ कम्मपगडी एति ॥ प्रज्ञापनायां त्रयोविंशतितमस्य कर्म्मप्रकृत्यभिधानस्य पदस्य प्रथम उद्देशको नेतव्य एतद्व्याख्यानर चायोंमा सङ्ग्रहगाथा लीत्यत आह ॥ गाहा ॥ मायेयं ॥ कहइत्यादि ॥ तत्र ॥ कइपगडीति ॥ द्वार तत्रैव-कइ ण भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ त० नाणावरणिज्जमित्यादि

सेणूणन्नंते ! तमेवसच्चंनीसंकजंजिणेहिंपवेइय , हंता गोयमा ! तमेवसच्चंनीसंकं,एवं जायपुरिसक्कारपरक्कमे इया ,सेवन्नंते ! न्नंते ! त्ति॥ पढमसए तइओ उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥ कतिणं न्नंते ! कम्मपगडीओपण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ! कम्मपयडीए पढमोउद्देसोनेयव्वो , जावअणुभा

वसुममावथा । मतिभेदविषे भ्रम उपजे ए सर्वभागवी एहवो मतिविपर्यास पामे । एवंसससमवाविमवा । इम निश्चे ए वमचतपणो निर्णय वाङ्मा भंतरपवरहित । संशामोहविच्छवभावेदेति । मिथ्यात्वमोहमोयकम वेदे । सेणूणभंतेतमेवसच्चं । ते निश्चे हेभगवन् ! तेहीज साचो । चोसर्व । शंकारहित । अंजिवेहिं । केवली भगवंते । पवेदित । प्ररूप्यो इतिप्रश्न । हंता गोयमा । हांगोतम । ए सर्वोधमवचन । तमेवसच्च । तेहीज साचो सत्यछे । चोसर्व । शंका रहित । एवंजायपुरिसक्कारपरक्कमेतिवा । इम यावत् पुरुषाकार पराक्रमसर्गे । सेवंभंतेभंतेत्ति । श्रीभगवते कह्यो ते तिमज सर्व सत्यछे पचि पम्सया म वीरे । पढमसमसतइओउद्देसो । ए पहिलामतकनो तीजाउद्देशानो टब्बो सिख्यो ॥ ३ ॥ पाछिलाउद्देशामेंविषे कमनो उदीरवा वेदवा कह्यो, विषे तेहनाज भेद देखाडेछे, तथा समस्तविषयाधामेविषे कह्यु । पगइत्ति । तेदेखाडेछे, गौतमपूछेछे । कइणंभंतेकम्मपगडीओपण्णत्ताओ । केतली हेभगवन् ! कर्मप्रकृति कही इतिप्रश्न, गोयमा । हेगोतम । अट्ठकम्मपगडीओप । आठ मूल कर्मप्रकृति कही, एमे भगवा भगवंततीर्थंकरे । कम्मपगडी एपढमोउद्देसोनेयव्वो । पन्नवणाना त्रेवीसमो पद कर्मप्रकृति तेहनो पहिलो उद्देशो जाणवो । जावअणुभागोसम्मत्तो । यावत् अनुभागसमे कह्यो, ए

विहयंधइति ॥ द्वार मिदंचैव–कइयं भते ! जीवे भठकम्मपगडीउ यंधइ गोयमा ? नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दसणावरणिज्ज कम्मं निगच्छइ ॥ विशिष्टोदयावस्थं जीव स दासाद्यतीत्यर्थः दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दसणमोहणिज्जं कम्मं निगच्छइ ॥ विपाकावस्थ करोतीत्यर्थः ॥ दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं निगच्छइ मिच्छत्तेण उदिण्णेण एवं खलु जीव भठकम्मपगडीउ बंधइ ॥ इत्यादि मथेव मिवेतरेतराश्रयदोषः कम्मबन्धप्रवाहस्या नादित्वादिति ॥ कइहिं च ठाणेहिंति ॥ द्वार तचैव–जीवग भते ! नाणावरणिज्जं कम्मं कइहिं ठाणेहिं यधइ ? गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं तंजहा रागेणय दोसेणये त्यादि ॥ कइवएइयत्ति ॥ द्वार मिद चैव–जीवेणं भते ! कइ कम्मपगडीउ वेयइ ? गोयमा ! घत्थेगइए वेयइ घत्थेगइए णोवएइ जे वयइ से भठ इत्यादि ॥ जीवेण भत ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेएइ ? गोयमा ! घत्थेगइए वेएइ घत्थेगइए नोवेएइ ॥ केवलिनो भवेदनात् ॥ नेरइएणं भते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वयइ ? गोयमा ! नियमा वेएइ इत्यादि ॥ भणुभागो कइविहो कस्सत्ति ॥ कस्य कर्मणः कतिविधो रसइति द्वार इदचैव–नाणावरणिज्जस्सणं भते ! कम्मस्स कइविहे भणुभागे पणत्ते ? गोयमा ! दसविहे पणत्ते तंजहा सोयावरणे सोयविण्णाणावरणे इत्यादि ॥ श्रुत्येन्द्रियावरणो ज्ञानेन्द्रियावरणश्चेत्यथ भय कम्मचिन्ताधिकारा न्मोहनीय मामित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ मोहणिज्जेणति ॥ मिथ्यात्वमोहनीयेन ॥ उदिण्णेणति ॥ उदितेन ॥ उवठाएज्जत्ति ॥ उपतिष्ठेत् उपस्थान म्परलोकक्रिया स्य

गोसम्मत्तो ॥ गाहा ॥ कतिपगडीकहिंबधइ कतिहिठाणेहिंबंधएपगडी । कइवेदेइचपगडी अणुभागोकति विहोकस्स ॥ १ ॥ जीवेणंभते ! मोहणिज्जेणं कडेण कम्मेण उदिण्णेणउवठाएज्जा ? हंतागोयमा ! उवठाएज्जा ।

पहलो संग्रहगाथाकहे तेकहेछे—गाथा । कतिपगडीकहबंधइति । केतली कर्मप्रकृतिना केतला भेद १ प्रकृति केम बांधे, ए बीजो द्वार २ कतिहिं ठाणेहिबंधएपगडी । जीव केतले स्थानके बांधे कर्मप्रकृति ३ कतिवेदेइपयडी । जीवे केतली प्रकृति वेदीये ४ अणुभागोकतिविहोकस्स ॥ १ ॥ अनुभाग कहतां रस ते केतलाप्रकारनो विपाकनो किये कर्मचिंताधिकारथको मोहनीयथाशो कहेछे । जीवेणंभतेमोहणिज्जेणंकडेण । जीव हे

न्युपगम इत्यादित्यर्थः ॥ वीरियत्तायत्ति ॥ वीर्ययोगात् वीर्यः प्राणी तद्भावो वीर्यता अथवा वीर्यमेव स्वार्थिकप्रत्यया द्वीर्यता वीर्याभावा भावो वीर्ये ता तया ॥ अवीरियत्तायत्ति ॥ अविद्यमानवीर्यतया वीर्याभावेनेत्यर्थः ॥ नोअवीरियत्तायत्ति ॥ वीर्यहेतुकत्या दुपस्थानस्येति ॥ बालवीरियत्ताएत्ति ॥ बाल सम्यगर्थानवबोधा, इस्लोकाल्पविरत्यभावात् मिथ्यादृष्टि सास्य या वीर्यता परिणतिविशेषः सा तथा तया ॥ पण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ पण्डित सकलावद्ययर्जक, तदन्यस्य परमार्थतो निश्चानस्येत्म पण्डितत्वा द्यदाह —तज्ज्ञानमेवनभवति यस्मिन्नुदितेविभाति रागगणः । तमसः कुतोस्तिशक्ति दिनकरकिरणाग्रतःस्थातुमिति ॥ १ ॥ सर्वविरतइत्यर्थः ॥ बालपण्डियवीरियत्ताएत्ति ॥ बालो देशविरत्यभावा त्पण्डितो देशस्य विरतिसद्भावा दिति बालपण्डितो देशविरत इत्थ मिथ्यात्वे उदिते मिथ्यादृष्टित्वा ज्जीवस्य बालवीर्येण वोपस्थान स्या न्नेतराभ्या मेतदेवा

सेनूनं गोयमा! किं वीरियत्ताए उवठाएज्जा अवीरियत्ताए उवठाएज्जा? गोयमा! वीरियत्ताए उवठाए ज्जा, नोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा, जइ वीरियत्ताएउवठाएज्जा, किंबालवीरियत्ताएउवठाएज्जा, पण्डित

भगवन्! मिथ्यात्वमोहनीय कर्म। अनुदयपणे। कर्मने उदयेकरी। उवठाएज्जा। परलोकक्रिया अंगीकारकरे, मनहदर्शनीय। हता गोयमा। ते गोतम। उवठाएज्जा। परलोकक्रिया अंगीकारकरे रहे। सेभंते किंवीरियत्ताएउवठाएज्जा। ते हेभगवन्! एम् वीर्यसहित अंगीकारकरे रहे, अथवा। अवीरियत्ताएउवठाएज्जा। अवीर्यपणे वीर्यनेअभावे अंगीकारकरे इतिप्रश्न गोयमा वीरियत्ताएउवठाएज्जा। हेगोतम। वीर्यपणे परलोकक्रिया अंगी कारकरे पणि। नोअवीरियत्ताएउवठाएज्जा। अवीर्यपणे परलोकक्रिया अंगीकार नकरे, वली गोतम पूछेछे—जइवीरियत्ताएउवठाएज्जा। जो वीर्यहेत एथकीज अंगीकारकरता थाय। किंबालवीरियत्ताएउवठाएज्जा। तो शूं असावधनो ज्ञानरहीत अथवा विरतिरहित मिथ्यादृष्टि तेहनो जिका वीर्यता परिणतिविशेष तेणेकरी अंगीकारकरे। पण्डियवीरियत्ताएउवठाएज्जा। पंडित जेणे समस्तसावद्यत्याग्या तेहनो वीर्यने परमार्थथको अज्ञानपणुं नथी ते, अथवा। बालपंडियवीरियत्ताएउवठाएज्जा। देशे अविरतिपणाथी बालक कहीये, देशेथीज विरतिपणाथी पंडितकहीये, तेमाटे बालपंडितकहता

१ ॥ गोयमाइत्यादि ॥ उपस्थानविषयो ऽपक्रमश्च मत सदामित्याह ॥ जीवेणमित्यादि ॥ अवक्कमेज्जत्ति ॥ अपक्रामे दपसर्प्पेत् उत्तमगुणस्थानका द्धीनतरं गच्छेदित्यर्थः ॥ बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जत्ति ॥ मिथ्यात्वमोहोदये सम्यक्त्वात्संयमा द्देशसंयमाद्वा ? ऽपक्रामे न्मिथ्यादृष्टि र्भवेदिति ॥ णोपण्डियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जत्ति ॥ नहि पण्डितत्वा त्प्रधानतर गुणस्थानक मस्ति यतः पण्डितवीर्य्येणा पसर्प्पेत् ॥ सियबालपण्डियवीरियत्ता

वीरियत्ताएउवठाएज्जा , बालपण्डियवीरियत्ताएउवठाएज्जा ? गोयमा ! बालवीरियत्ताएउवठाएज्जा णोप ण्डियवीरियत्ताए उवठाएज्जा णोबालपण्डियवीरियत्ताए उवठाएज्जा । जीवेणन्ते ! मोहणिज्जेण कम्मेण कम्मे ण उदिन्नेण अवक्कमेज्जा ? हंता अवक्कमेज्जा । सेकेणट्ठेणं ! जाव बालपण्डियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? गोय मा ! बालवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा नोपण्डियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा सियबालपण्डियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा

देशविरतयावत तेवे अंगीकारकरे इतिप्रश्न,। गोयमा बालवीरियत्ताएउवठाएज्जा। हेगौतम ! मिथ्यात्वना उदयथी मिथ्यादृष्टिपणाथीज जीवने बाल वीर्यकरीज अंगीकारकरय़् जीव क्रियारुचि पणि। णोपण्डियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । सर्वविरति साधु परलोकक्रिया करे नथी, समपणि क्रिया नाव ही। णोबालपण्डियवीरियत्ताएउवठाएज्जा । बालपण्डित जीवपणे पणि एतले देशविरतीपणि परलोकक्रिया अंगीकारकरे पणि क्रियारुचि, उपस्थान र ह्या तेहना बेपद अपक्रमण पाछोवलवो तेकहेछे। जीवेणंभंतेमोहणिज्जेणंकम्मेणंउदिन्नेणअवक्कमेज्जा । जीव हेभगवन् ! मोहनीय अठावीसभेदे कर्मवेदिवते ते कर्मने उदयवसें अतिक्रमे उत्तमगुणठाणाथकी अतिहि हीन गुणठाणे जाय इतिप्रश्न उत्तर । हंतागोयमा अवक्कमेज्जा । हांगौतम अति क्रमे जाय उत्तमगुणठाणाथी हीनगुणठाणे जाय, वली गौतम पूछे । सेकेणट्ठेणंजावबालपण्डियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा। ते हेभगवन् ! बालतपस्वे वीर्यपणे अतिक्रमे, अथवा पण्डितवीर्यपणे अतिक्रमे, बालपण्डितवीर्यपणे अथवा अतिक्रमेगुणठाणाथी हीनतरगुणठाणेजाय इतिप्रश्न,। गोयमा ! हेगौतम! बाल वीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । मिथ्यात्वमोहनीयने उदयथी सम्यक्त्वथी अथवा संयमथी अथवा देशविरतिथकी अतिक्रमें मिथ्यादृष्टी हुवे ते बालवीर्यपणे हुवे प

व पराक्रमेऽन्यति ॥ स्या तदपि वालवीर्यं पण्डितवीर्यं बालपण्डितवीर्यं देशविरतो स्यैदिति, यावनान्तरेस्वेव ॥ बालवीर्यत्व वायवकिशमीरिन्दमेय बालपण्डितवीर्यरियतामति ॥ तत्र मिथ्यात्वमोहोदय बालवीर्यस्येव आयादिसरवीमहृयमिवेषहति, उदीरकविपदाखा एपणामात्मे तपगामसूरदृयं तथैव, नवरं ॥ उपशमप्रपंडियवीरियताामति ॥ उदीरणापदापेक्षया उपशान्तासापकयोरयं विशेषः, प्रथमालापके मयपामोहनीयेनो पशान्तेसता उपतिष्ठेत क्रियासु पण्डितवीर्यवउपशामामोहावस्थायां पण्डितवीर्यस्येव आयादिसरमोघामायात्, पूर्वेस्तु काश्चि द्वावसा मासिदमर्द व्याख्यात मोहनीयेनो पशान्तेन मिथ्यादृष्टि जायते, साधुः श्रावकोवा भवतीति, द्वितीयालापकेतु ॥ अवक्रमेत्बालपण्डि वीरियताएति ॥ मोहनीयेन पुपशान्तेन अयतत्वा द्वालपण्डितवीर्यवा पक्रम भेमसयतो भवति, देशत स्तस्य मोहोपशमसद्भावात्, मतुमिथ्या

जहा उदिन्नेण दोच्चाळायगा तहा उवसंतेणवि दोच्चाळायगा जाणियव्वा, नवरं उवट्ठाएज्जा, पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । सेन्नते! किंआयाएअवक्कमइ अणायाएअवक्कमइ?

ति। बालपंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा। नहो पण्डितवीर्य प्रतिमं, पण्डितवीर्यप्रधान गुणस्थानके, तेमांटे पंडितवीर्यपणे प्रतिमते नथी। मिथ्यात्वपंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा। कदाचित् चारित्रमोहनीयने उदयेंकरी संयमथो भ्रष्टथइ बालपंडितवीर्यपणेंकरी देशविरतीथये, वाचनांतरे एम के बालवीरियत्ताएवा बालपंडियवीरियत्ताए बालपंडियवीरियत्ताएति, तिहां मिथ्यात्वमोहनीयनेउदयें बालवीर्य होजेइ, मोक्षा र्थास्येयको निषेधके मरोत विरतपणा उपमात, उपमातभूत देते। जहा उदिन्नेण दोच्चाळायगातहाउवसंतेणवि दोच्चाळायगा भाणियव्वा नवरं उवट्ठाएज्जा। जिम उदये बे आलावा कह्या तिम उपशांतेंपणि बे आलावा कहवा। नवरं उवट्ठाएज्जा। पंडियवीरियत्ताएअवक्कमेज्जा । ए मे आलावामां अपेक्षायें उपशांतना बे आलावामांहे प्रथमालापकने पहिलाआलावामांहे मयगाम करीय उपशांतपणाथी क्रियानेविषे पंडितवीर्यंकरी तेमाटे उपशांतमोह अवस्थानेविषे पंडितवीर्यनाज भावके, तेमाटे भावके, बीजाआलावामांहे। बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। मोहनीयउपशम्या अयतपणाथी बालपंडितवीर्यंकरी

दृष्टि मोहोदयश्च तस्य त्वावा न्मोहोपशमस्य वेद्य विकल्पत्वादिति, यथा पक्कामतीति यदुक्तं तत्र सामान्यम प्रश्नयन्नाह ॥ से नूणं भंते ! किमित्या दि ॥ मंत्ति ॥ यमीजीवः अपार्वीया वेशब्दः ॥ आयाए त्ति ॥ आत्मना ॥ अणायाए त्ति ॥ अनात्मना परत इत्यर्थः अपकामति अपसर्प्पति पूर्वमवाप्ततत्त्वरुचि भूत्वा पश्चाद्मिथ्यारुचिर्या भवतीति कोसावित्याह, मोहनीय कर्म मिथ्यात्वमोहनीयं चारित्रमोहनीयं वा वेद यन् उदीर्णमोहस्यः ॥ सेकहमेयंति ॥ अथ कथ केन प्रकारेण एतदपक्रमण ॥ भवति ॥ मोहनीयवेदयमानस्येति ? इहोत्तर ॥ गोयमेत्यादि पुव्वं अपक्रमता रमाणमा वपक्रमणकारी जीव एतज्जीवादि अहिंसादिर्या वस्तु एव यथाजिनैरुक्त रोचते श्रद्धत्ते करोतिवा इदानीं मोहनी योदयवशे नजीव एतज्जीवादि अहिंसादिर्वा ; एव यथा जिनै रुक्त नोरोचते नश्रद्धत्ते नकरोतिवा । एवं खलु उक्तप्रकारेण एतदपक्रमण एव

गोयमा ! आयाए अवक्कमइ णोअणायाए अवक्कमइ , मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे । से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! पुव्विं से एयं एवं रोयइ इयाणिं से एयं एवं नोरोयइ एवं खलु एयं । एवं से णूणं भंते ! नेरइयस्सवा त्ति

पविभ्रमता देवविरतोदृवं देवत्वो नेदमे मोहनीयकर्म उपशमता सद्भावचो, यदि मिथ्यात्वो भवेदे, मोहने उदयेन मिथ्यात्व भावमवे सनेदर्श मोहवता मिथ्यात्व तेनमा उपशमनात्र पविचारये । इवे अपक्रामतिरमा से अथ ते सामान्ये पूर्वे । सेमतेकिंमायायपक्कमइ । ते जीव हेभ यवन् ! स्वयमार्येवरो अपकूर्मे ? योमए इत्ता नवाय अथवा । अणायाएअवक्कमइ । पराये आत्माये अपकूर्मे होनवाय इतिमत्र, उत्तर । गोयमा । हेमो तम ! आत्मार्येवरो अपकूर्मे होनवाय, पहिला पंडितवविर्वने पहे मिश्वरुचि अथवा मिथ्यात्वरुचियाय । णोअणायाएअवक्कमइ । यदि नहीं पराये आत्माये वरो अपक्रम होमयाय, ते पुन। मोहणिज्जंकम्मंवेदेमाणे। मिथ्यात्वमोहनीय अथवा चारित्रमोहनीय कर्म वेदतोवको उदयमाव्यो मोह इत्यर्थ। सेकहमे यंभंतेएवं । तेकिम एव हेभगवन् ! मोहनीयना वेदवायने इम थाइ ? जे पूर्वे पंडितपणानो हविर्युतो अने पहे मिथ्यात्वनो हविशोय इतिप्रश्न, गोय मा । हेगोतम । पुव्विंसेएयंएवंरोयइ । अपक्रमणवचो पहिलापपक्रमणकारी जीव एजीवादिपदार्थ अथवा अहिंसादिवस्तु जिम जिनेश्वरकह्यु तहे

मोहमीयवेदमेरस्यर्था , मोहमीयकर्माधिकारा इमामाम्यकम्मचिन्तयन्नाह ॥ सेणूणमित्यादि ॥ नेरइयस्सवेत्यादौ ॥ नास्तिमोक्ष इत्येवसम्बन्धा स्यात्
त्रैकालित ॥ तेरव मइइ ॥ पावेकम्मति ॥ पाप मशुभ नरकगत्यादि सर्वमेववा ; पापं दुष्टं , मोक्षव्याघातहेतुत्वात् ॥ तस्सति ॥ तस्य स्वकर्मण सकाशा
त् ॥ परेइयत्तति ॥ तत्कर्मामनुभूय ॥ एवं खलुत्ति ॥ वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु वाक्यालङ्कारे ॥ मएत्ति ॥ मया अनेनच वस्तुप्रतिपादने स्वयमस्वे
मा त्वमः स्वातंत्र्य प्रतिपादयति ॥ पएसकम्मपत्ति ॥ प्रदेशाः कर्मपुद्गला जीवप्रदेशे ष्वोतप्रोता सद्रूप कर्म्म प्रदेशकर्म्मं ॥ अणुनागकम्मेयत्ति ॥ अ

रिरकजोणियस्सया मणुसस्सया देयस्सया जे कडेपावे कम्मे णत्थि तस्स अवेइयत्ता मोक्खो ? हंता गोय
मा ! नेरइयस्सया तिरिक्खमणुस्सदेयस्सया जाव मोक्खो । सेकेणठेणंभंते ! एवयुच्चइ नेरइयस्सवा जाव
मोक्खो , एयसणुमए ? गोयमा ! दुविहे कम्मे पणत्ते तंजहा पएसकम्मेय अणुभागकम्मेय , तत्थणंजं प

नवारे । इवाविमेवयएवनारायद । इहामी हिवे माहमीयना उद्यवाक्यमेविये पजीव एजीवादिपदार्थ पथवा पहिंसादिकश इमयोतीर्थंकरे कह्यु
सहवे । एवंगमुउयएवं । इमलिवे उत्तमकारे पपवमप मोहनीय वेदवे इत्यव, माहमीयकममा पधिकारथको सामान्यक्रम चितवती कहेछे—सेणूणमंते
नरइयम्नवातिरिक्खजोणियमवामणुस्समवादेवस्सवा । पणे निवे हेभगवन् । नेरइयस्सवा इत्यादि मस्तिमोक्षो, इम सर्वथयो पठिविभक्तिछे , नारकीनेति
गवो मयी नेरइमने । पवेदयताएमोक्षा वंतागोयमा नेरइयस्सवातिरिक्खदेवस्सवाजावमोक्खो । भोगव्याविना छूटियोनथी इतिभव्य, हांगोत
म नारकीने तिर्यंचम मनुष्यने दवने जेपापक्रमकीधा ते भागव्याविना । नथि । नयी माप, एतावता कीधाकम भोगव्याविना छूटियोनथी । सेकेणट्टेण
भंतेएवमवइनेरइयस्सवाजावमायो । निर्वैपय हेभगवन् ! इम कह्यं नारकीने यावत्देवताने कीधा कर्म भोगव्याविना मोक्षनथी छूटियोनथी । एव खलु
मए,गोयमादुविहेकम्मेपणत्तेतंजहा । इम पतु वक्ष्यमाणप्रकारे में हेगोतम । बेप्रकारे कमकह्या तेकहेछे । पएसकम्मेयअणुभागकम्मेय । कमपाप्स तिहां जो

भुजाग सोयामेव कम्मप्रदेशानां सवद्यमानताविषयो रस सद्रूपं कर्मा नुभागकर्म्म तत्र यत्प्रदेशकर्म्म तन्नियमा द्वेदयति विपाकस्या ननुभवने पि कर्मप्रदेशाना मवश्यं क्षपणा त्मदृक्षेत्य प्रदेशानियमा ख्यातयतीत्यर्थो ऽनुभागकर्म्मेव तथाजाव वेदयतिवा नवा तथा मिथ्यात्व तत्क्षयो पशमकाले ऽनुभागकर्मतया न वेदयति प्रदेशकर्म्मतयातु वेदयत्येवति एवम द्विविधमपि कर्म्मेयि वेदयितव्ये प्रकारद्वय मस्ति तथा हेतैव खाय तहति समयसाह ज्ञातं सामान्येना क्वत मेत द्वयमाव वेदनाप्रकारद्वयं यहेता जिनेन ॥ सुयति ॥ स्मृत मप्रतिपादित मनुचिन्तितया तत्र स्मृतमिव स्मृत केवलिस्थन स्मरणाभावेपि जिनस्यात्यन्तमव्यभिचारसाधर्म्यादिति ॥ विज्ञायति ॥ विविधप्रकारं देशकालादिविभागरूपं यास वि ज्ञातं तदेवाह ॥ इमं कम्म मयंजीवेति ॥ अनेन द्वयोरपि प्रत्यक्षतामाह अयमित्वा दर्शत ॥ अब्भोवगमियाएति ॥ प्राकृतत्वात् अभ्युपगमः प्र

एसकम तंनियमा वेदेइ , तत्यण जत अणुभागकम तञ्चत्येगइयवेदेइ , अत्येगइयनोवेदेइ , णायमेयअरह या सुयमेयअरहया विन्नायमेयअरहया इमकम अयजीवे अब्भोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ , इमकम अ

प्रदेशनेविषे मात्रा तेरूप कम ते प्रदेशकम कहीये तेहीज कमप्रदेशांना सवेयमानताविषयरस तेरूप जे कम ते अनुभागकर्म । तत्रजेजतपप्रदेश कम नियमावेदेइ । तिहां पूर्वोक्त वेपयमाहे जते प्रदेशकम ते नियमानु विपाकमकीयाहे तिहावेदे । तत्रजतपअनुभागकर्मत । तिहां पूर्वोक्त वेपय माहे जेते अनुभागकमछे, ते कमभते । अत्येगइयवेदेइ । केतलाएक तथारूप वेदे । अत्येगइयनोवेदेइ । केतलाएक तथारूप नवेदे जिम मिथ्यात्वक यापशमकाले अनुभागकम नवेदे, प्रदेशकमवेदे, प्रकार कर्मवेदवाना परिज्ञातवांछे । णायमेयअरहया । ज्ञाततापरिज्ञाते । सुयमेयअरहया । उपदेशा परहते अथवा अनुचितन कोधा । विन्नायमेयअरहया । अनकप्रकारे देश क्षेत्र काल द्रव्यादिविभागकरी विशेषेजाण्यो भरहंते ते कहे ते कहेछे—इस कम अयंजीवे । एकम ए जीव कम अने जीव ए बे वेयकोने प्रत्यक्षछे । अब्भोवगमियाएवेयणाएवेयइस्सइ । अभ्युपगम अत्यन्तआश्रयो मांडीने ब्रह्मचर्यभू मिशयन केशलोचनादिकनों अंगीकार, तिणे निर्वृत्त ते अभ्युपगमको तिणेकरी वेदना वेदक अथवा । इसे चक्क भयवाभिकमाभिया एवेदणाएवेयइस्सइ

प्रमाप्रतिपत्तितो प्रसवयनूमिशयमकेमसुखनादीना मङ्गीकार स्तेन निवृत्ता चाभ्युपगमिकी तया ॥ वेयइस्सइत्ति ॥ भविष्यत्कालनिर्देश भविष्यस्य शार्थो विशिष्टभामयतामेव श्रेयो ऽतीतो वर्तमानश्च पुन रजुनयद्वारेणा म्यस्यापि श्रेय सम्भवतीति ज्ञापनाय ॥ उयक्कमियाएत्ति ॥ उपक्रम्यते ऽनेने सुपक्रमः कमवेदनोपाय स्तत्रभवा मौपक्रमिकी स्वय मुदीर्णस्य उदीरणाकरणेनवो ; दय मुपनीतस्य कर्मणो गुणव सया मौपक्रमिक्या वदनया वेदयिष्यति तयाच ॥ ग्रहाकर्मति ॥ यथाकम्म यथाकर्मानतिक्रमेण ॥ यहानिगरणत्ति ॥ निकरणामा नियताना देशकालादीनां करणानां विप रिणामहेतूना मनतिक्रमेण, यथा यथा तत्कर्म भगवतादृष्ट तथा तथा विपरिणंस्यति इतिशब्दा वाक्यायसमाप्ताविति अनन्तर कर्म्म चिन्ति त तच पुद्गलात्मक मिति परमाण्वादिपुद्गलां श्चिन्तयन्नाह अथवा परिणामाधिकारात् पुद्गलपरिणाममाह ॥ एसणंभंतेइत्यादि ॥ पोग्गलेत्ति ॥ परमाणु स्सतत्र स्कन्धग्रहणात् ॥ तीतत्ति ॥ अतीतं इयच सर्वस्वभावकाला इत्यनेना धारेद्वितीया ततय सर्वस्मि न्नतीत इत्यर्थ ॥ अणंतत्ति ॥ अप

यजोये उयक्कामियाएवेयणाएवेयइस्सइ, अहाकम्म अहाणिगरण जहाजहा तन्नगवयादिठ तहातहा तंयिप रिणमिस्सतीति, सेतेणठेण गोयमा ! नेरइयस्सवा जावमोस्को । एसणन्नंते ! पोग्गले तीतमणतं सासय सम

एजीव एकम सममेव कम उदयमाम्या वेदवे, उपक्रम करीये कमवेदनापाय तिहांहुवे ते मौपक्रमको,पातें उदयभाव्या भववा उदीरणाकरणेकरी उदयमाव्याकमना भागवा ते वेदना वेदसे । यथाकम्मयथाणिगरण । जिम कर्म बांध्याछे तिम, जिम कर्मना देशकालादि भन्यथा नथाय जिमदेश विशेषपणें परिणमस्थे, इतियम्दा वाक्यावसमाप्ते । सेतेणठेणं गोयमा णेरइयस्सवाजावमोक्खा । ते तेणें भर्थे हेगौतम ! नारकीनें यावत् देवताने कोथा क मनिर्माभोगवो भाषमवी छूटिवोनहीं इत्यर्थ, मनंतर कमचिंतव्यू ते कम पुद्गलरूपछे तेमाटे परमाणू मादि पुद्गल चिंतवतोकहेछे—भथवा परिणाम मधिकारथको पुद्गल परिणाम कहेछे—एसणमंतेपोग्गलेतीतमणंतसासयसमयं । एह हेभगवन् ! सवपुद्गल भतीतकालनेविषे अपरिमाण मर्थतपणोच

र्दशकर्म तक्रियमा ह्वेदयति , विपाकस्या मनुभवने
र्मीच तयाज्ञाव वेदयसिवा नवा ; तथा मिथ्यात्व तत्सयो
र्षपि कर्मोवि वेदयितव्ये प्रकारद्वय मस्ति तथा ऐतेव माय
र्वता जिनेन ॥ सुयति ॥ स्मृत मप्रतिपादित ममुचिन्तितया ; तत्र
र्मादिति ॥ विख्यायति ॥ विविधप्रकारैः देशकालादिविज्ञानरूपै र्मत वि
णाइ वेदयिस्या दर्शतः ॥ मज्ञोवगमियाएत्ति ॥ प्राकृतत्वात् मभ्युपगमः प्र

गकम तश्रुत्येगश्यवेदेह, श्रुत्येगश्यनोवेदेह , णायमेयश्रुरह
मकम श्रयजीवे श्रज्ञोवगमियाए वेयणाए वेयइस्सइ, इमकम श्रु

र्दोव ममरदेयाना संवेयमानताविसरस तेरूप जे कम ते मनुभागकर्म । तत्रयजतपपसत्र
प्रदेशकम ते नियमर्थ् विसाकमकोशाहे तिसावेदे । ततपजतमणुभागकर्मत । तिहां पूर्वोक्त वेपच
र्वेदे । केतलाएक तथारूप वेदे । मतेतरसपावेदेइ । केतलाएक तथारूप नवेदे जिम मिथ्यात्वक
र्वमवेदे, मवार ममवेदवाना परिवर्तावि । मायमेवपरदवा । आयामरिहते । स ऽमेवमरदवा । उपदेश्या
विधायमेवपरदवा । मनकमकारे देम चेत काल द्रव्यादिविभागकरी विप्रयेवास्ये जो मरहंते ते जूते कहेवे—इम
, वम मने जोव राम् वेवसोजे ममवदे । मज्ञोवगमियाएवेदनायवेयरस्सह । मभ्युपगम प्रव्रज्यात्मको लोटोब्रह्मचर्यभू
मसोवार, तिवे निर्वत ते मभ्युपगमको तिवेशते वेदना वेदस मवता । एजनवमवजावेदनामिवाएवेदनाएवेदरस्सह

स्कन्धगतः स्कन्धव सामट
मत्ययत्यादि ॥ इव सत्वस्य
शुमवा। परिपूर्णमवा असाध
इन्द्रियकषायनिरोधेन ॥ सिज्झिंसुत्ति
विमुक्ताः सयमादमोपिजवंति विमुक्त

मणूसे तीतमणत सासयं समय
णमायाहिं सिज्झिसु बुज्झिसु जा-
युच्चइ तघेव जाव अत करिसु ? गा।

स—छउमाथेवभते मणुसेतीतमणतसासयंसमय। इत्य छ
मवधिज्ञानीना धधिकार कवले तेमाटे कवल, हेमगवन्।
केवलेणसवरेण। मसहायादि इन्द्रियकषाय निरोधेकरी। केवल
मसहाय एकमड माठमवचन माता पांचसमिति तीनमगि निर्वेकरी।
तवरिसु। यावत् सर्व दुःखनौ पतकोथा, एतावता मोचपहुता इतिमश्न, उत्तर। गा०
हीं गोतमकहे। सेकेणट्ठेणभतएवंवुचइ। ते केमच हेमगवन्! इमकह्यो ते छउमस्थ केवल स

इति जीवसूत्रं, [illegible] मायो यथोतरमधामजीवतव्यता मुदेमकान्तयावदाह ॥ छउ
मस्थो मनुष्य इत्येवं [illegible] तरवा वधिज्ञानिनो वक्ष्यमाणत्वादिति ॥ केवलेणति ॥ असहायेन
त्रेमलमेमंमुद्धं [illegible] ॥ सयमेणति ॥ पृथिव्याविरक्षणरूपेण ॥ संवरेणति ॥
र्पर्न माकृतत्वादिति। एतच्च जीवनता भेयाभिमायच एह मतुत उपशान्तमोहाद्यवस्थाया सर्व
सिद्धिरिति, सा [illegible] स्यादिति ॥ अतकरेति ॥ भवान्तकारिण सोऽथ दीर्घतरका

केवलेण संवरेण केवलेण बम्भचेरवासेण केवलीहिं पवय
? गोयमा! नोइणट्ठेसमट्ठे। सेकेणट्ठेणंभंते! एव
सा छातिमसरीरियावा सव्वदुक्खाणमंत करिसुवा

वा पवि केवलागमीं ते कथक इम मवाचवो, त्यामाटे माने
नाणे। केवलेणसंजमेण। सपूर्ण असहाय एकाक सयमेकरी
तथा ब्रह्मचर्ये असवेकरी। केवलाहिपवयणमायाहिं।
सीधा। बुज्झिंसु। प्रतिबोधपाम्या। आवसव्वदुक्खाणम
त्थे। हेगोतम! एमच समयनी बजतगमीं, सुजाण
येकरी सीधा। तथेवजावअतकरेंसु। तिमहीज सा
सत् अत नकोधा, मोचनमया इतिमश्न, भगवतकहे—माबमा केकेभिपतकरावा भतिमसरीरिया। स ।तम! केतोई ससारना अंतना करणहारहे ते

मापेक्षयापि भवन्तीत्यतआह ॥ चरिमसरीरियावत्ति ॥ चरिम शरीरं येषामस्ति तेचरिमशरीरिणः चरमदेहा इत्यर्थः । याशादी गणगाणे ॥ गाणं
क्खायमंतकरिंसुइत्यादी ॥ सिज्झिंसुसिज्झंतीत्याद्यपि द्रष्टव्यं, सिद्धाद्यविनाभूतत्वा इसवदुःखानामंतकरत्वस्येति ॥ उप्पन्ननाणदंसणधरा ॥ अरहंते प्राग
मीति ॥ सर्वथा ॥ सिज्झंतीत्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमाननिर्देशस्य क्षेपोपसमकत्वात् ॥ सिज्झिंसुसिज्झंतिसिज्झिस्संती त्यत्र सरीरादिभिर्द्रष्टव्याः ।

करितिवा करिस्सतिवा सव्वेते उप्पन्ननाणदंसणधरा अरहा जिणेकेवलीभ वित्ता तउपच्छा सिज्झति बुज्झं
ति मुच्चति परिनिव्वायंति जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवा करितिवा करिस्सतिवा। सेतेणठेणं? गोयमा ! जाव
सव्वदुक्खाणमंत करिंसु , पडुपन्नेवि एवचेव , नवरं सिज्झति भाणियव्वं , अणागएवि एवंचेव , नवरं सि

पण कालनो पर्यवासितपणि हुवे तेमाटे कहेछे—बरमाके सरीरजहना चरमशरीरी इत्यर्थ, यामध्य समुदायने पण। सव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवाकरितिवा । तिवा
सरदुपमा चंतकोधा मतोतकाले, वर्त्तमानकालेकरेछे। करिस्सतिवा। पामामिकाले करस्ये। सव्वेतेउप्पन्नणाणदंसणधरा। सगमातेते जणनू मिरमाण
झेपदमन तेहना भरतशरपणि पमादि संमितमानणी। भरताभिषेकिवसोभविता। एतदामाटेज पूजानेयाग्य राग द्वेषनाजोपवहार इता भाग्यप
विछे एतलामाटे कहेछे—सत्रक करेछे। तयापच्छासिज्झति। तिवारपछी सिद्धिगमनयोग्यथोय । बुज्झंति । बाधपामे । मुचंति । सेमाजालेकरो त
परमैबरी मूकाय। परिनिव्वायंति। सम पुदल सवथरो मीतलीभूतथाय । जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसुवा। यावत् सर्वदुःखनो चंतकोधो चतीतका
म, पछा। करितिवा। वर्त्तमानकाले चंतकरेछे। करिस्सतिवा। चनामतकाले चंतकरस्ये। सेतेणट्ठेणं गोयमा जावसव्वदुक्खाणमंतकरिंसु। तेथे पहि
दियोगम। दमक्ते यावत् सर्वदुःखना चंतकोधा एतलागते चववसो। पडुपन्नेवियवंचेव। वर्त्तमानकालेपणि भिषे इमज कहवा। नवरं सिज्झतिमा
सिवन्न। एतलाविशेष सिज्झंति आगले सिज्झंति कहवा। चणागएविएवंचेव। चनागतकालेविषे पणि सिज्झे इमज कहवो। नवरं सिज्झिस्संति

मतमय ॥ मद्दुकारबमित्यादौ पञ्चमपदे सौ विहितइति ॥ भहामउमत्योइत्यादे ॥ रिप नावमा ॥ माहोविएवजंते ! मणूसेतोतमवतसासयमित्यादि ॥ एवकारार्थं तत्र यथा परमायधे रपस्ता खोयधिः सौ ऽधोयधि सोन योव्यवहर त्यसा वाधोयधिकः परिमितक्षेत्रविपयावधिकः ॥ परमाहोहिउ त्ति ॥ परम आधोवधिकाद्यः स परमाधोवधिकः प्राकृतत्वाच्च व्यत्ययनिर्देशः ॥ परमोहिउत्ति ॥ इति त्याठो व्यत्यय सव समस्तारूपिद्रव्यासङ्ख्यातलो कमात्रालोकखण्डासङ्ख्याताववसर्पिणीविपयावधिज्ञानः ॥ तिन्निमालावगत्ति ॥ कालत्रयवेदिम केवलिनो प्येत एव बयोदस्पका विशेपस्तु सूत्रोक्त

ज्जिस्संति नाणियव्वा, जहाछउमत्थो तहा आहोहिओवि, तहा परमोहिओवि, तिन्नितिन्नि आलावगा ना णियव्वा। केवलीण भंते! मणूसेतीतमणंत सासय समयं जाव अंतकरेंसु? हंता गोयमा! सिज्झंसु जाव अंतकरिंसु एते तिन्नि आलावगा नाणियव्वा, छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झंसु सिज्झंति सिज्झिस्संति। से

रू। एतमाविषय सिध्मिस्सति कवई मोक्षसेरति। अथाछउमत्थोत आधाहोहिआवि। जिम छद्मस्थ कह्यो तिम आधोवधिक पणि कहवो, एआलावगा करो आहाहिओभंतेमणूसेतीतमणंतमसयमित्यादिक, तीनदंडक आधोवधिक परमअवधिकओ भण कहवो के अधो ते अधोवधिक कहीये, ति प्रवर्तित विषये ते आधावधिक, परिमितक्षेत्रविषय अवधि तेपणि नसीझे। तहापरमोहिआविलिन्निलिन्निआलावगाभाणियव्वा। तिम परमाव धिक उत्कृष्टअवधि ते परमावधिक तेछमस्थ रूपीद्रव्य असंख्यात लोकमात्र अलोकखंड असंख्यीअवसर्पिणीविषय अवधिज्ञानवंत एपणि नसीझे, एपणि छ द्मस्थोपरे आलापो अतीत अनागत वर्तमानकाल तीनतीन आलावा कहवा। केवलोणभंतेमणूसेतीतअणंतसासयंसमयंजावअंतकरेंसु। केवलीनापणि एहीज तीनदंडक कहेवे–केवली,नं आलावासारे हिमयवम्! मनुष्य अतीत अपरिमाण अनंत शास्वताकाल तेहनेविषे यावत् अंतकीधो एतलातांइ क हवा, इतिपद्य। हंताविज्झिन। हां गौतम सीधा। जावअंतकरेंसु। यावत् अंतकीधो मोक्षगया। एतेतिन्निविआलावगाभाणियव्वा। एतीनेइपणि आलापका कहवा अधिकार सरिखेपदे कहवा अतीत वर्तमान अनागतकालभेदें। छउमत्थस्सजहाणवरंसिज्झिंसुसिज्झतिसिज्झिस्संति। जिम छद्म

णूणन्नते ! तीतमणंत सासयं समय, पडुप्पन्नवा सासयं समय श्रणागयमणंतवा सासयसमय, जेकेइ श्रत करावा श्रतिमसरीरियावा सव्वदुक्काणमतं करिंसुवा करिंतिवा करिस्सतिवा सव्वेते उप्पन्ननाणदंसणधरा श्ररहा जिणे केवली नायिसा तर्हपच्छा सिज्झति जाव श्रतकरिस्सतिवा ? हता गोयमा ! तीतमणत सासय जाव श्रतकरिस्सतिवा । सेणूणन्नते ! उप्पन्ननाणदंसणधरे श्ररहा जिणे केवली श्रलमत्थुत्ति वत्तव्व सिया ?

श्रम कहा तिम केवलीने पणि कहवा, एतलाविमेव पतीतकाले निहितार्थ हुवा, वर्तमानकाले निहिताय हुयाछे, पनागतकाले निव्हितायहुस्ये इ त्यादि । सेनूनमतेतीतमनतसासर्वसमयपडुपर्वावासासयसमय । वलोगोतम पूछेछे—हेभगवन् ! तेनिये पतीत पनत शाश्वतो समयकाले वर्तमान वा अथवा शाश्वतो सदातनसमयकालें । पनागतमनतं वा सासयसमयं । पनागत पागामि पनंत पपार वा पथवा शाश्वतो पविनासो समयकाले जेकेइपंतकरावा । जेकेइ एकजीव सवदुखना पंतनाकरणहार एतावता मुक्तिगामो । पंतिमसरीरियावा । पंतिम छेहलो प्रांत शरीरके जेहने एत ले चरमशरीरी ते । सव्वदुक्खाणमंतकरेंसु । सर्वदुखनो पंत जेतले एकजीवें कीधा पतीतकाले वर्तमानकाले । करंतिवा । केतला एक करेछे । करिस्स तिवा । पागामिकाले केतला एक करसें । सव्वेतेउप्पन्नणाणदंसणधरा । ते सगलाई उपनो केवलज्ञान केवलदर्शन जेहने तेहना धरणहार । पर हाजिणेकेवलोभवित्ता । पूजाने योग्य राग द्वेषना जीपणहार सर्वज्ञ थइने । तपोपच्छासिज्झति । तिवार पछो सीझे । जावपंतकरिस्सतिवा । पंत करसे एतावता मुक्तिजासे इतिप्रश्न । हता गोयमा । हां गोतम । तीतमणंतसासयंसमयजावपंतकरिस्संतिवा । पतीत पनत शाश्वता समयकाल यावत् पागामिकाले पंत करसे मोक्षजासे इत्यर्थ । सेनूनमते उप्पन्ननाणदंसणधरे । तेनिये हेभगवन् ! उपनो केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धरणहा र । परहाजिणेकेवली । इन्द्रकत पूजायोग्य राग द्वेषना जीपणहार सर्वज्ञ । पलमत्थुत्तिवत्तव्वसिया । पूर्ण केवलज्ञान पाम्यो एहथी उपरांत कोइ ज्ञा न पाम वीगवो नथी एहवुं कहवाने जेहना एहवूं कहोये इतिप्रश्न । हंता गोयमा उप्पन्ननाणदंसणधरे परहाजिणेकेवली पलमत्थुत्तिवत्तव्वसिया ।

मवेति ॥ सेभूणमित्यादिषु कालत्रयनिर्देशो वाच्यएवेति ॥ अलमत्थुत्ति ॥ अलमस्तु पर्याप्तं भवतु नातःपरं किञ्चिज्ज्ञानान्तरं प्राप्तव्य मस्यास्तीति एत प्रकार्यं स्या ज्रये रसत्यत्वा दस्येति ॥ प्रथमशते चतुर्थउद्देशः ॥ ४ ॥ अनन्तरोद्देशकस्यान्तिमसूत्रे व्वर्वंदाग्व उक्ता सोच पृथिव्यां भवन्ती त्यथवा; पृथिवीतो प्पुद्दत्ता मनुजत्व मवाप्ता सन्त सो प्रवन्तीति पृथिवीप्रतिपादनायाह तथापुढवित्ति पदुद्दे गाम्मद्दरस्या मुक्तं तत्प्रतिपादनायचाह ॥ कइणमित्यादि ॥ तत्र रयणप्पभत्ति ॥ नरकवर्णे प्राय प्रथमकाण्ड इन्द्रनीलादिवज्रविपरत्नसम्भवात् रत्ना नां प्रभा दीप्ति र्यस्यां सा रत्नप्रभा यावत्करणा दिदं दृश्य शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभेति अघार्थेव रत्नप्रभावदिति ॥ त मतमत्ति । तमस्तमःप्रभेत्यर्थ स्तत्र प्रकृष्ट तम स्तमस्तम स्तस्येव प्रभा यस्याः सा तमस्तमप्रभा एतासुच नरकावासाभवन्तीति ता भावाकाभिका

हंता गोयमा ! उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थुत्ति वत्तव्वं सिया ॥ सेवंभंतेभंतेत्ति पढम सए चउत्थोद्देसोसम्मत्तो ॥ ४ ॥ कइणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ

हां गोतम समस्तकमला थयको उपना केवलज्ञान भने केवलदर्शन तदनाधरनहार अरिहंतसहित जिन समस्त सरवादिक अतिशयवंत राग द्वेष ना जीपनहार केवली सर्वपदारथना जाण पर्याप्तथया एहथो उपरांत ज्ञान बीजा कांई पामवा सायनवो एहवो कहीये एसव साचोछे। सेवंभंतेभंतेत्ति। भगवंत कह्या ते सत्य मारोबे तहत्तछे भत्य प्रमाणछो। पढमसत्तक्ष चउत्थोद्देशा। ए पहिला शतकना चोथा उद्देसा विवरण्योसिस्सा ॥ ४ कइणभंतेपुढवीओ पण्णत्ताओ गोयमा सत्तपुढवीओ पणत्ता तंजहा रयणप्पभाजावतमतमा। कहिया उद्देसाना अतनेविषे अरहंतादिक कह्या ते पृ थिवीनेविषे हुवे अथवा पृथवीथको पणि चवीने मनुष्यपणुं पाम्यावथा ते अरहंतादिक हवे अथवा पढविति इसा उद्देसक सप्रस्तावनेविषे कहुं ते माटे ते पृथिवीना स्वरूप कहीयेछे येतलो हेमयमत्। पृथिवीकेटली इतिप्रश्न, हेगोतम सात पृथिवी कही तेकहेछे—रत्नानीकांति ते रत्नप्रभा १ कांक राणी प्रभा तिणरेविषे ते शर्करप्रभा २ इमवेलुनीप्रभा ३ कादमनीप्रभा ते ४ धूमसरीखीप्रभा ५ अंधकारनीप्रभा ६ महाअंधकारनीप्रभा ते तमतमप्रभा

कार्यसङ्ग्रहाय गाथाद्व ॥ पुढवीत्यादि ॥ तत्र पुढवीति सूत्रविभक्तिकत्वा त्सिर्द्वरास्य पृथिवीषु उपलक्षणत्वा च्चास्य पृथिव्यादिषु जीवावासेष्विति द्रष्ट

बत्तीसयविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । सोहम्मेणंभंते ! कइविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसयविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता , एवं , बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । पण्णाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुवि एएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ एक्कारसुत्तरहेट्ठिमएसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेयउवरिमए पंचेवयअणुत्तरविमाणा ॥

लक्षसहस्त्रा पण्णत्ता । यावत् पचमवारमा ज्योतिषी चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा तेहना विमान आवासस्थान असंख्याता जाणवा, मैं भगवन् अनंत तीर्थंकरे कहीमोतम बारदेवलोक नवग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान आश्रीने पूछे । सोहम्मादिविमानावासलक्षसहस्त्रा पंचता । सौधर्मदेवलोकने हे भगवन् ! केतलाविमानावासस्थानका लाख कह्या इतिप्रश्न । गोयमा बत्तीसविमानावासलक्षसहस्त्रा पण्णत्ता । हेगौतम ! बत्तीसलाख विमान तेरेप्रतरे छे, प्रतरें प्रतरें भिन्नविमानछे तेपूर्वे देवलोक बने कह्या इम सघन गाथाबद्धे जाणवा, । गाहा । बत्तीसठावीसा बारसअठचउरोसयसहस्सा । प चासत्तालीसा छसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ सौधर्मे बत्तीसलाख विमान ईशाने २८ लाख विमान, सनत्कुमारे १२ लाख विमान, माहेंद्रे आठलाख वि मान, ब्रह्मेंद्रे चारलाख विमान ए पंच देवलोकें सर्व ८४ लाख थया, लांतकें पचाससहस्र, शुक्रे चालीस सहस्र, छसहस्र आठमें देवलोके विमानजाण वा । आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ आणत नवमोदेवलोक प्राणत दशमोदेवलोक एबेउ मिली ४ विमानछे आरण ११ में देवलोके अच्युत १२ मेंदेवलोके एबेउ मिली ३ विमानछे, एसातसे विमान चारदेवलोके मिलीन थया २, हेठि ले ग्रैवेयकनेविषे एतले पहिले बीजे त्रीजे ग्रैवेयकमिली । एकारसुत्तरं हेट्ठिमएसत्तुत्तरंचमज्झिमए । सयमेयउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ २ ॥ एकसोइग्यारे विमानछे मध्यम ग्रैवेयके एतले चोथे पचमे छठे एतीनेमिली एकसोसात विमानछे, उपरले ग्रैवेयक विषे एतले सातमें आठमें नवमें एतो

व्यमिति ॥ ठिइत्ति ॥ सूक्ष्मा स्थूलमिति न्यायात् स्थितिस्थानानि वाच्यानीतिज्ञप ॥ एवतगाहवत्ति ॥ अवगाहनास्थानानि, शरीरादिपदानितु व्यक्तान्येव प्रकारान्तरेण पद प्रथमैकवचनान्तम्‌न्य इत्येव मेतानि स्थितिस्थानादीनि दशवस्तूनि यतो हेतवो विचारयितव्यानीति गाथासमा सार्थ। विस्तरार्थस्तु सूत्रकारः स्वयमेव वक्ष्यतीति तत्र रत्नप्रभापृथिव्यां स्थितिस्थानानि तावत्प्ररूपयन्नाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ व्यक्त, नवर ॥ एगमेगंसिनिरयावासंसित्ति ॥ प्रतिनरकावासमित्यर्थः ॥ ठिइठाणत्ति ॥ आयुषो विभागाः ॥ असंखेज्जत्ति ॥ सङ्ख्यातीतानि, कथ प्रथमपृथिव्यपेक्ष या जघन्या स्थिति र्दशवर्षसहस्राणि उत्कृष्टातु सागरोपम मेतस्या श्चैकेकसमयवृद्ध्या ऽसङ्ख्यानि स्थितिस्थानानि भवन्ति, असङ्ख्यत्वात् सागरो

३ ॥ पुढविठिइओगाहण सरीरसघयणमेवसठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणा ॥ ४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाएपुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासंसि नेरइयाण केवइया ठि

सं मिलो पचमा विमान, अनुत्तरविमान पचवीमध्ये पूर्वादि विजय १ वैजयत २ जयत ३ अपराजित ४ विचमें सर्वार्थसिद्ध ५, एसर्वेमिलो सर्वलोके ८४९७०२३ विमानथया । पुढविठिइओगाहण सरीरसघयणमेवसंठाणे । लेस्सादिठीणाणे जोगुवओगेयदसठाणे ॥ ४ ॥ हिवे दसस्थानक उपजनेवाले द्वारगाथा कहेछे—पृथिव्यादिकजीवना स्थानके विषे स्थितिस्थान कहवा २, शरीर कहवा ३ सघयण कहवा ४ निवे संस्थान कहवा ५ लेश्या ६ कहवी, दृष्टी ७ कहवी ० ज्ञान ते कहवा ८, योग ३ ते कहवा ९ उपयोग २ ते कहवा १ , ए पाछपूर्वे ए दसस्थान द्वार कहवा, पृथिवी आदिदेई सघनेविषे । इ मीसेर्णभंतेरयणप्पा । पुढवीए । गोतमपूछेछे—एहने हेभगवन् । रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे । तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु । तीसलाख नरकावासानेवि षे । एगमेगंसिनिरयावासंसि । एकेका एतले प्रत्येकें २ नरकावासनेविषे । नेरइयाणकेवइयाठिइठाणा पण्णत्ता । नारकीना केतला स्थितिस्थानक आयु यानां स्थान कह्या विभागरूपथया इतिप्रश्न । गोयमा असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा । हेगोतम ! सख्यातो अतिक्रम्या एतल्या तेमाटे असंख्याता आउखाना स्थानकविभाग कह्या तेकिम ? पहिली पृथिवीनैं अपेक्षायें जघन्य दस सहस्रवर्षनी स्थितिछै ते एक समय अधारतां उत्कृष्ट एक सागरो

घममगयाश मित्येवं नरकावासापेक्षया व्यसङ्ख्या न्येवतानि, केवल तेषु जघन्योत्कृष्टविभागो ग्रन्थान्तरा दवसेयो यथा—प्रथमप्रस्तटनरकेषु जघ न्या स्थिति दशवर्षसहस्रा मुत्कृष्टातु नवतिरिति एतदेवदर्शयन्नाह ॥ जहन्नियाठिइत्यादि ॥ जघन्यास्थिति दशवर्षसहस्रादिका इत्येकं स्थिति स्थान तच्च प्रतिनरकं त्रिरूप मेव समयाधिकेति द्वितीय मिदमपि विचित्र एव यावदसङ्ख्येयसमयाधिका सा सर्वान्तिमस्थितिस्थानदशमाया इ ॥ तप्पाउग्गुक्कोसियत्ति ॥ उत्कृष्टा सा चमेकविधेति विशेष्यते तस्य विवक्षितनरकावासस्य प्रायोग्योचिता उत्कर्षिका तत्प्रायोग्योत्कर्षिका इत्य पर स्थितिस्थान मिदमपि विचित्र विचित्रत्वा दुत्कर्षस्थितरिति एवं स्थितिस्थानानि प्ररूप्य तेष्वेव क्रोधाद्युपयुक्तत्व नारकाणां विभागेन दर्श

इठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा ठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा जहन्नियाठिई समयाहिया , जहन्निया ठिईदुसमया हिया, जाव असंखिज्जसमयाहिया जहन्नियाठिई, तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई । इमीसेणं भंते !

पममो स्थिति ते सागरोपमना असंख्यातसमय हुवे तेमाटे असंख्याता स्थितिस्थान कह्या, इम नरकावासानो अपेक्षायें पण असंख्याताहुवे, इहां जघन्य उत्कृष्ट विभाग ग्रन्थान्तर थी जाणवो, जिम रत्नप्रभाना पहिला पाथडानेविषे जघन्य दशसहस्रवर्ष उत्कृष्ट नेउ सहस्रवर्ष स्थिति छे, एहीज दे खाडे छे—जहन्नियाठिई इत्यादि तेवारे—जघन्यस्थिति ए एकस्थितिस्थान कह्या तेपण प्रतिनरकें भिन्नभिन्न छे, वली तेहीज एकसमय अधिक एबीजो स्थितिस्थान कह्या तेपण अनेकप्रकारनो छे। जहन्नियाठिई समयाहिया जहन्नियाठिईदुसमयाहिया । इमबीजो स्थितिस्थानकथयो, एपण विचित्र छे एरआवयसंखेज्जसमयाहियाजहन्नियाठिई । इम यावत् असंख्यातसमय अधिक जघन्यस्थान एपण विचित्र छे प्रतिनरकें भिन्न भिन्न स्थितिस्थानकछे, वने पाथडे २ पण भिन्नभिन्न स्थितिस्थानकछे तेमाटे, हिवे सर्वथी छेहलो स्थितिस्थान देखाडेछे। तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई । विवक्षित नरकावास न योग्य उचित उत्कृष्ट स्थितिस्थान तेपण अनेकप्रकारनोछे, उत्कृष्टस्थितिस्थानना विचित्रपणाथी इम स्थितिस्थान प्ररूपीने तेहीज स्थितिस्थानक विषे क्रोधादिसहित नारकीने विभागेकरी देखाडता इसा कहेछे—इमीसेणंभंते रयणप्पभाएपुढवीएतीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु । एहीज हेभगवन् !

मित्यमाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ जहन्नियाएठिइएसमयाहियाए ति॥ या यत्र नरकावासे जघन्या तस्यां वर्त्तमानाः ॥ किंकोहोवउत्तेत्यादि ॥ प्रश्ने ॥ सव्वे वीत्याद्युत्तरं तत्र च प्रतिनरकं जघन्यस्थितिकानां सदैव भावात् तेषु च क्रोधोपयुक्तानां बहुत्वात् सप्तविंशतिभङ्गका एकादिसङ्ख्यातसमयाधिकजघ न्यस्थितिकानां तु कादाचित्कत्वात् तेषु च क्रोधाद्युपयुक्तानामेकत्वानेकत्वसम्भवात् अशीतिर्भङ्गका एकेन्द्रियेषु सर्वकषायोपयुक्तानां प्रत्येकं बहूना म्भावात् इत्यभङ्गकम् माह च – समयाइ असंखकाल विरहो असीतिभंगाती इयरज्जाइ । जहियंमहारविरहो भजगपंसत्तवीसावा ॥ १ ॥ ययम्म तरसतापेक्षो वि रहो ग्रहण्यो मतु त्यावापेक्षो यतो रत्नप्रभायां चतुर्विंशतिर्मुहूर्ता उत्पादविरहकाल उक्त सातव यत्र सप्तविंशति भङ्गका उच्यन्ते तत्रापि विर हनाया इत्यशीतिः प्राप्नोति सप्तविंशतेया भावएवेति, अत्र ॥ सव्वेवितावहोज्जकोहोवउत्तत्ति ॥ प्रतिनरकं स्वकीयस्वकीयस्थित्यपेक्षया जघन्यस्थिति कानां नारकाणां सदैव बहूनां सद्भावात् नारकजनस्य च क्रोधोदयप्रचुरत्वात् सर्वेऽप्येव क्रोधोपयुक्ता भवेयु रित्येको भङ्गः ॥ अहवेत्यादिना द्विक्रिचतुः

रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ठिईए वट्टमा णानेरइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्ज कोहोव

रत्नप्रभा पृथिवीने विषे त्रीसलाख नरकावासाने विषे । एगमेगंसिनिरयावासंसि । एकेक एटले प्रत्येक नरकावासाने विषे जिहां जे नरकावासाने विषे जहन्नियाएठिइएवट्टमाणानेरइया । जघन्यस्थितिके, तेहनेविषे वर्त्तमान नारकीओ । किंकोहोवउत्ता । शुं क्रोधवाला छे ? माणोवउत्ता । शुं मानवाला छे ? मायोवउत्ता । शुं मायावाला छे ? लोभोवउत्ता । शुं लोभवाला छे ? इतिप्रश्न, । गोयमा सव्वेवितावहोज्ज कोहोवउत्ता । हे गौतम ! प्रतिनरके पोतापोतानी स्थितिनी अपेक्षाये जघन्यस्थिति नारकीओनो घणानो सद्भाव छे अने नारक भवनेविषे क्रोधनो उदय घणो छे तेमाटे सर्वे क्रोधसहित । अथवा इत्यादि । द्विविध अथवा भांगा देखाड्या तिहां द्विकसंयोगनेविषे आववाथी घणा तेमाटे क्रोधे बहुवचनयोज कोय, आपत्तयथा मानवतएक भांगो १ । सव्वेवितावहोज्जइत्यादि । उत्तर तिहां प्रतिनरके जघन्यस्थितिना नारकीओनो सदैव सद्भाव छे विरहनथी, तेहनेवि

उत्ता १ , अहवा , कोहोवउत्ता माणोवउत्तेय २ , अहवा , कोहोयउत्ताय माणोयउत्ताय ३ , अहवा , कोहायउत्ताय मायोयउत्तेय ४ , अहवा , कोहोयउत्ताय मायोयउत्ताय ५ , अहवा , कोहोयउत्ताय लो ओयउत्तेय ६ , अहवा , कोहोयउत्ताय लोभोयउत्ताय ७ । अहवा , कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय मायो

ते आवर्त घ ता तेमाट सत्तावीम भांगा थये, घने एकमादि सत्यातसमयाधिक जघन्यस्थितिना नारकोने तेरुने कदाचित्पयोवे, तेरुनो विचारे वविरहपवि करेवे तेमाटे तिहां क्रोधमहित एकपपिहुवे—घने घनेकपचोपवि संभवे तेमाटे घमोभांगापविक्रपवे, घने पद्वीनेविषे वारेर वपासस हित प्रत्येवें पनापामिवे तेमाटे। पमगम। भांगीनउपवे मत'—संमवादर्भविविरहो घमोदमंमातविकरिव्याहि। जविसंतवोदविरहो घभमयसत्तवोसा वा॥ १॥ एविरहपवि सत्तावीसनो पपेमायें वहया पवि उत्पादनो पपेमायें विरहनकहयो, तेविम रत्नमभावें पउवीस सुहत्तनो उत्पाद विरहकहो पवि जिहां सत्तावोम भांगा कह्या तिहां पवि चउवीम सुहत्त विरहना समयवो घमोभांगा पामये तिवारे सत्तावीसनो घमावहोवहुमे, महयाको होवउत्ताय। पयरा क्रोधवतपवा तिर्वे कोधें बहुवचनपासो। माचोवउत्ताय २। घने मानवत पवि घवापामोये एवोजोभांगो २। महयाकोहोवउत्ता य मायोवउत्तेय १। पचवा क्रोधवंतपवा घनेमायावंत एक एविक सयोमोभो भोजोमांगो १। महवा कोहावउत्ताय मामोवउत्ताय ४। पयवा क्रो धवतघवा तेमाटे घने मामावत पवि घवा तेमाटे बहुवचन एवोजोभांमो ४। महवा कोहावउत्ताय लोभोवउत्तेय। क्रोधवतपवा तेमाट बहुवचन घने मामवत एक तेमाटे एकवचन ए पांचमोभांगा ५। महयाकोहावउत्ताय। पवया क्रोधवंत घवा तेमाटे बहुवचन घने। लोभो वउत्ताय। लाभवंतघवा तेमाटे दहांपवि बहुवचन ए द्विकसंयागी छहोभांगा ६। एव ७। भांगाथया ॥ हिवे त्रिकसंयागी बारेभांगा देखाडे छे—घमवमांमि क्रोधें बहुवचनहीय। महयाकोहोवउत्ताय मायोवउत्तेय मामोवउत्तेय १ घथवा क्रोधवंतघवा मानवत एक मायावंत एक एविकस

मोपयुक्ताय २। एवं मायैकत्वबहुत्वाभ्यां द्वौ लोभेनच द्वौ, एव मेते द्विकयोगेपद् त्रिकयोगेतुद्वादशभवन्ति तथाहि–क्रोधे नित्यं बहुवचनं मानमायया रेकवचनमित्येको मानैकत्वे मायाबहुत्वेच द्वितीयो मानेच बहुवचनं मायाया मेकत्व मितितृतीयो मानबहुत्वे मायाबहुत्वेच चतुर्थ , पुनः क्रोधमानलोभै रित्थमेव चत्वारः पुनः क्रोधमायालोभै रित्थमेवचत्वार, एव मते द्वादश, चतुष्कसंयोग त्वष्टौ, तथाहि–क्रोधे बहुवचनेन मानमा

यउत्तेय १ , कोहोवउत्ताय माणोवउत्तेय मायोयउत्ता २ , कोहोवउत्ता माणोयउत्ता मायोयउत्तेय ३, कोहोयउत्ता माणोवउत्ता मायोयउत्ता ४ , एवं कोहेणं माणेण लोभेण चत्तारि भंगा १२ । अहवा , कोहोयउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोयउत्ते १ , अहवा , कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउ

भामोना पविकाभांगा १ । मथवाक्रोधावउत्ताय । मथवा क्रोधवत मवा । मायावउत्तेय । मानवत एक । मायोवउत्ताय। २ मायावत पवि मवा एमोको भांगा २। मथवा क्रोधोवउत्ताय। मथवा क्रोधवत मवा । मायावउत्ताय । मानवंतमवा । मायावउत्तेय । मायावत एक ए चौथी भांगा ४। मथवाको धावउत्ताय । मथवा क्रोधवतमवा । मायावउत्ताय । मानवतमवा । मायोवउत्ताय ४ । मायावंतपवि मवा एपोथामांगो । एवंकोधेमानेलाभेकरि तारिभंगा ८। इम क्रोधमानमायासू चारभांगा मथवा त्रिकसयागे तिवार माठभांगा थया ८ । एवकोधेय । इम क्रोध माया लोभसू चारभांगा कर रा, इहांपि सर्वत्रपे बहुवचन कहवो, एम भांगा १२ थया त्रिकसयागीना सर्वमिली भांगा १८ थया, चारिसंयोगे माठ भांगा हुवे ते देखाडे छे क्रोधावउत्ताय । मथवा क्रोधसहित मवा तेमाठे क्रोधे बहुवचन । मायावउत्तेय । मानसहित एकवचने । मायोवउत्तेय । मायासहित एक वचने । लो भावउत्तेय १ लोभसहित एक ए चत सयागीभांगा । मथवाक्रोधावउत्ताय । मथवा क्रोधवंत मवा । मायावउत्तेय । मानवत एक । मायोवउत्तेय । मा यावत एक । लोभावउत्ताय २ । लोभवंत मवा एचतु सयागीना बीजोभांगा । मथवाक्रोधावउत्ताय । मथवा क्रोधवत मवा । मायावउत्तेय । मानवंत एक । मायावउत्ताय । मायावत मवा । लोभोवउत्तेय । लोभवंत एक ए त्रीजोभांगो ३ । मथवाक्रोधावउत्ताय । मथवा क्रोधवंत मवा । मायोवउत्तेय ।

पामोनपु वैक्रयवने मैक्ष इत्यमेव मानेयपुयवमेन तृतीय एव मेता वेक्रवपमान्तमायया आर्तौ एव चतुयवमान्तमायया त्यौ ह्रौ एव मते चत्वार
पञ्चवनान्तमानन जाता एवमेव यतुयवनान्तमानेन चत्वार इत्यवमष्टौ एव मेते अघन्यस्थितिपु नारकेपु सप्तविंशति र्भवन्ति अघन्यस्थितौ

ष्ठा २, थ्रहवा, कोहोयउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोयउत्ते ३, अहवा, कोहोवउत्ता माणोवउ
त्ते मायोयउत्ता लोभोयउत्ता ४, अहवा, कोहावउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोयउत्ते ५, अहवा,
काहोयउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ते लोभोयउत्ता ६, अहवा, कोहोवउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ता
लोभोयउत्त ७, अहवा, कोहोयउत्ता माणोयउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ८, एव सत्तावीसभंगा ने
यव्वा । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावाससि सम

मानवत एक। मायावउत्ताय। मायावत घणा। मायावउत्ताय ४। लोभवतघणो ए चोथाभागा ४। अथवा क्रोधावउत्ताय। अथवा क्रोधवतघणो। मा
नावउत्ताय। मानवतपणि घणो। मायोवउत्तेय। मायावत एक। लोभोवउत्तेय। लोभवतपणि एक एपांचमोभांगो ५। अथवा क्रोधावउत्ताय। अथवा
क्रोधवत घणा। मानावउत्ताय। मानवत पणि घणा। मायावउत्तेय। मायावंत एक। लोभोवउत्ताय ६। लोभवत घणा एछठ्ठोभांगो ६। अथवा क्रोधो
वउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। मानावउत्ताय। मानवंत घणा। मायोवउत्तेय। मायावंत घणा। लोभोवउत्तेय ७। लोभवंत एक एसातमों भांगो ७।
अथवा क्रोधावउत्ताय। अथवा क्रोधवत घणा। मानावउत्ताय। मानवत घणा। मायोवउत्ताय। मायावतघणा। लोभावउत्ताय ८। २७। एवसत्तावी
समभंगानेयव्वा। लोभवंत घणा एवत् सर्वामीला आठमो भांगो ८। इम असंयोगो १ द्विकसंयोगो ६। त्रिकसंयोगो १२। चतु संयोगो ८। ए सर्वमि
ला २७ भांगा जघन्यस्थिति नारकीनें विषे हुवे जघन्यस्थितिना घणा नारकी पवाडुवे तेमाटे क्रोधनेविषे बहुवचनहीज हुवे क्रोधी घणाहुवे तेमाटे,
इमायेणंभ पूछेछे—इमासिणंभंते रयणप्पभाएपुढवीए। एहीज हेभगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावासं

त्ति यहवो नारका भवन्त्यतः कार्ये मधुवचनमेव ॥ समयाहियाएजहण्णठिईएवट्टमाणाणेरइयाकिंकोहोवउत्ताइत्यादि ॥ मम इहो सरं ॥ कोहोवउ
त्तेयइत्यादयोऽशीतिभङ्गा इह समयाधिकायां यावत्सङ्ख्येयसमयाधिकायां जघन्यस्थितौ नारका न भवन्त्यपि भवन्तिचे देकोवा अनेकेवे ति ततः
क्रोधादि ऐकत्वम चत्वारो विकल्पा, बहुत्वम चान्य चत्वारएव ४ द्विकसंयोगे चतुर्विंशति सप्तादि—क्रोधमानयो रेकत्वबहुत्वाभ्यां चत्वारः

याहियाए जहण्णठिइए वट्टमाणा नेरइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता? गोयमा! कोहोवउत्तेय माणोवउत्तेय मायोवउत्तेय लोभोवउत्तेय, कोहोवउत्ताय माणोवउत्ताय मायोवउत्ताय लोभोवउत्ताय, अहवा, कोहोवउत्तेय माणोवउत्तेय, अहवा, कोहोवउत्तेय माणोवउत्ताय, एवं असीइभंगा नेयव्वा, एवं जाव संखेज्जसमयाहियाठिई असंखेज्जसमयाहियाठिइए तप्पाउग्गुक्कोसियाएठिइए सत्तावीस

[illegible] समयाधिकाए जघन्यस्थितिमा वर्तमान नेरइया किं क्रोधोपयुक्ता मानोपयुक्ता मायोपयुक्ता। लोभोपयुक्ता। चोस नरकावास शतसहस्र कहतां लाखने
विषे एकेका नरकावासाने विषे एतले मलवे २ नरकावासे एक समय अधिक जघन्यस्थितिमाहे वर्तमान नारकी स्यूं क्रोधसहित छे इत्यादि,
इहां समयाधिक यावत् संख्यात समयाधिक जघन्यस्थितिने विषे नारकी न हुवे, अथ हुवे तो एकपणि हुवे अनेकपणि हुवे तेमाटे क्रोधादिको ए
कहो थाय अनेकहोथाय, तिवारे मयोभांगा ऊपजे ते देखाडे छे स्यूं क्रोधवंत सघलाहोय अथवा मानवंत सघला होय अथवा मायावंत सघलाहोय अ
थवा लोभवंत सघलाहोय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा! हेगौतम! कोहोवउत्तेय। क्रोधवंत एकहोय ए एकभांगो १। माणोवउत्ताय। अथवा मानव
त एकहो हुवे एबीजोभांगो २। मायोवउत्तेय। अथवा मायावंतहोय एक थाय एत्रीजोभांगो ३। लोभोवउत्तेय। अथवा लोभवंतहोय एकहोय ए चो
थो भांगो ४। कोहोवउत्ताय। अथवा क्रोधवंतहोय सघलाहुवे एपांचमोंभांगो ५। माणोवउत्ताय। अथवा मानवंतहोय सघलाहुवे एछट्ठोभांगो ६। मा
योवउत्ताय। अथवा मायावंत सघलाहोय हुवेएसातमो भांगो ७। लोभोवउत्ताय। अथवा लोभवंत होय सघलाहुवे ए आठमोंभांगो ८। एआठभांगा

४ एव क्रोधमाययोः ४ एव क्रोधलोभयोः एव मानमाययोः ४, एवंमानलोभयोः ४ एव मायालोभयोरिति द्विकयोगे चतुर्विंशति त्रिक योग द्वा त्रिंश तथाहि—क्रोधमानमायाना मेकत्वे मैक एवेव मायाबहुत्वेन द्वितीय एव मेतौ मानैकत्वेन द्वावथा न्यौ तद्बहुत्वेन एवमेतेच त्वारः क्रोधैकत्वेन चत्वारएवा न्यक्रोधबहुत्वेने त्येव मष्टौ क्रोधमानमायाविकेजाता स्तथैवा न्ये ष्टौ क्रोधमानलोभेषु तथैवा न्ये ष्टौ क्रोध

जगा जाणियव्वा। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसिनिरयावास

चसयामी कह्या। अथवा क्रोधवत एव मानवत एव एपविशा भांगा १। तथा द्विकसंयोगी भांगा २४ त देखाडेछे—क्रोधमान एकवचन बहुवचनेकरी भांगा चारचव इमक्रोध माया सूचार, क्रोधलोभसूपणिचार, इम मानमायासूचार, मानलोभसूचार, एवलोभ द्विकसंयोगीकह्या। त्रिकसंयोगी ३२। भांगाचूवे तेदेखाडेछे—क्रोध मान माया एकवचने एकवचनें पहिलोभांगा १। क्रोधमान एकवचने माया बहुवचने २। इत्यादि सघलो जाणवा। चतुष्क संयोगी भांगा १६। क्रोधादिकचारेई एक वचनें १ क्रोधादिक ३ एकवचनें लोभे बहुवचन २ एपणि भांगा संघलो जाणवा। एसवमिली ८ भां गायाव, अथवाक्रोधोपयुक्तेव। अथवा क्रोधवंत एक। मायावन्तात २। मानवत तथा एवीलोभांगो १। एवंअसीतिभंगाषेयव्वा। इमअसीभांगा जा णवा। एवंजावअसंखेज्जसमयाहिया। इम यावत् जघन्यस्थितिनेंविषे एकआदिदेई संख्यात समय पर्यंत असीभांगाकह्या। ठितीअसंखेज्जसमयाहिया ठिइए तप्पाउग्गुक्कोसियाएठिइएसत्तावीसंभंगाभाणियव्वा। अने संख्यात समयाधिक जघन्य स्थितिथको मांडभी यावत् उत्कृष्टस्थितिनें तिहां स घले भगावीस भांगा काव पूर्वें कह्या तेहीज किहांमो असमयने सत्तावीसहीज भांगा जाणवा चार एककह्या १। हिवे अवगाहना द्वारकहेछे— । इमोसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु। हेभगवन्! एहीरत्नप्रभा पृथिवीनें विषे त्रीस नरकावासाना शतसहस्रलक्षविषय । एगमेगंसिनिरयावासंसि। एकेका नरकावासानें विषे। नेरइयाणंभंतेकेवइयाओगाहणाठाणापण्णत्ता। नारकीने हेभगवन्! केतला शरीरनां आधार भूत थेव तेहनांजघन्य प्रदेश होंवरी विभाग ते अवगाहना स्थान कहीयें ते अवगाहना स्थानक केतला कह्या इतिप्रश्न। गोयमा असंखेज्जाओगाहण

त्रिवे मतावीमतांमानो मत ३ ३ १ ७ ३ ३ ३ ३ ४ १ १ ३

असंयोगी १ ३ ३ ३ ८ द्विकसंयोगी जांगा २४ १ ३ १

क्रोधोपयुक्ताः क्रोधेमुपयुक्तम् १ क्रोध माया लोभ क्रोध मान क्रोध माया १ ३ ३

द्विकसंयोगी ६ ३ १ १ ९ १ १ १ १ ३ १ १

क्रोधोपयुक्ताः मानोपयुक्तः १ ३ १ ३ १० १ ३ १ १ ३ १ ३

३ ३ २ ३ ३ १ ११ ३ १ ३ १ ३ ३ १

३ मायोपयुक्ताः ३ ३ ३ ३ १२ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

३ मायोपयुक्ताः ४ चतुःसंयोगी ८ क्रोध लोभ मान माया क्रोध मान लोभ

३ लोभोपयुक्त ५ क्रोध मान माया लोभ १ १ १ १ १ १ १

३ लोभोपयुक्ता ६ ३ १ १ १ १ १ ३ १ ३ १ १ ३

त्रिकसंयोगी १२ ३ १ १ ३ २ ३ १ ३ १ १ ३ १

क्रोध मान माया ३ १ ३ १ ३ ३ ३ ३ ३ १ ३ ३

३ १ १ १ ३ १ ३ ३ ४ मान लोभ माया लोभ ३ १ १

३ १ ३ २ ३ ३ १ १ ५ १ १ १ १ ३ १ ३

३ ३ १ ३ ३ ३ १ ३ ६ १ ३ १ ३ ३ ३ १

३ ३ ३ ४ ३ ३ ३ १ ७ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

क्रोध मान लोभ एवं २७ त्रिकसंयोगी जांगा ३२

३ १ १ ५ क्रोध मान माया लोभ क्रोध मान माया

३ १ ३ ६ १ १ १ १ ४ १ १ १

क्रोध	माया	लोभ
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

मान	माया	लोभ
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

चतुःसंयोगी १६ ।

क्रो	मा	माया	लोभ
१	१	१	१
१	१	१	३
१	१	३	१
१	१	३	३
१	३	१	१
१	३	१	३
१	३	३	१
१	३	३	३
३	१	१	१
३	१	१	३
३	१	३	१
३	१	३	३
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

मायालोभेषु तथैवान्ये द्वौ मानमायालोभेष्विति द्विकसंयोगे चतुष्कयोगे षोडश तथाहि—क्रोधादि ष्वेकत्वे एको लोभस्य बहुत्वेन द्वितीय एवमेतौ मायैकत्वेन तथा न्यौ मायाबहुत्वेन एवमेते चत्वारो मानै कत्वेन तथा न्ये चत्वारएव मानबहुत्वेन एवमेते अष्टौ क्रोधैकत्वेन एव मन्य ष्टौ क्रोधबहुत्वेनेति षोडश एवमेते सर्वे एवा शीतिरिति एते च जघन्यस्थिता वेकादिसङ्ख्यातान्तसमयाधिकाया भवति असङ्ख्यातसम याधिकायास्तु जघन्यस्थिते रारभ्यात्कृष्टस्थिति याव त्सप्तविंशति र्भङ्गा स एव तत्र नारकाणां बहुत्वादिति अथ प्रगाहनाद्वारं तत्र ॥ इमाइ बठायति ॥ अवगाहन्त आसते यस्यां सा अवगाहना तनु स्तदाधारभूत वा क्षेत्र तस्या स्थानानि प्रदेशवृद्धया विभागा अवगाहनास्थानानि तत्र ॥ जहन्निय ॥ जघन्यांगुलासङ्ख्येयभागमात्रा सर्वनरकेषु ॥ तप्पाउग्गुत्तासि यत्ति ॥ तस्य विवक्षितनरकस्य प्रायोग्या या उत्कर्षिका सा तत्प्रायो

सि नेरइयाण केवइया ओगाहणठाणा प० ? गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणठाणा प० तं० जहन्निया ओगाहणा

ग्योत्कृष्टा तत्र ३ । हे गौतम ! असंख्याता अवगाहना स्थानक नारकीना कह्या छै । जघन्यायांगुलनाअसंख्यातमाभाग । जघन्य अवगा हना अंगुलनें असंख्यातमें भागे सगली नरकेछे । एकप्रदेशाधिकजघन्यावगाहना । ते एकप्रदेशअधिक जघन्य अवगाहना स्थानक । दुप्रदेसियाजहन्नि योगाहणा । बेप्रदेशे अधिक जघन्य अवगाहनास्थानक । जाव असंखेज्जपदेसियाजहन्नियाओगाहणा । यावत् असंख्यात प्रदेशाधिक जघन्य अवगा

ज्योत्कर्षिका, यथा-प्रयोदशमशते यन्नु सर्वे रत्निका मकुलपदृक्ष्येति ॥ जहण्णियाएइत्यादि ॥ जघन्यायां तस्यामेव चैकादिसङ्ख्यातान्तप्रदेशाधिका या मध्यमावगाहनायां वर्त्तमानानां नारकाणां सम्भवात् क्रोधाद्युपयुक्त एकोऽपि लभ्यते तो भीतिभङ्गाः ॥ असंखेज्जपएसेत्यादि ॥ असङ्ख्यातप्रदेशाधिका या तत्प्रायोग्योत्कृष्टायाश्च नारकाणां बहुत्वात् तेषु च बहूनां क्रोधोपयुक्तत्वेन क्रोधेबहुवचनस्य भावात् मानादिषु त्वेकत्वबहुत्वसम्भवात् सप्तविंशति भङ्गा भवन्तीति, ननु येऽजघन्यस्थितयो जघन्यावगाहना भवन्ति तेषां जघन्यस्थितिवत्त्वेन सप्तविंशति भङ्गाः प्राप्नुवन्ति जघन्यावगाहकत्वेन

अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, जहण्णियाए ओगाहणाए एगपएसाहिया, जहण्णियाए ओगाहणाए दुपएसाहिया, जहण्णिया ओगाहणा जाव असंखेज्जपएसाहिया, जहण्णियाए ओगाहणा तप्पाउग्गुक्कोसिया उग्गाहणा। इमीसेणं भंते!

हनाख्यानक। तप्पाउग्गुक्कोसियाउग्गाहणा। केटलायेक नरकावास तेहना उत्कृष्टी अवगाहना सदोसदो आवस्यो जिम पहले नरके उत्कृष्टी अवगाहना तेरमें पाथडे सातधनुष तीनहाथ छअंगुल। इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएपुढवीए। एहीज हे भगवन्। रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे। तीसाएनिरयावाससयसहस्सेसु। त्रीसलाख नरकावासानेविषे। एगमेगंसिनिरयावासंसि। एकेका नरकावासानेविषे। जहण्णियाएओगाहणाएवट्टमाणाणंनेरइयाणंकिंकोहोवउत्ता असीतिभंगा भाणियव्वा जावसंखेज्जपएसाहिया जहण्णियाओगाहणा असंखेज्जपएसाहियाए जहण्णियाएओगाहणाए तप्पाउग्गुक्कोसियाओगाहणाएवट्टमाणाणंनेरइयाणं दसविसत्तावीसंभंगा। जघन्य अवगाहनाये वर्त्तमान नारको स्युं क्रोधवंत थाय छे? इतिप्रश्न उत्तर जघन्य अवगाहनाने विषे तथा यावत् एकादि सङ्ख्यातप्रदेशाधिक पर्यंत जघन्य अवगाहनानेविषे वर्त्तमान नारकीमा कोइ वारा पवि पामीये तेमाटे क्रोधवंत एक पवि पामें तेमाटे असीभांगा हुवे यावत् सङ्ख्यातप्रदेशाधिक जघन्य अवगाहनास्थान असङ्ख्यातप्रदेशाधिक अवगाहनानेविषे वर्त्तमानने तत्प्रायोग्य उत्कृष्ट अवगाहनानेविषे वर्त्तमान नारकीना बहुलपणे तेमाटे नारकीनेविषे क्रोधवंत पामीये घणानेविषे बहुवचननो संभव छे तेमाटे सत्तावीस भांगा हुवे इहांकोइ एकपूछसें जेजघन्यस्थितिना नारकीजघन्य अवगाहनावे हुवे तेहने जघन्यस्थितिपणे सत्तावीसभांगा पामें अने जघन्यपणे करी असीभांगाप्रमुख इहां विरोधदिसति

या भीति रिति विशेषः ? अत्रोच्यते जघन्यस्थितिकानामपि जघन्यावगाहनाकाले अशीतिरेव, उत्पत्तिकालस्याविरहेण जघन्यावगाहनानां सत्त्व स्यादिति यावत् जघन्यस्थितिकानां सप्तविंशतिः या जघन्यावगाहनस्य मतिक्रान्तानां भितिप्रावनीय शरीरद्वारे ॥ सत्तावीसंभंगत्ति ॥ अनेन यद्य पि वैक्रियशरीरे सप्तविंशति भङ्गका उक्ता तथापि या स्वस्थानया अवगाहनाश्रयाच भङ्गकरूपका सा तथैव दृश्या निरवकाशत्वा तस्याः

रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता असीइभंगा भाणियव्वा, जाव संखेज्जपदेसाहिया, जहन्निया ओगाहणा, असंखेज्जपएसाहियाए जहन्नियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं तप्पाउग्गुक्कोसियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं नेरइयाणं दोसुवि सत्तावीसं भंगा । इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं कइ सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तिन्नि सरीरया पण्णत्ता तंजहा—वेउव्विए तेयए कम्मए । इमीसे णं भंते ! जाव वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता सत्तावीसं भंगा, एएणं गमेणं तिन्नि सरीरया भा

णी उत्तर जघन्यस्थितिना नारकाने पणि जघन्यअवगाहना कालनेविषे असीभांगा हुवे, उत्पत्तिकाल मावीपणे करी जघन्य अवगाहनापणि बा लो हुवे, अजघन्यस्थितिने सत्तावीसभांगा कह्या जेजघन्य अवगाहना अतिक्रान्तने हुवे इसो भावना करवी, ए बोलोवार कह्या । हिवे शरीरद्वार कहेछे—इमीसेणंभंतेरयणप्पभाएजावएगमेगंसिनिरयावासंसिनेरइयाणंकइसरीरयापण्णत्ता गोयमा । पचोक्त हेभगवन् । रत्नप्रभापृथिवीने विषे चोसला ष नरकावासाने एकेका नरकावासानेविषे नारकीना जीवने केतलाशरीरमाहि केतला शरीरकह्या इतिप्रश्न उत्तर हेगोतम । पांचशरीर माहिला । ति न्निसरीरयापण्णत्ता तंजहा । तीन शरीर कह्या भगवंते ते तीन नामोप तेकहेछे—वेउव्विय । वैक्रिय शरीर १ । तेयए । तैजस शरीर २ । कम्मए । कार्मण शरीर ३ । इमीसेणंभंतेजाववेउव्वियसरीरेवट्टमाणानेरइयाकिंकोहोवउत्तासत्तावीसभंगा । पचोक्तप्रश्नोत्तर—पचोक्त रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे यावत् वैक्रिय

शरीरमयपायाय सावकामत्वा देव मन्यत्रापि विमग्नीयमिति ॥ एएवगमेवतिविसरीरयामाविचवृति ॥ वैक्रियशरीरसूत्रपाठेन त्रीणि शरीरका णि वैक्रियतैजसकार्मकाणि जपितव्यानि विग्रविग्नु असतविंशति वोच्चेत्यर्थः ननु विग्रहगती केवले ये तैजसकार्मकशरीरे स्याता तयो रस्पत्वना दीति रपि जकुकागासम्बतीति कथ मुच्यते तयो सप्तविंशतिरेवे ? त्रत्रोच्यते सत्य मत एवेवलं वैक्रियशरीरानुगतयो सयो रित्राप्रयत्र केवलयो या नाभयवमिति सप्तविंशतिरेवति यत्र द्वयोरेवा तिदेश्वस्त्रे श्रीवीत्पुच तत्पयाकामपि गमस्या त्यन्तसाम्योपदर्शनार्थमिति सहननद्वारे ॥ वरई सघयणार्ग मसघयणिति ॥ यथा सहननामा वज्रऋषभनाराचादीनां मध्या दन्तरेणापि सहननेना सहननानीति, कसादेव मित्यतस्राह ॥

णियह्रा । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए जाव नेरइयाण सरीरया किसंघयणा पन्नत्ता ? गोयमा ! छण्हंस घयणाण असंघयणी, नेवट्ठीनेवछिरानेवण्हारुणि, जेपोग्गला अणिठा अकंता अप्पिया असुहा अम णुन्नाअमणामा, एएसिंसरीरसंघायत्ताएपरिणमंति । इमीसेण भंते ! जाव छण्ह संघयणाणं असंघयणे य

शरीरे वत्तमान नारकी तू काय सहित यता हने ? इहां सत्तावीस भांगा कपचे इहां यद्यपि वैक्रियशरीरने विषे सत्तावीस भांगा कह्या तथा जि णखिति पाली भवगाहना पाथी भांगाने प्ररूपणाकरो विना तिमहीज कहवो बीजू किहांई तेहनो यवकामनहीं यमेयरीरा नयात सावकायहि इस समझे बिमासो बुति करवी । एएवगमेवंतिविसरीरयाभाविपव्वा । इये प्रकारे वैक्रिय तैजस कार्मण तीनशरीर कहवा, तीनांहरे विषे सत्तावीसभां मा कहवा, इहां कोइक पूछये विग्रहगतिनेविषे केवल जे तैजस कार्मणशरीरके केहाने अल्पपणकरी ययोभांगा सभवे तो तैजस कार्मणशरीरने विषे सत्तावीसबीजभांगा किमकह्या इहां उत्तर तुमेकह्यो तेसाचो पण इहां केवल वैक्रियशरीरानुगत तैजसकार्मणशरीर भाल्योकह्यो, पर्ण केवल तैजस कामण शरीरनी इहां वमान्यवचे तेमाटे सत्तावीसहीज भांगाकह्या । जिम चोवासवचवहारकहे—इमोसेणंभंतेजावनेरइयाणसरीरयाकिसंघयणा पन्नत्ता । एहोजरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे हेभगवन् ! यावत् नारकीना शरीर स्यें संघयणेकह्या इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम ! वज्रऋषभ नाराच आदिदेई छ

मेयकोत्यादि ॥ नेवा रुप्यादीनि तेषांसन्ति प्रतिसम्बयद्रूपम संहनन मुच्यतइति ॥ माविठत्ति ॥ इप्यन्ते स्नेनीष्टा सामियेषा दनिष्टा, अनिष्टम पि किञ्चि त्कमनीयं जवतीत्यतउच्यते प्रकान्ता अकांतमपि किञ्चित्कारणवशा त्मीतये जवतीत्याह [ग्रन्थ २०००] अप्रिया अप्रीतिहतवो ऽप्रिय त्वं तेषा कुतो यतः ॥ असुजत्ति ॥ अशुजस्वनावा स्तेन सामान्याअपि जवन्तो त्यतो विशेष्यन्त ॥ अमणुन्नत्ति ॥ न मनसा न्तः संवेदनेन शुजतया प्राप्य इत्यमनोज्ञा अमनोज्ञता चेवतापि स्या दतआह ॥ अमणामत्ति ॥ न मनसा अम्यन्ते गम्यन्ते पुनः पुन स्मरणतो ये ते ऽमनोमा एका थिका येते शब्दा अनिष्टताप्रकर्षप्रतिपादनार्थाइति ॥ संघायत्ताएत्ति ॥ संहततया शरीररूपसन्घातपत्वयं सुस्यामहारे ॥ किसंठियत्ति ॥ कि संस्थितं संस्थानं येषा तानि किंसंस्थितानि ॥ जवधारणिज्जत्ति ॥ जवधारणं निजजन्मादितावाहनप्रयोजनं येषा तानि जवधारणीया न्याजन्मधर णीयानीत्यथः ॥ उत्तरविउव्वियत्ति ॥ पूर्ववैक्रियापेक्षया उत्तराणि उत्तरकालसन्नावीनि वैक्रियाणि उत्तरवैक्रियाणि ॥ हुंडसंठियत्ति ॥ सर्वपाशुज संस्थि

इमाणाण नेएइया किंकोहोयउत्ता सत्तावीसजंगा । इमीसेण जंते ! जाव सरीरया किंसठिया पमत्ता ? गोयमा ! दुविहा पमत्ता तजहा—जवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय , तत्यणजेतेजवधारणिज्जा तेहुंडसठि

नवरणवे शब्दमा नववरूप तेमवय व कहीये । गोयमा [illegible] । ते सघय नक्कुंडोमाचितो कोइ संघयणनहीं तेमा टे ममवयवो नारको कहीये न्यावको तेकहेले—नारकोने हाडनहीं नाडीनहीं । चेमवहारूचि । नसाजाल नहीं । जे पोग्गलापचिट्ठा । अपुहल वाळा अशुनो नकोजे ते अनिष्ट कहीये । अकांता । असाकूरूप । अप्रिया । अमोतिना कारण अमनामना । अमना । बेठोठा यको रोसउपजे । अम णुना । मनेहोकरी तेहाने शुभन जाणिय । अमनामा एहसिसरीरमघायताणपरिणमति । एस संघोसरे पचिएकापूरीनासनहीं, एहाने दुःखभोगवता माटे अमवरतोले एनि जाणियेछे संघयणछे एहवा दीसेछ इतिभाव । इमोसेणभते जावशब्दसंवधमगार्थ । एह हेभगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे या र [नरमयर्यंतरो नतमान । असवरवेरतमा [illegible] । [illegible] वेनारको ते रू कोधयुक्त छे ? इत्यां

तानि, दृष्टिद्वारे ॥ सम्मामिथ्यादसवेपसीहनगति ॥ मिश्रदृष्टीना मस्यत्वा तद्भावस्यापिच कालतो अल्पत्वा देकोपि सम्भत इत्यवीति संज्ञाः ज्ञानद्वारे ॥ तिण्णिणाणाइनियमति ॥ ये सम्यक्त्वा नरके पूत्पद्यन्ते तेषा प्रथमसमया दारभ्य भवप्रत्ययस्या ववधिज्ञानस्य भावा त्रिज्ञानिमएव ते ये तु मिथ्यादृष्टय स्ते सज्ञिन्यो असज्ञिन्य श्चोत्पद्यन्ते तत्र ये सज्ञिन्य स्ते भवप्रत्ययादेव विभङ्गस्य भावा द्व्यज्ञानिनो, ये त्वसज्ञिन्य स्तेषा माद्या

या पण्णत्ता, तत्थजेतेउत्तरवेउव्विया तेविहुंडसंठिया पण्णत्ता । इमीसेण जाव हुंडसंठाणे वट्टमाणा नेर इया किंकोहोवउत्ता ! सत्तावीसभंगा । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण कइलेस्साओ प० ? गोयमा ! एगाकाउलेस्सा पण्णत्ता । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए जाव काउलेस्साए वट्टमाणा सत्तावीस

पवि सत्तावीसभंगा कहवा दार ४ ॥ हिवे सस्थान द्वार पांचमों कहछ—इमासेणभंतेजावसरीरयाकिसंठिया पण्णत्ता । एहोज रत्नप्रभा पृथिवीने ह भगवन् ! शरीर में सस्थानें आकारें कह्यो इतिप्रश्न । गायमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा । हेगोतम ! नारकीने बेप्रकारना शरीरकह्या तेकहेछे—भव धारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय । भवधारणीय शरीर ते जन्मतांइ धारवा मांड्यते पूठिला वैक्रियनी अपेक्षायें श्वासिश्वासे वाय ते उत्तर वैक्रिय कहीये तत्थणंजेतेभवधारणिज्जा । तिहा व पाश्चासद्वारे भवधारणीय उत्तर वैक्रियशरीर बमाहे जेभवधारणीयशरीरवंत । तेहुंडसंठिआपण्णत्ता । तेहुंड सस्थाने कह्ये त संस्थान कह्या वलीगोतम पूछेछे—इमीसेणंभंतेजावहुंडसंठाणेवट्टमाणानेरइयाकिंकोहोवउत्तासत्तावीसभंगा । एहोजरत्नप्रभापृथिवीनेविषे हेभगवन् ! यावत् हुंडसस्थाने वर्तमान नारकी स्यूं क्रोधकरी सहितछे ? सत्तावीसभांगाहवे ॥ हिवे लेस्याद्वारकहीयेछे—इमीसेणमंतेरयणप्पभाएपुढवीएनेर इयाणंकइलेस्साओ पण्णत्ताओ । एहोज हेभगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे नारकीने केतली लेस्या कही, छलेस्यामांहिलो जिणकरी कर्मकरी आत्मा लिप्त होवे तलेस्याकहीये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगाकाउलेस्सा पण्णत्ता । हेगोतम ! रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे एक कापोतलेस्याकही वलीगोतम पूछेछे—

रत्नमुहूर्तो त्वरतो चिनह्मो त्वतिरिति तेषां पूर्वं मत्रामद्वयं यथा द्विजक्रोत्पत्ता वचनानत्रय मित्यत उच्यते ॥ तिस्त्रिमत्तावावंनयपावत्ति ॥ प्रथम मा विकम्पनया कदाचिद्दे कदाचि चीची त्वम। अत्रार्थे गाथे स्याताम्—घत्तीवेरवयसु उरलपरिवावयंतरेसमए। विभ्रगठेहिवा अविगइविमाहे मइइ ॥ १ ॥ घरमत्तीनरएसु पञ्चतोजेमसरइविह्नर्न। नावातिस्त्रेवतठे अत्रावादोत्र्तितिस्त्रेव ॥ २ ॥ एव ॥ तिस्त्रिवावेत्यादि ॥ आत्रिनिबोधिकमा मव रसर्पविप्रातिनक्षोपेतानि भाषानि त्रीणि ज्ञाना न्यज्ञामानिवेति इहय त्रीणि ज्ञानानीति यदुक्तं त दार्जननिबोधिमस्य पुन गंवनेना, न्य

नंगा। इमीसेणं नते ! जाय किसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी ? गोयमा ! तिस्त्रिवि। इमीसेण जाय सम्मद्दसणे यट्टमाणा नेरइया सत्तायीसनंगा, एवमिच्छदंसणेवि, सम्मामिच्छदणे असीइनंगा। इमी सेण जाय किनाणी अण्णाणी ? गोयमा ! नाणीवि, अण्णाणीवि, तिस्त्रिनाणाइ नियमातिस्त्रिअण्णाणाइ

रमोमेवंभतेजावमालदेसारगहमाणामत्तावीससर्भना। एव हेभगवन्। रत्नप्रभापृथिवीनेविषे कापोत लेश्यामेविषे वर्तमान नारकी यं क्रोधयुक्त हुवे इतिप्रश्न उत्तर इहांपिण सत्तावीस भांगाहुवे पवेम्मा दार कह्यो। हिवेदृष्टि द्वारकहेछे— इमीसेणंभंतेजावकिंसम्मदिठीमिच्छादिठी। एव हेभगवन्। रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे वर्तमान नारकी यं सम्यग्दृष्टीहुवे ? अथवा मिथ्यादृष्टी हुवे अथवा। सम्मामिच्छादिठी। सम्यग्मिथ्यादृष्टी हुवे इतिप्रश्न। गोयमाति न्निवि। हेगौतम ! तीनेई हशी हुवे सम्यगदृष्टिपाहिदृई, कह्योगौतम पूछेछे—इमोसेणंजाव। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे यावत्। सम्मदंसणवट्टमाणावेरइ यासत्तावीसभंगा। सम्यक्त्वमें वर्तमान नारकी यं क्रोधवंत हुवे इतिप्रश्न उत्तर पूर्वलो रीते सत्तावीसभांगाजाय सम्यग्दृष्टीना निरंतर पणाथी। एवं मिच्छदंसणेवि। एम मिथ्यादृष्टीनेविषे पणि निरंतरथी सत्तावीसभांगा हुवे। सम्मामिच्छदंसणेअसीतिभंगा। तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टी एतले मिश्रदृष्टिने विषे असीभांगा कहवा, मिश्रदृष्टी नारकी थाडाछे मिश्रभावना कालपणि अल्पछे तेमाटे इहांवार सातमो। हिवेज्ञानद्वार आठमो कहेछे—इमोसेणंभ तेजावकिंनाणी अन्नाणी। एह रत्नप्रभापृथिवीनेविषे हेभगवन्। यावत् नारकी यं ज्ञानीछे ? अथवा अज्ञानीछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नाणीवि अ

या द्वेएव ते वाच्ये स्यातामिति ॥ तिण्णिअण्णाणाई ॥ इत्यत्र यदि मत्यज्ञानश्रुताज्ञाने विभङ्गज्ञानपूर्वकालजाविनी विवक्ष्येते, तदा शीतिर्भङ्गालम्यस्तेष स्पत्वा तेषां किन्तु जघन्यावगाहना स्ते, ततोजघन्यावगाहनामपेक्ष्यैवा शीतिभङ्गका लपा भवत्सयात्ति, योगद्वारे ॥ एवकायजोएत्ति ॥ इह यद्यपि चवसकार्मणकाययोगे ञ्शीतिर्भङ्गाः सम्भवन्ति तथापि तस्या विवक्षा रत्नामान्यकाययोगामयतया सप्तविंशति रुक्तेति, उपयोगद्वारे ॥ सामा

नयणाए । इमीसेणंभंते ! जाव ब्याभिणिबोहियणाणे वट्टमाणे ? गोयमा ! सत्तावीस भंगा , एवंतिण्णि णाणाइ तिण्णिअण्णाणाइ भाणियव्वाइ । इमीसेण जाव किमणजोगी वयजोगी कायजोगी ? गोयमा !

चणीवि । हेगौतम ! ज्ञानीपणिबे अज्ञानी पणिबे। तिण्णिणाणाइ नियमा । ज सम्यक्त्वी नरकने विषे उपजे तिहने प्रथम समयथी मारंभीकरी भवप्र त्यय अवधिज्ञानथाय तेमाटे तीनज्ञान निश्चेंथाय । तिण्णिअण्णाणाइ भयणाए । तदा तीन अज्ञाननी भजना ते कदाचित् दोय कदाचित् तीन, तेविम मिथ्यादृष्टी एक समो छ गरसे एक असन्नी जपज वे संज्ञीवा उपजे तेहने प्रथमसमयथी आरंभीकरी विभगसेती तीन अज्ञानथाय भवप्रत्ययथी, अने जे अ सन्नीवो उपजे तेहने अंतर्मुहूर्तथी परें विभगज्ञाननो उत्पत्तिथाय, तमाटे तेहने पूर्वे बेअज्ञान हुता पछे विभगज्ञान उपनो एभजना जाणवी । इमी सेणं जावअभिनिबोधिकज्ञानवर्त्तमानाना केतलोसंभवा । एह रत्नप्रभा पृथिवीनविषे हेभगवन् ! यावत् आभिनिबोधिक ज्ञाननेविषे वर्त्तमान नारकी ना स्थानकथाय इतिप्रश्न इहांपणि सत्तावीसभांगा हुवे। एवंतिण्णि णाणाइ । इम आभिनिबोधिक ज्ञाननोपरें तीनज्ञान तीनअज्ञान कहवा, इहां तीन ज्ञान एसूत्रमें ते अभिनिबोधिकज्ञान पेरो सर्व भगवा बेहोत कहवा। तिण्णिअण्णाणाइं भाणियव्वाइं । इहांवा मति अज्ञान श्रुत अज्ञान एवेद विभं गज्ञानी पूर्वनासे भावना विवक्षाना ता अशीतीभांगा पामीवे तेहना अल्पपणाथकी, किन्तु ते जघन्य अवगाहनाछे अने जघन्य अवगाहना आश्रीय अ भावबायी इतिमत्र, उत्तरं । गोयमा तिण्णिवि । हेगौतम ! योगेई एतले मनोयोगी पणिबे, वचनयोगीपणिबे, काययोगीपणिबे । इमीसेण जाव मण

रोयउत्तत्ति ॥ साकारो विशेषांशग्रहणशक्ति तेन सहेति साकार तद्विकलो ऽनाकार सामान्यग्राही त्यर्थः ॥ कायलेसासुत्ति ॥ रत्नप्रभापृ
थिवीप्रकरणव च्छेषपृथिवीप्रकरणा न्यध्येयानि केवल लेश्यासु विशेष स्तासा भिन्नत्वा दतएव तद्दर्शनाय गाथा ॥ काऊ इत्यादि ॥ तत्र ॥ तइयाए

तिण्णिवि । इमीसेणं जाव मणजोए वट्टमाणा सत्तावीसभंगा, एवं कायजोए । इमीसेण जाव नेरइया किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि । इमीसेण जाव सागारोवउत्ते वट्टमाणा सत्तावीसभंगा, एवं अणागारोवउत्तेवि सत्तावीसभंगा, एवं सत्तविपुढवीओनेय

[illegible] सत्तावीसभंगा एम वचनजोग काययोगे । एम रत्नप्रभापृथिवीनेविषे यावत् मनयोग वर्त्तमान नारकी शुं क्रोधी छे इत्यादि प्रश्न उत्तर हे गौत
म ! सत्तावीस भांगा कहे एम वचनयोगे पणि सत्तावीसभांगा, एम काययोगे पणि सत्तावीसभांगा यद्यपि केवल कार्मण काययोगे असीभांगाछे,
तथापि तेहनो विवक्षा नथी सामान्य काययोग माटेज सत्तावीसभांगा कहाछे—द्वार ८ ॥ हिवे उपयोग द्वार ९ मा कहेछे—इमीसेणं जाव
नेरइयाकिंसागारोवउत्ता । एम रत्नप्रभापृथिवीनेविषे यावत् नारकी शुं साकार उपयोगवन्त विशेषार्थ ग्रहणशक्ति तिणे सहित ते सागार एतले ज्ञानोप
योग कहीये तथा । अणागारोवउत्ता । अनाकार ते सामान्यग्राही ते दर्शनोपयोग कहीये तेमाटे नारकी ज्ञानोपयोगीछे किंवा दर्शनोपयोगीछे,
इतिप्रश्न, उत्तर । गोयमा सागारोवउत्तावि । हे गौतम ! साकारोपयुक्तपणछे, एतले विशेषाग्राही ज्ञान तेणे सहितपणेछे । अणागारोवउत्तावि ।
अनाकारोपयुक्त पणछे सामान्यग्राही दर्शन ते सहितपणछे, वली गौतमपूछेछे—इमीसेणंजावसागारोवउत्तेवट्टमाणासत्तावीसभंगा । एम रत्नप्रभा
पृथिवीनेविषे नारकी यावत् साकारोपयोगे वर्त्तमान शुं क्रोधोपयोगसहितछे, इतिप्रश्न, उत्तर हे गौतम ! सत्तावीस भांगाछे । एवं अणागारोवउत्ते
वि सत्तावीसभंगा । एम अनाकारोपयुक्त पणि सत्तावीस भांगाछे तेकहेछे—द्वार १ । स्थिति आदिदेई दशद्वार रत्नप्रभाये कह्या । एव सत्तविपुढवी
ओ नेयव्वाओ यावत् लेश्यासु । एम रत्नप्रभा पृथिवीप्रकरणनीपरे सातेह पृथिवीनेविषे दश दशद्वार जाणवा कहवा, निश्चेषपणे लेश्याओनेविषे विशेष

मीसियति ॥ वालुक प्रभाभकरवे उपरितननरकेषु कापोती अधस्तनेषु नीली भवतीति ते यथासम्भव प्रश्नसूत्रे उत्तरसूत्रेषा घोतव्ये इत्यथः
एव सूत्राभिलापेषु नरकावासङ्क्षानानात्व तत् ॥ तीसायपणवीसाइत्यादिना ॥ पूर्वप्रदर्शितम समवसेयमिति एवञ्च सूत्राभिलापः क्वायः – स
करप्पभाएणभंते! पुढवीए पणवीसाए नरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि कइलेसाठ पण्णत्ताठ ? गोयमा! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता
सक्करप्पभाएण भंते! जाव काउलेसाए वट्टमाणा नरइयाकिंकोहोवउत्ता ? इत्यादि ॥ जाव सत्तावीसभंगा ॥ एव सर्वपृथिवीषु गाथानुसारेण वा

ह्रात , णाणत्तलेसासु ॥ गाहा ॥ काउयदोसुतइयाइ मीसियानीलियाचउत्थीए । पचमियाएमीसा कण्हात
तोपरमकण्हा ॥ १ ॥ चउसठीएण भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगसिअसुरकुमारावासंसि असु
रकुमाराण केवइयाठिइठाणा पण्णत्ता ? गोयमा! असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा—जहण्णियाठिई जहा

ते जुगेजुदीथे, तेमाटे मावावे देखाडेछे—काउयदोसुतइयाए 'मीसियानीलियाचउत्थीए पचमियाएमीसा कण्हाततोपरमकण्हा ॥ १ ॥ कापात से
मा पहिली बीजी पृथिवीनेविषे हुवे, तीजी वालुकप्रभाने उपरिले पाथडे कापोतलेश्या हुवे, नीचले पाथडे नीललेश्या हुवे, ते यथासभवे प्रश्नसूत्र वा
हणा, चौथीनेविषे एकली नीललेश्या हुवे, पचमीने विषे नीलकृष्ण मिश्र छठीनेविषे एकली कृष्णलेश्याहुवे सातमीनेविषे परमकृष्णलेश्या हुवे, ए नारकी
ना अधिकार कह्यो । हिवे अनुक्रमथी भवनपतीना अधिकार कहेछे—चउसठ्ठीएणंभंते असुरकुमारावाससयसहस्सेसु । चउसठ हे भगवन्! असुरकुमार
ना आवास लाखनेविषे । एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि । एकेका असुरकुमारना आवासनेंविषे । असुरकुमाराणंकेवइयाठिइठाणा पण्णत्ता । असुर
कुमारने केटलाप्रकारे केतला स्थितिस्थान आउखाना विभाग कह्या इतिप्रश्न । गोयमा असंखेज्जाठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा जहण्णियाठिईजहाणेरइ
यातहा । हे गौतम ! असंख्याता स्थितिस्थान कह्या तेकहेछे—जघन्यस्थिति इत्यादि जिम नारकीकह्या तिम असुरकुमार पणिकहवा, । नवरंपडिलो
माभंगामाणियव्वा । एतलोविशेष प्रतिलोम कहता उपरांठा भांगा कहवा, ते जिम नारक प्रकरणमें विषे क्रोधमानादि अनुक्रमें भांगा भांगाना गिर

र्थं असुरकुमारप्रकरणे ॥ पडिलोमगंगत्ति ॥ नारकप्रकरणेहि क्रोधमानादिना क्रमेण भङ्गकनिर्देशः कृतो, असुरकुमारादिप्रकरणेषु लोभमायादिना लोभायत्स्वर्पोतरवाह ॥ सत्तावीसभङ्गालोभोवउत्ते ॥ देवाहि प्रायोलोभवन्तोभवति तेन सर्वेऽप्यसुरकुमारा लोभोपयुक्ताः स्युः द्विकसंयोगेतु लोभोपयुक्तस्ते बहुवचनमेव मायोपयोगे त्वेकत्वबहुत्वाभ्यां द्वौ भङ्गकौ एवं सप्तविंशति भङ्गका वाच्याः ॥ नवरं णाणत्तं जाणियव्वंति ॥ नारकाणां असुरादीनाञ्च परस्परं नानात्वं ज्ञात्वा अप्रभूता स्युत्तरसूत्राणि वाच्यानीति हृदयं तत्र नारकाणां असुरादीनाञ्च संहननसंस्थानलेश्यासु भवति तथैवं–चउसठीएणं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमाराणं सरीरगा किंसंघयणी ? गोय

नेरइया तहा, नवरं पडिलोमगा जाणियव्वा, सत्तावीसतिभङ्गाय लोभोवउत्ताय माणोवउत्ताय एए पगमेणनेयव्व, जाव थणियकुमारा, नवरं णाणत्तं जाणियव्वं, असंखेज्जेसुणं भंते ! पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयाणं केवइया ठिइठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखे

कहीश अने असुरकुमारादि देव प्रकरणविषे लोभ माया मानादिक भांगाना निर्देश करवो, तेथीज कहे छे—सत्तावीसभांगा लोभोवउत्ता । देवता मा ए लोभी थाय छे, तिवारपछे समकाले असुरकुमार लोभवंत छे, ए असंयोगी एक भांगो थयो ॥ द्विक संयोगीमांहि ६ थया, लाभवंत बहुलो थया तेमा व्यमाल ते एकेक बहुवचनतेज थया, । अथवा लोभोवउत्ताय मायावउत्ताय एप्रथमेव नेयव्वं नवरं णाणत्तं जाणियव्वं । मायामेविषे एकवचन तथा बहुवचनथी भांगा थया, एम सत्तावीसमा भांगा करवा एतलो विशेष नारक अने असुरकुमारादिकने माहोमांहि नानात्व जाणी मूलसूत्र करवा, नारकी अने अ सुरकुमारादिकने संघयणसंठाणलेश्यासूत्रविषे नानात्वपणानो परिज्ञान तेविचारीने कहवा । जाव थणियकुमारा । यावत् स्तनितकुमार लगे कहवी । चउसठीमेनेसुपुढवीकायावाससयसहस्सेसु ॥ हिवे पृथिवीकायना अधिकार कहे छे—असंख्याता जेहवा । पृथिवीकायिक नामाइ कहने हिवे । एगमेगंसिपुढविकाइयावासंसि । एकेका पृथिवीकायिक नामाकने हिवे । पुढविकाइयाणं केवइया ठिइठाणा कहवा पृथिवीकायिकना [illegible]

मा । यशपयवी अपोग्गला इहा बता तेतसिं संघायताएपरिणमति एव संठाणेवि नवर पवचाराविज्ञासमचउरससंठिया उत्तरवेउव्विया अणेगसंठिया एवसेसासुवि नवर अहसेसाउ पन्नताउ? गोयमा! चत्तारि तजहा कण्हानीलाकाउतेउलेसा चउसठीए आवकसइलेसाए वट्टमाणा किंकोहोवउत्ता? ४। गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जलोहोवउत्तात्यादि ॥ एव नीलाकाउतेउवि ॥ नागकुमारादिसकलेषु तु–चुलसीएनागकुमारावाससयसहस्सेसु इत्येवं, चउसठीअसुराणंनागकुमाराणंहोइचुलसीति ॥ इत्यादे यथा प्रथमसूत्रेषु प्रवनसङ्ख्या भावास्व भवनम्म सूत्राभिलापः कार्येइति ॥ एवपुढविकाइयाणसव्वेसुठाणेसुअभंगयति ॥ पृथिवीकायिका एकैकस्मिन् कषाये उपयुक्ता भवन्तीत्यन्त इत्यभङ्गकं दशस्वपि स्थानेषु, नवरं ॥ ते उलेसाएअसीइभंगति ॥ पृथिवीकायिकेषु तेजयाहारे तेजोलेश्या वाच्या साच यदा देवलोका च्युतो देव एको अनेकोवा पृथिवीकायिके पूत्पद्य

ज्जा ठिइठाणा पण्णत्ता तंजहा—जहण्णियाठिई जाव तप्पाउग्गुक्कोसियाठिई । असंखेज्जेसुणं भंते! पुढविका इयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि जहण्णठिईए वट्टमाणा पुढविकाइया किंकोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ? गोयमा ! कोहोवउत्तावि माणोवउत्तावि मायोवउत्तावि लोभोव उत्तावि , एवं पुढविकाइयाण सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगय , नवर तेउलेस्साए असीइभंगा , एव आउकाइ

विस्तार बता। इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा असंखेज्जा ठिइठाणा पन्नता तंजहा। हे गौतम! असंख्याता स्थितिस्थान कह्या तेकहेछे—जघन्ययाठिई। जघन्य स्थिति। जावतप्पाउग्गुक्कोसियाठिई। यावत् तेहनी उत्कृष्ट स्थितिस्थान। असंखेज्जेसुणंभंतेपुढविकाइयावाससयसहस्सेसु। असंख्यातानेविषे हे भगवन्! पृथिवीकायिकावास सतसहस्र लाखनेविषे। एगमेगंसिपुढविकाइयावासंसि। एकेका पृथ्वीकायावासनेविषे। जहण्णठिईएवट्टमाणापुढविकाइया किंकोहोवउत्ता मायोवउत्ता। जघन्यस्थितिनेविषे वर्तमान थका पृथिवीकायिक स्यूं क्रोधवंत हुवा मानवंत हुवा। मायावउत्ता। मायासहित हुवा। लो भोवउत्ता। लोभसहित हुवा, इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा। कोहोवउत्तावि। हे गौतम! क्रोधवंतपणहोय। माणोवउत्तावि। मानवंतपण होय। मायोव

ते गदा नयंति तत्र नरेकत्यादि भयना दशीति भङ्गका भवन्तीति, इह पृथिवीकायिकप्रकरणे स्थितिस्थानद्वारं साक्षा लिखितमेवास्ति शेषा णि तु नारकवद्दाच्यानि तत्र नवरं नागतंजाभियत्तुमित्येतस्य सुयते नरमात्य मित्र प्रमत उत्तरत यावसेयम्, तत्र शरीरादिषु सप्तसु द्वारे षिद – समगोजेसुणंभंते ! पुढविकाइयावासमसयसहस्सेसु जाव पुढविकाइयाणं कइ सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! तिन्नि तंजहा ओरालिए तेयए कम्मए ॥ मनपुव ॥ कोहोयउत्तावि माणोवउत्तावीत्यादि ॥ वाच्यं तथा ॥ असंखेज्जेसुणं जाव पुढविकाइयाणं सरीरगा किं संघयणीत्यादितथैव यवरं ॥ पोग्गला मणुन्ना अमणुन्ना सरीरसंघायत्ताए परिणमंति एवं संस्थानद्वारेपि किंतूत्तरे – हुंडसंठियापत्तावदवाच्यं नसु तुविहा सरी रगा पन्नत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियायेत्यादि॥पृथिवीकायिकानां तदभावात् स्थिति लेश्याद्वारे पुनरेवं वाच्यं पुढविकाइयाणं भंते – कतिलेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि तंजहा कण्हलेसा जाव तेउलेसा ॥ एतासु च तिसृषु भङ्गकमेव तेजोलेश्यायां त्वशीतिर्भङ्गका, ए तद्भावना कृता दृष्टिद्वारे इदं वाच्यं – असंखेज्जेसु जाव पुढविकाइया किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! मिच्छदिट्ठी सेसं तथैव ज्ञानद्वारेपि तथैव नवरं पुढविकाइयाणं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ? गोयमा ! नो नाणी अन्नाणी नियमा दुअन्नाणी योगद्वारेपि तथैव, नवरं पुढविकाइयाणं भंते ! किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! नोमणजोगी नोवइजोगी कायजोगी ॥ एवमाउकाइयावित्ति ॥ पृथिवीकायिकवदप्कायिका अपि वाच्या सर्वेष्वपि दशस्वपि स्थानके यत्र भङ्गका तेजोलेश्यायामशीतिर्भङ्गकास्ते मत स्तोकापि देव सत्पद्यतइति॥

याभि, तेउकाइया वाउकाइयाण सव्वेसुवि ठाणेसु अभंगय, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, ये इं

उत्तावि । मायावंतरी पर्वाशय । लोभावउत्तावि । लाभवत्तो यत्रो होय । एवपढविकाइयावासमेसुविज्ञावेसममगय । इम पृथिवीकायिक सर्व स्थान कनेरिये पर्ममकडे, प्रत्मटे पृथिवीकायिक एवेव अवारमहित यरां पामोते तमाटे इमेद कालजमेपिये ममगब्दवे । सारलेश्यामाएवसौधमा सनोविषेय तेजालेश्यामेविषे पयोआंगा कहवा, पृथिवीकायिकनेविषे लेश्याहारे तेजालेश्या कहनी, तिथो को देवगतियो चवो देवता एक भयवा घ

तेउकाइयत्वादी ॥ मन्नेसुयिठावेमुत्ति॥ स्थितिस्थानादिषु दशस्य प्यजक्कं क्रोधाद्युपयुक्ताना मेकत्वेपतपु बहूनामभावात् इह देवा नोत्पद्यन्तइति, तेश्रोमेश्या तपु नास्ति तत सारसभवा नाशीतिरपी त्वनक्कसेवेति एतेषुप सूत्राणि पृथिवीकायिकसमानि केवलं वायुकायसूत्रेषु शरीरद्वारे एव मध्येयं ॥ धम्मंगेज्जोसुर्म जत । भाव वाउकाइयाणंकइसरीरा पणत्ता ? गोयमा । चत्तारि तंजहा–उरालिए वउब्विए तेयए कम्मएति ॥ वणप्फइकाइए त्यादि ॥ वनस्पतयः पृथिवीकायिकसमानायकाव्या दशस्वपि स्थानकेषु जक्कानामभावाभावतेऽसेइयामाम्ब तमैवा शीतिभङ्गकसद्भावादिति, नमु पृथि व्यम्बुवनस्पतीनां दृष्टिद्वारे शास्वादनत्वायेन सम्यक्त्वं कूमपन्ने प्रत्युपगम्यते ततएव ज्ञानद्वारे मतिज्ञान श्रुतज्ञानस्त्वा येतहत्ये वमत्रीतिनक्का मम्यग्ज्ञमानिनियोचिकश्रुतज्ञानेषु प्रयनु ? मैव पृथिव्यादिषुसास्वादनत्वावस्या त्यन्तथिरलत्वेना विवक्षितत्वा ततएवोच्यते उनयाजायो ॥ पुढवा इणसु यिनमसु फोजकवयमोति ॥ तमय म्रतिपद्यमानपूर्वप्रतिपन्नरूपमिति ॥ बहंदियत्यादा येव ॥ मत्तरपठना ॥ वो हिंठाणेहि नेरइयाणं असी इनगा तहिं ठाणहि येइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं असीईयेवत्ति ॥ तत्र एकादिसङ्ख्यातान्तसमयाधिकायां जघन्यस्थितौ तथा जघन्यायां मवगाहना

त्रिय तेइंदिय चउरिंदियाण जेहिंठाणेहिं नेरइयाणं असीइनगा तेहिंठाणेहि असीइचेव , नवर अब्भहि

मत पृथिवीकायनेविषे जघन्ये नाणाम तिहारे तेहना एकपणाथी भगोभांगा नाम । एवघाउकाइयावि । इम पृथिवीकायनीपरें अप्कायिक पणि कहवा । तेर स्थानके भभमक तेजनिस्यायेंभगोभांगा, भगोभांगा अप्कायनेविषे पणदेवता उपजे तेमाटे । तेउकायवाउकायस्थानकमेसघिक्रुवेसुभमयं । तेउ वायन वाउकायमें मगसेर कवेर स्थानकनेविषे भभगक एकामेविषे आभंकरोसहित घर्णावने, इहां देवता न उपजे तेमाटे तेजाकेस्या तेहनेविषेनहीं, वा यनेविषे शरीर ४ कहवा, औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस३ कार्मण ४ एव ४ । वनप्फइकाइयाणं हामुठविसारया । वनस्पतीकायिक पृथिवीकायिक समा नकहवा, कोर स्थानके भांगाना अभावथी अभंगक, तेजालेस्यानेविषे तिमवोज भगोभांगाबोध देवताना उपजवामाटे जिहां भाखोनें भगोभांगावे तवे स्थानके । बेइंदिय तेइंदिय चउरिंद्रियाना जेहिंठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगातेहिंठाणेहि असीइचेव । बेइन्द्री तेइन्द्री चउरिंद्रीमे भगोभांगा कहवा

यान्व तयैव न मङ्गेयामप्रदेगवल्लाया ३ मिश्रदृष्टी ४ न नारकाणां मध्यीति मङ्गा उक्ता विकलेन्द्रियाणां मध्येतेषु स्थानेषु मिश्रदृष्टि वर्जे यद्यीति
रयास्पाया तथा मतेरप्यापि क्रोधाद्युपयुक्तस सामवात् मिश्रदृष्टिस्तु विकलेन्द्रिये येकेन्द्रियेषु न भवतीति न विकलेन्द्रियाणां तत्रा यीति
नङ्कमभवदति एवं स्थिवर मूत्र कुतोपि पावनाविशेषात् यद्यापीति तथा व्यजङ्कमितिव्याख्यात इवेव विशेषाभिधामायाह ॥ नवरंमि
स्थानि ॥ यमयः दृष्टिद्वारे ज्ञानद्वारेष नारकाणां सप्तविंशति रूपा विकलेन्द्रियाणान्तु ॥ मङ्गयिति ॥ मन्यधिकाऽन्यशीति मङ्कानां भवति
हेत्वाह मन्यते मन्योयसगापि विकलेन्द्रियाणां सास्वादनभावेन सम्यक् भवति अल्पत्वात् तेषां मकत्वस्यापि सम्भवेनाशीतिमङ्गामां भवत्ये
य मानिमियोपिके भवति तथा ॥ वेदीत्यादि ॥ येषु स्थानेषु नैरयिकाणां सप्तविंशति मङ्गा तेषु स्थानेषु द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां मङ्काभाव

यामम्मत्ते श्राभिणिबोहियनाणेसुयनाणे एएहिम्मसीइभंगा , जेहिठाणेहिं नेरइयाणं सत्तावीसं भंगा तेसु
ठाणेसु सव्वेसु अभंगयं , पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहाभाणियव्वा , नवरं जहिंसत्तावीसं भंगा ,

नहीं नारकीने पयादि मंवयातीन ममयायत्र अप्रम्यस्थितिमेविषे एक तथा चयम पवगाहनानेविषे दाय तथा सप्नेवात यदेयहवि बयम्बे पवगाहनाने
विषे तोन, मिथ्यदृष्टिमेविषे चार, पणोभांगा कह्या, तेविकलेंद्रीने पवि ए मिथ्यदृष्टि वजितस्थानकनेविषे पणोभांगाकह्या, तेहना पममपणां वणी ते
हनेविषे एकेकना पवि क्रोधादिमहितना समवछे पने मिथ्यदृष्टिनो विकलेंद्रिय तथा एकेंद्रियनेविषे नथी। नवर पम्मत्ति यामसमत्ते। एतली विशेष दृष्टि
द्वारे तथा ज्ञानद्वारे नारकीने सत्तावीसभांगा कह्या, तिहां विकलेंद्रीने पधिका एतले पणोभांगा, तेहिज विकलेंद्रीने सम्यक्सासादनभावे हुवे ते पणसी
मा मगेरहे पवि तेपन्पछे तेहने एकमोपवि समवछे तेमाटे पणोभांगा कह्या । पाभिणिबोहियणाणेसुयणाणेएएहिपसीइमया । मतिज्ञाननेविषे पवि
हमहीज पणोभांगा कहवा, श्रुतज्ञाननेविषे पण हमहीज पणोभांगा कहवा । जेहिंठाणेहिंणेरइयाणसत्तावीसंभंगा । जेजे स्थानके नारकीनेविषे सत्ता
वीसभांगाछेतेज, । तेसुठाणेसुसव्वेसुपभंगयं । तेज स्थानकनेविषे बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्रीनेविषे भांगानो पभावछे । पचिंदियतिरिक्खजोणिया । पंचेंद्री

सामिव प्रागुक्ताशीतिजकुलस्थाभावगिहाणि मन्तव्यानि नकुलानायव क्रोधाद्युपयुक्तामा भकदेव मदूना भायादिति विकलेन्द्रियसूत्राविव प
यिवीकायिकसूत्रवी वाच्येयानि नवरमिह लेश्याद्वारे तेओलेश्या नाध्येतव्या दृष्टिद्वारेव ॥ बेइदियाणभते । किं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मा
मिच्छद्दिट्ठी ? गोयमा । सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छद्दिट्ठीवि नोसम्मामिच्छद्दिट्ठी सम्यक्सम्यक्त्वमावा बेइदिया किं कोहोवउत्ता? इत्यादि प्रश्ने उत्तरमयोति
नञ्ञा तथा णाणद्वारे ॥ बेइदियाणं भंते ! किं नाणीअन्नाणी ? गोयमा ! नाणीवि अन्नाणीवि आहनाणी दुन्नाणी मइनाणी सुयनाणीय ॥ शेष त
थैव अशीतिवनञ्ञा इतिजोगद्वारे ॥ बेइदियाणं भंते ! किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी ? गोयमा ! नोमणजोगी वइजोगी कायजोगीय ॥ शेष त
थैव एव त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसूत्रास्यपि ॥ पचिदियेत्यादि ॥ अहिसत्तावीसजगति ॥ यत्र नारकाणां सप्तविंशति भेङ्गा स्तत्र पञ्चेन्द्रियतिरश्चां मन
ञ्जं तत्र अपन्यस्थित्यादिश्च पूर्व दर्शितमेव नकुलानायव क्रोधाद्युपयुक्तामा मदूना मेकदेव तेषु भावादिति सूत्राणि चैव नारकसूत्रव दध्येया
नि नवर शरीरद्वारे अयं विशेष ॥ असखेज्जसुवजते पचिदियतिरिक्खजोणियावासेसु पचिदियतिरिक्खजोणियाण केवइया सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा । चत्तारि तजहा-ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए ॥ सवत्र चान्ञ्ञमिति तथा सघयणद्वारे ॥ पंचिदियतिरिक्खजोणियाण केवइया सघ
यणा पण्णत्ता ? गोयमा । छ संघयणा तजहा—वइरोसहनाराय जाव छेवट्ठति ॥ एव सठाणद्वारेपि ॥ छठाणा पण्णत्ता तजहा—समचउरसे ६ ॥
एवं लेश्याद्वारे ॥ छल्लेसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा । छलेस्सा पण्णत्ता तजहा—कण्हलेसा ६ ॥ मणुस्साविति ॥ यथा नैरयिका दशसु द्वारे ष्वभिहि

तहिंअसन्नगय कायद्र , जत्थ असीइ तत्थअसीइंमणुस्साणि , जेहिंठाणेहिं नेरइयाण असीइजगा तेहिंठा

तिर्यग्भाग्निश्र । यद्यपि नारका । तिम नारको कथा । तथामाविकथा । तिम आवया । नवर अहिसत्तावीसभंगातश्विभगश्वावक्य । एतश्वाविधेय ति
म नारकोने सत्तावीसभांगा कह्या, तिहां पचेंद्री तिर्यचने अभगक ते जघन्यस्थित्यादिक पहिला देखाड्या—तिहां भांगानो अभावछे । अत्रपसोइस
लपयोदयेव । जिहां नारकोने असीभांगा कह्या तिहां पचेंद्रीतिर्यचने पणि असीभांगा कह्या । मणुस्सावितेहिंठाणेहिं नेरइयाणअसीतिभगा । तिम

ता मापा मनष्यायपि नगितव्या इतिप्रक्रम एत देयाह ॥ जेहीत्यादि ॥ तत्र नारकाणा जघन्यस्थिता वेशादिसङ्ख्यातान्तसमयाधिकायां ॥ १ ॥
तथा जघन्यावगाहनायां ॥ २ ॥ तस्यामेव सङ्ख्यातान्तप्रदेशाधिकाया ॥ ३ ॥ मिश्रेच ॥ ४ ॥ मशीति भेङ्गका उक्ता मनुष्याणा मप्येते प्रशीतिरेव
तत्कारणम्च तन्न्यास्यमवेति नारकाणा मनुष्याणाञ्च सवथा साम्यपरिहारायाह ॥ जेसुसत्तावीसेत्यादि ॥ सप्तविंशतिनङ्गकस्थानानिच नारकाणां च
घन्यस्थित्यसङ्ख्यातसमयाधिकजघन्यस्थितिप्रभृतीनि तेपुच जघन्यास्थितौ विक्षेपस्य वत्स्यमाणत्वेन तद्वर्जेषु मनुष्याणा मजङ्गकं यतो नारकाणा मा
दुल्पेन क्रोधाद्यपव भवति तत तथा सप्तविंशति र्भङ्गका उक्तस्थानेपु पुल्यम्त मनुष्याणान्तु प्रत्यक्ष क्रोधाद्युपयोगवता बहूनां जावा च कषा
पा द्ये विक्षेपाभि तत तथा तेपु स्थानपु भङ्गकानावाहति इत्येव विक्षेपाभिधानायाह ॥ नवरमित्यादि ॥ येषु स्थानेपु नारकाणा मशीति
न्पु मनुष्याणा मप्यशीति तथा ॥ जेसु सत्तावीसा तेसु प्रभनयमित्युक्त कयस मनुष्याणा मिद मन्यधिक यदुत—जघन्यकस्थितौ तथा मशीति

मतु नारकाणां तत्र सप्तविंशति रुक्ते त्यनङ्गक तथा आहारकशरीरे मशीति राहारकशरीरवतां मनुष्याणा मल्पत्वा न्नारकाणान्तु तस्यास्त्ये वेत्येत
न्न्यधिकं मनुष्याणामिति इदच नारकसूत्राणामनुष्यसूत्राणाञ्च प्रायः शरीरादिपु चतुर्पु द्वारेष्वच विशेष स्यादिति ॥ असंखेज्जेसुणं भंते ।
मनुस्सावासेसु मणुस्साणं कइ सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा । पंच तंजहा—ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए असंखेज्जेसुणं जाव ओरालियस
रीर वट्टमाणा मणूसा किं कोहोवउत्ताचि ४ ॥ एव सव्वशरीरेपु नवरं आहारकेऽशीति र्भङ्गकाना वाच्या एव संहननद्वारेपि नवरं मणुस्साणं भंते
संघयणा पण्णत्ता ? गोयमा । छ संघयणा पण्णत्ता तंजहा—वइरोसभनाराए जाव छेवट्ठे ॥ संस्थानद्वारे ॥ छसंठाणा पण्णत्ता तंजहा—समचउरंसे
जाव हुंडे ॥ लेश्याद्वारे ॥ छल्लेसाओ तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा ॥ ज्ञानद्वारे ॥ मणुस्साणं भंते । कइनाणाचि ? गोयमा । पंच तंजहा—आभि
णिबोहियनाणं ॥ एवंच केवलवर्जं शतभङ्गक केवलेतु कषायोदयएव नास्तीति ॥ वाणमंतरेत्यादि ॥ व्यन्तरादयो दशस्वपि स्थानेपु यथा—न

वमवासिन सायावाच्या यथा सुरादीना मशीति भङ्गका पञ्च सप्तविंशति साम्रत व्यन्तरादीना मपि ते तथैव वाच्या भङ्गका सु सोजमादौ विधाया ध्येतव्या सत्र भवनवासिभिः सह व्यन्तराणां साम्यमेव ज्योतिष्कादीना तु न तथेति ते सपा सवपा साम्यपरिहारसूचनायाह ॥ वयरं णावत णाविपत्र अजस्सत्ति ॥ यक्षेश्यादिगत यस्य ज्योतिष्कादे र्नानात्व मितरापेक्षया भेद सज्ञातव्यमिहेति परस्परतो विशेष वास्या एतेषा सूमा स्वध्ययानीति भाय सत्र लेश्याद्वारे ज्योतिष्काणा मेकैव तजोलेश्यावाच्या ज्ञानद्वारे त्रीणिज्ञानानि न्यज्ञानान्यपि त्रीण्येव असज्ञि नां तत्रोपपाताभावेन विभङ्गस्या पर्याप्तकावस्थायामपि भावात् तथा वैमानिकानां लेश्याद्वारे तेजोलेश्यादय स्तिस्रो लेश्यावाच्या ज्ञानद्वारेण

णेहिं मणुस्साण्वि श्रसीइजगा जाणियव्वा , जेसुसत्तावीसा तेसुश्रभंगय , नवर मणुस्साण श्रब्भहिय जह

नारकी दशद्वारनेविषे कह्या तिम मनुष्य पणि कहवा तेहीज कहेछे—जिण स्थानके नारकीने असीभांगा कह्या । तेशिइहाँरं दसमसगाउविगसौइभ गामाणियव्वा । तिणे स्थानके मनुष्यनेपणि असीअभांगा सर्वे जेकारथे एकना अल्पपणामाटे नारकी अने मनुष्यने सव समपणो परिहार करतो कहेछे—जेससत्तावीसातमुअभगवं । जिहां नारकीने सत्तावीसभांगाकह्या, तिहां मनुष्यने अभंगव भंगानो अभाव । जवरमणुस्साणअब्भहियजहण्णियाए ठिइएआहारएअसीइभंगा । एतलाविशेष मनुष्यने अधिका मनुष्यने जघन्यस्थितिनविषे असीभांगाहुवे तथा आहारकशरीरनेविषे पणि असीभांगाहुवे, अल्पपणामाटे तेआहारकशरीर नारकीनेहोनथी तेमाटे मनुष्यने एतलो अधिकोछे । वाणमंतरजोइसवेमाणियाजहाभ वणवासी । वाणव्यतर ज्योतिषी वैमानिक एतीन जिम भवनपती कह्या तिमकहवा, जिहां असुरादिकने असीभांगा अथवा सत्तावीस भांगा तिहां व्यन्तरादिकने पणि तिमज कहवा, नामपाडिदेई कहवा, भवनपती व्यंतरनेतो सरीखापणाछे पणि ज्योतिषीने नहीं तेहने सर्वथा साम्यपरिहार करतो कहेछे—णवरणाणत्तंजाणियव्वंजस्सजंजाववत्तरा । एतलाविशेष नानात्व जाणवो जे लेश्याविशेष जाणवो लेश्यादिकत जेहने जेतलो अपे सायभेदछे, तेविशेषको एहना सूत्र कहवा इतिभाव । सेवभंते भंतेत्ति । भावत् भगुत्तर देवसमेकहवा गौतमअहै तहत्ति छेमभवन् । तुम्हेकह्यु ते सत्यछे

जीविमाना न्यद्मानामिचेति वैमानिकसूत्राविचैवमध्येयामि ॥ सखेज्जेसुण भंते ! वेमाणियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणिया आससि केवइया ठिइठाणा पन्नत्ता । इत्येवमादीनि ॥ इति प्रथमशते पञ्चम उद्देशः ॥ ५ ॥ अथ षष्ठो व्याख्यायते तस्य चाय मभिसम्ब न्धो अनन्तरोद्देशके स्थितिसूत्रेषु ॥ असंखेज्जेसुण भंते जोइसियविमाणावासेसु ॥ तथा ॥ सखेज्जेसुण भंते । वेमाणियावाससय सहस्सेसु इत्यतदुक्तं तेषां ज्योतिषविमानावासा अत्यवाख्येति तद्दूरत्वेन प्रतीत्य तथा आवन्ते इतियदुक्त मादिगाथाया तत्र दर्शयितु माह ॥ जाव इयाओइत्यादि ॥ जावइयाओत्ति ॥ यत्परिमाणात् ॥ उवासंतराओत्ति ॥ अवकाशान्तरात् आकाशविशेषाद् दवकाशरूपान्तरालात् याव त्यवकाशान्तरस्थित इ त्यर्थः ॥ उदयतत्ति ॥ उदय मुद्गच्छन् ॥ चक्खुप्फासंति ॥ चक्षुषो दृष्टेः स्पर्शइव स्पर्शो नतु स्पर्शएव चक्षुषो ऽप्राप्तकारित्वादिति चक्षुः स्पर्शो स ॥

ठियठिइए आहारएय असीइजगा, थाणमतरजोइसवेमाणिया जहा नवणवासी, नवर नाणत्त जाणियव्व जजस्स, जाव अणुत्तरा, सेवजंते नंतेत्ति ॥ पढमसए पचमोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ जाव इयाउण नंते ! उवासतराउ उदयते सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छइ अत्यमतेयियण सूरिए तावतियाउ

पढमशतकना पचमा १ ए पचिसा शतकना पांचमा उद्देशाना टबाव सिचमा ॥ ५ ॥ हिवे छठो उद्देशो कहेछे—तेहनो ए सबंध पाछिले उद्देशे भंतस्थानविषे ज्योतिषीना विमानकह्या । हिवे तेहनो प्रकाशगति कहेछे—जावतियाओणंभंते । जिन परिमाणथी हेभगवन् ! अवकाशां तरथकी अवकाशरूप अंतरालथकी । उवासंतराओउदयतेसूरिएचक्खुप्फासंहव्वमागच्छइ । जगती सूर्य दृष्टिमार्ग ओगमाचे सोविम जिवारे सूर्य सब भ्यंतरमंडले होय तिवारे ४७२६३ योजन चोसठीया २१ भाग अलगता सूर्य दृष्टिमार्ग । अत्थमंतेविणसूरिए । आथमतो पणि इमज सूर्य । तावतियाओ वेवउवासंतराओचक्खुप्फासंहव्वमागच्छइ । तेतलाहीज योजन ४७२६३ चोसठीया २१ भाग अवकाशांतरथकी चक्षुस्पर्श आथमतोहीज आवेछे बी जामंडलनी मितिषमेरा सूर्यथकी आपवो इतिमन उत्तर । हंता गोयमा । जावतियाओणंउवासंतराओउदयतेसूरिएचक्खुप्फासंहव्वमागच्छइ । तओ

वर्त्तते ॥ सीघ्रं किससर्वाभ्यंतरमंडले समवस्थारिंशतियोजमाना सहस्त्रेषु द्वयो शतयो स्त्रिषष्टीच साधिकाया वर्त्तमान उदये दृश्यते, एवसम मप्येव एवं प्रतिमंडल दर्शने विशेषोसि सच स्थानान्तराद्यवसेयः॥ सव्वउ समंतत्ति॥ सर्वत सर्वासु दिक्षु समन्तात् विदिक्षु एकार्थोवेती॥ ओभासइ त्यादि ॥ अवभासयति इषत्प्रकाशयति यथा–स्थूलतरमेव वस्तु दृश्यते उद्योतयति प्रकाशयति यथा–स्थूलमेव दृश्यते तपति अपनीत शीत करोति यथाया सूक्ष्मं पिपीलिकादि दृश्यते, तथा करोति प्रभासयति, अतितापयोगा द्विक्षेपतोपनीतशीत विधत्ते यथावा सूक्ष्मतर वस्तु दृश्यते तथाकरोतीति एतदेवमेवा मित्याह ॥ तंभंतेइत्यादि ॥ यत्क्षेत्र मवभासयति उद्योतयति तपति प्रभासयतिच तत्क्षेत्रं किं जदस्त।

चेव उवासतराउ चक्कुप्फासं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! जावइयाउण उवासतराउ उदयंतेसूरिए चक्कुप्फासं हव्वमागच्छइ, अत्थमंतेवि जाव हव्वमागच्छइ, जावइयाण्णं भंते ! खेत्तं उदयंते सूरिए आय वेण सव्वउसमंता ओभासेइ, उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंतेवियणंसूरिए तावइयचेव खेत्तं आयवेण सव्वउसमंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ ? हंता गोयमा ! जावइयाण्णं खेत्तं जाव पभासेइ तंभंते

तम। जिम परिमाणको अवकाशांतरथको उगता सूर्य दृष्टि आवे ४७२६३ योजन २१ भाग। अत्थमंतेविजावहव्वमागच्छइ। आथमता पिण इमहीज यावत् उगावता पहुंचता आवे ४७२६३ योजन २१ भाग। जावतियाण्णमित्यादि। भंतेहू हेभगवन्! खेत्र। उदयंतेसूरिएआतवेणसव्वओ समंताओभासेइ। ऊगता सूर्य आतपेंकरी सूयने तेजेकरी सगली दिशिनेविषे विदिशिनेविषे थोडोसा प्रकाशै जिमवस्तु दृष्टिआवे। उज्जोवेइ तवेइ पभा सेइ। घणा उद्योतकरे शीतदूरकरे जिम सूक्ष्म कीडयादि दीसे विशेषशीतदूरकरे जिम सूक्ष्मवस्तु पिण दृष्टिआवे। अत्थमंतेविणसूरिए। आथमतो पिण सूर्य। तावतियचेवखेत्त। तेतलोज निश्चै खेत्रमतें। आतवेणसव्वओसमताओभासेइ। सूर्यने तेजेकरी सर्वदिशिनेविषे विदिशिनेविषे थोडोसो प्रकाश करे उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ।। घणुं प्रकाशें उद्योतकरे शीतदूरकरे अत्यंतप्रकाश करें इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हां गौतम। जावतियखेत्त।

स्पृष्ट मवगाहयति मस्पृष्ट मवगाहयति इह यावत् करणा दिद दृश्य–गोयमा ! पुठ ठंजासेइ नो मपुठ तजते ! ठंगाढ ठंजासेइ मणोगाढ ? गोयमा ! ठंगाढं ठंजासेइ नो मणोगाढ एव मनतरोगाढ ठंजासइ नोपरंपरोगाढं तजते ! किं मणु ठंजासेइ धायर ठंमासेइ ? गोयमा ! मणुपि ठंजासइ धायरपि ठंजासइ त जते ! उड्ढं ठंमासइ तिरिय ठंजासइ मधे ठंजासइ ? गोयमा ! उड्ढंपि ३ त जते ! माइ ठंजासइ मझे ठंजासइ मते ठंजासइ ? गोयमा ! माइंपि ३ त जते ! मानुपुव्वि ठंजासइ मणानुपुव्वि ठंजासइ ? गोयमा ! मानुपुव्वि ठंजासइ नोमणानुपुव्वि त जते ! कइ दिसिं ठंजासइ ? गोयमा ! नियमा छद्दिसिंति ॥ एतेषाञ्च पदाना मथमोद्देशकनारपाहारसूत्रव्याख्यावृद्धयेति ॥ जय ठंमासइ इत्यनेन सह सूत्रप्रपञ्च उक्त. सएव उज्जोयइइत्यादिना पदद्वयेन वाच्य इतिदर्शं यन्नाह ॥ एव उज्जोवेइइत्यादि ॥ स्पृष्ट क्षेत्र मवजासयती त्युक्त मथ स्पर्शनामेव दशयन्नाह ॥ सव्वमित्यादि ॥ सव्वतित्ति ॥ प्राकृतत्वात् सर्वतः सर्वासु दिक्षु ॥ सव्वावतित्ति ॥ प्राकृतत्वादेव सर्वात्मना सर्वथवा तपेना पत्ति व्याप्ति यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप्ति मथवा सर्वं क्षेत्रं इति मव्क्तो विषयभूत क्षेत्र सव नतु समस्तमेवे त्यस्यो पमदर्शनाय साथा सर्वथा तपेना पो व्याप्ति र्यस्य क्षेत्रस्य तत्सर्वाप इतिगम्यः सामान्यत सर्वथातपेन व्याप्ति नंतु मतिमदेश सर्वक्षेत्रस्या पस्यो पमदर्शनार्थां ऽथवा सव व्याप्ये

किपुठ ठंजासेइ मपुठ ठंजासेइ जाव छद्दिसि एव उज्जोवेइ तवेइ पजासेइ, जाव नियमा छद्दिसि सेणूण जते ! सव्वति सव्वावति फुसमाणकालसमयसि जावइयखेत्त फुसइ तावइयफुसमाणे पुठेत्तिवत्तव्व सिया ?

मावत् मकाशे परीवपेन मायोहे । तमतेविषइभामासइ । से क्षेत्रप्रतें मवभासे उद्योतकरे तपे प्रभासे तेमेज हेभगवन् ! एं फरस्यो उद्योतकरे मपर्श्पोमासेइ मावमेवछदिसि । किया विना फरस्यो उद्योतकरे मावत् छदिशि ऐसो पाठ तावते कहवो । एवउज्जोवेइ तवेइ पभासेइ । इम उद्योतकरे तपे मकाशे । मावनियमाछदिसि । मावत् नियम प्रू छदिशि तिम कहवू । सेणूणभतेसव्वति । ते निश्चे हेभगवन् ! सर्वथी समस्तोदिशिनेविषे । सव्वावति । सगले भातपेकरी भथवा सर्वक्षेत्र । फुसमाणकालसमयसि । फरसता काल समयनेविषे । जावइयखेत्तफुसइ । क्षेत्रलोचन समे सूय । तावइयफुसमाणे

मा सपध्यास्या मत्त स्सम्पार्प इतिशब्दस्तु तथैव ॥ फुसमाणकालसमयसिति ॥ स्पृश्यमानत्वे ऽथवा स्पृशत सूर्यस्य स्पर्शनाया कालसमयः स्पृशकालसमय सत्र आतपेनेति गम्यत यावत्क्षेत्र स्पृशति सूर्य इति प्रकृत तावत्क्षेत्र स्पृश्यमाम स्पृष्टमिति वक्तव्य स्यादिति प्रश्नः ॥ हंतेत्यादुत्तरम् स्पृश्यमानस्पृष्टयो रैकत्व स्प्रथमसूत्रा इवगन्तव्यमिति स्पशनामेया पिहत्याह ॥ लोय ते भंते ! अलोयतमित्यादि ॥ लोकान्तः सवतोलोकावसानं अलोकान्तस्तु तदनन्तरवर्ति इहापि पुठफुसइइत्यादि सूत्रमपश्यो दृश्यो ऽतएवोक्त ॥ जावनियमाछद्दिसिति ॥ एतद्व्याख्यानाचैवं स्पृष्ट मलोकान्त स्पृशति स्पृष्टत्वम्ब व्यवहारतो दूरस्थस्यापि दृष्ट यथा–चक्षुः स्पष्ट इत्यत उच्यते अवगाढ आसन्नमित्यथः अवगाढस्वम्बा सत्तिमात्रमपि स्यादत उच्यते अमनन्तरावगाढ मव्यवधानेन सम्बद्ध नतु परम्परावगाढ शृङ्खलाकटिकाद्व परम्परासम्बद्ध तम्बा सु स्पृशति अलोकान्तस्य कश्चिदपि मयमामात्रस्वन सूक्ष्मत्वात् बादरमपि स्पृशति कथि द्विवधयैव वहुप्रदेशस्वेन बादरत्वात् त कद्दु मध सितर्यक्च स्पृशति ऊर्ध्वादिदिशु साकान्तस्या लोकांतस्यच भावात् तम्बादौ मध्येऽतेच स्पृशति कथ मधस्तिर्यगूर्ध्वलोकान्ताना मादिमध्यान्तकल्पनात् तम्ब स्वविषये स्पृशति

हता गोयमा ! सव्वति जाव वसव्वसिया । तन्नते ! कि पुठ फुसइ जाव नियमा छद्दिसि । लोयतेन्नते ! अलोयतं फुसइ अलोयतेयि लोयतं फुसइ ? हता गोयमा ! लोयंते अलोयतं फुसइ अलोयतेयि लोयत

पडुतिवत्तव्वसिया । तेतमा चेव परसा कहोयि इम वक्त्रा जाव इतिमग्र उत्तर । हता गोयमा । हां गोतम ! सर्व्वतिषावयक्तव्यसिया । सवथी सगसीदिगिनेविषे यावत् परसो इमावरणाहोय । तंमतेकिपट्ठफुसइ । ते हेभगवन् । एं परसा परसेछे ? आवथियमाछदि सिं । यावत् नियेथे छदिषि परसेमापते भंतिमलोयतफुसइ । लोकना छेहडो सवथी लोकना अवसान हे भगवन् ! अलोकना अंतस् परसे अलोकनो अंतते तेहने मतरलोकछे । अलोयतेविमार्यतवमइ । अमाबांत अमावना छेहडा तेपवि लाकनाअंतप्रतें परसे इतिमग्र उत्तर । हंता गोयमा । हांगोतम ! लोयंतअलोयंतफुसइ । लोकनोअंत अलोकना अतप्रते परसै । अलोयतविलायतफुसइ । अलोकना अंतपवि लोकनाअतप्रतें परसै तमतेकिपुट्ठफसइ । ते हेभगवन् ! स्पूं परसा ? फर

स्पृष्टायगाढादी भाविपये भरपसादाविति तम्बा नुपूर्व्या स्पृशति आनुपूर्वी चेह प्रथमे स्थाने लोकान्त सतो नन्तरं द्वितीये स्थाने अलोकान्तइत्ये व मवस्थानतया स्पृशति अन्यथातु स्पर्शमेव न स्या तच्च षट्सु दिक्षु स्पृशति लोकान्तस्य पार्श्वत सवतो ऽलोकान्तस्य भावात् इहच विदि क्षु न स्पर्शमास्ति दिशा लोकविष्कम्भप्रमाणत्वा द्विदिशाश्च तत्परिहारेण भावात् एव द्वीपान्तसागरान्तादिसूत्रेषु स्पृष्टादिपदभावनाकार्या नवरं द्वीपसागरान्तादिसूत्रे षड्दिक्षित्स्पर्शे व भावना योजनसहस्रावगाढा द्वीपाश्च समुद्राश्च भवन्ति तत्र योपरितना भधस्तना च द्वीपसमुद्रा भवाः भावित्यो द्वौपो दिक्षुयस्य स्पर्शना वाच्या पूर्वादिदिक्षु प्रतीतैव समन्तत सोया भवस्थानात् ॥ उदयंतपोयततीति ॥ मध्यासुदकान्तः यो तास्तं शौपपवशान भिन्न प्युत्तरापेक्षया अर्द्धदिक्स्पर्शना वाच्या वसनिमज्जनेषति ॥ छिद्दतेदूसतति ॥ छिद्रान्तोदूष्यान्त वस्त्रान्त स्पृशति इहापि षड्दिक्स्पर्शना भावना वस्त्रोत्क्षेपापेक्षया ऽथवा कम्बलरूपवस्त्रपोट्टलिकाया तन्मध्योत्पन्नजीवजन्तवेन तन्मध्यर प्रापेक्षया लोकान्त सूत्रवत् षड्दिक्स्पर्शना भावयितव्या ॥ छायतेआयवतंतीति ॥ इह छायाप्रदेश षड्दिग्भावनैव आतपे व्योमवर्तिपरिमण्डलितद्रव्यस्य या छाया तदन्तमातपान्तयोषु दिशु स्पृशति तथा तस्याएव छायाया भूमे सकाशा तद्द्रव्य याव तुच्चत्वयोस्ति ततश्च छायान्तमातपान्तमूर्द्धमधश्च स्पृश

फुसइ । तजंते ! किं पुठ फुसइ अपुठफुसइ ? जाव नियमा छद्दिसिं फुसइ । दीवंते भंते ! सागरंत फुसइ सागरंतेवि दीवंत फुसइ ? हंता जाव नियमा छद्दिसिं फुसइ, एवं एएणं अभिलावेण उदयंतेपोययंतं, छिद्दंतेदूसंत, छायंतेआयवंतं, जाव णियमा छद्दिसिं फुसइ अत्थिणं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किं

से । पर्णाफुसइ । भवचा भवभरणा परसे । जावनियमाछद्दिसिफुसइ दीवंतभंतेसागरंतफुसइ । यावत् नियमात् छदिशि परसे भवोगौतम पूछेछे—भो पांत दीपना भत हेभगवन् ! सागरना भतप्रतें परसे । सागरंतेविदीवंतफुसइ । सागरनो भंतपणि दीपनाभंतप्रतें परसे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गौतम ! जावनियमा छद्दिसिंफुसइ । यावत् नियमें छदिशि परसे ते सहस्रयोजन दीप समुद्र ऊडाछे तिणिवलो ऊर्द्धदिशि भधोदिशि पूर्वादि ४

ति, अथवा; प्रासादपरिकरादे याठाया तस्या भित्ते रवतरन्त्या आरोहन्त्यावा अनतातपान्त मूड मचव स्पृशतीति भावनीय, अथवा तयोरेय आयातपयोः पुद्गलाना मसङ्ख्येयप्रदेशावगाहित्वा दुष्प्रयप्रभाव सास्वप्रभावा योद्गोचोविभागकलतव आयान्त आतपान्त मूड़े मचव स्पृशती ति स्पृश्नाभिसारादय प्राणातिपातादिपापस्थानमनकर्मस्पर्शना मधिकृत्याह ॥ अत्थीत्यादि ॥ अत्थित्ति ॥ अस्त्ययमर्थः ॥ किरियाकज्जइत्ति ॥

रिया कज्जइ ? हंता अत्थि । से भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ ? जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघा य पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं । से भंते ! किं कडा कज्जइ अकडा कज्जइ ? गोयमा ! कडा कज्जइ नो अकडा कज्जइ । से भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ परकडा कज्जइ तदुभयकडा कज्जइ ? गोयमा !

दिशि एम छदिशिनी स्पर्शना कहवी । एवंपदर्शनमिशनेषवद्यतेषामत । एम एवमकारेकरी पांचोना पत आवमापतमतें फरसे । किंतेदूसत । छेव नो पतते अपडाना पतमतें फरसे । सर्वतेषातपतावपियमाहादिविपुसर । सावार्गभत धूपनापतमतें फरसे तथे अभो मायाद भीतमेंयिये धूप पडवो अतरतो आयमो यावत् निचे छदिशि स्पर्शनाहुवे, सर्वतोमा परिवार वकोय प्राणातिपात आदिदेई पठाद पापस्थानक सबी अपनो कर्म स्पर्शना तेहमतें अधिकारी कहेवे—अस्थियंभंतेजीवाणंपाणाइवायकिरिया कज्जइ । अस्ति यहवाक्ये बोरति वाक्यालंकारे एपम हेभगवन् । जीव प्राणातिपा तिको क्रिया आपणपे जेओके साकिया करीये, तेमवारी क्रियाजोव इतिप्रश्न । उत्तर । हंता अत्थि । भागोतमवे । सामते किंपुट्ठाकज्जइ । तिहा हेभग वन् । स्पृष्टमरसीवबो थाय । अपुट्ठाकज्जइ । अथवा अस्पर्शी थाय । जावनिव्वाघाएणंछद्दिसिं । यावत् किहां अलोक नेडोनथी तिहां छदिशिने फरसी क्रियाथावे । वाघायपडुच्च सियतिदिसिं सियचउद्दिसिं सियपंचदिसिं । व्याघात आयो अलोक नेडोहवे तिहां किहां एक तीनदिशि मेपदिशि अलोकमाटे नहुवे, किहांएक चारदिशि किहांएक पंचदिशि एतत भावारुनी परे विचारीने कहवी । साभंतेकिंकडाकज्जइ । ते हेभगवन् । एवं प्राणातिपातिको क्रियाजोधो हुवे अथवा । अकडाकज्जइ । अथवाओधो हुवे प्राणातिपातिको क्रिया इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा कडाकज्जइ नोअकडाकज्जइ । हेगोतम ! जो

कियतइतिक्रिया कस्स माक्रियते भवति पुष्टेत्यादि ध्योक्मापूर्ववत् ॥ कडाकज्जइति ॥ कृताजव त्वकृतस्यकर्म्मणो जावात् ॥ अत्तकडाकज्जइति ॥ आत्मकृतमेव कर्म्मभवति नान्यथा ॥ अत्ताणुपुव्विकडाकज्जइत्ति ॥ पूर्वपश्चा द्विभागो यत्रनास्ति तदनानुपूर्वी शब्देनोच्यतइति ॥ अहानेरइयातहा

अत्तकडाकज्जइ णोपरकडाकज्जइ णोतदुभयकडाकज्जइ । साणंभंते ! किं आणुपुव्विकडा कज्जइ अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ? गोयमा ! आणुपुव्विकडाकज्जइ नोअणाणुपुव्विकडाकज्जइ । जायकडा जायकज्जइ जायक ज्जिस्सइ सव्वासा आणुपुव्विकडा नोअणाणुपुव्विकडातिवत्तव्वंसिया । अत्थिणंभंते ! नेरइयाणं पाणाइवाय

भा क्रिया लागे अथवा नथी लागती, पण अथवो ते प्राणातिपातनी क्रिया लागे । साभंतेकिंअत्तकडाकज्जइ । तिवारे हेभगवन् । ए पापनो बांधोक्रिया लागे अथवा । परकडाकज्जइ । पारकीबांधी प्राणातिपातनीक्रिया लागे अथवा । तदुभयकडाकज्जइ । आपसपर ते बेउ कृत प्राणातिपाति नी क्रिया लागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्तकडाकज्जइ । हेगोतम । आपनो बांधी प्राणातिपातनी क्रिया लागे पणि । णोपरकडाकज्जइ । पारकोबांधी प्राणातिपातनी क्रिया नलागे । णोतदुभयकडाकज्जइ । बेउमिली क्रियाबांधी ते एकने पुरुषादिक नहोय जेहनो मन अधिकौ तेहने घणी । साभंतेकिं आणुपुव्विंकडाकज्जइ अणाणुपुव्विकडाकज्जइ । तिवारे हेभगवन् । ए आणुपूर्वी अनुक्रमेबांधी लागे पहिलांबांधी पछे पापलागे अथवा अनानुपूर्वी बांधी ते क्रियालागे बेपहिले पापलागे पछेक्रियालागे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आणुपुव्विंकडाकज्जइ । हेगोतम । आनुपूर्वीबांधी क्रियालागे पणि णोअणाणुपुव्विकडाकज्जइ । अनानुपूर्वीकृतक्रिया नलागे । जायकडा । जिका क्रिया पूर्वेबांधी अतीतकाले जिकाबांधी । जायकज्जइ । जिका वर्तमान काले करेछे । जायकज्जिस्सइ । जिका आगामिकाले करसे । सव्वासाआणुपुव्विकडा । तेसगली आनुपूर्वी अनुक्रमेबांधी पणि । णोअणाणुपुव्विकडा तिवत्तव्वंसिया । अनुक्रमरहित अनानुपूर्वी तेबांधी इम कहीये, अहोगोतमपूर्वेकह्युं—अत्थिणंभंतेनेरइयाणं । छे सदाकालकारे हेभगवन् । नारकीने । पा णाइवायकिरियाकज्जइ । प्राणातिपातरूप जीवहिंसारूप क्रिया करवा कर्मलागे इतिप्रश्न उत्तर । हंताअत्थि । हां गोतम छे । साभंते किंपुट्ठाकज्जइ ।

एगिंदियवज्जाणामाभिपद्गति ॥ नारकवत् असुरादयोऽपि वाच्या एकेन्द्रियवर्ज्या स्तेत्वन्यथा तेषामिह विक्पदे – मिच्छाधारणं छद्दिसिं वाघायं पडुच्च सियतिदिसिइत्यादि विभणजिस्सापस्स जीवपदोक्तस्य भावादतएवाह ॥ एगिंदिया जहाजीवा तहाभाणियव्वत्ति ॥ जाव मिच्छादंसणसल्ले ॥ इत्या वस्करणात् ॥ माया मायालोभपेज्जे, अनभिव्यक्त मायालोभस्वभाव मभिष्वङ्गमात्रम्म दोसे, अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूप मप्रीतिमात्रमद्वेषः कलहो राटिः, अब्भक्खाणे असद्दोषाविष्करणं पेसुन्ने, प्रच्छन्न असद्दोषाविष्करणं परपरिवाए, विप्रकीर्णं परेषां गुणदोषवचनं अरइरइ अरति

किरिया कज्जइ ? हंता ! अत्थि । साणं भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ अपुट्ठा कज्जइ जाव नियमा छद्दिसिं कज्जइ सा णं भंते ! किं कडा कज्जइ अकडा कज्जइ तचेव जाव नो अणाणुपुव्विकडा तिवत्तव्वं सिया । जहा नेरइया तहा एगिंदियवज्जा भाणियव्वा जाव वेमाणिया । एगिंदिया जहा जीवा तहा भाणियव्वा , तहा पाणाइवाए तहा मुसावाए , तहा अदिन्ने , मेहुणे , परिग्गहे , कोहे , जाव मिच्छादंसणसल्ले । एवं एए अट्ठारसचउव्वीस दंडगा

तिका हे भगवन् ! प्राणातिपातकी लागे ? अपुट्ठाकज्जइ । भवना भसट लागे । आवविसमार्गविसिकज्जइ । यावत् निश्चे छ दिशि मते लागे । सामते विशडावज्जइ । तिका क्रिया हे भगवन् ! ... कोधी लागे । अक्डावज्जइ । भवना अणकोधी लागे । तचेव । तिमज सब कहवी । आवषोमणाणुपुव्वि कडातिवत्तव्वसिया । यावत् अनानुपूर्वीये नकीधी एहवं कहवं । जहानेरइया तहा एगिंदियवज्जाभाणियव्वाजावेमाणिया । जिम नारकीनइ तिम एकेंद्री वर्जी असुरकुमारादिक यावत् वेमानिक पर्यंत सर्व कहवा एकेंद्रीवर्ज्या तेमाटे एकेंद्रीने विकल्पपदे । निव्वाघाएण छद्दिसिवाघायं पडुच्चसियतिदिसि इत्यादि । एगिंदियाजहाजीवातहाभाणियव्वा जहापाणाइवाए । एकेंद्री जिम जीवकह्या तिम कहवा, जिम प्राण दस तेहना वियोग तेहनें प्राणा तिपात कहीये जीवनाम हिंसाकरीये जिमप्राणातिपात । तहामुसावाए । तिम मृषावाद आदत्ता । अदत्तादानं मेहुणे परिग्गहे कोहे । तिमज अदत्तादान अणदीधो वस्तु लेवा, स्त्रीसेवन मैथुन क्रीडाभोग, परिग्रह मूर्च्छा क्रोध जीवद्वेद । जावमिच्छादंसणसल्लेएवं एए अट्ठारसचउव्वीसदंडगाभाणियव्वा

मोहनीयोदयापादितोद्गमः तल्लक्षणा रति विषयेषु मोहनीयोदयात् चित्ताभिरतिः अरतिरति मायामोसे तृतीयकषायद्वितीयाश्रवयोः संयोगो ऽनेन सयमयोगात्मलक्षिता अथवा वेषान्तरभाषान्तरकरणेन मायया वचनं सम्मायामृषेति मिथ्यादर्शनं शल्यमिव विविधव्यथानिबन्धनत्वा न्मिथ्यादर्शनशल्यमिति एवं ताव द्वीतसमद्वारेण कर्म्म प्ररूपित तत्प्रवाहत श्चास्त मित्यतः शास्त्रतामेव लोकादिभावान् रोहकाभिधान मुनि पुंगवद्वारेण प्ररूपयितु मस्तावयन्नाह ॥ तेणंकालेणमित्यादि ॥ पगइभद्दएत्ति ॥ स्वभावतएव परोपकारकरणशील ॥ पगइमउएत्ति ॥ स्वभावत एव भावमार्दवितो ऽतएव ॥ पगइविणीएत्ति ॥ तथा ॥ पगइउवसंतेत्ति ॥ क्रोधोदयाभावात् ॥ पगइपयणुकोहमाणमायालोभे ॥ सत्यपि कषायोदये प्रतनुकोपादिभावः ॥ मिउमद्दवसंपन्नेत्ति ॥ मृदु यन्मार्दवं अत्यर्थं मदरहितत्वं तत्सम्पन्नः प्राप्तो गुरूपदेशा द्य सतथा ॥ अल्लीणेति ॥ गुरुसमा

णियवक्षा। सेवन्नंते २। भगवं गोयमे समणं जाव विहरइ ॥ तेणंकालेणं तेणंसमएणं समणस्स भगवन्ते म हावीरस्स अंतेवासीरोहेणामअणगारे पगइभद्दए पगइमउए पगइविणीए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमा

रहा यावत् मिथ्यादर्शन माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशून्य परपरिवाद अरतिरति मायामोस मिथ्यादर्शनशल्य ए अठार पापस्थानक सउघीमकडे कहया। सेवभंते भंतेत्ति। ते कहति, हे भगवन्! तुम्हे कह्यु ते सत्य छे भगवन्तजी एसावती। भगवंगोयमे समणंभगवंमहावीरंवंदइनमंसि इरइ। भगवत गौतम श्रमण भगवन्त श्रीमहावीरने वांदी यावत् विचरतावाला, इम पहिला गौतमने अधिकारें कर्म प्ररूपणा। कोधी ते कर्म प्रवाहथी शाश्वता छे एतला माटे जगाष्यता लोकादिकना भाव रोहकनामा साधु तेहने प्रश्नोत्तरकहेछे—तेणंकालेणं। तेणंकालेणंसि। तेणंसमएणं। ते समयने विषे समणस्सभगवओमहावीरस्स। श्रमण तपस्वी भगवंत ज्ञानवंत ऐश्वर्यादियुक्त श्रीमहावीरनो। अंतेवासी रोहेणामंअणगारे। शिष्य रोहानामे साधु पगइभद्दए। स्वभावे पर उपकारी। पगइमउए। स्वभावथी कामलभाव। पगइविणीए। स्वभावे विनयवंत। पगइउवसंते। स्वभावे क्रोधउदयनही। पग इपयणुकोहमाणमायालोभ। स्वभावे पातला थोडा क्रोधमान माया लोभछे। मिउमद्दवसंपन्ने अतीव मदए विनोए। मृदु जे मार्दव अत्यंत अहंकारनो त्य

णमायाठीत्ते मिउमद्दवसपन्ने स्रुठीणे नद्दए विणीए समणस्सनगवद्योमहावीरस्स श्रदूरसामते उढ्ढ जाणू श्रहोसिरे ज्काणकोठोयगए सजमेण तवसा श्रप्पाणनावेमाणे विहरइ। तएणसे रोहे श्रणगारे जायसड्ढे जाय पज्जुवासमाणे एवंवयासी पुव्विंनते ! लोए पच्छाश्रलोए पुव्विंश्रलोए पच्छालोए ? रोहा ! लोएय श्रलोए य पुव्विंपेते पच्छापेते दोवेएसासयानावा श्रणाणुपुव्वीए सारोहा। पुव्विंनते ! जीवा पच्छा श्रजीवा

स समय मुवउयदेयवी गुरूसमोपरमा पवन। सवोगे गवदत मताराघम गरू सेवा गुर्वामते। समपक्षभमवपामहावोरस। भ्रमव भगवंत श्रीमहा वोरस्यामोने। मदूरसामते। पतिवेमवीमको पति ठूबवानको। उदूजानूपवोसिरे। कवा ढींचव गोधो माथो। ध्यानकोष्ठावगए। ध्यानरूप कोठाने विषे धमध्यान विषे खिरचित्तवका। सजमेणंतवसा पप्पाणभावेमाणेविहरइ। ससरेमेदे सवम तेघे मवा घावता वामवारोवे तेवेकरो तवा तप वारे भेदे तिघे मूसमा वम नियरियें तेवे करो पाप्मा जीव ते प्रतें मवो भावमावे भावतावका विपरे। तएणसेरोहेणामपवगारे जावसड्ढे। तिवारे तेरोहा नामे साधुजपनो पदा एतसे भाव्यावे सहित। जावपज्जुवासेमाणे। यावत् मण्डे सेवा करतावका एसव गौतमगोपरें कवयो। एववयासी। इम वचसमा न कहता हुवा। पुव्विंभतेंलोए। पहिले हेभगवन् ! लोकवे। पच्छाअलोए। पछे अलोकछे। पुव्विंअलोए। अथवा पूर्वें अलोकछे। पच्छालोए। पछेलो कछे इतिमश्र उत्तर। रोहा लोएय अलोए। हेरोहा लोक अपुन अलोक। पव्विंपेते पच्छापेते। पूर्वें पणिए पछेपणिए। दोविएसासयाभावा। ए बिना तवा पदार्थ बेह शाश्वताभावछे इसो सदेह नथी। अणाणुपुव्वीएसारोहा। पहिले पाछे जिहा पतर नथी एतले दोमू परापरछे एहमाहे पहिला पाछे कोर कहवाय नथी। पुव्विंभंतेजीवा। अजीवाहोपूछेछे—पहिला हेभगवन् ! जीवछे। पच्छाअजीवा। पछे अजीवछ अथवा। पुव्विंअजी वा। पूर्वें अजीवछे। पच्छाजीवा अछेव जीवछ अजीवछ। पछे जीवछे इतिमश्र उत्तर कहेछे—जिमलोक लोक मने पदार्थ पहिला पछे नकहया। तहिव जीवाअजीवाय। तिमहीज जीव अजीव एहोम् शाश्वतामावछे एहामेविषें पूर्वापरविभागपणो पवि करो नसके। एवभवसिद्धियाय। इमभूसे सि

मितः मलीनोया ॥ भइयति ॥ मनुपतापको गुरुशिक्षानुवात् ॥ विसीपत्ति ॥ गुरुसवागुवात् ॥ भवसिद्धियायत्ति ॥ भविष्यतीति भवा भया सि

पुव्विं अजीवा पच्छा जीवा? जहेवलोएय अलोएय तहेव जीवाय अजीवाय, एव भवसिद्धियाय अभवसिद्धियाय सिद्धीअसिद्धी सिद्धा असिद्धा। पुव्विंभंते! अण्डए पच्छाकुक्कुडी पुव्विंकुक्कुडी पच्छा अण्डए? रोहा! सेण अण्डए कउ? भयव कुक्कुडीउ, साणकुक्कुडी कउ? भंते! अण्डयाउ एवामेव, रोहा! सेयअण्डए सायकुक्कुडी पुव्विंपेते पच्छापेते दुवेएसासयाभावा अणाणुपुव्वीए सारोहा। पुव्विंभंते! लोयंते पच्छाअलोयंते पुव्विंअलो

दि भइने ते भवसिद्धि कहता भव्य इत्यर्थं। अभवसिद्धियाय। भवीवाय सिद्ध भइने त अभव्य इत्यर्थं। सिद्धि असिद्धि। सिद्धि मुक्ति असिद्धि संसार तेमा व। सिद्धा असिद्धा। सिद्धासिद्धजीव असिद्धा संसारीजीव तेमाहे एसव वलीराजो पूछेछे—पुव्विंभंतेअण्डए। पूर्वं हेभगवन्। इण्डू। पच्छाकुकुडी। पछे कुकडीछे। पुव्विकुकुडी। भववा पूर्वं पहिला कुकडीछे। पच्छाअण्डए। पछे इंडूछे इतियन्न उत्तर। राहाछेव अंडएकथा। हेरोहा! ते अंडाआसव्वारे इंडू किहांथी थया इसासामोयि पूछा। भयवकुकुडीओ। तिवारे राजो कहेछे—हेभगवन्। कुकडीथी इंडू थया वलीभगवंतकहेछे—साधकुकडीकथी। पूकडो किहांथी हई? तिवारे रोहा कहे—भंतेअंडयाथी। हे भगवन्! इंडाथी कुकडीहई। एवामेवरोहा सेव अण्डए। इमज हेरोहा! ते इंडू। साय कडो। तिवा कूकडो। पुव्विंपेते पच्छापेते। पहिला पछिण पछेपछिए। दोपितेसासयाभावा। शानूए शाश्वताभाव शाश्वता पदार्थ। अणाणुपुव्वीएसा रोहा। एहवा पूर्वं पछे एहवो आनुपूर्वीय रहितछे हेरोहा। पुव्विंभंतेलोयंते। वलीराजा पूछेछे—हेभगवन्। लोकना अंतछे। पच्छाअलोयंते। पछे अ लोकनेअंतछे अथवा। पुव्विंअलोयंत। पूर्वं अलोकनो अंतछे। पच्छालोयंते। पछे लोकना अंतछे इतिप्रश्न। रोहा लोयंतेय अलोयंतेय। हेरोहा! लोक यंत पछे अलोकना अंत एहवा पहिला पछेनथी। जाव अणाणुपुव्विएरोहा। यावत् अनानुपूर्वीछे पछे पहिलू एहवा कथो नथीरोये हे रोहा वली राजा पूछेछे—पहिले हेभगवन्। लोकनोअंत। पच्छासत्तमेउवासंतरेपच्छा। पछे सातमो पृथिवीनो हेठिला आकाशांतर इत्येवप्रश्न कोधे भगवंतकहेछे—

त्ति निवृति येषान्ते भवसिद्धिका भव्या इत्यर्थः ॥ सत्तमेउवासतरेत्ति ॥ सप्तमपृथिव्या अधोवर्त्याकाशमिति सप्तसङ्ग्रहगाथे ॥ उवासेत्यादिके, तत्र ॥ उवासेत्ति ॥ अवकाशान्तराणि ॥ वायत्ति ॥ तनुवाता घनवाता ॥ घणउदहित्ति ॥ घनोदधयः ॥ सत्तपुढवित्ति ॥ नरकपृथिव्यः सप्तैव ॥ दीवायत्ति ॥ जम्बूद्वीपादयो ऽसङ्ख्येयाः एव सागरा लवणादयः ॥ वासत्ति ॥ वर्षाणि भरतादीनि सप्तैव ॥ नेरइयाइयत्ति ॥ चतुर्विंशतिदण्डक ॥ अत्थियत्ति ॥

यते पच्छालोयते ? रोहा ! लोयतेय अलोयतेय जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा । पुव्विंभंते ! लोयते पच्छा सत्त मेउवासतरे पुच्छा , रोहा ! लोयतेय सत्तमेय उवासतरे पुव्विंपेते जाव अणाणुपुव्वीए सारोहा , एव लो यतय सत्तमेय तणुवाए एवघणवाए घणोदहिसत्तमापुढवी, एव लोयते एक्केक्केणसजोएयव्वे , इमेहिंठाणेहि तजहा–उवासवायघणउदहि पुढवीदीवायसागरावासा नेरइयादीअत्थियय समयकम्माइलेस्साउ ॥ १ ॥ दि

रोहा लोकान्तर सप्तम अवकाशान्तर पूर्वेपिछे यावत् अनानुपूर्वी हे रोहा ! लोकान्त भगवन् पहिला सातमो पृथिवीनो १ आकाशमें माहोमाहि पहिला पछि एकाइ पहि यावत् अनुक्रमरहित पहिला पछे एकनो अनेकसंयोग पहिलाए पछेए इमनथी इहां पूर्व पश्चात्ना अनुक्रम नथी हेरोहा । एव लो कांतेय । इम लोकनाअन्त भगवं । सत्तमेयतणुवाए । सातमो पृथिवीना तनुवात एहनो प्रश्न तथा उत्तर कहवा । एवघणवायघणोदहि । इम लोकांत घ नो सातमो पृथिवीना घनवात घनोदधि कहवा इम लोकनो अंत भगवं । सत्तमापुढवी । सातमो पृथिवी कहवी । एवलोयंते । इम लोकनाअंतथ एकेकेणसंजोएयव्वे । एकेकस्थानक जोडवा । इमेहिंठाणेहिं । तंजहा । एह स्थानकना नामकहे तेकहेछे – गाथाबेकरी । उवासवातघणउदहि । आ काश अंतरा १ तनुवात बीजो घनवात घनोदधि पांचो सात । पुढवीदीवायसागरावासा । नरकनो पृथिवी सात जंबूद्वीप आदिदेइ असंख्याता द्वीप असंख्याता समुद्र लवणसमुद्र आदिदेइ भरतक्षेत्रादिवास । नेरइयादी अत्थिय । नारको आदि चउवीसदंडक पंचास्तिकाय अपुन । समयाकम्माइ ले स्याओ ॥ १ ॥ कालविभाग आठ लेश्या छ १ । दिट्ठीदंसणणाणे सन्नसरीराणजोगउवओगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिपुव्विलोयंते ॥ २ ॥ दृष्टि ३ दर्शन ४

भस्मिन्नाणा पञ्च ॥ भमपति ॥ कालविभागाः धर्मास्पष्टी सेद्याः पद्, दृष्टयोमिथ्यादृष्ट्यादय स्तिस्रः दर्शनामिषत्वारि ज्ञानानिपञ्च, सञ्ज्ञा पतस्रः शरीराणिपञ्च, योगास्त्रय उपयोगौद्वौ, द्रव्याणिषट् प्रदेशा अनन्ताः, पर्यया अनन्तास्त्व ॥ भद्गति ॥ अतीताद्धा अनागताद्धा सर्वाद्धा चेति ॥ किंपुद्दिमायतेति ॥ भयं सूत्राभिलापनिर्देश स्तमेव पश्चिमसूत्राभिलापं दर्शयन्नाह ॥ पुव्विंभतेलोयतेपच्छासत्तमेत्ति ॥ एतानिच सूत्राणि शून्यवादादिवाददिनिराशन विचित्रयाख्यात्मिकव्यस्तुसत्ताभिधानार्थानि ईश्वरादिकर्तृत्वनिरासेन चानादित्वाभिधानार्थानीति लोकान्तादिलो

ठोदसणणाणा समसरीरायजोगउवतोगे दव्वपएसापज्जव अद्धाकिंपुव्विंलोयते ॥ २ ॥ पुव्विंभते ! लोयते प च्छासत्तमेयवासतरेपच्छा ? जहालोयतेण सजोयया सव्वेठाणा, एते एव अलोयतेणवि सजोएयव्वा सव्वे, पुव्विंभते ! स त्तमे उवासतरे पच्छा, सत्तमेतणुवाए एव सत्तम उवासतरसव्वेहिं सम सजोएयव्वे, जाव सव्वद्धाए पुव्विंभं ते ! सत्तमेतणुवाए पच्छासत्तमेघणवाए, एयपि तहेव नेयव्व, जाव सव्वद्धा, एव उवरिल्ल एक्केक्क सजो

प्राम १ मृपा १ महार १ पवन वाग १ उपसाम २ द्रव्य ६ प्रदेश भनता पर्याव भनंता भतीतभद्धा भनागतभद्धा सर्वद्धा एवंवा स्थानक पूछवा स्यू ? पहिला लोकांत २ पछ । पव्विंभतेलोयते । एहोज विशेष देखाडवा सूत्र देखाडे छे—पूर्वे हे भगवन् ! लोकांत । पच्छाअलोकांत । पछे सातमा इत्यादि स र बहने । जहालोयतेणसंजोइयासव्वेठाणा । जिम लोकनाअंत स्यूं एवा बोला समस्त स्थानक सातमा अवकाशांतरादिक तिम । एतेएवअलोयतेण विसंजोएयव्वा । ए इमज अलोकना अंतवडी पणि अलोपरेविचारीने आलावा मेलवा, अलोकांतथी पूछे छे—सेपव्विंभंतेसत्तमेउवासतरेपच्छासत्तमेतणुवाए। ते पहिला हे भगवन् सातमीपृथिवीनो आकाशांतर के पछे सातमीपृथिवीनो तनुवात अथवा पहिला सातमो आकाशांतर इमपूछ्या भगवंत कहे छे—ए हवो पहिला पछे कहो न कहाये । एवमसत्तमंउवासंतर । इम सातमो आकाशांतर । सव्वेहिंसमंसंजोएयव्वजावसव्वद्धाय । सगले ठामे लोकनो लोकमे म गता तांमने कहवा, अलोकांतथीपूछे छे—पव्विंभंतेसत्तमेतणुवाए । पहिला हे भगवन् सातमी पृथिवी अथवा सातमी तनुवात छे । पच्छासत्तमेघणवाए।

पदार्थप्रस्तावाया इय गौतमसुखेन लोकस्थितिप्रज्ञापनायाह ॥ कइविहाणमित्यादि ॥ आकाशप्रतिष्ठितो वायु समुद्यालघनवासरूप तस्या यथा आमगोपरिस्थितत्वात् आकाशन्तु स्वप्रतिष्ठितमयेति मतप्रतिष्ठाविमालतति तथा वातप्रतिष्ठित उदधिर्घनोदधि तनुघनवातोपरिस्थित त्वात् २ तथा उदधिप्रतिष्ठिता पृथिवी घनोदधीना मुपरिस्थितत्वात् ३ रत्नप्रभादीना याद्रुस्यापेक्षया चेवमुक्त मन्यथे पत्प्राग्भारापृथिवी

य तेण जोजीहेठिश्रो ततठक्लेतेण नेयव्व, जाव ख्रतीयखणागयद्धा पच्छा सव्वद्धा, जाव श्रणाणुपुव्वीए सा रोहा, सेवन्तेर जाव विहरइ। ज्ञतेत्ति नगवं गोयमे समण जाव एवययासी, कइविहाण ज्ञते! लोय ठिइ पणत्ता? गोयमा! श्रठविहा लोयठिई पणत्ता? तंजहा! श्रागासपइठिएयाए १, वायपइठि

पके भातमा घनवातक अथवा पश्चिमासातमा घनवातके पके सातमा तनुवातके १ भगवतकथेके—एवं पितकेवपेयव। एमवि तिमण आपवा पश्चिमा पके न कहया। आवसम्हा। यावत् सवमहा एतमो कहयो। एवसर्वरियपक्षेवसंजोय। इम अपरिथो एकेकवाक्यो मेलयो। विषनोजोकेठिश्रो। तेपयो जेजे केठिभो। ततंवक्षेएवंवेयव्य। तेते वोलवो परवामेलवो, इम विचारी लेवो, वाक्यगेकहवा। जाव अतीतअथामवदा। यावत् पश्चिमा अतीत अद्धा पछ अनागतअद्धा, अथवा पश्चिमा अनागतअद्धा पके अतीतअद्धा। अनद्धासभ्यदा। इम पश्चिमा अनागतअद्धा पके सर्वाद्धा, अथवा पश्चिमा सर्वाद्धा पके अनागतअद्धा जावअनानुपूर्वीपसारोहा। यावत् एमव अनानुपूर्वीइं वेरोहा एसकमे पश्चिमापके कहोनसकोये, सदा शाश्वता भावके वेरोहा। सेवभतेभंतेत्तिजाव विचरइ। राहा कहके—नहति। हमभगवन् तुमेकह्य ते सवसत्यके मन्यवानकीं इसीकहो यावत् विचरे। भतेत्तिभगवगोयमे समणभगवमहावीर जावएवंवयासी। लावातादि लावपदार्थ प्रस्तावको कहा। हिवे गौतम मुखद्वारे लोकस्थितिनो स्वरूपप्रकाशे कहेके—हे भगवन्! एतवा भगवत गौतम, श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रतेवादी यावत् इमकहे। कइविहाणभंतेलोयठिईपणत्ता। केतलेभेदे हेभगवन् लोकनोस्थिति कही इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अठविहालोयठिई पणत्ता तंजहा। हेगौतम आठभेद अजरराजलोकनो स्थिति रहयो कहा तेकहेके—आगासपइठिएयाए १। आकाशअपर तनुवात

पाकाशप्रतिष्ठितेव तथा पृथिवीप्रतिष्ठिता त्रसस्थावराः प्राणा इदमपि प्रायिकमेवा न्यथा आकाशपर्वतविमानप्रतिष्ठितास्तेऽपि सन्तीति ४ तथा अजीवा शरीरादिपुद्गलरूपा जीवप्रतिष्ठिता जीवेषु तेषामस्थितत्वात् ५ तथा जीवा कर्मप्रतिष्ठिता कर्मसु अनुदयावस्थकर्मपुद्गलसमुदाय रूपव संसारिजीवानामाश्रितत्वात् अन्येत्वाहुः—जीवा कर्मभि प्रतिष्ठिता नारकादिभावेना वस्थापिता ६ तथा अजीवा जीवसङ्गृहीता मनो भाषादिपुद्गलानां जीवैः सङ्गृहीतत्वात् अजीवाजीवप्रतिष्ठिता तथा अजीवाजीवसङ्गृहीता इत्येतयोः कोभेद ? उच्यते पूर्वस्मिन् वाक्ये आधाराधे यभावउक्त उत्तरे सङ्ग्राह्यसङ्ग्राहकभाव इतिभेद यच्च यस्य सङ्ग्राह्यं तत्तस्य चैव प्रतिष्ठितं स्यात् यथा—अपूपस्य तैल मित्याधाराधेयता

पइट्ठी २, उदहिपइट्ठियापुढवी ३, पुढवीपइट्ठियातसाथावरापाणा ४, अजीवाजीवपइट्ठिया ५, जीवाकम्मपइट्ठिया ६, अजीवाजीवसंगहिया ७, जीवाकम्मसंगहिया ८, सेकेणट्ठेणंभंते ! एववुच्चइ अट्ठ

तनवात रह्याछे आकाशपातेज प्रतिष्ठितछे तेमाटे आकाशप्रतिष्ठितमो किया मनोधा आकाशनिजवर्ती उपर रह्या नथी। वातपइट्ठिउदही २। तनव न घनवात उपर घनोदधि प्रतिष्ठित वरतो रह्याछे २ घनोदधि उपर रत्नप्रभादि पृथिवीरहीछे। उदहिपइट्ठिपुढवी। तेमाटे उदधि प्रतिष्ठित पृथिवी कही, ए रत्नप्रभादिक सात पृथिवी आश्रयीने कह्यो वचनपणामाटे अन्यथा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी आकाश प्रतिष्ठितछे ३। पुढवीपइट्ठियातसथावरापाणा ४ पृथिवी उपरि त्रस स्थावरजीव ए पणि प्रायकवचने कह्युं अन्यथा आकाशपर्वत विमानमेविषे अथिरवेछे ४। अजीवा जीवपइट्ठिया ५। शरीरादि परवरूप अजीव ते जीवनेविषे प्रतिष्ठित रह्याछे जीवाश्रितछे तेमाटे। जीवा कम्मपइट्ठिया ६। जीव संसारी कर्म पुद्गलरूपनेविषे प्रतिष्ठितरह्या, अथवा जीव कर्म प्रतिष्ठित नारको आदिभावेरह्या ६। अजीवाजीवसंगहिया ७। मन भाषादि पुद्गल जीव ग्रह्याछे पूर्वकह्या अजीवाजीव पइट्ठिया तिम अजी ग्राहे कह्या ७। जीवाकम्मसंगहिया ८। संसारीजीव कर्मसमूह उदयपाम्या कर्मनेवसे प्रवर्तेछे तेवशमेषलेछे तेतिवारे प्रतिष्ठित कह्यो जिम घटने विषे रूपादिकछे ८ गौतम पूछेछे—सेकेणट्ठेणंभंतेएववुच्चइ। ते स्ये कारणें हे भगवन् इमकह्युं। अट्ठविहाजावजीवाकम्मसंगहिया। पाठभेदे लोकस्थिति

णो व्यमरयाक्से दृश्यवति ७ तथा जीवा कम्मसङ्गृहीताः संसारिजीवानां मुख्यमासकर्मवशवर्तित्वात् येन पद्मस्या स्तोतप्रतिष्ठिता यथा—घटे कूपादय इत्यय सिद्धाप्याधाराधयता दृश्येति ॥ सेजहानामएकइति ॥ स यथानामको यत्प्रकारनामा देवदत्तादिनामेत्यर्थ अथवा ॥ सेइति ॥ स यथति दृष्टान्तायः नामेति सम्भावनाया ए इतिवाक्यालङ्कार ॥ वत्थिमिति ॥ वस्तिदृति ॥ आफोवेइत्ति ॥ आटोपये द्वायुना पूरयेत् ॥ उप्पिसि यथधइति ॥ उपरिसितं विकृतमन इसिवकमात् प्रत्ययस्य प्रायायस्या एकम्मार्थत्वाद्वा बन्धकृयिमित्यथः बघ्नाति करोतीत्यर्थः अथवा ॥ उप्पिसियत्ति ॥ उपरि वमिति वस्ति ॥ सेवाउयाएत्ति ॥ सो ऽप्काय सास्यवायुकायस्य ॥ उप्पिति ॥ उपर्युपरिभावध व्यवहारतोपिस्या दित्यत चाह ॥ उपरितमे सर्वोपरीत्यथः यथा—वायु राधारो जलस्य दृष्ट एव माधाराधेयभावो भवति आकाशधनवातादीनामितिभावः भाषा

यिहा जाव जीवाकम्मसगहिया ? गोयमा ! सेजहानामए केइपुरिसे वत्थिमाफोवेइ २ त्ताउप्पिसिइत्रधइ २ त्ता मज्झेगंठिअधइ २ त्ता उयरिल्लगंठिमुयइ २ त्ता उवरिल्लदेसयामेइ २ त्ताउवरिल्लदेस आउयायस्सपूरेइ २ त्ता उप्पि सियग्रधइ २ त्तामज्झिल्लगंठिमुयइ । सेणूण गोयमा ! सेआउयाए तस्सवाउयायस्स उप्पि उयरितले चिठइ ?

कभी यागत् जीवकर्मे सगबाळे मातम इसे पूछोवको भगवत कहेछे—उत्तर । गोयमा सेजहानामए । हेगौतम ते यथा दृष्टांत नामइति कामकामंत ग । केइपुरिसेवत्थिमाफोवेइ । कोई देवदत्तनामे पुरुष दीवडोवायेकरी फूंकेकरी पूरे । वत्थिमाफोवेत्ता । दीवडोवायेकरी पूरीने पछै । उप्पिसियबधइ २ त्ता ऊपरथो तेहनामुख बांधे मुखे चबवांधे बांधीने । मज्झेगंठिबधइ २ त्ता । मध्य माहि दीवडोमे विचे बांधे बांधीने । उवरिल्लगंठिमुयइ २ त्ता । पछै मुखको ऊपरिनी गांठ मूकै गांठिवाली खोलीने । उवरिल्लदेसवामेइ २ त्ता । ऊपरिना देशथी वायरोकाढे काढीने पछै । उवरिल्लदेसआउयाएसपूरेइ २ त्ता । ऊ परिल्लादेशनेविषे पहलेविषे पाणीसू भरे पाणीसूं भरीने । उप्पिसितबधइ २ त्ता । ऊपरथी मुखनी गांठिवांधे वांधीने तिवारे पछै । मज्झिल्लगंठिमुयइ । विचलीगांठि खोले छूटे । सेणूण गोयमा । ते निश्चे हेगौतम । सेआउयाए । ते अपकाय । तस्सवाउयायस्सउप्पिउवरिमतलेचिट्ठइ । तेहने वाउकायने

राधयनावय प्रागेव सर्वपदेपु व्यञ्जितइति ॥ मत्वाइमतारमपोरुपियसिति ॥ मस्ताघ मविद्यमानस्ताघ मगाघमित्यर्थ मस्ताघोवा निरस्ताघ सतमित्यर्थ मतएवा,तार तरीतु मशक्य पाठान्तरेव मपार पारवर्जित पुरुष प्रमाणमस्येति पौरुपेयं तत्प्रतिषेधा दपौरुषेय तत कम्मधारयो ऽत सत्र मतार पेशालायविक एव वाबत्यत्र वाशब्दो दृष्टान्तान्तरतासूचनार्थः लोकस्थित्यधिकारा देवदमाह ॥ मस्थियमित्यादि ॥ मन्येत्याह –मजीवाजीवपइठियाइत्यादि परचतुष्टयस्य भावमार्थं मिदमाह ॥ मस्थिणमित्यादि ॥ पोग्गलति ॥ कम्मशरीरादिपुद्गलाः ॥ मसमस

हताचिठइ। सेतेणठेणजाव जीवा कम्मसगहिया, सेजहाया केइपुरिसे वत्थिमाफोवेइ २ त्ता कडीएगबधइ ग्र त्थाहमतारमपोरिसिय उदगसिउग्गाहेज्जा। सेणूण गोयमा ! सेपुरिसे तस्स ग्राउयायस्स उवरिमतले चि ठइ ? हंता चिठइ। एवंवा ग्रठयिहा लोयठिई पन्नत्ता, जाव जीवा कम्मसगहिया। ग्रत्थिणत्नते! जी

ऊपर अपरलेतले पाणी रहे इसे थोमहावीरदेवे कह्यो गौतमप्रते। हताचिठइ। हां भगवन् रहे, तिवारे भगवतकहे—सेतेणठेणं जावजीवाकम्मसगहि या। हे गौतम ! जिम वायुने आधारे वस्ति रह्यो दीठ् तिम आधाराधेयभावे आकाश घनवातादिक पर्यवसाने, यावत् जीवकर्मे संग्रह्या तासंगे कहवु वली बीजा दृष्टांत कहे—सेजहानामकेइपुरिसे। ते जिम कोइ पुरुष देवदत्तादि नामे। वत्थिमाडोवेइ। दीवडो वायेकरीपूरे पछे ते दीवडो। कडिएब धइ। कडिसेतीबांधे पछे। मत्थाह मतार। अगाघपाणी अगाध तराव्रतास पाठांतरे अपार पाररहित। मपोरिसियसिउदगसि। पुरुषप्रमाणथी अ धिक पाणीनेविषे ते पइसे। उग्गाहेज्जा। पइसारे पाणीमांहिपेसे। सेणूणगोयमासेपुरिसे। भगवतकहे तेनिश्चे हेगौतम ! ते पुरुष। तस्सआउयायस्सउ वरिमतलेचिठइ। तेह पाणीने ऊपर रहे पाणी पवनाश्रत रहे तथा रहे इसा भगवतेकह्यो तिवार गौतमकहे। हता चिठइ। हांभगवन् तेपुरुष पा णी ऊपररहे। एववाग्रठविहालोयठिई पन्नता। तिवारे भगवतकहे इम वा अन्य दृष्टांत तर सूचनाथ इम एणेप्रकारे आठभेदे लोकस्थिति कही। जा वजीवाकम्मसगहिया। यावत् आकाश पइठिएवाते इत्यादि जीवकर्मे संग्रह्या एतला लगे कहवो, लोकस्थिति अधिकारथीज कहे—अत्थिणभंतेजीवा

यद्युति ॥ अन्योन्य जीवाः पुद्गलानां पुद्गलाश्च जीवानां सम्बद्धा इत्यर्थः कथं बद्धा इत्याह ॥ अण्णमण्णपुट्ठा ॥ पूर्वं स्पर्शनामात्रेणा न्योन्य स्पृष्टा स तो न्योन्य बद्धा गाढतरं सम्बद्धा इत्यर्थः ॥ अण्णमण्णओगाढत्ति ॥ परस्परेण लोलीभावगता अन्योन्य स्नेहप्रतिबद्धा इत्यत्र रागादिरूपः स्नेहः यदाह स्नेहाभ्यक्तशरीर स्यरेणुमाश्लिष्यते यथा गात्रं । रागद्वेषक्लिन्न स्यकर्मबन्धो भवत्येवमिति ॥१॥ अतएव ॥ अण्णमण्णघडत्ताए ति ॥ अन्योन्य घटासमुदायो

वाय पोग्गलाय अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा अण्णमण्णओगाढा अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा अण्णमण्णघडत्ता
ए चिठंति ? हंतात्थि । सेकेणठेणभंते ! जाव चिठंति , गोयमा ! सेजहानामए हरदेसिया पुण्णे पुण्णप्प

पोगमाणबोसमाणाद्य ॥ छे अथवाप्रकार हेभगवन् । जीव अने कर्म शरीरादिपुद्गल अपुन माहोमाहि बांध्या जीव पुद्गलने पुद्गल जीवने । अण्णमण्णपुट्ठा । माहोमाहि अणगाम अफर्शे फरस्या तिवार पछे । अण्णमण्णओगाढा अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा । माहोमांहि आगाढा लोलीभावे मिल्या खीर नीरनी परे माहोमाहि स्नेह रागादिके बांध्या जिम शरीर चोपड्या रेणु विलगे तिम । अण्णमण्णघडत्ताएचिट्ठंति । माहोमाहि समुदायभावे करी रहे इतिप्र श्न उत्तर । हंतात्थि । हां गौतम सर्व तिमजीवछे । सेकेणट्ठेणभंतेजावचिट्ठति । गौतम कहे—तेस्ये कारणे हेभगवन् ! जीव अने पुद्गलसमुदायभावे करी रहे यावत् एतलासमे कहयो इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सेजहानामए हरदेसियापुण्णे । हेगौतम ! ते यथादृष्टांते, नामए इतिवाक्यालंकारे, जिम कोई द्रहपाणी भर्या । पुण्णप्पमाणेसाइमाणे । पूरी भर्या समान अथवा पाणीमे भर्या अघटतां उल्लासपामतो तथा वेहमो । वोसहमाणे । असना मट घडपरिसेतसिट्ठरदसि । अव काल । दिवे अथवाप्रकारे, ते भर्या द्रहने अनतर बाहएक पुरुष तेद्रहनेविषे । एगंमहनावसदासवं । एक महती माटी नाव, पणि ते केहवीछे, नावे सर्वकेछेद् पांणी आवअने ते सहितछे । सतछिदृसमहेल्या । मोटाछेद तिणेसहित एहवी नावेकरी तेपाणी म गावे प्रवेशकरे । सेणुणं गोयमा सावाता । तेजिवे हेगौतम ! तेनावा । तेछिदासवदारेहि । तिहे आश्रवद्वार छिद्रेकरी । आपूरमाणी पुण्णा २ । जसे

वेणान्न न्योन्यघग्ना स्नह्नायम्नता तया ऽन्योन्यघटतया ॥ हरणमियत्ति ॥ ह्रदो नद स्या द्रुवेत् ॥ पुखेत्ति ॥ घृतो अलस्य स किञ्चित् पूनोपि ग्यग्रहारत स्याग्नमात्र ॥ पुमप्पमाणेति ॥ पूर्णप्रमाणः पूस्तदा अलेना स्मनो मान यस्य सपूर्णोत्तमान ॥ वोलट्टमाणेति ॥ व्यपलोटयन् मतिश्र मनरणा पञ्चमामजमइत्ययः ॥ वोसट्टमाणेति ॥ असमाघुर्योदेव विकसन् स्फारीभवन् वहुमामइत्यर्थः ॥ समभरघडत्ताएत्ति ॥ समो मविषमो घ ट्रेकन्न ममामितत्यन भरो अलसमुदायो यत्र स समभरः सर्वथा भृतोवा समभर समशब्दस्य सर्वशब्दार्थत्वात् समभर श्चासौ घटश्चेति स माम समभरघटश्च समभरघट स्तद्भावस्तता तया समभरघटतया सर्वथाभृतघटाकारतयत्यर्थः ॥ अहेर्यात्ति ॥ अहेअस्त्रोऽर्थार्थः अथशब्दसा

माणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताएचिट्ठइ । ग्रहेणकेइपुरिसे तंसिहरदंसि एगंमहंनाव सदासव सय च्छिदृ नंगाहेज्जा सेणूण गोयमा ! सानावा तेहिंआसवदारेहि आपूरमाणी २ पुणा पुणप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताएचिट्ठइ ? हंताचिट्ठइ । सेतेणट्ठेण गोयमा ! अत्थिण जीवाय जाय चिट्ठंति । अत्थिणभंते ! सदासमिय सुहुमेसिणेहकाये पवडइ ? हंताअत्थि । सेभंते ! किंउड्ढेपवडइ अहेपवडइ ति

करो भरतो थको २ पूणपाव । पुणप्पमाणा । बगार पाणीकरीऊनमथी । वोलट्टमाणा । तिहां पाणी उछासपामेछे । वोसट्टमाणा । मस्ताता पाणी भ नरना एतदो गावछे । समभरघडत्ताएचिट्ठति । इह घेपम्याघडो पाणीभर्यो जिम तलेवैसे तिम ते नावा पाणीनी भरीयकी पाणीमाहि रहि, तियारे गोतम कहेइ—हंताचिट्ठति । हां भगवन् रहे । सेतेणट्ठेणं गोयमा । भगवंतकहे ते तेणे अर्थ हेगोतम ! अत्थिणं जीवायजावचिट्ठति । अस्ति छे जीवोवा ग्गानजावे जोव घने पद्गल माहमाहे एतलामने कहवा । अत्थिणभंतेसदासमित । वलीयोतमस्वामि तिनेविपेज कहेछे—अस्ति छे हेभगवन् ! सदा सवदाका म प्रमाणमित मगणी अत्यन्तेविषे । सहमेसिणेहपवडइ । सूक्ष्मपाणी घोस ध्रपकाय विशेष हस्य, पडेछे इतिमग्न, उत्तर । हंताअत्थि । सेभंतेकिंउड्ढेपव डइ । हांगोतम पडेइ, वली गोतम कहेछे—ते हेभगवन् ! स्पाटमा वेताय्यादि पवतनेविषे पडेछे । अहेपवडइ । अधोलोके अधोग्रामादिकमेविषे

नन्तपार्यां यमिति वाक्यालङ्कारे ॥ मइति ॥ महतीं ॥ सयामवति ॥ पाग्रवती प हरति अस ये से पाम्रवाः, सूत्मरन्ध्राणि सन्तो विद्यना माः सदाया; सयदा ज्ञातचक्रावा; पायवा यस्रां सा सदामवा इत सा एवं ॥ सयच्चिइ ॥ नयर छिद्र स्महतरं रन्ध्रम् ॥ छुमाहेत्ताति ॥ पयगा इये रमवअयेत् ॥ पासवदारेहिति ॥ पाप्रवचिर्द्रैः ॥ पापूरमावीति ॥ पापूयमावा असनेतिशेप, वह क्रियचन माजीत्स्ये ॥ पुयेत्यादि ॥ माम्व मयरं ॥ योसहमावाइत्यासौ पद्दै रर्मविसेपणस्तो—वोसहमावा घतासती या सर्व्वैव भिमज्वति साध्यते ॥ समजरपभताप्रसि ॥ प्रदक्षिसमजरघ टवत् प्रहस्या घस्त्योदवेन सह तिष्ठतीत्यर्थः । यथा—नीय प्रदोपप पान्योन्यावगाहेन वर्तते एव जीयाच पुद्गलाश्चेति भावना, लोकस्थितावेवे दमाइ ॥ पत्यीत्यादि ॥ सदर सवदा ॥ सामियत्ति ॥ षपरिमाणं नवादराप्कायव दपरिमितमपि, अथवा सदेति सवतुषु समितमिति, रात्री दिवसस्य पूर्वापरयोः प्रहरयो सत्रापि कालस्य स्निग्धेतरभाव मपेक्ष्य बहुस्व मल्पस्व च्चावसेयमिति यदाह—पढमचरिमाउसिसिरे गिम्हेमद्ध तुसामिवज्जेत्ता । पायंठवेसिविसेसा हरक्खपरिणावसेया ॥ १ ॥ सपितपाय स्पाहि नं स्थापयेत् घ्रादादिरेवायोपसि सूक्ष्मः स्नेहकायइति मप्काय विशेषहत्यथः ॥ उम्हेति ॥ ऊर्ध्वलोके वर्तुलवैताद्यादिषु ॥ पहेति ॥ अधोलोकग्रामेषु ॥ तिरियंति ॥ तिर्यग्लोके ॥ दोहकालचिठइत्ति ॥ तडागादिषु

रिएपयकइ ? गोयमा ! उड्ढेविपयकइ अहेविपयकइ तिरिएविपयकइ जहासे बादरे आउयाए अन्नमन्नसमा उत्ते चिरंपि दीहकाल चिठइ , तहाणसेवि नोइणठेसमठे सेणखिप्पामेवविद्धंसमागच्छइ सेवन्नते भतेत्ति ॥

पडे । तिरिएयवडइ । पथवा तिरिछा भाजनेविषे पडे इतिमञ्च उत्तर । गोयमा उड्ढेविपयवडइ । हेगौतम ! ऊर्ध्वलोकभांविषे पवि पडेछे । अहेविपयवडइ । पधो भाजनेविषे पवि पडेछे । तिरिएविपयवडइ । तिरिछालोकविषे पवि पडछे । जहासेबादरे पाउयाए । जिम तेबादर अपकाय सेहमा पांगे सरोवरादि भरा ते अपकाय । पन्नमन्नसमाउत्ते । मांहोमांहि मिलतावका । चिरंपिदोहकालचिठइ । चिर दीर्घकालप्रपि रहे तडागादिकना पूरपवो । तहा नसेवि । तिमसूक्ष्मपोस पवि पवोकाभरडे इतिप्रश्न भगवंतकहे—नोइणठेसमठे । एमव समवगवो युक्तपवो । सेणखिप्पामेवविद्धंसमागच्छइ । ते वताखा

॥ अथ सप्तम आरभ्यते तस्य चे वसम्बन्धी

स्यात् ॥ तिक्कममागच्छइति ॥ व्याख्या तस्य ॥ इति प्रथमशतेषष्ठ उद्देशः ॥ ६

निःक्रमागच्छती सूत्र मा गिरतुतद्विषय उत्पादोऽभिधीयते अथवा लोकस्थितिः प्रागुक्ता इहापि सैव, तथा नरइएति यदुक्त सप्त

इस्या आया यमरायात सिद्धोऽचतइति तत्रादिसूत्र ॥ नेरइएणंभंते । नेरइएसुउववज्जमाणेति ॥ ननू त्पद्यमानएव कथं नारकइति व्यपदिश्यत

मृत्पन्नस्या तिर्यगादित्वात् ? इत्यत्रोच्यते उत्पद्यमान उत्पन्नएव तदायुष्कोदया द्वन्यथातिर्यगाद्यायुष्काभावान्नारकायुष्कोदयेपि यदि नारको न

मी नरन्य आमाश्रिति ॥ किन्देसेणदेसंउववज्जइति ॥ देसेनत्र २ यदुत्पादन प्रवृत्त तद्देशेनदेशं, स्वादसत्वाद्या व्ययीभावप्रतिरूपः समास एवा

मुत्तरत्रापि तत्र जीव बिं रस्तेन स्वकीयावयवेन दर्शन नारकावयविनो शतयो त्पद्यते अथवा दर्शन देशमाश्रित्यो त्पाद्यन्वे तिष्ठेप , एव मन्य

गापि तथा ॥ देसेणसव्वति ॥ देसेनच सर्वेणच परमवृत्त सद्देशन सथ तत्र दर्शन स्वावयवेन सर्वतः सर्वात्मना नारकावयवितयो त्पद्यत इत्यथः

पढमसए छठो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेणं देस

नहारे पाक उत्तारना विध्वंसपाम तेहना निरुप्तो सप्तमाठ अ जावना विसयमाव गोतम कहेले—सेवभंते २ त्ति । तइत्ति ते भगवन् ! तुम्हे व

य तेमज तेमज्ञ पण्णाग्रो । पढमसयस्सछठ्ठोउदेसो । एपछिला शतकनो छठ्ठा उद्देशानो विवरण थयो ॥ ६ ॥ हिवे सातमो उ

इस्या मारंभियेठे तेहना एमअव पाछिला उद्देशानेविषे विध्वंसतो वार्त्ताकहो, इहातो तेहथी विपरीत उपजवानो वातकहेछे—नेरइयाणंभंते नेरइए

सउववज्जमाणे । नारको हेभगवन् ! नारकोनेविषे उपजवा मांडोवकी इहाँ कारण पूछवे उपजतोथकोज नारको किमकहीये उपजनारको तेमा

हे तिर्यंचादिकनो परे तिहां उत्तर उपजवामांडयो ते उपनोज कहीये तेहना आउखाना उदयथको अन्यथा तिर्यंचादि आउखाना अभावथको मा

रकना आउखाना उदयथा, पनि जो नारक नकहीये ते तेहथकी योजोकुण कहीये । किंदेसेणंदेसंउववज्जइ । योवनोभंग नरकनोभम तिहांयोपवे

पाताने देसे करी पयवे करी नारकाने परयवपणे उपजे ए प्रथमभंगो १ देसेणसव्वंउववज्जइ । योवनोभम नरकना सव पतले योवनो पयवयमाण अ

भाशेरित। एमर्वेन सर्वात्मना देशतो नारकायततयो त्पद्यते अथवा सर्वेण सर्वात्मना सवतो नारकतयति प्रश्न अत्रोत्तर न देशेन देशतयो त्पद्यते यतो न परिणामिकारणावयवेन कार्यावयवा निवर्त्यते तन्तुना पटाप्रतियन्तुपटप्रदेशावत् यथाहि—पटदेशभूतेन तन्तुना पटाप्रतिबद्धः पटदेशो न नि वर्त्यते, तथा पूर्वावयविप्रतिबद्धेन तद्देशेनोत्तरावयविदेशो न निवर्त्यत इतिभावः तथा न देशेन सवतयो त्पद्यते अपरिपूर्णकारणत्वा तन्तुना पटइवेति, तथा न सर्वेण देशतयो त्पद्यते सम्पूर्णपरिणामिकारणत्वा त्समस्तपटकारणैः पटैकदेशवत् सर्वेणतु सर्वं उत्पद्यते पूर्णकारणसमवायात् पटव दितिचूर्णिव्याख्या टीकाकार स्त्वेवमाह—कि मवास्थितएव जीवो देशे मपनीय यत्रोत्पत्तव्य तत्र देशत उत्पद्यते अथवा देशेन सर्वत उत्पद्यते अथवा सर्वात्मना यत्रो त्पत्तव्य तस्य देश उत्पद्यते अथवा सर्वात्मना सर्वत्रेति एतेषु पाद्यात्यभङ्गौ ग्राह्यौ यत· सर्वेण सर्वात्मप्रदेशव्यापारेण लिकामती यत्रो त्पत्तव्य तस्य देशउत्पद्यते तद्देशेन उत्पत्तिस्थानदेशस्यैव व्याप्तत्वात् कन्दुकगतौवा सर्वेण सर्वतो त्पद्यते पिपुष्टेव पूर्वस्थानमिति प्रकृत टीकाकारव्याख्यानं वाक्यान्तरविषयमिति उत्पादे चाहारक इत्याहारसूत्र। तत्र देशेन देश

उयवज्जइ १ देसेण सव्वं उववज्जइ २ सव्वेण देसं उववज्जइ ३ सव्वेण सव्वं उववज्जइ ? ४ गोयमा ! नो देसेण देसं उववज्जइ १ नो देसेण सव्वं उववज्जइ २ नो सव्वेणं देसं उववज्जइ ३ सव्वेण सव्वं उववज्जइ ४ जहा नेरइए एवं जाव वेमाणिए १ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं देसेण आहारेइ देसेण सव्वं आ

मे नरक भवपणा उपजे। माविबदेस उववज्जइ। भवश जीव सगभा नरकनायपणे तेहपणे उपजे एकोजोभांगो १। सव्वेणसव्वंउववज्जइ। जीवसव नरकना पत्पत्तिस्थान सव तेहपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोदेसेणदेसंउववज्जइ नोसव्वेणंदेसंउववज्जइ। हेगोतम ! जीवने अवयवैकरी नारकने अवयवैकरी उपजेनही १। जीवसव पणे नारकने देसपणे उपजे नही १। सव्वेणंसव्वंउववज्जइ। जीवसव पणे नारकने सर्वपणे उपजे ४। जहानेरइए। जिम नारकी कह्या। एवंजाववेमाणिए। १। इमहीज यावत् वैमानिक पर्यंत चउवीस दंडक कहवा।१।वलीगोतमपूछेछे—नेरइएणभंते नेरइ

हारेइ सव्वेण देसं आहारेइ सव्वेण सव्वं आहारेइ ? गोयमा ! नो देसेण देसं आहारेइ नो देसेण सव्वं आहारेइ सव्वेणवा देसं आहारेइ सव्वेणवा सव्वं आहारेइ एवंजाववेमाणिए २ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं उव्वट्टइ जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्टमाणेवि दंडगो भाणियव्वो ॥ नेरइएणं भंते !

नम उपजमान । नारकी हेभगवन् । नारकीमेविषे उपजमांथा । किदेसेण देसेमाहारेइ । तेथ्युं जीवदेसेकरी आहार करवायोग्य, जेआहार तेह ना देस आहारे १ । देसेनसव्वमाहारेइ । अथवा जीवदेसेकरी सव आहारे २ । सव्वेणदेसमाहारेइ । अथवा जीव सव आहारनो देस आहारे ३ । सव्वेणसव्वमाहारेइ । अथवा जीव सव आहारना सव आहारे ४ । गोयमा नोदेसेणदेसमाहारेइ । हेगोतम ! जीव देसेकरी आहारना योग्य जेआहा र न देसेंपणे आहारेनही । नोदेसेणसव्वमाहारेइ । जीव देसेकरी आहार सव आहारे नही २ । सव्वेणवा देसमाहारेइ । जीव जेसमयनेविषे उपजे तेहथी पहेलादिसमय एतले बीजे समये सव आत्मप्रदेशेकरी जेतला एक आहार पहेलाप्रवेशनो जेतला एकमें मूक्ये द्रष्टांत कहेछे—तपताविकागत तेल आवक्रियावत पहेलाजी परे एतलामाटेज कहीये देसे आहारे । सव्वेणवासव्व आहारेइ । जीव सव आत्मप्रदेशेकरी उत्पत्तिकाले आहारपुद्गल सव एहज समयजीव तेनकरो कडाहीमांहि पहिला समये पूडली पड्यो तेल सवपहे परे सहेतलो तिमजीव पणि आपणा एतले जीभाव जीव पहिलेसमये उत्पत्तिओ सव आहार पछे पछिमे समय आहएज ग्रहे आहएज मूके । एवंजाववेमाणिए २ । इम यावत् वैमानिकताइ चउवीसदंडक कहवा, उपज्या पछे आहार तेनेकरो सहितएज दंडकज्यो । हिवे कहिया ते आहार सहितकहेछे—नेरइयाणंभंते नेरइएहितोउव्वट्टमाणे । नारकी हेभगवन् । नारकी थको निकलतोथको । किदेसेणदेसमउव्वट्टइ । प्रश्नउत्तर जीव देसेकरी पने नरकावासमांनो देसनाजो नीकलेछे इत्यादि । जहाउववज्जमाणे । जिमपूर्वे उपजतांथका आलापा कह्या तिमपाछा कहिया मांथा । तहेवउव्वट्टमाणेवि । तिहां पनितिमज कहवो । दंडगोभाणियव्वा । एदंडक सरीखा कहवा । २ । नेरइएणंभंते नारकपत्यंता । वहतमानन आहार पूछे—नारकी हेभगवन् । नारकीयथको । उव्वट्टमाणेकिंदेसेणदेसमाहारेइ । उव्वट्टमाण व

मिति प्रागमदशीना व्यवहारमृष्ट्यदेश मित्येव गमनीय उत्तरं ॥ सव्वेणवा देसमाहारेइत्ति ॥ उत्पत्त्यनन्तरसमयेपु सर्वात्मप्रदेशे राहारपुद्गलान् कामि रादत्ते कांश्चि द्विमुञ्चति तप्ततापिकागततमयाद्यकविमोचकापूपय इत्युच्यते देशा माहारयतीति ॥ सव्वेणवा सव्वति ॥ सर्वात्मप्रदेशै रुत्पत्तिसमय आहारपुद्गला नादत्तएव प्रथमत स्नेहभृततप्ततापिकाप्रथमसमयपतितापूपव दित्युच्यते सर्वमाहारयतीति उत्पाद सदाहारेव स

नेरइएहितो उव्वट्टमाणे किं देसेण देसं आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देसं आहारेइ सव्वेणवा सव्वं आहारेइ १ एवं जाव वेमाणिया ४ ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववन्ने किं देसेणं देसं उववन्ने एसोवि तहेव जाव सव्वेणं सव्वं उववन्ने जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणेय चत्तारि दंडगा तहा उववन्ने उव्वट्टणे वि चत्तारि दंडगा जाणियव्वा, सव्वेण सव्वं उववन्ना सव्वेणवा देसं आहारेइ सव्वेण सव्वं आहारेइ एएणं अभिला

[illegible] आहारमाश्रय आहारैइ एपणि । [illegible] इम आहारेइ । निमहीज यावत् सव आहारगे आहारे । सावेबना मन आहारेइ । [illegible] आहारमय आहारै एमब पूठिनी परे कहवा । एम जावमाणिया ४ । इम यावत् वैमानिक सुधी चउवीसदंडक विस्तार यो कहवा । हिवे उपना तथा उपनाना आश्रते चारो दंडक कहे छे – नरइएणभंते नेरइएसउववन्ने । नारकी हेभगवन् । नारकीनेविषे उपनो । किंदेसेणदेसउववन्ने । तेम प्रोदृगेबरी नारकीने देशेथके उपना इत्यादि चउभंगो कहवो इतिप्रश्न । एसावितहेव । एपणि तिमहीज देसेणं देसेउववन्ने । जावसव्वेणसव्वउववन्ने । यावत् चौथोभांगो निपजवा सुधी सावस सम्बउववन्ने एभांगोलेवो । जहाउववज्जमाणे उव्वट्टमाणेयचत्तारिदंडगा । जिम उपजवामांथा १ थने तिहां आहार २ तथा चविवामांथा ३ तिहां आहार ४ एचारि दंडककह्या । तहा उववन्ने उव्वट्टणेवि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा । तिम उपना १ तथा तिहां आहार २ तथा तिहां चविया १ थने तिहां आहार २ एपणि चारि दंडकयथा, तिहां उपनो चयवा चव्यो एदंडक मेहिमे चउभंगोमाहे तीनभांगा निषेध थने चोथाभांगा सेश तेदेशवश्वेहे – सव्वेणसव्वंउववन्ने । जीवसव थमे नारकीपणि सव उपना ए १ दंडक तथा

मारम्भकमान्या मृत्तो मोत्पादप्रतिपतत्या द्वतमामकालनिर्दंगसाधम्या मोद्धसमादवतक स्तदाहारदकेन सह, तदनन्तरम्भ मोद्धत्तना ग्नुत्पमस्स म्या दित्पत्वतमाहारम्भतमा पुत्पप्रतिपत्तत्या मोहृततदाहारदफमाविति, पुस्तकान्तरेतु चत्पादतदाहारदपकानन्तर मुत्पादे सत्युत्पमः म्या न्त्युत्पतमाहारदकतो तत सूत्पादप्रतिपतत्या दुद्वर्तनामा उद्वर्तनातदाहारदपको उद्वर्तनाया म्योद्धत्तः स्या दित्युद्वृततदाहारदपक को कत्वावैतदति पर्व ताव दशानि दपकौ देगसर्वाभ्या मुत्पादादिचिन्तित मथा प्रागिरेया द्वसर्वाभ्या मुत्पादाद्येव चिन्तयन्नाह ॥ नेरह पायमित्यादि ॥ अद्धापदमिमयति ॥ यथा-देशेन मनु देशस्या द्वसत्त्व को विशेष ? उच्यते यत्र खिन्नादि रमेकधा द्वे स्वेकचैवेति उत्पत्ति गहनाप मायोपतिपूत्रिका प्रवतीति गतिमूपाधि ॥ विग्गहगइसमावन्नएति ॥ विग्रहो यक्र नात्मधाना गति विग्रहगति स्तत्र यदा वक्रेण गच्छति

येण उववणे उन्नहेयि नेयव्वं ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे किं अद्धेण अद्धं उववज्जइ अद्धेण सव्वं उववज्जइ सव्वेण अद्धं उववज्जइ सव्वेण सव्वं उववज्जइ जहा पढमिल्लेण अट्ठ दंडगा तहा अद्धेणवि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा, णवरं जहिं देसेण देसं उववज्जइ तहिं अद्धेण अद्धं उववज्जइ त्ति भाणियव्वं, एवं णा

पावार इत्यमणिये पूछिमो परे मेभाषा निर्विषमा पने मेभोमा मेवा तेदेषाछेडे—सर्वेणवारेसभाहारेर सर्वेणवासम्मभाहारेर । सर्व बोमपाहारमो देम पाहारे मवमोपपाहार मवपाहारे एमव पूछिसोपरे पूछा तेवने इहाते आमवा । एएचपभिलापेषउववसेठव्वेहपविवेतव्वं । ए इवेप्रकारैकरी जि मबेएमाग उववागेविषे कम्रा तिम वन्तामेविषे पचि वेपखावा आमवा जिमदेम भने सर्वथो पाठ भाखावा कम्रा तिम पाह भने सवधो पचि पाइ पामारा कहवा, तेहोअकहेवे—वेरएचमतेवेरएमुउववज्जमावेकिपडेषपहंउववज्जर । नारको हेभगवन् । नारकोमेविषे उपजतो थको स्युंजीव पर नारकीने पहं उपजे । पहेणसव्वउववज्जर । अथवा जीव पहं नारको सर्वदम उपजे २ । सव्वेणपहंउववज्जर । अथवा जीव पने नीरकोनो भर्द दम उपजे ३ । सव्वेणसव्वेउववज्जर । अथवा जीवसब पने नारकोमो सर्वदम उपजे ४ एहचउभंगो जाणवी । अत्रापढमिल्लेणपइदंडमातथापढेषविपइर्द

तदा विग्रहगतिसमापन्न उच्यते यविग्रहगतिसमापन्नस्तु ऋजुगतिका स्थितोवा विग्रहगतिनिषेधमात्राश्रयणा द्विविधा विग्रहगतिसमापन्नऋजुगति
काणो स्येत तदा नारकादिपदेषु नव न्या विग्रहगतिकानां च बहुत्वं यत्यति त च सा द्वासदीनामपि तेषू त्पादयवचात् टीकाकारेणतु
यदा व्यनिमायेना विग्रहगतिसमापन्न ऋजुगतिकश्च व्याख्यातइति ॥ जीवाणं भंते इत्यादि ॥ अत्र सत्र जीवाना मानन्त्या त्प्रतिसमय विग्रह
गतिमतां तन्निषेधवताम्च बहूना भावादाह ॥ विग्गहगइइत्यादि ॥ नारकाणां स्वल्पत्वेन विग्रहगतिमता कदाचि दसम्भवा त्सम्भवेपि चैकादी
नामपि तेषा भावा द्विग्रहगतिमतिषेधवताम्च सदैव बहूनां भावादाह ॥ सव्वेवितावहोज्जअविग्गहेत्यादि ॥ विकल्पत्रय, असुरादि येतदेवा तिदे

गत्त एव सव्वेवि सोलस दंडगा जाणियव्वा ॥ जीवेण भंते ! किं विग्गहगइसमावण्णए अविग्गहगइसमा
वण्ण ? गोयमा ! सिय विग्गहगइ समावण्णए सिय अविग्गहगइसमावण्णए एवं जाव वेमाणिए ॥ जीवाण

त्याभाणियवा। जिम देवेंनारो पाठहवक्या तिम नहेंकारी पणि पाठदवक कहवा इमकाई एव मूळमें तेम वने वचमांळिम्बो विशेषके विशे
इम कहीये तेमना विनभागलिम पनेअभेदडे पने पहना एवडोज भेदवाय एविशेष जाणवा। पारंअहिदेसेपदेसवन्जाइ। एतलोविशेष केमाकते
तिने हेमेनदमंडवरजाइ पवदवग्रा। नहिपढेनपढंडवज्जाइ। तेनेव्यानवे पढेनपढिवज्जाइ। इइभाणियव्वं। इम प्रकारे कहवो। एतलापद। इम
पनना भेदवे। एवमाइविमालनइइमाभाणियव्वा। इम ममार मामेदडवनिषारीने उपयोगसहित कहवा ॥ जीवेणभंतेकिविग्गहगइसमावण्णए। उप
जिवा चविवा भावेनतिपूवक हुवेत तेमाटे गतिसूत्र कहेके—एकजीव हेभगवन् ! ऋजुवांकोगतिकरी जीवपणे तिवारे विग्रहगति समापन्नकहीये। प
विग्गहगइसमावण्णए। मूलीमतिकरे जोवपणे पनवा मतिनेविषे रहावको पणि पविग्रहगति समापन्नकहीये श्यामाट इहां विग्रहगति निषेधमात्र
पाणपोजे पविगहगति समापन्नथाके, अविग्रहगतिसमापन्न कहीये ऋजुगति कहीज जीवकहीये तोमरकादि पदनेविषे सदाई पविग्रहगतिवा जो
रमा जेवकवग्र तेनदाव एकादिकना पणि नारकादि गतिनेविषे उपजवा हुवेछे तेमाटे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सियविग्गहगइसमावण्णए। केगोत

न्त भाइ ॥ एवमित्यादि ॥ जीवानां निर्विशेषाणा मेकेन्द्रियाणा ञ्चोक्तयुक्त्या विग्रहगतिसमापन्नत्वे तत्प्रतिषेधेच बहुत्वमेवेति न भङ्गकम, तद

न्ते ! किं विग्गहगइ समावन्नगा अविग्गहगइ समावन्नगा ? गोयमा ! विग्गहगइ समावन्नगावि अ विग्गहगइ समावन्नगावि ॥ नेरइयाण न्ते ! किं विग्गहगइ समावन्नगा अविग्गहगइ समावन्नगा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा, अविग्गहगइ समावन्नगा अहवा अविग्गहगइ समावन्नगाय विग्गहगइ समावन्नगाय अहवा अविग्गहगइ समावन्नगाय विग्गहगइ समावन्नगाय ३ एव जीव एगिं दियवज्जो ति यणगेय २

म । किवारे केजीव विगृहगति सयुक्त थाइ १ । नियमविग्गहगइसमावन्नए । थमेकिवारे केजीव थविगृहगति सयुक्तथाय २ । एवजावमाणिया । इ म नारकी थादिदेइ यावत् वेमानिकताइ चउवीस दंडक कहवा । हिवे बहुवचन कहेछे—जीवेणभंतेकिविग्गहगइसमावन्नगा । घणाजीव घणाकाल थारे वेमगवन् ! व्यविगृहगति सहितथाय १ थथवा । थविग्गहगइसमावन्नगा । थविगृहगति सयुक्तजीव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा विग्गहगइसमावन्न गावि । हेगोतम ! जीव घनताछे, तेमाटे प्रतिसमये विगृहगतिवंत पणि घणां पामिये २ । थविग्गहगइसमावन्नगावि । थविगृहगतिवंत पणि प्रतिस मये घणां पामिये एथादिना संभवनहीं । गौतमपूछेछे—नेरइयाणभंतेकिविग्गहगइसमावन्नगा थविग्गहगइसमावन्नगा । नारकी जीव घणा थाश्रयिने हे भगवन् ! व्यविगृहगति संयुक्तछे भथवो मथवरजे विशेषि वांकोगते जाय १ थथवा तेहथी विपरीतते थविगृह ऋजुगतिजीव छे थथवा एकोजीवको जीवते थविगृहगतिवंत थछेये इतिप्रश्न उत्तर । गोयमासव्वेविताव होज्जा थविग्गहगइसमावन्नगा । हेगोतम ! नारकीनेविषे थविगृहगतिवंतजीव सदा ह घणाहोय तेमाटे थविगृहगतिवंतनेविषे वत्तवंतहोयछोय थने विगृहगतिवंत थोडा तेमाटे किवारे ते विगृहगतिवंत जीवना थसंभवहोयछे थथ वा एकेता एकादि थविछुवे तेमाटे विगृहगति सयुक्त जीवनेविषे एकवचन थविछुवे तेमाटेकहेछे—समस्ताजीवछोय थविगृहगति सयुक्त थथवा । थथ वा थविग्गहगइसमावन्नगाय विग्गहगइसमावन्नेय । थविगृहगतिवंतघणा थने विगृहगतिवंत एक हता थविगृहगतिवंत नारकी सदाहोयछे थनेविगृ

प्यपुत्र त्रयमवेति ॥ तियर्जमोत्ति ॥ त्रिकरूपो भङ्ग स्तिरुमङ्गो जङ्गत्रयमित्यर्थः गत्यधिकारा च्यवनसूत्रं ॥ महर्द्धिरुत्ति ॥ महर्द्धिको विमानपरि
वाराद्यपेक्षया ॥ महज्जुइरुत्ति ॥ महाद्युतिकः शरीराभरणाद्यपेक्षया ॥ महब्बलेति ॥ महाबलः शारीरमात्रापेक्षया ॥ महाजसत्ति ॥ महायशाः यश
स्मरख्यातिः ॥ महेसक्खत्ति ॥ महेशो महेश्वर इत्याख्या भिधानं यस्यासौ महेशाख्यः ॥ महासोक्खत्ति क्वचित् ॥ महाणुभावेत्ति ॥ महानुभावो
विशिष्टवैक्रियादिकरणाचिन्त्यसामर्थ्यः ॥ अविउक्कंतियं चयमाणेत्ति ॥ च्यवमानता जिसोत्पत्तिसमये प्युच्यत इत्यतआह च्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति स्तन्निषेधा
दव्युत्क्रान्तिक अथवा व्युत्क्रान्ति र्मरणंतन्निषेधा दव्युत्क्रान्तिकं तद्यथा भवत्येव च्यवमानो जीवत्येव मरणकालादित्यर्थः ॥ अविउक्कंतियं चयमाणेत्ति
मायत्ति क्वचिद्दृश्यते तत्र चय शरीर ॥ चयमाणेत्ति ॥ त्यजन् ॥ किंचिकालंति ॥ कियन्त मपि कालं यावत् आहारय दितियोगः, कुत इत्याह
ह्रीप्रत्ययं लज्जानिमित्तं सवि च्यवनसमये ऽनुपक्रान्तएव पत्र्य स्युत्पत्तिस्थान मात्मनो, वृणा च तदेवमवलिसकृत्स पुरुषपरिभुज्यमानस्त्रीगर्भाशय

यन्नगो ॥ देवेण भंते ! महड्डिए महज्जुइए महब्बले महाजसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कंतियं चयमाणे कि

रमतिर्यगजीव एवादिपविरुरे तेमाटे विग्रहगतिवत एकभविकुवे एहनो पुत्रपूर्वेलिखीयवे । पवमाधविभ्रमसमावन्नगाव मिश्रसमतिसमावन्नगा
व । अथवा अविग्रहगतिर्यंत यथावने अने विग्रहगतिर्यंत अविषघाहोय ए तोनभांगा कपवे असुरादिकस्तवनेविये पवि इमहीज भांगाकुवे ते देखा
डेवे—एवजोवेइ मिंदियवज्जारवभंगो । इम जीवने एतवे विग्रहरचितजीवने तथा एकेंद्रीने ए वेऊनेविये विग्रहगतिर्यंत तथा अविग्रहगतिर्यंत घणाहो
यवे, तेमटे तोनभांगा नकुवे, एतलामाटे जीव एकेंद्रीवर्जी बीजा सर्वदंडकनेविये तोनभांगाकुवे मतिमा अधिकारथी च्यवनसूत्रकहेवे—देवेणमंतेम
हड्डिए । देव कयाम्यासंकारे करीयन् । विमानपरिवारनी अपेक्षायेकरी । महज्जुइए । महाविक शरीर आभरणनी अपेक्षाये कांतियंत । महब्बल ।
शरीरनी अपेक्षाये महाबलवंत । महाजसे । मोटा यशवंत मोटीप्रसिद्धवे । महेसक्खे । महाईश्वरवे अथवा मोटा सुखनाधणीवे । महाणुभावे । महा
न वैक्रियादि करवानेविये समर्थ । अविउक्कंतियंचयमाणेकिंचिकालंहिरवत्तियं । देवता मरवानेविये शरीरछांडता एतले जीवतोयको पवि मरणका

रूप जिहृति क्रियाच माहारयतीति यथा जुगुप्साप्रत्ययं कुत्सानिमित्त मुकाद् तत्पत्तिकारणस्य कुत्साहतुत्वात् ॥ परीसहवत्तियत्ति ॥ इह प्र क्रमा त्परीषहभग्देना रतिपरीषहो पाह्य सत यारतिपरीषहनिमित्तं दृश्यते चारतिप्रत्ययमाश्रोक्ष्य माहारयहणवैसुख्यमिति आहार समस्ता त पाविधपुद्गलोपादानकूप ॥ भहेयति ॥ भय सत्क्षादिदकानन्तर माहारयति मुभुक्षावेदनीयस्य चिर सोढु मशक्यत्वादिति ॥ माहारिज्जमाणे माहारिज्जत्यादौ भावार्थः प्रथमसूत्र इनैव क्रियाकालनिष्ठाकालयो रभेदाभिधानेन तदीयाहारकालस्या स्पतोक्ता तदनन्तर ॥ पहीणेयमा उप्पनवहति ॥ च मनुजये प्रहीण प्रहीणंवा आयु भवति ततय यत्रोत्पद्यते मनुजत्वादौ ॥ तमाउयति ॥ तस्य मनुजत्वादे रायु स्तदायुः ॥ प्रतिसंवदय त्यनुभवतीति ॥ तिरिक्खजोणियाउयवेत्यादौ ॥ दवनारकायुषोः प्रतिषेधो देवस्य तत्रानुत्पादादिति उत्पत्त्यधिकारा विदमाह ॥

चिकाल हिरयत्तिय दुगछावत्तिय परिसहवत्तिय आहार नोआहारेइ आहेण आहारेइ आहारेज्जमाणे आहा रिए परिणामिज्जमाणे परिणामिए पहीणेय आउएनवइ जत्थउववज्जइ तमाउय पडिसवेइ त तिरिक्ख

भनेविषे केतमा णकाल भाहारलेवेंनहीं इतियाम भामाटे तकहेछे—सथा प्रतव पापथी उत्पत्तिस्थान देषी, मातापितानां भीकालांसामक ना भी तिहांमत्त्ता ऊपजे शक्रभादि पथम उत्पत्ति कारण देषी। दुमच्छावत्तिय। दुगछा भावे। परीसहवत्तियमाहारमोपाहारेइ। इहां परीसह शब्दे भरति परिसहमेंजा तिहारे भरतिपरीसह निमित्त भाहार गृहण नकरे भाहारभनेवरो तथा पुद्गल मृहणरूप। भवेर्यमाहारेइ माहारिज्जमाणेया हारिए। पछे भत्यनमनेभमादिक थयांतरे माहारमेय वुभुक्षा वेदनीयमा चिरकाल मकया भसमथ पर्यापनी माहारिज्जमाणे इत्यादिकना माग य पहिमा मूत्रनो परेसामना एतले क्रियाकाम भने निष्ठाकाले भभेदकहवे, तेहनो भाहारकालनी भस्पताकही। परिणामिज्जमाणेपरिणामिए। परिणमवामांड्या ते पणिम्या कहीये। पहिणेयभाउएणवउववज्जइ। तिहारपछे भहोने भयोणभायुषे तिहारपछे जिहां मनुष्यादिकनेविषे जपजे तमाउयपडिसवेदे। तत्रहा ते मनुष्यादिकना भाउषा प्रते भनुभवे भागवे ते कहेछे—तिरिक्खजोणियाउयवा। देवभने देवता नारकने भाउखे न

जीवेणमित्यादि ॥ गब्भंवक्कममाणेत्ति ॥ गर्भे व्युत्क्रामन् गर्भे उत्पद्यमान इत्यर्थः ॥ दव्विंदियाइंति ॥ निर्वृत्त्युपकरणलक्षणानि तानिहीन्द्रियपर्याप्तौ सत्यां भाविष्यन्ती त्यनीन्द्रिय उत्पद्यते ॥ भाविंदियाइंति ॥ लब्ध्युपयोगलक्षणानि तानिच संसारिकः सर्वावस्थाभावीनीति ॥ ससरीरित्ति ॥ सह शरीरेणेति सशरीरी इन् समासान्तभावात् ॥ असरीरित्ति ॥ शरीरवान् शरीरी तन्निषेधा दशरीरी ॥ वक्कमइत्ति ॥ व्युत्क्रामतिउत्पद्यत इत्यर्थः ॥

जोणियाउयत्ता मणुस्साउयत्ता ? हंता गोयमा ! देवेण महड्ढिए जाव मणुस्साउयत्ता । जीवेण भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ अणिंदिए वक्कमइ ? गोयमा ! सियसइंदिए वक्कमइ सिय अणिंदिए वक्कमइ । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ सेतेण ट्ठेणं । जीवेण भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरीवक्कमइ असरीरी वक्कमइ ? गोयमा ! सियससरीरी व क्कमइ सियअसरीरी वक्कमइ । सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! उरालियवेउव्विय आहारयाइं पडुच्च असरीरी वक्कम

पजे तेमाटे एवाविध तिर्यचना आउखा भामवे तथा । मणुस्साउयत्ता । मनुष्यना आउखा मनुभवे इतिमश्न उत्तर । हंता गोयमा । हेगौतम ! देवेयमा हिडिए जावमणुस्साउयत्ता । देव महर्द्धिक यावत् शब्दे मनुष्यना आउखा मनुभवे भोगवे इत्यर्थ । जीवेणमतेगब्भवक्कममाणे । उपजिवाना अधिकारथ की एकवेर्वे—जीवहेभगवन् ! गर्भनेविषे उपजतो थको । किंसइंदिएवक्कमइ । पं सइंदी इंद्रियसहित उपजे अथवा । अणिंदिएवक्कमइ । अनिंद्रिय इंद्री रहित उपजे इतिमश्न उत्तर । गोयमा सियसइंदिवक्कमइ । हे गौतम ! कदाचित् इंद्रीसहित उपजे । सियअणिंदिएवक्कमइ सेकेणट्ठेणभंते । कदाचित् इं द्रियरहित उपजे तिवारे गौतमकहे तेस्यामाटे हेभगवन् ! इमकहु इतिमश्न उत्तर । गोयमा दव्विंदियाइंपडुच्चअणिंदिएवक्कमइ । हेगौतम ! निर्वृत्त्युपकर ण समण सयमरसमर्याय वह यातेंद्रिय ते पर्याप्त थया हुवे ते इन्द्रेशो कहीये,ताहिंरी भाषी इंद्रिय रहितउपजे । भाविंदियाइंपडुच्चसइंदिएवक्कमइ सेतेणट्ठेणं गोयमा । लब्ध उपयोग लक्षण भंतगत भावरूप इंद्रिय संसारीजीवने सब भवस्थानेविषे हुवे ते भावी इंद्रियसहित उपजे भगवत कहेछे—

तप्पढमयाएत्ति ॥ तस्य गर्भव्युत्क्रमणस्य प्रथमता तत्प्रथमता तया, किमिति प्राकृत्वा स्वयं ॥ माउओयंति ॥ मातुरोजो जनन्या आर्तवं शोणित मित्यर्थ ॥ पिउसुक्कंति ॥ पितुः शुक्रं इह यदितिशेष ॥ तंति ॥ आहार मितियोग ॥ तदुभयसंसिठ्ठंति ॥ तयो रुभयं द्वयं तदुभय तच्च त त्स सिष्टंच संसृष्टया ; संसृष्टवत् तदुभयसंसिठ्ठं तदुभयसंसृष्टवा ॥ जसेत्ति ॥ या तस्य गर्भसत्त्वस्य माता ॥ रसविगईउत्ति ॥ रसरूपा विकृती दुग्धाद्या

इ तेयाकम्माइ पडुच्च ससरीरी वक्कमइ सेतेणठेणं गोयमा ! जीवेणं भंते ! गब्भंवक्कममाणे तप्पढमयाए कि माहारमाहारेइ ? गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं त तदुभयसंसिठ्ठं कलुसकिव्विसं तप्पढमयाए आहार माहारेइ । जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे कि माहारमाहारेइ ? गोयमा ! जसे मायानाणाविहाओ रसविगइओ

तवे आरवे हेगौतम । इत्यादि पूर्ववत्, वलीगौतमपूछेछे—जावयर्भमांहि अवतरमाणे । जीव हेभगवन् । गर्भनेविषे उपजतो थको । किंससरीरीवक्कमइ । सू शरीर सहित उपजे अवतरे अथवा । असरीरीवक्कमइ । शरीररहित उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियससरीरीवक्कमइ । हेगौतम ! कदाचित् श रीर सहित उपजे अवतरे । सियअसरीरीवक्कमइ । कदाचित् शरीररहित अवतरे गौतमपूछेछे—सेकेणट्ठेणंभंते । तेस्यामाटे हेभगवन् । इमकहु इत्यादि पूर्ववत् उत्तर । गोयमा ओरालियवेउव्विय आहारयाइं पडुच असरीरीवक्कमइ । हेगौतम ! औदारिक वैक्रिय आहारक ए तीन शरीरनो अपेक्षाये शरी ररहित उपजे तेमाटे वाटवहेता जीवने ए तीनशरीरनो अभावछे तेमाटे असरीरीवक्कमइ । तेयाकम्माइं पडुचससरीरीवक्कमइ । तेजस कार्मणएबे शरीर जीवने संसार अवस्थानेविषे सर्वदा पि हुवेछे तेमाटे । सेतेणट्ठेणं गोयमा । तेहवे भणी हेगौतम ! इमकह्यु किवारे शरीरसहित किवारे शरीररहित उप जे वलीगौतम पूछेछे—जीवेणंभंतेगभ्भवक्कममाणेतप्पढमयाए आहार माहारेइ । जीव गर्भनेविषे हेभगवन् । गर्भनेविषे उपजतोजीवजे गर्भनेविषे उप जतो तेपहेलोज प्रथमसमे आहारे गृहेछे इमवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा माओओय । हेगौतम ! माताने ऋतुसंबंधीरुधिर । पिउसुक्कं । पिता नो शुक्र । तंतदुभयसंसिठ्ठंकलुसकिव्विसंतप्पढमयाए आहारमाहारेइ । ते आहारते माताने ऋतुसंबंधी रुधिर, पितानोवीर्य, ते बेउ मांहोमांहि

रसविकारा सा ॥ तदेगदेसेणं ॥ तासां रसविकृतीना मेकदेश सर्वात्मना, सोमसह छेत्र आहारयतीति ॥ उच्चारेइवत्ति ॥ उच्चारो विष्टा इतिरूप प्रश्नाने पाविकरप खेलो निष्ठीवन सिङ्घाणं नासिकाश्लेष्मा ॥ केसमंसुरोमनहत्ताएत्ति ॥ इह श्मश्रूणि कूर्चकेशा रोमाणि कक्षादिकेशाः ॥ सी

आहारेइ तदेगदेसेणय उयमाहारेइ। जीवस्सण भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थिउच्चारेइवा पासवणेइवा खेलेइवा सिंघाणेइवा वंतेइवा पित्तेइवा ? गोयमा ! णोइणठेसमठे, सेकेणठेण ? गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे जमाहारेइ तंचिणाइ तं० सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अठिअठिमिजकेसमंसुरोमनहत्ताए से ते

भिन्ना मलिनसहित विलिप्तरूप तेने प्रथमथी जीव एकवा आहारमते आहारेग्रहे इत्यर्थं। जीवेणभंतेगभगयसमाणेकिमाहारमाहारेइ। वली गोतमपूछेछे—जीवन हे भगवान् गर्भमांहे उपनोथको स्युं ? आहारआहारे ग्रहे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जसेमायानानाविहाओरस वइआहारेइ। हेगोतम ! जेममातजीवनी माता अनेक प्रकारनी रसरूप विकृति घृतदुग्धादि रसविकार आहारपणेकरे। तदेगदेसेणओयमाहारेइ। तिणि विकृतिना कडु एकदेश थाका तिणिमहित ओज आहारे आहारग्रहे, वलीगोतमपूछेछे—जीवस्सणंभंतेगभगयस्ससमाणस्सअत्थिउच्चारेइवा। जीव ते भगवान् हे भगवन् ! गर्भनेविषे उपनाथका मे एतावता गर्भनेविषे रह्योथकाने वडिनीतोवरे इतिरूप मलपने वा विकल्पे। पासवणेइवा। लघु नीतिमरे परिठवणकरे। खेलइवा। श्लेष्मनिर्गमन्। सिंघाणएइवा वलेइवा। नाकना लेपमनामे वमनकरे। पित्तेइवा। पित्तनामे इतिप्रश्न। भगवंतकहे छे—गोयमा णाइणठेसमठे। हेगोतम एअर्थ समर्थ नथी। सेकेणंभंतेएवंवुच्चइ। गोतमकहेछे—तेश्यामाटे हेभगवन् इमकहो गर्भगत जीवने उच्चार दिकनथी। गोयमा जीवेणंगब्भगएसमाणे जमाहारेइ। हेगोतम जीवगर्भनेविषे रह्योथका जे आहारकरे। तंचिणाइ। ते पुष्टिकरे। तंजहा सोइंदियत्ताए। ते कहेछे—श्रोत्रेंद्रियपणे कानपणे। जावफासिंदियत्ताए। यावत्शब्द चक्षुरिंद्रियपणे घ्राणेंद्रियपणे रसनेंद्रियपणे स्पर्शनेंद्रिय पणे। अठिअठिमिंज। अ स्थिहाड हाडमांहिली मींजीते चीगटपणे। केसमंसुरोमनहत्ताए। केश शिरोभूतरनाकेश श्मश्रु रोमकक्षादिकाना नखपणे पुष्टकरे एतलेजीवचरित्र

येवमित्यादि ॥ सव्वओत्ति ॥ सर्वात्मना ॥ अभिक्खणंति ॥ पुनः पुनः ॥ आहच्चत्ति ॥ कदाचित् आहारयति कदाचिन्ना हारयति तथा स्वभावत्वात् यतश्च सर्वत आहारयतीत्यादि ततो मुखेन न प्रभुः कावलिकमाहारं माहर्तुमितिभावः अथ कथंसर्वत आहारयतीत्याह ॥ माउजीवरसहरणी त्यादि ॥ रसो ह्रियते आदीयते यया सा रसहरणी नाभिनालमित्यर्थः मातृजीवस्य रसहरणी मातृजीवरसहरणी, कि मित्याह पुत्रजीवरसहर

णठेण ॥ जीवेणं भंते ! गब्भगए समाणे पभूमुहेणं कावलियआहारं आहारित्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे सम‍ट्ठे सेकेणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवेणं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ सव्वओउस्ससइ सव्वओ निस्ससइ, अभिक्खणं आहारेइ, अभिक्खणं परिणामेइ, अभिक्खणं उस्ससइ, अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ, आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ, माउजीव रसहरणीपु

मे। भंतेकहेच गायमा। तेमाटे हेगोतम जीवने गभमांहिरह्यानें उच्चारादिक नथी वलीगौतमपूछेछे—जीवगर्भगयएसमाणेपभूमुहेण। जीव हेभगव न् गभमांहिरह्यो थको समर्थछे मुखेकरी। कावलिकआहार आहारिवा। कवलाहारनो आहारलेवाने एतलेजीव गर्भमांहि थको कवलाहार लेवाने समर्थछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोइणट्ठेसमट्ठे। हेगोतम! एमनसमजवो। सेकेणट्ठेणंभंतेएवमुच्चइ। तिवारे गौतमपूछेछे—तेस्यामाटे हेभगव न्! एम कह्यु जीव कवलाहारनथी इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जीवेणंगब्भगएसमाणे। हेगोतम! जीव गर्भमांरह्योथको रसायको। सव्वओआ हारेइ। सर्वे आत्मायेंकरी आहारें। सव्वओपरिणामेइ। सर्व आत्मायेंकरी परिणमावे। सव्वओउस्ससइ। सर्व आत्मायेंकरी उसासले। सव्वओनीसस इ। सर्व आत्मायेंकरी नीसासले। अभिक्खणं आहारेइ। वारंवार आहारे। अभिक्खणं परिणामेइ। वारंवारपरिणमावे। अभिक्खणंउस्ससइ। वारंवारउ सासले। अभिक्खणनीससइ। वारंवार नीसासले। आहच्चआहारेइ कदाचित् आहारे। आहच्चपरिणामेइ। कदाचित् परिणमावे। आहच्चउस्ससइ। क दाचित् उसासे। आहच्चनीससइ। कदाचित्नीससे। माउजीवरसहरणी। मातानाजीवनी रसहरणी नाभिनाल। पुत्तजीवरसहरणी। पुत्रना जीवनी रसहर

मी पुत्रस्य रसोपादाने कारणस्था स्वयमेवमित्याह मातृजीवप्रतिबद्धा सती सा यत ॥ पुत्तजीवफुडत्ति ॥ पुत्रजीव स्पृष्टवती इदम प्रतिबद्धता गाढसम्बन्ध सद्भावात् स्पृष्टताच सम्बन्धमात्र मतद्यस्था इयथा मातृजीवरसहरणी पुत्रजीवरसहरिणीचेति द्वे नाड्यौ स स्तयो या या मा तृजीवप्रतिबद्धा पुत्रजीवस्पृष्टेति ॥ तम्हात्ति ॥ यस्मा देव तस्मात् मातृजीवप्रतिबद्धया रसहरस्या पुत्रजीवस्पृष्टमात् आहारयति ॥ अवराविय त्ति ॥ मोनियध्यते । पयासौपुष्टिमाप्नोति केदारइवकुल्ययेति ॥ १ ॥ गर्भाधिकारादवेदमाह ॥ कइणमित्यादि ॥ माइअंगत्ति॥ आर्तवविकारबहुलानीत्य

सजीअरसहरणी, माउजीअपडियद्धा पुत्तजीवफुडा, तम्हा आहारेइ तम्हा परिणामेइ, अवरावियण पु सजीयपडियद्धा माउजीवफुडा, तम्हा चिणाइ तम्हा उवचिणाइ, सेतेणट्ठेण जाय नो पभूमुहेण कावलि य आहार आहारित्तए ॥ कइणं भंते ! माइअंगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता तंजहा मंस

मी नाभिनाल । माउजीवपडिबद्धा । माताजीव प्रतिबद्ध थको । पुत्तजीवफुडा । पुत्रजीवसौं फरसी । तम्हा आहारेइ तम्हा परिणामेइ । जेकारणथी रसहरणी मातृजीव प्रतिबद्ध रसहरणीयेकरी पुत्रजीव स्पृष्ट थको आहारकरे तेमाटे तेपरिणमे । अवराविय अवरा अपि पुत्रजीव रसहरणी पणि पत्सी वपडिबद्धा । पुत्र जीवते प्रतिबद्ध थको । माउजीवफुडा । माताना जीवसौं फरसी । तम्हाचिणाइ । तिणथी शरीर । तम्हाउवचिणाइ । तिणइ शरीर पो ष्टिकरेवधारे । सेतेणट्ठेण गोयमा आवश्योपम् । तेतेणे अर्थे हेगोतम । यावत् नथी समर्थ । मुखेणकावलियआहारमाहारित्तए । मुखेंकरी कवलाहार कर वाने पनायवा मुखे कवलाहार करे नथी इत्यर्थ गर्भना अधिकारथकीज एहवू गोतमपूछे—कइणंभंतेमईयंगापण्णत्ता । केतला पदर्तितास्याल्लकारे शुभ गम् । मातानाचंग रक्तसवधी विकार बहुल कथ्या इतिमत्र उत्तर । गोयमा तओमाइयंगा पण्णत्ता तंजहा । हेगोतम ! तीन माता सबधी अंग कथ्या ते कहेछे—मंससोणिएमत्थलुंगे । मांस १ रुधिर २ मायानो मीओ अथवा भेजसादि अथवा आखेला वसगोतमपूछेके—कइणंभंतेपेइयंगा पण्णत्ता । के

य ॥ मत्थुलुगंति ॥ मस्तकभेदाय अन्यस्त्वाहुः मेदः फिप्फसादि मस्तुलुंगमिति ॥ पेइयगति ॥ पैतृकाङ्गानि शुक्रविकारबहुलानीत्यर्थः ॥ अट्ठिमिञ्जति ॥ अस्थि मध्यावयव केशादिकबहुसमानरूपत्वा देकमेव समयव्यतिरिक्तानित शुक्रशोणितयोः समविकाररूपत्वात् पितृमात्रोः साधारणानीति ॥ अम्मापइयंगंति ॥ अम्मापेइए शरीरावयवेषु शरीरोपचारात् उक्तलक्षणानिमातापितृअङ्गानीत्यर्थं आवइयसेकालंति ॥ यावन्तंकाल ॥ सेत्ति ॥ त तस्यवा ; जीवस्य भवधारणीय भवधारणप्रयोजनं मनुष्यादिभवोपग्राहकमित्यर्थः ॥ अव्वावन्नेति ॥ अविनष्ट ॥ चयेहत्ति ॥ उपचयान्तिमसमया इमम्तर मेतत् अम्मापेइय शरीरं ॥ वोयसिज्जमाणेत्ति ॥ व्यवकृष्यमाणं हीयमान गर्भाधिकारा देवापर सूत्र ॥ गभगएसमाणेत्ति ॥ गर्भे गतः सन् पञ्चत्वे

सोणिए मत्थुलुंगे ॥ कइणं जंते ! पेइयंगा पन्नत्ता ? गोयमा ! तउ पेइयंगा पन्नत्ता तंजहा अट्ठिअट्ठिमिंजाकेसमंसुरोमनहे ॥ अम्मापेइएणं भंते ! सरीरए केवयं कालं संचिट्ठइ ? गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ , एवतियं कालं संचिट्ठइ , अहेणं समए समए वोयसिज्जमाणे चरि

तना हेभगवन् ! शुक्रविकार बहुलपितानां अंगकेटला । गोयमा तथाविधत्रण अंग कह्या तेकहे । हेगोतम तीन पिता सबंधी अंगकह्या ते कहेछे—अस्थि हाड हाड मांहिली मींजी असि मध्यावयव । केसमंसुरोमनखे । केशादिक बहुसमान रूपवको एकहीज अंगकहीये केश मसुरोम नख के अस्थिमिञ्जा । हाड हाड मांहिली मींजी असि मध्यावयव । केसमंसुरोमनखे । केशादिक बहुसमान रूपवको एकहीज अंगकहीये केश मसुरोम नख ते साधारण अंगकहीये । माता पितानां अंगछै ते सबंधी शरीर एटलोकालसंचिट्ठइ । माता पितानाअंग हेभगवन् । शरीरते केतलो एक काल रहे ए ता तथा पितानां साधारण अंगकहीये । माता पितानां शरीर केटला एक कालरहे इतिभाव इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा आवइयसेकालं भवधारणिज्जेसरीरए । हेगोतम जेत तावता मातापितानो उपनो जेशरीर ते केतला एक कालरहे इतिभाव इतिप्रश्न उत्तर । जिवारे लगी जेतलाकाले ते शरीर विनाशपामेनही । एवइयकाले भाजाम तेजीवने भवधारणप्रयोजन मनुष्यादि भवोपग्राहक तेशरीर । अव्वावन्नेभवइ । जिवारे लगी जेतलाकाले ते शरीर विनाशपामेनही । एवइयकाले मं इइ । एटलाकाल लगे तमातापितासबंधीअंग रहे एतावता मरणपर्यंतरहे । अहेणसमएसमएवोयसिज्जमाणे २ चरिमकालसमयसिवोच्छिन्नेभवइ ।

तिमेयः ॥ पगएइति ॥ स गर्भोरामादिगर्भरूप , सम्भित्वादिविशेषयानिव गर्भस्थस्यापि नरकप्रायोग्यकर्म्मबन्धसम्भवाभिधायकतयो क्तानि । वीर्य मध्या वैक्रियलब्ध्या सङ्ग्रामयतीतियोगः अथवा वीयलब्धिको वैक्रियलब्धिकश्च सन्निति परानीक शत्रुसैन्य ॥ सोचति ॥ श्रुत्वा निशम्य मन सावधार्य ॥ पएसेनिच्छुभइति ॥ गर्भदेशा द्वहिः क्षिपति ॥ समोहणइत्ति ॥ समवहन्ति समवहतोभवति तथाविधपुद्गलग्रहणार्थे सङ्ग्रामसङ्ग्राम

मकालसमयसि योच्छिणो जयइ ॥ जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थे गइए उववज्जेज्जा , अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा , सेकेणट्ठेण ? गोयमा ! सेण सण्णीपंचिंदिए सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणिय आगय सोच्चा निसम्म पएसे निच्छुभइ , वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ समोहणइए , चाउरंगिणीए सेणाए विउव्वइ विउव्वइत्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणी

॥ हिव भहति वाक्यार्थकारे उपजवना वतिसमय थको भगवंत ए मातापितानेसंबंधी शरीर छायमानचातावचा छत्रवाकार समयनेविषे वा व यथामें एतावता जेजीवने धाक्षमाने तेहने समये शरीरमिठे आय इस्व, गर्भाधिकारवकोष वलीगौतमपूछेछे—जीवेभंतेगब्भगएसमाणे । जीवहेभग वन् गर्भमाहेथका । नेरइएसुउववज्जेज्जा।अमरी नारकनेविषे नारकीपणे ऊपजे इतिप्रश्न उतर । गोयमा अत्थेगइएउववज्जेज्जा । हेगौतम कोइएकजीव नारकीनेविषे ऊपजे । अत्थेगइएनोउववज्जेज्जा । कोतला एक जीव नऊपजे तिवारे गौतमपूछेछे—सेकेणट्ठेणभंतेएववुच्चइ । तेस्यामाटे हेभगवन् इमकह्यु वा एक ऊपजे आनेनऊपजे इतिप्रश्न उतर । गोयमा सेणसण्णीपंचिंदियसव्वाहिंपज्जत्तीहिंपज्जत्तए वीरियलद्धीए पराणीयं आगयसोच्चा निसम्म पएसे निच्छु भइत्ति=उभरतो। हेगौतम कोइएकजीव राणीना गर्भनेविषे छे एतले राजपुत्रहुये ते जीव संज्ञीसाकारे पंचेंद्री सर्व पोताने पर्याप्ति ति णेकरी पर्याप्ति भावमते पाम्यो तेजीव वीर्यलब्धिकारी तथा वैक्रियलब्धिकारी अथवा वीर्यलब्धिवंत तथा वैक्रियलब्धिवतयको शत्रुनी सेना कटक आवत सांभलीने मनमे अवधारीने जीवना प्रदेश गर्भनी बाहिर काढे काढीने । वेउव्वियसमुग्घाएणसमोहणइसमोहणइत्ता । वैक्रिय समुद्घातेकरी समवह

यति यद्करोति ॥ अत्यकामएत्यादि ॥ अर्थे द्रव्ये कामो वाञ्छामात्रं यस्या सा अर्थकाम एव मन्यान्यपि विशेषणानि ॥ नवरं राज्य नृपत्वं भो गा गन्धरसस्पर्शाः कमो शब्दरूपे काङ्क्षा गृद्धि रासक्ति रित्यर्थः अर्थकाङ्क्षा सञ्जातास्येति अर्थकाङ्क्षित पिपासेवपिपासा प्राप्तेप्यर्थेऽतृप्तिः ॥ तच्चितेति ॥ तत्रार्थो दीचित्तं सामान्योपयोगरूपं यस्या सौ तच्चित्तः ॥ तन्मनेति ॥ तत्रैवा र्थादौ मनोविशेषोपयोग रूपं यस्य स तन्मनाः ॥ तल्ले स्सेति ॥ तद्ध्यात्मपरिणामविशेष ॥ तदज्झवसिएत्ति ॥ इहा ध्यवसायो अध्यवसित तत्र तच्चित्तादिभावयुक्तस्य तस्मिन्नर्थो दावेवाध्यवसितं, परि भोगक्रियासम्पादनविषय मस्येति तदध्यवसितः ॥ तत्तिव्वज्झवसाणेति ॥ तस्मि न्नेवार्थादौ तीव्रमारम्भकाला दारभ्य प्रकर्षयापि अध्यवसान मप्र यत्नविशेषमलक्षणं यस्य सतथा ॥ तदट्ठोवउत्तेत्ति ॥ तदर्थं मर्थादिनिमित्त मुपयुक्तो वहित सदर्थो पयुक्तः ॥ तदप्पियकरणेत्ति ॥ तस्मि न्नेवार्थादा

एण सद्दिसगामसगामेइ सेणजीवेअत्यकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए अत्यकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए अत्यपिवासिए रज्जपिवासिए भोगपिवासिए कामपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्ले स्से तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसिणअंतरंसिकालंकरेज्ज

नइरे तवा शिथि पहम पहवाने भने पहाने। पांवरमिकोएसेबाएविकवार विसवहता। बाबो घाबा रथपादअरूप चतुरंगिबोसेना विकूर्वे विकुर्वीने। पा उ[illegible]मिबोयसेनाए। चतुरंगिणी सेनामहित। पराबोएवसति। परानी सेना सवठव ते सघाते। सगामसगामेइ। संग्राममते सग्रामेजुमते करे। सेवणोवे अत्यकामए। तेजीव द्रव्यना काम बछतो अभिलाप बांछावे, तेहने। रज्जकामए। राज्यभोगा बांछावे, तेहन। भोगकामए। मधरस फरसनो बांछावे कामकामए अतकंखिए। शब्दरूप तेहनी बांछावे तेहने भवनो बांधावछतो आसक्ति करवे तेहने। रज्जकंखिए भोगकंखिए। राज्यनो भा मवि मरवे जेहमे भोगनी आसक्तियाचे तेहने। कामकंखिए। कामनो आसक्ति करवे तेहने। अत्यपिवासिए। प्राप्यापवा अधिकसिमवाय ते पिपा सा करोवे अवनो वसि मवाय। रज्जपिवासिए। राज्यनी अवतिवे तेहने। भोगपिवासिए। भोगनी अवसिवो तेहने। कामपिवासिए। कामनेविवे तेप

पञ्चिता त्याहितानि करणानि न्द्रियाणि कृतकारितानुमतिरूपाणिया मन स तथा ॥ तद्भावस्तत्तायिएसि ॥ अमरू दनादिसंसारे तद्गृजायनया पांदिमत्कारेन भाविती या म तथा ॥ एर्वसिर्गवतरमिति ॥ एतस्मिन् सङ्ग्रामकरलायसरे काल मरकमिति ॥ तद्गारूवस्सति ॥ तयाविभस्य छवि तम्य त्यया, ममतम्य माया, यातोऽदौ देवलोकोत्पादकतुल्य मति ममकमाइ न यवनयो सुस्यस्यमत्रावामायः ॥ माह्वस्सत्ति ॥ मा हमे त्येव मादिमति, न्ययं स्थूलप्राणातिपातादिनिवृतत्वा घ म माहन मयया प्राप्तको प्रश्नपयस देशात् सद्भावात् प्राप्तयो देशविरत ससया

नेरइएसुउववज्जेज्ज सेतेणठेण गोयमा ! जावअत्थेगइए नोउववज्जेज्जा । जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे देव लोगेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा २ सेकेणठेण ? गोयमा ! सेणसणी पंचिंदिए सव्वाहि पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एगमवि आ

वमिव । ममित्ते तमाण । पर्यादिकनविषे विलये जेहना पर्यादिकपर ममत्त्रे जेहना । तमेसे तदज्ञरसिए । धर्मादि परलोकाद्वे जेहनो भयादिविषे प भामाव भावादि निमित्त विषयके जेहना । ततिमप्रमावे । तिसा भयादिकमें तीव भारंभ वतम विशेषकरे । तद्भावकत्ते । तिसा पर्यादिकमेंविषे उपमक । तदपियकरवे । तिमा पयादिकमेंविषे हन्नो म्याप्या भवमा कारण वाराण धनमातृगारूप । तद्भावभावाविए । तेवीज पर्यादिकनी भावना भावताके पदादिममारजेविषे तेजीव । एर्वमिवं पतरमि । एहवा सग्रामकरण पवमरजेविषे पतरजेविपे । कालकरेज्जा । मरणसमये पामे तो तेजीव मरीने । नरएमउववज्ज । मरकमविषे मारकपणे ऊपजे इत्यर्थ । सेतेणठेण गोयमा जावअत्थेगइएनोउववज्जेज्जा । ते तेणे कारणे हेगोतम इमकह्यो याव त् कार एक जीव सममादिककी मारकीजेविषे ऊपजे कार एकजीव नऊपजे । जीवेणभंतेगब्भगएसमाणेदेवलोएसुउववज्जेज्जा । वलीगोतमपूछेछे—जीव हेभगवन् । मभमादिकमागयको देवलोकनेविषे देवतापणे ऊपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अत्थेगइएउववज्जेज्जा । हेगोतम । कोई एकजीव गर्भमाहिथको मरी देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे । अत्थेगइएनोउववज्जेज्जा । कोइएक नऊपजे । सेकेणठेणभंतेएवमुच्चइ । गोतमपूछेछे—ते केणेकारणे हेभगवन् ! इमकह्यु

यतिएति ॥ समीपे एकम प्यासा मनेक भायें बाराघात पापकर्मन्य इत्यायें मतएव धार्मिकमिति ॥ तउत्ति ॥ तदमन्तरमेव ॥ सवेगजायसम्डे ति ॥ सवेगेन प्रवजयेन वाता मह्वा मह्वान बर्मोदिषु मस्य स तथा ॥ तिव्वधम्माणुरागरत्तेत्ति ॥ तीव्रो या धर्मानुरागः धम्मप्रुमाम स्तेन रक्त श्य य सतया ॥ धम्मकामएत्ति ॥ धर्मो मूलचारित्रलक्षणः पुन्य तत्फलमूत शुभकर्मीति ॥ भवसुव्वएवति ॥ माग्यफलसत्कुश ॥ मत्येव्वति ॥

रिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म तहं जवइ सवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुरागरत्ते सेण जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्गपिवासिए मोक्खपिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तदठोवउत्ते तदप्पियक

वार एम अपवे आरएवव जपय रतिमय उत्तर। गोयमा सेवसयापयिदिए। हेगोतम ते जीव यथाख्यातकारे सम्रोवापचेंद्री। सम्यग्विपक्षतोविंपक्षस ए। सगसोझो पर्यासिकरो पर्यातमावपतें पाम्या। तयाकवस समवसरणा। तथाविध उचित योग्यने तपस्तोने। समवसरणा। माहण इसोक्ते तेसाभु यस वा स्थूल प्राणातिपातथी निवृत्त थसो। यतिए पयभविषारिय धम्मिय सवयण। ते यावक तेहना समीपथी कोइएक पवि मायमका धमनो मक्रोवच न। मोयाविसम्म। सांभसीने चोवैवरीने। तथोभवई। तिमारपछी हवे। संवेगजायसड्डे। सवेगे भवभयेंकरी धर्मादिनेविषे उपनो सद्दा बेहनी। तिव्व धम्माणुरागरत्ते। तीव्र धमने धनुरागेकरी रक्तो मन जेहनो। सेवजीवेधम्मकामए। ते यथाख्यातकारे जीव धर्म श्रुतचारित्रनेविषे वांछाजेहनी। पुण्यका मए। तेहनो फलभूत शुभकर्म तेहनो वांछक। सग्गकामए। स्वर्ग देवलोकना वांछक। मोक्खकामए। समस्तकर्मक्षयरूप मोक्ष तेहनो वांछक। ध म्मकंखिए। धमनो आसक्ति छे जेहने। पुण्णकंखिए। पुण्यनो आसक्ति छे जेहने। सग्गकंखिए। स्वर्गनो आसक्ति छे जेहने। मोक्खकंखिए। मोक्षनो आसक्ति छे जेहने। धम्मपिवासिए। धर्मनेविषे पद्मसित्त। पुण्णपिवासिए। पुण्यनेविषे पद्मसितंत। सग्गपिवासिए। स्वर्ग देवलोकनेविषे पद्मसिचत। मोक्खपिवा सिए। मोक्षनेविषे पद्मसितंत। तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए। एतला पदार्थनेविषे चित्त छे जेहनो तिहांज मन छे जेहनो तेहोज लेश्या छे जेहनो

मानीत सामान्यात एतन्येव विशेषत उच्यते ॥ चिठ्ठज्ञति ॥ ऊर्ध्वस्थानेन ॥ निसीयज्ञति ॥ निषदनस्थानेन ॥ तुयट्टेज्जति ॥ शयीत ॥ समभागच्छ इति ॥ मम चरिमम मार्गतिपात मम्यक मनुपपातहेतवा दागच्छति मातुरुदराद्योन्या निष्क्रामति ॥ तिरियमागच्छइति ॥ तिरश्चीनो भूत्वा च

रणं नष्पायणात्नायिए एयसिण अंतरसि काल करेज्जा देवलोएसु उववज्जइ सेतेणठेण गोयमा ॥ जीवेण नते गप्नगए समाणे उत्ताणएया पासल्लएया अंबखुज्जएया अच्छेज्जया चिठेज्जया निसीएज्जया तुयट्टेज्जया माऊए सुयमाणीए सुयइ जागरमाणीए जागरइ सुहियाए सुहिए नवइ दुहियाए दुहिए नवइ ? हता गोयमा ! जीवेण गप्नगए समाणे जाव दुहियाए दुहिए नवइ , अहेण पसवणकालसमयंसि सीसेणया

नहीं पध्यमायके जेहने। तदल्पकस्ते। तेहीज पर्वे करी मशितवे। तदल्पिवकरवे। तेहीज प्रथमेविषे पर्णित दोषाहे करवइ द्वीप जेहना। तथाव नाभाविए। तेहीज भावनाये करी भावितवे। एतंसिणं मतरंसि। एहवा पंतरनेविषे एतने एहवी भावनाये भावतोथको। कालकरेज्जा। कालकरे मर चमें ना तेजीव। देवलाएसउववज्जइ सेतेणठेणं गोयमा। देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे ते तेणे पर्वे हेगौतम। हमकहुं कोई एकअपणे कोईएक न ऊ पजे वली गौतम पूछे—जीवेणभते गब्भगएसमाणे। जीव गर्भाश्यावकारे गर्भनेविषे रह्योथको। उत्ताणएवा। ऊंचोपथो चत तेहने पाथारे। पासिल्लएवा। पासामे भारे। अंबखुज्जएवा पतेल्यवा। अंबुफलनीपरे कूबडो सामान्ये बेसिवो एहीज विशेषथी कहेछे—चिठ्ठेज्जवा। ऊर्ध्वस्थानके ऊभो रहे। निसीएज्जवा। बसीपरे बेसे। तुयट्टेज्जवा। शयनकरे सूवे। माउएसुयमाणीएसुयइ। माता सूवतांथकां सूवे एतले मातासूवे तिवारेसूवे जागरमाणीएजागरइ। जागतांथकां जागे एतले माताजागे तिवारे गर्भपणिजागे। सुहियाए सुहिएभवइ। माता सुखिणीये थके पणि सुखियो हुवे दुहियाएदुहिए भवइ। माता दुखिणीये पुत्रपणि दुखिया हुवे इतिमध्य उत्तर। हंता गोयमा। हांगौतम। जीवेणगब्भगएसमाणे जाव दुहियाएदुहिए भवइ। जीव गर्भमांहि रह्याथका यावत् माता दुखीये पुत्रपणि दुखीहुवे एतमाहगे वाहवो। अहेणंपसवकालसमयंसि। अथ हिवे गर्भात्प्रसवकाले प्रसूति

ठरा त्रिर्गन्तु प्रवर्तते, यदि तदा विनिघात मरण मापद्यते निर्ममाभावादिति गर्भो विगलस्य च य स्या तदाह ॥ वण्णवज्झाणियत्ति ॥ वर्ण्यः श्लाघा वध्यो हन्तव्यो येषां तानि वर्ण्यवध्यानि अथवा वर्ण्यो ह्राह्याणि वर्ण्यबाह्या न्यशुभानीत्यर्थः वशब्दो वाक्यान्तरत्वद्योतनार्थ ॥ सेत्ति ॥ तस्य गर्भनिर्गतस्य यद्भाइति सामान्यतो बद्धानि ॥ पुट्ठाइति ॥ पोषितानि गाढतरबन्धतो निधत्तानि उद्वर्तनापवर्तनकरणवर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थः अथवा बद्धानि बध्यमानानि पूर्वं स्पृष्टानीति ॥ कडाइति ॥ निकाचितानि सर्वकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थः ॥ पट्ठ वियाइंति ॥ मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातित्रसादिनामकर्मोदिना सहोदयत्वेन व्यवस्थापितानीत्यर्थः ॥ अभिनिविट्ठाइति ॥ तीव्रानुभावतया निविष्टानि ॥ अभिसमन्नागयाइति ॥ उदयाभिमुखीभूतानि ततश्च ॥ उदिन्नाइति उदीर्णानि स्वत उदीरणाकरणेन वो दितानि व्यतिरेकमाह ॥ नाउ

पाएहिंवा आगच्छइ सम मागच्छइ तिरिय मागच्छइ विणिहाय मावज्जइ वण्णवज्झाणिय सेकम्माइं ब द्धाइं पुट्ठाइं णिहिताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं उदिन्नाइं णोउवसंताइं भवंति

काल ममबलेविषे। सोसेणवा पाएहिवा आगच्छइ। मस्तकेकरी वा अथवा पगेकरी वा अथवा भावे समविषमगर्हो अथवा। समागच्छइ। भलो प रे बाळका हेतुगर्हो तिमभावे माताना उदरथो योनिकरीनिकले। तिरियमागच्छइ। तिरिछाबाव मीकले। विणिहायमावज्जइ। वो मरणपामे गोबकशाना अभावथी अथवा गोबबाने अभाव ते कहेछे—वण्णवज्झाणियसेकम्माइं। वण श्लाघा ते वध्य हणवायोग्य जेहने ते वण्णवध्य अथवा वर्णयको बाह्य अशुभ बथन्द वाक्यांतरपणाना सूचक सेति। तेह मर्भने कर्म तेहमते। बहाइं पट्ठाइं णिहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं। सामान्यपणे बांध्यां गाढां बांध्यां सर्वागेंकरी न्याय्यां निकाचितकर्म बांध्यां मनुष्यगति पंचेंद्रीजाति त्रसादिनामकर्मे करी जेसहोदयपणें व्यवस्थापित कीधां। अभिनिविट्ठाइं। तीव्र अनुभावे करी स्थाप्यां। अभिसमन्नागयाइं। उदय सन्मुख हुवां तिवारपछी। उदिन्नाइं णोउवसंताइं भवति। आपथीज उदीरणा करणेकरी उद य आव्यां, हिवे व्यतिरेक कहेछे—उपशांत नथया हुवे। तथाभव्य दुरूवे दुव्वण्णे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे। तिवारपछी हुवे जेजनमना उद

वमताइति ॥ भनिष्टादीनि व्याख्यातान्ये वैकार्थानिवा ॥ हीनस्सरेति ॥ भल्पस्वरः ॥ दीनस्सरेति ॥ दीनस्येव दुःस्थितस्येव स्वरो यस्य स दीनस्वरः ॥ भनादेयवयणपञ्चायायाएविति ॥ इहैव मनरपटना प्रत्याजातस्यापि समुत्पन्नोपिवा नादेयवचनो भवति ॥ इति प्रथमशते सप्तमः ॥ ७ ॥ गर्भयत्मयता सप्तमोद्देशकस्यान्त उक्ता गर्भवास यायुषि सती त्यायुमिरूपणाय तथा दिमायाया यदुक्त ॥ बालेति ॥ तदभिधानाय चाष्टमो द्देश

तउ जवइ , दुरूवे दुवणे दुग्गंधे दुरसे दुफासे अणिठे अकंते अप्पिए असुन्ने अमणुन्ने अमणामे हीण स्सरे दीणस्सरे अणिठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुन्नस्सरे अमणुन्नस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्ज वयणं पच्चायाएयिजवइ वन्नवज्झाणिय सेकम्माइ नोयद्धाइ पसत्थ नेयव्व जाय आदेज्जवयण पच्चायाए यि जवइ सेव ज्ञंते ज्ञते ॥ पढमसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ एगतयालेण ज्ञते !

मवो दुष्टरूप भूंडा गंध दुर्गंध भूंडारस भूंडो फरस जटकांटावानो परे भनिष्ट भसुखकारी सदरता रहितथके देखवाजोग्यनहीं दीठा भसउपजावे । भ मणुन्ने भमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे भविड्स्सर भवणस्सरे भप्पियस्सरे । भगापांगे नामयासरीसा सवने भमाग्य भग्नसरथके भूंडो दरिद्रीसरीखोस्सर वा बनीपरे भसुखकारी सुस्वरतारहित व टनोपरे स्वर भमाम्र यत्नमो परे भप्रीतिकारो स्वर । भशुभस्सरे । भशुभस्सर जाने भसुहामणो लागे । भमन्न स्सरे । भमनाग्न स्वर भूंडर सघराटनोपरे । भमणामस्सरे । सवने भमाम्यसर । भणाएज्जवयण पच्चायाएविभवइ । भनादेयवचन इसाथके ते वचन कोइमादरेनहो तेहना वचनन्यार मानेनहीं एतले भशुभ वमना पद एवाम्रा । वण्णवज्झाणियसेकम्माइ ॥ जिवें वर्णबंध भशुभवमनेनहो बांध्या तेजोवने भावदाइ पसत्थनेयव्व । एतले शुभवमनो उदयथके जेहने तेहनेभलो जाणवो सुवर्णसरूप सुगंध इत्यादि सव भलाकहवा । जावभादेज्जवयण पच्चायाएवि भवइ । यावत् भादेय वचन सवमनुष्यादिने माननाजोग्यथके, एतले शुभवमनापक कह्या । सेवंभते २ त्ति । वहत्ति हेभगवन् ! ए पहिला शतकना सा तमा उद्देसाना टबाखिस्या ॥ ७ ॥ पाहिला उद्देसानेविषे गर्भनो वक्तव्यता कही , तेमभ भाउखेथके तेमाटे भाउखानो प्ररूपणा

क सात्र सूत्रम् ॥ एगतबालेत्यादि ॥ एकान्तबालो मिथ्यादृष्टि रविरतोवा एकान्तग्रहणेन मिश्रता अपाकृतेति यद्यपि कान्तबालत्वे समानेपि मानाविधायुर्बन्धनं त महारम्भाद्युन्मार्गदेशनादितनुकषायत्वाद्यकामनिर्ज्जरादितद्धेतु विशेषवशादिति अतएव बालत्वे समाने प्यविरतसम्यग्दृष्टि मनुष्यो देवायुरेव प्रकरोति न शेषाणि एकान्तबालमतिपक्षत्वा देकान्तपण्डितसूत्र तत्रच ॥ एगतपण्डिएणंति ॥ एकान्तपण्डित साधुः ॥ मनु

मणूसे किं नेरइयाउय पकरेइ तिरिक्खाउयपकरेइ मणुस्साउयपकरेइ देवाउयपकरेइ नेरइयाउयकिच्चानेरइएसुउववज्जइ तिरियाउयकिच्चा तिरिएसुउववज्जइ मणुयाउयकिच्चा मणुएसु उववज्जइ देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगतबालेण मणुस्से नेरइयाउयपि पकरेइ तिरिमणुदेवाउयपि पकरेइ नेरइयाउयपि किच्चा नेरएसु उववज्जइ तिरिमणुदेवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जइ। एगंतपण्डिएण भंते ! मणुस्से

टबो — एगतबालेणमतेमणूसे । एकांत बालक मिथ्यादृष्टी तथा अविरतीवालुं एकांत ग्रहणेकरीने मिश्रपणुं गयो एहवो हेभगवन् ! मनुष्य । किंनेरइयाउये पकरेइ । नारकीना आउखाबांधे १ । तिरियाउयपकरेइ । अथवा तिर्यंचना आउखाबांधे २ । मणुयाउयंपकरेइ । अथवा मनुष्यनो आउखोबांधे ३ । देवाउयंपकरेइ । देवतानो आउखोबांधे ४ । नेरइयाउयकिच्चा । नारकीनो आउखो करीने । नेरइएसुउववज्जइ । नारकीनेविषे नारकीपणे उपजे । तिरियाउयकिच्चा । तिर्यंचना आउखो करीने । तिरिएसुउववज्जइ । तिर्यंच गतिनेविषे तिर्यंचपणे उपजे । मणुयाउयंजावदेवाउयकिच्चा । इम मनुष्यनो आउखो करी मनुष्यगतिनेविषे मनुष्यपणे उपजे यावत् देवतानो आउखो करीने । देवलोएसुउववज्जइ । देवलोकनेविषे देवपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगंतबालेणमणूसे । हेगोतम ! एकांत बालक मिथ्यादृष्टी अविरतो मनुष्य तथा । नेरइयाउयंपिपकरेइ । नारकीनो आउखो पणि करे । तिरिमणुदेवाउयपिपकरेइ । तिर्यंचनो आउखोपणिकरे मनुष्यनो आउखो पणिकरे देवतानोआउखोपणिकरे । नेरइयाउयकिच्चा । नारकीनो आउखोकरीने । नेरइएसुउववज्जइ । नारकीनेविषे उपजे । तिरिमणुदेवाउयकिच्चा । इम तिर्यंचनो मनुष्यनो देवनो आउखो करीने । देवलोएसुउववज्जइ । देवलोकनेविषे देवपणे

स्येति ॥ विशेषयं स्वरूपज्ञानार्थमेव अमनुष्यस्य कालपविकलस्वायोमा तद्योगव सर्वविरते रन्यस्या भावादिति ॥ एगंतपण्डिएणमणुस्सेणआउय सियपकरेइसियणोपकरेइत्ति ॥ सम्यक्त्वसद्भावे वर्तते न बध्नात्यायुः साधुः अर्वाक् पुन बध्नाती त्यतउच्यते स्या त्प्रकरोती त्यादि केवलमेव॥ दोगइ॥

किं नेरइयाउयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगतपण्डिएण मणुस्से आउयं सिय पकरेइ सिय णोपकरेइ जइ पकरेइ णो णेरइयाउयं पकरेइ णोतिरियाउयपकरेइ णोमणुयाउयपकरेइ देवाउयं पकरेइ णोणेरइयाउय किच्चा णेरइएसु उववज्जइ, णो तिरि नोमणु देवाउयं किच्चा देवेसु

वे उपजे। एगतपंडिएणमंतेमणूसे किंनेरइयाउयपकरेइ। एकांतपाप प्रतिपक्षपणे एकांत पंडितसूत्रकहेछे—एकांतपंडित ते साधुजन, मनुष्य एहवो विशेषणछे सदरूपज्ञाननाजे अर्थे मनुष्य विना एकांत पंडितपणाना अयोगथी अने मनुष्यनेविषे पणि सर्व विरतिठाणो बीजाने एकांतपणाना अभावथी एम एकांतपंडित मनुष्य हेभगवन्! स्यूं नारकीना आउखाकरे? एम तिर्य च मनुष्य देवनो आउखाकरी तथा नारकीनो आउखोकरी नारकीनेविषे उपजे। जावदेवाउयकिच्चा। देवलोएसुउववज्जइ। एम यावत् तिर्य च मनुष्य देवनो आउखाकरी देवलोकनेविषे उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा एगंतपंडिएणमणुस्सेआउयसियपकरेइ सियणोपकरेइ। हेगौतम! एकांतपंडित मनुष्य सर्वविरती साधु आउखो किवारे बांधे जिवारे मनुष्ये सातप्रकृति क्षेपवोकृवे अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ मिथ्यात्वमोहनी ५ मिश्रमोहनी ६ समकितमोहनी ७ ते आउखानो बंध नकरे अने इहाम समय अनकीधा पहिला बांधे तेमाटेकह्युं किवारे बांधे किवारेनबांधे। जइपकरेइ णोणेरइयाउयपकरेइ। जोबांधे तो नारकीना आउखो नबांधे। णोतिरियाउयपकरेइ। वली तिर्य चनो आउखा नबांधे। णोमणुयाउयपकरेइ। वली मनुष्यनो पणि आउखा नबांधे तोन आउखा नबांधे। देवाउयपकरेइ। एक देवतानो आउखोबांधे णोणेरइयाउयंकिच्चा। नारकीना आउखोकरीने। णेरइएसुउववज्जइ। नारकपणे नउपजे, एम तिर्य चनेविषे नउपजे। णोतिरि णोमणुस्स देवाउयंकिच्चा। एम मनुष्यनेविषे पणि नउपजे, देवतानो आउखो करीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिनेविषे उपजे। सेकेणट्ठेणभंतेजावदेवाउयंकिच्चा। गौतमकहे

पद्मापतिति ॥ केवलमब्द सकलार्थे सोम वाक्यमेनैव द्वेमती मधायेते ययवुध्येते केवलिना तयोरेव सत्वादिति ॥ अंतकिरियासि ॥ निर्वाणं ॥ कप्पोववत्तियत्ति ॥ कल्पे प्रभृतरविमानानांदेवलोकेषु पपति उत्पत्ति यां सैव कल्पोपपत्तिका इह च कल्पशब्दः सामान्येनैव वैमानिकदेवावासाभि

उववज्जइ , सेकेणठेण जाव देवाउय किंचा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! एगतपंडियस्सण मणुस्सस्स केव उमेव दोगइउ पन्नायंति तंजहा—अंतकिरियाचेव कप्पोववत्तियाचेव सेतेणठेण गोयमा ! जाव देवा उय किच्चा देवेसु उववज्जइ ॥ बालपंडिएण भंते ! मणूसे कि नेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउय किच्चा देवे सु उववज्जइ ? गोयमा ! णोणेइरयाउय पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसुउववज्जइ , सेकेणठेण जाव देवा

वे—ते एवं हे भगवन् ! एमकहुं यावत् देवतानो आउखो करीने । देवसुउववज्जइ । देवलोकनविषे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा एगतपंडियस्सणमणूस स । हे गौतम ! एकांत पंडित मनुष्य सर्व विरती साधु । केवलमेवदामतिघोपचासर तजवा । केवल शब्द सकलाबनायबचे, तेमाटे एकांत पंडितने स मयोरो विपतिबाविषे तेबहेव—अंतकिरियाचेव कप्पोववत्तियाचेव । सकलकर्म क्षयकरी मोक्षगाम ते अंतक्रिया कहीये, अनुत्तरविमान पर्यंत देवलोकने विषे उपजे इहां कल्पशब्दे सामान्य देवलोक कहीये भगवतकहेछे—सेतेणठेणं गोयमा । ते तेणेअर्थे हेगौतम ! जावदेवाउयंकिच्चादेवेसु उववज्जइ । यावत् देवतानो आउखो करीने देवगतिने विषे उपजे, एकांतपंडितने बितीयस्थान अविपर्यासनो बालपंडितनो सूत्रकहेछे—बालपंडिएणंभंतेमणूसेकिंनेरइ याउयपकरेइ । श्रावक मनुष्य देशविरती पंचमगुणठाणवर्ती ते बालपंडित हेभगवन् ! मनुष्य शुं नारकीनो आउखो करे बांधे ? जावदेवाउयकिच्चा । यावत् शब्दे देवतानो आउखो करीने । देवेसुउववज्जइ । देवगतिनेविषे देवपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णोनेरइयाउयपकरेइ । हेगौतम ! नार कीनो आउखो नबांधे तिम तिर्यंचमनुष्यना आउखा नबांधे । जावदेवाउयंकिच्चा । यावत् देवतानो आउखो करीने । देवेसुउववज्जइ । देवगतिनेविषे देवपणे उपजे, गौतमकहेछे—सेकेणठेणंजावदेवाउयंकिच्चा । देवेसुउववज्जइ । ते स्ये अर्थे हेभगवन् । बालपंडित श्रावक ते नारकीनो आउखो नबांधे

पापकइति एकान्तपरिळवो द्वितीय स्यागवर्तित्वा प्रासपरिळसस्य बालपरिभ्रतसूत्र तत्रच ॥ बालपळिएणंति ॥ भावन ॥ देसउवरमइति ॥ विभक्तिपरिणामात् देशा दुपरमत विरतो भवति ततो देश स्थूल म्प्राणातिपातादिक मत्याख्याति वर्मेमीयतयाप्रतिजानीते घायुर्वन्धस्य क्रि याः कारणमिति क्रियासूत्रापि पन्व तत्र ॥ कच्छसिवत्ति ॥ कच्छे नदीजलपरिवेष्टित वृक्षादिमति प्रदेश ॥ दहसिवत्ति ॥ ह्रदे मतीते ॥ उदगसिवत्ति ॥ उदके जलाश्रयमात्रे ॥ दवियसिवत्ति ॥ द्रविक तृणादिद्रव्यसमुदाये ॥ वलयसिवत्ति ॥ वलये वृत्ताकारनद्याद्युदककुटिलगतियुक्तदेशे ॥ नूमसिवत्ति ॥

उय किञ्चा देवेसु उववज्जइ ? गोयमा ! बालपण्डिएण मणूसे तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अतिए एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण सोच्चानिसम्म देस उवरमइ देस णोउवरमइ, देस पच्चक्खाइ देस णोपच्च क्खाइ, सेतेण देसोवरमइ देसपच्चक्खाणेण णो णेरइयाउय पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ

यावत् देवतामा आउखो बांधीने देवगतिमांविषे देवपणें उपजे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा बालपण्डिएणमणूसे तहारूवस्स। हेगौतम! बालपण्डित मनुष्य एतले देशविरतो श्रावक तथाविध तथा रूपने। समणस्सवा माहणस्सवा। श्रमण तपस्वीने माहणने। अंतिए एगमवि। समीपे एकपणि। आरि यं धम्मियं सुवयणं सोच्चा। आर्य उत्तम धर्मसंबंधी भलोवचन ते सांभलीने। निसम्म। मनमे अवधारीने। देसउवरमइ। देशथकी निवर्त्ते। देसंणोउव रमइ। देशथकी ननिवर्त्ते। देसपच्चक्खाइ। स्थूलप्राणातिपातादिनो पच्चक्खाण करे। देसंणोपच्चक्खाइ। देशे एक आरंभ सूक्ष्मनो पच्चक्खाण नकरे। सेतेण देसोवरमइदेसपच्चक्खाणेण। ते बालपण्डित जिवे कारणे देशथकी निवर्त्ते देशथकी स्थूलप्राणातिपातादिकनो पच्चक्खाण करे तिणेकारणें। णोणेरइयाउयपक रेइ। नथी नारकीनो आउखोबांधे नथीबांधे। जावदेवाउयकिच्चा। यावत् देवतानो आउखो बांधीने। देवेसुउववज्जइ। देवगतिमेंविषे देवपणें उपजे। से तेणट्ठेण गोयमा जावदेवेसुउववज्जइ। ते तिणे अर्थे हेगौतम! बालपण्डित यावत् देवतानो आउखो बांधी देवगतिमेंविषे देवपणें उपजे। पुरिसेणभंतेक च्छंसिवा दहंसिवा उदगंसिवा। आयुर्बंधना क्रिया कारणके तिणेकरी क्रियासूत्रप्रकरणकहेछे—कोई एक पुरुष हेभगवन्! नदी जलें वींट्या वृक्षादि मंडे

मूमे मवतमसे माउतमसे ॥ गहवसिवत्ति ॥ मह्वने वृक्षवल्लीलतावितानवीरुत्समुदाये ॥ गहवविदुग्गसिवत्ति ॥ गहनविदुर्गे पर्वतैकदेशावस्थितवृक्ष वल्ल्यादिसमुदाय ॥ पव्वयसिवत्ति ॥ पर्वते ॥ पव्वयविदुग्गसिवत्ति ॥ पर्वतसमुदाय ॥ वणसिवत्ति ॥ वने एकजातीयवृक्षसमुदाये ॥ वणविदुग्गसिव त्ति ॥ नानाविधवृक्षसमूहे मृगे वृत्ति वृत्ति जीविका यस्य स मृगवृत्तिकः सच मृगरक्षकोपि स्यादित्यतआह ॥ मियसंकप्पेत्ति ॥ मृगेषु संकल्पो यथाध्यवसाय च्छेदनं वा यस्या सौ मृगसंकल्पः सच चलचित्ततयापि भवती त्यतआह ॥ मियपणिहाणेत्ति ॥ मृगवधैकाग्रचित्तः ॥ मियवहाएत्ति ॥ मृगवधाय ॥ गंतत्ति ॥ गत्वा कच्छादौ वितितीयः ॥ कूडपासत्ति ॥ कूटञ्च मृगग्रहणकारणं गर्तादि पाशश्च तद्बन्धनमिति कूटपाशं ॥ उद्दाइत्ति ॥ उ

सेतेणं जाव देवेसु उववज्जइ ॥ पुरिसेणं भंते ! कच्छंसिवा दहंसिवा उदगंसिवा दवियंसिवा वलयंसिवा णूम ंसिवा गहणंसिवा गहणविदुग्गंसिवा पव्वयंसिवा पव्वयविदुग्गंसिवा वणंसिवा वणविदुग्गंसिवा मियवित्ती ए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंताए एमिएत्तिकाउं अन्नयरस्समियस्सवहाए कूडपासंउद्दाइ ।

यने दुर्गमसिवनेविषे मवपवाव वेहनेविषे । दवियंसिवा वलियंसिवा णूमंसिवा गहणंसिवा । वृक्षादि समुदाय दुर्गमनेविषे माटुसे आकारे नदी आदि कु टिलगति सहित प्रदेशे निवाव भूमिनेविषे छन वसी लतादि समूहनेविषे । गहणविदुग्गंसिवा पव्वयंसिवा । पर्वतमे एकदेशे सम्भवत्वादि समूहनेवि षे पर्वतनेविषे । पव्वयंसिवा पव्वयविदुग्गंसिवणंसिवा । पवतनेविषे पवतना दुर्गमप्रदेशमनेविषे एकजातिवृक्षसमुदायनेविषे । वणविदुग्गंसिवा मियवत्ती ए । नानाप्रकारना वृक्षनासमूहनेविषे मृगकवती हरिण तपेवरी हणि आजीविका छे जेहने । मियसंकप्पे । मृगनेविषे संकल्प वधनो अध्यवसाय छेद ने । मियपणिहाणे । मृग वधवाने एकाग्रचित्तछे जेहना । मियवहाए । मृगनावध भणी । गंताएएएमिएत्तिकाउ । जाये एए मृगदोसिछे इम कच्छादि कनेविषे इतिवोग इमकरी । अन्नयरस्समियस्सवहाए । अनेरा कोइएक मृगना वध भणी मृग मारवानेकाजे । कूडपासउद्दाइ । कूटते मृग पकडवाना कारण गर्तादिक पाशते मृगबांधवाना रचे । तएणंसेपुरिसे । तिवारे तेहमनुष्य । कूटपाश करणथी तेपुरुषने । कतिकिरिए । केतली क्रियाकहो जि

द्रवति रचयतीत्यर्थः ॥ कहंबंति ॥ ततः कूटपाशकरणात् ॥ कइकिरिएत्ति ॥ कतिक्रियः क्रियाश्च कायिक्यादिकाः ॥ जेभविएत्ति ॥ यो भव्यो योग्यः कर्तेतियावत् ॥ तावचकमितिशेषः यावत्त कूटसमित्यर्थः कस्याः कर्तेत्याह ॥ उद्दवणयाएत्ति ॥ कूटपाशकरणतया सा प्रत्यय एव स्वार्थिकः ॥

तहणंभंते ! से पुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए । सेकेणट्ठेणं भंते ! एववुच्चइ सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए ? गोयमा ! जेभविए उद्दवणयाए णोबंधणयाए णोमारणयाए तावचणसेपुरिसे काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए तिहिंकिरियाहिं पुट्ठे जेभविए उद्दवणयाएवि बंधणयाएवि नोमारणयाए तावचण सेपुरिसे काइयाए अहिगरणयाए पाउसियाए

माते भाषिक्याद्दि इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियतिकिरिए । हेगोतम ! कदाचित् तीन क्रियावाणे । सियचउकिरिए । कदाचित् चारिक्रियावाल । सियपंचकिरिए । कदाचित् पांचक्रियावाणे गौतम कहेछे—सेकेणट्ठेणंभंतेएववचइ । ते स्यें कारणे हेभगवन् ! इमकह्य । सियतिकिरिए । कदाचित् तीन क्रियावाणे । सियचउकिरिए । कदाचित् चारि क्रियावाणे । सियपंचकिरिए । कदाचित् पांचक्रियावाणे । गोयमा जेभविएउद्दवणयाएणोबंधणयाए । हेगोतम ! जिवा भव्ययोग कर्ता इति यावत्, भावंचय इतियेन, जेतलाकाल इमज आगोकर्ताते कहेछे—कूटपाशकरणनो भाव पणि नबांधणनो कर्ता । णो मारणयाए । नही मारणनाकर्ता । तावचणसेपुरिसे । तेतलाकाल तेपुरुष । काइयाए । गमनादि चेष्टा रूप ते कायिकीक्रिया । अहिगरणियाए । कूट पाशकरी जे जीवनो अधिकरणको । पाउसियाए । प्रद्वेषने मगनेविषे दुष्टभाव तेपेजोपनो ते प्राद्वेषिकी । तिहिंकिरियाहिंपुट्ठे । एतीन क्रिया सघाते फरस्यो । जेभविए उद्दवणयाएवि । कूटपाश करणनो पणि कर्ता । बंधणयाएवि । बंधननो पणि कर्ता । णोमारणयाए । पणि मारणनो कर्तानथी तावचणसेपुरिसेकाइयाए । तेतलाकाल ते पुरुष कायिकीक्रिया । अहिगरणियाए । अधिकरणको क्रिया । पाउसियाए । प्रद्वेषको क्रिया । पारिता वणियाए । पारितापन तेजीव प्रयोजनहे वेदने ते पारितापनकी । चउहिंकिरियाहिंपुट्ठे । चारिक्रिया सघाते फरस्यो स्पर्शोछे । जेभविएउद्दवण

तावच्चेति ॥ तावन्तकालं ॥ काइयाएत्ति ॥ गमनादिकायचेष्टारूपया ॥ अहिगरणियाएत्ति ॥ अधिकरणेन कूटपाशरूपेण निर्वृत्ता या सा तथा तया ॥ पाउसियाएत्ति ॥ प्रद्वेषो मृगेषु दुष्टभाव स्तेन निवृत्ता प्राद्वेषिकी तया ॥ तिहिंकिरियाहिंति ॥ क्रियन्तइति क्रिया चेष्टाविशेषाः ॥ पारितावणि याएत्ति ॥ परितापनप्रयोजना पारितापनिकी साच बद्धे सति मृगे भवति प्राणातिपातक्रियाच पातितइति ॥ ऊसविएत्ति ॥ उस्सर्प्य ॥ उसिकि

पारियावणियाए चउहिंकिरियाहिं पुठे जेणंधिए उद्दवणयाएवि मारणयाएवि तावचणसे पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए पचहिं किरियाहिं पुठे। सेतेणठेणं जाव पचकिरिए। पुरिसेणं भंते! कच्छंसिया जाव वणविदुग्गंसिवा तणाइं ऊसविय २ अगणिकायंसि निसिरइ तावचणं भंते! से पुरिसे कइकिरिए? गोयमा! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए। सेकेणठेणं गोयमा! जेभं

याएवि। जेभव्यसायकर्त्ता कूटपाश करवनो पणिकर्त्ता। बंधणयाएवि। बंधनो पणि कर्त्ता। मारणयाएवि। मारवनो पणि कर्त्ता। तावचणसेपुरिसे काइयाए। तेतलोवार ते पुरुष काइकी क्रिया आदिदेई। जावपाणाइवायकिरियाएपचहिंकिरियाहिंपुठे। यावत् प्राणातिपातिकी क्रिया मृगवध चौभागे प्राणोने वातकीधे सर्पचक्रिया फरसा, एतावता तेहने पचक्रियालागे। सेतेणठेणं गोयमा। ते तेणें भणें हेगौतम! जावपंचकिरिए। सियचउ किरिएसियपचकिरिए इमकह्यो, अथोगौतम पूछेछे—पुरिसेणंभंतेकच्छंसिवा। पुरुष हेभगवन्! नदी जल वीट्या छपवत प्रदेशनेविषे। जावणविदु ग्गंसिवा। यावत् नानाप्रकार वृक्षनासमूहनेविषे इत्यादिसर्व समस्त कहवो। तणाइंऊसविय २। निपजावत ऊँचा करी २ ने। अगणिकायंसिनिसिरइ। अग्निकायमतें नाखेवाले। तावचणंभंतेसेपुरिसेकइकिरिए। तेतलाकालसुधीई चपल चणा आलंकारे हेभगवन्। ते पुरुषने केतलीक्रियालागे इतिप्रश्न उ त्तर। गोयमा सियतिकिरिए। हेगौतम! कदाचित् तीनक्रियालागे। सियचउकिरिए। कदाचित् चार क्रियालागे। सियपचकिरिए। किवारेके पां च क्रिया लागे। सेकेणठेणंभंते। तेस्यामाटे हेभगवन्! इमकह्यु। गोयमा जेभवियउस्सवणयाए। हेगौतम! जेभव्यलोक कर्त्ता इत्यर्थं, केतलोकाल कर्त्ता

उगत्यादि अद्दोरूत्येतिया ॥ निसिरइत्ति ॥ निसृजति क्षिपति यावदितिसंप ॥ उसुंति ॥ बाण ॥ आयथकण्णाययंति ॥ कर्ण याव दायतः याकृष्ट कर्णायत आयत स्मपवयत् यथा भवतीत्येवं कर्णायत , आयतकर्णायत स्त ॥ आयामेत्तति ॥ आयम्या कृष्य ॥ मग्गठंति ॥ पट्टत ॥ सयपाखि मति ॥ स्वकपाणिमा स्वहस्तन ॥ पुव्वायामणयाएत्ति ॥ पूर्वाकर्षणेन ॥ सेवजतपुरिसत्ति ॥ सशिरश्छेत्ता पुरुषः ॥ मियवेरयंति ॥ इह वैर वैरहेतुत्वा त्पापवा ; वैरं वैरहेतुत्वादिति अथ शिरश्छेदपुरुषहेतुकत्वा दिषुनिपातस्य कथ धनुर्धरपुरुषा मृगवधेन स्पृष्ट इत्याकूतवतो गौतमस्य तद

थिए उस्सवणयाए तिहिं उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि नोदहणयाए चउहिं जेन्नविए उस्सवणयाएवि निसिरणयाएवि दहणयाएवि तावचण सेपुरिसे काइयाए जाव पचहिंकिरियाहिं पुठे सेतेणठेण गोयमा ! पुरिसेण कच्छंसिवा जाव वणविदुग्गंसिवा मियवित्तीए मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गताए

उ पावरे ततवा आउतार प्रदयवो । तिहिंउस्सवणयाएवि । तान क्रियावागे पक्किावागे वायिवा १ मधिकरणवको २ प्रदेयवो ३ त्रिवारे त्रिवा स वा पववरे । निसिरणयाएवि । मने षस्मिपषि मांक्षिपासे पवि । पोदहणयाएविषवि । वाससागवो ततवा तांद पारिक्रियाने परसे वाविक्रा दि । से रविपउस्सवणयाएवि । मेभवकर्ता वदापवि उ पावरे । निसिरणयाएवि । पस्मिमाषि पविमवे । उहणयाएवि । पमे वासेपवि । तावचवसे परिसे काइयाए आवर्पच हिकिरियाहिंपुट्ठे । ततसाकाल सेपुरुष कायिको आदिरेर यावत् प्राणातिपातको क्रियाभिः फरसो एतावता तेहने पंचक्रि तिकर्मविना । पवय हेभगवन् ! यंनाकाउआरे मझोवसेसो वा इत्यादिपत प्रदेशनेविषे यावत् मानाप्रकार हणमा समूहनेविषे । मियवत्तीए । मृगनो हति धाजीविकाने अहने । मियसकप्पे । वासमांषि पावस्य पथवा प्ररेचरी स्वयं एहवाव मृगनो सकल्प करता बघमा पध्यवसायवे अहने । मिय पणिहाणे । मृगमारवानाय प्रविधान चितनवे अहने एकाग्रचित्त । मियवहाए । मृगवधभणी । गता एहमिएत्तकाइ । मृगवा दीसेवे हमकरीने । म

एमिएसिकाउं ख्रन्नयरस्समियस्स वहाए उसुनिसिरइ, ततोण नते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सियचउकिरिए सियपचकिरिए, सेकेणठेण गोयमा ! जेन्नाविए निसिरणयाए तेहि जेन्नाविए निसि रणयाएवि विद्धसणयाएवि नोमारणयाए चउहिं जेन्नाविए निसिरणयाएवि विद्धसणयाएवि मारणयाएवि तावचण सेपुरिसे जाव पचहिकिरियाहि पुठे सेतेणठेण गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियप चकिरिए । पुरिसेण नते ! कच्छसिवा जाव ख्रन्नयरस्समियस्स वहाए ख्राययकन्नायय उसु ख्रायामेत्ता चि

परस्समिगस्मवहाए । भनेरा कार्द एक मगना वधभणी मृगने मारवाभणी । उसुनिसिरइ । तीरमतें काढे मस्वा मेले । वताभतेसेपरिसे । तिवारे हे भगवन् ! तेपुरुष । कइकिरिए । केतलोक्रियाना करणहार कहीये इतिप्रश्न । गोयमा सियतिकिरिए । हेगोतम ! किवारेके तीनक्रियानो करणहार कहीये । सियचउकिरिए । किवारे चारिक्रियानो करणहार । सियपचकिरिए । किवारे पांच क्रियाना करणहार, गौतम कहेछे—सेकेणठ्ठेणभते । तेस्या माटे भगवन् ! इमकहु । गोयमा जेणविएनिसिरणयाएविति । हेगोतम ! जेभणीकर्ता बाणकाढे तहने कायिकादि तीनक्रियाये करणो कहीये । जे भविएनिसिरणयाएवि । जेभणी वली बाणकाढे पछिवे मुकाण थको । विद्धसणयाएवि । धने विध्वस पमाडे वींधावानेकाजे । नोमारणयाएचउहि । पछिमारे नहीं ते तेतलामाटे तेहने कायिकादि चारक्रियालागे । जेभविएनिसिरणयाएवि । जेनणीकर्ता तीरपणि काढे । विद्धसणयाएवि । विध्वस नाम पमाडे । मारणयाएवि । घने मारे पछिवे । तावचणसेपुरिसे । तेतलावार ते पुरुष । जावपंचहिकिरियाहिपुठे । यावत् कायिकादि पंचक्रिया मेंकरणा तेहने पंचक्रिया लागे । सेतेणठ्ठेण गोयमा । ते तेणे अर्थे हेगोतम ! इमकहु । सियतिकिरिए । किवारे तीनक्रिया लागे । सियचउकिरिए । कदाचित् चारक्रियालागे । सियपचकिरिए । कदाचित् पांचक्रियालागे, वलीगोतम पूछेछे— । पुरिसेणभतेकच्छसिवा । पुरुष हेभगवन् ! कच्छादिकनेवि षे । जावअन्नयरस्समियस्सवहाए । यावत् धनेरा मांहि एक मृगना वधभणी मृगमारवानेकाजे । आययकन्नायतंउसुंआयामेत्ता । दीर्घ कानताइ ते तीर

न्युपगतमेवाय मुग्गरतया प्राह क्रियमाणं धनु-काण्डादिकृतमिति व्यपदिश्यते, यस्तिसु प्राग्वत् तथा सन्धीयमान मत्यञ्चाया मारोप्यमाण कामठ न्मुर्वा रोप्यमाणमत्यञ्च सन्धितशतसन्धान भवति तथा निर्ग्रन्थमान मितरां वतुलीक्रियमाणं प्रत्यञ्चाकपर्वेन निर्वृतित वृत्तोकार मवत्त कामठ स्थान रोप्यमाण मत्यञ्च सन्धितशरसन्धान भवति तथा निसृज्यमान मिक्षिप्यमाण कुरणनिसृष्ट भवति यदाच निसृज्यमान निसृष्ट तदा निसृज्यमानतया धनुर्धरेण कृत साकार कृत भवति तथा निसृज्यमान मिक्षिप्यमाण कुरणनिसृष्ट भवति कारणनिसर्गोच मृग सर्वेष मारित, स्रात योच्यते ॥ जेमियमारेत्यादीति ॥ इहच क्रियाः प्रक्रान्ता स्ताधा मन्त स्था तेन कारणनिसृष्ट भवति

ठिज्जा ग्रुसयरेपुरिसे मग्गउ ग्रागम्मसयपाणिणा ग्रसिणा सीसंछिदेज्जा सेयउसुताएचेव पच्चायामणयाए त मिभविधेज्जा । सेणन्नते ! पुरिसे कि मियवेरेणयपुठे पुरिसवेरेणपुठे ? गोयमा ! जेमियमारेइ सेमियवेरे णपुठे , जेपुरिसमारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे । सेकेणठेणन्नते ! एवबुच्चइ जाव सेपुरिसवेरेण पुठे । सेणूण गो

प्रते ग्रावीने धाकर्षीने । चिंड्ज्या । वळोरने एतले । पचवरेपुरिसेमग्गग्रा । पसेरो कार्द एक पुरुष पूठाबी । ग्रागम्य । ग्रावीने । सयपाणियाग्रसिणा । पायने खांडाकरी तरवारिकरी । सीसछिदेज्जा । तेहना मस्तकमते छेदे तिवारे । सेउसुताचेव पुव्वायामणयाए । तेतीर जेसगमेडिमोने पूर्वे ग्राकर्षो ह ता ते पुरुषनाघातथी छूटा तिवारे निये । तमिमविधेज्जा सेपुरुमतेपुरिसे किमियवेरेणपुठे । ते समयते नीचे ते कवाकाहमारे हेभगवन् पुरुषमाया मोहर चकारा म् समनायेरी रहो वेरते वेरनाहेतु भणो कयकर्षोमे पक्वा पाप ते करखो पक्वा । परिसवेरेणपुठे । पदूपमे वैर पापेकरी फरस्यो इतिप्रश्न उत्त र । गोयमा जेमियमारेइ । हेगोतम जिके पर्युपे मृग पथवाभेकाले तीर साध्याथवा । सेमियवेरेणपुठे । ते पुरुष मृगनेवेर पाप तिवेकरी फरस्यो । जेपु रिस मारेइ सेपुरिसवरेणपुठे । पमे जेने पुरुष पुरुष मार्या तेपुरुष पुरुषनेवेरेकरी फरस्या तेहने पुरुष वेरसाथे । सेकेणठेणंभते एवंवुचइ । तेस्यामाटे हेभग वन् ! एमकह्यं मृगना मारवाथकी समता पापलागो । जावसेपरिसवेरेणपुठे । यावत् पुरुषना मारवाथकी पुरुषनो पापलागो इतिप्रश्न उत्तर । सेनूण गोयमा कज्जमाणेकडे । ते निचे हेगोतम धनुपतीर करवामांथी तेवोभाजलोवे । सन्धिज्जमाणेसंधिए । धनुपमेविषे तीर सधवामांथी तेसाथी कहीसे

रोसे मृगादिवधे यावत्यो यत्र यत्र कालविभागे भवन्ति तावती तत्र दर्शयन्नाह ॥ अतोऽन्तरमित्यादि ॥ षण्मासान् यावत्प्रहारहेतुकं मरणं परतस्तु परिणामान्तरापादितमितिकृत्वा षण्मासा दूद्र प्राणातिपातक्रिया न स्यादिति हृदयं मतम् व्यवहारनयापेक्षया प्राणातिपातक्रियाव्य

यमा ! ऊसमाणेऊसे संधेज्जमाणेसंधिए निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए निसिरिज्जमाणेनिसिठेत्ति वत्तव्वसिया ।
हंता भगव ! ऊसमाणेऊसे जाव निसठेत्ति वत्तव्वसिया सेतेणठेणं गोयमा ! जेमियमारेइ सेमियवेरेणपु
ठे, जेपुरिसमारेइ सेपुरिसवेरेणपुठे , अतोछण्हमासाणमरइ , काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुठे ,

पाराप्या कहीये तथा । निव्वत्तिज्जमाणेनिव्वत्तिए । धनुषनविषे जयबाण तेहाथीने धनुषमांहिथाकार करवा मांथो ते कीधा कहीये । निसिरिज्जमा णेनिसिट्ठत्तिवत्तव्वसिया । धनुषथकीनीसरवामांथो बाण ते नीकल्यो कहीये एहवो वक्तव्यता कहवा हुवे, इस्यो भगवंत गौतमनेकह्यु तिवारे गौतम क हेछे—हंता भगवं । हांभगवन् । कल्पमाणे बाण । धनुषथकी करवामांथो तेणीथी कहीये । जावनिसिठेत्तिवत्तव्वसिया । यावत् धनुषथी तीरनीसरवा मां थो ते नीसर्यो कहीये, ते नीसरवानी क्रियाना करनार धनुर्धर तेमाटे बाणना नीसरवाथी मृग तेणेकोजपुरुषे मार्यो । सेतेणं गोयमा जेमिय मारेइ । तेमाटे हेगौतम ! इमकह्य जेमृगमारे तेपरय । सेमियवेरेणपुठे । तेमृगने वेरकरी पापेकरी फरस्यो । जेपुरिसंमारेइ । यमे जेपुरुष खड्गवत तेणे परवे भमहर मार्यो । सेपुरिसवेरेणपुठे । तेहने पुरुषना पापसामा तेमाटे पुरुषवैरकरी फरस्यो । अतोछण्हमासाणमरइकाइयाए जावपचहिकिरि याहिपुठे । छमासमांहि आमृममरे ता तेहने यावत् पंचक्रियालागे छमासतांई मृगने प्रहार हेतुक मरणछे, तिवारपछे परिणामांतरनो मरण इसो करी छमासनो उपरांत प्राणातिपातनी क्रियाते धनुधरपुरुषने नही एपरमार्थ जाणवा, पणकि व्यवहारनो अपेक्षाये प्राणातिपातनीक्रिया व्यपदेश मात्र देखाडवाने अर्थ अथवा जिवारेहो प्रहार हेतुक मरणहुवे तिवारेहो प्राणातिपातनी क्रिया लागे यावत् कायिकी आदिदेई पंचक्रिया फ रस्या कहीये । बाहिछहमासाणमरइकाइयाए जावपारियावणियाए चउहिंकिरियाहिपुठे । जो बाहिर छमासके मरेता तेपुरुषे कायिकी आदि

पन्नगमाशोपदसमाय मुक्त, मन्यथा यदायदा प्यधिरुतप्रहारेणुप मरन भयति तदेव प्राणातिपातक्रियति ॥ सत्तीएत्ति ॥ शक्तया प्रहरणविशेषे ण ॥ ममनिपमज्मति ॥ छन्यात् ॥ सयपाणिणत्ति ॥ स्वकहस्तेन ॥ सेत्ति ॥ तस्य ॥ काइयाएत्ति ॥ कायिकया शरीरस्पन्दरूपया भाधिकरणिकया श स्त्रव्यापाररूपया प्राद्वेषिकया मनोदुःप्रणिधानेन पारितापनिकया परितापनरूपया प्राणातिपातक्रियया मारकरूपया भास्पृष्टेतिइत्यादि श्र

याहि छण्हमासाण मरइ , काइयाए जाव पारियावणियाए चउहिकिरियाहि पुठे। पुरिसेण भंते! पुरिस सत्तीए समभिधसेज्जा सयपाणिणाया से असिणा सीसछिंदेज्जा । तेणभंते ! सेपुरिसे कइकिरिए ? गोय मा ! जावचण सेपुरिसे तपुरिस सत्तीए समभिधसेइ , सयपाणिणावा सेअसिणा सीसछिदइ । तावचण से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइयाए पचहिकिरियाहि पुठे । आसयावहएणय अणयकखवत्तीएण पुरिस

इस मास पारितापनकी क्रिया तरि चारकिरियाओं फरसे पचलेखीभाव छमासपछे मरेता तेमृगमाक्षको मूपानको तेमाटे प्राणातिपातकी क्रिया नागेकी यचोमाननपूछेछे—पुरिसेणभंतेपुरिस सत्तीएसमभिधसेज्जा । पुरुष हेभगवन् ! पुरुषप्रते शक्ति भालोतिणे करी भथवा शक्ति प्रहरणविशेषेकरी क नें । म स्वपाणिनावा । भथवा पोताने हाथसूं । सेपसिणासीसछिदेज्जा । तेपुरुष तरवारेकरी माथो छेदे । तभोंणभंतेपुरिसेकइकिरिए । तिवारे कहाक्या मवारे हेभगवन् ! तेपुरुषने केतली क्रियामागे इतिप्रश्न उत्तर । मायमा जावचणसेपुरिसे । हेगौतम ! जेतलोकाल तेपुरुष । तंपुरिस सत्तीए अभिधसेइ । तेपुरुषप्रते शक्ति प्रहरण विशेषकरी हर्णे । सयपाणिणा । भथवा पोताने हाथेकरी । सेपसिणासीसछिदइ । तेपुरुष तरवारसघाते । तावचणसेपुरिसे । ते तलाकाल ते पुरुष । काइयाए । कायिकीक्रिया । पडियरणियाए । अधिकरणकीक्रिया । जावपाणाइवायकिरियाए । यावत् प्राणातिपातकी क्रि या । पचहिकिरियाहिपुठे । पचक्रिया संघाते फरस्याकहीये तेहने पंचक्रियालागे । भासन्नवहएणय अणवकखवत्तीएणपुरिसवेरेणपुठे । भासन्न ढुकडो वधकने जेहथकी एतले तत्कालमधा जेजीव तथा जे पुरुषनो वधकीधोछे तेहथकी भायो जे पापटालिवानेविषे निरपेक्षइति भापणा पराया प्राणनो

तथा धनिध्वंसको मिना या; छिरम्बेता पम्बजि: क्रियाजि' स्पृष्ट, तामा पुरुषवैरेणव स्पृष्टो' मारितपुरुषवैरिभावेन किम्भूतेमेत्याह भासको वधो यम्मा ह्रेरा त तथा तेमा सम्प्रपकेन प्रवतिथ वैरा ष्टवो वधकस्य तमेव वध्य माश्रित्या म्यतोवा; तत्रैव जन्मनि जन्मान्तरेवा यदाह — वहमारक्षमन्नस्ता यराकपरपक्षविलोयमावेश । मम्नुवहमोउम्मुठे दसगुणिमेठएकसिकयावति ॥ १ ॥ यस्समुच्चये मनवकाङ्क्षया परमावनिरपेक्षा स्वगतापायपरिहारनिरपेक्षावा वृत्ति वर्तेन यत्रैव वैरे त तथा तेमा मवकाङ्क्षवृत्तिकेनेति क्रियाधिकार एवेदमाह ॥ सरिसयति ॥ सदृशको कौशलप्रमाणादिना ॥ सरित्तयति ॥ सदृक्षयो सदृक्षत्वयी ॥ सरिव्वयति ॥ सदृग्वयसौ समानयौवनाद्यवस्थौ ॥ सरिसभंडमत्तोवगरणति ॥ भाण्ड भाजनं मृन्मयादिमात्रो मात्रायक्त उपधिः सच कांस्यभाजनादि भोजनभक्तिका मात्रकमात्रावा भविमादिद्रव्यरूपः परिच्छेद उपकरणा न्यनेक धा वरत्राप्रहरणादीनि ततः सदृशानि भाण्डमात्रोपकरणानि ययो स्तौ तथा अनेनच समानविभूतिकत्व तयोरभिहित ॥ सवीरिएति ॥ सवीर्यः

वेरेणं पुठे । दोज्जते ! पुरिसा सरिसया सरित्तया सरिसव्वया सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धिं संगामं संगामेइ , तत्थणं एगेपुरिसे पराइणइ , एगेपुरिसे पराइज्जइ , सेकहमेयंभंते ! एवं ? गोयमा ! सवीरि

धपेक्षा मववरतो पुरुष वैरसबाते मरणा क्रियाधिकारनेविषेक कहेछे—दोमतेपुरिसासरिसयासरित्तया । हेभगवन् पुरुष बेह सरीखा प्रमाणादिकरी वासणके सरीखो तथा वर्णि बेहनो । सरिसव्वया सरिसभंडमत्तोवगरणा । सरीखी वयना यवोहे, भांड मृन्मयादि भाजनमात्र मात्रायेकरी उप धि कांस्यभाजनादि भोजनना भांडा पथिमादि द्रव्यरूप परिच्छेद उपकरण धनप्रकारना प्रहरणादिक तेबेहना सरीखाछे एतलेसमानविभूतिपणो बेहनो कह्यो । अण्णमण्णेणंसद्धिंसंगामंसंगामेइ । तेबेहमांहोमांहि सघाते संग्राम सङ्ग्रामे एतलेमांहोमांहि युद्धकरे । तत्थणंएगेपुरिसेपराइणइ । तिहां तथा संग्रामकरे, बेहपुरुषमांहोमांहि एकपुरुष कोपे जयपामे । एगेपुरिसेपराइज्जइ । एक पुरुष हारे पराजयपामे । सेकहमेयंभंतेएवं । तेकिम एह हेभगवन् ! एह बोहविचारे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सवीरिएपराइणइ । हेगोतम । वीर्यवंत पुरुषते जयपामे कोपे । अवीरिएपराइज्जइ । वीर्यरहितपुरुष ते पराजय

वीरियवज्झाईति ॥ वीर्यवर्ज्यं येषान्तानि तथा वीर्यप्रस्तावा दिदमाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सिद्धार्थावीरियत्ति ॥ सकरणवीर्याभावादवीर्या सिद्धाः ॥ सेलेसिपडिवन्नयायत्ति ॥ शीलेश सर्वसंवररूपचरणप्रभुस्तस्येय मवस्था शैलेशी शैलेशोवा मेरु स्तस्येव या अवस्था स्थिरता साधर्म्यात् सार्शैलेशी

एपराइणइ, अवीरिए पराइज्जइ । सेकेणट्ठेण जाव पराइज्जइ ? गोयमा ! जस्सणवीरियवज्झाइ कम्माइ णोयडाइ णोपुट्ठाइ जाव नोअभिसमन्नागयाइ णोउदिन्नाइ उवसंताइ भवंति सेण पराइणइ, जस्सणं वीरियवज्झाइ कम्माई बद्धाइ जाव उदिन्नाइ नोउवसंताइ भवंति सेणंपुरिसे पराइज्जइ, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एववुच्चइ सवीरिएपराइणइ अवीरिएपराइज्जइ । जीवाण भंते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! सवीरियावि अवीरियावि, सेकेणट्ठेण भंते ! एववुच्चइ ? गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा—

पामे हार, मातसमूहके—सकमइपभतेजामपराइजार । ते भामाट हेभगवन् । इमवस्य यावत् सवीय कोपे भवीस हारे । मायमा अस्मर्यवारियवज्झादय आदे । हेगौतम । येपुरुषमे भवाच्यमसारे, वीयवध्य वोमभवावोम्य एहयावमन्ते । यावहारयापहत । बांधानवो आरभ्यावडो । यावचायभिसम न्यागतार । यावत् साइमानवो पाच्या । याउदिवार । उदय नदो पाच्या । उवसतार भवति । उपमोत वयाहवे । सेवपरायवर । ते पुरुष भवपामे कोपे । अमवनीरियवज्झार कम्मार ववार । अपुरुष योमवठ योमभवचासाम्य । एवमा बम बांधाके । यावउदियार । यावत् उदय पाच्याके । याउव सतार । सपयम्यामवो वृवे । सवपुरिसेपरायवार । ते पयुष भवाभ्यासवारे, परावमयपामे हारे इत्यर्थ । सेतवहेण गौयमा एवपुचर । ते तेपे पमे हेगौत म ! इमवर्ध । सवीरिएपरायवर । वोचवहित अपुरय ते अवपासे जीपेइत्यम । अवीरिएपरायवार । अवीर्य वोमरहित तेपुरुष परावमयपामे हारे इत्यर्थ वोवना प्रस्तावो एवमेवे—जीवाभभते किमवीरिया । जोत भवाभ्यासवार हेभगवन् ! सवीयवहे ? वीयसहितवा भवता । अवीरिया । अवीयवहे वीयर हितवे इतिप्रश्न उत्तर । मायमा सवीरियावि । हेगौतम । वोयसहित पवितके । अवीरियावि । वीयरहित पवित्र । समेवहे भमतेएवपुचर । ते एवे पवे

माच भवया याममिरोधे पम्बहस्वाबरोचारकासमामा स्मतिप्रभका ये ते तथा ॥ सद्विवारियर्वसवीरियत्ति ॥ वीयान्तरायक्षयक्षयोपशमतो या वीर्यस्य लब्धिः सैव तद्धुत्वा द्वीर्ये लब्धिवीर्यं तेन सवीर्या एतेपाम्च क्षायिकमेव लब्धिवीय ॥ करणवीरियत्ति ॥ लब्धिवीर्यकार्यभूता क्रिया करण

ससारसमावरणगाय , असंसारसमावरणगाय , तत्यणजेते असंसारसमावरणगा तेणसिद्धा , सिद्धाण अवी रिया , तत्यणजेते ससारसमावरणगा ते दुविहा पन्नत्ता तजहा—सेलेसिपडिवरणगाय असेलेसिपडिवरण गाय , तत्यणजेतेसेलेसिपडिवरणगा तेण लद्धिवीरिएण सवीरिया , करणवीरिएण अवीरिया , तत्यण जेते असेलेसिपडिवरणगा तेण लद्धिवीरिएण सवीरिया , करणवीरिएण सवीरियावि अवीरियावि , से

हेभगवन् । एमकह्यो जीव सवीर्यपणिवे अवीर्यपणिवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवादुविहापन्नत्तातजहा । हेगौतम ! जीवना बेभेद कह्या तेकहेछे—संसारसमावन्नगाय असंसारसमावन्नगाय । जेजीव चारगतिनेविषे रह्या ते संसार समापन्न कहीये, जेजीव चतुर्गति भ्रमणरूपसंसार तेहथी रहितथया ते असंसारसमापन्न एतले मोक्षपहोता ते जीवकहीये । तत्यणजेतेअसंसारसमावन्नगा । तिहां चवाक्यालंकारे, बेपक्षमाहे जे असंसारसमापन्नजीव चतुर्गतिसंसार भ्रमणरूपथी रहितथयाछे मुक्तिगया । तेणसिद्धा सिद्धाणअवीरिया । ते वाक्यालंकारे, सिद्धकहीये, सिद्धने करणवीर्यना अभावथी अ वीर्यछे । तत्यणजेतेसंसारसमावन्नगा । तिहां बेपक्षमाहे जे चतुर्गतिसंसारभ्रमणरूप संसारसमापन्न जीवछे । ते दुविहा पन्नत्ता तजहा । ते पणि बे प्रकारना कह्या तेकहेछे । सेलेसिपडिवन्नगाय । चउदमेंगुणठाणे अयोगी जीव ते सेलेसी प्रतिपन्न कहीये । असेलेसिपडिवन्नगाय । तेहथी विपरीत ते असेलेसी प्रतिपन्न कहीये, प्रथमगुण ठाणाथी मांडी तेरमांतांई । तत्यणजेतेसेलेसिपडिवन्नगा । बे विपक्षमाहे जेजीव शैलेशीप्रतिपन्नछे तेभवस्थामते पाम्याछे तेणंलद्धिवीरियएणंसवीरिया । वीयान्तरायना क्षयथकी जेवीर्यछे ते लब्धिवीर्य कहीये तेणे सवीर्यछे । करणवीरिएणंअवीरिया । उत्थानादि जे क्रिया ते करण वीर्य कहीये ते करणवीर्य अवीर्यछे । तत्यणजेतेअसेलेसिपडिवन्नगा । तिहां बेपक्षमाहे जे असेलेसी प्रतिपन्नछे । तेणंलद्धिवीरियएणंसवीरिया ।

तद्रूपं वीर्य करणवीर्य ॥ करणवीरिएणमवीरियाविसवीरियाविति ॥ तत्र सवीर्या उत्थानादिक्रियावन्तो अवीर्यास्तु उत्थानादिक्रियाविकला सेषा

तेण० गोयमा ! एवयुच्चइ जीवादुविहा पणता तजहा—सवीरियावि अवीरियावि । नेरइयाणभंते ! किं सवीरिया अवीरिया ? गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया करणवीरिएण सवीरियाय अवीरियाय, सेकेण० गोयमा ! जेसिण नेरइयाण अत्थिउठाणेकम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे तेण नेरइया लद्धि वीरिएणवि सवीरिया करणवीरिएणावि सवीरिया, जेसिण नेरइयाण नत्थिउठाणे जाव परक्कमे तेण नेर इया लद्धिवीरिएण सवीरिया करणवीरिएण अवीरिया, सेतेणठेण जहा नेरइया एव जाव पचिंदियतिरिक्ख

ते सयाणमारि, लब्धिवीर्य करी सवीयछे । करणवीरिएण सवीरियावि अवीरियावि । करणवीर्य करी सवीयपणिहुवे, उत्थानादिक्रियावत ते सवीय पने उत्थानादिक्रियायेंकरी विकल ते अवीर्यपणिहुवे, ते अपर्याप्तादिकाले जाणवा । सेतेणट्ठेणं गोयमा एवंवुच्चइ । ते तेणेंअर्थेकरी हेगोतम ! एमकह्य जीव दुविध पयत्ता तंजहा । जीव बेप्रकारना कह्या, ते कहेछे—सवीरियावि अवीरियावि । एकवीर्यसहितपणिछे एकवीर्य रहितपणिछे, सवीगोत मपूछेछे—नेरइयाणभंते किंसवीरिया अवीरिया । नारकी हेभगवन् ! स्यूं वीर्य सहितछे ? अथवा वीर्यरहितछे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा नेरइयालद्धि वीरिएण सवीरिया । हेगोतम ! नारकी लब्धिवीर्येंकरी सवीयहुवे, एतले वीर्यसहितहुवे, अने । करणवीरिएण अवीरियाय सवीरियाय । करणवीर्य करी अवीयपणिछे वीर्यसहितपणिछे । सेकेणट्ठेणंभंते । ते स्यामाटे हेभगवन् ! एमकह्यं इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जेसिणनेरइयाणअत्थि । हेगोतम ! जेह नार कीनेछे । उठाणे कम्मे बले वीरिए । उत्थान कर्म बलवीर्य । पुरिसक्कारपरक्कमे । पुरुषाकार पराक्रमछे । तेणनेरइयालद्धिवीरिएणं सवीरिया । तेणे नारकी लब्धिवीर्य करी सवीय वीर्यसहितछे । करणवीरिएणवि सवीरिया । अने करणवीर्य करी पणि सवीर्यछे तथा । जेसिणनेरइयाणनत्थिउठाणे । जेह नार कीने नथी उत्थान । जावपरक्कमे । यावत् पराक्रम तांई कहवा । तेणंनेरइयालद्धिवीरिएणं सवीरिया । तेहे नारकी लब्धिवीर्य करी वीर्यसहितछे । कर

पयाप्तादिकालेऽवमत्याइति ॥ नवरं सिद्धवज्जात्राणियद्वति ॥ यौधिकजीवेषु सिद्धा सन्ति, मनुष्येषु तु ते नेति मनुष्यदण्डकेऽपीयमप्रतिपिद्धस्वरूप माप्येयमिति ॥ प्रथम शते षष्ठम उद्देशः ॥ ८ ॥ षष्ठमोद्देशकान्तेऽपीर्यमुक्त जीवार्थ जीवा गुरुत्वा घ्यासादयन्तीति गुरुत्वादि प्रतिपादनपर तथा सप्तमस्या पर्युक्ता ॥ गरुएति ॥ तत्प्रतिपादनपरश्च नवमोद्देशक सप्तम सूत्र ॥ कहणमित्यादि ॥ गरुयत्तति ॥ गुरुकत्व मशुभ

जोणिया, मणूसा जहा ओहियाजीवा, नवरं सिद्धवज्जात्राणियव्वा, वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा नेरइया सेव भंते २ त्ति ॥ पढमसए छट्ठमोद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ कहण्णं भंते! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा! पाणाइवाएणं मुसावाएणं अदिन्नमेहुणपरीसह कोहमाणमाया लोह पेज्जदोसकलह अब्भक्खाण

जयोरियच पयोरिया मेतेवई य जहाचेरइया। वरचवोबेंबरी वीर्यवतमशे ते तेवें भव हमोतम। इमकहु इत्यादि पूर्ववत् जिम नारकीकह्या। एवला वपचिंदियतिरिक्खजाणिया। इम यावत् पचेंद्री तिवचयोनिकताई कहवो। मनूसाजहाओहियाजीवा। मनुष्यविषे जिम समुचे ओघेजीवकह्या तिम मनुष्य कहवा। नवरसिद्धवज्जाभाणियव्वा। एतला विशेष समुचय जीवदंडकमाहे सिद्धते दंडकमाहे सिद्धनकहवा। वाणमंतरजोइस वेमाणियाजहा नरइया। वानव्यंतर १ ज्योतिषी २ वैमानिक ३ एतीनदंडक जिम नारकीकह्या तिमकहवा। सेवभंते २ त्ति। तहत्ति हेभगवन्! तुम्हेकह्यु ते सत्यछे ए ध्यया मह्रो। पढमसयस्सच्छट्ठमो। एपहिला शतकनो आठमा उद्देशा समत्तो कह्यो ॥ ८ ॥ आठमा उद्देशाने अंते जीवकह्यो तेजीव नो और गरवादिकपणे तेकहेछे गौतमपूछेछे—कहणभंतेजीवागरुयत्तहव्वमागच्छति। किणप्रकारे कवणप्रकारे हेभगवन्! अशुभकर्म उपचयरूप अधोगतिगमनरूप ते गुरुपणु उतावलोपामे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पाणाइवाएणं। हेगौतम! प्राणो जीवने अतिपात हणवेकरी १। मुसावाएणं। झूठ वचन ना बोलवाथी २। अदिन्नादानेण। अणदीधोवस्तुना लेवाथी ३। मेहुणेण। मैथुनथी ४। परिग्गहेण। परिग्रहथी परिग्रहते मूर्च्छारूप ५। क्रो ध मान माया लोभ पेज्ज द्वेष कलह अभ्याख्यान। पैशुन्यपरपरिवाद। क्रोधेकरी ६ मानेकरी ७ मायाएकरी ८ लोभेकरी ९ प्रेमेकरी १ द्वेषेकरी ११

कर्मोपचयरूप मपक्षा द्रमगहेतुभूत सपूकत्वं गौरवविपरीतं ॥ एव भाउलीकरेंतित्ति ॥ इहैवशाद्दः पूर्वोक्ताभिलापससूचनार्थः सचैव–कहण्णंभंते जीवाससारं भाउलीकरेंति ? गोयमा ! पाणाइवायएण मित्यादि ॥ एव उत्तरत्रापि तत्र ॥ भाउलीकरेंतित्ति ॥ प्रचुरीकुर्यन्ति कर्मभिरित्यर्थं ॥ परित्तीकरेंतित्ति ॥ स्तोक कुर्यन्ति कर्मभिरेव ॥ दीहीकरेंतित्ति ॥ दीर्घमचुरकालमित्यर्थः ॥ ह्रस्सीकरेंतित्ति ॥ अल्पकालमित्यर्थः ॥ अणुपरियट्टतित्ति ॥

पेसुन्न रति अरति परपरियाए मायामोसमिच्छादसणसल्लेण एवखलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण एवंखलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति । एव ससारंआउलीकरेंति , एवपरित्तीकरेंति दीही

वनइ राइ तिर्वेकरो १२ पारकावाद बकवावा १३ राजकारादिकमेनिमे चाडोकरवायो १४ । ए । दुष्टाङ दुर्भागीष सुचीष १५ । परपरिवाएण । परप रनारे वरो १६ । मायामोसेन । कदेइट मुषेमिहपर्व परने दु पमाडे पाडव् १७ । मिच्छादसण सल्लवं । देवगुरुधर्मयको पवि मनने मिथ्यात्व पर्वू न मिटे तेमिथ्यादमनमन्वश्रोये १८ । एवखलु गोयमा । दम निवे हेगोतम ! जोवागरुयत्तहव्वमागच्छति । जोव गुरुकपणू मगुभकर्मोपचयरूप गौणोगम मनेतु जनावमा पामे, इमोगौतमपूछेछे—कहण्णंभतेजीवालहुयत्तहव्वमागच्छति । किसिमकारे हेभगवन् ! जोवलहुपत्त कहतां गुरु पणाथो विपरीत व लघुपणा जनावमापामे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणाइवायवेरमणेन । हेगोतम ! प्राणातिपात जोवहिंसा तेहथो वेरमण कहता निवर्त्तवू । जावमिच्छादसणसल्लवेरमणेण । यावत् मिथ्यादर्शन सल्य वेरमणतांई पढार पापस्थानक कह्या तेहने निवर्तन करो । एवखलु गोयमा इम निश्चे हेगोतम । जोवालहुयत्तहव्वमागच्छति । जोव गरुपणाथो विपरीत ते लघूपणं जनावसापामे । एवंआउलीकरेंति । इम कर्मेकरी संसार प्रचुरकरे । एवं परित्तीकरेंति । इम समसारा अल्पकरे । एवंदीहीकरेंति । इम दीर्घकालकरे । एवंह्रस्सीकरेंति । इम ह्रस्व अल्पकालकरे । एवमणुपरियट्टति । इम संसार मारे २ भमे । एवंवीईवयति । इम ससार तरे । पसत्थाचत्तारि । लघुत्व १ परित्त २ ह्रस्वत्व ३ ससार लंघन ४ एचारि मोक्षना अंगछे तेमाटे प्रशस्त

पीम पुन्येन घ्रमन्तीत्यथः ॥ धीरवर्धतिति ॥ व्यतिव्रजमित्यतिक्रामन्तीत्यर्थ ॥ पसत्यावत्तारिति ॥ सघुत्वपरीतस्य स्वस्यव्यतिव्रजनदवरुका प्रगल्भा मात्राकृत्यात् ॥ चपमत्यावत्तारिति ॥ गुरुत्वाकुत्स्वदीपत्वानुपरिवर्तमदवकुकाममघुसा घमोसाकृत्यादिति गुरुत्वलघुत्वाधिकारा दिद माह ॥ मतमेवमित्यादि ॥ इह चेयं गुरुलघुव्यवस्था-निश्चयतःसघुरु सवतुयामविज्ञपदव । ववहारवंवघुज्जइ यायरवषेसुबावेसु ॥ १ ॥ अगुरु

करेंति, हस्सीकरेंति, एय श्रगुपरियट्टंति, एयवीइयंयति, पसत्था चत्तारि श्रप्पसत्था चत्तारि, सत्तमेणं भंते! उवासतरे किंगरुए लहुए गरुयलहुए श्रगुरुयलहुए? गोयमा! नोगरुए नोलहुए नोगरुयलहुए श्रगुरुयलहुए। सत्तमेणं भंते तणुवाए यलहुए? गोयमा! नोगरुए नोलहुए गरुयलहुए नोश्रगुरुयलहुए। एय सत्तमेघणवाए सत्तमेघणोदही सत्तमापुढवी उवासतराइं सव्वाइं जहा सत्तमेउवासतरे जहातणुवाए, एय गरुयलहुएघणवाय घणउदहिपुढवीदीवायसागरावासा। नेरइयाणं भंते! किंगरुया जाव श्रगुरुलहुया?

याचवा। पचत्यावत्तारि। गरुल १ भारमो २ लोपल ३ चनुमवतन ४ एचारि सुभि देवमको तेमाटे चप्रयस्त वाववा। गुरुल लघुल चधिकार वो एवइहे—भगमेणमतेउवासतरे। मातमो एतले सातमो पृथिवीनो मोचसा हेममवत् चवकाशांतर। किं भरए लहुए गरुय लहुए। गुं गरुये १ लघु रे मरगुये। पयद्वडर। पयत् मपूक इतिनग्र उत्तर। गोयमा नागरुए नोलहुए नोगरुयलहुए चगरुयलहुए। हेगोतम गुरुनको एकांतगुरुपणे नचवा ले पवमव दुरे गुरुलघुको चगुरुलघुके। सत्तमेणमतेतणुवाए। सातमा हेममवत् तनुवात सातमो पृथिवीनो मोचमो तनुवात। किमरए लहुए गरुय मरए पनासहर। गुं मरहे? मचवे गुरुलघुके चगुरुलघुके इतिमग्र उत्तर। गोयमा नागुरुए नोलहुए गुरुलहुए नोचगुरुलहुए। हेगोतम गुरुनको लघु मको मरुलघुके चमगुरुलघुको। एवंमत्तमेघणवाए। इम मातमो घनवात। सत्तमे घनोदधी। इमको सातमो घनोदधि। सत्तमापुढवी। इम सातमो व विनो। उवासतराइं समाइ। चवकाशांतर समगाइ जिम सातमो चवकाशांतर कह्यो तिमकह्यो गुरुनको चगुरुनको चगु लघुके चवकाशचास

सुंघडफासा मरूयिसव्वयहींतिमापन्ना । सेसाठ्ठफासा गुरुलघुयामिस्सयचयस्स ॥ २ ॥ चउफासाति ॥ सूक्ष्मपरिणामानि ॥ अठ्ठफासति ॥ बाद
राणि गुरुलघुद्रव्य रूपि अगुरुलघुद्रव्यस्वरूपिरूपिवेति व्यवहारतस्तु गुर्वादीनि चत्वार्यपि सन्ति तत्र निदर्शनानि गुरुर्लोष्ठो पोगमना, लघु धूम
ऊर्ध्वगमनात् गुरुलघु वायुस्तिर्यग्गमनात्, अगुरुल व्याकाशं तस्यनावस्थानादिति, एतानिचा चकाशान्तरादिसूत्र स्यतद्गाथानुसारेणा वगन्तव्यानि
तथथा – उवासघायघणउदहि पुढवीदीवायसागरावासा । नेरइयाइयमत्थिय समयाकम्माइलेसाठं ॥ १ ॥ द्वितीयवव्यकाये उक्तशरीरामधोगतद्रव्याणे ।
दव्वपएसायपज्जव तीयध्धामामिसव्वगुत्ति ॥ १ ॥ वेउव्वियतयाइंपडुच्चत्ति ॥ नारका वैक्रियतैजसशरीरे प्रतीत्य गुरुलघुकाएव, यतो वैक्रियतैजसवर्ग
णात्मके ते एताव गुरुलघुकाएव यदाह–ठरालियवेउव्विय आहारणतेयगुरुलहूदव्वत्ति ॥ जीवचकम्मयपडुच्चत्ति ॥ जीवापेक्षया कार्मणशरीरापेक्ष
याच नारका अगुरुलघुकाएव जीवस्यारूपित्वेना गुरुलघुत्वात् कार्मणशरीरस्यच कार्मणवर्गणात्मकत्वा त्कार्मणवर्गणाना चागुरुलघुत्वा, इत्य

गोयमा ! नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुयावि अगुरुयलहुयावि । सेकेणठ्ठेण गोयमा ! वेउव्वियतेयाइं प
डुच्च नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुया नोअगुरुयलहुया । जीवचकम्मयपडुच्च नोगुरुया नोलहुया नो

भिन्न तनुवात कहा । एम गुरुलघुय सघवात कहवदधि । एम गुरुलघु घनवात अभीदधि । पुढवीदीवासमसागरावासा । पृथिवी द्वीप सागर समुद्र मा
सा भरतादि क्षेत्र एमन गुरुलघु पदे कहवा, अतीतसमयनेक—परस्थानमतेविगुरुपा अगुरुलघुया । नारकी हेभगवन् ! स्युं गुरुवे ? अथवा लघुवे
अथवामगुरुलघु यावत् अथवा अगुरुलघु इतिमन उत्तर । गायमा नागुरुया नालहुया । हेगौतम ! गुरुपणो लघुपणिमठ्ठो । गुरुलघुयावि । पतले गुरुलघु
पणिच । अगुरुलघुयावि । अगुरुलघु पणिचे, गौतम कहेछे– सेकेणठ्ठेणभंते । ते स्यें अर्थे हेभगवन् ! इमकहुं । गोयमा वेउव्वियतेयाइ पडुच्च । हेगौतम ! नार
कीने वैक्रिय तैजस शरीरहो ते आश्रयीने । नोगुरुया नालहुया । गुरुपणो लघुपणो । गरुयलहुया नोअगुरुलहुया । गुरुलघुवे अगुरुलघुपणो केमाटे वैक्रि
यतैजस वर्गणामय ते एतला गुरुलघुकहीयेछे । जीवंच कम्मय पडुच्च नोगुरुया नालहुया नोगुरुयलहुया अगुरुलहुया । जीवनो अपेक्षावें अपुन कार्म

च–अमगमकनामाई यथाक्रमगुरुलघुत्वादृति ॥ नाककाविप्पसरीरेविति ॥ यस्य यानि शरीराणि भवन्ति तस्य तानि ज्ञात्वा असुरादिसूत्रा स्य भयानी तिइस्य तथा सुरादिदेवा नारकवद्वाच्याः पृथिव्यादयस्तु औदारिकतैजसे प्रतीत्य गुरुलघवो जीव कार्मणञ्च प्रतीत्या गुरुलघवो वाय वस्तु औदारिकवैक्रियतैजसानि प्रतीत्य गुरुलघव एव पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चोपि, मनुष्या स्त्वौदारिकवैक्रियतैजसाहारकाणि प्रतीत्येति ॥ धम्मत्थि कायेति ॥ इह यावत्करणा दस्मस्तिकाय आगासत्थिकायत्तिदृश्य ॥ चउत्थपएणति ॥ एते अगुरुलघुत्वमेन पदेन वाच्याः शेषाणान्तु निषेधः

गुरुयलहुया अगुरुयलहुया । सेतेणट्ठेण एवं जाव वेमाणिया । नवरं णाणत्तं जाणियव्वं , सरीरेहि धम्म त्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएण। पोग्गलत्थिकाएणं भंते! किं गरुए लहुए गरुयलहुए अगुरुयलहु ए ? गोयमा ! नोगुरुए नोलहुए गरुयलहुएवि अगुरुयलहुएवि। सेकेणट्ठेण गोयमा ! गुरुयलहुयदव्वाइं

च शरीरमो अपेक्षायें नारको गुरुनहो लघुनहो गुरुलघुनहो अगुरुलघुलोच छे, जीव अरूपीछे तेमाटे अगुरुलघुछे, अने कार्मणशरीर कार्मणवर्गणात्मक अर्थात् कार्मणअपाने अगुरुलघुपणाछे। सेतेणट्ठे गोयमा। ते तेणे अर्थे हेगौतम! नारको गुरुलघुछे, अगुरुलघुपणछे। एम जावबेमाणिया नवरं जाण तत्राविशेष शरीरेहि धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएण। एम यावत् वैमानिकतांइ चउवीसदंडक कहवा एतलाविशेष नानात्वपणु शरीरे जाण न जे त्यांशरीरनुं तेहने तेतला जाणीने कहवा असरकुमारादिकदेवता नारकीनीपरे कहवा, पृथिव्यादिकने तो औदारिक तैजसभाश्री गुरुलघुजीव अने कार्मणशरीरआश्री अगुरुलघु इति वायुकाय औदारिक वैक्रिय तैजसआश्री गुरुलघुजीव कार्मणआश्री अगुरुलघु, एम पंचेंद्रीतिर्यंच पणि मनुष्य औदारि कवैक्रिय आहारक तैजसआश्री गुरुलघुजीव, कार्मणआश्री अगुरुलघु। धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ जीवास्तिकाय ४ एहने अरूपी अर्थाथी अगुरुलघु इणिपदे कहवा बाकी तीनपद निषेधकरवा। पाग्गलत्थिकाएणभंते। पुद्गलास्तिकाय हेभगवन्! किंगुरुए लहुए। स्युं गुरुछे? अथवा लघुछे। गरुयलहुए। अथवा गुरुलघुछे। अगुरुयलहुए। अथवा अगुरुलघुछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा नोगुरुए नोलहुए। हेगौतम। गुरुनही लघुनही

वार्त्ती धर्मास्तिकायादीना मरूपितया अगुरुलघुत्वादिति पुद्गलास्तिकायसूत्रे उत्तर निश्चयमाश्रित मैकान्तगुरुलघुनो रूपमेना भावात् ॥ गरु अगुरुलघुद्रव्यत्वादिति ॥ औदारिकादीनि ४ ॥ अगुरुलघुपदस्थत्वादिति ॥ कार्मणादीनि ॥ समयाकर्माणियचउत्थपएणति ॥ समया अमूर्ताः कर्माणिच का त्मवयगतामकामी त्वगुरुलघुत्वमयां ॥ दव्वलेसपडुच्चतइयपएणति ॥ द्रव्यत कृष्णलेश्या औदारिकादिशरीरवर्ण औदारिकादिकस्य गुरुलघुत्वाति काया गुरुलघुत्वमेव तृतीयविकल्पन व्यपदेश्या भावलेश्यातु जीवपरिणति सास्या अमूर्तत्वा दगुरुलघुत्वमेव व्यपदेश इत्यतआह ॥ भावले तमगुरुलघुउत्थपएणंति ॥ दिठ्ठीदसणेत्यादि ॥ दृष्ट्यादीनि जीवपर्यायत्वेना गुरुलघुत्वा दगुरुलघुलक्षण चतुर्थपदेन वाच्यानि अज्ञानपद स्थिर

पडुच्च णोगरुए णोलहुए गुरुयलहुए नोअगुरुयलहुए, अगुरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च नोगुरुए नोलहुए नो गुरुयलहुए अगुरुयलहुए, समयाकम्माणियचउत्थपएण। कण्हलेसाण भंते! किं गरुया जाव अगुरुय लहुया? गोयमा! नोगुरुया नोलहुया गरुयलहुयावि अगुरुयलहुयावि। सेकेणठेण गोयमा! दव्वलेस पडुच्च तइयपएण, भावलेस्सपडुच्च चउत्थपएण, एव जाव सुक्कलेस्सा। दिठीदसणनाणअन्नाणसण्णासचउ

गरुयलहुएवि। गुरुलघुपनिवे। अगुरुलघुमावि। अगुरुलघुपनिवे। सेकेणठ्ठेणभंते। ते कामार्दि हेभगवन्! इसकाम इतिमश्न उत्तर। गोयमा गरुयलहुय इत्यादि पडुच। हेगौतम! औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ द्रव्यपर्याये। नोगरुए नोलहुए गरुयलहुए। नहीं गुरु नहीं लघु गुरुलघु। ना अगुरुलहुए। अगुरुलघुनहीं। अगुरुलहुयदव्वाइ पडुच। कार्मण मन भाषा प्रतीत आश्रीने। नोगुरुए नोलहुए। गुरुनहीं लघुनहीं। नोगुरुयलहुए। गुरुलघुनहीं। अगुरुलहुए। अगुरुलघुछे। समयाकम्माणिय। काल अमूर्त्त कार्मणवर्गणा एवेने। चउत्थपएण। अगुरुलघुपदे पदे कहवा। कण्हलेसा अनेतिविगरया जाव अगुरुलहुया। कृष्णलेश्या भंताआश्रीने हेभगवन्! समयछे? अथवा लघुछे अथवा गुरुलघुछे अथवा अगुरुलघुछे इतिमश्न उत्तर गोयमा नोगरुया नोलहुया। हेगौतम! गुरुनही लघुनही। गरुयलहुयावि। गुरुलघुपणिछे। अगुरुयलहुयावि। अगुरुलघुपणिछे। सेकेणठ्ठेणभंते। ते

मामंत्रिपतत्वा दधीत मन्यथा द्वारेषु मानपरमेव दृश्यते ॥ हेठिल्लेत्ति ॥ औदारिकादीनि ॥ तद्दयपएसंति ॥ गुरुलघुपदेन गुरुलघुवर्गणात्मकत्वा त् ॥ कम्मगायउत्थपएसति ॥ अगुरुलघुद्रव्यात्मकत्वा त्कार्मणशरीरात्वा मनोयोगवाग्योगौ चतयपदेन वाच्यौ तद्द्रव्याणा मगुरुलघुत्वात् काययो गः कार्मणवर्ज तृतीयेन गुरुलघुत्वा तद्द्रव्याणामिति ॥ सव्वदव्वत्यादि ॥ सव्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि सर्वप्रदेशा स्तपामेव निर्विभा गाद्या मवयवा वर्णोपयामादया द्रव्यधर्मा यते पुद्गलास्तिकायवद्व्यपदेश्या, गुरुलघुत्वेनागुरुलघुत्वमवेत्यर्थः, यतः सूक्ष्मा स्यमूर्तानिच द्रव्या स्यगुरु

त्थपएणणेयव्वाइ, हेठिल्ला चत्तारिसरीरा नायव्वा, तद्दएणपएण। कम्मय चउत्थएणपएण, मणजोगे वइजोगे चउत्थएणपदेण, कायजोगो तइयएणपएण, सागारोवउगो अणागारोवउगो चउत्थपदेण, सव्वदव्वा सव्वप देसा सव्वपज्जवा जहा पोग्गलत्थिकाउ, तीतद्धा अणागयद्धा सव्वद्धा चउत्थएण पएण। सेणूण ज्नत। लाघ

व्यामाटे वेमगत्म्। इमकहुं इतिमत्र उत्तर। मायमा द्रव्यलेस्याप्रमुख तइमपएस। इणीतम। द्रव्यथी लेस्या औदारिकशरीर वर्ण छ मने औ दारिक गरुलघु छे तेमाटे गुरुलघु एतोजेपदे कहवा, जीवपरिणाम विशेष ते अमूर्तपर्यायी। भावलेस्याप्रमुख। भावलेस्या भाव्योगे। चउत्थपएस। चोथे प दरमथ इने पदें कहवा। एव जाव सुक्कलेस्या। इम यावत् शुक्ललेस्या ताई कहवा। दिठीदसणणाणेअणाणसण्णाओचउत्थपएणेयव्वाओ। दृष्टि १ दर्शन २ ज्ञान ३ अज्ञान ४ संज्ञा ५ ए जीवपर्याय पर्यायी अगुरुलघु चोथेपदे कहवा अज्ञानपद इहांकहु ते आत्मना विपर्यपर्यायी कह्युं, अन्यथा इहांअेवि वे ज्ञानपदतोज दीसेछे। हेठिल्लाचत्तारिसरीराचेतव्वा तइएणपदेण। हेठिला एतले औदारिक १ वैक्रिय २ तेजस ३ कार्मण ४ एचारि पहिलाशरीर गुरुलघुपदें कहवा। कम्मयचउत्थएणपएण। कार्मणशरीर चोथेपदे अगुरुलघु द्रव्यपर्यायी कार्मणशरीर छे। मणजोगे वइजोगे चउत्थएणपएण। मनयोग वचनयोग ए बेउ द्रव्यने अगुरुलघु पर्याये तेमाटे चोथेपदे कहवा। कायजोगोतइएण पदेण। काययोग कार्मणवर्जीने गुरुलघुपणो तेहना द्रव्यनेछे ते माटे त्रीजेपदे। सागारोवओगो। ज्ञानोपयोग। अणागारोवओगो चउत्थपएण सव्वदव्वा। दर्शनोपयोग एबेउ चोथे अगुरुलघुपदेंकहवा, धर्मास्तिकाया

मपूनि इतरावितु गुरुलपूनि मदेशपयवासु ततद्रुव्यसम्यन्धत्वेम तसत्स्वनावाद्दति गुरुलपुस्ताधिकारादिदमाह ॥ सेपूवमित्यादि ॥ लाघवि यति ॥ लापवमेय लापयिक्ष मस्पोपपित्व ॥ मप्पिच्छति ॥ मस्पोमिलाप माहारादिपु ॥ ममुच्छति ॥ उपधा वसरदवामुवन्धः ॥ ममेहिति ॥ न्नो गमादिपु परिजोगकाले मनासक्ति रमतिवद्धता स्वजनादिपु स्नेहाभाव इत्यत त्पम्द्रत्र मितिगम्य ममत्वाना निर्यन्थानामप्रशस्त सुन्दर मथ

यिय अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाण निग्गथाण पसत्य ? हता गोयमा ! लाघविय जाव पसत्य । सेणूण भंते ! अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणाण निग्गथाण पसत्य ? हता गोयमा ! अकोहत्त जाव पसत्य । सेणूण भंते ! कखापदोसे खीणे समणे णिग्गथे अतकरेभवइ अतिमसा

दि पटद्रव्य । मध्यपदमा साधपध्वशा । सगलाप्रदेश वेदना भाववोध।नवाव वर्णादिक तथा उपयागादिक द्रव्यधर्म । अगुरुलघुत्वनिश्चयाभो । जिम पु द्गलास्तिकायना वर्णा तिमज्ञवना, तथा सूक्ष्मद्रव्यछे तेहने अगुरुलघुभाव भनेरा बादर लघुद्रव्यने गुरुलघुभावप्रदेश धर्म पर्याय ते बेद्रव्य सवविपर्षे व रो तेहने स्वभावेकहना । तोतदा अनागतवा सवदा अनन्तपरव । अतीतअवा अनागतअवा सर्वाद्धा एवीविपदे एतले अगुरुलघु कहवा, गुरुलघीज एव वेपे—सेणूणभंतेलाघवियं । ते निये हेभगवन् ! बहुमूत भवप उपधि । अप्पिच्छा । आहारादिकनेविपे अपपदक्ता । अमुच्छा । उपधि आदि एराखवामा मूर्छारहित । अगेही । माकन पादि लोभववेगा लोभरहित । अपडिबद्धया । स्वजनादि सनेह रहित । समथाव । श्रमण तपस्वीने । निग्रन्थने । बाह्या भ्यतर अवरहितने । पसत्य । सुंदरछे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा लाघविय । हा गौतम ! थतो बहुमूत भवपउपधि यावत् प्रमस्त सुंदरछे एलाघवि कने मदरता यको, ते क्रोधादिकनाभावविना थाय तेमाटे क्रोधादिदोषनो अभाव देखाडेछे—सेणूणभंते अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणा निग्गथाण पसत्य । ते निये हेभगवन् ! अक्रोधपणो मानरहितपणो मायारहितपणो लोभरहितपणो श्रमणने निग्रथने सुंदरछे इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गोयमा अकोहत्त । हा गौतम अक्रोधपणो । जावपसत्थ । यावत् प्रशस्तपणो सुंदरछे । सेणूणभंतेकखा । ते निये हेभगवन् ! अन्यदर्शनमोवांछा तथा

मा मापमिव मअसं कपभूत मित्याह ॥ मप्पेच्चा ॥ मस्पेच्चारूपमित्यर्थ एव मितरास्यापि पदानि, उक्तालापविक्स्य प्रसस्तता तत्र क्रोधा यनाभाविनाभूत मिति क्रोधादिदोषाभावप्रसस्ताभिधानार्थं क्रोधादिदोषाभावाविनाभूतकाङ्क्षाप्रदोषक्षयकार्याभिधानार्थेन क्रमेणसूत्रे व्यक्तेन मवरं काङ्क्षाइअनान्तरग्रहो पतुर्थो सेव प्रकृष्टो दोषः काङ्क्षाप्रदोषः काङ्क्षाप्रद्वेषो वा रागद्वेषावित्यर्थः काङ्क्षाप्रदोषः प्रागुक्तः प्रदोषस्यच्च काङ्क्षाया स्तद्विषयभूतदर्शनान्तरस्य विषयसत्वादिति, दर्शनान्तरस्य विपर्यसतता दर्शयन्नाह ॥ अन्नउत्थियइत्यादि ॥ मस्यपूर्व विवक्षितसङ्गा दपर सङ्ग स दसिमेया ते मन्यपूर्विका सीर्थान्तरीयाइत्यर्थः एवमिति वक्ष्यमाण ॥ आइक्खंतितित्ति ॥ आख्यान्ति सामान्यतः ॥ भासंतित्ति ॥ विशेषतः ॥ पन्न वेतित्ति ॥ उपपत्तिभि ॥ परूवंतित्ति । मेदकथनतो द्वयो र्व्वाक्ययो रेकस्य वा समयजेरेना पुद्गपकरणे नास्ति विरोध इत्युक्त ॥ एगेजीवेइत्या

रीरिएया यज्ञमोहेयियण पुव्विंविहरित्ता अहपच्छा संवुडेकाल करेइ तओपच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ जाव अंतकरेइ ? हंता गोयमा ! कंखापदोसे खीणे जाव अंतंकरेइ । अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति एवंखलु एगेजीवे एगेण समएण दोआउयाइ पकरेइ तंजहा—इहभवि

पथमपक्षे तथा राम देव मोक्षबोधा जिवें एवो । समवेधिग्यवे । यमध जिवें । अंतकरेभवइ । कमला अंतको करवहार हुवे अंतिमसारोरियणा । केवना शरीरमा मवो । बहुमावैविवच । मवे माहे करीने पवि अपन ये बाक्काक्कारे । पुव्विंविहरित्ता । पच्छिा विचरीने । अहपच्छासंवुडकालकरेइ । पव तिबारपके माहरवित संवृत मरधुया वतो बालकरे तेमरे । तपोपच्छासिज्झइ । तिवारेपछे सीझे । जावअंतकरेइ । यावत् संसारना अंतप्रते क रे मायजाव इतिप्रश्न, उत्तर । हंता गायमा कंखापदोसेखीणे । हां गोतम ! कांक्षादि पाप खीणथका चरमशरीरी । जावअंतकरेइ । यावत् संसारनो अंतकरे मामजाव रतव । हिवे दर्शनना विपरीतपणो कहेछे—अन्नउत्थियाणभंते । अन्यतीर्थी ने बाक्काबकारे हेभगवन् । एवमाइक्खंति । इम सामान्य एपवेंकरे । एवभासंति । इमविशेषपणे कहे । एवंपन्नवेंति । इम हेतुसेतीकरे उपपत्तिकरे । एवंपरूवेंति । इम प्ररूपें भेद करनारो । एवंखलुएगेजीवे

दि शेषाउयाइपकरेइति ॥ जीवोहि स्वपर्यायसमूहात्मकः स च यदैव मायु पर्यायं करोति तदान्यमपिकरोति स्वपर्यायत्वा ज्ञानसम्यक्त्वपर्या यवत् स्वपर्यायकर्तृत्वञ्च जीवस्या भ्युपगन्तव्यमेवा न्यथा सिद्धत्वादिपर्यायाणा मनुत्पादप्रसङ्गइतिज्ञानः, उक्तार्थस्यैव भावनार्थमाह ॥ जमि त्यादि ॥ विर्जातपरिणामा ग्रासि न्समये इहभवो वर्तमानभवो यत्रायुषि विद्यते फलतया तदिहभवायु रेव परभवायु रप्यनेनपेइभवायुः कर समये परभवायुः करवं नियमित, मथ परभवायुः करणसमये इहभवायुः करणं नियमयन्नाह ॥ जंसमयंपरभवियाउयमित्यादि ॥ एव मेकसमय कायता द्वयो रप्यभिधायै कक्रियाकार्यतामाह ॥ इहभवियाउयस्सेत्यादि ॥ पकरणयाएत्ति ॥ करणेन एव खल्वित्यादि निगमनं ॥ एकतेप्रकृतत्विषा

याउयच परभवियाउयंच , जंसमयं इहभवियाउयं पकरेइ तंसमयं परभवियाउयं पकरेइ , जंसमयं पर भवियाउयं पकरेइ तंसमयं इहभवियाउयं पकरेइ , इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयंपकरेइ परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउयंपकरेइ , एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं दोआउयाइं पकरेइ तंजहा — इहभवियाउयंच परभवियाउयंच । सेकहमेयं भंते एवं गोयमा ! जण्णंते अण्णउत्थिया एवमा

मेव समएव दोयाउबाई पकरेइ तबहा। इम निश्चे एकजीव एकेसमसे भाउखाबांधे तिवा विरामनबा जीवसे ते स्वपर्याय समूहात्मकछे ते जिवारे भा उखोबांधे तिवारे बेभवभावाबांधे तेकहेछे—इह भवियाउयच। इहि भवनो भाउखाबांधे वपन। परभवियाउयच। पर भवनो भाउखोबांधे पूर्वे कह्या मननोज भावना कहेछे—जसमयंइहभवियाउयंपकरेइ। जेसमयनेविषे वर्तमानभवनो भाउखा बांधे। तंसमयंपरभवियाउयपकरेइ। तेसमयनेविषे भा गामिभवनो भाउखोबांधे। जसमयंपरभवियाउयं पकरेइ। पमे जेसमयनेविषे पर भवनो भाउखा बांधे। तंसमयंइहभवियाउयंपकरेइ। ते समयने विषे इह भवना भाउखाबा बधकरे। इहभवियाउयस्सपकरणयाए। इम एवे समसे भासपर्यो वेहनोवतीने एतक्रिया कायपणे कहेछे—एह भवना भा उखानो क्रिया करतां। परभवियाउयपकरेइ। परभवनाभाउखानोबंधकरे। परभवियाउयस्सपकरणयाए। पर भवना भाउखानो बधनपणे करता। इ

एवमाइक्खतीत्या द्यनुवादवाक्यस्यास्ते तत्प्रतीत मकेवल मित्यर्थं वाक्यशेषोदृश्यम॰, अतएवमाइंसुमिच्छंतेएवमाहसुति ॥ तत्र ॥ आहसुति ॥ उक्त वन्तो यद्यपि वर्तमाननिर्देशो ऽधिकृते तीतनिर्देशः सर्वो वर्तमानः कालो तीतो भवती त्यस्या र्थस्य ज्ञापनार्थो, मिथ्यात्वञ्चा स्यैव-एकेना ध्यवसायेन विरुद्धयो रायुषो बन्धायोगात् यच्चोच्यते पर्यायान्तरकरणे पर्यायान्तर करोति स्वपर्यायत्वादिति तदनैकान्तिक सिद्धत्वकरणे स मारित्वाकरणादिति टीकाकारव्याख्यानम्तु इहभवायु र्यदा प्रकरोति वेदयत इत्यर्थ॰, परभवायु तदा प्रकरोति प्रबध्नातीत्यर्थ, इहभवायु रुप

इक्खंति जाव परभवियाउयंच जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु, अहंपुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि, एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं एगंआउयं पकरेइ, तंजहा—इहभवियाउयंवा परभवियाउयं वा जंसमयं इहभवियाउयंपकरेइ, णोतंसमयं परभवियाउयं पकरेइ, जंसमयं परभवियाउयं पकरेइ णोतं समयं इहभवियाउयं पकरेइ, इहभवियाउयस्स पकरणयाए णोपरभवियाउयं पकरेइ, परभवियाउयस्स॰ णोइहभवियाउयं पकरेइ एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं एगंआउयं पकरेइ तंजहा—इहभवियाउयंवा पर

भवियाउयंपकरेइ। इह भवना आउखाना बंधवे। एवखलु एगीजीवे। इमनिश्चे एकजीव एगीसमएप। एक समयनेविषे। एगाउयाइ पकरेइत जहा। ते आउखाना बंधमतें वरे तेकहेछे—इहभवियाउयंव। इह भवनो आउखो अथवा। परभवियाउयंप। परभवनो आउखो। जेसमये बंधेपर्व। तेसमये एव वेसमयनु। इम इतिपरन उत्तर। गोयमा कहते पचउत्तिया। हेगौतम। केशारखबो ते अन्यदर्शनी वीतरागना मासनवो बेरा ते। एव माइक्खंति। इम कहेछे सामान्यवो। जाव परभवियाउयंप। यावत् परभवनो आउखोबांधे एतला तांई सवखरयो। जेतेएवमाहंसु। जे अन्यतीर्थी इमकहे। मिच्छते एवमाहंसु। मिथ्यामृषाकहेछे—अहंपुण गोयमा। हुं वली हेगौतम। एवमाइक्खामि। इम कहुं सामान्यवो। जावप रूवेमि। यावत् प्ररूपुं भेद कहवावो। एवखलुएगेजीवे। इम निश्चे एकजीव। एगीसमएणं। एक समये। एग आउयंपकरेइ। एक आउखानो बंध

नोगेन परभवायु यध्नातीत्यर्थो मिथ्यावैत त्परमत यस्मा ज्जातमात्रो जीव इहभवायु वेदयते तदैव तेन यदि परभवायुर्बद्ध तदा दानाध्ययना दीनां वैयर्थ्यं स्यादिति एतद्वा पुवन्धकाला दन्यत्रा वसेय सम्यगायुर्बन्धकाले इहभवायु वेदयते परभवायु सु प्रकरात्येवेति अन्ययूथिकप्रस्ता या दिहमाह ॥ तेणमित्यादि ॥ पासावच्चिज्जति ॥ पार्श्वापत्यामा पार्श्वजिनशिष्याणा मयं पार्श्वापत्यीयः ॥ थेरति ॥ श्रीमन्महावीरजिनशिष्या

भवियाउयया सेव भंते भंतेत्ति ॥ भगवं गोयमे जाव विहरइ ॥ तेणकालेण २ पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे जेणेवथेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरे भगवं एवंवयासी , थेरासामाइयणयाणति , थेरासामाइयस्स अट्ठ णयाणति , थेरा पच्चक्खाण णयाणति , थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठ णयाणति

करे । तथवा इहभवियाउयना । ते कहेछे—इह भवना आउखो बांधे । परभवियाउयना । पर भवनो आउखो बांधे । जंसमयइहभवियाउयपकरेइ तोतसमयपरभवियाउयपकरेइ । जे समयनेविषे इथि भवनो आउखो बांधे नहो ते समयनेविषे परभवनो आउखोबांधे । जंसमयंपरभवियाउयंपकरे इ । जे समयनेविषे परभवनो आउखोबांधे । तोतसमयंइहभवियाउयपकरेइ । नहो ते समयनेविषे इहभवनो आउखोबांधे । इहभवियाउयस्सपकरण याए । इह भवना आउखाने बांधवेकरी । नोपरभविया उयपकरेइ । पर भवनो आउखो नबांधे । परभवियाउयस्सपकरणयाए । पर भवनाआउखाने बांधवेकरी । नोइहभवियाउयपकरेइ । नहो इहभवनो आउखोबांधे । एवंखलुएगीजीवे । इम निश्चे पूर्वोक्तप्रकारे एकजीव । एगीसमएणं । एक समये एगआउयपकरेइ तंजहा । एक आउखोबांधे इम जोवेवस्थानीनो मत भाखवो तेकहेछे—इहभवियाउयंवा । इहभवसंबंधी आउखोबांधे । परभवियाउयंवा । परभवसंबंधी आउखोबांधे । सेवभंते २त्ति । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हेकहु ते सत्यछे भव्यवागरो । भगवंगोयमे जावविहरइ तेणंकालेणं । भग वंत गोतम यावत् पप्पात्मभावेमांहे विहरइ एतला कहकरवा तेकालसमेविषे । तेणंसमएणं पासावच्चिज्जे । पार्श्वनाथना अपत्यशिष्य । कालासवेसिय पुत्तेणामं अणगारे । कालासवेसित पुत्रनामे अणगार रहित साधु इसव । जेणेवथेराभगवंता । जिहां स्थविर महावीरना शिष्य श्रुतधर भगवंत ज्ञानव

मुतवद्गुः ॥ सामाइयंति ॥ समभावरूपं ॥ णयाणंतित्ति ॥ न जानंति सूक्ष्मत्वा तस्य ॥ सामाइयस्सअट्ठति ॥ प्रयोजनं कर्मोनुपादाननिर्ज्जरणरूप ॥ पच्चक्खाणंति ॥ पौरुष्यादिनियमं तदर्थंच्चा अवद्वारनिरोधं ॥ सञ्जमति ॥ पृथिव्यादिसंरक्षणलक्षण तदर्थंच्चा आश्रवस्य ॥ संवरंति ॥ इन्द्रियनोइन्द्रियनिवर्त्तनं तदर्थन्तु अनाश्रवत्वमेव ॥ विवेगति ॥ विशिष्टबोध तदर्थंच्च त्याज्यत्यागादिक ॥ विउस्सग्गति ॥ व्युत्सर्गं कायादीना तदर्थंच्चा

थेरा सयम णयाणति , थेरा सजमस्स अठ णयाणति , थेरा सवरं णयाणति , थेरासवरस्स अठ नयाणति , थेरा विवेग णयाणति , थेरा विवेगस्स अठ णयाणति , थेरा विउस्सग्ग णयाणति , थेराविउस्सग्गस्स अठ नयाणति । तएण तेथेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एवव्रयासी , जाणामोण

त । तेथेरभगवंत २ ना । तिहां थावे तिहां थावीने । वरमवचएवंवयासी । स्थविर ममवचप्रते इमकहे । थेरासामाइयणयाणति । स्थविर समवाभावरूप सामायिक ते नजाणे । थेरासामाइयस्सअट्ठणयाणति । स्थविर सामायिकनी अर्थप्रयोजन नजाणे कर्मअनुपादानरूप । थेरापच्चक्खाणणयाणति । स्थविर पोरसी आदि नियम नजाणे । थेरापच्चक्खाणस्सअट्ठणयाणति । स्थविर पच्चक्खाणनो अर्थ आश्रवद्वार निरोध नजाणे । थेरासंजमणयाणति । स्थविर पृथिवी आदि रक्षालक्षण ते नजाणे । थेरासंजमस्सअट्ठणयाणति । स्थविर संजमना अर्थ अनाश्रवपणो ते नजाणे । थेरासंवरणयाणति । स्थविर इन्द्रियनो इन्द्रियना निग्रह ते नजाणे । थेरासंवरस्सअट्ठणयाणति । स्थविर संवरनो अर्थ अनाश्रवपणो ते नजाणे । थेराविवेगणयाणति । स्थविर विवेक वस्तुनो विशिष्ट बोध ते नजाणे । थेराविवेगस्सअट्ठणयाणति । स्थविरविवेकना अर्थ त्याज्य त्यागादि ते नजाणे । थेराविउस्सग्गणयाणति । स्थविर कायाना त्यागरूप । थेराविउस्सग्गस्सअट्ठणयाणति । स्थविर काउस्सग्गना अर्थ नीसंगपणु ते अर्थ नजाणे । तएणतेथेराभगवंतो । तिवारे ते स्थविर भगवंत । कालासवेसियपुत्तअणगारं । कालासवेसित एह अणगारप्रतें । एवंवयासी । इम कहता हुआ । जाणामोणं अज्जो सामाइयं । जाणाहो अम्हारे इणाय । समपरिणामरूप सामायिक । जाणामोणंअज्जोसामाइयस्सअट्ठ । जाणाहो अम्हारे पणकारे ते जाणे । सामायिकनो अर्थ अम जाणाहा

घने प्राकृतत्वात् ॥ केनेति ॥ किमवता मित्यर्थ ॥ मायावेति ॥ घ्यात्मानो ऽस्माक मते सा
|ठियस्ससामइयंति ॥ सामायिकार्थोपि जीवएव कर्म्मानुपादानादीना जीवगुणत्वात् जीवाव्य
रवमन्तव्य ॥ अइनेप्रच्चोत्ति ॥ यदिभवता हेआर्याः । स्थविरा॰ सामायिक मात्मा तथा ॥ भव

सामाइयस्सञ्जठ , जाव जाणामोण श्रज्जो विउस्सग्गस्स श्रठ । तए
रे जगवंते एववयासी , जइणश्रज्जो तुम्रेजाणह सामाइय , जाणह
पामाइयस्स श्रठ, जाव जाहण विउस्सग्गस्स श्रठ । के त्ते श्रज्जो सामाइए, केन्ने सामाइयस्स श्रठे,
जाव केन्ने यिउस्सग्गस्स श्रठे ! तएण तेथेरान्नगवतो कालासवेसियपुत्त श्रणगार एववयासी , श्रायाणेश्र
ज्जो सामाइए , श्रायाणेश्रज्जो सामाइयस्स श्रठे , जाव विउस्सग्गस्सश्रठे । तएणसे कालासवेसियपुत्ते

न भिजराहप । आयआसामायपच्चाविउसग्गश्च थइ । यावत् आचार्यो ब याभ्यासकारे हे पार्य । काउसग्ग आयात्मारूप तेहनो भव । तएणसेकाला
सवसियपुत्तेअणगारे । तिवारे तेकालासवेसित पुत्रनामें साधु । तेथेरेभगवते एववयासी । ते स्थविर भगवतमतें इम कहताहुया । आयांपच्चोतुझे । को
ज्जो आमतुझारे हे पार्य । तुम्हे । आयाइसामाइयं । आयोत्रा सामायिक । आयाइसामाइयग्रड । वली आयोवो सामायिकनो भव । आयआश्रवित
म्मयणग्रड । यावत् आयोत्रा काउस्सगनो भव । केभेपच्चोसामाइए केभेपच्चोसामाइयस्सग्रहे । तो मू तुम्हारे हे पार्य । सामायिक मू तुम्हारे
हेपाय । सामायिकनो थर्य । केमेपच्चाजावविउस्सग्गस्सग्रहे । चं तुम्हारे यावत् काउस्सगनो थर्य । तएणतेथेराभगवतो कालासवे सियपुत्तणप
गार । तिवारे ते स्थविर भगवत कालासवेसित पुत्रनामें साधुमत । एववयासी आयावेपच्चासामाइए । इम कहताहुया मम्हारेमते अहोआर्य !
आत्मा तेज सामायिक गुण प्रतिपन्नहुवे, तिवारे सामायिकजीव कहीये । आयाबेपच्चोसामाइयस्सग्रहे । आत्मा अम्हारे हेआर्य । सामायिक

हमृति ॥ मपहृत्य त्यक्त्वा क्रोधादीन् किमर्थं गरहधे ॥ निंदामिगरहामि मप्पाणवोसिरामी॥ त्यतिवचना क्रोधादीनेव, मथवा मवद्यमितिगम्यते म समनिप्रायः य मामायिकयान् त्यक्तक्रोधादिय सकर्म किमपि निन्दति निन्दाश्च किंलक्षेयममवेति ? मत्रोत्तरं संयमायमिति, मवद्ये महिंसे संयमा नयति मवद्यानुमते व्ययच्छनात् तया गर्हासंयम सद्धेतुत्वा म केवल मसौ, गर्हाकर्मानुपादानहेतुत्वा रसयमोपनयति ॥ गरहावियत्ति॥ गर्हैव मवे ॥ दामति ॥ दोष रागादिक पूर्वकृतपापया ; द्वेषवा ; प्रविमयति मपयति किंकत्वेस्याद ॥ सव्वंबालियत्ति ॥ मास्मं मासतां मिथ्यात्व मविरतिश्च ॥ परिमायत्ति ॥ परिमाय मपरिमया मात्वा मत्याख्यानपरिमयाच प्रत्याख्यायेति इदच गर्हाया साहत याप्रेवा देखकर्मबस्येम,

अणगारे थेरेजगवते एवं वयासी , जइन्नेअज्जोआयासामाइए आयासामाइयस्स अठे , जाव आयावि उस्सगस्स अठे , अवहहु कोहमाणमायालोने किमठ अज्जो गरहह ! कालासा ! संजमठयाए । सेन्नते ? कि गरहासंजमे अगरहासंजमे कालासा ! गरहासंजमे नोअगरहासंजमे , गरहावियणं सव्वं दोसं पविणेइ सव्वं बालियं परिणाए । एवं खुणे आया संजमे उवहिए नवइ , एवखुणे आया संजमे उवचिए नवइ ,

मा भव। जाव विउस्सग्गस्यार्थः। यावत् भामाक भमारे काउस्सग्गना भव। तएणसकालासवेसियपुत्तेअणगारे। तियारे तेकालासवेसियपुत्र साधु तवरेभगवते एवंवयासी। ते स्थविर भगवतप्रते इम बोलताहवा। जइमेअज्जोसामाइए। जो तुम्हारे हेआर्यो ! आमासामायिक। आयासामाइयस्सअठे, रना आत्माहीज सामायिकनो भव। जाव आयाविउस्सग्गस्सअठे भवहटु कोह माण माया लोभे किमई अज्जोगरहह। यावत् आमाहीज काउस्सग्ग ना भव स्वजीने क्रोध मान माया लोभ विशेषवें हैआय। गरहाओ। निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि इत्यादि, निंदा हामयिये समवें गरहा जे कोण्ने मारण सामे ते गरहोवें गुरुमागे आमावे इतिप्रश्न, । कालासासजमहयाय। हेकालासवेसितपुत्र । संयमनेअर्थें मवद्यपाप गरहिवो सवमभूमि नेभतेकिंगरहासंजमे। ते हेमगवन् एवं गरहा संयमवें गरहोवो भवता। अगरहासंजमे। अगरहा संयमछे। कालासागरहासंजमे। हेकालासवेसित

परिज्ञायेत्यत्र ज्ञामत्ययविधि रुदुष्टइति ॥ एवसुत्ति ॥ एवमेव पेहत्यस्मार्थ ॥ आयासंजमेउवहिएत्ति ॥ उपस्थितः मतिसो न्यसो जवति अथवा आ त्मरूपः संयम उपस्थितः प्राप्तोजवति ॥ आयासजमेउवविएत्ति ॥ आत्मा संयमविषये पुष्टो जवति आत्मरूपोवा; संयम उपचितो जवति ॥ उव ह्मिएत्ति ॥ उपस्थितो ऽत्यन्तावस्थायी ॥ एएसिणंजंतेपयाणं इत्यस्य अविद्यायमित्यादिना सम्बन्धः, कथमदृष्टामा मित्यतआह ॥ अन्नाणयाएत्ति ॥ अज्ञानो निर्णय तस्य भावो ऽज्ञानता तया ऽज्ञानतया स्वरूपेणा नुपलम्भादित्यर्थ, एतदेव कथमित्याह ॥ असवणयाएत्ति ॥ अश्रवणः श्रुतिवर्जि त सद्भाव सत्ता तया ॥ अबोहीएत्ति ॥ अबोधि जिनधर्मोनवाप्ति रिहतु अज्ञानां महावीरजिनधर्मानवाप्ति स्तया अथवी त्पत्तिकयादिबुद्ध्यभावे न ॥ अनभिगमेणत्ति ॥ विस्तरबोधाभावेन हेतुना अदृष्टानां साक्षा त्स्वय मनुपलब्धानां, अश्रुतानां अन्यतो आकर्णितानां ॥ असुयाणत्ति ॥ अस्मृता

एयंसुणेत्थायासजमेउवहिएन्नवइ, एत्यणंसेकालासवेसियपुत्तेअणगारेसंबुद्धे थेरेन्नगवंते वंदइ णमंसइ वं०त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, एएसिणं न्नंते! पयाणं पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणन्निगमेणं अदिठाणं असुयाणं अमुयाणं अविन्नायाणं अवोगडाणं अवोच्छिन्नाणं अणिज्जूढाणं अणुवधारियाणं एयमठ

पुन गरहा संयमवे । आपगरहासंजमे । पवि अमरहा समममहो । गरहाशिख्य । गरहा तबोज मवराय रागादिक अथवा पूर्वकृतपाप । सम्यक्‌सपवि वेद । अथवा हेम तेहमते येपवे । सम्यगाबिर्धपरिज्ञाय । अपरिज्ञावें आबोने प्रत्याख्यान परिज्ञावे पचस्यो । एवंत्खेआयासंजमेउवहिएभवद । इम नि वे अम रे आत्मा संयमनेविषे अत्यंत थिरथाय । एत्यणंसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे । इहां ए वाक्यावसरे, ते कालासवेसितपुत्र अणगारसाधु प्रतिबोध पामीने । संबुद्धे थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवंवयासी । अस्थविरने बोधपाम्यो स्थविर भगवंतप्रते वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्का र करीने इम कहतोहुवो । एएसिणंभंतेपयाणंपुव्विंअन्नाणयाए । एहना वचनाकारे हे भगवन् पदानां पहिला इणा पदानेविषे अज्ञानपणेवो स्व रूपेज्ञाताज्ञानपणे । असवणयाए अबोहियाए अणभिगमेणं अदिठाणं । पूर्वे सुयागयो जिन धर्मनो प्राप्ति श्रीमहावीरना धर्मनेविषे विस्तार बोधरहित

ना श्रमणाऽऽयुष्मनोवेमा मनुष्याणां यत यथा विज्ञातानां विशिष्टबोधाविषयीकृतानां एतदेव युक्तइत्याह ॥ अश्रोकडाणत्ति ॥ अव्याकृतानां विशे षतो गुरुभिरनाख्यातानां ॥ अश्रोच्छिन्नाणंति ॥ विपक्षाद्यव्यवच्छिदितानां ॥ अनिज्जूढाणत्ति ॥ महतोग्रन्थात् सुखावबोधाय संक्षेपनिमित्त मनुपर परगुरुभि रनुद्धृतानां अतएवा स्माभिरनुपधारितानां मनवधारितानां ॥ एयमठेत्ति ॥ एवप्रकारोर्थो ऽथवा ऽयमर्थो ॥ णोसद्दहिएत्ति ॥ नमाश्रि तः ॥ णोपत्तिएत्ति ॥ नो नैव ॥ पत्तियंति ॥ प्रीति कथ्यते तद्योगा त्पत्तिएत्ति ॥ प्रीतः प्रीतिविषयीकृतो ऽथवा ; न प्रतीतो न प्रत्यायितोथवा ये तुभिः ॥ णोरोयएत्ति ॥ न विशीपितः ॥ मयमयसज्जहेयतुज्झेयथवहत्ति ॥ अथ यथा एतद्वस्तु यूय वदथ एवमेव तद्वस्त्वितिनावः ॥ वाउज्जामाइत्ति ॥

णोसद्दहिए णोपत्तिइए णोरोइए, इयाणिभंते! एएसिणपयाण जाणणयाए सवणयाए बोहियाए अभिगमेण दिठाण रसुयाण सुयाण वियायाण वोगडाण वोच्छिन्नाण णिज्जूढाण उवधारियाण एयमठ सद्दहामि पत्ति यामि रोएमि एयमेय सेजहेय तुज्झे वयह। तएण तेथेरा नगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एववयासी , सद्दहाहि अज्जो , पत्तियाहि अज्जो , रोएहिअज्जो , सेजहेय अम्हेवयामो । तएणसेकालासवेसियपुत्ते

इत्यादि वेयुयेकरा पूर्वे मानात् यातें यवतो अज्ञानतो। अश्रवणार्थ अमुयाए अविपालार्थ अज्ञानताए। विपतोने समीपे सुत्रानतो इवन भाववन थनारेकरो एतमामाटेज विपिट वावरहितने विशेषतो गुरे अज्ञानतो। अव्याच्छिन्नाव अपिज्जूढाव। माटाग्रन्थतो सुखाव बोधमयो गुरे अज्ञानतो। अ उवधारियार्थ। एतला अवोज अमे पूर्वे एअव अवधारीनतो। एयमट्टणोसद्दहिए णापत्तिसए। एवे प्रकारे अथ अथवा एअथ सद्दहीनतो प्रीति विषय न कोधा। यारोइए इहा विमते एहमिवंचय॥र्थ आवताए। अजाणतो॥ किवे वेभगवन् एव पदनाअथ आवा जाणेकरो। सवणताए बोहिताए अभि गमेणं दिठाव रसुयाव सुयार्थ वियायाव वागडार्थ वाच्छिन्नार्थ। सुत्रा अवणें करो वाधिपाम्यो सम्यक्पर्ये विस्तारवोध यथा अथवो तथा सुत्रा अर्थ इयन पावन भवता विशेषे आख्या शिष्यतो गुरेअया विपक्षादि सदेश छेया। विज्जूढाव उवधारिवार्थ एयमट्टसद्दहामि पत्तियामि रोएमि। मोटा

चतुर्महाव्रतान् पार्श्वनाथजिनस्य हि चत्वारि महाव्रतानि ना परिगृहीता स्त्रीभुज्यत इति मैथुनस्य परिग्रहे तर्भावादिति ॥ सपडिक्कमणति ॥ पा
श्वनाथधर्मो हि अप्रतिक्रमणः कारणएव प्रतिक्रमणकरणा दन्यथा त्वकरणा न्महावीरजिनस्य तु स प्रतिक्रमणः कारणं विना प्यवश्यं प्रतिक्रमणम

अणगारे थेरेभगवंतो वंदइ नमंसइ वं० त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, इच्छामिणं भंते! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंधं करेह, तएणंसे कालासवेसिएपुत्ते अणगारे थेरेभगवंते वंदइ नमंसइ वं० त्ता नमंसइत्ता चाउज्जामाओधम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणंसे कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणिवासाणि सा

पणी सत्ताव बोधलवा एपण भवधारी एवर्ष सइसवे मोति विवस चरूद्रं रावेवे। एवमेते सेवहेव उभेवस्व तएवंवेरामभगवंतो। भवजिम एवात तुमे कहोलो तेसर्व तिमअघे इतिमाव तिवारे ते स्थविर भगवंत। कालासवेसियपुत्तअणगार। कालासवेसित पुत्र साधुमते। एवंवयासी सद्दहामिभ्यो पतिया। रोचयो रोचसिभन्ना। इम कहतां हवातं। सद्दहाति। यहावत वाचो देवाय मतिमियय करि देवायं रविवकरि देवायं। सेवहेसपगेवदानो। एपण पने कहदं तिम। तएणसेकालासवेसियपुत्तेअणगारे। तिवारे तेकालासवेसितपुत्र अणगारसाधु। थेरे भगवंतेवंदइ नमंसइ २ त्ता। स्थविर भगव तमतें वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। एवंवयासी। इम कहतां हवा। इच्छामिणंभंते तुब्भंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सप डिक्कमणंधम्मंउवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए। वांछूं हेभगवन्! तुम्हारे समीपे चारि महाव्रत चोवीसमाटे पार्श्वनाथ स्वामीने चार महाव्रतछे, मैथुननो प रिग्रहनेविषे अतर्भावछे तेहनो पंचमहाव्रतरूप श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना साधुनेकारण अपना पडिक्कमणो करो पने श्रीमहावीरस्वामीना साधुनेकारण थका पवि अवश्य पडिक्कमणो करवा ते आदरीने विहारकरूं। अहासुहंदेवाणुप्पिया। जिम सुख उपजे तिमकरो हेदेवानुप्रिय। मापडिबंधतएणंसेका लासवेसियपुत्तेअणगारे। प्रतिबंध व्याघात मकरस्ये तिवारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। थेरेभगवंते वंदइ नमंसइ २ त्ता। स्थविर भगवंतमतें वांदे नम

रगादिति ॥ देवानुप्पियत्ति ॥ प्रियामय ॥ मापळिभंपति ॥ मात्मापातं कुरुये तिगस्य ॥ मुळ्ळावेत्ति ॥ मुंळ्ळावो दीक्षितस्य ॥ फसगसण्मति ॥
प्रतनायतविपम्भयस्फाटरूपा ॥ कठसण्मेति ॥ पर्यस्फलकाटशयन काष्ठाश्याया' ममभोषा वसतिः ॥ सद्दावसद्दोति ॥ सभ्यम्य लामो ऽपलभ्भिया
माना ऽपरिपूर्णमानोषा लभ्यापसभ्मिः ॥ उच्चावयति ॥ उच्चावचा मनुकूलमतिकूला' ममसमजसाया॥ ॥ मामकठपति ॥ पामस्सेम्भिदयसमूहस्य कंठ
का इव कटका यापका॥ सावो पामकटका कएतइत्याह ॥ वावीसपरीसहोवसग्गति ॥ परीषहाः क्षुधादय सएवो पसर्गो उपसर्गोना दुर्मेधय

मरापरियाग पाउणइ पाउणइत्ता जस्सठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अन्नाणय अदंतधुवणय अच्छत्तय अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटया बावीसपरीसहोवसग्गा अहियासिज्जइ, तमठ आराहेइ आराहेइत्ता चरमेहिं उस्सासनीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए सव्वदुक्खप्पहीणे॥ भंतेत्ति भगवं गोयमे समणंभगवंमहावीरं वंदइ नमंसइ वं०त्ता णमंसइत्ता एवंवयासी, सेणूणं भंते! सेठिस्सयतणुयस्स किवणस्सय खत्तियस्सय समाचेव अपच्चक्खाण

माप्रबरे वांदोने नमस्कार करोने। बाउध्यामाभाषध्याधो पचमहत्वर। चार महाव्रतरूप धमवो पचमहाव्रतरूप धर्म। सपडिक्कमधर्मधम्म। पडिक्कम
वामहित धम। उत्तमपम्भितावविहरइ। पाहरीने विचरे। तएणंसेत्तालासवेसियपुत्ते पणगारे। विचारे तेकालासवेसितपुत्र साधु। बहुधियासादि।
ज गो वरस। मामण्णपरियागपाउणइ २ त्ता। साधुनी दीक्षानो पर्याय पाले पालोने। अत्यहाएकीरइ। जेहने पर्थ करे। नग्गभावे। वस्त्ररहित पणो
मडआवेषणहाणवं। होचापणो भरोर मघानथायवी। पद्दाणय पधावाफडवं भूमिसेज्जा। तप भराषणो उपानह रहित पणो छतुयानो फिरे भूमि मू
इया। फलहसेज्जा। कट्ठसेज्जा,बंभचाडबंभचेरवासा। फलक पाटीये सूइया काष्ठसेज्जाये सूइवो केसनो लोचकरिवो ब्रह्मचर्यं वसवी पालवो। परघरपवे
सा महाव्रमाहो पवाव रामपंदया। पाहारने पर्थे परघर प्रवेशकीधे लाभे अथवा नलाभे अथवा परिपूर्ण नलाभे अनुकूल प्रतिकूल अथवा असमंजस इंद्रीय

ना त्परीषहोपसर्गा अथवा द्वाविंशतिः परीषहा तथा उपसर्गा दिव्यादयः कालास्य वैश्यिकपुत्र प्रत्याख्यानक्रियया सिद्ध्यति तद्विपर्ययसूत्रा प्रत्याख्यानक्रिया निरूपणसूत्रं ॥ प्रतस्त्यादि ॥ तत्र ॥ प्रतेति ॥ हेमदन्तइति एव नामस्येतिज्ञेयः अथवा भदन्त इतिकृत्वा गुरु रितिकृत्वेत्यर्थः ॥ सेठिस्सति ॥ श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितशिरोवेष्टनोपेतपौरजनमायकस्य ॥ तणुयस्सति ॥ दरिद्रस्य ॥ किवणस्सति ॥ रङ्कस्य ॥ खत्तियस्स

किरियाकज्जइ ? हंता गोयमा ! सेठियस्स जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, सेकेणठेणं भंते ? गोयमा ! अविरइं पडुच्च, सेतेणठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ, सेठिस्सय तणु जाव कज्जइ । आहाकम्मं ण भुंजमा णे समणे निग्गंथे किं बंधइ किं पकरेइ किं चिणाइ किं उवचिणाइ ? गोयमा ! आहाकम्मं ण भुंजमाणे आउ यवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, जाव अणुपरियट्टइ । केणेण

ममुक्ते भाटारोपरे वाचक किसा तेवतेचे—वावीसपरीसहबावसग्गाभविया सिद्ध । वावीसपरीसह भुखादिक तेवोस पम संमवो परीसहोपसर्ग अथवा बावीस परीसह तथा उपसर्ग देवादिकना बीधा ते अपना सबा सहेसहै । तमडभाराडेइ २ ता । ते भावामे भवें भारावें भाराधोने । वरि ज्ञेविंजभाइ चौमासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुए । केडले समास मौसासेकरीने सिवबदीने तखना आयबइने बसयी रखिवडीने मोताळीभाखडीने । सब्वदुक्खप्पहीणे भंतेत्तिभगवंगोयमे । सब दुःखबी रहित बया मोच पहोताइत्यथ हेभगवन् इसो भामन्त्र अथवा भदंत इसो गुरुमते कलाणकारी व नमस्कार करीने इस बहतां हुवा । समणोभगवंमहावीरं । समण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें । वंदइ नमंसइ २ ता एवंवयासी । वांदे नमस्कारकरे वांदीने न सेठिस्सय तणुयस्सय किवणस्सय खत्तियस्सय । ते निश्चे हेभगवन् । श्रीदेवीमोमूर्तिनमा पाटा जेहने म ताम्बा नगरी जनमो तेहने तथा दरिद्रीने कि रङ्कने राजाने । समाचेव अपच्चक्खाणकिरियाकज्जइ । सरोखो निश्चे अप्रत्याख्यानक्रिया नो अभाव अथवा अप्र त्याख्यानथी उपनो कर्मबंध ते रूपक्रियाकरे । हंता गोयमा सेठिस्सय । हांगोतम ! शेठिने । जाव अपच्चक्खाणकिरियाकज्जइ । यावत् अप्रत्याख्यान क्रि

त्ति ॥ राग ॥ अपच्चक्खाणकिरियत्ति ॥ प्रत्याख्यानक्रियाया अभावो प्रत्याख्यानअन्योवा कर्मबन्धः ॥ अविरइत्ति ॥ इच्छाया अनिवृत्तिः साहि स
र्वेषां समेवेति, अप्रत्याख्यानक्रियाप्रस्तावा दिइमाह ॥ आहाकम्ममित्यादि ॥ आधाय साधुप्रणिधानेन यत्सचेतन मचेतन क्रियते अचेतमवा पच्य
त चीयतेवा गृहादिक व्यूयतेवा वस्त्रादिकं त दाधाकर्म ॥ बिंधइत्ति ॥ प्रकृतिबन्धमाश्रित्य स्पृष्टावस्थापेक्षयावा ॥ चिपकरेइत्ति ॥ स्थितिब

ठेण जाव आहाकम्मण भुंजमाणे जाव अणुपरियट्टइ ? गोयमा ! आहाकम्म णभुंजमाणे आयाए धम्म
अइक्कमइ आयाए धम्म अइक्कममाणे पुढविकाय णावकंखइ , जाव तसकाय णावकंखइ , जेसिपियण
जीवाण सरीराइं आहारमाहारेइ तेयिजीवे नावकंखइ सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ आहाकम्मं णभुंज

का करे गौतम कहे छे—सेकेणट्ठेणभंते। ते सा अर्थे हेभगवन्। इमकह्यु इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा अविरइ पडुच। हेगौतम। इच्छानी निवृत्तिते सर्वथेकह
ते अविरति आश्री। सेतेणट्ठेणं गोयमा एव वुच्चइ। ते तेणे अर्थे हेगौतम। इमकह्यु। सेहिकम्मय तणुसमय जावकज्जइ आहाकम्मेणभुंजमाणे। थेहिगेइ
रिम्रोने यावत् अप्रत्याख्यान क्रियाकरे अप्रत्याख्यानक्रिया प्रस्तावथी एककहे छे—अचित्त केडीमे अचित्तकरीनेदेइ ते जीमतोथको। सम्यक्‌प्रकारेबांधवाय
र। साधु बाह्याभ्यंतर गंथरहित प्रकृतिबंध आश्रयीने स्पर्शावे। चिंपकरेइ। स्थितिबंधनी अपेक्षाये स्थूलकरे। सिंथिलाइ किंठणचिखाइ। अनुभागबंधनी
अपेक्षायें तथा निधत्त सूइ चेपहोयत् प्रदेशबंधनी अपेक्षायें इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा आहाकम्मेणभुंजमाणे। हेगौतम। आधा कर्मीआहार जीमतोथको
आउयवज्जाओ। आउखा वर्जवर्जीने। सत्तकम्मपगडीओसिढिलबंधणबद्धाओ। सात कर्मनी प्रकृति सिथिल बंधने बांधाथका। धणियबंधणबद्धाओपक
रेइ। हत्वंवन बांधे हतुवा कमने सूधा तावेबांधे जिम रेसमनी गांठ बांधीये। जावअणुपरियट्टइ। यावत् ससारनेविषे अनतीवार भमे। सेकेणट्ठेणं जा
वआहाकम्मेणभुंजमाणे जावअणुपरियट्टइ। ते कें अर्थे हेभगवन् इमकह्यु यावत् आधाकर्मी आहार जीमतोथको साधु यावत् चतुर्गतिक संसारनेविषे
अनंतीवारभमे इतिप्रश्न, उत्तर। गोयमा आहाकम्मेणंभुंजमाणेआताएधम्मंअइक्कमइ। हेगौतम! आधाकर्मी आहार जीमतोथकोसाधु आधाकर्मीकरी चारि

माणे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ जाव अणुपरियट्टइ । फासुएसणिज्जन्नं भुंजमाणे किंबंधइ ? १ जाव उवचिणाइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिल बंधणबद्धाओ पकरेइ , जहा संवुडेणं , णवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय नो बंधइ सेसं तहेव जाव वी इवयइ। से केणट्ठेणं जाव वीइवयइ ? गोयमा ! फासुएसणिज्जं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं नाइक्क

न भग पवना सुतभम अतिक्रमे एतावता धर्मबोधके। आधाकर्म भवमाने। आधाकर्मे अतिक्रमतो उसघता भवा। पृथ्वीकायादिकनी अवकांक्षा जाव तमकायनावकांक्षा। पृथ्वीकायना जीवनी अनुकंपानाय समापरिणाम रहितपणे, यावत् अपकाय तेउकाय वाउकाय वनस्पतीकाय त्रसकाय जीवि तानि अपवि जिनाने तहने इच्छावे। जेसिपियन जीवाना सरीरार आहारेह। जेहना पनि अपुन ते वाक्यासंकारे, जीवना सरीरना आहारमते भा हारे आहारकरे इत्यथ। ते जीवोनेचावकांक्षा। ते जीवनी पनि अनुकंपाना वे। से तेणट्ठेण गोयमा एवमुच्चइ। ते तेणे अर्थे हे गौतम! इत्यर्थः। आधाक मेंनंमुंजमाणे आउयवज्जाओ आवमत्तकम्मपगडीओ। आधाकर्मी आहार जीमतो थको साधु आउखा वर्जीने यावत् सात कर्मनी प्रकृति सिथिलबंधन बांधी तेगाढ बंधने बांधे। जावअणुपरियट्टइ। यावत् संसारमांहे परिभ्रमणकरे। फासुएसणिज्जंणंभंते भुंजमाणे किंबंधइ। फासुएसणीय हेभगवन्! आ हार जीमतो थको साधु श्यु बांधे। आवकिंउवचिणाइ। यावत् श्युं प्रदेशबंधनो स्यु वधारे इति प्रश्न, उत्तर। गोयमा फासुएसणिज्जंभुंजमाणे आउवज्जाओ। हे गौतम! फासुएषणीय जीमतो थको साधु आउखा वर्जीने। सत्तकम्मपगडीओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ। सिथिलबंधनसात कर्मनी प्रकृति गाढे बंधने बांधी हुती ते सिथिलबंध बांधे। जहासंवुडेण जिम ते संवर अणगारभण्यो। णवर आउयं चणं कम्मं सियबंधइ सियणोबंधइ सेसंतहेव जावविइ वयइ। एतलो विशेष आउखाम अपुन ते इसा वाक्यालंकारे कदाचित् बांधे कदाचित् नथी बांधे आयाकर्म अबांधे तो शुभअनुसारे जीव जुवे, शेषता तो मंडलमांडे थको यावत् संसार तर मामकाय इत्यथ। से केणट्ठेणंभंते जाववीइवयइ। ते श्ये अर्थे हे भगवन्! इम कह्यो यावत् अतिक्रमे संसार

अपेक्षया बद्धावस्थापेक्षयावा ॥ किविकाइत्ति ॥ अनुभागबन्धापेक्षया निधत्तावस्थापेक्षयावा ॥ विउयविकाइत्ति ॥ प्रदेशबन्धापेक्षया निकाचना पेक्षयावेति ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना धर्मचारित्रधर्म श्रुतधर्मंवा ॥ पुढविकायमावकसइत्ति ॥ मा पेक्षत मा मुकम्पत इत्यथ आधाकर्म्म विपक्ष प्रासुकैषणीयमिति॰ प्रासुकैषणीयसूत्र अनन्तरसूत्रे ससारव्यतिक्रमयुक्त तत्र कर्म्मणो ऽस्थिरतया प्रलोटने सति भवती त्यस्थिरसूत्र तत्र ॥ अ थिरत्ति ॥ अस्थाल्प द्रव्यं लोष्टादि प्रलोटति परिवर्त्तते अध्यात्मचिन्तायां अस्थिर कर्म्म तस्य जीवप्रदेशेभ्यः प्रतिसमयचलनेना स्थिरत्वात् प्रलोट

मइ, आयाए धम्म अणइक्कममाणे पुढविकाय अभ्रकखइ, जाव तसकाय अभ्रकखइ, जेसिपियणजी वाण सरीराइ आहारेइ तेविजीवे अभ्रकखइ सेलणठेणजावबीइवयइ । सेणूण भंत ! अथिरे पलोहइ नो थिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ नोथिरेभज्जइ सासए बालए बालियत्त असासय सासए पंडिए पंडियत्त असा सय ? हंता गोयमा ! अथिरेपलोहइ जाव पंडियत्त असासय सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढम

तरे । गायमा आम्रसविश्वमुत्तमावे । हेगोतम ! आसूरावाय आहारकरता जीमताअका साधु । समर्थेविश्वे । यमक निर्ग्रंथ । आयाएधम्मनाइकम इ । आत्मामेंकरी धर्मचारित्र श्रुतधर्म उल्लंघतो । आयाएधर्मअणइक्कममाणेपुढविकायअभ्रकखइ । आत्मासे श्रुतचारित्ररूपधर्म अणक्रम करतायको, पृथिवीकायनी दयापाले जीवनीरक्षाकरे । जावतसकायअभ्रकखइ । यावत् त्रसकायनी बेइन्द्रियादिक जीवनी रक्षाकरे । जसिपियणजीवाणसरीराइआ हारेइ तेविजीवेअभ्रकखइ । जेहना वलि वपन पवाकार्यकारे, जीवना शरीरनो आहारकरे तेपणि जीवनीरक्षाकरे विनाशें नही । सेतेणइ अजीववी इवयति । ते तेण अर्थ हेगौतम ! इमकहु यावत् ससार पारपामें मोक्षजाय इत्यर्थ । सेणूणभंतेअथिरेपलोहइ नोथिरेपलोहइ अथिरेभज्जइ । पाछे स सार भावनकथा ते कर्मने अस्थिर पवेशाय तेकहेछे—ते निश्चे हेभगवन् ! अथिरद्रव्य लोष्टादि प्रवर्त्तें पलटे अभ्रास्थानाम तथा अध्यात्म चिंतानेविषे अस्थिर कर्मजीव प्रदेशथी समये २ चले पालटनी विनाशि धर्मेनथी अध्यात्मचिंतानेविषे असर्धित जीवना उपवास चलेनही अथिरे अथिरभावमम

ति १ यन्मोदयमिश्रत्वादियरिणामैः परिवर्तते स्थिर शिलादिनमलोटति अध्यात्मचिन्तायांतु स्थिराजीव कर्मक्षयेपि तस्य अवस्थितत्वा त्साशी प्रमोटति, उपयोगलक्षणजाता अपरिवर्तते तथा अस्थिरं मङ्गुरस्वभाव तृणादि मज्यते विदसयति अध्यात्मचिन्तायां अस्थिर कर्म तद्भज्यत व्यपैति ति ॥ यालको व्यवहारतः शिशु निश्चयतो ऽसयतो जीवः सच शाश्वतो द्रव्यत्वात् ॥ बालियत्तति॥ इहे कमत्ययस्य स्वार्थिकत्वा द्वालस्व व्यवहारतः शिशुत्वं निश्चयत सयमयतत्व तथा शाश्वत पर्यायत्वादिति एव पण्डितसूत्रमपि नवर पण्डितो व्यवहारत सरक्षणो जीवः निश्चयतस्तु सयत ॥ इति प्रथमशतेनवमः ॥ ८ ॥ अनन्तरोद्देशके ऽस्थिर कर्मेत्युक्त कर्माश्रियुक्त कुतीर्थिका विप्रतिपद्यते अत तद्विप्रतिपत्तिनिरासप्रति

सए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एव माइक्खंति जाव परूवति, एव खलु चलमाणे अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिण्णे, दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति, कम्हा दोपरमाणुपोग्गलाण नत्थि सिणेहकाए तम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयओ न साहणंति, तिन्निपर

भाव इत्यादितिभावे, अध्यात्मचिन्तानविषै अस्थिरकर्मभावे भजन स्वभाव काचमइ प्रमाकारदिक तेमभावे, अध्यात्मचिंतानेविषै जीवभावेमही शाश्वत पणाथी । मासरवाना बालियत्तपणाम सासपडिए पंडियत्तंपणासयं । व्यवहारथी बालक शाश्वता तथा निश्चयथी शाश्वताजीव द्रव्यथी बालकभाव पर्याय तेहथी अशाश्वता निश्चयथी असंयतभाव प्रमाणता व्यवहारथी पंडितशास्वता आप शाश्वता निश्चयथी संयतीजीव शाश्वता द्रव्यथी पंडितभाव अशाश्वतो निश्चयथी असंयतभाव अशाश्वता इतिप्रश्न उत्तर । हता गोयमा बालियपणाइत्याव पंडियत्त असासयं । हांगौतम । अथिर पलटै शाश्वत् पंडितपणु अशाश्व त इत्यादिकथी । सेवभंते २ त्ति जावविहरइ । तहत्ति हेभगवन् ! तुम्हे कह्युं तेसर्वं सत्य छै अन्यथा नथी यावत् गौतम विचरै इमसबकहवा । पढमसयस्स नवमोउद्देसामम्मत्तो । एपहिला शतकना नवमो उद्देशो समाप्तो थियो ॥ ८ ॥ अन्नउत्थियाणभंतेएवमाइक्खति । नवमे उद्देशे अ

पादनाय सया सङ्कस्या चलचाउति यदुक्त तत्प्रतिपादनाय वृत्तमोद्देशको व्याख्यायते तत्र च सूत्र ॥ अन्नउत्थियाणमित्यादि॥ चलमाणे च चलियति ॥ चल त्कर्मो चलित चलता तेन चलितकार्याकरणात् वर्तमानस्य चातीततया व्यपदेष्टु मशक्यत्वा देव मन्यत्रापि वाच्यमिति ॥ एगयउ समाहणतित्ति ॥ एकत एकत्वेन एकस्कन्धतयेत्यर्थः न सहन्येते न संहतो मिलितौ स्याता ॥ नत्थिसिणेहकाएत्ति ॥ स्नेहपर्यवराशि र्नास्ति सूक्ष्म

माणुपोग्गला एगयउ साहणति, कम्हा तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयउ साहणति, तिन्निपरमाणुपोग्गला ण ध्यत्थि सिणेहकाए तम्हा तिन्निपरमाणुपोग्गला एगयउ साहणति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जति, दुहाकिज्जमाणा एगयउ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ एगयउ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ,

मिथ्यात्वधर्मविषे कुतीर्थी प्रवर्ते तेमाटे कुतीर्थीना अधिकार कहेछे—अन्यतीर्थी कुतीर्थी ए वाक्यालंकारे हेभगवन्। इम सामान्यथी कहे। आयएवपरूवे ति। यावत् इम भेदथीकहे। एवमहसमाणेचलिए जावणिज्जरिज्जमाणेअणिज्जिण्णे। इमनिश्चे चलवामांडया जेकर्म ते चल्यू नकहीये, यावत् सांप्रतकाल ने अतीतकालपणें कहीनसकीये, यावत् निर्जरवामांड्या निर्जरा नकहीये, एतले चल्या ते चल्यो कहीये निर्जर्या ते निर्जरानकहीये, वली अन्यतीर्थी इमकहे दोपरमाणुपोग्गलाएगयओनसाहणंति। बेपरमाणू पुद्गल एकपणें स्कंधपणें इत्यर्थ, मिलित नहुवे भेलानथाय। कम्हादोपरमाणुपोग्गलाएगयओन साहणंति। स्यो थको एतले बेपरमाणू पुद्गल एकठा स्कंधपणें किम नमिले ते कहेछे—दोण्हंपरमाणुपोग्गलाणंनत्थिसिणेहकाए। बे परमाणू पुद्गल न सहो सत्र पर्यायनो राशिनहो सूक्ष्मपणाभणी, तीन मनुष्यने सामे तेह पर्यायनो राशिछे सूक्ष्मपणाथी। तम्हादोपरमाणु पोग्गलाएगयओनसाहणंति। तमाटे बेपरमाणु पुद्गल एकठा नमिले स्कंधपणनथाय इत्यर्थ। तिन्नि परमाणु पोग्गलाएगयओसाहणंति। तीन परमाणु पुद्गल एकपणें मिले स्कंध पणेथाय। कम्हातिन्निपरमाणुपोग्गला। स्यामाटे तीन परमाणु पुद्गल। एगयओसाहणंति। एकपणें मिले स्कंधपणेंथाय, ते कारण कहेछे—तिण्हं पोग्गलाणंअत्थिसिणेहकाए। तीन परमाणु पुद्गलने छे स्नेहपर्यायनो राशि बादरपणाथकी। तम्हातिन्निपरमाणुपोग्गला एगयओसाहणंति। तेमाटे

स्यात् श्यादियोगेतु सूक्ष्मत्वा स्योस्ति ॥ दुक्खताएक्कत्वतिति ॥ पञ्चपुद्गला सहत्य दुःखतया कर्म्मतया क्रियन्तेभवन्तीत्यथ ॥ दुक्खेविपयकति ॥ क
मोपिच ॥ सेति ॥ तस् शाश्वत भनादित्वात् ॥ समत्ति ॥ सर्वदा ॥ समियति ॥ सम्यक् सपरिमाणया चीयते चयमाति भपचीयते भपचयमाति
तया ॥ पुव्वति ॥ भापया स्मात् भासति वाग्द्रव्यसहतिः ॥ भासत्ति ॥ सत्यादिभाषा स्या तत्कारयत्वात् विनष्टभाषनिस्त्वेन वा तेषा सतमात्र मेस

तिन्नाकज्जमाणातिखिपरमाणुपोग्गला हवति , एव जाव चत्तारिपंचपरमाणुपोग्गला एगयउ साहणति , एगयउ साहणित्ता दुक्कत्ताएकज्जति दुक्केवियण सेसासए सयासमिय उवचिज्जइय अवचिज्जइय पुव्वि भा सा भासा भासिज्जमाणी भासाअभासा भासासमय वितिक्कंत चण भासिया भासा जा सा पुव्व भासा भा सा भासिज्जमाणी भासाअभासा भासासमयवितिक्कंतचण भासियाभासा साकि भासउ भासा अभासउ

तीन परमाणु पुद्गल एकठा मिले स्कधपणाभणी इत्यर्थ । तेभिज्जमाणादुहाबि तिहाविकज्जति । ते तीन परमाणू पुद्गलरूप स्कंधभेदायका बेप्रकारे हुवे, तथा त्रिविध तीनप्रकारे पणिहुवे । दुहाकज्जमाण एगयमादिअहुपरमाणुपोग्गलेभवति । एकपासे दोठ परमाणु पुद्गल हुवे । एगयथोविदियहुपर माणपोग्गलेभवति । अर्थात् बीजेपासे पणि दोठपरमाणू पुद्गलहुवे । तिहाकज्जमाणे तिन्निपरमाणुपोग्गलाभवति । तीने प्रकारे करता थका तीनेंई शु द्ध १ परमाणू पुद्गल हुवे । एवं जाव चत्तारि पंचपरमाणुपोग्गलाएगयमोसाहणति । इम यावत् चारि पांच परमाणू पुद्गल एकठा मिले स्कधरूपणाम एसाणपासाहणित्ता । एकठा करीने । दुक्खताएकज्जति । दुःखरूप कर्मपणे परिणमें हुवे । दुक्खेविसयसेसासए । ते कर्मता भनादि भणाधी ते दुःख पणि शाश्वता तिर्थंकरी । सदा समियंउवचियई । सदा समकाले सम्यक परिणामे चयपामें विशेषे भवचिज्जतियं । भपचयपामें, वली भस्मलोकों इम कहै । पुव्विभासाभासा भासिज्जमाणीभासाअभासा । जे पूर्वे बोल्या पछिलीभाषा ते भाषा कहीये, भने वर्तमानकाले बोलीती भाषा भणकहीये, वचनवी भाषाना द्रव्य बोलता भाषाकहीये वर्त्तमानसमय भतिसूक्ष्म छे तिर्थंकरी । भासा समयवितिक्कंतचणभासियाभासा । भने भाषा समयथी भतिक्रांत

निरुपपत्तिक मन्तव्यमन्यथा इतो नेष्टो पपत्ति रत्यमे मयेपणीया एवं सर्वत्रापीति' तथा ॥ भासिज्जमाणीभासाअभासत्ति ॥ निसृज्यमानयाभाष्या त्वभाषा वर्त्तमानसमयस्या निसृष्टस्वेन व्यवहारानङ्गत्वादिति ॥ भासासमयविइक्कंतं भवति ॥ इह तत्प्रत्ययस्य भावार्थत्वात् विनष्टपरिणामाच भाषासमयव्यतिक्रमेव ॥ भामिपत्ति ॥ निसृष्टा सती भाषा भवति प्रतिपाद्यस्या भिधेये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति ॥ अभासइंअभासत्ति ॥ अभाषमा णस्य भाषा भाषणा स्पूर्वं पश्चाच तदनभ्युपगमात् ॥ मोहमुहासउत्ति ॥ भाष्यमाणाया स्तस्या अनभ्युपगमादिति तथा ॥ पुव्विकिरिएत्यादि ॥ कि या कायिक्यादिका सा पाव नाविपत तावत् ॥ दुखत्ति ॥ दुःखहेतुः ॥ कज्जमाणत्ति ॥ क्रियमाणा क्रिया नदु सा नदुःखहेतुः क्रियासमयव्यतिक्रान्त व क्रियायाः क्रियमाणताव्यतिक्रमेण रुता सती क्रियादुःखेति इदमपि तन्मतमात्रमेव निरुपपत्तिक मथवा पूर्व क्रिया दुःखाऽभ्यासात् क्रिय

भासा अभासउण साभासा णो खलु साभासइं भासा पुव्विंकिरिया दुक्खा कज्जमाणी किरिया अदुक्खा कि रिया समयवीतिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा जासा पुव्विंकिरिया दुक्खा कज्जमाणा किरिया अदुक्खा कि रिया समयवीइक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा साकिं करणउ दुक्खा अकरणउ दुक्खा अकरणउं णं सा दुक्खा

भाषा ते भाषा इम कहीये। भासापर्विभासाभासा। पछे वली तेहने बोल्या पछिलो भाषा ते भाषा कहीये। भासिज्जमाणीभासाअभासा। बोलतो भाषा बोलाय तेभाषा अभाषा कहीये। भासासमयवीतिक्कंतं भासियाभासा। भाषा समये व्यतिक्रांतिगये बोल्यो पछे ते भाषा कहीये। साकिंभासओभासा। ते स्यूं भाषकनो भाषा। अभासओभासा। अथवा स्यूं अभाषकनो भाषा इतिप्रश्न। अभासओइंभासा। तिवारे तेहनो उत्तर अन्यतीर्थी इम कहे ते अभाषकनो भाषा कहीये। भासमाणस्स णं भासा। पछिलो मिथ्ये तेभाषकनी भाषा न कहीये, वली अन्यतीर्थी इमकहे। पुव्विंकिरियादुक्खा। कायिक्यादिक्रिया आश्रमे नकरीये तावगी दुःखना हेतुछे। कज्जमाणीकिरियाअदुक्खा। करवामांडी ते क्रिया अदुःखना हेतु तेहना अभ्यास माटे। किरि यासमयविइक्कंतंचकडाकिरियादुक्खा। क्रिया समय व्यतिक्रांत थया अपुन वं वाच्यार्थकारे, कीधीथको क्रिया। दुक्खत्ति। दुःखहेतु कहीये। जासापुव्वि

माया क्रिया नदु-रा मन्यासात्, स्ता क्रिया दु-खामुतापग्रमादेः ॥ करपज्जेदुक्खति ॥ कस्य माश्रित्य कस्यकाले कुर्वतइत्यथः ॥ मकरपञ्ठदुक्खसि ॥ पकरव माश्रित्य मकुर्वत इतिमावत ॥ गोखसुसाकरञठदुक्खति ॥ मक्रियमाणस्य दु-खतया तस्या मभ्युपगमात् ॥ सेवपत्तव्वसिया ॥ मय एवं पू र्वोक्त वस्तु वक्तव्यं स्या दुपपन्नत्वा दस्येति, यथा स्वयूथिकातरमसमाह ॥ मकृत्य ममागतकालापेक्षया मनिर्वर्त्तमीय जीवैरिति गम्यं दुःख मसा तं तत्कारणत्वा कर्म तथा मकृत्यत्वा दवा स्पृश्य मबन्धनीयं तथा क्रियमाणं वर्त्तमानकाले कृत मातीतकाले तन्निषेधा दक्रियमाणकृत कालत्र यपि कर्मणो बन्धनिषेधा दकृता अकृत्वा मामीक्ष्ये द्विर्वचनं दुःखमिति मकृतमेव, केइत्याह, माणभूतजीवसत्वाः प्राणादिस्वरूपं चेद्-माणाद्वित्रि चतु मोक्ताः भूतास्तुतरव स्मृताः । जीवाःपञ्चन्द्रियाज्ञेयाः शेषाःसत्वाइतीरिताः ॥ १ ॥ वयणति ॥ शुभाशुभकर्मवेदना पीडांवा वेदय त्यनुभव

णोखलु सा करणतो दुक्खा सेव वत्तव्वसिया अकिच्चं दुक्खं अफुसदुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु

किरियादुक्खा । जे पहिला क्रिया दुखना हेत । कज्जमाणोकिरियाअदुक्खा । करवामांडी तेक्रिया दुखनोहेत नही । किरियासमयवितिकन्तपच्छाकडा किरियादुक्खा । क्रिया समय अतिक्रांतपया, पपुन च नाश्यासवारे कोधो क्रिया दुखना हेत । साथिकरणपादुक्खाअकरणपोदुक्खा । ते क्रिया एवं क रन थायी दुखनोहेतु अथवा अकरण थायी अकरतो दुखनो हेत । अकरणपापसादुक्खा । अणकरता ते दुखनाहेत । णोखलुसाकरणयोदुक्खा । नही नित ते क्रिया करता दुखनोहेतु । सेवक्तव्वसिया अजिवंदुक्ख । किये एवं इम पूर्वोक्तवस्तु वक्तव्यता हुये, एपणे आपणे अणकीधा दुख । अफुसंदुक्ख । न हो फरस्या दुख एतावता वलि पछंता ते दुख । अकज्जमाणकडंदुक्ख । अक्रियमाणकीधो दुख । अकट्टु । अकरीने । पाणभूयसत्ता । इहां माण भूत जीव सत्व । वेदणवेईतीवत्तव्वसिया । शुभ अशुभकर्म वेदना पीडामते वेदे अनुभवे एवकव्यताहुये । सेकहमेयमतेएव । अथ ते किम एह हेभगवन् ! इम गोयमा जण्णतेअण्णउत्थिया । हेगौतम ! जेमाटे ते अन्यतीर्थी । एवमाइक्खति । इमकहे । जावयेदणवेदतित्तोवत्तव्वंसिया । यावत् शुभ अशुभकर्म वे दनापते अनुभवे एवकव्यताहुये । जेतेएवमाहंसु । जे अन्यतीर्थी इम कहेचे—मिच्छतेएवमाहंसु । मिथ्या मूठा ते इम कहेचे—अहपुण गोयमा ! ए

ति इत्यत्र दृष्टव्य स्या दन्येषो पपद्यमानस्या ग्रानुष्ठिकादि सवलोके सुखदुःखमिति यदाह–यताक्षितोपम्यितमेवसर्वं चित्रभनानासुखदु खमात काश्यप्तानेनयथानिपाता मवुद्धिपूर्वोत्रकृपामिमामः ॥ १ ॥ सेकहमेयति ॥ अथ कथमेतत् मदन्त ! एव मन्यपूथिकोक्तन्यायेनति प्रश्न ॥ जस्सते घणउत्थिय ॥ स्याद्युतर व्याख्याचास्य प्राग्वत् मिथ्या चैतदवं यदि चलदेव प्रथमसमये चलित न भवे तदा द्वितीयादिष्वपि तदचलितमेवेति न कदाचनापि चले इतएव वर्तमानस्यापि विवक्षया चतीतत्व नाविरुद्ध एतच प्रागव निर्णीतमिति मपुनरुच्यते यच्चो च्यते चलितकार्योकरणा द चलितमवेति तदयुक्त यत प्रतिक्षण मुत्पद्यमानेषु स्यासकोशादिवस्तु ग्रन्त्यक्षणजावि वस्तु चाद्यक्षणे स्वकार्यं न करो त्येवा सत्वा इतो यदन्य समयचलितकार्यं विवक्षित परेच तदाद्यसमयचलित यदि नकरोति तदा कश्च दोषो न कारणानां स्वस्वकार्यंकरणस्वनावत्वादिति यच्चोक्त द्वौ परमाणू न संक्ष्मेते सूक्ष्मतया स्नेहाभावा तदयुक्त मेकस्यापि परमाणो स्नेहसम्भवा स्साद्दपुद्गलस्य सहतत्वेन तैरवा भ्युपगमाच यत उक्त ॥ ति

पाणभूयजीव सत्तावेदण वेदंतित्ति वत्तव्वसिया, से कहमेय भंते ! एव ? गोयमा ! जन्न ते अन्नउत्थिया एव माइक्खंति जाव वेदण वेदंति वत्तव्वसिया, जेते एव माहंसु मिच्छंते एव माहंसु, अह पुण गोयमा ! एव माइक्खामि ८, एव खलु चलमाणे चलिए जाव णिज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, दोपरमाणुपोग्गलाएगयन्नो

वदंतिगामि । हे प च हेगौतम ! हम कहु मामाख्यो । एवंचलचलमाचेचलिए । इम निये चलवामांडयो ते चल्यु कहीये प्रथमनो चपेचायें । जाव णिज्जरिज्जमाणेणिज्जिण्णे । यावत् निजरवामांडया ते निजरो कयु तिम जाणवा । दोपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहन्नंति । बेपरमाणू पुद्गल एकठा मिले बमासाएगपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहन्नंति । घां माटे हापरमाण पद्गल एकठामिले । सीयसंपरमाणु पाग्गलाणमत्थिसिणेहकाए । दोय परमाणू पुद्गलने वे घेरकायपर्याय मो रामि एकठो परमाणूने शीत १ उष्ण २ स्निग्ध ३ रूक्ष ४ एचार स्पर्शमांहिला अविरोधी स्पर्शदोयहुवे एकवार तिवारे बेहुने प पि येहरामिले एपरमतोभो भणुठत्ति करी अथवा बेपरमाणू रूक्षपणे एकठामिलेवे । तच्चा हापरमाणुपोग्गलाएगयओसाहन्नंति । तेमाटे बे

वि परमाणु पोग्गला एगयउं साहवति तेजिज्जमाणाणुवाविसिहाविकज्जति दुवाकज्जमाणाएगयउंदिवज्जेति ॥ अनेन हि सादपुद्गलस्य सदसत्वाभ्युप गमन तस्य स्नेहोऽभ्युपगतएवे त्यतः कथ परमाणोः स्नेहाभावेन सङ्घातामावइति ? यच्चोक्त मेकत साद्धं एकत साद्दति, एतद प्ययुक्त परमाणो रणीकरणे परमाणुत्वाभावप्रसमात् तथा यदुक्त पञ्चपुद्गलाः सइताः कर्म्मतया भवन्ति, तद प्ययुक्त कर्म्मणो मन्तपरमाणुतया मनतस्कन्धरूपत्वा त्पञ्चाणुकस्य च स्कन्धमात्रत्वा तथा कर्म्मजीवावरकस्वभाव मिष्यते, तच कथं पञ्चपरमाणुस्कन्धमात्ररूप मसङ्ख्यातप्रदेशात्मक जीव मावृणुयादि ति ? तथा यदुक्त कर्म्मच शाश्वतं तद प्यसमीचीनं कर्म्मणः शाश्वतत्वे क्षयोपशमाद्यभावन ज्ञानादीना हाने रुत्कर्षस्य चाभावप्रसङ्गाद् दृश्यतेच ज्ञाना दिहानिवृद्धी तथा यदुक्त कर्म्म सदा चीयते अपचीयतेचेति, तद प्येकान्तशाश्वतत्वे नो पपद्यतइति यच्चोक्त भाषकात्पूर्वं भाषा तद्धेतुत्वा सत्यु पचारिकत्वा दुपचारस्य तत्वतो ऽवस्तुत्वा त्किञ्चो पचार स्तात्त्विके वस्तुनि सति भवतीति तात्त्विकी भाषासौ तिसिद्धं यच्चोक्त भाष्य

माणा अभाषा वर्त्तमानसमयस्या व्यावहारिकत्वा तदप्यसम्यक् वर्त्तमानसमयस्यै वास्तित्वेन व्यवहाराङ्गत्वा दतीतानागतयोश्च विनष्टानुत्पन्नतया सत्वेन व्यवहारानङ्गत्वादिति यच्चोक्तं, भाषासमयेत्यादि तदप्यसाधु भाष्यमाणभाषाया अभावे भाषासमय इत्यस्या अभिलापस्या भावप्रसङ्गात् यच प्रतिपाद्यस्या भिधेये प्रत्ययोत्पादकत्वादिति हेतुः सो नैकान्तिकः करादिचेष्टाना मभिधेयप्रतिपादकत्वे सत्यपि भाषात्वासिद्धे तथा यदुक्त मभाषकस्यभाषेति तदसङ्गततर मेवहि सिद्धस्या चेतनस्यवा भाषाप्राप्तिप्रसङ्गइति एव क्रियापि वर्त्तमानकालएव युक्ता तस्यैव सत्वादिति य च्चाभ्यासाभ्यासादिककारणमुक्त तथा मैकान्तिक मनभ्यासादावपि यत कादाचित्सुखादिरूपेव तथा यदुक्त मकरणत क्रिया दु खेति तदपि प्र तीतिबाधित यतः करणकालएव क्रिया दुःखावा सुखावा दृश्यते न पुनः पूर्वं पश्चाद्वा तदसत्वादिति तथा यदुक्त मकृत्वमित्यादि यदृच्छा वादिमतामयवा तद प्यसाधीयो, यतो ऽकरणादेव कर्म्म दु ख सुखवा स्या तदा विविधैहिकपारलौकिकानुष्ठानाभावप्रसङ्ग स्यात् अभ्युपग

तच किम्भित्यारमोपिकानुमान तेरपिवेति एव मेतरसव मघ्रानविभ्रमित उक्तम्च मूले —परतित्यियवत्तव्य पढमसएदसमयम्मिउद्दसे । विभ्रगी माम्मा मइजयापायिमासवा ॥ १ ॥ सद्भूयमसद्भूए प्रमाणतारिशौंतिविभ्रगे । सम्मत्तवायसरिसं तोभ्रम्माकातिनिद्दिठ ॥ २ ॥ सद्भूते परमाणौ असद्भू तमशुारि असद्भूत मयमात्मनि सद्भूत चैतन्य सद्भूते परमाणौ सद्भूतं नि प्रदेशत्व असद्भूते सवगात्मनि असद्भूत सकदृत्वमिति ४ ॥ मइंपुरागो पमा । मवमाइरूामी॥ त्यादितु प्रतीतायमेवति नवर ॥ दोण्हपरमाणुपोग्गलाणअत्थिसिणेहकाएति ॥ एकस्यापि परमाणो शीतोष्णस्निग्धरूक्ष स्पर्शाना मन्यतरदविरुद्ध स्पर्शद्वय मेकदेवास्ति ततो द्वयोरपि तयोः स्निग्धत्वभावात् स्नेहकायो स्त्येव ततश्च तौ विपमस्नेहा त्संहन्येते, इदम्च परमतानुवृत्योक्त मन्यथा रूक्षावपि रूक्षत्ववैषम्य संहन्येते एव यदाह —समनिद्धयाइबन्धो नहोइसमलुक्खयाइविनहोइ । वेमायनिद्धलुक्ख तवेण

साहणंति, कम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति? दोण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थिसिणेहकाए, तम्हा दोपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति, दुहा कज्जमाणा एगयओवि परमाणुपोग्गले एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ, तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति, कम्हा तिण्णिपरमाणुपोग्गला एगयओ साहणंति? तिण्ह परमाणुपोग्गलाण अत्थिसिणेहकाए तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगय

परमाणू पुद्गल एकठा मिले। ते भिज्जमाणादुहाकज्जंति। ते भेदतायका बेप्रकारे हुवे। दुहाकज्जमाणा। बिहु प्रकारे करीतायका। एगयओवियर माणुपोग्गल। एकपासे पणि एक परमाणु पुद्गल हुवे। एगयओविपरमाणुपोग्गलेभवइ। अर्थात् बीजेपासे पणि परमाणु पुद्गल हुवे। तिण्णिपरमाणुपो ग्गलाएगयओसाहणंति। तीन परमाणू पणि एकठा मिले। कम्हातिण्णिपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहणंति। स्यां माटे तीन परमाणू पद्गल एकठा मिले। तिण्हंपरमाणुपोग्गलाणं अत्थिसिणेहकाए। तीन परमाणू पुद्गलनेवे स्नेहपणाबको रासि। तम्हातिण्णिपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहणंति। ते माटे तीन परमाणू पद्गल एकठा मिले। तेभिज्जमाणा दुहावि। ते भेदीतायका बेभेदे पणि। तिहावि कज्जंति। त्रिभेदे पणि हुवे। दुहाकज्जमाणा एगयओवि

वंधोउएभावति ॥ १ ॥ खधेवियखसेमसासएति ॥ उपचयापचयिकत्वा दतएवाह ॥ सयासमियमित्यादि ॥ पुब्धिभासाअभासत्ति ॥ भाष्यत इति भाषा भाषकाव पूर्वं न भाष्यत इति न भावेति ॥ भासिज्जमाणीभासत्ति ॥ शब्दार्थोपपत्तेः ॥ भासियाअभासत्ति ॥ शब्दार्थवियोगात् ॥ पुब्विंकि

ठ साहणति, ते भिज्जमाणा दुहावि तिहावि कज्जति, दुहा कज्जमाणा एगयउ परमाणुपोग्गले एगयउ दुपदेसिए खधे भवइ, तिहा कज्जमाणा तिन्निपरमाणुपोग्गला भवति, एव जाव चत्तारि पच परमाणुपोग्गला एगयउ साहणति साहणित्ता खधत्ताए कज्जति, खधेवियणं से अणसासए सयासमिय उवचिज्जइय अ वचिज्जइय। पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीतिक्कतचण भासिया भासा अभासा, जा सा पुव्विं भासा अभासा भासिज्जमाणी भासा भासा भासासमयवीतिक्कतचण भासिया भासा

माबुपाम्बे। बमदे करोतावका एक पासे परमाणु पुद्गल हुवे। एगयपादुपदेसिएखधेभवइ। एक पासे बेप्रदेशीखंध हुवे। तिहावज्जमाणा। तीने मे करोताथका। तिन्निपरमाणुपोग्गलेभवइ। तीन परमाणु पुद्गल हुवे। एवं जावचत्तारिपंचपरमाणुपोग्गलाएगयओसाहणति। इम यावत् चार परमाणु पुद्गल एकठा मिले। साहणित्ता। मिलीने। खधत्ताएकज्जति। खधपणे हुवे। खधेवियणसेअसासए। खधपणि अशाश्वतोछे, उपचय अपचय पर्यायी। सयासमियंउवचिज्जइय अवचिज्जइय। एतलामाटेज कहेछे—सदैव समयभावे अपणो पुद्गलमो सयोगे वीयमरो सयोगे। पुव्विं। पहिला भासाअभासा। भाषा बोलीवें ते अभाषा कहीये। भासिज्जमाणीभासाभासा। भाषतालयां बोलीये ते भाषा कहीये शब्द अर्थनी उपपत्ति थाय तेमाटे भासासमयवीतिक्कतचणभासियाभासाअभासा भासापुव्वि भासा अभासा। भाषा समय अतिक्रांतथका पछि अपुन य वाक्यासकारे, भाषित जे भाषा अभाषा ते कहीये शब्दार्थना विभागथी किवा पूर्वं भाषा ते अभाषा कहीये। भासिज्जमाणीभासाभासा। बोलतो जे भाषा ते भाषाकहीये। भासा स मयवीतिक्कंतचभासियाभासाअभासा। भाषा समय अतिक्रांतथका पछि अपुन य वाक्यासकारे, भाषित जे भाषा ते अभाषा कहीये। साकिंभासथी

रियाध्दुक्खाति ॥ परगा स्पूये क्रियैव नास्ती त्यसम्बादेव न दु:खा सुखापिना सा वसम्बादेव केवलं परमतानुसृत्या दु:खेत्युक्तम् अहाजाखेति वचनात् ॥ कज्जमाणीकिरियादुक्खा ॥ यस्मात् इहापि य रिक्रयमाणा क्रिया दु:खे त्युक्त न त्परमतानुसृत्यैवा न्यथा सुखापि क्रियमाणैव क्रिया मया ॥ किरियासमयवितिक्कंतयमित्यादिद्वय ॥ किंचदुक्खमित्यादि ॥ अनेनच कम्मसत्ता वेदिता प्रमाणसिद्धत्वा दस्य तथाहि – इह यद्यो रिष्टा शब्दादिविषयसुखसाधनसमेतयो रेकस्य दु:खसंपच परस्य मन्यस्ये सरत्नतद्विषिष्टहेतु मन्तरेण सम्माव्यते कार्यत्वा द्घटव यश्च सौ विशिष्टो हेतु सम्मेंति आहच – जोतुल्लसाहणाणं फलेविसेसोणसोविणाहेउ कज्जत्तणओगोयम घडोव्वहेऊयसोकम्मं ॥ १ ॥ पुन रप्यन्ययूथिकान्तरमत मुपदर्शयन्नाह ॥

अन्नासा, सा किं भासउ भासा अभासउ भासा? भासउणं भासा सा णोखलुसा अभासउ भासा। पुव्विं किरिया अदुक्खा जहा भासा तहा भाणियव्वा, किरियावि जाव करणउणं सा दुक्खा नो खलु सा अकरणउ दुक्खा, सेव वत्तव्वंसिया किच्चं दुक्खं फुसं दुक्खं कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टु कट्टु पाणभूयजीवसत्तावेदणं वेदंतित्ति

भाषा। ते म् भाषकनी भाषा। अभाषमाणभाषा। अभाषकनो भाषा। भाषणसमामासा। भाषकनो तिमाभाषा। बोलवुसमासभाषा। नही कि ये ते अभाषकनी भाषा। पुव्विकिरियाअदुक्खा। पहिला क्रिया दुखनो करणहारो। अक्रमासातकामाविसम्माकिरियावि। जिम भाषाकहो तिम क हवो किहावचि। आवकरणपापसादुक्खा। बापत् करणनो ते दुख। बोलसुसाभकरणआदुक्खा। नही किये तिक्रिया अकरणनो दुख। सेवमत्तव मिवा। इम कहव्यता हुवे। किचदुक्खमुस्दुक्ख। कानो दुख अर्थी दुख। कज्जमाणकडदुक्खम्। करतामांधो चोथीदुख इम कहोने। पाणभूतजीव सत्तावेदनवेदतितिवत्तव्वसिया। माण भूत जीव सत्त वेदना वेदे इम कहवुताहुवे। अवउत्थियाअभतेएवमाइक्खति ४ जाव। वली अन्ययूथिकातरनो मत कहेछे – अन्यतीर्थी व भाखासंचारे, केमकम्। इम कहे सामान्यनो यावत् भेदेकरी कहेछे – एवं अनुपएकोवे। इम किये एकजीव। एगेअसमएएक शाकिरियापोपकरेर तमश। एक समये दो क्रिया करेछे ते कहेछे – इरियावहियंच संपराइयंच। जाव ते किमच जथा मागते इहां पद कहीये ते

अण्णउत्थियाणमित्यादि ॥ तत्रच ॥ इरियावहियंति ॥ ईर्या गमन तद्विषयः पन्था मार्ग ईर्यापथ स्तत्र भवा ऐर्यापथिकी केवलकाययोगप्रत्यय क
र्मबन्धइत्यर्थ ॥ संपराइयंचत्ति ॥ सम्परैति परिभ्रमति प्राणी भवे एभि रिति सम्परायाः कषाया स्त त्प्रत्यया या सा साम्परायिकी कषायहे
तुकः कर्मबन्धइत्यर्थः ॥ परउत्थियवत्तव्वयेयवृत्ति ॥ इहसूत्रे अन्ययूथिकवक्तव्य स्वमनुसारणीय, ग्रन्थगौरवभयेमा लिखितत्वा तस्य तवेद—जं समय
सपराइय पकरेइ त समयं इरियावहियं पकरेइ इरियावहियापकरणयाए सपराइय पकरेइ सपराइयपकरणयाए इरियावहियं पकरेइ एव खलु
एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ त० इरियावहियंच सपराइयचेति सस्समयवत्तव्वयाए नेयव्वं। सूत्र मितिगम्य, आर्थ—सेवकमेय

घसहसिया । अण्णउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खंति जाव एवखलु एगेजीवे एगेणसमएण दोकिरियाओपकरेइ तजहा—इरियावहियच सपराइयच , जसमय इरियावहिय पकरेइ तसमयं सपराइय पकरेइ , जसमय सपराइयं पकरेइ तसमय इरियावहिय पकरेइ , इरियावहिय पकरणयाए सपराइय पकरेइ , सपराइय पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ । एवखलु एगेजीवे एगेणसमएण दोकिरियाओ पकरेइ तजहा—इरियावहि

इमे विषेइवे ते ईर्यापथिकी कहीये, केवल कायमार्ग प्रत्ययकर्मबंध इत्यत्र, भवमांहि परिभ्रमै प्राणी इणेकरीने ते संपराय कषाय तेहथी हुइ तेसंपराधि की कहीये, कषायहेतु कर्मबंध इत्यर्थ। जसमयंइरियावहियपकरेइ। जे समयनेविषे इरियावही क्रियाकरे। तसमयंसपराइयपकरेइ। ते समयनेविषे स परायिकी कियाकरे। जसमयंसपराइयपकरेइ। जे समयनेविषे संपरायिकीक्रियाकरे। तसमयइरियावहियपकरेइ। ते समयनेविषे इरियावहीक्रिया क रे। इरियावहियपकरणयाए संपराइयपकरेइ। इरियावहीक्रिया करतोथका संपरायिकी कियाकरे। सपराइयपकरणयाए। संपरायिकी किया करतो थका। इरियावहियपकरेइ। इरियावही किया करे। एवखलुएगेजीवे। इम निश्चे एकजीव। एगेणसमएणदोकिरियाओपकरेइ तजहा। एक समये बे क्रिया प्रतें करे तेकहेछे—इरियावहियंच संपराइयच २। इरियावहीक्रिया अपुन संपरायिकी किया अपुन। सेवकमेयंभंतेएवं। ते किसे प्रकारे एपर्व

नत ? अत्र गोयमा ! जगतेणं अण्णउत्थियाएवमाइक्खंति ४ जावसंपराइयंच जेतेएवमाहंसु मिच्छातेएवमाहंसु अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४ एवंखलुएगेजीवेएगेणंसमएणं एगंकिरियंपकरेइ तंजहा इत्यादि पूर्वोक्तानुसारेणा ध्येयमिति मिथ्यात्वं चास्यैवं—ऐर्यापथिकीक्रिया अकषायोदय प्रभवे तरातु कषायोदयप्रभवेति कथ मेकस्यैकदा तयो सम्भवो विरोधादिति अनन्तरं क्रियोक्ता क्रियावतां चोत्पादो भवती त्युत्पादविरहप्र

यंच १ संपराइयंच २ । सेकहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जणंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति तंचेव जाव जेते एवमाहंसु मिच्छातेएवमाहंसु । अहंपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि ४ । एवंखलु एगे जीवे एगसमए एक्कं किरियं पकरेइ ससमयवत्तव्वयाए नेयव्वं , जाव इरियावहियं संपराइयंवा ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयंकालं

हेभगवन् ! इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अन्यते अन्यतीर्थिया । हेगौतम ! जेमाटे अन्यतीर्थी । एवमाइक्खंति । इत्यादि । सर्वेजावत्तेतेएवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु । तिमजोज कहवा यावत् जिवे इमकह्या मिथ्या मूठा तिणे इमकह्या ते जिम इरियावही अथवा समपये वन संपराथिकओ बयास प्रम वपे ते एके समये अथवो जिम अपवे परिरोप । अहंपुण गोयमा एवमाइक्खामि ४ एवंखलुएगे । हुं वली हेगौतम । इम कहुंछुं इम निश्चे एक । जीवे ए गसमयेणं किरियंपकरेइ ससमयवत्तव्वया नेयव्वं । जीव एके समये एक क्रिया करे ते कहेछे—इरियावही अथवा संपरायिकी जे समयनेविषे इरि यावही क्रियाकरे ते समयनविषे संपरायिकीक्रिया नकरे, जे समयनेविषे संपरायिकी क्रियाकरे ते समये इरियावही नकरे, पूर्वोक्त अनुसारे पोताना सासननी वक्तव्यता कहवी । जाव इरियावहियंवा संपराइयंवा निरयगइणंभंते केवइयंकालंविरहियाउववाएणंपण्णत्ता गोयमा जहन्नेणएक्कं समयं उक्को सेणंबारसमुहुत्ता एवंवक्कंतीपयं भाणियव्वं निरवसेसं सेवंभंते २ त्ति जावविहरइ । यावत् इरियावही अथवा संपरायिकीक्रिया एककरे बीजीनकरे, अ नंतरे क्रिया कही ते क्रियावंतनो उत्पादहुवे, ते उत्पाद विरहप्ररूपणा कहेछे—नरकगतिनेविषे हेभगवन् ! केतलोकाल विरह अंतरकाल उप जवानाकाल कह्या इतिप्रश्न हेगौतम ! नरकगतिनेविषे उपजवानाविरह जघन्य एक एकसमय उत्कृष्टो बारमुहूर्तनो कह्यो, इम व्युत्क्रांति जीवनो

कपवामाह ॥ निरयगइत्यादि ॥ वक्कतीपयति ॥ व्युत्क्रान्ति जीवाना मुत्पाद सदर्थं पद प्रकरण व्युत्क्रान्तिपद तत्र प्रज्ञापनायां षष्ठ तथा चत्ते
सत सर्व सूत्रम्–पञ्चेन्द्रियतिर्यग्गतौ मनुष्यगतौ देवगतौ चोत्कर्षेतौ द्वादश मुहूर्तो जघन्यत स्तोकसमयउत्पाद विरहयति, तथा–चउवीसई
मुहुत्ता १ सत्तअहोरत्त २ तहयपन्नरस ३। मासोय ४ दोय ५ चउरो ६ छम्मासा ७ विरहकालोउ ८ ॥ १ ॥ उक्कोसोरयणाइसु सव्वासुजहन्नओसम
ओ। एवंचयउव्वट्टण सत्तापुव्वसुरनरतुल्ला ॥२॥ सायेय–रत्नादौ प्रतिज्ञिय सप्तमसप्तावरमसमस्त्व। सववक्तेवइया उव्वट्टणाविरमेव ॥ १ ॥ तिर्यग्ग
तीय विरहकालो यथा–भिन्नमुहुत्तोविगलि दियाणसमुच्छिमाणयतहेव। बारसमुहुत्तगब्भे उक्कोसंकसकढसमठ ॥ १ ॥ एकेन्द्रियाणांतु विरहएवना
स्ति मनुष्यगतौतु–बारसमुहुत्तगब्भे मुहुत्तसमुच्छिमसुचउवीसं। उक्कोसविरहकालो दोसुविपजहन्नठसमठ ॥ १ ॥ देवगतौतु–भवणवणजोइसोहम्मीसा
णेचउवीसइमुहुत्ताउ। उक्कोसविरहकालो पंचसुविजहन्नठसमठ ॥ १ ॥ नवदिणवीसमुहुत्ता ३ बारसदसचेवदिणमुहुत्ताउ ४। बावीसाअद्धंचिय ५ पण
मास ६ अमीइ ७ दिवसस्य ८ ॥ २ ॥ सखेज्जमासआणय ९ पाणयसु १० तहआरण ११ चुए १२ वासा। सखेज्जाविसेया गेविज्जेसुपढमेसु ॥ ३ ॥
हेट्ठिमवाससयाइं मज्झिमइस्साइंउवरिमसहस्सा। संखेज्जाविसेया जहासंखंतीसुंपि ॥ ४ ॥ पलियासंखसभागो उक्कोसोहोइविरहकालोउ। विम

निरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कंसमयं , उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता , एवं वक्कंतीपयं

अपमका तेषवगो स पद मकरण व्युत्क्रांतिपद पयवणाना छट्ठापद तेहथी जाणवा तथाच लेसतयव सूत्र्य, पर्वेद्रिय तिर्यंच गतिनेविषे मनुष्यगतिनेविषे
देवगतिनेविषे उत्कृष्टो बारह मुहूर्त जघन्यो एक समय, तथा रत्नप्रभा आदिदेई चउवीस मुहूर्त १ सात अहोरात्रि २ पनरह अहोरात्रि ३ मास ४ एव
दोयमास ५ चारमास ६ छमास ७ विरहकाल उत्कृष्टा जघन्यो एक समय जाणवा एमहीज चविवाना विरह जाणवा, वली उपजवा चविवानो सख्या जघन्ये
दोय तीन उत्कृष्टो सख्याता असख्याता ववना पवि इमज तिर्यच तिनेविषे विरहकाल भिन्न मुहूर्त। विगलेंद्रियासमुच्छिमायय। तहय, बारसमुहूर्त
गर्भे उक्कोस जघन्यतोसमयो, एकेंद्रीने विरहकालनेज नही इत्यादि पयवणाथी सर्व कहना, तहत्ति हेभगवन्! तुम्हे कह्यु तेसव सत्य छे भगवानथी यावत्

पारमुनिन्द्रिको मव्वेसु मश्मनुमपठ ॥ ५ ॥ उववायविरहकालो इहएसोवम्मिसंउदेवेसु । उव्वट्टणाविरय सव्वेसुविहोइविसेया ॥ ६ ॥ अहम्मेयएगसमए उक्कोसपतुर्वीतिवम्मामा । विरहोमिग्विनवरं उव्वट्टवक्रियानियमति ॥ ७ ॥ प्रथमशतेदशमोद्देशक ॥ इतिगुरुगमजलेसागरस्याहमस्य । स्फुटमुप विमश्राहर पम्ममाकूसमरा । प्रथमशतपन्यावलसमतिमतीतो विवरव वरपोतं प्राप्यसद्गीवराका ॥ १ ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्य विरचितायां भग वतीसूत्रौ प्रथमशते दशम उद्देशः समाप्तः ॥ १० ॥ ॥ • ॥ • ॥

व्याख्यात प्रथमशत मथ द्वितीय व्याख्यायते तत्रापि प्रथमोद्देशकस्य चायमभिसम्बन्धः प्रथमशतान्तिमोद्देशकान्ते जीवाना मुत्पादविरहो निरूपि त इह तु तेषामेवोच्छ्वासादि चिन्त्यतइत्येव सम्बन्धस्या स्येद मुपोद्घातसूत्रानन्तरसूत्र ॥ लोकमेवस्यादि ॥ यद्य प्येकस्मिन्क्रियाका सामयमादिममाका णी

जाणियद्व निरयसेस, सेव भंते भंतेत्ति जाव विहरइ ॥ पढमसए दसमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १० ॥
ऊसासेखंदएणविय १ पुढवि २ दिय ३ अणउत्थि ४ भासाय ५ । देवायचमरचंचा ७ समय ८ खित्त ९ त्थिकाय १० बीयसए ॥ १ ॥ तेणकालेणं तेणसमएणं रायगिहेनामनगरे होत्था, वण्णओ, सामीसमोसढे,

---

विहरे। इह दसमा उद्देसा समता। दसम उद्देशानो टबा लिख्या। पढमसयसम्पत्त। एपहिला शतकनो टबापूरो लिख्यो ॥ १ ॥ १ ॥ उसासनुइणविय। पंते चौदमा उत्पाद विरहकाल। हिवे बीजा शतकने विषे तेहमाल उसासादि कहेछे—पहिला उद्देशामांहेविषे सामास भने चार कना अधिकारछे। पुढविइंदिय भन्नउत्थिभासाय देवायचमरचंचा समयखित्तत्थिकायबीयसए। पृथिवी अधिकार बीजो २ इंद्रियनो बीजो ३ अन्यतीर्थी अधिकार ४ भाषानो अधिकार ५ देवनो अधिकार ६ चमरचंचानोअधिकार ७ समयक्षेत्रनो अधिकार ८ क्षेत्राधिकार ९ अस्तिकाय १ एबीजा शत कने विषे दस उद्देशा जाणवा १ तणकालेण तेणंसमएण। तेकालनेविषे ते समयनेविषे। रायगिहेनामनयरेहोत्था। राजगृहनामा नगरहुवे तेहना वर्णव उवाइ उपांगमे विषे कह्यछ। वण्णओ। तिम कहवा। सामीसमोसढे। श्रीमहावीरस्वामी आव्या। परिसानिग्गया। परखदा वांदवा गोतमनो आवो

वर्यं प्रतीयते तथापि तदुच्छ्रासादीनां साक्षा दनुपलम्भाज्जीवच्छरीरस्य निरुच्छ्रासादेरपि यदापि दर्शना त्पृथिव्यादिषू च्छ्रासादिविषया शंका स्यादिति तन्निरासाय तेषा मुच्छ्रासादिक मस्ती त्येतस्य मनप्रमाणप्रसिद्धस्य प्रदर्शनपरमिदं सूत्र मवगन्तव्यमिति उच्छ्रासा द्यधिकारा ज्जीवादि

परिसानिग्गया धम्मोकहिर्ज , पडिगयापरिसा । तेणकालेण तेणसमएण जेठेश्रुतेश्रासी जाव पज्जुवासमाणे एववयासी , जेइमे भंते ! वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया जीश्रा एएसिण श्राणामवा पाणामवा उस्सासवा निस्सासवा जाणामो पासामो जेइमे पुढविकाइया जाव वणप्फइकाइया एगिंदिया जीवा एए सिणं श्राणामवा पाणामवा उस्सासवा निस्सासवा णजाणामो णपासामो , एएसिण भंते ! जीश्रा श्राणम

धर्म्मोकहिया । धिविध धर्म प्रकाश्या कह्या । परिसापडिगया तेणकालेण तेणसमएण । धर्म सांभलीनेपर्षदा पाछी वली घरेगया मनुष्य इत्यर्थ, तेकालने विषे ते समयनेविषे । जेठेभतेशासी जावपज्जुवासमाणे । वडा शिष्य यावत् भगवन्त श्रीमहावीरस्वामी प्रतें सेवताथका पर्युपासना करताथका । एवमवासी । इम कहता हुआ । जेइमेभंते बेइंदिया ते इंद्रिया चउरिंदिया पंचिंदियाजीवा । जे एह हेभगवन् ! स्पर्शन रसन बेइन्द्रीछे जेहने ते बेइन्द्री, स्पर्शन रसन घ्राण तीनइन्द्रीछे जेहन ते तेरिन्द्री, स्पर्शन रसन घ्राण चक्षु चारइन्द्रीछे जेहने, स्पर्शन रसन घ्राण चक्षु श्रोत्र ए पांच इन्द्रीछे जेहने ते पंचेंद्री । आणामवा पाणामवा ऊसासवा नीसासंवा जाणामोपासामो जेइमेपुढविकाइया जाववणप्फइकाइया एगिंदियाजीवा । आणम पाणम ते भीतर सासासास मेवा ऊसास नीसास ते बाहिरो सास ऊसास सेवा अथवा आणाम एपदनो पर्याय ऊसास पाणाम एपदनो पयाव नीसास, तेह जाणूहूं देखूहूं एतले अम जीवनो सासोसास जाणूं देखूहूं, जे पृथिवीकायिक अप्कायिक तेउकायिक वाउकायिक यावत् वनस्पतीकायिक एकेन्द्रीजीवछे जापणि एहनेविषे आगमादि प्रमाणे करी जीव पणानो प्रतीति अमनेछे तोपणि । एएसिण आणामवा पाणामवा उस्सासवा निस्सासवा णजाणामा णपासामो । एहनो भीतर सासछे ते भीतर ऊसासछे ते बाहिर सासछे ते बाहिर नीसासछे ते नजाणुं नदेखूं । एएणभंतेजीवा आण

पु पच्चविंशती परेपू छ्वामादिद्रव्याणां स्वरूपनिर्णयाय प्रश्नपत्राः ॥ किमन्तेओयेत्यादि ॥ किमित्यस्य सामान्यनिर्देशात्वा त्यानि कि विधानि द्रव्याणीत्यथः ॥ आहारगमोमेयवोत्ति ॥ प्रज्ञापनायामष्टाविंशतितमाहारपदोक्तसूत्रपद्धति रिहाध्येयेत्यर्थ , याचेय-तुवणाइतिवणाइंआवपवसा

तिया पाणमतिया उस्ससतिया निस्ससतिया ? हता गोयमा ! एएविण जीवा श्राणमतिश्रा पाणमतिया उस्समतिया निस्ससतिया, किया नंते ! एतेजीवा श्राण० पाण० उस्स० निस्स० ? गोयमा ! दव्वठणश्राणतपएसियाइ दव्वाइ , खित्तठश्रमसेज्जपएसोगाढाइ कालठश्रमयरठिईयाइ , नायठवसमताइ गधमताइ रसमताइ फासमताइ श्राणमतिया पाणमतिया उस्ससतिया निस्सतिया जाइं नावठवममताइ श्राणमतिया पाणमतिया उस्समतिया निस्ससतिया ताइ किं एगवसाइ श्राणमतिया पाणमतिया उस्ससतिया नि

मतिया पाणमतिया उससतिया नीससतिया। तेसाटे एव हेभगवन् ! जीव भीतर सासवे भीतर उसासवे बाहिर सासवे बाहिर नीसासवे इतिमत्र। हतागोयमा। हंगोतम ! एतेविकंद्रीया भाणमतिया। पएविव्यादिव व बाह्यार्थकारे, जीव भीतरसासवे। पाणमतिया उससतिया जीव मतिया। भीतर नीसासने बाहिर सासने बाहर नीसासवे। निस्ससतिया, एतेजीवा आणमतिया पाणमतिया उससतिया नीससतिया। कि इसो पद सामान्य निर्देशपणाओ किसाकिमा प्रकारनाद्रव्य हेभगवन् ! पृथिव्यादि एकेंद्रीजीव भीतर सासवे भीतर उसासवे बाहिर सासवे बाहिर नीसासवे इतिमत्र हतार। गोयमा द्रव्यथाणपतपदेसियाद्रव्याद। हेगोतम ! द्रव्यथी अनंतप्रदेशी अनंतपुद्गलद्रव्यमते। क्षेत्रथीअसंख्येअपएसा गाढाइ कालथीअसंख्यसमयस्थिति। क्षेत्रथी असंख्यात आकाशने प्रदेशे पुद्गलअवगाहे तेमते, कालथी एक समयनी यावत् असंख्यात समयनी स्थितिना तेमते। भाववाणवयवाइ गंधमताइ रसमताइ फासमताइ आणमतिया। भावथी वर्ण ५ सहितद्रव्य गंध २ सहित रस ५ ते सहित स्पर्श ८ तेसहित द्रव्य आणमतिया पर्षे घर्षे ३। जाइ भावथावर्णमताइ। जिके भावथी वर्ण सहित पुद्गल द्रव्य। आणमतिया ३ ताइ किंएगवणाइ। जाजोताव प

ईपिआईयसउआलाईसाईविएमगुणमालाई वावमर्वतमुषकासाइपि इत्यादिरिति, ॥ जीवेर्गिदियत्यादि ॥ जीवाएकेन्द्रियाव ॥ वाघायनिव्वाघाय
त्ति ॥ मनुष्योपाद्यापावनिर्व्याघातवतो भवितव्या, इहचैवं पाठेपि निर्व्याघातसम्भव पूर्वद्रष्टव्य स्तवभिसापस्य सूत्रे तथैवे दृश्यमानत्वात्, तत्र जी
वानिर्व्याघातसम्भाघाता: सूत्रएव दर्शिता, एकेन्द्रियास्त्वेव–पुढविकाइयाणभंते। कइदिसिंआणमंति? गोयमा! निव्वाघाएणं छद्दिसिं वाघायं पडु
च सिय तिदिसिमित्यादि एवमप्कायादिष्वपि, तत्र निर्व्याघातेन षड्दिशं षड्दिशो यथा नमनादौ ततथा व्याघातं प्रतीत्य स्या त्रिदिशं स्या
चतुर्दिशं, स्या स्यम्चदिशं आनमन्ति यत सोपां लोकान्तवृत्तावसोकेम भावविदिशत्वम्नासादिपुद्गलानां व्याघातः सम्भवतीति ॥ सेसानियमाछद्दि
सिति ॥ शेषा नारकादिकसा षड्दिशं आनमन्ति तेयाचि त्रसनाड्यन्तर्भूतत्वात् षड्दिश उच्छ्वासादिपुद्गलसद्भावोस्त्येवेति अथैकेन्द्रियाणां उच्छ्वा
सादिभावा उच्छ्वासादय वायुरूपस्वा स्त्रिवायुकायिकाना मप्युच्छ्वासादिना वायुनैव भवितव्य, मुतान्येन केनापि पृथिव्यादीनामिव तद्विलक्षणेने

स्ससतिवा श्राहारगमो नेयव्वो, जाव पवदिस, किसन्नते! णेरइया श्राणमतिवा पाणमतिवा उस्ससति
वा निस्ससतिवा तचेव जाव नियमा छद्दिसिं श्राणमतिवा पाणमतिवा उस्ससतिवा निस्ससतिवा, जीवेए
गिंदिया वाघाया निव्वाघाया जाणियव्वा, सेसा नियमा छद्दिसि। वाउयाएणन्नते! वाउयाएचेव श्राणम

ते यदि तिक्ते स्तु एवं वप द्रुम भते। आनमतिवा ४। सासासास पवे यदि। श्राहारगमाणेयव्वो। पवयपाना पञ्चावीसमा पदमेवियि यतो तेसूयपवति
एवांचयो। जाव पंवदिसि। यावत् पवदिमि व्याघाव आव्यो अपवश। जिसभत नेरइया। किसा प्रकारगा द्रव्य हेभगवन्! नारको। आनमतिवा ४।
सामोस्वास यदि। तथैवयावनियमाछद्दिसि आनमंतिवा ४। तिमश्चोक्त यावत् नियमे छदिग्विना पुद्गला सासास्वासवि। जीवेगिंदिया वाघाव निव्वा
घाय भाणियव्वा। जीवपदे तथा एकेन्द्रियना पंचपदनेविये व्याघाते तथा निर्व्याघाते छदिग्विना विभागको सासोस्वास वक्तव्यो। सेसानियमाछद्दिसिं। ये
प उगुबोस नारकादिकानविये नियमयो छदिग्विना वक्तव्या। वाउयाएणंभंते वाउयाए। वायुकाय हेभगवन्! वाउनेकोज। पेश्चानमंतिवा ४। निय

॥ वाउयायुवमित्यादि॥ यथोच्छ्वासस्यापि वायत्वा दन्यमो च्छ्वासवायुना भाव्य तस्या प्यन्येनैव मनवस्था मैव मचेतनत्वा किम्व मोय मुच्छ्वासवायु सवायुत्वेपि नवायुसमभ्यौदारिकवैक्रियशरीरत्रूप तदीयपुद्गलाना मानमाश्रयितात्ना मौदारिकवैक्रियशरीर पुद्गलत्वो ननगुरुमदेशलत्वम सूक्ष्मतया एतच्छरीराव्यपदेश्यत्वा तथाच मत्यच्छ्वासादीना मभाव इतिना नवस्था ॥ वायुकायसमतइत्यादि ॥ अय च मद्री वायकायमसत्वावा द्वितितो न्यथा पृथिवीकायिकादीनामपि मृत्वा स्वकाये उत्पादोस्त्यव सर्वेषा मेषा कायस्थिते रसङ्ख्याततया नन्ततया चोक्तत्वा दाह-असङ्ख्यासप्पिणिउस प्पिणीउरनिदियाकयपउदब । तावेवऊमयंता ववस्सईएउमोपवा ॥ १ ॥ तत्र वायुकायो वायुकायएवा नेक मननदस्तउत्वा ॥ उद्दाइत्ति ॥ अपवत्य मृत्वा ॥ तत्थवत्ति ॥ वायुकायस्य ॥ पच्चायाइत्ति ॥ प्रत्याजायते उत्पद्यते ॥ पुट्ठेउद्दाइत्ति ॥ स्पृष्ट स्वकाय

तिया पाणमतिया उस्ससतिवा नीससतिश्रा ? हंता गोयमा ! वाउयाएण जाव नीससंतिया । वाउयाएण भंते ! वाउयाएचेव अणेगसयसहस्स खुत्तो उद्दाइ उद्दाइत्ता, तत्थव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइ ? हंता गोयमा ! जाव पच्चायाइ । सेभंते ! किंपुट्ठे उद्दाइ अपुट्ठेउद्दाइ ? गोयमा ! पुट्ठउद्दाइ नोअपुट्ठेउद्दाइ । सेभंते ! कि

मानमास पन गहे इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हांगौतम ! वाउयाएणवायुकायनीससतिवा । वायुकाय वायुशरीरे यावत् नीसास मूके इम सर्व व हवा । वाउयाएणभंतेवाउयाएचेव । वायुकाय हेभगवन् ! वायुने विषेज विषे । अनेकसयसहस्सखुत्तो उद्दाइ २ ता । अनेक शतसहस्र लखवार मरीम रीने । तत्थेवभुज्जो २ पच्चायाति हंता गोयमा । तिहांज वायुकायनविषे वारवार उपजे इतिप्रश्न उत्तर । हंतागोयमा । हांगौतम ! जावपच्चायाति । यावत्उपजे । सेभंतेकिंपुट्ठउद्दाइ । ते हेभगवन् ! ए वायु अन्ये करस्या मरे । अपुट्ठउद्दाइ । अथवा अणफरस्या मरे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पुट्ठ उद्दाइ । हेगौतम ! फरस्या मारणसौगी अपेक्षाये । नोअपुट्ठउद्दाइ । नही अणफरस्या मरे । सेभंतेकिंससरीरीनिक्खमइ । ते हेभगवन् ! ए शरीर सहित नीकले पाताना कलेवरथकी, अथवा । असरीरीनिक्खमइ । पाताना कलेवरथकी शरीररहित नीकले इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सियससरीरी

शन्येन परकायशस्त्रेणवा अपद्रूयति म्रियते ॥ मोअपुट्ठेत्ति ॥ सोपक्रमापेक्षमिदं ॥ खिप्पमेइत्ति ॥ स्वकलेवरात् ॥ सियसरीरित्ति ॥ स्या त्कथञ्चित् ॥ उरालियवेउव्वियाइं विप्पजहायेत्यादि अयमर्थ औदारिकवैक्रियापेक्षया अशरीरी तैजसकार्मणापेक्षयातु सशरीरी निष्क्रामतीति वायुकायस्य पुनः पुन स्तत्रै वोत्पत्ति र्भवतीति उक्त मथ कस्यचि न्मुनेरपि संसारचक्रापेक्षया पुनः पुन स्तत्रै वोत्पत्तिः स्यादिति दर्शयन्नाह ॥ मडाईणमित्यादि ॥ मृतादी प्रासुकभोजी उपलक्षणत्वा देषणीयादिभोजीति दृश्य निर्ग्रन्थ साधु रित्यर्थ ॥ खिप्पं ॥ शीघ्र मागच्छतीति योगः किंविधःस

ससरीरीनिस्कमइ असरीरीनिस्कमइ ? गोयमा ! सियससरीरीनिस्कमइ सियअसरीरीनिस्कमइ , सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ सियससरीरीनिस्कमइ सियअसरीरी ? गोयमा ! वाउकायस्सण चत्तारिसरीरया पन्नत्ता तजहा—उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । उरालियवेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयकम्मएहिं निस्कमइ , सेते णट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ सियससरीरी सियअसरीरीनिस्कमइ । मडाईण भंते ! नियठे नोनिरुद्धभवे

निक्कमइ । हेगौतम ! कथंचित् प्रकारे शरीर सहित नीकले । सियअसरीरीनिक्कमइ । कथंचित् प्रकारे शरीर रहित नीकले । सकेणट्ठेणभंतेएवंवुच्चइ । ते स्याभाटे हेभगवन् ! इमकह्यु । सियससरीरीनिक्कमइ । कथंचित् प्रकारे शरीर सहितनीकले । सियअसरीरीनिक्कमइ । कथंचित्प्रकारे शरीर रहित नीकले । गोयमा वाउकायस्सणं । हेगौतम ! वाउकायने । चत्तारिसरीरया पन्नत्ता तजहा । चार शरीर कह्या तेकहेछे—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । ओदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४ । ओरालियवेउव्वियाइं विप्पजहाय । तिहां ओदारिक १ वैक्रिय २ एवेशरीर छांडीने नीकले । तेयकम्मएहिंनिक्कमइ । तैजसकार्मणनो अपेक्षाये सशरीरी नीकले । सेतेणट्ठेणं गोयमा एववुच्चइ । ते तेणेअर्थे हेगौतम ! इमकह्यु । सियससरीरीनिक्कमइ । किवारेक कथंचित् प्रकारे शरीर सहित नीकले । सियअसरीरीनिक्कमइ । किवारेक कथंचित्प्रकारे अशरीरी नीकले । मडाइणभंतेनियंठे नोनिरुद्धभ वे नोनिरुद्धभवपवंचे । प्रासुकभोजी हेभगवन् ! निर्ग्रंथ कहतां साधु जेणे भवरूपआश्रयो भवना विस्तार जेणे रुध्योनथी । नोपहीणसंसार । चतुर्गति भम

रित्याह ॥ णोनिरुद्धेत्यादि ॥ यनिरुद्धागतजन्मा चरमभवाप्राप्त इत्यर्थः अथच प्रयद्वयप्राप्यमोक्षोपि स्यादित्याह ॥ णोनिरुद्धभवपवंचेत्ति ॥ प्राप्तभवविस्तार इत्यर्थः अयंच देवमनुष्यभवप्रपञ्चापेक्षयापिस्या दित्यताह ॥ णोपहीणसंसारेत्ति ॥ अप्रहीणचतुर्गतिगमन इत्यर्थः, अतएव अ तव्वं ॥ णोपहीणसंसारवेयणिज्जेत्ति ॥ अप्रक्षीणसंसारवेद्यकर्मा ॥ अयंच सरुचतुर्गतिगममतोपि स्या दित्यताह ॥ णोवोच्छिन्नसंसारेत्ति ॥ अत्रुटि तचतुर्गतिगमनानुबन्ध इत्यर्थः अतएव ॥ णोवोच्छिन्नसंसारवेयणिज्जेत्ति ॥ णोनैव व्यवच्छिन्न मनुष्यभव्यवच्छेदेन चतुर्गतिगमनवेद्यं कर्म यस्य स त

नोनिरुद्धभवपवंचे णोपहीणसंसारे णोपहीणसंसारवेयणिज्जे णोवोच्छिन्नसंसारे णोवोच्छिन्नसंसारवेयणिज्जे नोनिट्ठियट्ठे नोनिट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छइ ? हंता गोयमा ! मडाइणनियंठे जाव पुणरवि इच्चत्थं हव्वमागच्छइ । सेणंभंते ! किंवत्तव्वंसिया ? गोयमा ! पाणेतियवत्तव्वंसिया भूतेतियवत्तव्वंसिया जीवेतियवत्तव्वंसिया सत्तेतियवत्तव्वंसिया विन्नुयत्तियवत्तव्वंसिया वेदेतियवत्तव्वंसिया ? पाणे भूये जीवे सत्ते विन्नुवे

मडय संसारप्रपञ्चभोगमयो । णापहीणसंसारवेदनिज्जे । संसारमांहि वहलोकम भवभोगामयो, मयो वेदना । णावोच्छिन्नसंसारेणावोच्छिन्नसंसारवेदनिज्जे । मयो तूटो समार चतुगति गमनानुबंध वेहनो, चतुगति समारने तूटवेदनो वेदनीकर्म वेहनो तूटोनथी । णोनिट्ठियट्ठे । वेहने मयोजन पूरा थयो । नानिट्ठियट्ठकरणिज्जे । प्रयोजननो करवो पूरोथयोनथी वेने । पुणरविइच्चत्थंहव्वमागच्छइ हंतागोयमा । ते मयो मनुष्यादि गतिने प्रतावयो पांचे इतिप्रश्न उत्तर हे गौतम । मडाईनियंठे । प्रासुकभोजी निग्रंथ साधु । जाव पुणरविइच्चत्थंहव्वमागच्छइ । यावत् वली चतुर्गतिरूप संसारने पा तारना पांचे । सेणंभंतेकिंवत्तव्वंसिया । तेहने स्यानाकारे, तिवारे हेभगवन् ! निर्ग्रंथजीव स्यूं कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा पाणेतियवत्तव्वंसिया । हे गौतम प्राण एहवूं तेहने कहीये । भूतेतियवत्तव्वंसिया । भूत एहवूं तेहने कहीये । जीवेतियवत्तव्वंसिया । जीव एहवूं तेहने कहीये । सत्तेतियवत्तव्वंसि या । सत्त एहवूं तेहने कहीये । विन्नुत्तियवत्तव्वंसिया । विज्ञ विज्ञे जाण एहवूं तेहने कहीये । वेदेतियवत्तव्वंसिया । वेद एहवूं तेहने कहीये । जाणे ।

या, भतएव ॥ मोनिच्छियछसि ॥ अनिच्छितप्रयोजनो ऽतएव ॥ नोनिच्छियछरविक्ळेति ॥ नोनैवनिच्छितार्थानामिव करवीयानि रूपाणि यस्य स तथा मत एवंविधो सावतः पुनरपीति भनादौ ससारे पूर्वे प्राप्त मिदानीं पुन विशुद्धकरणाद्यैः सकाशात् दसम्भावनीय ॥ इयत्यति ॥ इत्यथ मतमथं भनेकशः इत्यतमितिपाठान्तर, तथा तेन प्रकारेण इत्थं तद्भाव इत्थंत्व मनुष्यादित्व सितित्वात् असुस्वारलोपश्च प्राकृतत्वात्, ॥ हवति ॥ दीर्घं ॥ भागच्छति ॥ प्राप्नोति भचिन्त्यते च कषायोदया त्प्रतिपतितचरणानां चारित्रवता ससार सागरपरिभ्रमणं यदाह–अइउयसतकसाउं सहस्सवंत पुणोविपडिवाय ॥ सच ससारचक्रमतो मुनिर्जीवमाश्रादिना नामपदेन कालजेवेन युगप ॥ वाच्या स्यादिति विजविपुः प्रयपकाष ॥ सेवमित्यादि ॥ तत्र समिरंन्यजीवः कि मयः मसे सामान्यवाचित्वात् नपुंसकलिङ्गेन निर्दिष्टइति एव भन्यर्थयुक्ततयेत्यर्थो वक्तव्यःस्या त्प्राकृतत्वात् सूत्रे नपुंसकलिङ्गतास्येति भन्वयमुक्तयदे रुच्यमानः किमसौ वक्तव्यः स्या दितिभावः भन्यो नरं ॥ भावेति ॥ वत्तव्वमित्यादि ॥ तत्र प्राक्षति एतत् समति वक्तव्य स्यात् यदो श्वासादिमत्त्वमात्र माश्रित्य तस्य निर्देश क्रियते, एव प्रव

देतियवत्तव्वंसिया । सेकेणठेण पाणेतियवत्तव्वंसिया ? जाव वेदेतियवत्तव्वंसिया, जम्हा आणमतिवा पाणमति या उस्ससति नीससतिया तम्हा पाणेतियवत्तव्वंसिया । जम्हा भूएभवइ भविस्सइ तम्हा भूएतियवत्तव्वंसि

भूये २ जीवे ३ सत्ते ४ विन्नू ५ । प्राण भूत जीव सत्व विज्ञ । वेदातिवत्तव्वंसिया । वेद ६ ए छजीव तेहने कहीये । सेकेणट्ठेणभंते । ते केणऽर्थे हेभगवन् ह म कह्या । पाणेतियवत्तव्वंसिया । प्राण एम तेहने कहीये । जावविन्नूतिवेदातिवत्तव्वंसिया । यावत् विज्ञएसो वेदएसा तेहने कहीये इतिप्रश्न उत्तर । गो यमा आणमाणमतिवा । हेगौतम । जेमाटे भीतरश्वासले । पाणमतिवा उस्ससतिवा नीससतिवा । भीतर श्वासले, बाहिर श्वासमूके, बाहिर श्वासलेइ नीसासलेइ । तम्हापाणेतिवत्तव्वंसिया । तेमाटे प्राण एहवू तेहने कहीये । जम्हाभूए भवइ भविस्सइ । जे कारणथी अतीतकाले हुवो वर्तमानकाले छे आगामी काले हुसे । तम्हाभूएतिवत्तव्वंसिया । तेमाटे भूत एहवू तेहने कहीये । जम्हा जीवेजीवइ । जे कारणथी जीव तेथाका एजीव प्राणप्रते धारे । जीव

मादिप्रमवियवया मूतादिग्रहपथक्याप्यता तस्य वासनेिदेन व्याख्येया, यदा तुष्णासादिधर्मे युगप दसौ विवक्षते तदा प्रायो भूतो जीवः स त्वा विज्ञो वेदयिताइति मत तत्प्रति वार्च्य स्या दथवा भिन्नमेवे वाक्यमवेद मतो न युगपत्यवख्यास्याकार्येति ॥ जम्हाजीवेइत्यादि ॥ यस्मा ज्जी व भात्मा मो जीवति प्राणान् धारयति तथा जीवत्व मुपयोगलक्षण मायुष्कच कर्म उपजीवति मनुभवति तस्मा ज्जीवइति वक्तव्य स्यादिति ॥ जम्हासत्तसुभासुभर्हिकम्महिंति ॥ सत्त भासक्तः शक्तोवा समर्थः सुन्दरा २ सुचेष्टासु अथवा सक्तः संबद्धः सुभासुभैः कर्मभि रिति अनन्तरो

या, जम्हा जीवे जीवइ जीवत्तं आउयंच कम्मं उवजीवइ तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया, जम्हासत्ते सुहासुहे हिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेतिवत्तव्वसिया, जम्हा तित्तकडुकसायअंबिलमहुरेरसेजाणइ तम्हा विष्णूतिवत्तव्व सिया, वेदेइय सुहदुक्खं तम्हा वेदातिवत्तव्वसिया, सेतेणट्ठेणं जाव पाणेतिवत्तव्वसिया, जाव वेदाति वत्तव्वसिया। मडाइणं भंते! नियंठे निरुद्धभवे निरुद्धभवपवंचे जाव निट्ठियट्ठकरणिज्जे, णोपुण रवित्थं त्तं हव्व मागच्छइ? हंता गोयमा! मडाईणं नियंठं जाव नोपुणरवित्थत्तं हव्व मागच्छइ सेणं भंते

तथाउयकर्मउपजीवेद। तथा जीवत्व उपयोग लक्षण अपुन आयुकर्म उपजीवति अनुभवे। तम्हाजीवेतिवत्तव्वसिया। तेमाटे जीव एहवू तेहने कहीये। जम्हासत्तेसुहासुहेहिंकम्मेहिं। जे माटे सक्त आसक्त अथवा समर्थ सुंदर असुंदर चेष्टाने विषे शुभाशुभकर्मसं सबंधछे। तम्हासत्तेतिवत्तव्वसिया। ते माटे सत्त एहवूं तेहने कहीये। जम्हातित्तकडुयकसायअंबिलमहुररसे जाणइ। जेमाटे तिक्त कडवो कसायलो अंबिल मधुर ए पांचरस जाणे। तम्हा विन्नूतिवत्तव्वसिया। तेमाटे विज्ञ एहवू तेहने कहीये। जम्हावेदेइयसुहदुक्खं। जेकारणथी वेदे अनुभवे सुख मतें तथादुःखमतें। तम्हावेदातिवत्तव्वसिया। तेमाटे वेद एहवू तेहने कहीये। सेतेणट्ठेणंजावपाणेतिवत्तव्वसिया। ते तेणें अर्थे यावत् प्राण एहवू तेहने कहीये। जाववेदातिवत्तव्वसिया। यावत् वेद एहवूं तेहने कहीये पूर्वेकह्यो जेम तेहमा विपरीतपणो कहेछे—मडाईणंभंतेनियंठेनिरुद्धभवेनिरुद्धभवपवंचे। प्रासुकभोजी जेभगवन्! निर्ग्रंथजा

त्स्मै वाच्यस्य विपर्ययमाह ॥ महात्यादि ॥ पारगएत्ति ॥ पारमतः संसारसागरस्य प्राधिमि भूतवदुपचारादिति ॥ परंपरगएत्ति ॥ परंपरया मिथ्यादृष्ट्यादिगुणस्थानकानां मनुष्यादिसुगतीनांवा। पारंपर्येण गतो भवाम्भोधिपारं प्राप्तः परम्परागत, इहा मकारश्छान्दसः संसारवद्धिकानी उ

किं वत्तव्वंसिया ? गोयमा ! सिद्धेत्तिवत्तव्वंसिया , बुद्धेत्तिवत्तव्वंसिया , मुत्तेत्ति वत्तव्वंसिया , पारगएत्ति वत्तव्वंसिया , परंपरगएत्ति वत्तव्वंसिया , सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अंतकडे सव्वदुक्खप्पहीणे त्तिवत्तव्वंसि या सेवं भंते भंतेत्ति , भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं

[illegible] पामिना जम [illegible] भवमां विचार केवे। कामविहमइकरविसे। यावत् निश्चिताय करणी भवोभवनो करणी पूरकीधी। योपुकरविर [illegible]। मनो पनो मनुष्यादि भवभवें जातावसा भवे पामे इतिप्रश्न उत्तर। हंता गोयमा। हांगोतम। सव्वाईपविपडि। यतादि प्रासुक भावो निग्रहमाप्तु। वावपापुनरविरत्वतंइममागच्छइ सेवमतेविवत्तव्वंसिया। यावत् मवोमसी मनुष्यादि भवभते खतावसा पाचे पामें, तिवारे ते निर्ग्रंथजीव ते [illegible], हेभगवन्! स्पू [illegible] इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सिद्धेत्तिवत्तव्वसिया। हेगोतम सिद्ध एहवं तेहने कहीये। बुद्धेत्तिवत्तव्वसि या। बुद्ध एहवं तेहने कहीये। मुत्तेत्तिवत्तव्वंसिया। मुक्त एहवं तेहने कहीये। पारगएत्तिवत्तव्वंसिया। संसार सागरनेपारे पहुंता एहवं तेहने कहीये। परंपरगएत्तिवत्तव्वंसिया। मिथ्यात्वादि गुणस्थानकने तथा मनुष्यादि गतिने परंपरायें गया एहवं तेहने कहीये। सिद्धे १ बुद्धे २ मुत्ते ३। सिद्ध बुद्ध मुक्त। परिनिव्वुडे अंतकडे। परि निवृत्त थया ० संसारनो अंतकीधो। सव्वदुक्खप्पहीणेत्तिवत्तव्वंसिया सेवंभंते २ त्ति। सगला दुःख प्रक्षीणथया छे ज्ञने एहवं तेहने कहीये गोतम वाच्या तहत्ति हेभगवन् तुम्हें कह्यो तेसत्य छे एमजाणवो। भगवं गोयमे। भगवंत गोतम। समणं भगवं महावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने। संजमेणंतवसाअप्पाणंभावेमाणे विहरइ। तथा आ त्मा समतारोचें जेरेंकरी ते संयम कहीये भूमया कमवेदिवे जेरेंकरो ते तपकहीये ते संयम उपसघाते। समणेभगवंमहावीरे। आत्माने भावता

ते मिदस्य चत्यपुमात् तेया मन्येपां चायोनां व्युत्पादनाथे स्कन्दकचरित यिवपुरिदमाह ॥ तेणं कालेण मित्यादि उप्पन्ननाणदंसणधरे ॥ इह यावत् करणात् ॥ अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं छत्तेण मित्यादि ॥ समवसरणमत्वाप्यमिति ॥ गद्दभालस्सत्ति ॥ गद्दभालाभिधान

न्नाजे माणे विहरइ , तएण समणे जगव महावीरे रायगिहाउ नयराउ गुणसिलाउ चेइयाउ पडिनिक्खम इ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहार विहरइ, तेणकालेण तेणसमएण कयगलाणाम नयरीहोत्था , व णउ, तीसेण कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीजाए छत्तपलासए णाम चेइएहोत्था , वणउ तएण समणे जगवमहावीरे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव समोसरण परिसा निग्गया , तीसेण कयगलाए नयरीए अदूरसामते सावत्थीणाम नयरीहोत्था, वणउ, तत्थण सावत्थीए णयरीए गद्दन्नालिस्स अतेवासी

तवार पछी तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । रायगिहाभाषनगरथी गुणसिलाभाचैत्यथी । राजगृहनामा नगरथी गुणशीलकनामे चैत्य थकी । पडिनिक्खमइ २ त्ता बहिआजणवयविहारविहरइ । नीकले नीकलीने बाहिर देशबीचालेविषे विहारकरे । तेणकालेण तेणसमएण । ते कालनविषे तेसमयनेविषे । कयगलानामेनयरीहोत्था वणओ । कयगलानामे नगरीहुवे वर्णन उववाईथी परेकहवा । तीसेणकयगलाएनयरीए । तेह वं चालामकारे कयगला नगरीने विषे । बहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए । बाहिर उत्तर पूर्वनादिशि विभागे एटले ईशानकूणे । छत्तपलासएचेइएहोत्था वणओ । छत्रपलाश इसेनामे वनना चैत्य हुवा तेहना वर्णन उववाईथी जाणवा । तएणसमणे भगवमहावीरे । तिवारे श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी । उप्पन्नणाणदंसणधरे । उपना केवलज्ञान अने केवलदर्शन तेहना धरणहार । जावसमोसरण । यावत् समोसरण तीहां कहवो । परिसानिग्गया । परि षदा वांदवा नीकली । तीसेणंकयगलाएनयरीए अदूरसामंते । तेह व कयगलानगरी केटला नगरीथी पास पासगनथी पास निकटपणनथी । सावत्थी णामनयरीहोत्थावणओ । तिहा सावत्थीनामे नगरी हुइ ते नगरीना वर्णनकहवा उववाईथी उपानमोपरे कहवा । तत्थणंसावत्थीएणयरीए । तिहां सावत्थी नगरी

परिव्राजकस्य ॥ रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयति ॥ इह षष्ठीबहुवचनलोपदर्शनात् ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्वणवेदानामितिदृश्यं इतिहास पुराण मुपञ्चमो यथाते तथा तेषां ॥ चउण्हवेयाणंति ॥ विशेष्यपद निघंटुछट्ठाणंति ॥ निर्घंटो नामकोशः ॥ संगोवंगाणंति ॥ अङ्गानि शिक्षादी नि षट् उपाङ्गानि तदुक्तप्रपञ्चनपराः ग्रन्थाः ॥ सरहस्साणंति ॥ ऐदंपर्ययुक्तानां ॥ सारएत्ति ॥ सारको ध्यापनद्वारेण प्रवर्त्तकः स्मारको वा न्यथा विस्मृतस्य सूत्रादेः स्मारणात् ॥ वारएत्ति ॥ वारको ऽशुद्धपाठनिषेधात् ॥ धारएत्ति ॥ क्वचित्पाठ स्तत्र धारको ऽधीतानां मेषां धारणा त् ॥ पारएत्ति ॥ पारगामी षडङ्गविदिति षडङ्गानि शिक्षादीनि वक्ष्यमाणानि साङ्गोपाङ्गानामिति यदुक्तं त द्वेदपरिकरज्ञापनार्थं षडङ्ग विदि त्यत्र तद्विचारकस्य गृहीतं विदविचारणइतिवचनादिति न पुनरुक्तत्वमिति ॥ सट्ठितंतविसारएत्ति ॥ कापिलीयशास्त्रपण्डितः तथा ॥ स

खंदएनाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ , रिउव्वेय जजुव्वेय सामवेय अहव्वणवेय इतिहासप चमाण निघंटुछठाण चउण्हवेयाण सगोवगाण सरहस्साण सारए वारए धारए पारए सडंगवी सठित तविसारए सखाणे सिस्काकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अन्नेसुय बहूसु बंभणएसु परिव्वायएसु

तेथिवे। गर्दभालिनामतेशमो। गरनामा इसेनामे परिव्राजक तापसना शिष्य। कात्यायनगोत्री। अरक इसे नामे कात्यायनगोत्रके तेहनो परिव्राजकपरिवसइ। परिव्राजक वसेछे। रिग्वेद। ऋग्वेदनो। जजुर्वेद। यजुर्वेदनो। सामवेद। सामवेदनो। अथर्वणवेद। अथर्वण वेदनो। इति हासपंचमा। इतिहासनामे पुराणछे पांचमा वेदने ते। निर्घंटछट्ठा। नाम मध्य कोशछे तेहने। चउण्हवेयाण। च्यारि वेदना। संगोपांगने सरह स्यान। शिक्षादि षष तथा तदर्थविषे जेप्रवत्त ग्रन्थछे तेहनी युति। सारए वारए धारए पारए। तेहने वार २ समरे अशुद्धपाठ निषेधकरिने शीखे वरे पारगामी। सट्ठितंत विसारए। कपिलना आज कापिलीय शास्त्रना जाण। सखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदेनिरुत्ते। गणितशास्त्रना जा ण पदरचना शास्त्रना जाण शब्दना जाण पदभंजन शास्त्रना जाण शब्दनी उत्पत्ति शास्त्रना जाण। जोतिशास्त्रना अन्नेसुयबहुसु बंभणएसु परि

गापत्ति ॥ भविनरकम्पुपरिनिष्ठित इति योग , पञ्चवेदकत्वमेव व्यनक्ति ॥ सिक्खाकप्पेति ॥ शिक्षा अक्षरस्वरूपनिरूपक शास्त्र कल्पश्च तथा विधसमाचारनिरूपकं शास्त्रमेव ततः समाहारद्वन्द्वा शिक्षाकल्पे ॥ वागरणेति ॥ शब्दशास्त्रे ॥ छन्देति ॥ पद्यलक्षणशास्त्रे ॥ निरुत्तेति ॥ शब्दनिरुक्त शास्त्रे ॥ जोइसामयणेति ॥ ज्योतिःशास्त्रे ॥ बंभण्णएसुत्ति ॥ ब्राह्मणसम्बन्धिषु । परिव्वायएसुयत्ति ॥ परिव्राजकसत्केषु ॥ नयेषु नीतिषु द र्शनेष्वित्यर्थः ॥ नियंठत्ति ॥ निर्ग्रन्थः श्रमणइत्यर्थः ॥ वेसालियसावएत्ति ॥ विशाला महावीरजननी तस्या अपत्यमिति, वैशालिको भगवांस्त स्य वचनं शृणोति तद्रसिकत्वा दिति वैशालिकः श्रावक साधुवचनामृतपानमनिरतइत्यर्थः ॥ इणमक्खेवत्ति ॥ एत माक्षेपं प्रश्न ॥ पुच्छेत्ति ॥ पृष्टवान् ॥

नएसु सुपरिनिठिए यावि होत्था , तत्थण सावत्थीए नयरीए पिंगलए नाम नियठे वेसालियसावए परिव सइ , तएण से पिंगलए नाम नियठे वेसालिसावए अण्णया कयाइ जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खदय कच्चायणसगोत्त इण मक्खेव पुच्छे , मागहा ! किं सअंतेलोए अणंतेलोए

जाणवा मतमां । ज्योतिष शास्त्रमा जाण ब्राह्मणनेविषे तथा परिव्राजकनेविषे ब्राह्मण सबंधीनेविषे परिव्राजक संबंधीनेविषे नीतनेविषे । सुपरिनिष्ठिएया विशाल्या तत्पर्जाणतोपण्डरीव । मनोपरि निपयापना जाण एहवा ए स्कंधपरिव्राजक हुंता तेहनेविषे ए वात्ताप्रकारे, सावत्थी नामे नगरीये । पिंगल एनामेनियठे वेसालियसावए परिवसर । पिंगल नामे निर्ग्रंथ साधु श्रमण इत्यर्थ विशाला श्रीमहावीरनो माता तेहनोपुत्र श्रीमहावीर तेहना वचन ना रसिकछे । तएणंसेपिंगलएनामनियठे । तिवारे तेपिंगलनामे निर्ग्रंथ साधु । वेसालियसावए । श्रीमहावीरना वचन सुणवाने रसिक । अण्णयाकया ई जेणेवखंदए । एकदा प्रस्तावे विचरेछे जिहां स्कंद परिव्राजक । कच्चायणसगोत्ते । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । कात्यायनगोत्रीय तिहां आवे ति हां आवीने । खंदयकच्चायणसगोत्त । स्कंद कात्यायनगोत्रीय प्रते इणमक्खेवपुच्छा । इम आक्षेपे प्रश्नपूछे । मागहा । मगधदेशना स्वामी ते मागध । किमसअंतेलोए अणंतेलोए सअंतेजीवे अणंतेजीवे । एं_लाक अंत सहित एतावतालोकना अंतछे अथवा अनंतलोकछे नास्ती अतनथी जीव अंत सहि

मायइति ॥ मनपज्ञमपद्ज्ञातत्वात् मागध स्तस्या मन्त्रं हेमागध। ॥ वज्ञइति ॥ संसारवर्द्धमात् ॥ हायइति ॥ संसारपरिहान्येति, एतावतावेत्या दि ॥ एतावत्प्रभ्रमात तावदास्यादि उच्यमानः पृच्छमान एव मनेन प्रकारेण एतस्मि काख्याते, पुनरन्य रमख्यामीतिहृदय ॥ सकिएइत्यादि ॥ किमिद मिहोत्तर मिदंवति सञ्जातशङ्कः इद मिहोत्तरं साधु इदञ्च न साधु मतः कथ मभोत्तर लप्स्ये इत्युत्तरलाभाकाङ्क्षावाम् काङ्क्षितो स्मि मु तरे दत्ते किमस्य प्रतीति रुत्पत्स्यते नवे; स्येवं विचिकित्सितो भेदं समापन्नो मते र्भङ्ग किङ्कर्तव्यताव्याकुलत्वसमाव मापन्न कलुष मापन्नो नाह मिद किञ्चि जानामी त्येव स्वविषय कालुष्यं समापन्नइति ॥ नोसचाएति ॥ न शक्नोति ॥ पमोक्खमक्खाइउंति ॥ प्रमुच्यते पर्यनुयोगबन्धना दने

सअंतेजीवे अणंतेजीवे सअंतासिद्धी अणंतासिद्धी सअंतेसिद्धे अणंतेसिद्धे केणवामरणेण मरमाणे जीवे वड्डइवा हायइवा एतावताव आइक्खाहि वुच्चमाणो एव तएण से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएण निय ठेण वेसालीसावएण इण मक्खेव पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णोसचाएइ, पिंगलयस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किंचिवि पमोक्ख मक्खाइउंतुसिणीए संचिट्ठइ, तेएण

तवे भवका जोव अंतरहितवे। सअंतासिद्धी अणंतासिद्धी सअंतसिद्धे अणंतासिद्धे। सिद्धि शिला अंतसहितवे अथवा सिद्धशिला अंतरहितवे सिद्धना जोव अंतसहितवे अथवा सिद्धनाजोव अंतरहितवे। केवेनामरणेकं। किसे मरणेकरी। मरमाणेजोवे। मरता थको जोव। वद्धइवा। संसारकरी वधि पामे। हायइवा। संसार हानि पामे। एतावताव आइक्खाहि वुच्चमाणो। एतलो प्रश्न पूछ्यो ते पछिला कह्यो पछे बीजो प्रश्न पूछवूं एवमाण। त एणंसेखंदए कच्चायणसमात्ते। तिवारे तेखंदक कात्यायन गोत्रेय। पिंगलएणंनियठेण। पिंगलनामे साधु। वेसालियसावएण। चोमहावीरना वचन सु विवाने रसिक। इणमक्खेवपुच्छिएसमाणे। इस पाधेपे पूछ्या थका। संकिए कंखिए वितिगिच्छिए। एहनो उत्तर कांई हशेयत्रा आपनो एहनो उत्तर किम पामिये एहनो उत्तर देशें एहने प्रतीत उपजशें। भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने। मतिभेदपाम्या मतिभ्रंमपाम्यो ह हवां कोशे कशी नजाए? इम

से पिंगलए नियठे वेसालीसावए खंदय कच्चायणसगोत्तं दोच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छे, मागहा ! किं सअंते लोए जाव केणवामरणेण मरमाणेजीवे वड्ढइवा हायइवा एतावताय आइक्खाहि वुच्चमाणो, एव तएण ते खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियठेणं वेसालीसावएणं दोच्चंपि तच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिछिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने नोसंचाएइ, पिंगलस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किंचिविपमोक्खमक्खाइउं तुसिणीए संचिठइ, तएणं सावत्थीएनयरीए सिंघाडगजायपहेसु महयाजणसम्म

पाताालिवे वनुयपाथा । चासंवाएर पिंगलवस्स नियठस्स । उत्तर देई नसमाये पिंगलने निर्ग्रंथने । वेसालियसावस्स । किंचिवि । श्रीमहावीरना म वन मविचाने रागिकके । कांई एक पवि । पमोक्खमक्खाइवा । प्रश्नोत्तरकहवा, समथ नथयो । तुसिणीएसंचिहर । तिवारे मौनकरी रह्यो । तएणसेपि गणपविमठे । तिवार पछो ते पिंगल निर्ग्रंथ साधु । वेसालियसावए खंदयकच्चायणसगोत्त । श्रीमहावीरस्वामीना वचनना रागिकके स्वरूपतें कास्या यन मानना थयो मत । दोच्चपि इणमक्खेवपुच्छे मागहा । बीजीवार पवि इसे भावेपे पूछियावागी हेमगधदेशना छपना । किंसअंतेलोए जावकेणवा मरणेण । सं भाव यंत सहितवे इत्यादि यावत् किसे मरणेकरी । मरमाणेजीवे वड्ढइवाहायइवा । मरतोथकोजीव संसारना वधवाथी वधे अथवा घट वाथी घटे ? एतिपामे । एतावतावयाइक्खाहि वुच्चमाणे । ए प्रश्ननो पछिवा उत्तर कहि पछे बीजो प्रश्नपूछो इम पूछता । एवतएणसेखंदए । इम ति वारे ते खंदक । कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणंनियठेणं । कात्यायनगोत्रनाधणी पिंगलनामे निर्ग्रंथसाधु । वेसालीसावएणं दोच्चंपि । श्रीमहावीरस्वामीना वचननो रागिया बीजीवारपवि । तच्चंपि इणमक्खेवं पुच्छिएसमाणे । त्रीजीवारपवि इसे भावेपे पूछोथको । संकिए कंखिए वितिगिच्छिए । शंका क पनो कांक्षितथयो सुसंविपे संदेहथया । भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने । नोसंचाएइ । समर्थपवे कलुषपणो उपनो उत्तर देई नसके । पिंगलस्सनियठ स्स । पिंगलने निर्ग्रंथने । वेसालियसावयस्स । श्रीमहावीरना वचनना रागियाने । किंचिविपमोक्खमक्खाइउं । कांई एकपवि प्रश्ननो उत्तर कहवा न म

णेति प्रमोद उत्तर मास्यातुं वर्तु ॥ महयाअवसम्मट्टेइवा अवबूहेइवा, इत्यम इद मम्य हृदयम् ॥ अवबोलेइवा अवकसवस्सेइवा अणुस्सीइवा अणुकसि यारइवा अवसमियायेइवा अणुववो समसवस्स एव माइवसइ ४ एवं खलुदेवाणुप्पिया समणे३ भावमरे आवसपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गा मावुगामं दूइज्जमाणे कयमलाए मयरीय वत्तपलासए चेइए अहापडिरूव उग्गहं उगिण्हित्ता सजमेणं तवसा अप्पाणं मावेमाणे विहरइ तं मह प्फलं खलु जोइवाणुप्पिया। तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताण नामगोयस्स विकसवणाए किमंगपुण अभिगमणवंदणनमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासण याए एगस्सवि आयरियस्स २ धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंगपुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए तंगच्छामीण देवाणुप्पिया समण ३ वंदा

मेइया जणयूहेइया निग्गच्छइ, सएण तस्सखदयस्स कञ्चायणसगोत्तस्स बडजणस्स स्रतिए एयमठ सोच्चा निसम्म इमेएयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पच्छिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था, एव खलु समणे भगव महा वीरे कयंगलाए नयरीए बाहिया छत्तपलासए चेइए सजमेण तयसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तगच्छामि

क्षा। तुमिचीएसविहार। मोमबरी रही। तएणसेसावत्थीएचबरीए। तिवारे सावत्थी मगरीने वाले कसगला नगरीये श्रीमहावीरस्वामी माया छुपा। सिंघाडगआयपहेसु। सिंघोडाने भाकारे यावत् मोटामागमेविषे। महयाजणसमहेइया जणवूहेइया। माठाजन समह घणो मनुष्यमांहोमांहि एकठा थई एक भाकारे तावस्था जनसमुदाय। परिसानिग्गच्छइ। पषदा श्रीमहावीरस्वामी ने वांदवा भणी नीकली। तएणतस्सखदयस्स। तिवारे तेह ख दकने। कच्चायणसगोत्तस्स अनुजणघतिए। कात्यायनगोत्रीय घणो मनुष्यपासे समीपे। एयमठ्ठसोच्चा। एतदर्थ एम सांभळीनेका। निसम्म। चीते धारी ने। इमेएयारूवे अज्झत्थिये। अध्यात्मपडे आत्मविषय। चिंतिए पच्छिए। स्मरण रूप प्रार्थना रूप। मणोगएसकप्पेसमुप्पज्जित्था एवंखलुसमणेभगव महावीरे। मनमेविषे सकल्प उपनो, इम निश्चे समण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। कयंगलाएनयरीएबहिया। कयमलानाम नगरीमविषे बाहि र। छत्तपलासएचेइए। छत्रपलास इसेनाम चैत्यमेविषे। संजमेणतवसा अप्पाणभावेमाणेविहरइ। सत्तरभेदे संयमे बारभेदे तपे आत्माने भावतायका विचरे। तग

मो ममणामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो एयणे पेच्चभवे हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता एवं नागा राइन्ना खत्तिया माहणा भडा जोहा मल्लई लेच्छई अन्नेय बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबिय इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ जाव उक्किट्ठिसीहनायबोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा सावत्थिए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छंति ॥ यस्याय मर्थः यावत्यां नगर्यां यतः ॥ महयाति ॥ महान् जनसंमर्दः तत्र बहुजनो ऽन्योन्यस्यैव माख्यातीतिवाक्यार्थे, तत्र जनसमूहः उरोनिःपेष इ तिनप्रसरणे वा समुदय पाठान्तरे यच्छतिया जनव्यूह चक्राद्याकारो जनसमुदायः बोलो ऽव्यक्तवर्णोध्वनिः कलकलः स एवो पलभ्यमान वचनविभाग ऊर्मि सम्बाधः कल्लोलाकारोवा । जनसमुदाय उक्कलिका समुदायएव लघुतरजनसन्निपातो ऽपरापरस्थानेभ्यो जनानां मील न यथाप्रतिरूप मित्युचितं तथा रूपाणां संवृतरूपाणां ॥ नामगोयस्सत्ति ॥ नाम्नो यादृच्छिकस्या भिधानस्य गोत्रस्य गुणनिष्पन्नस्य ॥ सवणयाए ॥ श्रवणेन ॥ किमंगपुणत्ति ॥ किंपुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थः, अङ्गेत्यामन्त्रणे अभिगमन अभिमुखगमनं वन्दनं स्तुतिः, नमस्यनं प्र णमनं प्रतिप्रच्छनं शरीरादिवार्ता प्रश्नः, पर्युपासनं सेवा तथा अभिगमनादीनां भाव स्तत्ता तया आर्यस्ये त्यार्यप्रणेतृकत्वात् धार्मिकस्य प्र त्यप्रतियद्दुस्यात् ॥ वदामोत्ति ॥ स्तुमः नमस्याम इति प्रणमामः सत्कारयाम आदरं कुर्मो वस्त्रार्चनया सन्मानयाम उचितप्रतिपत्तिभिः किम्भूत मित्याह कल्याणं कल्याणहेतु मङ्गलंदुरितोपशमनहेतुं दैवतं दैव चैत्य मिष्टदेवप्रतिमा चैत्यमिव चैत्यं पर्युपासयामः सेवामहे एतत् ॥ कति ॥

ण समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारे त्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता इमाइंचणं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं वाग

रणाणि० । तेमाटे हुंजाउं । श्रमणभगवंतमहावीर वंदामि नमसामि । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदुं नमस्कार करुं । सेयंखलुमेसमणंभगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता । श्रेय कल्याण निश्चे मुझने श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वांदीने नमस्कारकरीने सत्कार करी

सोऽस्मार्क प्रत्यनघे जन्मान्तरे हिताय पथ्यान्नवत् सुखाय शर्मणे क्षेमाय सङ्गतत्वाय निःश्रेयसाय मोक्षाय आनुगामिकत्वाय परम्परयाशुभानु बन्धसुखाय भविष्यति इतिकृत्वा इतिहेतो महत्व उग्रा आदिदेवस्थापिता रक्षकवंशजाता भोगा समेता यस्यापितगुरुवंशजाता राजन्या जग द्गुरुस्थयाश्रयाः क्षत्रिया राजकुलीना, भटाः शौर्यवन्तो योधा सौम्यो विशिष्टतरा मल्लकिनो लेच्छकिनश्च राजविशेषाः राजानोनृपा ईश्वरा युवराजा सदन्येष महर्द्धिका तलवराः प्रतुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीया माडम्बिकाः सन्निवेशविशेषनायका कौटुम्बिकाः कतिपयकुटुम्बप्रभवो राजसेवका अतिरुष्टि ग्रामदमहाजनिमित्तिवमादय प्रतीतः योधा वर्षेष्वधिकवर्णितो महाध्वनिः कलकलश्च व्यक्तवचनः, सएव एतादृशो यो रव सोम समुद्ररवभूतमिव जलधिप्राप्तमिव तन्मयमिव त्यपे नगर मितिगम्यत इति एतस्या यस्य सङ्क्षेप कुर्वन्नाह ॥ परिमाणनिर्गमइति ॥ तएवति ॥ ततो नन्तर ॥ इमेयारूवेत्ति ॥ अयं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षः सच कविमो व्यमासो न्यूनाधिकोपि भवती त्यतआ

---

१ एतदेव रूप यस्य सा वतद्रूपः ॥ अज्झत्थियएत्ति ॥ आध्यात्मिकआत्मविषयः ॥ चिंतिएत्ति ॥ स्मरणरूप ॥ पत्थियएत्ति ॥ प्रार्थित अभिलाषा त्मकः ॥ मणोगएत्ति ॥ मनस्येव योगतो न बहिः वचनेना प्रकाशनात् य तथा सङ्कल्पो विकल्पः ॥ समुप्पज्जित्थएत्ति ॥ समुत्पन्नवान् ॥ सयंसि ॥ ये यः अस्मार्क ॥ पुच्छितएत्ति ॥ योगः ॥ इमाइयवत्ति ॥ प्राकृतत्वा दिमा अनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्षासन्नाम् यथावा दृश्यान् ॥ एयारूवाइ ॥ एतद्रूपा युक्तस्वरूपाम् अथवा; एतेषामेवा महारोक्ताना मर्थाना रूप येषा प्रत्यक्षसान्नाध्यार्थो ते तथा ता मर्थान् नाथान् लोकसारत्वादीं सादन्यास्य ॥ हेऊइंति ॥ अन्वयव्यतिरेकलक्षणहेतुमत्त्वा सुतयो लोकसारत्वादयएव तदन्येवा भत सान् ॥ पसिणाइति ॥ प्रश्नविषयत्वा त्प्रश्ना एतएव स दन्येवा । अत सान् ॥ कारणाइति ॥ कारण युक्तपत्तिमात्रं तद्विषयत्वा त्कारणा न्येतएव तदन्येवा त सामि ॥ वागरणाइति ॥ व्याक्रियमाण त्वात् व्याकरणानि एतएव तदन्येवा तसामि ॥ पुच्छिस्सएत्ति ॥ प्रष्टुं तिकट्टु इतिकृत्वा अनेन कारणेन ॥ एवसपेहेइत्ति ॥ एव मुक्तप्रकार भगव

मुन्दमादिकरणमित्यर्थः समोवती पचालोचयति ॥ परिव्राजकसहेति ॥ परिव्राजकमठ कुण्डिका कमण्डलु, काञ्चनिका रुद्राक्षकृता' करोटिका मृद्भाजनविशेषः पृषिका आसनविशेषः केसरिका प्रमार्जनार्थं चीवरखण्ड षड्नालक त्रिकाष्ठिका अङ्कुशक तरुपल्लवग्रहणार्थं अङ्कुशाकृतिः पवित्र कर्मगलीयक सवत्तिका कलाचिका भरणविशेषः ॥ धाउरत्ताओत्ति ॥ शाटिकाकृतिविशेष' ॥ तिदण्डइत्यादि ॥ त्रिदण्डादीनि दश वसने मता

रणाइ पुच्छिस्सए त्तिकट्टु, एवं संपेहेइ संपेहेइत्ता जेणेव परिव्वायगा वसही तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता तिदण्डं कुण्डियं च कञ्चणियं च करोडियं च भिसियं च केसरियं च छण्णालियं च अङ्कुसयं च पवित्तयं च गणेत्तियं च छत्तयं च वाहणाउय पाउयाउय धाउरत्ताउय गेण्हइ गेण्हइत्ता परिव्वायगवसहीओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता तिदण्ड कुण्डियं कञ्चणियं करोडियं भिसियकेसारियछनालयअङ्कुसयपवित्तियगणेत्तियहत्थ

समाम बताम। बझाचे समम देवं चेव। बलावकमा चारवमत पुरित उपसमचेहमते देवमते हरदेवमो प्रतिमामो परे। पज्जुवासेसा। सेपू। रमाइवणपज्जाकवाई पहाइ। प घमनराम समच पामय चपुन चे बामालयारे प बाम सरूवे पवमते। चेतुरपभिचाइ पामरचाइ। चेतुवारच प्र इल भाववल एलमा बामामतें। पुनिहतपत्तियइ। पुर्व नवर् करोमे। एवंसपेहेइ २ त्ता। इस पापावे पामोपोमे। जेणेवपरिव्वायगावसही। तिदण्ड परिव्राजकमो वसतो पायमचे। तेचेउवागच्छइ २ त्ता। तिदण्ड पावे तिदण्ड पामोमे। तिदण्ड। वोन एकठा कौपा। कुंडियंच १। कमरब २। कंच नियं च भिसियंच केसरियंच छन्नालियंच पकुमयंच। करावमाला ३ मत्तिकामयभाजन ४ मत्तिकामयभाजन विशेष ५ चीवर खंड पूमपामे ६ वड् मा निक त्रिकाष्ठिका त्रिगडी ७ वृक्षना पत्र लेवामनो अकुशने पाकारे ८। पवित्तियंच गणेत्तियंच छत्तयंच वाहणाचाय पाउवाचीय। तांबानी मुंदडी प्रमु प समरनो ९ कलाचिका भरणविशेष १ छत्रई ११ पगरखा तथा वाहन १२ काष्ठमयो पावडी १३। धाउरत्ताचगिण्हइ २ त्ता। गेरूनो भगवा वस्त्रे मादिका इति मेव तेम्हे गृहोमे। परिव्वायगवसहीओ। परिव्राजकनो वसतीचको। पडिनिक्खमइ २ त्ता। नीसरे नीसरीने। तिदण्ड कुंडियं।

मि स्थितामि यस्य स तया ॥ पहारेत्थत्ति ॥ प्रधारितवान् सङ्कल्पितवान् गमनाय गन्तु ॥ गोयमाइति ॥ गोतमइति एवं आमन्त्रेतिशेषो, अथवा

गए वत्तीवाहणसजुत्ते घाउरत्तवत्थपरिहिए सायत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छइत्ता जे
णेव कयंगलानगरी जेणेव छत्तपलासए चेइए जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थगमणाए गोयमाइ
समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी, दक्खिसिण गोयमा! पुव्वसंगइयं कतं, कंभंते! खंदय नाम
से काहेया किहया केवच्चिरेणघा, एवं खलु गोयमा! तेणकालेण सावत्थीणाम णयरी होत्था वण्णओ तत्थण

निदंड १ कमंडल २ कंचणिय। रुद्राक्ष माला ३। करोडियं भिसिय केसरिय। मृत्तिकामय भाजन ४ सत्तिका मय भाजन विशेष ५ बोकरखंड पण
वाने ६। छत्रालियं अंकुसयं पवित्तिय गणेत्तिय छन्नय। षड्नालिका त्रिकाटिका त्रिमणी ७ छगना पत्रकोश भयो अंकुमने आकारे ८ चांवाणी मूंद
डी प्रमुख ८ समरणी कलाचिका अरचविशेष १ ए रूपवाला वावेकीया। वत्तीवाहणसजुत्ते। वचमाचे पगेपगरथी तेणें सयुत्त। धाउरत्तवत्थपरिहिए।
धातु रत वस्त्र पहिरा पहिरोने। सावत्थीणयरीए। सावत्थी नगरीने। मज्झमज्झेणनिग्गच्छइ २ त्ता। मध्ये मध्यभागे थईने नोकसे नीकलीने। जेणेव
कयंगलानयरी। जिहां कयंगला नामे नगरीछे। जेणवछत्तपलासएचेइए। जिहां छत्रपलाशनामे चैत्यछे। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहां श्रमण भ
गवंत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवपहारेत्थगमणाए। तिहां जावानोधो आलोचितोछे। गोयमाइ। हेगोतम! इसो आमन्त्रण वचन। समणे भगवं
महावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। भगवंगोयमएववयासी। भगवंत गौतम प्रतें इम कहता हुया। दक्खिसिण गोयमा। देखी स पाछलाकाले
हेगोतम! पव्वसंगतिय। पूर्व मित्र प्रतें तिवारे गौतम बोल्या। कंभंते कवर्णनाम। केहमतें हेभगवन्! भगवंतवाल्या खंदक इसेनामे तेहप्रतें। सेकाहे
वा। ते किनिवेला मिलिस्यें। किहिया। किणे प्रकारे रुमगयो सुणे गयो। केवच्चिरेणवा। केतलेकाल केतलोकिरे विचारे आवस्यें। एवंखलु गोयमा।
इम निश्चे हेगोतम! तेणंकालेण तेणंसमएणं। ते कालनेविषे ते समयनेविषे। सावत्थिणामंणयरीहोत्था वण्णओ। सावत्थीनाम नगरी हुई वर्णक कर

भयी त्यामगतकायएव ॥ सेवादेवत्ति ॥ यच कदाया कस्या वेलाया मित्यर्थः ॥ किहवत्ति ॥ केनया प्रकारेण साक्षा दर्शनतः प्रवयतोया ॥ केव चिरेणवत्ति ॥ कियतो वा कालात् ॥ सावत्थी नाम नयरी होत्यत्ति ॥ विभक्तिपरिणा मावस्ती त्यर्थो ऽथवा कालस्या वसर्प्पिणीत्वा दृष्यसिद्धगु या कालान्तरएवा नव प्रदानींमिति ॥ पदूरागएत्ति ॥ पदूरे मागतः सवावधिस्थानापेक्षया पिस्या दथवा दूरतर मार्गापेक्षया [यथ ३०००] कोशादिक न प्यदूरं स्या ददतउच्यते ॥ वहुसम्पते ॥ ईषदूनः सम्प्राप्तो वहुसम्प्राप्तः सच विश्रामादिकेतो रारामादिगतोपि स्या दत उच्यते ॥ भद्दुर वपत्तिवत्तेति ॥ मार्गमतिपन्नः किमुक्तं प्रवति ॥ पतरापवेवहरति ॥ विवक्षितस्थानयो रन्तरालमार्गे वर्त्ततइति अनेनच सूत्रेण यत्रं दृस्यामी त्य स्या तरमुक्त अययतो दूरागतादिविशेषवस साक्षादेव दर्शन सम्भवति तथा ॥ पज्जेवणदच्छसी त्यनेन क्रियाचिरा दित्यस्यो त्तरमुक्त काद्देत्य

सावत्थीए नगरीए गद्दभालिस्स अंतेवासी खंदए णाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ, तचेव जाव जेणेव ममअंतिए तेणेव पाहारेत्थगमणाए सेअदूरागए बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवन्ने अंतरापहे वट्टइ, अज्जेवणं दिच्छसि गोयमा! भंतेत्ति, भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसित्ता एवं वयासी, पहूणं भंते!

वायाय । तत्र च सावत्थीए नयरीए । तिस्रा श्रावस्तीनाम्नि नगरीत्यर्थः । गद्दभालिस्स अंतेवासी । गद्दभाली परिव्राजकस्य शिष्य । खंदए णाम । स्कन्दकनामे कच्चायणसगोत्ते । कात्यायन गोत्रजो भवी । परिव्वायए परिवसइ तत्रैव । परिव्राजक वसति तिष्ठति सव बसया । जाव जेणेव ममअंतिए । यावत् जित्र मत्तरे समीपे । तेणेव पहारेत्थगमणाए । तिस्रां संकल्पकीवा आगमनेकाज । सेअदूरागते । ते नजीकेभावा । बहुसंपत्ते । पोते घणोकोसो । पद्धाव पडिवन्ने अंतरापहेवहइ । मामप्रते प्रतिपन्नो मार्गने अतरे वर्त्ते छे भावे छे । अज्जेवणदच्छिसि गोयमा । आजहीज देखवे हेगोतम ! भंतेत्ति । हेभगव न् ! इसे भामवन्ने । भगवंगोयमे । भगवत गौतम । समणंभगवंमहावीर वदइनमंसइ २ त्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कार करे होने नमस्कारकरीने । एवंवयासी । इम कहता हवा । पभूणमंतेखंदएकच्चायणसमाते । समर्थ छे स्वामी अकारे, हेभगवन् ! खंदक कात्यायनगोत्रीय ।

स्य चोत्तरं सामर्थ्यमस्य यतो यदि भगवता मध्याह्नसमये इयं वार्ता अभिहिता तदा मध्याह्नस्यो परि मुहूर्त्तातिक्रमेण या वेला भवति तस्या
अनुस्यसीतिसामर्थ्या तुक अप्रूरामतादिविक्षेपवशस्यापि तद्वेळमासी मुहूर्त्तोचिरिव कालः सम्भवति न बहुतरइति ॥ अगाराठति ॥ निष्क्रम्येतिशेषः,
अनगारितां साधुतां प्रव्रजितुं गन्तुं अथवा विभक्तिपरिणामा दनगारितया प्रव्रजितुं प्रव्रज्यां प्रतिपत्तुं ॥ अब्भुट्ठेइत्ति ॥ आसनं त्यजति यद्य च
गवतो गौतमस्य असंयतं प्रत्युत्थान तद्भाविसंयतत्वेन तस्य पक्षपातविषयत्वात् द्वौलमस्य चाशीवरामत्वात्, तथा भगवद्याविफततदीयविकल्पस्य
तत्समीपगमनत सत्कथया भगवद्भावातिशयप्रकाशनेन भवत्यतीव बहुमानोत्पादनस्य विवक्षितत्वादिति ॥ एसंदयत्ति ॥ सम्बोधनमात्रं ॥

खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। हंता पभू, जावं
चणं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावचणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते तंदेस
हव्वमागए, तएणं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूर मागयं जाणेत्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेइ अब्भु

देवानुप्रियानापांतिमन्मनविता। तुमारे समीपे मुंड थइने। आगारथी आणगारियपणानए व्रतायभू। एक्च्छायनगोत्री साधुपणो भवत्से दोषा
मेणे इतिपश्न श्रीगौतम। समथ छे। हावंचण। जेतलेकाले। समणे भगवमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। भगवओगोयमस्स। भगवंतगौ
तमने। एयमट्ठ परिकहेइ। एह बात कहइछे। तावचणसेखंदए कच्चायणसगोत्ते। तेतलेकाले वयुंम वातमात्रकारे, तेखंदक कात्यायनगोत्रीय। तंदेस
हव्वमागए। तेदेशे परिमत परक्रमस निवेमा बहुतखाने अतावश्यो पाम्या। तएणभगवंगोयमे। तिवारे भगवंत गौतम। खंदयंकच्चायणसगोत्तं।
खंदक कात्यायन गोत्रीय प्रते। अदूरमागयंजाणित्ता खिप्पामेवअब्भुट्ठेइ २ त्ता। निकट पासे आव्या जाणीने उतावळा आसनथी ऊठ्या भगवंत गौतम
धर्मवंतोने विनय अठे इसे मूळ उत्तर पदक आसवर सन्तोहसौ तथा गौतमस्वामीने रायचोवयसागमो तथा भगवंतनी प्राग प्रगटकरण निमित्ते
ऊठ्या। खिप्पामेवपच्चुग्गच्छइ २ त्ता। उतावळा सांहमाजाय आवने। जेणेवखंदएकच्चायणसगोत्ते। जिहां खंदक कात्यायनगोत्री छतो। तेणेवउवा

मागयमरदयति ॥ स्वागतं शोभन मागमनं तवस्कन्दक महाकस्याणनिधे भगवतो महावीरस्य सम्पर्कीय तव कल्याणनिमन्धमस्वा तस्य ॥ सुसागयति पतिप्रयम स्वागत मयभि देशार्थो वाञ्छा वेती एकायशब्दोच्चारणेव क्रियमाण न तुष्ट सम्भ्रमनिमित्तत्वा दस्येति ॥ मनुरागयसदयति ॥ रेफस्या गमिकस्या दस्यागत मनुरूप मागमन हस्कन्दक सवेति हृदयं ॥ सागयमणुरागयति ॥ शोभनस्वानुरूपत्वसदयसमुद्भयोपेतं तवा गमनमित्यर्थे ॥ अयेयहर्ठति ॥ यस्सामेव दिशीर्ठ भगवत्समवसरणं ॥ तेणेवति ॥ तस्यामेवदिशि ॥ मत्येसमत्येत्ति ॥ मस्त्येपोर्थः ॥ मठेसमठेसि ॥ पाठम्तर काक्का

ठेइत्ता खिप्पामेव पच्चुगच्छइ पच्चुगच्छइत्ता जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता खंदय! कच्चायणसगोत्त एव वयासी, हेखंदया! सागय खंदया! सुसागय खंदया! अणुरागय खंदया! सागय मणुरागय खंदया! सेणूण तुम खंदया! सावत्थीए णयरीए पिंगलएण नियठेण वेसालियसावएण इणमक्खे वं पुच्छिए। मागहा! किं सअंतेलोए एय तचेव जेणेवइह तेणेव हव्वमागए, सेणूण खंदया! अठ्ठे समठ्ठे, ह

गच्छइ २ त्ता। तिश पाये ते तिश पायेने। खंदयकच्चायनसगोत्त। खंदक कात्यायन मावमा यथा ते प्रते। एववयासी। इम कहतानुवा। हेखंदया। हेखंदक। मागयंखदया। तुम्हारा पागमन शोभन हेखंदक। सुसागयखंदया। भतिमर्याकारी शोभन तुम्हारा भागमन हेखंदक। मणुरागयखंदया। मनुपम तुम्हारा पागमन हेखंदक। सागयमणुरागयखंदया। शोभन तथा मनुपम तुम्हारा पागमन वेद मनवे सहुस तुम्हारो पागमन हेखंदक। सेणूणमखंदया। ते निश्चे तुम हेखंदक। मावत्थोएणयरीए। श्रावस्ती नगरीये। पिंगलएणनियठेणं। पिंगलनामे नियठसाधु। वेसालीयसावएणं। गौतम माजेरना वचन सुणवाने रसिक। इणमक्खेवपुच्छिए मायवा किसर्यतेलोए मणतेलोए। इसे आक्षेपे पूछ्यू हेमागध। मगधदेशना ऊपना। एवं लोक अंत सहित छे पथवा पनंत लोक मंत रहित छे। एवंतचेव। इम सव विमशोक कहवो। जेणेवइह तेणेवहव्वमागए। जिणे दिशिने विषे भगवंत श्रीमहावीरना समवसरण तेदिशिने विषे उतावला पाव्या। सेणूणमखंदया। ते निश्चे हेखंदक। किमठ्ठेसमठ्ठे। ए अर्थ समर्थ युक्त छे एवं प्रतिप्रश्न खंदक कहेछे—

चेद मध्यर्थ ततद्यार्थः विसमयः सद्भूत इतिमभः स्यात् उत्तरसु ॥ हंता अत्थि ॥ सद्भूतोयमर्थ इत्यर्थः ॥ पावीत्यादि ॥ अस्या यमभिप्राय ज्ञानी ज्ञानसामर्थ्यो ज्ञाभाति तमस्तीव तपःसामर्थ्यो द्वतासान्निध्या ज्ञाभासीति प्रश्नः कृतः ॥ रहस्सकडेत्ति ॥ रहःकृतः प्रच्छन्न कृतः हृदयस्था यथा रितत्वात् ॥ धम्मायरिएत्ति ॥ कुत एत दित्याह ॥ धम्मोवएसएत्ति ॥ उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ननु सदा सन्निहुः अर्हन् वन्दनाद्यर्हत्वात् जिनो रागादि जेतृत्वात् केवली असहायज्ञानत्वात् अतएवा तीतप्रत्युत्पन्नानागतविज्ञायकः सच देशज्ञोपि स्या दित्याह ॥ सर्वज्ञः सर्वदर्शी ॥ विपइजोइति ॥ व्या

ताख्यात्थि, तएण सेखंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयम एववयासी, सेकेसिण गोयमा ! तहा रूवेणाणीवा तवस्सीवा, जेण तव एसमट्ठे ममताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए जओण तुम जाणासि, तएण सेभगवं गोयमे खंदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी, एवखलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे उप्पन्नणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी, जेण मम

उत्तर। हंता अत्ति। हां एमज स्कंदे। तएणंसेखंदए। तिवारे ते स्कंद। कच्चायणसगोत्ते। कात्यायन गोत्रीयते। भगवंगोयमं। भगवंत गोतम प्रते एवंवयासी सेकेसणं गोयमा तहारूवे। इम कहताहुवा तेकुण हेगौतम ! तथारूप। नाणीवा तवस्सीवा। ज्ञानीकरीनावे तेज्ञानी, तपवंत ते तपस्वी त पनो ममणीइंयो दिवसाविधकरे। जेणंतवएसमट्ठे ममतावरहस्सकडेहव्वमक्खाए। जिणे तुमने एमाय माहरो तावत् पछिला मनमाहीं हृदयनेविषे त मेंधाराइला तेषष्ट जतावलाकह्या। जओणं तुमंजाणासी। जेतुमे मोहरा ममनो रहस्य जाणीवा इतिप्रश्न उत्तर। तएणंभगवंगोयमे। तिवारे तेभगवन् गोतम। खंदयंकच्चायणसगोत्त। खंदकप्रते कात्यायन गोत्रना धणी प्रते। एवंवयासी। इम कहताहुवा। एवंखलुखंदया। इम निश्चे हेखंदक। ममधम्मा यरिए धम्मोवएसए। माहरा धर्मोचार्य धर्मनाथुरु धर्मना उपदेशक। समणेभगवं महावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। उप्पन्नणाणदंसणधरे। उपना केवलज्ञान केवलदर्शनना धरणहार। अरहाजिणेकेवली। त्रिभुवनने पूजवा योग्य राग द्वेष जीता केवलज्ञानसहित। तीयपच्चुप्पन्नमणागयविया

... जाणाहि रोहगा ! तएणं से रोहए ...
तए णं से नगरे ... महावीरे ...
... गोयमा ! ... तएणं नगरे गोयमे ... सागरे च
... गोयमा ! ... तएणं नगरे ... सरीरगं उराल
... महावीरे ... तएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स ...

[illegible]

दृते २ मूर्वं मुंच इत्येवं मीसो ध्यावृतनोजी प्रतिदिनमोजीत्यर्थः ॥ ठरालाति ॥ प्रयासं ॥ सिगारेति ॥ मङ्कारो ऽलङ्काराविकृता शोभा तद्योगा
च्छृंगारं मङ्कारमिव यङ्कार मतिशयशोभावदित्यर्थः कस्याण मेय' सिव ममुपद्रवं ममुपद्रवहेतुर्वा धन्य धर्मधनलब्धृ तथवा साधु तद्दा ईति
मङ्गल्य मङ्गले शितापमापके साधु मङ्गल्यं ममङ्कृत मुकुटादिमि विभूषितं वस्त्रादिमि सक्रियेषा दमलङ्कृतविभूषित ॥ लक्खणवंजणगुणोववेयति ॥
लक्षणं मानोन्मानादि तत्र मानं जलद्रोणमानता जलभृतकुण्डिकायांहि मातव्यः पुरुषः प्रवेश्यते, तत्प्रवेशेन य जल ततो निस्सरति त यदि द्रो
णमानं भवति तदा सौ मानोपेत उच्यते, उन्मान त्वर्द्धभारमानता मातव्यपुरुषोहि तुलारोपितो यद्यर्द्धभारमानो भवति तदो न्मानोपेतो सायुच्य
त प्रमाणं पुनः स्वाङ्गुलेना ष्टोत्तराङ्गुलशतोच्छ्रयता यदाह—जलदोणमद्धभार समुहाइसमूसिओउणोनवइ । माणोमाणपमाण तिविहंखलुलक्खणंए
यं ॥ १ ॥ व्यञ्जन मपतिलकादिक मथवा सहजं लक्षणं पश्चाद्भवं व्यञ्जनमिति गुणाः सौभाग्यादयो लक्षणव्यञ्जनानां वा ये गुणा स्तै रुप
पत य त तथा उपपपए इत्येतस्य स्थाने निरुक्तिवशा दुपपेत भवतीति ॥ सिरीएति ॥ लक्ष्म्या शोभमाना ॥ हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिएत्ति ॥ हट्ठ

सिंगार कल्लाण सिव धन्न मगल्ल श्रृणलंकियविभूसिय लक्खणवजणगुणोववेय सिरीए स्रतीव स्रतीव उव
सोभेमाणे चिट्ठइ, तएण सेखदए कच्चायणसगोत्ते समणस्सभगवओमहावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरय उरा

सरहित धन्य हितप्रासि। पचलविहविभूसित लक्खणवंजणगुणोववेय। भाभरणरहितमासे वस्त्ररहितभाभे समवसाण उन्मानसहित ममतिस प्रमुष
गुणशोभाम्यानिव तिलसहित। सिरीएभइव २ उपशोभेमाणं २ चिट्ठइ। भामायेकरो घणू २ घरांत उपशोभायमानवका रहीछे। तएणसेखंदए कात्याय
नसगोत्ते। तिवारे तेह इक कात्यायनगोत्रमाधनो। समणस्सभगवओ महावीरस्स। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना। वियट्टभोईयस्ससरीरयंभारालय
नित्यभाहोना शरीरमते प्रधानप्रते। आणपांच २ उपशोभेमाणं २ पासइ २ त्ता। यावत् घरांत २ घणू २ शोभायमान २ देखे देखीने। हट्ठतुट्ठचित्त
माणदिए पीइमाणे। हर्षपाम्यो संतोषपाम्या चित्तमेहना पामंदितथयो मनवेहनो प्रीतिवचोछे जेहना समनेविषे। परमसोमणंसिए। परम ऽत्कृष्ट

ह मत्यर्थतुष्ट हर्ष वा विसितं तुष्टंच तोषव चित्तं मनो यत्र त तत् हट्ठतुट्ठचित्तं यथाजवति, एवं आनंदित इत्य म्मुखसौम्यतादिनावैं सम्दि मुपगतः ततश्च ॥ नंदिएत्ति ॥ नंदित सो रेव समृद्धतरता मुपगतः ॥ पीइमणेत्ति ॥ प्रीति प्रीणन माप्यायन ममसि यस्य स तथा ॥ परम सामनस्सिएत्ति ॥ परमं सौमनस्यं सुमनस्कता सञ्जातं यस्य स परमसौमनस्यितः तद्वा स्यास्तीति परमसौमनस्यिकः ॥ हरिसवसविसप्पमाणहियएत्ति ॥ हर्षवशेन विसर्पद्विस्तारं व्रज हृदयं यस्य स तथा एकार्थिकानि चैतानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थानीति ॥ दवठंवएगेसोरसमतेत्ति ॥

तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ खंदयाइ, समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी, से णूणं तुमं खंदया सावत्थीए णयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिसावएणं

मनस्कस्य पामा। हरिसवसविसप्पमाणहियए। इत्यनेनैकार्थो विस्तारपामाके इदय जेसमो एसवा यइक। समणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ र त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणंभगवंमहावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीप्र ते। तिक्खुत्तोआयाहिणंपयाहिणंकरेइ। तीनवार श्रीमहा पासाथी मांडी प्रदक्षिणा करे। जावपज्जुवासइ खंदयाइ। यावत् जोडी नमस्कार करी से वा करे इत्यादि इमे पामवने। समणेभगवंमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। खंदयंकच्चायणसगोत्तं। कात्यायनगोत्रवाला प्रते। एवंवयासी मेणूणखंदया। इम कहताहवा ते निश्चे खंदक। सावत्थीएणयरीए पिंगलएणनियंठेणं। यावस्ती नगरीने विषे पिंगल नामे निर्ग्रंथसाधु। वेसालिसावएणं। श्रीमहावीरना वचन सुणवाने रसिक तिणे। इणमक्खेवपुच्छिए। इसे आक्षेपे पूछो। मागहा किंसअंतेलोए। हे मागध! भगवन्इयना लोक संत अंत सहित छे अथवा अनंत लोक। अंत रहितलोकछे। एवंतंचेव। इम तिमहीज जिवे। जावजेणेवममअंतिए। यावत् जिहां माहरो

इणमस्केय , मागहा ! किसथ्रंतेलोए थ्रणतेलोए एव तचेय जाव जेणेव ममथ्रतिए तेणेव हव्वमागए , से णूण खदया ! थ्रठे समठे , हताथ्रत्थि जेयिय ते खदया ! थ्रयमेयारूवे थ्रज्कत्थिए चितिए पत्थिए मणो गए सकप्पे समुप्पज्जित्या , किसथ्रंतेलोए थ्रणतेलोए तस्सवियण थ्रयमठे, एवखलु मए खदया! चउव्विहे लोए पणत्ते तजहा—दव्वठ खेत्तठ कालठ नावठ । दव्वठंण एगेलोए सथ्रते १ खेत्तठंण लोए थ्रसखेज्जाठ जोयणकोडाकोडीठ थ्रायामविक्खंभेण , थ्रसखेज्जाठ जोयणकोडाकोडीठ परिक्खेवेण पणत्ता, थ्रत्थि पुण से थ्रंत , कालठंण लोए नकयाइनथ्रासि नकदाइननवइ नकदाइननविस्सइ नविसुय नवतिय नविस्स

समीपके। तेथेवहव्वमागए। तिवो जतावसा पाप्ता। सेपूपचदया। तेनिये हेपदक। भइसमइ। एपर्व समर्व युत्वो चदयानी। हताथत्वि। वांथा मी ममाहे। सेपिवचतेषठसा। विथापपि पपुन ते तुम्हने हेपदक! पयमेयारूपे। एपताइमरूप। पव्यात्विए। पाममिपय। पितिए पत्थिए। चिंतित पभोठ प्रावमारूप। मपागपर्सकप्पेसमुपज्जिता। भग समपी मगमेनिपे गयो सपवय विचारभपगा। किसपतेलोए। पूं लोपपतसपितये। पणते लोए तगाभिवर्षपयमहे। लोप पतरहितये तेहनापपि पपुन पं पाप्पासपारे, एमपहे। एवंसनुमएपदया। हम निये मैं हेपदक। पउव्विहेलोपपण तेतंजहा। चार भेद लाव कह्या तेकहेछे—दव्वपा खेत्तपा कालपो भावपो। द्रव्यथी १ खेत्रथी २ कालथी ३ भावथी। दव्वभोपएगेलोए सपंते। द्रव्यथी पंचास्तिकायमय एक द्रव्यतरवी लोक पंतसहितछे। खेत्तपोपसंखाएपसंखेज्जाभोजोयणकोडाकोडीपो। खेत्रथी लोक मेरुपवतथकी पसंख्याती योजन नी कोडाकोडि चार दस दिशिदिसे पापयो दस घणीदिसे पथादिसे तेपसंख्याती पसंख्याती योजननी कोडाकोडि। पायामविक्खंभेण पसखेज्जा पाजोयणकोडाकोडीपापरिक्खेवेणं पणत्ता पत्थिपणसेपंते। पायामदीर्घपणे विष्कंभविस्तारपणे पसंख्याती योजननी कोडाकोडीपरीगे कह्या लोक छे गयो तेलोकनापंत एतले पंतसहितछे। कालपोपसाएनकयाइनपासि। कालथी लोक कदीपण नहता एतावता पतीतकाले कदेनहतो इम न

पम्वाभिकायमयेकद्रव्यत्वा म्रोकस्समाप्तो मी ॥ आयामविरुखेवाति ॥ आयामो दैर्घ्यं विक्खम्भो विस्तारः ॥ परिक्खेवेपति ॥ परिधिमा ॥ पूर्वि सुरति ॥ यमगत् इत्यादिभिय पदैः पूर्वोक्तपदानामेव तात्पय मुक्त ॥ धुवेति ॥ धुवोऽपसत्वात् सभा मियतरूपोपि स्या दतमाह ॥ शियएति ॥ नियत यखम्भरूपत्वात् मियतरूपा कादाचित्कोपिस्या दतमाह ॥ सासएति ॥ शाश्वतः प्रतिक्षणसङ्गावात्' सच मियतकालापेक्षयापिस्या दित्य त याह ॥ यक्खएति ॥ यक्खयो इविनाशित्वात्, ययच पुतरप्रदेशापेक्षयापिस्या दित्यतआह ॥ मव्वएति ॥ मव्यय स्तत्प्रदेशाना मव्ययत्वात् य पच द्रव्यतयापिस्या दित्याह ॥ यवठिएति ॥ यवस्थितः पर्यायाणामनन्ततया यवस्थितत्वात् किमुक्त भवति मित्यइति ॥ वस्तपज्जवत्ति ॥ वर्णविशेषा यज्ञयवामात्वादय यवमन्यापि गुरुलघुपर्यवा स्तद्विशेषा यादरस्कन्धानां मगुरुलघुपर्यवा यसूक्ष्मा सूक्ष्मस्कन्धाना ममूर्तानांच ॥ नाणपज्जवत्ति ॥ या

हुय, धुवे णियए सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे णत्थिपुण से अंते ३ । भावओण लोए अणतावस्स पज्जवा, गधरसफास । अणता सठाणपज्जवा, अणता गुरुयलहुयपज्जया, अणता अगुरुयलहुयपज्जा या, नत्थिपुण से अंते ४ सेत्त खदया । दव्वओ लोगे सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणते,

रा । यववारमभवर । तथा मयो मरेर यत्तमानकाले मवे एतावताके तथा । भवयारमभविस्सर । मयोभदेरं यनागतकाले मयो इयं एतावता । भविमुपमर्वतिय मविस्सतिय धुवेनियपसासए । यतीतकालेइतो यत्तमानकालेवे यनागतकाले इये यवकपर्यायो एक सरूपयो निवत भावतो । य कार यमर पवहिर विये । विनाममयो खेत्तो प्रदेशापेक्षाये पिसतु मयो । यवस्थित एतलेमित्यवे । यत्थिपुणसेयते । मयो मयो तेहनो यंत एतवे पर्यायवे । भावथायमोए । भावमो लाव । यणतावस्थपज्जवा । यनंता ययना पयाय यकगुणकालादिते । गंधरसफास । गधरसफासना पर्यवा । यणतामठायपज्जवा । यनंता यब्यामना पर्याय । यणंतागुरुलहुयपज्जवा । यनंता मादर यपने गुरुलहुपर्याय । यणंताअगुरुलहुयपज्जवा । यनंतासूक्ष परमे तथा यमूर्त्त यगुरुलघु पर्याय । यत्थिपुणसेयंतेसेत्तवंदया । मयो मयो तेहनो यंत एतले भावयो पणि यनंतपे ते एतहत । इव्वयोलोएसयंते

नाणियपज्ञा । तत्यदव्वठ सिद्धी सम्रुता , खेत्तठसिद्धी सम्रुता , कालठ सिद्धी अणंता , नावठ सिद्धी अ णता , जेवियते खदया ! जाय कि अणते सिद्धे तचेव जाव दव्वठण एगेसिद्धे सअते, खेत्तठण सिद्धे अ सखेज्जपएसिए असखेज्जपएसोगाढे अत्थिपुणअते, कालठण सिद्धे सादीएअपज्जवसिए, नत्थिपुण सेअते, नायठण सिद्धे, अणता णाणपज्जवा अणता दसणपज्जया , अणता अगुरुयलहुयपज्जया , नत्थिपुणसेअते सेत्तं । दव्वठसिद्धे सअते, खेत्तठसिद्धे सअते, कालठ सिद्धेअणते, नावठ सिद्धेअणते, जेवियते खदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए जाव समुप्पज्जित्था । केणवा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढइवा हायइवा तस्स वियण अयमठे एवखलु खदया ! मए दुविहे मरणे पन्नत्ते तजहा—बालमरणेय पंडियमरणेय , सेकित

सिद्धे । परिपुणसेयंते । वली तसिद्धिनाथंत एतले भतसहितछे वाकयो व याकाशंवारे सिद्धियिसा । मकयाविनासि १ । मद्दो कहेरे मडुर एतावता दूरले दृष्टे । भावभावकशालोभखतवाभाविवक्ता । भावयो पचन जिम लोकनेकशो तिम सिद्धयिसाकशो । तलद्दव्यपोसिद्धोसपंता । तिकी द्रव्यथी सिद्धियिसा यत सहितछे । खेत्तपोसिद्धिसपता । खेत्रयो सिद्धियिसा भतसहितछे । कालथासिद्धिपनता । कालयो सिद्धियिसा पंतरहितछे । भावथी सिद्धोपनता । भावयी सिद्धयिसा पंतरहितछे । केविवच तेखदया । जिकोपचि पयुम केखदक । इमेएयारूवे । एवका रूपेकरी संयुक्तछे । अज्झत्थिएचिति ए । भात्मविषय चिंतारूप । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् सकल्प ऊपनो । केववामरखेवमरमाखेजीवेवद्दयावायपत्ता । किसे मरखे मरतोथकोजीव वधे ससारना वधवाथी जीवनो वधवा ससारनीहानिथकी जीवनीहानि । तस्सवियणमयमट्ठे । तेहने पचि पयुम व याकाशवारे, पसकशो । एवंखलु खदया । हम निश्चे हेखदक । मएदुविहेमरणेपन्नत्ते तंजहा । मैं वेप्रकार मरणकह्यो तेकहेछे—बालमरणेय । बालमरण १ पयुम । पंडियमरणेय । पंडितमरण २ पयुन । सेकितंबालमरणे २ दुवालसविहेपन्नत्ते तंजहा । ते कुं बालमरण ते बालमरण बारे प्रकारनो कह्यो तेकहेछे—वलयमरणे । मू

ति ॥ यस्तो पुनुपापरिणतत्वेन वलवसायमानस्य सयमाद्वा भश्यतो मरण वसन्मरणं तथा यद्वे मेन्द्रियवशेन मृतस्य पीडितस्य दीपकलिकारू पापितजन्तुपः शमनस्येव य मरणं तद्वशार्तमरणं तथा यस्तः मृस्यस्य वृत्यतो ऽनुवृतोमरणे मोवतः सातिचारस्य यन्मरणं तदन्तःशल्यमरणं त भवपातेम विस्तरणं दृश्य यस्मि मरणे तच्छ्रायपातनं ॥ विहायसति ॥ विहायस्याकाशे भव वृक्षशाखाद्युद्बन्धनेन यस्त मिरुक्तवशा द्वैहानसम् ॥ गद्धपद्वेति ॥ गृध्रैः पक्षिविशेषै यद्वा मांसलुब्धैः ममासादिभिः स्पृष्टस्य विदारितस्य करिकरभरासभादिशरीरान्तर्गतत्वेन य न्मरणं तत् गृध्र स्पृष्टवा गद्धपृष्टवा ; गृध्रैर्वा ; भक्षितपृष्ठस्य च तत् गृध्रपृष्ठ ॥ दुवालसविहेणंबालमरणेणंति ॥ उपलक्षणत्वात् दृस्या न्येनापि बालमरणान्तःपाति

यालमरणे , यालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते तंजहा—वलयमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे गि रिपडणे तरुपडणे जलप्पवेसे जलणप्पवेसे विसभक्खणे सत्थोवाडणे वेहाणसे गिद्धपिट्ठे , इच्चेएणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणेजीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ , तिरियमणुदेव

गे दिनदिनाटवरता मरे, भयवा भमवो भटकायमरे १। वसट्टमरणे २। इन्द्रीनेवसि पड्यो मरे २। अंतोसल्लमरणे ३। मनवचकायोमरे द्रव्यो तोमरादिक मायो मातिचार ३। तब्भवमरणे ४। मनुष्य मरी मनुष्य होय तिर्यचमरी तिर्यचहोय ४। गिरिपडणे ५। पर्वतथो पड्यो मरे ५। तरुपडणे ६। वृक्षथी प डोमरे ६। जलप्पवेसे ६। पाणीमांहि प्रवेशकरी मरे ७। जलणप्पवेसे ८। अग्निमांहि प्रवेशकरी मरे ८। विसभक्खणे ९। विष भक्षणकरी मरे ९। सत्थो वाडणे १ । शस्त्र करी प्रमुखवो देहोने विदारे विषमरणेमरे १ । वेहाणसे ११। वृक्ष शाखादिक वो पासोखाय मरे ते वेहाणस मरे ११। गिद्धपिट्ठे १२। जनावरांदिकथीमरे १२। इसेरंदुवालसविहेण बालमरणेणंमरमाणेजीवे। इत्यादि बारे भेदे बालमरणे उपलक्षणथी मोक्षार्थपणि बालमरणने तिहेव रो मरतावको जीव। अणंतेहिंनेरइयभवग्गहणेहिं। अनंतवारो नारको भवग्रहणेकरी। अप्पाणंसंजोएइ। आपणा आत्मा जोडमतें जोडे मेले। तिरि

मपर्याया ज्ञानविशेषा बुद्धिकृतावा विभागपरिच्छेदा अनन्तागुरुलघुपर्याया औदारिकादिशरीरा न्याश्रित्य इतरेतु कार्म्मणादिद्रव्याणि जीवस्वरूप णाश्रित्येति ॥ जेवियतखंदयापुच्छति ॥ अनेन समयं सिद्धिमत्सूत्र मुपलक्षयत्वा जोत्तरसूत्राश्रय सूचित साधद्वयमप्येव ॥ जेवियतेखंदयाइमेयारू

जावदं लोए अणते, जेयिय ते खंदया! जाव सअंतेजीवे अणतेजीवे तस्सावियण अयमठे, एवखलु जाव दव्वउण एगेजीवे सअंते, खेत्तउण जीवे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थिपुणसे अंते, का लउण जीवे नकदाइनआसि णिच्चे नत्थिपुण से अंते, भावउणं जीवे अणतानाणपज्जवा, अणता दंस णपज्जया, अणताचरित्तपज्जवा, अणता गुरुयलहुयपज्जवा, अणता अगुरुयलहुयपज्जवा। नत्थिपुण

खेत्तभासीएसपंते। द्रव्यतो लोक अंतसहितहै, क्षेत्रतो लोकपणि अंतसहितहै। कालथोलोएअपते। कालतो लोक अंतरहितहै। भावथोलोएअपंते। भावतो पणि लोक अंतरहितहै। जेविखंदतेखंदया। जेपणि अपुन वली ए वाळ्याळकारे, हेखंदक! जावसअंतेजीवे अणंतेजीवे। यावत् अंत सहितहै जीव, अंत रहितहै जीव। तस्सविणंअयमठे। तेहनो पणि अपुन अंगाळ्याळकारे, एमए जाणवो। एवखलुजावदव्वओणं। इस निश्चे यावत् द्रव्यतो ए वा ळ्याळकारे, ै। एगेजीवेसअंते। एकजीव द्रव्य अंतसहितहै। खेत्तओणजीवेअसंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे। क्षेत्रतो ए वाळ्याळकारे, जीव असं ख्यात प्रदेशात्मकहै असंख्यातप्रदेश अवगाढहै। अत्थिपुणसेअंते। है वली तेहनो अंत, अंतसहितहै। कालओणंजीवे नकयाइनासि। कालतो ए वाळ्याळकारे जीव नहो वर्ते है नहीं एतावता अतीतकालेहुतो वर्त्तमानकालेहै अनागतकालेहुस्ये। णिच्चेनत्थिपुणसेअंते भावओणंजीवे। नित्यहै नहो वली तेह ना अंत एतले अनंतहै। भावतो ए वाळ्याळकार, जीव। अणंताणाणपज्जवा अणंतादंसणपज्जवा। अनंता ज्ञानना पर्याय अनंता दर्शनना पर्या य। अणंताचरित्तपज्जवा। अनंता चारित्रना पर्याय। अणंतागुरुयलहुयपज्जवा। अनंता गुरुलघु पर्याय ते औदारिकशरीर आश्रयीने। अनंता अगु रुयलहुयपज्जवा नत्थिपुणसेअंते। अनंताकार्मणद्रव्य अथवा जीवस्वरूप आश्रयीने। नहो वली तेहनोअंत एतावता तेहनो अंतहै। सेत्तंदव्वओजीवेसअंते।

वे भाव ति मतामिद्री भगतामिद्री तस्मविवर्ष भयमहेमवपनुमएवंदया चउव्विहासिद्धी पन्नत्ता तंजहा दव्वउ खेत्तउ कालउ भावउत्ति, दव्वउवं ए गामिद्दिति ॥ इह सिद्धि यद्यपि परमार्थतः सकलकर्मक्षयरूपा सिद्धाधाराकाशादेशरूपावा तथापि सिद्धाधाराकाशादेशमत्यासन्नत्वे भे परप्राग्भा रा पृथिवी सिद्धि रुक्ता ॥ किंचिविसेसाहियपरिक्खेवेणाति ॥ किंचिन्यूनमधूतद्व्याधिके द्वे योजनशते एकोनपञ्चाशदुत्तरे भवततति ॥ वत्तयमरवे

मे श्रुते सेत। दव्वउ जीवे सश्रुते, खेत्तउजीवे सश्रुते, कालउ जीवे श्रणते, भावउ जीवे श्रणते, जेवियण ते खंदया पुच्छा। श्रुतासिद्धी श्रणतासिद्धि, तस्सवियएण श्रयमट्ठे, मए चउव्विहासिद्धी पन्नत्ता तजहा दव्वउ ४ दव्वउण एगासिद्धी सश्रुता खेत्तउण सिद्धी पणयालीसजोयणसयसहस्साइ श्रायामविक्खम्भेण, एगाजोयणकोडीबायालीससयसहस्साइ तीसचसहस्साइ दोणियश्रउणापन्ने जोयणसए किंचियिसेसाहिए परिक्खेवेण पणत्ता, श्रत्थिपुणसेश्रुते, कालउण सिद्धी नकदाइ नश्रासि, भावउय जहा लोयस्स तहा

तए ण्वओ भाव पनमझिनहे। पेतभासअंते। वेनवो पवि भतसझिवहे। बासभावोवेभवते। कालवो पविजोव भंतरझितवे। भावबोभवते। भाव वो प्रविजोव पतरझितवे। जेवियर्वतेखंदयापुच्छा। वेमपि चपम वं याख्याखकारे, हेखरय पृच्छो। सपतासिद्धो। पंतसझित सिद्धिपिसाहे प करा पवंतासिद्धो तस्मविवर्ष। भतरहित सिद्धिमिसाहे तेहनो पवि चपुन। यवसहेसरया। एपबवे हेखरय। मएएवंचतुरविद्धासिद्धोपचता तजहा मैं इम सिवे वारभेदे सिद्धिमिसा चहो तेकहेबे—इव्यपोपएगासिद्धोसभता। क्षेत्रबो एव सिद्धिमिसा तेहनो भतवे तेमाठे भतसहि तवे। पेतपो वंमिसोपनयानोमशोपचमसमइस्माइ पायामविक्खंभेर्ण। चेमवो सिद्धिमिसा पैताजीसलाख योजन प्रमाण पायाम लांबी विष्कम्भपहलो पाइनपचेहे। एगा जापनकोडी। एक याजनना कोडो। बायालीसंमयसहस्साइ। बयालीसलाख। तोसचसहस्साइ। तीसहजार। दोणियपउणापन्ने जापचसए। दायसे उगुणपचास बोजन। किंचिविसेसाहियपरिक्खेवेणं पन्नत्ता। कोइएक विसेसाधिक पतले कांइएकअंसा दोयकोस विसेसाधिक परि

मा मरणेन म्रियमाणइति ॥ बालमरणेति ॥ संसारवर्द्धमेव भृशं वर्द्धतेजीव इतिद्वि द्विर्वचन भृशार्थेइति ॥ पाओवगमणेत्ति ॥ पादपस्येवो पगमन मस्पन्दतयावस्थान पादपोपगमनं इदंच चतुर्विधाहारपरिहारनिष्पन्नमेव भवतीति ॥ नीहारिमेयत्ति ॥ निर्हारेण निर्वृत्त यत्त निर्हारिम प्रतिश्रये यो म्रियत तस्यै तत् तस्कलेवरस्य निर्हारणात् अनिर्हारिमतु योटव्यां म्रियतइति यथा म्यमेव स्थाने इङ्गितमरण मभिधीयते तद्यमप्यास्या

अणाइयचणं अणवदग्ग दीहद्ध चाउरतससारकतार अणुपरियट्टइ, सेत बालमरणेण मरमाणे वड्ढइ वड्ढइ सेत्तबालमरणे। सेकित पण्डियमरणे, पण्डियमरणेदुविहे पण्णत्ते तजहा—(ग्रथसख्या १०००) पाओवगमणेय भत्तपच्चक्खाणेय, सेकिंत पाओवगमणे पाओवगमणेदुविहे पण्णत्ते तजहा—नीहारिमेय अनीहारिमेय नियमा अपडिक्कमे सेत्त पाओवगमणे, सेकिंत भत्तपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणेदुविहे पण्णत्ते तजहा—नीहारिमेय

नमणुयदेवभवाइभवं भवग्रहण रौद्रमत। तिर्य मनुष्य देवगतिसघाते आमाआदि पादिनथी अपुन भागे अतनथी छोवयावा यथा मार्ग। चाउरत ससारकतारमणुपरियट्टइ। चतुर्गतिससाररूप कांतार अटवीमाहि परिभ्रमणकरै। सेतबालमरणेणमरमाणेवड्ढइव २। तेए बालमरणेकरी मरतोथका मोह ससारने वधवेकरी वोधवधै। सेत्तबालमरणे। तेए बालमरणकह्या। सेकि तं पण्डियमरणे २ दुविहे पण्णत्ते तजहा [प १] ते पण्डित मरण ते पण्डित मरण केमेदे कह्या तेकहैछे—पाओवगमणेय १। पादप वृक्षने तेम तेहनीपरे अलमपणे रहवा। भत्तपच्चक्खाणेय २। चौओं भात पाणी आण रूप पण्डितमरण २। सेकिंतपाओवगमणे २ दुविहे पण्णत्ते तजहा। ते मं पादपोपगमन पण्डितमरण पादपोपगमनपण्डितमरण तेबेप्रकारना कह्यो तजहा—नीहारिमेय। नगरमांहिमरे तेहना कलेवरना नीहारणोछाय तेनीहार मरणकहीये १। अनीहारिमेय। पर्वतादिके मरे तेहनो नी हारणो नथाय २। नियमा अपडिक्कमे। निश्चयथी पडिकमणा नकरे हाथ पग हलावेनही। सेतपाओवगमणे। ते पादपोपगमन मरण कह्यो। से किंतभत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते तजहा। २। ते स्यो भक्तप्रत्याख्यान मरण तेभक्तप्रत्याख्यान मरण २। बेप्रकारे कह्यो तेकहैछे—नीहारिमेय अनी

मस्यैव विस्रपयति मह प्रदेश दृषितमिति ॥ पत्मकशाजायियवृति ॥ सावैव–अइजीवाय सृती सुवती पहयसकिलिस्सति । अइदुक्खाकयत फरिं तिर्रेयपलियत्ता ॥ १ ॥ पहनियस्थियचिता अइजीवादुक्खसागरसुयिति । अइवेरग्गसुवनया कसससुग्गाविराठितीत्यादि ॥ २ ॥ इदम ॥ महनिय

श्रुनीहारिमेय , नियमा सपफिक्कमे सेत्त जत्तपञ्चस्काणे । इच्चेतेण खदया ! दुविहेण पफियमरणेण मरमा णेजीवे श्रणतेहि नेरइयजवग्गहणेहि श्रप्पाण विसजोएइ जाय वीयीवयइ , सेत मरमाणे हायइ , सेस पफियमरणे । इच्चेएणं खदया ! दुयिहेण मरणेण मरमाणे जीवे यह्रुइया हायइवा , एत्यणसे खदए कच्चाय णसगोत्ते सबुद्धे समणजगयमहावीर वदइ नमसइ , नमसइत्ता एव वयासी , इच्छामिण जते ! तुज्झ

हारिमेय । अपान्तवमाहे रही तेहना शरोरना मीहारवाहाय पटवीमाहे रही तेहना शरोरना मीहारवानहाय । विसमासपडिक्कमे । मिवय ए पवि क्रमना करे हाव पम विकाय । सेत्तभत्तपच्चखाव । भत्तपस्ताख्यान मरवकरीवे । इवेतेवखदया । इत्यादिवे करी व वाक्यावकारे हेवइव । दुविहे पपडियनरवेवंमरमावेजीवे । दुविधमकारने पडितमरवे भारावनादिकरवीकरी मरतावकोजीव । यवतेहिवेरइसभवम्महवेहिंपप्पावंविसंजोएइ । यनतरे करी नारकोना भवग्रहवेकरी मापवा माप्मान विसजावे यवगावरे पतावता पतुर्गतिम्नमवरूप संसारवो मापवोजीव यवमोकरे । जावचीईवयइ । यावत् समार पंतवरे जाववर्मंगवकरो मामजाय । सेत्तमरमावेहायइ २ । तेए पडितमरवे मरतोयको ससारनोहानि करवाको जीववर्त्त हामिपामे । सत्तपडिक्कमरवे २ इवेतेवखदया । तेए पडितमरवथको । एतसे वेवेदव । दुविहेवमरवेवमरमावेजीवे यह्रुइमाहायइवा । वेप्रकारने मरवेकरी मर तावकोजोव ससारना यवहावी जीवनवे पने ससारनीहानिवो जीवनोहानिहोय । एत्यवंसेवंदए । इहां एहवे वाते व वाक्यावकारे, तेवइव । व वायवगासेगंबुहे । कात्यायनयावीय सगमम्मा बूज्मा तत्वनोजातजाको । समव ममवंमहावीर वंदइ नमंसइ २ । तिवारे समव भगवंत पीम्वतास्विंत सोमहावीरप्रामोने मांहे नमस्कारकरे पांहोने नमस्कारकरोने । एववयासो । इम करे । इच्छामिवमतेतुम्मपतिएकवनिपयत्तवयमिसामेत्तए । वाव्हुं

हियचितति ॥ भातं निर्वर्तित चित्तं यै से तथा भात्तोहा: अनिवर्तित चित्तं यै से भात्तं निवर्तितचिता ॥ सद्दहामिति ॥ निग्रन्थ प्रवचन म सीति प्रतिपद्ये ॥ पत्तियामिति ॥ प्रीतिं प्रत्ययं वा सत्य मिद मित्यव रूपं तथ करोमी त्यर्थ ॥ रोएमिति ॥ चिकीर्षामीत्यर्थः ॥ अब्भुठेमिति ॥

तिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया मापडिबंध, तएणंसमणेभगवंमहावीरे खद यस्सकच्चायणसगोत्तस्स तीसेयमहइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ, धम्मकहा भाणियव्वा, तएणंसे खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजाव हियहियए उ ठाएउठेइ उठेइत्ता समणंभगवंमहावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता एवंवयासी, सद्दहामि

हं च वाक्यार्थकारे, हेभगवन् ! तुम्हारे समीपे कवलीये प्ररूप्योतको धर्म ते सांभलवा बांछुं, हवे इसे वाक्य कहा भगवतकहे—यथासुखंदेवानुप्रि या मापडिबंधं । जिमसुख हुवे हेदेवानुप्रिय तिमकरो पणि विलंबमा करस्यो । तएणंसमणेभगवंमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरसामी । खदयस्स । खंदकने । कच्चायणसमोत्तस्स । कात्यायनगोत्रीयने । तीसेयमहइ महालियाए परिसाए धम्मपरिकहेइ । तिणी मोटी वार्ताकरीने मोटी परिषदाभेविषे धर्मप्रते कहे । धम्मकहाभाणियव्वा । संसार अनित्य धर्म धर्मनित्य इत्यादि धर्मकथा जाणवी । तएणंसेखंदएकच्चायणसगोत्ते । तिवारे ते खदक कात्यायन गोत्रीयथी । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरसामीने । अंतिएधम्मसोच्चानिसम्म । समीपे धर्मसांभली अवधारीने । हट्ठतुट्ठजावहियए जाव २ ता । हर्ष संतोषपाम्यो यावत् हयडो हौला विकस्यो उठेउठीने । समणंभगवंमहावीरं तिक्खुत्तोआयाहिणपया हिणंकरेइकरेइत्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरसामी प्रतें तीनवार जीमणा पासाथी प्रदक्षिणावर्त करीने । एवंवयासी । इमकहे । सद्दहामिणंभंतेनिग्ग थपावयणं । सद्दहूं हेभगवन् ! जे जिनभगवंतभाख्या द्वादशांगनिग्रंथनो प्रवचनमार्ग । पत्तियामिणंभंतेनिग्गंथपावयणं । प्रीतिमत अथवा प्रत्ययप्रते ए स त्यछे हेभगवन् ! निर्ग्रंथना प्रवचनमार्ग । रोएमिणंभंतेनिग्गंथपावयणं । वांछूं हेभगवन् ! निर्ग्रंथना प्रवचन रूचेछे इसूं । अब्भुट्ठेमिणंभंतेनिग्गंथपावय

पतन्प्रोकरीमीत्यप यय मद्गामागुमर्व रमपति एव मेत मैर्पन्य प्रवचमः सामान्यत यय यवे तद्यूप यद्ये तियोग ॥ तहमेयपति ॥ तये येतद्दिमेपत ॥ पयितहमेयपति ॥ सत्य मेतरितर्थ ॥ ममद्धमेयति ॥ सन्देहवजित मेतत् ॥ इच्छियमेयपति ॥ इष्टमेतत् ॥ पडिच्छियमेयपति ॥ म तीमितं प्रासमिष्टं ॥ इच्छियपडिच्छियात ॥ पुनरीषा मतीप्साविषयत्वात् ॥ तिकट्टु ॥ इतिकृत्वेति अथवा एव मय मते! इत्यादीनि य

गन्नते ! निग्गथंपावयण , रोएमिणन्नते ! निग्गथपावयण , पत्तियामिणन्नते ! निग्गथ पावयण , ब्भुठे मिण नते ! निग्गथ पावयण , एवमेयन्नते ! तहमेयन्नते ! अवितहमेयन्नते ! असदिद्धमेयन्नते ! इच्छिय मेयन्नते ! पडिच्छियमेयन्नते ! इच्छियपडिच्छियमेयन्नते ! सेजहेय तुज्झे वदहतिकट्टु , समणन्नगव महावी र यन्दइ नमसइ , वन्दित्ता नमसइत्ता उत्तरपुरच्छिमदिसीभाय अवक्कमइ अवक्कमइत्ता तिदण्डय कुण्डियच

न। उपमत्त मनाचे कमगवन्! निगव प्रवचमत उपमोदार कक रमय। एवमेयमते। इमज एज भेमगवन्। जिम तुमकचु। तहमेयभते। तिमयो म स्वमगन्। यवितहमेयभते। मम्पच भेमगवन्। स्यव। यसंदिद्धमेयभते। संदेहरवित भेमगवन्। एव। इच्छियमेयभते। इष्ट एव भेमगवन् एव म जिय। पडिच्छियमेयमते। पर्मिमामे इष्ट प्रतीछित भेमगवन्।। इच्छियपडिच्छियमेयभते। समकाले इच्छा यने मतीच्छा विषयकी भेमगवन्। सेजहे समन्धेरहतिकट्टु। तेयमा तुमेकहा तिमव इम कहीने। समयम ममवमावीरवंदइनमंसइ २ता। समय भगवत चीमहावीरस्वामी प्रते वाटे ममस्का रकरे वांदीने ममस्कारकरीने। उत्तरपुरच्छिमदि भागंअवक्कमइ २ ता। उत्तर पूर्व दिशिविभागे एतले ईमान कूणेजाय जाईने। तिदण्ड कुण्डियं। मोअववमइ। आमसाइ ताज्य। यावत् गेरु रच्या वसते। एमतेएकेतेएकेरता। एकाते मूवे मूकीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहा समण भ गवत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ ।। तिहाआवे तिहाआवीने। समणभगवमहावीर। समण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते। तिक्खुत्ता पायाहिणपयाहिणकरेइ २ ता। तीनवार श्री रना पासाथी प्रदक्षिणाकरे करीने। आवतमेमित्ता। आवत्तयन्दे वादे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार

दामि यथायोग मेवार्थो न्यत्यादरप्रदत्तनयो कानि ॥ भातितेयंति ॥ भनिविधिना ववसित ॥ सोएत्ति ॥ जीवलोकः ॥ पलितेवति ॥ प्रकर्वेव ववसितः एवविध यासी कालजेदेनापि स्या दत उच्यते आदीतप्रदीतइति ॥ जराएमरणेवयत्ति ॥ इह वकिमेति वाक्यक्षेपो इदयः ॥ झियायमा वसिति ॥ ध्मायमाने ध्मायतिवा; दह्यमान इत्यर्थः ॥ अप्पसारेत्ति ॥ अल्पंच तत्सारं चेत्यल्पसारं ॥ आयाएत्ति ॥ आत्मना एकान्त विजन भन्त भूभागं ॥ पच्छापुराएत्ति ॥ विवक्षितकालस्य पश्चा त्पूर्वंच सर्वदेवत्यर्थः ॥ येज्जेत्ति ॥ स्थैर्यधर्मयोगात् स्थैर्यो वैश्वासिको विश्वासप्रयोजनत्वात्

जायधाउरत्ताउय एगतेएकेइ एकेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समण भगवं महावीरं तिखुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेइ करेइत्ता जाव नमसइत्ता एववयासी, आलित्तेणभंते ! लोए, जराए मरणेणय, सेजहानामए केइ गाहावई आगारंसि झियायमाणंसि जेसे तत्थ भंडेभवइ अप्पभारे मोल्लगुरुए तगहाय आयाए एगंतमंत अवक्कमइ, एसमेनित्थारिएसमाणे पच्छापुराए हियाए सुहा

वरीमे। एवंवयासी। इमजहे। भावितेवमतवाए। समस्यमय हेभगवम् ज्वलितयथा यावत् एवमे जीवलोक। पलितेवमतेवाए। प्रकर्षे ज्वालाजीव लो व हेभगवन्। आलित्तपलित्तेवमतेवाए। आदीप्त प्रदीप्त भवता भासित प्रभासित हेभगवन्। यावत्। जराएमरणेणय। यो करो जरा तया मरणेकरोमे। मेकदानामएकेईगाहावई। ते यथा इहांतनाम इति कोमलामंत्रणे, कोईएक पहपतिसेठ परलोकयो। अगारंसिझियायमाणंसि। घर ध्मिकरो मागावमा घर बलता थका हवे। भंडेतत्थमेभवइ। जिम ते तिहा भांडा पगरणहवे। अप्पभारे। थोडा तदोलसार प्रधान। मोल्लगुरुएतगहाय। माम भया एहनो घरलोवणु ते प्रते ग्रहीमे। आताए एमतमतमवक्कमइ। आत्माये पाते एकांत मनुष्यरहित भूभागनेविषे मेले। एसमेनित्थारिएसमाणे। पमानेकाले मिश्रेवस इरिइना मास मनुमामिपणे हुमे। पच्छापुराए हियाए सुहाए। पछे पहिला हितनेकाजे सुखनेकाजे। खमाए खिमेखमाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। एवामेवदेवाणुप्पिया। इवि इष्टांते हेदेवानुप्रिय। मज्झविआयाए। मुझने पनि आत्माचोते।

मम्मत मातृत्सकार्यावां सम्मतत्वात् बहुमतो बहुशो बहुभ्यो वा ऽन्येभ्यः सकाशात् बहुरितिवा मतोबहुमत, अनुमतो नु विप्रियकरणस्य प
श्चादपि मतो ऽनुमतः ॥ भंडकरंडगसमाणेत्ति ॥ भाण्डकरण्डक माभरणभाजन तत्समान आदेयत्वादिति माणसीत मित्यादौ माशब्दो निषेधार्थे
यमिति वाक्यालङ्कारार्थे इदम स्पृशत्विति यथायोग योजनीय अथवा माएन मात्मान मितिव्याख्येय ॥ वालत्ति ॥ व्यालाः श्वापदभुजगाः ॥
माणवाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइयत्ति ॥ इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य ॥ रोगायंकत्ति ॥ रोगाः कालसहा व्याधयः आतङ्का स एव सद्य उप
घातिनः ॥ परीसहोवसग्गत्ति ॥ अस्य माणमित्यनेन सम्बन्धः स्पृशंतु स्पृशन्तु सर्वत्वित्यर्थं तिकट्टु इत्यभिसन्धाय च पालित इतिशेषः स त्रिमि

ए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ , एवामेव देवाणुप्पिया मज्झवि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे विस्सासिए समए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे माणसीयं माणउण्हं माणखुहा माणपिवासा माणचोरा माणवाला माणदंसा माणमसगा माणवाइयपित्तियसंभियसन्निवाइय विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गा फुसंतुत्तिकट्टु , एसनित्थारिएसमाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नो

एगेभंडे ॥ कंते पिए मणुन्ने मणामे थिज्जविसासिएसमएबहुमएअणुमए । एकभांड इष्ट कांत प्रीत मनोज्ञ मनमतो अमसागवो धैयपणा विश्वपणो
विसामो मानमत मानना समतपणावो बहुमत अनुमत । भंडकरंडगसमाणे । भंडकरंडक आभरण भाजन ते समान आदेयपणावो । माणंसीयं मा
णउण्हं माणंखुहा । समभे मायम्द निषेधार्थे ब इलोपाभासकारे फुसन्तु ए सबधमत शीतमत उष्णमत क्षुधामत । माणपिवासा माणचोरा । माणवा
ला माणदंसा माणमसगा । पिपासा तृषा फरसोमां चारफरसोमां व्याल श्वापद भुजंगम फरसोमां दंसा फरसोमां मसा फरसोमां । माणवाइय पि
त्तिय सिंभिय सन्निवाइय । वातिक फरसोमां पैत्तिक सश्लेषम सन्निपातिक । विविहारोगायंकापरीसहोवसग्गाफुसंतुत्तिकट्टु । विविधरोग कालव्याधि
आतंकपवि तेहीज उंतावली घातकारे परीषह मने उपसर्ग एहने मार्ग इयपदस् सर्वपदोजे अर्णो इमकरोने पाल्यो इतिशेष । एसनित्थारिएसमाणे।

त्वात ॥ मसमेइत्यादि ॥ तंइच्छामिति ॥ त तस्मा दिच्छामि ॥ सयमेवत्ति ॥ स्वयमेव भगवतैवेत्यर्थः प्रव्राजितं रजोहरणादिवेषदानेन प्रात्मान मितिगम्यते भावया समत्यय स्तेन प्रव्राजनमित्यर्थः मुण्डितं शिरोलुञ्चनेन ॥ सेहावियत्ति ॥ सेहितं प्रत्युपेक्षणादिक्रियाकलापग्राहणत शिक्षितं सूत्रार्थग्राहणत तथा आचारः श्रुतग्रामादिविषय मनुष्ठानं कालाध्ययनादि, गोचरो भिक्षाटनं एतयोः समाहारद्वंद्व तत तत्सकाशा त मिच्छामीति योगः, तथा विनयः प्रतीतो, वैनयिकं तत्फलं, कर्मक्षयादिचरणं व्रतादिकरणं पिण्डविशुद्ध्यादि यात्रा संयमयात्रा, मात्रा तदर्थमेवा हारमात्रा ततो विनयादीनां द्वन्द्व स्ततश्च विनयादीनां वृत्ति र्वर्त्तनं यस्मा सौ विनयवैनयिकचरणकरणयात्रामात्रावृत्तिको, ऽत स च

सेसाए श्राणुगामियत्ताए भविस्सइ त इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं सयमेव मुण्डावियं सय मेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं सयमेव श्रायारगोयरं विणयवेणइय चरणकरणजायामायावत्तियं धम्म माइक्खियं, तएणं समणेभगवंमहावीरे खदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ जाव धम्ममाइक्खइ, एव

एह सुखने निस्तारपाम्या पमाडरा पाम्या यशेबद यशेबहेसू निस्ताल्या सर्वा। परलोकसुखहिताए खमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ। परलोक मे हितनाथ खमानेवाथ मुक्तिहेत अनुगामिपणे हुस्ये। तइच्छामिणदेवाणुप्पियासयमेवपव्वाविय। ते कारण वांछु छु यत्राजसकारे, हदेवानुप्रिय! पा तेभगवंतजरजोहरणादि वेषदानेकरी दीक्षाप्राप। सयमेवमुंडाविय। भगवंते पाते शिरलुंचनकरा। सयमसेहाविय। पातेज आचारक्रियाकलापग्रह वो। सयमेवसिक्खाविय। पातेज शिक्षाकरी सूत्रार्थग्रहवो सयमेवप्रायारगोयरविणय वेणइय चरण करण जायामायावत्तियधम्ममाइक्खिय। पोतेज आचारश्रुतग्रामादिविषय अनुष्ठान कालाध्ययनादिगोचरी भिक्षाफिरव, विनय करवा जेहना फल कर्मक्षयेतु चरणव्रतादिक करण पिण्डविशुद्धादिक संजमयात्रा आहारनीमर्याद रतिहां निर्वर्त्ते ते धर्मते तमेकहो इसाइ वांछुछु। तएणसमणेभगवंमहावीरे। तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। खदयंकच्चायणसगोत्तं। खंदकप्रते कात्यायनगोत्रना धणीप्रते। सयमेवपव्वावेइ। पाते दीक्षाये। जावधम्ममाइक्खइ। यावत् सर्व जिनधर्म स्वरूप कहे। एवदेवा

ममात्यन्त मनिदित मिप्यामा तियोगः ॥ एवदेवाणुप्पियागन्तव्वमिति ॥ पुगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः ॥ एवंचिट्ठियव्वमिति ॥ निष्क्रमप्रवेशादि वर्जिते स्थाने गमनागमनशयापरिहारको दृस्थाने न स्थातव्यम् ॥ एवं ॥ निसीइयव्वमिति ॥ नियत्तव्य मुपवेष्टव्य सन्दशकभूमिप्रमार्जनादिना येनेत्यर्थ ॥ एवंतुयट्टियव्वमिति ॥ शयितव्य सामायिकोच्चारणादिपूर्वकं ॥ एवंभुंजियव्वमिति ॥ धूमाङ्गारादिदोषवर्जनतः ॥ एवंभासियव्वमिति ॥ मधुरादि विशेषणो

देवाणुप्पिया । चिट्ठियव्वं गतव्वं । एवं निसीइयव्वं , एवं तुयट्टियव्वं , एवं भुंजियव्वं , एवं भासियव्वं , एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणसंजमियव्वं , अस्सिंचणं अट्ठे णोकिंचिपमाइयव्वं , तएणं सेमेहे कुमारे समणस्सभगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ तमाणाए तह गच्छइ , तह चिट्ठइ , तह निसीयइ , तह तुयट्टइ , तहा भुंजइ , तह भासइ , तह उट्ठा

नुप्रियामाम्य । हे म हवेदानुप्रिय ग्र । आटवा युग प्रमाण भूमिकाता । एवचिट्ठियव्व । इम निगम प्रवेश वर्जितस्थानके भूमि पूंजीने ऊभोरहिवा । एवं निसीइयव्वंतुयट्टियव्व । इम भूमि पजीने बेसिवा इम सामायिकादि उच्चारण पूर्वक सूवा । एवंभुंजियव्व एवंभासियव्व । इम सामाचारादि दोष वर्जि त ऊमसा आहारजिम वाविभा । एवउठायउठाय । इम उठीने २ प्रमाद निद्राने तजियेकरी जागीने २ । पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं । प्राणीकरीने भ तकरीने जीवकरीने सत्वेकरीने । संजमेणसंजमियव्व । ते प्राणादिकनेविषे तेहना रक्षाकरे तिणेकरीने यत्नकरवो । अस्सिंचणअट्ठेणोकिंचिपमाइयव्व , एहनेविषे यत्न न शास्त्रमध्ये प्रयत्नेविषे नहीं कांई पणि प्रमादकरवो एतले संयमनाप प्रमादकरवानथी । तएणंसेमेहेकुमारेसमणेस्स । तिवारे पछे ते मेघकुमार । समणस्स भगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनो । इमंएयारूवं । एपूर्वेकह्यो तेरूप । धम्मियंउवएसंसम्मंसपडि वज्जइ । धर्मसंबंधी उपदेशप्रते भलीपरे पालवाने अंगीकारकरे । तमाणाएतहगच्छइ । भगवंतेकह्यो ते आज्ञा प्रमाणेकरीने तिम इर्यासमिते जाय तहचिट्ठइ तहनिसीयइ तहतुयट्टइ तहभुंजइ तहभासइ । तिमज ऊभारहे तिमज निषण्णाये बेसे तिमज सूवे तिमज दोषरहित आहारकरवा, तिम

पपयतयेति एव उत्यायो त्याय प्रमादनिग्राम्यपोहेन विसृष्य २ प्राणादिषु विषये य सयमो रचा तेन सयतव्यं यतितव्य ॥ तमाचारेति ॥ तदनन्तर माग्रया भारेत्रम ॥ इरियासमिएत्ति ॥ ईर्याया गमने समित सम्यक् प्रवृत्त ईर्यासमित सम्यक्प्रवृत्तस्वरूपवि समितस्य ॥ आयाण

भण्डमत्तनिक्खेवणासमिएत्ति ॥ आदानेन ग्रहणेन सह भण्डमात्राया उपकरणपरिच्छदस्य या निक्षेपणा न्यास तस्या समिती य स तथा ॥ उ

च्चारत्यादि ॥ इत्य ॥ क्वेलति ॥ कण्ठमुखश्लेष्मा सिङ्घाणक नासिकाश्लेष्मा ॥ मणसमिएत्ति ॥ सत्कृतमन प्रवृत्तिक ॥ मणगुत्तेति ॥ मनोनिरो

धवान् ॥ गुत्तेत्ति ॥ मनोगुप्तत्वादीना निगमनं एतदेव विशेषेणाह ॥ गुत्तिंदियेत्ति ॥ गुत्तबम्भयारीति ॥ गुप्त ब्रह्म गुप्तियुक्त ब्रह्म चरति य स त

एइ उठाएइ तहपाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमेइ, अस्सिंचण अट्ठे णोपमायइ । तएणसेस्स

दए कञ्चायणसगोत्ते अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभण्डमत्तनिक्खेवणास

मिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते वयगुत्ते

भाषा भमिते बोले । तहउठाइ२ । पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि । तिमज निद्रा प्रमादरहित उठोने २ प्राणे करोने भूतेकरोने जीवेकरोने सत्वेकरो

ने । सजमेणसंजमइ । सयमेकरो यतकरे तेहनो रचाकरे । अस्सिंचणअट्ठे णोपमायइ । एहने, यतन प धासासकारे, यहनेविषे प्रमाद नकरे । तएणसे

खदए । तिवारे तेखदक । कयायणसगोत्ते । कात्यायनगोत्रीयमतें । अणगारेजाते । अणगारअवासरहित साधुथयो । इरियासमिए । ईर्या मार्गनेविषे भलु

पचारे प्रवर्त्ते ते ईर्यासमित । भासासमिए । भाषा बोलव तेविचारी बोले । एसणासमिए । एषणा ४२ दोषरहित आहार ग्रहै । आयाणभण्डमत्तनिक्खे

वणासमिए । ग्रहवेकरी भाजनाव उपकरण परिखेवमें मेलवे करी उपयोगसहित । उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिए । वडोनीति ल

घुनीत कंठनो मुखनाश्लेष्म नाकनामल ते परठवता यतनाकरे उपयोगसहित प्रवर्त्ते । मणसमिए वयसमिए कायसमिए । मननोप्रवर्त्त उपयोगसहित, व

चन नि पाप प्रवर्त्ते, कायेकरी नि पाप प्रवर्त्ते । मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते । मननोपापे निरोधकरे, वचननानिरोधकरे, कायानोनिरोधकरे । गुत्ते गुप्ति

या ॥ चाईति ॥ सकृत्यागवान् ॥ लज्जूति ॥ संयमवान् रज्जुरिव वा रज्जु रवक्रव्यवहार ॥ धन्नेति ॥ धन्यो धर्मधनलब्धेत्यर्थः ॥ खंतिक्खमेति ॥ क्षान्त्या क्षमते न त्वसमर्थतया यो सौ क्षान्तिक्षमः, जितेन्द्रिय इन्द्रियविकाराभावात् यच्च प्राग् गुप्तेन्द्रियत्वमुक्तं तदिन्द्रियविकारगोपनमात्रेणा पि स्यादिति विशेषः ॥ सोहिएति ॥ शोभित शोभावान् शोधितोवा निराकृतातिचारत्वात् सौहृद मैत्री सर्वप्राणिषु तद्योगा त्सौहृदोवा अणियाणेति ॥ प्रार्थनारहितः ॥ अप्पुस्सुएति ॥ अल्पौत्सुक्यस्त्वरारहितः ॥ अबहिल्लेसेति ॥ अविद्यमाना बहिःसंयमा द्वहिस्ता लेश्या मनो वृत्ति यस्य स अबहिर्लेश्यः ॥ सुसामण्णरएति ॥ शोभने श्रमणत्वे रतः अतिशयेनवा श्रामण्यरत ॥ दंतेति ॥ दान्त क्रोधादिदमनात्, द्रव्यतो वा रागद्वेषयो रभावप्रवृत्तत्वात् ॥ इणमेवत्ति ॥ इदमेव प्रत्यक्ष ॥ पुरओकाउंति ॥ अग्रे विधाय मार्गानभिज्ञो मार्गज्ञनरमिव पुरस्कृत्य वा ; प्रधा

कायगुत्ते गुत्तेगुत्तिंदिए गुत्तबंभचारी चाई लज्जू धन्ने खंतिक्खमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अब हिल्लेस्से सुसामण्णरए दंते इणमेवनिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ , तएणंसमणेभगवंमहावीरे कयंगलाउ णयराउ छत्तपलासयाउ चेइयाउ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइत्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ , तएणं

दिय गुप्तब्रह्मचारी चाई लज्जू मन चाहिदेः गावबे, इंद्रियगोपवे गुप्त, ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य व्रत धारे ममत्वत्यागवारे, संयमलज्जासहित। धन्यक्षांतिक्षमे जि तेंद्रिय सोहिये अणियाणे अप्पुसुए। धर्मधनसहित क्षमायेकरी क्षमे पणि असमर्थपणेकरी इन्द्रीविकाररहित जितेंद्रिय अतीचार सोध्या अथवा सौह द मैत्रीभाव सर्वप्राणीनेविषे नियाण प्रार्थनारहित । उत्सुकपणारहित । अबहिल्लेसे सुसामण्णरए । सवमते लेश्या बाहिरिप्रवर्त्तनथी मनोवृत्ति जेहने भला श्रमणपणा तेहनेविषे रतछे । इतोऽयमेव निर्ग्रंथप्रवचनपुरतोकृतंविहरइ । दांत क्रोधादिकनाजमवावी एमयच निर्ग्रंथ प्रवचन आगेकरीने मा र्गना अजाण मागना जाण मनुष्य तहनेआगे करीने विचरे तिम स्कन्धक पणि विचरे, । तएणंसमणेभगवंमहावीरे । तिवारे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वा मी । श्रमणा पाश्रयरोधा । कयंगलाभामे नगरीथी । छत्रपलासनामा चैत्ययकी । छत्रपलासनामा चैत्ययकी । पडिनिक्खमइ २ त्ता । नीकले नीकलीने ।

मोहत्यायिहर त्यासहति ॥ एक्कारस अगाई अहिज्जइति, इह कथि शाइ' न न्यमेन स्कन्दकचरिता स्मागेव एकादशाङ्गनिष्पत्ति स्वचीयते पञ्च माङ्गतनूंतव स्कन्दकचरित मिद मुपसन्यते इति कथं न विरोध ? उच्यते श्रीमन्महावीरतीर्थे किल नव वाचना सन्ति सर्ववाचनासु स्कन्दकच रिता सूचगासे पे स्कन्दकचरिताभिधया अर्थो सो चरितान्तरद्वारेव मनाप्यन्त स्कन्दकचरितोत्पत्तौच सुधर्मस्वामिना जम्बूनामान स्वशिष्य म ङ्गीकृत्या धिकृतवाचनाया मस्यां स्कन्दकचरितमेवा भित्य तदर्थमरूपनालतेति न विरोधः ॥ अथवा सातिशयत्वा द्गणधराणा मनागतकालभावि चरितनिबन्धन मदुष्टमिति भाविशिष्यसन्तानापेक्षया अतीतकालनिर्देशोपि न दुष्टइति ॥ मासियंति ॥ मासपरिमाणा ॥ भिक्खुपडिमंति ॥ भिक्खुचित म

सेखंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ अहिज्जइत्ता जेणेव समणेभगवंमहावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ नमंसइत्ता एवं वयासी, इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियंभिक्खुपडिम

भिग्रहविशेषविहारविहरत । चारित्रि देवनेविषे विहारकरी विचरे, विहारकरे इत्यव । तएणंसेखंदएअणगारे । तिवारे तेखंदक अणगारसाधु । समणस्स भगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । तहारूवाणं थेराणं अंतिए । तथा प्रकारना स्थविर साधु तेहने समीपे पासे । सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ २ त्ता । सामायिक आदिदेइ इग्यारअंग भणे भणीने आचारांगादिक इग्यार अंग तेहभणे भ णीने । जेणेवसमणेभगवंमहावीरे । जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । समणंभगवंमहा वीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रतें वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने । एवंवयासी । इमकहे । इच्छामिणंभंते । वांछुं छुं हे भगवन् ! तुब्भेहिंअब्भणुण्णाएसमाणे । तुम्हे आज्ञादीधा थका एतले तुम्हारी आज्ञा हुंतां । मासियंभिक्खुपडिमं मासनी भि क्षु साधुनी प्रतिमा विशेष अभिग्रहविशेष ते एकमोटे अहोरात्रे मासनो मौतको एकमासनो महाप्रतिमा आदरे, एक दत्तमाहार अने एकदत्तपाणी ग्रहै

मिग्रहयितेप मतत्स्वरूपच-मध्याविविक्तमिता पडिमजाइमासियंपडिमं । इत्तेमजोपवस्सा पायस्सविएमआमासमित्यादि ॥ १ ॥ स स्वयमे कादशाङ्गधारी पठितः प्रतिमाय विशिष्टश्रुतवामेव करोति यदाह-गच्छेवियचिमाट आपुव्वादसजवेयसपुव्वा । नवमस्सतइयवत्थु होइजहण्णोसु मारिमम्मो ॥ १ ॥ इतिकथं न विरोध? उच्यते पुरुषान्तरविषयो यभुतनियम स्त्वस्तु सर्वविदुपदेशेन प्रवृत्तस्य प्रदीपइति ॥ यथासुत्तति ॥ सा मान्यसूत्रमतिक्रमेण ॥ यथाकप्पति ॥ प्रतिमाकल्पामतिक्रमेण तत्कल्पवस्त्वनतिक्रमेणवा ॥ यथामग्गति ॥ ज्ञानादिमोक्षमार्गामतिक्रमेण क्षायोप शमिकभावामतिक्रमेणवा ॥ यथातच्चति ॥ यथासत्व तत्वानतिक्रमेण मासिकीजिनप्रतिमेति शब्दार्थानतिक्रमेणेत्यर्थः ॥ यथासम्मति ॥ यथासा

उवसपज्जित्ताण विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंध । तएण खंदए अणगारे समणेण भगव या महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हठ्ठतुठ्ठजाव नमंसित्ता मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएण से खंदए अणगारे मासिय भिक्खुपडिम अहासुत्त अहाकप्प अहामग्ग अहातच्च अहासम सम्म का

हम वारत् एकमासनमे हम विचार गत्यान्तरवी जावता हवो वार्ईदव पूजक वडवता हस्यार मग माचाहे, मने प्रतिमाता विशिष्ट श्रुतवत मार्द रे भेमाटे हवो विराध दोमेवे? तेहना उत्तर एतत नियम पुरुषान्तर विशेषवे तेयदवे सवमने उपदेशेकरी प्रतिमावडो तिचेंदीपणडो, वोतराग तेहनो सउनकप जावे तेयवमासिक साधुनो प्रतिमा धारवीने विचरु हसा संखंक पूवायको भगवतकहे—यथासुखदेवानुप्पिया मापडिबंध । जिम सुखकु वे देवानुप्रिय पवि विलम मकरसो । तएवमेखदएयणगारे । तिवारे तेखन्दसाधु समणेण भगवमासवावीरेण । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवे । अभ्य णुपममावे । आज्ञादीवासको । हठ्ठतुठ्ठजावनमंसित्तामासियभिक्खुपडिमंउवसपज्जित्ताणविहरइ । हर्षपाम्यो यावत् नमस्कारकरीने मास प्रमाण साधुनो प्रतिमा पडिवजीयेथ तेधारीने विचरे प्रतिमावडी तपकरे इत्यव । तएणसेखदएयणगारे । तिवारे तेखन्द साधु । मासियंभिक्खुपडिमं । मास प्रमा ण साधुनो प्रतिमा पडिवजीयेथ । यथासुत्त यथाकप्प यथामग्ग यथातच्च यथासम्म । जिम सूत्रमांहि कह्यो तिम प्रतिमानेयडो प्रतिमा आचार अ

स्य समयायानतिक्रमेण ॥ काम्यति ॥ न मनोरथमात्रेण ॥ फासेइत्ति ॥ उचितकाले विधिना ग्रहणात् ॥ पालेइत्ति ॥ असकृदुपयोगेन प्रतिजागर
णात् ॥ सोहेइत्ति ॥ शोभयति पारणकदिने गुर्वादिदत्तशेषभोजनकरणात् शोधयतिवा तिचारपंकक्षालनात् ॥ तीरेइत्ति ॥ पूर्णेपि तदवधौ स्तो
ककालावस्थानात् ॥ पूरेइत्ति ॥ तत्कृत्यपरिमाणपूरणात् ॥ किट्टेइत्ति ॥ कीर्त्तयति । पारणकदिने इदं चेदं चैतस्याः कृत्यं तच्च मयाकृत मित्येवं की
र्त्तनात् ॥ अणुपालेइत्ति ॥ तत्समाप्तौ तदनुमोदनात् ॥ किमुक्तं भवतीत्याह आज्ञया आराधयतीति, एवमेताः सप्तसप्तमासांता उत्तोष्टमी प्रथमा

एवं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासित्ता जाव आराहेत्ता, जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं जाव नमंसित्ता एववयासी, इच्छामिणं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मापडिबंध। तंचेव एवं दोमासियं तिमासियं चाउम्मासियं पंचछसत्त, पढमसत्तरा

तिक्रमणरी आगारादिमायमाग विना तिमज्झसेवनरो तथा यथायथम भावथी समभावकरी पतिक्रमेणकरी। सम्यकाएणफासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ। अनेप्रकारे आचरिकरी फरसे, विधिपूर्वे करी वारवार उपयोगसेवें पारणादिने गुरुना सभागकरी सोमे, तथा अतीचार कोकठा ले, तपकाले पूरेहते किंतरा एककाम करसे, तेहना प्रमाणपूराकरे, पारणाने दिने गवप्रतेंकहे म्हारा अमुकाम पूराकर्या अनुमोदनापूर्वक पाले। आज्ञा एआराहए सर्वकायवकफासित्ता जावआराहेत्ता। आज्ञाआराधे अथोपरे आचारेंकरी फरसीने यावत् आराधीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे आवीने। समणंभगवंमहावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरप्रतें। वंदइजावनमंसित्ता। वांदे नमस्कारकरे यावत् वांदी नमस्कारकरी। एवंवयासी। इमकहे। इच्छामिणंभंते तुब्भेहिंअब्भणुन्नाएसमाणे। वांछुं हुं श्रवाक्यखकारे, हेभगवन्! तुम्हारी आज्ञापाम्याथका। दोमासियंभिक्खुपडिमंउवसंपज्जित्ताणंविहरित्तए। द्विमासनी साधुनी प्रतिमा आदरीने विचरूं एतावत दिमासिकाकी

ममरात्रिदिया ममाशारायमामा मव ममी दशमीचेति यता सिलोपि चतुपञ्चतेना पामकेमति ततामकादिस्थानकतस्तु सिद्धेयः ॥ राइंदियति

रात्रिदिया मकारगो मदारायपरिमाका हयव पटप्रस्तेन ॥ एगराइयति ॥ एकरात्रिकी हयचाशुमन मवतीति ॥ गुणरयणसवच्छरंति ॥ गुणाना

निम्नराविशेषाणां रचन करणं मवरमरेव समिज्ञामपर्यंव यस्मिन्नपसि सगुणरयणसवच्छरं गुणाएव वा रचानि यत्र स तथा गुणरत्नः सवत्सरो

इदिय , दोच्च सत्तराइदिय , तच्च सतराइदियं , ऋहाराइदिय , एगराइदिय। तएणसे खदए ऋणगारे एग राइ निरकुपडिम ऋहासुत्तं जाव ऋाराहेत्ता जेणेव समणञ्जगव महावीरे तणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणञ्जगवं महावीर जाव नमंसित्ता एवंवयासी , इच्छामिण ञंते ! तुञ्झेहिं ऋञ्जणुम्माए समाणे गुणरयण संवच्छरं तवोकम्म उवसंपज्जित्ताण विहरित्तए , ऋहासुहं देवाणुप्पिया ! मापडिबंध। तएण से खदए ऋण

व पारमपदान माम चक्रमात्रके इतिमग्र। मदामुद्देवाचविता। जिम सुच तिम वदेवानुपिय। मापडिबंधतपेव। पचि विर्सव मकरसो पद्धेतिमज तेजरे। एवतिमामिव चाउम्मासिय पंचमासिय। इम विमासिव मामतप एकमासमाज १। चतुर्मासिकनाम चौथी प्रतिमा ४। पंचमासिकनाम पंचमी ५। छमासिय सत्तमासिय। छमासिकछठो ६। सतमासिकनाम सातमो ७। पढमसत्तराइंदियं। चउत्थ चउविहार ४ मत १ पारणायें आठमो ८। दोच्चसत्त राइंदियं। नवमो इमज मात अहोरात्रिमी प्रतिमा नावमो ९। तचसत्तराइंदिय। दशमो सात अहोरात्रिनो प्रतिमा १ । अहोराइंदिय। छट्ठतप अहोरात्रिकाउसग्ग अग्यारमो ११ । एगराइंदिय। अट्ठमतप एकराति काउसग्ग बारमो प्रतिमा १२। तएणसेखंदए अणगारे। तिवारे ते खंदकसाधु। एगराइयंभिक्खुपडिम। एकराति काउसग्गनी साधुनीप्रतिमा। यथासूत्रं। जिमसूत्रमाहेकही तिमें प्रकारे। जाव आराहेत्ता। यावत् आराधीनेआराधीने। समणभगवंमहावीरे। जेणे श्रमणभगवंतश्रीमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहांआवीने। समणभगवंमहावीरं। श्रम ण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें। जावनमंसित्ता। यावत् नमस्कार करीने। एववयासी। इमकहे। इच्छामिणभंतेतुब्भेहिं अब्भणुन्नाएसमाणे गुणर

यत्र तत् गुणरत्नसंवत्सरं तप इहच त्रयोदशमासाः सप्तदशदिनाधिका तपःकालः त्रिसप्ततिश्च दिनानि पारणककालइति एवमार्य–पन्नरसवीस चउवी सचेवचउवीसपणवीसाय । चउवीसएक्कवीसा चउवीसासत्तवीसाय ॥ १ ॥ तीसातेत्तीसावियं चउवीसछवीसअठवीसाय । तीसायतीसावियं सोल समासेसुतवदिवसा ॥ २ ॥ पन्नरसदसछपंच चउरपंचसुयतिन्निहिति । पंचसुदोदोयतहा सोलसमासेसुपारणगा ॥ ३ ॥ इहच यत्र मासे यष्ट मादितपसो यावन्ति दिनानि न पूर्यन्ते ताव न्यग्रेतनमासा दाकृष्य पूरणीया न्यधिकानि चाग्रेतनमासे शेषयानि ॥ चउत्थचउत्थेणंति ॥ चतुर्थं भक्तं याव द्भक्तं त्यज्यते यत्र त चतुर्थं मिय न्योपवासस्य संज्ञा एवं षष्ठादिक मुपवासद्वयादेरिति ॥ अनिक्खित्तेणंति ॥ अविश्रान्तेन ॥ दियत्ति ॥ दिवा दिवसइत्यर्थः ॥ ठाणुक्कुडुएत्ति ॥ स्थान मासन मुक्कुडुक मासारे पुताल गमरूपं यस्या सौ स्थानोत्कुटुकः ॥ वीरासणेणंति ॥ सिंहासनोपवि

गारे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुन्नाए समाणे जाव नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छर तवोकम्म उवसंपज्जि त्ताणं विहरइ, तंजहा–पढममासं चउत्थंचउत्थेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दियाठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आ

चवर्मसंवच्छरतवाकम्मउवसंपज्जित्ताणंविहरित्तए। बोल्ल्युं हे भगवन् ! तमारी आज्ञापाम्यांथका एवले तमारी आज्ञाथायतो गुणनिकराविशेष तेहने र ल तेहनाकरो तेरेमास सतरेदिन तपकाल धनेण्ड दिन पारणाना एवं मास १६ ते गणरत्न संवच्छर तपकर्म क्रिया आदरीने विचरूं एतले तपक र् हविमत्र भगवंत कहे–यथासुखंदेवानुप्रिया माप्रतिबंधं। जिम सुख होय तिम हेदेवानुप्रिय। पणि प्रतिबंध विलंब मकरशो। तएणंसेखंदए। अणगारे। तिवारे ते खंदक साधु। समणेणंभगवयामहावीरेणं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। अब्भणुन्नाएसमाणे। आज्ञादीधायका थकें। जावण मंसित्ता। यावत् नमस्कारकरीने। गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मंउवसंपज्जित्ताणंविहरित्तए। गुणरत्नसंवच्छरनाम तपकर्म, तपक्रिया, अंगीकारकरीने वि चरे एतले गणरत्न संवच्छरतप आदरे इत्यर्थः। पढममासं चउत्थंचउत्थेणं अनिक्खित्तेणंतवोकम्मेणं। ते कहे छे—पहिलेमासे चउत्थे ते एक उपवासने स श्रा, इम छट्टम तप ते बेउपवास, इम आगे पणि कहवा, वीसामारहित अंतराररहित तपकर्मक्रियाकरे। दियाठाणुक्कुडुए। दिवसनेविषे आसन उत्क

यायणभूमीए आयायेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय दोच्चंमास छठंछठेण अनिक्खित्तेण दिया ठाणुक्कु
डुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय एव तच्चंमास अठमंअठमेण
चउत्थमास दसमंदसमेण पंचममास बारसमबारसमेण छठंमास चोद्दसम चोद्दसमेण सत्तममास सोलसम सो
लसमेण अठममास अठारमम २ नवममास वीसइम २ दसममास बावीसइमबावीसइमेणं एक्कारसममास
चउवीसइम २ बारसम मास छव्वीसइम छव्वीसइमेण तेरसममास अठावीसइम २ चोद्दसममासतीसइम २

हू बेसे मध्यरजनामापरे। सूराभिमुहे। सूर्य साहमू पभिमुख । आयावणभूमीए आयावेमाण रत्तिंवीरासणेण अवाउडेणय। आतापनानी भमीये जिहा रेतप्रत्नमे ते भूमिकानेविषे आतापनामेतावका रात्रिनेविषे वीरासन ते सिंहासने मनुष्यबेसीने पम बेसे धरतीरायें मोथासुं सिंहासन परहो काढे त मनुष्य तिमहीज बेठोरहे त वीरासनरहे वस्त्ररहित उघाडो मम रस्य। दायमासछठछठेण पनिक्खित्तेण। बीजा मासनेविषे छठछठे एतले बेउप वासे पारणोकरे बीमामारहित पतरारहित हस्य। दियाठाणुक्कुडुए। दिमनेविषे उत्कटुकासन बेसे। सूराभिमुहे। सूर्य साहमो मुखराखे। आया वणभूमीए आयावेमाणे। आतापनानी भूमिकानेविषे आतापना करतावका। रत्तिंवीरासणेण। रात्रीने वीरासने बेसे पूर्वकह्यो तेरीते। अवाउडेणय। परिधान वस्त्ररहित नग्नभावे। एवंतच्चंमासं अठमअठमेणसम। एमहीज त्रिजावे त्रीजेमासे तीनउपवासे पारणोकरे एतले निरन्तरे अठमकरे। चउत्थंमा सं दसमंदसमेण। चोथेमासे दसमदसम एतले चारे उपवासे पारणोकरे। पंचमंमासबारसमबारसमेणं। पांचमें महीने बारसबारसमे पारणोकरे एत ले पांच उपवास निरन्तरेकरे। छठामासंचउदसमंचउदसमेणं। छठेमहीने छ्छए उपवासे निरन्तरे पारणो करे। सत्तममासंसोलसमसोलसमेणं। सात मेमहीने सात उपवासे पारणोकरे। अठममास अठारसमंअठारसमेणं। आठमेमहीने आठआठ उपवासे पारणोकरे एतले। नवमंमासंवीसइमवीसइ मेण। नवममहीने बीसतिम करतां नवनव उपवासे पारणोकरे। दसममासंबावीसतिमंबावीसतिमेणं। दसमे महीने करतां दसदस उपवासे पार

पन्नरसममास यत्तीसइमर सोलसममासचउत्थम चउत्तीसइमेणं अनिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेण, तएणसे खंदए अणगारे गुणरयणसंव च्छर तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं जाव आराहित्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवा गच्छइत्ता समणंभगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, बहुहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं

चोकरे। एकारसममास चउवीसतिमचउवीसतिमेव। इग्यारमेमासे इग्यार इग्यार उपवासे पारणोकरे। बारसममासंछव्वीसतिमछव्वीसतिमेवं। बार मे महीने बारेबारे उपवासे पारणाकरे। तेरसममासअट्ठावीसतिमंअट्ठावीसतिमेव। तेरमेमहीने तेरेतेरे उपवासे पारणाकरे। चउदसममासंतीसतिम तीसतिमेवं। चउदमेमहीने चउदचउद उपवासे पारणोकरे। पन्नरसमंमासबत्तीसतिमबत्तोसतिमेव। पनरमे महीने पनर पनर उपवासे पारणोकरे। सोलसममासचउत्तीसतिम चउत्तीसतिमेव। सोलमेमहीने सोल सोल उपवासे पारणोकरे। अनिक्खित्तेणं। वीचमे अतरारहित विश्रामटालो। तव कम्मेणं। तपकम क्रियाकरो। दियाठाणुक्कुडुए। दिवसनेविषे उत्कटूआसनबेसे। सूराभिमुहे। सूय साहमे मुखे रहिवो। आयावणभूमीए। आताप ना करतावनो। रत्तिवीरासणेण। रात्रिनेविषे वीरासन पूर्वकथा तेरोते। अवाउडेण। पहिरण वस्त्र रहित नग्नभावे। तएणसेखंदएअणगारे। ति वारे तेखंदक साधु। गुणरयणसंवच्छरतवोकम्मअहासुत्तं। गुणरत्न संवत्सरनामे तपकर्मक्रिया जिमसूत्रमाहेकह्यूं तिमतो मर्यादाये। अहाकप्पं। यथा सामा चारीये आचारसहित। जावआराहित्ता। यावत् आराधीने। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छ इ २ त्ता। तिहांआवे तिहांआवीने। समणं भगवंमहावीरं। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते। वंदइ नमंसइ २ त्ता। वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने। बहुहिंचउत्थछट्ठम। घणे चउत्थ एकउपवास छट्ठ दोय उपवास अट्ठम तीन उपवास। दसमदुवालसेहिं। दसम चार उपवास दुवाल स पांच उपवास। मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं। मास तीसदिन अर्धमास पनरदिन तिणेकरी विविध नाना प्रकारना जे। तवोकम्मेहिं। तपकर्मे

म्म नृम्मपादस्या पनीतर्मिहामनस्येव मत्वत्वार्न तह्वीरासनं तेन ॥ मवाठेसपाति ॥ मावरकाजावेनच ॥ उरालेणमित्यादि ॥ उरालेन मा
तंनारहिततपा मपानम मपानं चास्यमपि स्यादित्याह ॥ विपुलेन ॥ विस्तीर्णेन पहुदिमत्वात् विपुलच गुरुभि रनुज्ञातमपि स्या दमयमत्त
वा स्यान्तयाह ॥ पयतपाति ॥ मदत्तन मनुज्ञातेन गुरुभिः मपत्नेनवा; मपमवता ममादरहितेनत्यर्थ, एवयिधमपि सामान्यत मतिपन्न स्यादि
त्याह मगहीतम महुमानमकर्षा दाश्रितेन तथा कल्याणेन नीरोगताकारणेन, शिवेन शिवहेतुना धन्येन धम्मधनसाधुना मङ्गल्येन दुरितोपशम
साधुना मयीरूपेण मम्यकपामना रमणोज्जम उदग्रेण उन्नतपयवसानेन उत्तरोत्तर वृद्धिमतेत्यर्थ उदात्तेन उन्नतभाववता ॥ उत्तमेणति ॥ ऊर्द्ध त
मसा ऽज्ञामा द्य त तथा तम मामयुक्तमे त्यर्थः उत्तमपुरुषासेवितत्वा द्वो तमेन उदारेण औदार्यवता निःस्पृहत्वातिरेकात् , महानुभागेन म
हामनावेन ॥ सुक्कत्ति ॥ सुक्को नीरसशरीरत्वात् ॥ सुक्केति ॥ बुभुक्षावशेन रूक्षीभूतत्वात् अस्थीनि चर्मावनद्धानि यस्य सो स्थिचर्मावनद्ध कि

थिचिमेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ , तएणसेखंदए अणगारे तेण उरालेण विउलेण पयत्ते
ण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मंगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेणं उदारेण महाणुभागेण
तवोकम्मेण सुक्के लुक्के निम्मसे अट्ठिचम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतएजाएयाविहोत्था , जी

किया निर्वेदरी । पद्मार्थभाविमावविहरइ । भाम्भावते भाम्यमान रोधम्य मानता विचरेछे । तएणसेखंदएअणगारे । तिवारे तेखंदक साधु । तेणउराल
न निजमेव पयसेण वस्तृविधं पमावेणं मिवेण धनेम । तिवे पाणनावरी रहित निधमेवरी विस्तीर्ण मयादिनमाटे गुरुसमीपेगया मनुज्ञामुकनी
प्रमादमी ग्रहा नीरागने कारणेवरी शिवहेतुगेवरी धमवनेवरा । मगलीव सश्रिरिएणं उदग्गेण । दुरित उपशमेवरी भलो परे स्थानवारी सयोम
नेवरी दिनदिनप्रते नवनोवदि । उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेण । चडते परिणामेवरी माममुक्तिवरी उत्तम पदपेसेव्या नोवारहित निसस्पृह
पाणो महातपना प्रभावक । तवोकम्मेणं सुक्केलुक्केनिम्मंसे । एहवें तपकम क्रियावेंवरी शरीरसूका निरसपणाथी लूखावसे मांसरहितथयो । अट्ठिचम्माव

विको अशामविधि महाफला प्रवसी त्वभिमायेव जगवविवोसे शोकतु समाजम माजूव मह स्तव ... ...सत्याद ॥
फलति ॥ य माटुः माकारये तत प्रकाशप्रजातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते फुल्ल विकसितं तच्च तदुत्पलञ्च फुल्लोत्पल तच्च कम
लय हरिणविशेष फुल्लोत्पलकमली तयोः कोमल मकठोर मुन्मीलित दमाना नयनयो कोन्मीलन यस्मिं स तथा तस्मिन् यमेति रजनीविभा
तानन्तर पाण्डुरे प्रभाते रक्ताशोकप्रकाशेन किंशुकस्य शुकमुखस्य गुञ्जार्द्धस्य च रागेण सदृशो यः स तथा तस्मिन् तथा कमलाकरा ह्रदादयः स्तेषु
षु खण्डानि नलिनीखण्डानि तेषां बोधको यः स कमलाकरषण्डबोधक स्तस्मिन् उत्थिते अभ्युद्गते कस्मिन् कित्याह ॥ सूर ॥ पुन किम्भूतइत्याह ॥ स

ण जगयमहावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताय तामे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलु
मिलियमि अहपण्डुरे पभाए रत्तासोगप्पकासे किंसुयसुयमुहगुञ्जद्धरागसरिसे कमलागरसण्डबोहए उट्ठियमि

पुरुषाकार पराक्रम पतले भावसगे उद्यानादि सर्वेषा चीयवया गहे तेमाठे आसमे मुकने। पविज्जाचे। है उद्यान। कर्मे वले वीरिए पुरिसका
रपरक्कमे। कम बल वीय पुरुषाकार पराक्रम। जावसमे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणेभगवमहावीरे। यावत् श्रमण भोवरा धमाचार्य धर्मोपदेशक
श्रम णतक श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामी। विचेसहस्री विहरइ तावतामेसेय। खोसाङ्ग रायवेय जिवं, सुभावींहे मध्यमतें, यथवा सुहस्तीगोपरे वि
चरे तेतमावालमगे मुकने श्रयममठीक। कल्लपभाएरयणीए। आगामि प्रभात रात्रिनेविषे। फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियमि। विकसित उत्पलफूल
कमल हरिणनोनेव कोमल मकठोर कमलना दल हरिणना नव मिलाया ते उन्मीलितथया। अहपण्डुरेपभाए। अथ पाण्डुर प्रभातथया। रत्तासोगप्प
गासे। राता अशोक तेहना पुष्पतिसी प्रभा विषेकरी। किंसुयसुयमुहगुञ्जद्धरागसरिसे। केसूडानोफूल अथवा सूडानामुख अथवा चिरमोनोयर्द्ध तेहना
रागसरीखाज। कमलागरसण्डबोहए उट्ठिअमिरे। कमलना आगर सरोवर तेहनेविषे नलिनीखण्ड तेहने विकासनकार तेहनेविषे उगतेथके सूर्य। स
हस्सरस्मिदिणयरे तेयसा जलते। सहस्र किरणसहित दिनकरसूर तेजेकरी आज्वल्यमान एतावता प्रभातसमये। समणभगवमहावीर। श्रमण भगवत

भावाभिमात्यादि ॥ कराडेति ॥ इह पदैकदेशा त्सम्मुदायो दृश्य स्तत कनयोग्राह्येति रितिस्यात् तत्र कृता योगा प्रत्युपेत्यादिष्वा पारा येना मति न कनयागिनः पादिष्टाद्ग रिम्रपयम्यागा मुतमस्माग इत्यादि यावत्करति ॥ विडमति ॥ विपुलाजिपाम ॥ मेघघणसन्निगासति ॥ गमभिगमद्वे मान्यमरसमार्ग कामत्र मित्यथः ॥ देवसन्निपाइति ॥ दयाना सन्निपात समागमो रमणीयत्वा द्यत्र स तथा ॥ तपुढविसिलापट्टय ति ॥ पृथिवीशिलामयः पट्टक आसनविशेषः पृथिवीशिलापट्टकः काष्ठशिलापि शिला स्या दत स्तद्व्यवच्छेदाय पृथिवीपदम् ॥ संलेहणाझूसणाझूसि

गूरं गहूमगरस्सिगामिन्गिणयरे नयराजलत समणनगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासेत्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुगाए समाणे सयमेव पंचमहव्वयाणि आरोहेत्ता समणायसमणीनय खामेत्ता त हाकयहिं थेरहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्ता मेहघणसंनिगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडि

गोमराग्राम्नामीत्रते । वंदित्वा नमसित्वा । यावत् नमस्कारकरात । जावपज्जुवासित्ता । यावत् पर्युपासना सेवा करोति । समणेणभगवयामहावीरेण । भगवान् गोमहाग्रामणी । पञ्चमहारवमाथि । पाप्रा ग्रोतावर्ता । सयमेवपंचमहव्वयाणि आरोवेता । पोतेज पंचमहाव्रत सर्व प्राणातिपा त वेरमणादिक मारोप । समणायसमणोपायसामेता । श्रमण गोतमादिक तिहनेकाले श्रमणोसाध्वी वड्गवामा प्रमुख तेहनेकाले खमावोने । त थाकप सगीहज तिवेकरो कडिरेकरी । कडाईहिमहि । योधीयाग प्रत्युपद्यादिव्यापार ते कृतसामो तिवेकरी सहित । विपुल पर्वतमाविर्थे दुरूहित्ता । विपलनामे पर्वत तिहां हलवे २ चढीने । मेहघणसंनिगास । जिसो श्याम मेघ तिसी शिला निवडघनमर समान श्याम । पढवीसिलापट्टय । पृथिवी शिलारूप आसनविशेष । देवसन्निवाय । देवसमागम रमणीकपणाथी । पडिलेहित्ता । पडिलेही पंजीने । दब्भसंथारिसं थर (रित्ता । दाभ न संथारिया मथारा तेमर्तें पाथरोने । दब्भसंथारोवगयस्स । डाभने संथारे उपगत रह्याने । संलेहणाझूसणाझूसियस्स । झूसणा जसयोने द

मस्वत्ति ॥ सलिस्यतेक्षीक्रियते नयेति सलेखना तप सस्या जोषणा सेवा तया जुष्टः सेवितो क्रूपितोवा क्षपितो य स तया तस्य ॥ भत्तपाणप
डियाइक्खियस्सति ॥ प्रत्याख्यातभक्तपानस्य ॥ कालंति ॥ मरण ॥ तिकट्टु ॥ इति कृत्वा हृदविपर्यीकृत्य ॥ एवसंपेहेइत्ति ॥ एव मुक्तलक्षणमव सम्प्रेक्षत

याइस्किपस्स पाढवगयस्स कालं श्रणयकस्समाणस्स विहरित्तएत्तिकट्ट एवसंपेहेइ एवसंपेहेइत्ता कल्लपाउप्पन्ना
याए रयणीए जाव जलत जेणेयसमणेभगवमहावीरे जाव पज्जुवासइ खंदयादि, समणेभगवमहावीरे खदय
श्रणगार एव वयासी, सेणूण तत्र खदया पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स इमे यारूवे श्रज्झत्थिए जाव समु
प्पज्जित्था, एवखलु श्रहं इमेण एयारूवेण उरालेण विउलेण तचेव जाव कालं श्रणयकस्समाणस्स विहरित्त
एत्तिकट्ट, एव संपेहेइ २ त्ता, कल्लपाउप्पन्नायाए जाव जलते जेणेव मम श्रतिए तेणेव हव्वमागए, सेणूण

वे तं सवे ॥ ॥ खदिये तेनप तेज्मोसश तिर्वे सेष्या तेज्मे। भत्तपाणपडियाइक्खियस्स। भात पार्णा पचक्खीने। पावावमयस्स। पारयापगमने। का
लंभयवकसमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्ट एवसंपेहेइ २ त्ता। कालमरण भपर्वाकतोवको विचरू इसोवरोम इम समस्तपर्वे भासापे पासोपोन। कल्लपाउप्प
माणाएरयणीए। यामामि प्रभातसमय प्रगटयये बने। जावजसति यावत् आज्वल्यमान सूय उमतेपथे। जणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहा श्रमण भगवत श्री
महावीरस्वामी तिहा भावे। जावपज्जुवासेइ। यावत् सेवाकरे ततवे। खदयादि। हेखंदक। इत्यादिनाम पूर्वपरे समणे भगवमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीम
हावीरस्वामी। खदयंमणगार। खदक यवमारमत। पर्वयासी। इमबोले। सेणूंणंखदया। ते निश्चे तुम्हने हेखदक। पुव्वरत्तावरत्त। मध्यरात्रिने। जाव
जागरमाणस्स। यावत् धमचितावं जागताथकाने। इमेयारूवे श्रज्झत्थिए। ए एताद्रय इमरूप। भास्मचितव। जावसमुप्पज्जित्था। यावत् सकल्प उपना।
एव खलु भइ इमेण एयारूवेण उरालेण विउलेण। इम निचे हू पणि एहवे रूपेकरी उदारे प्रधानेकरी विस्तीर्णेकरो। तचेवजावकाल भणवकखमाणस्सविहरि
त्तएत्तिकट्ट। तिमज निचे यावत् कालमरणमतें भपर्वावता थकाने विचरू इसाकरोने। एवं सपेहेइ २ त्ता। इम समस्तपर्वे भासापोने। कल्लपाउप्प

किटिकिटिका निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियासमुत्थः शब्दविशेषः तां भूतः प्राप्तो यः स किटिकिटिकाभूतः कृशो दुर्बलः, धमनीसन्ततो नाडीव्याप्तो मांसक्षयेण दृश्यमाननाडीकत्वात् ॥ जीवंजीवेणंति ॥ अनुस्वारस्यागमिकत्वात् जीवजीवेन जीवबलेन गच्छति न शरीरबलेनेत्यर्थः ॥ भासंभासित्तेत्यादौ कालत्रयनिर्देशः ॥ गिलाइत्ति ॥ ग्लायति ग्लानो भवतीति ॥ से जहानामएत्ति ॥ सेति अथार्थः ॥ यथेति दृष्टान्तार्थः नामेति सम्भावनायां एइति वाक्यालङ्कारे ॥ कट्ठसगडियत्ति ॥ काष्ठभृता शकटिका काष्ठशकटिका ॥ पत्तसगडियत्ति । पलाशादिपत्रभृता गन्त्री ॥ पत्ततिलभंडगसगडियत्ति ॥ पत्रयुक्ततिलानां भाण्डकानां च मृन्मयभाजनानां भृता गन्त्री इत्यर्थः ॥ तिलसकडगसगडियत्ति ॥ क्वचित्पाठः प्रतीतार्थश्च ॥ एरंडकट्ठ

घं जीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामीति गिलाइ, से जहानामए कट्ठसगडियाइ वा पत्तसगडियाइ वा पत्ततिलभंडगसगडियाइ वा एरंडकट्ठसगडियाइ वा इंगालसगडियाइ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव खंदए अणगारे सस

गइ । हाड चामडीये करी बांध्या एतले हाड चामडी रह्या । किडिकिडियाभूए । मांस रहित हाड तेमाटे बेठतां उठतां किटकिटि शब्द थाय । किसे । दुर्बल थया । धमणिसंतए । मांसने क्षयेकरी नाडिओ देखाय । जातेवा विशाल्या । एहवा खंदकसाधु थयाथका । जीवंजीवेणंगच्छइ जीवंजीवेणचिट्ठइ । जीव ने तेजोबले करी मार्गे चाले पणि शरीर बलेकरी नहीं जीवनेबलेकरी उभोरहे । भासंभासित्तागिलाति । तीनकाल निर्देशनो अतीतकाले भाषा बोल्या ग्लानथाय । भासंभासमाणेगिलाति । भाषाबोलताथका वर्तमानकाले ग्लानथाय । भासंभासिस्सामीतिगिलाति । भाषा आगामिकाले बोलसुं ता पणि ग्लानथाय । सेजहानामए । ते यथा दृष्टांते नाम एसे संभावनाये ए इतिवाक्यालंकारे । कट्ठसगडियाइवा पत्तसगडियाइवा । काष्टभरी गाडली पलाशादिपत्रभरी गाडली । पत्ततिलभंडगसगडियाइवा । पान सहित तिलशाखा भांडा मृण्मय भाजननी भरी गाडली । एरंडकट्ठसगडियाइवा । एरंडकाष्टेभरी गाडली । इंगालसगडियाइवा । अंगारेभरी गाडली । उण्हेदिण्णा सुक्कासमाणी । एवेकरी विशेषण तापे दिधा सौखानि थय

सगळियत्ति ॥ एरवळकाष्ठमयी एरवळकाष्ठभूतावा मकटिका एरवळकाष्ठपइयंच तेषा मसारत्वेत्त तच्चकटिकायाः शुष्कायाः सत्या मतिशयेन गम नाद्दौ सशब्दत्वं स्यादिति मङ्गारसकटिका मङ्गारभृता मंत्री ॥ उच्चेदिव्वासुहासमाणीति ॥ विध्मपयक्कुयं काष्ठादीना माद्रौकामेव सम्भवतीति य यासम्भव मायोज्यमिति हुतासनइव भस्मराशिप्रतिच्छन्नः ॥ तवेणतएणति ॥ तपोलक्षणेन तजसा भयमभिप्रायो यथा भस्मच्छन्नोऽग्नि र्बहिर्वृत्त्या तेजोरहितो ऽन्तर्वृत्त्यातु ज्वलति एवं स्कन्दको प्यपचितमांसशोणितत्वा द्वहिर्निस्तेजा भन्तस्तु शुभध्यानतपसा ज्वलतीति उक्तमेवार्थमाह ॥ स वतेएत्यादि ॥ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्ति ॥ पूर्वरात्रश्च रात्र पूर्वोभागो ऽपररात्रश्च मपकृष्टा रात्रिः पश्चिम तद्भागइत्यर्थः स्तल्लक्षणो यः कालस मयः कालात्मक समयः स तथा तत्र मथवा पूर्वरात्रापररात्रकालसमय इत्यत्र रेफलोपात् पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसित्तिस्यात्, धम्मजागरिका

इगच्छइ , ससद्दं चिठइ , उवचिते तवेण अवचिए मंससोणिएणं हुयासणेविवभासरासिपडिच्छन्ने तवेण तेएण तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिठइ , तणकालेण तेणसमएण रायगिहेनयरे समोसरण जाव परिसा पडिगया, तएण तस्स खंदयस्स अणगारस्स अन्नयाकयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरि

ये ते गौप्रास् भरोकुतो गाडलो पढे तावकोढीयो सूकोवको । ससद्दमच्छइ । शब्दसहित पतले बोलतो चाले । ससद्दचिठइ । शब्दसहित उभोरहै । एवा मेवसर्व्वएमचयारे ससद्दमच्छइ समईचिठइ । तेमाटवाने इटांते इमज खंदक पिण निवे चवमार साधु मांसरहितपणो थाकना शब्दसहित चाले पतले थामतां थाक मांहोमाहि थाकेहै शब्दभारहैहै । उवचिततवेण । उपचितपुष्टपणाकै तेजकरीने तपेकरीने । अवचितेमंससोणिएण तवेण । ग्रेपणाकै भपगाकोनथयाकै तेजकरीने मांसमांसोकरीने तपेकरीने । हुयासणेविवभासरासिपडिच्छन्ने तवेण तेएण । पश्चिम जिम भस्मना समूहको ढांको तप समन तेजेकरी ए भावार्थ जिम रमाये ढांको पश्चिमाहिर तेजरहितपणे मधळत दीपे इम खंदक पिण एगरीरनेविणे मांसलोहीयरहितपणाकै तेमाटे य तोर मांहिर तेजरहितकै पश्चिमाहि शुभध्यान तपेकरी दीपेकै वलीकसा तेहीज घर्षं कहैकै—तवतेयसिरीएअतीवउवसोभेमाणेचिठइ । तपतेजे शोभ

जागत कुर्वत इत्यर्थः ॥ तंअत्थितामेति ॥ तदेवमपि अस्ति ताव त्मम उत्थानादि न सर्वथा क्षीणमितिभावः ॥ तजावताामेअत्थिति ॥ त तस्मात्
यावत् तावति प्राणामात्रे मे ममास्ति ॥ जावति ॥ यावत् ॥ सुहत्थिति ॥ सुभार्थी प्रभ्यामृगति सुहस्तीवा; पुरुषवरगन्धहस्ती एतस्य भगवस्स

यं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए जाव समुप्पज्जेत्था । एवखलु अहं इमेण एयारूवेण उराले
णं जाव किसे धमणिसतए जाव जीव जीवेण गच्छामि, जीव जीवेण चिठामि, जाव गिलामि, जाव ए
वामेव अहंपि ससद्दगच्छामि , ससद्दंचिठामि , त अत्थि तामे उठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्का
मे त जाव तामे अत्थिउठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे जाव यमेधम्मायरिए धम्मोवदेसए सम

तावता रवै । तेवत्तायेव तवसमर्थ । तेजावमेविवे तेसमवमेविवे । समव ममवमहावीरे । श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी । अपेवरायगिहेनयरेस
मोसरिए । जिहां राजगृहनामा नगरछे तेहमेंविवे समासरा आव्या । जावपरिसा पडिमया । यावत् पर्षदा वांदवा आवीहती तेपाछीगद । तपथंतस्स ।
तिवारे तेहने । खंदगस्सअणगारस्स । खंदकनामा साधुने । अणगारस्स । एकदा प्रस्तावे विवारेवे । पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि । मध्यरात्रिकालस
मये प्रस्तावमेविवे एतले भावोराविमेविमे । धम्मजागरिय जागरमाणस्स । धमजागरिका धमचिंता जागता थकाने एतले धमचिता करताथकाने । इमे
यारूवे । ए एहवो एतादृशरूप । अज्झत्थिए । आत्मविषय अध्यवसाय । चिंतिए । चिंतारूप प्रार्थनारूप । जावसमुप्पज्जित्था । यावत् ऊपनो । एवखलुअहं ।
इम निश्चे । इमेणंएयारूवेण । एवे इसेरूपेकरी । उरालेण जावकिसे । प्रायमार्जित तपेकरी यावत् दुर्बलथयो । धमणिसंतएजाए । मांसरहितेकरी धमा
नाडियविरहितनाडो मोकलो । जीवजीवेणगच्छामि । जीव जीवने बले हुं चालुं छं । जीवजीवेणचिठामि । जीवजीवने बले हुं ऊभोरहुंछुं । जावगिला
मि । यावत् ग्लानथयो । जावएवामेव अहंपिससद्दंगच्छामि । यावत् जाइ वत गवटो ज्वकरे इमहुंपण शब्दसहितमार्गे चालुंछुं । ससद्दंचिठामि ।
शब्दरहित ऊभोरहुंछुं । तंअत्थि । तापणिछे अजेस । तामेउठाणे । तावत् मुझने उत्थान । कम्मेबलेवीरिए पुरिसकारपरक्कमेतंजावतामे । जाम यथ भोस

सदया अठसमठे हताअत्थि, अहासुहदेवाणुप्पिया मापडिबंध, तएणसे खदए अणगार समणेणजगवया महावीरेण अब्भणुन्नाए समाणे हठतुठजावहयाहियए उठाए उठेइ उठेइत्ता, समण जगव महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, जाव नमसित्ता सयमेव पचमहव्वयाइ आरुहेइ आरुहेइत्ता समणायसमणीओय खामेइ खामेइत्ता तहारूवेहि थेरेहि कडाइहि सद्धिं विपुलं पव्वय सणियं सणिय दुरूहेइ दुरूहेइत्ता मेहघणसन्निगास देवसन्निवाय पुढविसिलावट्टयं पडिलेहेइ पडिलेहेइत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ पडिले

भावाय जावजमते। यामा निमभातसमव प्रमठवसे यावत् आव्वरयमाम अम्प। तेविवसमर्थतिए। जिवा मांवरा समोपवे। तेवेवइच्छमागए। तिवा उताव मो पाम्वा। मणूवसदमा पइसमडे। तेनिये हेसदव। एपर्व समयवे युवके। हताम्पलि। वा सामोके, तिवारे भगवतकहे—यहासुखदेवाणुप्पिया। जिम सुख तिम हेदेवानुप्रिय पवि। मापडिवंध। विलंब मकरवा। तपवसे खदए अणगारे। तिवारे ते खदक साधु। समणेणभगवयामहावीरेण। श्रम ण भगवत श्रीमहावीरस्वामी। अब्भणुन्नाए समाणे। आज्ञादोधावका। हठतुठजावहियए। हृष्टवा संतोषपाम्वा यावत् हृदयमेहवो। उठाए उठेइ २ ता। उठे उठोने। समणंभगवं महावीरं तिक्खुत्ता आयाहिणपयाहिणंकरेइ। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीप्रते तीनवार श्रीमणापासाथो प्रदक्षिणा दे। जावनमसित्ता। यावत् नमस्कारकरोने। सयमेवपंचमहव्वयाई। पातेज पंचमहाव्रतप्रते। आरुहेइ २ ता। आपे आपीने। समणाय समणीओय। साधुमोनसाध्वीप्रते खामेवो परमवाखामसुख प्रते। खामेइ २ ता। खमावोने। तहारूवेहियेरेहि। तथा सर्वोत्कृष्ट स्थविरसाधू। कडाईहिसद्धिं। वेषा प्रयकारी ते सघाते। विपुलंपव्वयसणियं २ दुरूहेइ २ ता। विपुल पर्वत तेऊपरे हलवे २ चढे चढोने। मेघघणसन्निगास। सघनमेघ सरीखो स्याम। देव सन्निवाय। देवसमागम रमणीक यानको। पुढविसिलावट्टयपडिलेहेइ २ ता। पृथिवी शिला स्थान पडिलेहे पडिलेहोने। उच्चारपासवणभूमिपडिले

हेडसा , दप्पसथारय सयरढ सयरडसा , पुरत्याजिमुहे सपलियकानिसन्ने करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसा वत्त मत्थए अंजलिस्हु एवरयासी , नमोत्थुण अरहताण जगवताण जाव सपत्ताणं , नमोत्थुण समणस्स जगवउ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामिण जगवत तत्थगत इहगह पासउमेसेजयव तत्थगए इह गय तिकिम्हु वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता एववयासी , पुव्विपि मएसमणस्स जगवउ महावीरस्स अं तिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए , इयाणपियण

वद २ भा दप्पसथारसथर २ स्ता । वहोमोति अपुनोति भूमिपर्त्तं पडिमेहे पडिमरोमे दाभसंथारकसंथारा संथार पाथरोने । पुरस्थाभिमुहेसपलि यकनिसने । पूर्वदिशि सामुहा पर्यंकासने बेसे यापदपासयो पामोमे बेसे । करतलपरिग्गहियं । करतल बेहाथ जोडोने । दसनखंसिरसावत्तमत्थएअंजलि कट्टु । दसनख योजनोथा मस्तकनेविषे यावत्त परिभ्रमणकरो एतले बेहाथजोडो । एववयासी नमोत्थुणं । एम कहता हवा नमस्कारहुयो । अरहताण । तोन भुवननेविषे पूजवायोग्यजेश्राज । जावसपत्ताण नमोत्थुण । यावत् सिद्धगतिस्थान सपामनेवाले नमस्कारहुयो । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्र मण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने । जावसंपाविउकामस्स । यावत् सिद्धगतिनामधेयस्थान पामवाना कामोने । वंदामिणं भगवत । नमस्कारकरुं भग वन श्रीमहावीरस्वामी प्रते । तत्थगयं भगवत । तिहारह्याछे । इहगएपासमयामेभगवततत्थगएइहगयंतिकट्टु । हु इहारह्योथको विपुलगिरिपर्वतनेविषे देहा रह्याछे तेभगवत श्रीमहावीरस्वामी तिहाँ रह्याथका इहाँ विपुलगिरिरह्या मा चक्षुसामर्थ्यमते देखकरोने । वंदइ णमंसइ २ त्ता । वांदि नम स्कार करे वांदीने नमस्कारकरोने । एववयासी । एम कहता हवा । पुव्विपिमए । पहिला पणिमें । समणस्सभगवओ महावीरस्स । श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामीने । अंतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चक्खाते । समीपे सर्व प्राणातिपात त्रिविधत्रिविधकरो पचख्या । जावज्जीवाए । जो जीवतामणे एमरोर

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सब्बं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्च
क्खामि जावज्जीवाए , सव्वं असणपाणखाइमसाइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए , जंपिय
इमंसरीरं इठं कंतं पियं जाव फुसंतुत्तिकट्टु एयंपिणं चरिमेहिं ऊसास नीसासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु , सले
हणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ, तएणंसेखंदए अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता बहु

मे जीवतां पयत । जावमिच्छादंसणसल्लंपच्चक्खाए जावज्जीवाए । यावत् मिथ्यादर्शनशल्यप्रमुख अठार पापस्थानक पचख्यां जाजीवलगे । इहां
निश्चय । इयंपिचि । समणस्स भगवओमहावीरस्सअंतिए । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने समीपे । सव्व पाणाइवायं पच्चक्खामि । सर्व प्राणातिपा
त त्रिविध त्रिविधकरी पचखुं । जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लंपच्चक्खामि । जा जीवं तांलगे यावत् मिथ्यादर्शन शल्यप्रमुख अठारपापस्थानक प
चखुं । जावज्जीवाए । जा जीवं तांलगे । सव्वंअसणंपाणंखाइमंसाइमं । सर्व अशन पान खादिम स्वादिम । चउव्विहंपिआहारंपच्चक्खामि । च्यारे विधि
नो आहार पचखुं । जावज्जीवाए अपिइमंसरीरं । जा जीवं तांलगे जेपणि एशरीर । इठंकंतपियंजावफुसंतुत्तिकट्टु । इष्ट कांत प्रिय यावत् रोग आतंक उ
पसर्ग इत्यादिके मफरसो इमजाणी । एयंपिणंचरिमेहिं । एहपणि शरीर ने छेल्ला श्वासोच्छ्वासे वोसरावुं । ऊसासनीसासेहिंवोसिरामित्तिकट्टु । सासोस्सासेकरी
वोसराव् इति इमकरीने । संलेहणाझूसणाझूसिए । शरीर कृशकरीने तेसलेखना तप तेहनी सेवासहित थई भत्तपाणपडियाइक्खिए । भात पाणी
तेहने पचखीने एहने वोसिरावतो । पाओवगएकालंअणवकंखमाणे विहरइ । पादपोपगम अनशनेकरी कालमरणप्रते अणवांछतोथको विचरे । तएणं
सेखंदए अणगारे । तिवारे तेखंदकसाधु । समणस्सभगवओमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरदेवना । तहारूवाणं थेराणंअंतिए । तथाविध तेहवा
स्थविर स्थविरने समीपे । समाइयमाइयाइ । सामायिक आदिदेई । एक्कारसअंगाइ अहिज्जित्ता । इग्यारइअंग भणी सूत्र सूत्रार्थ थकी भणीने । बहुपडि

॥ परिग्रमर्थ यस्या सौ मसम्यनोपा भ्विरमायत सर्व ॥ भट्ठिभत्ताइंति ॥ प्रतिदिनं भोजनद्वयस्य त्यागा चिंशता दिनैः षष्टिभक्तानि त्यक्तानि भवन्ति ॥ यनमनायुति ॥ मारुतस्वा दनशनेम ॥ छेदसत्ति ॥ विन्त्वा परित्यज्य ॥ मालोइयपडिक्कंतत्ति ॥ मालोचित गुरुयां निवेदित य दतिचा रजात त स्वतिक्राम्य मकरणविपर्यीरुत यना वा वामोचितप्रतिक्रान्तो उपवाः ॥ मालोइयपडिक्कंतेति ॥ मालोचित मासा वालोचनादामा रम्र तिक्रामय मिथ्यादुकतदामा दामोचितप्रतिक्रामः ॥ परिनिव्वायवत्तियति ॥ परिनिर्वाण मरक तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव

पडिपुणाइ दुवालसवासाइ सामणपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण ज्ञूसित्ता सट्ठिभत्ताइ अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए , तएणतेथेराभगवतो खदयअण गार कालगय जाणित्ता परिनिव्वाणत्तिय काउसग्ग करेइ , पत्तचीवराणिगिण्हति , विपुलाउ पव्वयाउ सणि यमणिय पच्चोरुहति पच्चोरुहइत्ता जेणेवसमणेभगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता समणभगव

पचार स्वामकगमार। यर्थ प्रतिपूर्ण पूरा वारेवरससो। मामण्यपरियामपाउणता। चारित्र पर्याय पतले दीचा पालीने। मासियाएसलेहणाए। एक मासनी सलेखनाये करीने। अत्तायज्झूसित्ता। पाताने सेवाने भाएरीने। सट्ठिभत्ताए अणसणाए छेदित्ता। दिनमतें भोजने दोयतत्र साठयको चीसे दिन साठभात पनसने तजीने छेदीने गुरुआदिके लेयतमा पलोचारकहा। आलोइयपडिक्कंतसमाहिपत्ते। ते गुरुने समक्षालीने पालोवने तेहनो मिथ्या दुष्कृतदेइने समाधिपाम्या मानसीपोड़ा रहितथया। आणुपव्विण्कालगए। अनुक्रमे कालपहुंतो एतावता मरणपाम्यो। तएणतेथेराभगवतो। तिवारे ते स्थविर भगवंत। खंदयअणगारकालगयजाणित्ता। खंदकमाणुपत्तें मरणपाम्या जाणीने। परिनिव्वाणवत्तियकाउसग्गकरेति। मरणतेहने तिणी जेग नामा परठवाते पनि परिनिवाणथीज तेहेनूवे जेहनेते काउसग्गकरे एतले मतकशरीर वासराबीने। पत्तचीवराणिगिण्हति। पात्रपातरा वस्त्र उपग रण पर्छ। विपुलाउपव्वयाउ सणिसं २ पच्चोरुहति। विपुलनामा पर्वतथकी धमथे २ उतरें उतरीने। जेणेवसमणेभगवमहावीरे। जिहां श्रमण भग

महावीर वदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता एववयासी , एवखलु देवाणुप्पियाण श्रंतेवासी खदएणामश्रण गारे पगइभद्दए पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने श्रल्लीणे भद्दए विणीए सेणदे वाणुप्पिएहिं श्रब्भणुन्नाएसमाणे सयमेवपंचमहव्वयाणि श्रारोहेत्ता समणाय समणीउय खामेत्ता श्रम्होहि सद्धि विपुल पव्वय तचेव निरवसेस जाव श्राणुपुव्वीए कालगए , इमेयसे श्रायारभंडए भंतेत्ति, भयवगोयमे स मणंभगव महावीर वदइ णमसइ वंदित्ता णमंसित्ता एववयासी, एवखलु देवाणुप्पियाण श्रंतेवासी खद

वन योमवाभारखामोळे । तेवेवठवायच्छति २ त्ता । जिहां भावे तिहां श्रावीन । समणभगवमहावीर वदइ नमसइ २ त्ता । श्रमण भगवंत श्रीमहावीर सामीप्रतें वांदे नमस्कारकरे वंदनाकरीने नमस्कारकरीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवंखलुदेवाणुप्पियाण श्रंतेवासी । इम निश्चे हेदेवानुप्रिय ! हेमभवन् । तुम्हाराशिष । खदएणामश्रणगारेपगइभद्दे । खदकनामे साधु प्रकृतेकरी भद्रक रुद्रचितारहित । पगइउवसते । प्रकृतें उपशांत कषायरहित । पगइपयणुकोहमाणमायालोभे । स्वभाव पातलापाड्या क्रोध मान माया लोभजिणें । मिउमद्दवसपन्ने श्रल्लीणे । मृदु मार्दव मनेंकरी सपूर्ण, मन रखे धरताथा नथी । भद्रविणीए । एतला माटें भद्रक विनयवत तेह । सेणदेवाणुप्पिएहिं । तेण तम्हारे देवानुप्रिय । श्रब्भणुन्नाएसमाणे । श्राज्ञादी श्राथकां । सयमेवपचमहव्वयाइ श्रारोवेत्ता । पोतेज सव प्राणातिपातादि पंचमहाव्रत प्रतें श्रारोपीने । समणाय । साधुसाधु गौतमादि प्रतें । समणी श्रावसायामेता । साधवी चंदनबालामुखने खमावीने । श्रम्होहिसद्धिविपुलपव्वयं । श्रम्ह संघाते विपुलगिरिनामा पर्वते इत्यादि सर्वं । तचेवनिरवसेस । तिमज निश्चि सर्वे कह्वो । श्राणुपुव्वीएकालगए । श्रानुक्रमे कालमरण पहुंता । इमेयसेश्रायारभंडएभंतेत्ति । एह तेहना श्राचार मांडउपकरण हेस्वामि हेभगवन् । भगवगोयमे । भगवंत गौतम समणभगवमहावीर श्रमण भगवंत श्रीमहावीरसामीप्रतें । वदइ णमसइ २ त्ता । वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहताहवा । एवखलुदेवाणुप्पियाण श्रंतेवासी । इमनिश्चे हेदेवानुप्रिय । तुम्हारो शिष । खदएणामश्रण

तदत्र प्रत्ययो हनु पम्य म परिनिर्वाणप्रत्ययो त सं ॥ कालंगएत्ति ॥ कस्या गतौ ॥ कहिंउववन्नेत्ति ॥ ॥ देवलोकादायिति ॥ एगइयाणत्ति ॥ एकेषा

दणाम अणगारे कालमासे कालकिञ्चा कहिंगए कहिंउववन्ने ? गोयमादि, समणेभगव महावीरे भगवगो यम एवयवासी, एवखलु गोयमा ! मम अंतेवासी खंदएणाम अणगारे पगइभद्दए जाव सेण मए अब्भणु णाए ममाणे सयमेव पंचमहव्वयाइं आरुहेत्ता तंचेव सव्व अवसेसय नेयव्व जाव आलोइयपडिक्कंते समा हिपत्ते कालमासे कालंकिञ्चा अच्चुएकप्पे देवत्ताए उववन्ने, तत्थण अत्थेगइयाण देवाण बावीससागरोवमा इं ठिई पण्णत्ता, तत्थण खंदयस्सवि देवस्स बावीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, सेणभंते ! खंदए देवत्ताओ

वार। खंदकनाम साधु। कालमासकालंकिया। कालने अवसरे कालकरीने मरणपामीने। कहिंगएकहिंउववन्ने। किहांगतिमेविषे किहांदेवलोका दिकनेविषे उपनो इतिप्रश्न। गोयमादि। गोतमादि इमे मंत्रवल। समणेभगवमहावीरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी। भगवगोयम। भगवंत गोत मनते। एवंवयासी। इम कहताहवा। एवंखलुमायमाममअंतेवासी। इम निश्चे हेगोतम ! माहरो शिष्य। खंदएनामंअणगारे। खंदक इसेनामे साधु। पगइभद्दए आवमेवमव। यावत् तेहने में आज्ञादीधाथका। सयमेवपंचमहव्वयाइं आरोपेत्ता। आपणपेज पांचमहाव्रतमनें आपीने आरोपीने। तंचेव सव्व अवसेसनेयव्वं। तिमज निश्चे सर्व विशेषरहित कहवा। जावआलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते। यावत् आलोई पडिक्कमीने निराबाधपणे समाधि पामी। कालमासेकालंकिच्चा। कालने अवसरे कालगते करीने। अच्चुएकप्पेदेवत्ताएउववन्ने। बारमा अच्युतनामा देवलोकनेविषे देवपणें ऊपनो। तत्थणं अत्थेगइयाणंदेवाणं। ते बारमा देवलोकनेविषे केतलाएक देवता पणि ऊपनाछे। बावीससागरोवमाइंठिईपण्णत्ता। बावीस सागरोपमनी थिति परूपीछे। तत्थणंखंदयस्सविदेवस्स। तिहां खंदक पणि देवनी। बावीससागरोवमाइंठिईपण्णत्ता। बावीस सागरोपमनी थितिकही भाखवाना विमानकथा। सेणंभंतेखंदएदेवत्ताओदेवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिईक्खएणं। ते भगवान्‌नें प्रश्न करे छे हेभगवन्। खंदक देवताथी देवलोकथी आउखय

मतु सर्वेषां ॥ आउक्खएणंति ॥ आयुष्कर्मदलिकनिर्जरणेन ॥ भवक्खएणंति ॥ देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेन ॥ ठिइक्खएणंति ॥ आयुष्कर्मणः स्थिते र्वेदनेन ॥ अणंतरंति ॥ देवभवसम्बन्धिनं ॥ चयंति ॥ शरीरं चइत्तत्ति ॥ त्यक्त्वा अथवा चयंति ॥ च्यवं च्यवनं ॥ चइत्ताति ॥ च्युत्वा कृत्वा अनंतरं क्व गमिष्यती त्येव मनन्तरमेवास्य सम्बन्धः कार्यं ॥ इति द्वितीयशतप्रथम उद्देशः समाप्तः ॥ १ ॥ अथ द्वितीय आरभ्यते, अस्य चाय मभिसम्बन्धः ॥ केवलामरकेवलमरणादेर्जीवेनाइति ॥ मारणं मरणं च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतस्या न्यथाच भवतीति समुद्घातस्वरूप मिहो च्यत इत्येवं सम्बन्धस्या स्येद मूत्रं ॥ कइणंभंतेसमुग्घायाइत्यादि ॥ तत्र हनहिंसागत्योरितिवचनात् हननानि घाताः, स मेकीभावे उ त्प्राबल्ये तत श्च एकीभावेन प्राबल्येन च घाताः समुद्घाताः अथ केन सह एकीभावः ? उच्यते यदा आत्मा वेदनादिसमुद्घातगतो भवति तदा वेदनाद्यनुभवज्ञानप

देवलोयाउ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयंचइत्ता कहिंगमिहिति कहिंउववज्जिहिति गोयमा ! महाविदेहे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करिहिति खंदओसम्मत्तो ॥ बिइयसयस्स पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १ ॥ कइणंभंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा !

आयुष्य निर्जरवेकरी देवभवसबंधी कर्मप्रकृतिने निर्जरवेकरी आउखावसमोस्थितिने वेदवेकरी। अणंतरचयचइत्ता। अंतर रहित अनुक्रमे शरीर तेप्रते तजीने। कहिंगमिहिति। किहांजासे। कहिंउववज्जिहिति। किहां उपजसे इसे प्रश्नकीधे। गोयमा महाविदेहेवासेसिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति। हेगौतम! महाविदेहक्षेत्रनेविषे सोभाग्य तत्तना जाणवाभणी मूकास्ये मोक्षनो भाव हुस्ये। सव्वदुक्खाणमंतंकरिहिति। शरीरमानस दुःखनो अंतकरसे ए पंचविधेयकनो भव पूर्वेलिख्योछे तेहनो विस्तार जाणवा। खंदओसम्मत्तो। एखंदकना अधिकार संपूर्णथयो। बितियसयस्सपढमो उद्देसोसम्मत्तो। एबीजाशतकना पहिला उद्देसा पूरोथया ॥ १ ॥ पाछिले विशेष मरण कहता जीवने इसो मरणना अधिकार कह्या, ते मरण मारणांतिक समुद्घात करीथाय तेमाटे मरणसमुद्घात कहीयेछे। कइणंभंतेसमुग्घाया पण्णत्ता। केतला हेभगवन्! स

रितणव नयतीति यज्ञनायनमवमानेन सर्वमीजावः अथ प्रावस्येन घाताः कथ? मुच्यत यस्मा छेदनादिसमुद्घातपरिणतो यद्गुरु वेदनीयादिक ग्मप्रदगान् कालांतरामुभवयाग्या गुदीरणाकरणेना रुप्य उदये प्रक्षिप्या मुनूय मिकरयति आत्मप्रदेशै सह श्लिष्टान् शातयतीत्यथ अतः प्राव ल्यन घाताइति ॥ सत्तसमुग्घायत्ति ॥ यदनासमुद्घातादय एतथ प्रज्ञापनाया मिव दृष्टव्याः अतएवाह ॥ छउमत्थियइत्यादि ॥ छाउमत्थियसमुग्घाय वज्जंति क्वजते। छाउमत्थियासमुग्घायापक्षाइत्यादि सूत्रवर्जित ॥ समुग्घायपयंति ॥ प्रज्ञापनायाः पट्त्रिंशत्तमपद समुद्घातार्थ मिदं नेतव्य तचेय-कइण भंत! समुग्घाया पमत्ता? गोयमा! सत्तसमुग्घाया पन्नत्ता तंजहा-वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाय इत्यादि इहसंग्रहगाथा-वेय ण १ कसाय २ मरणे ३ वउव्विय ४ तयग ५ आहारे ६। केवलियचेवजसे जीवमणुस्साणसत्तेव ७॥ १॥ जीवपदे मनुष्यपदेच सप्तयाच्याः नारका

सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तंजहा—वेयणासमुग्घाए एवं समुग्घायपयं छउमत्थियसमुग्घायवज्जं नाणियव्वं जाव वेमाणियाणं, कसायसमुग्घाया अप्पाबहुयं, अणगारस्सणंभंते! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाय जाव सा

महात कहाये पतिपत्रक्षेयात ते समवात कहीये हन् हिमा मत्नारिति वचनात् उत्तर। गोयमा सत्तसमग्घाया पन्नत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाए एवंस मुग्घायपय छउमत्थियसमुग्घायवज्ज भाणियव्वंजावबेमाणियाण। हेगोतम! सात समुद्घात कह्या तेकहेछे—वेदनासमुद्घात इम पन्नवणामांहे देखवा एतला माटेज कहेछे—छउमत्थिय समुग्घाय वज्जति। कइणंभंते समुग्घाया पन्नत्ता इत्यादि सूत्रवर्जित, समुग्घायपयंति पन्नवणानो छत्तीसमापद स मुद्घात इहां जाणवा कहवा ते मेणपो देखाडेछे—कइण भंते समुग्घाया पण्णत्ता सत्त समुग्घाया पन्नत्ता तंजहा वेयणसमुग्घाए इत्यादि। वेयण १ कसा य २ मरणे ३ वेउव्विय ४ तेयग ५ आहारे ६। केवलियं ७ चेवभवे जीवमणुस्साणसत्तेव। १। तिहां वेदना समुद्घाते करी वेदनीय कर्म घातनकरे १ कषाय समुद्घातेकरी कषाय पदगला घातनकरे २ मारणांतिक समद्घाते करी आयु पमपुद्गला घातनकरे ३ वैक्रियसमुद्घातेकरी जीवप्रदेशमाते शरीरथको बाहिरकाढी शरीरविष्कंभ बाहल्यमात्र २ पछे आयामथी संख्येययोजन दंडकरे करी यथा सूक्ष्म वैक्रियशरीरना पुद्गल पूर्वेनथा तेमने घातनकरे तथा

दिपुतु यथायोगमित्यथ तत्र वेदनासमुद्घातेन समुद्धत आत्मा वेदनीयकर्मपुद्गलानां घातं करोति कषायसमुद्घातेन कषायपुद्गलानां मारणान्तिकसमुद्घातेन आयुःकर्मपुद्गलानां वैकुर्विकसमुद्घातेन समुद्धतो जीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भबाहल्यमात्रं आयामतश्च सङ्ख्येययोजनानि दण्डं निसृजति निसृज्य च यथास्थूलान् वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् प्राग्बद्धान् शातयति यथा सूक्ष्मा श्चादत्ते यथोक्त–वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ अहासुहुमे पोग्गले आययति, एवं तैजसाहारकसमुद्घातावपि व्याख्येयौ केवलिसमुद्घातेन तु समुद्धतः केवली वेदनीयादिकर्मपुद्गलान् शातयतीति एतेषु सर्वेष्वपि समुद्घातेषु शरीराज्जीवप्रदेशनिर्गमोऽस्ति सर्वेऽप्येते अंतर्मुहूर्तमाना नवरं केवलिको ऽष्टसामयिकः एते चैकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां आदित त्रयो वायुकायिकानां चत्वारो देवानां पञ्चेन्द्रियतिरश्चां च पञ्च मनुष्याणां तु सप्त ॥ इति द्वितीयशते द्वितीय उद्देशः समाप्तः ॥ २ ॥ अथ तृतीय आरभ्यते अस्य चायं अभिसम्बन्धः द्वितीयोद्देशके समुद्घाताः प्ररूपिताः तत्र च मारणान्तिकसमुद्घात तेनैव समवहताः केचित् पृथिवीषू त्पद्यंत इती ह पृथिव्यः प्रतिपाद्यन्तइत्येव

सयमणागयरु चिठति, समुग्घायपय णेयव्वं ॥ विईयसए वीए उद्देसो सम्मत्तो ॥ २ ॥ कइ

सूक्ष्मपदम यतेपदे ४ इम तैजस आहारक समुद्घात पवि यणावया। केवलिसमुद्घातेंकरो केवलो वेदनीयादि कर्मपुद्गलने शातनकरे ए सववसमुद्घात नेविषे शरीरथको जीवप्रदेशनो निर्गम छे, सवनोमान अंतर्मुहूर्तनाछे एतलो विशेष केवली समुद्घात आठसमय प्रमाणछे ए समुद्घात एकेंद्रिय विकलेंद्रियने पहिलात्रीनहुये, वायुकाय मारवोने पहिला चारहुवे देवता अने पचेंद्रीतिर्यंचने पचहुवे, मनुष्य सघोने अने जीवपदे सात समुद्घात हुवे इम यावत् वैमानिकतांइ कहना कषायसमुद्घात अल्पबहुत्वभे कहवो। अणगारस्सणंभंतेभावियप्पणोकेवलिसमुग्घाय। अणगारसाधु हेभगवन्! भावितात्माने केवलि समुद्घात। जावसासयमणागयद्धंचिट्ठति। यावत् शाश्वतो अनागतकाल रहै। समुग्घायपदंणेयव्व। समुद्घात पद पन्नवणाना छत्तीसमा सबकहवा। बितियसयस्सबितियो। ए बीजा शतकना बीजा उद्देशा अर्थथी निख्या ॥ २ ॥ पाछिले उद्देशे समुद्घात कह्या तेहने

मम्यन्यम्या स्पेद मादिसूत्र ॥ कररां प्रते। पुढवीठिरत्यादि ॥ इरव जीवाभिगमनारकद्वितीयोद्देशके यर्थसंग्रहगाथा—पुढवीउंगाहित्ता निरयासठाण मवमाहल्लं । विस्कभपरिक्खवो वसोमगंधोयफासोय ॥ १ ॥ सूत्रपुस्तकेपुच पूर्वोक्तमय लिखित सेपात्वा विवक्षितार्थाना यावच्छब्दम सूचितत्वादि ति तत्र ॥ पुढविति ॥ पृथिव्यो वाच्या सायैवं—कइण भंते। पुढवीउ पन्नत्ताउ ? गोयमा ! सत्त तंजहा—रयणप्पभेत्यादि । उंगाहित्तानिरयत्ति ॥ पृथिवी मवगाह्य कियद्दूरे नरका इतिवाच्य तत्रा स्या रत्नप्रभाया अशीतिसहस्रोत्तरयोजनसहस्राहल्याया मुपर्यैक योजनसहस्रमवगाह्याधोप्येक य ज्जयित्वा त्रिंशन्नरकसताजि भवन्ति एव शर्करामभादिपु यथायोग वाच्यं ॥ संठाणमेवत्ति ॥ नरकसंस्थान वाच्य तत्र ये आवलिकाप्रविष्टा स्ते वृत्ता त्र्यस्रा चतुरस्राच इतरेतु नानासंस्थानाः ॥ बाहल्लति ॥ नरकाणा बाहल्य वाच्य तच त्रीणियोजनसहस्राणि कथं अध एक मध्ये सुषिर

णत्ते । पुढवीउ पन्नत्ताउ ? गोयमा ! जीवाभिगमो नेरइयाण जो बितिउ उद्देसो सो णेयव्वो , पुढवीउंगा हित्ता निरयासठाणमेवबाहल्ल । विस्कंभपरिस्केवो वण्णोगंधोयफासोय ॥ १ ॥ किं सव्वपाणा उववन्नपुव्वा ?

थिये केटलाएक जोव मारणांतिक समुद्घाते मरीने पृथिवीमेविषे उपजे तेहभणी पृथिवीना अधिकार कहेछे—कइणभंते पुढवीउ पन्नत्ताउ जीवाभिग मे नेरइयाणं जाबितिउउद्देसोसोणेयव्वो । केतलो डेभगवन् ! पृथिवी कही इतिप्रश्न जीवाभिगमने नारक बीजाउद्देशानेविषे सर्व संग्रहगाथा कि णिहाँ एक पुस्तकनेविषे गाथाना पूर्वाद्धलेख लिखछे शेष सव यावत् शब्दे कहवो, तथ पृथिवी कहवी, तेहम केतली डेभगवन् ! पृथिवीकही गोतो म सात पृथिवीकही तेहेवी रत्नप्रभा इत्यादि। उग्गाहित्तानिरयासठाणमेवबाहल्लविस्कंभपरिस्खेवो इति। पृथिवी अवगाही केतलीदूर नरकावासाछे तिहां रत्नप्रभापृथिवीनेविषे एकलाख अयोएंसार योजननी पिंडछे, तेमाहे उपरि एक सहस्र योजन अवगाही ने नीचे एकसहस्र योजन मूकीयें ते विचिमां त्रीसलाख नरकावासाछे इम शर्करप्रभादिक पृथिवीनेविषे यथायोग कहवा । संठाणमेवत्ति। नरकनो संठाण कहवा तिहां जेआवलिका प्रविष्टनरकावासाछे तेवृत्त त्र्यंस चउरसछे अने बीजा नानाप्रकार संठाणछे। बाहल्लति। नरकना जाडपणा कहवा त्रिणिसहस्रयोजनछे तेकिम नीचे एकसहस्रयोजननक्कर

मेव मुपरि मझोणक मिति ॥ विक्खंभपरिक्खेवोत्ति ॥ एती याम्यौ, तत्र सङ्ख्यातविस्तृतानां सङ्ख्यातयोजन आयामो विष्कम्भः परिक्षेपश्च इतरेषा
मसङ्ख्यातेति, तथा वर्णादयो वाच्या सेवा त्यमत मनिष्टा इत्यादि मञ्जुवक्तव्य भाव इय मुद्देशकान्तो मदुत ॥ किसव्वपाणात्यादि ॥ अस्यचैव प्र
योगः अस्यां रत्नप्रभायां त्रिंशति नरकशतसहस्रेषु कि सर्वे प्राणादय उत्पन्नपूर्वा अथोत्तरं ॥ असइति ॥ असकृ दनेकशः इदंच वेलाद्ययादायपिस्या इतो
त्पन्नप्राणुत्पन्नप्रतिपादनायाह ॥ अदुयत्ति ॥ अथवा ॥ अनंतखुत्तोति ॥ अनन्तकृत्वो ऽनन्तवाराम् ॥ इतिद्वितीयशतेतृतीय उद्देशः समाप्तः ॥ ३ ॥
तृतीयोद्देशके नारका उक्ता स्तेच पञ्चेन्द्रिया इती न्द्रियप्ररूपणाय चतुर्थोद्देशकः तस्य चादिसूत्र ॥ कइणमित्यादि ॥ पढमिल्लोइंदियउद्देसोत्ति ॥
प्रज्ञापनाया मिन्द्रियपदाभिधानस्य पञ्चदशपदस्य प्रथमउद्देशको ऽत्र मतव्यो ऽध्येतव्य तत्रच द्वारगाथा—संठाणबाहल्ल पोहत्तकइपएसओगाढे ।

इतागोयमा! असतिं अदुवा अणतखुत्तो पुढवीउद्देसो ॥ बिइयसए तइओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ ३ ॥
कइणभंते! इंदिया पण्णत्ता? गोयमा! पंच इंदिया पण्णत्ता, तंजहा—पढमिल्लो इंदियउद्देसो णेयव्वो, संठा

मध्ये एकमङ्ख्यायोजन सविस्तृत, अपर एकमसंख्यायोजन समानाथे, तथा विष्कम्भपरिक्षेपना विष्कम्भ अने परिधि कहवा, तिहां संख्यात योजनविस्तारके
तमम्यातयोजन आयामे अने विष्कम्भे अने परिधिके अने बीजा असख्यात योजनना छे ते आयामे १ विष्कम्भे २ अने परिधि असंख्यात योजनना जाणवा
तथा । सत्यागंधाय सामाय १ किसव्वपाणाउववइयपरथा इतायसद अदुवा अनंतखुत्ता पुढवीउद्देसा । वर्णादिक कहवा ते अस्वांत अनिष्ट इत्यादि यथो
वक्तव्य यावत् उपदेशमा चतसो इत्यादि एहवा इममनाग था रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीसलाख नरकावासामेविषे एक सगला प्राणी अपना पूर्व इति
प्रश्न उत्तर हां एकवार नहीं अनेकवार अथवा अनन्तीवार उपना एहविवीना उद्देसाजाणवा । बितियसयस्सतइओउद्देसो । एवोजा शतकनो त्रीजो
उद्देसा समाप्तोनिस्प्या ॥ ३ ॥ चौथे उद्देगे नारकीकह्या ते नारकी पंचेंद्रीछे इहां इन्द्रीना अधिकार कहेछे—कइणभंतेइंदिया पण
त्ता गोयमा पञ्चइंदिया पणत्ता तंजहा पढमिल्लाइंदियउद्देसोणेयव्वा । केतला वां नाम्यास्यकार, हेभगवन् । इन्द्रियकह्या इतिप्रश्न हेगौतम । पांचइन्द्री क

पञ्चानुपूर्व्यपि कथितमत्रसारमाहारे ॥ १ ॥ इदंच सूत्रपुस्तकेषु द्वारत्रयमेव लिखितं शेषास्तु तदर्थो वाचनाक्रमेण सूचिता तत्र संस्थानं श्रोत्रे

न्द्रियस्य वाच्यं तद्येद-श्रोत्रेन्द्रियं कदम्बपुष्पसंस्थितं चक्षुरिन्द्रियं मसूरकचन्द्रसंस्थितं मसूरक धान्यविशेष चन्द्रः शशी अथवा मसूरकचन्द्रो धा

न्यविशेषः घ्राणेन्द्रियं अतिमुक्तकचन्द्रसंस्थितं अतिमुक्तकचन्द्रकः पुष्पविशेषवत् रसनेन्द्रियं क्षुरप्रसंस्थितं स्पर्शनेन्द्रियं नानाकारं ॥ बाहल्लंति ॥

इन्द्रियाणां बाहल्यं वाच्यं तद्येद-सर्वाण्यङ्गुलासङ्ख्येयभागबाहल्यानि ॥ पोहत्तंति ॥ पृथुत्वं तद्येद-श्रोत्रचक्षुर्घ्राणानां अङ्गुलासङ्ख्येयभागो जिह्वेन्द्रिय

स्याङ्गुलपृथक्त्वं स्पर्शनेन्द्रियस्य च शरीरमानं ॥ कइपएसंति ॥ अनन्तप्रदेशनिष्पन्नानि पञ्चापि ॥ ओगाढेत्ति ॥ असङ्ख्येयप्रदेशावगाढानि ॥ अप्पा

बहुत्ति ॥ सर्वस्तोकं चक्षुरवगाढं ततः श्रोत्रघ्राणेन्द्रियक्रमेण सङ्ख्यातगुणे ततो रसनेन्द्रियमसङ्ख्येयगुणं ततः स्पर्शनं सङ्ख्येयगुणमित्यादि ॥ पुट्ठपविट्ठ

हवे तेहनो भावार्थ—प्रथम संस्थान, बीजुं जाडपणुं, त्रीजुं पोहोलपणुं, चोथुं प्रदेश, पांचमुं अवगाहना, छठुं अल्पबहुत्व, सातमुं स्पृष्ट, आठमुं प्रविष्ट, नवमुं विषय, ए नव द्वार छे। इन्द्रियपदमां पहिला उद्देशामां इहां कहेवा। संठाण बाहल्ल पोहत्त। तिहां द्वारमाथां संठाण बाहल्ल पोहत्त कइपएस मा

गाढे अप्पाबहुपुट्ठपविट्ठ विसयाण गाहारे ॥ १ ॥ इहां सूत्रमांहे त्रीजा द्वारलगें लख्या तेवीवा। बाकीना अर्थ उपरथी जाणवा। तिहां इन्द्रियनो प्रथम संस्थानद्वार कहे छे। श्रोत्रेन्द्रिय कदंबपुष्पने आकारे छे चक्षुरिन्द्रिय मसूरकचंद्रने आकारे मसूर ते धान्यविशेष तेहने आकारे

अथवा तिहां मसूर धान्यादिकना वली, ते इम कहेछे। कदंबपुष्पने संस्थाने अथवा मसूरकचंद्रने आकारे मसूर ते धान्यविशेष गाज्यमसूरिका

इतिभाषाया चन्द्र कहतां चन्द्रमा अथवा मसूरचन्द्रमा एक नाम तेधान्यविशेष तेहना सरखुं तथा घ्राणेन्द्रिय अतिमुक्तचन्द्र ते फूल विशेष तेहने

आकारे क्षुरप्रने आकारे स्पर्शेन्द्रिय अनेक संस्थाने जाणवी। इन्द्रियनोबाहल्य कहेवा, ते सर्व नो अंगुलनो असंख्यातमोभाग जाडपणे। पोहत्तंति

पृथुत्व कहेवा ते इम श्रोत्र चक्षु घ्राण ना अंगुलना असंख्यातमाभाग पृथुत्व जिह्वेन्द्रिय अंगुलपृथक्त्व, स्पर्शेन्द्रिय शरीरप्रमाणे। कइपएसंति। सर्वे अनंतप्रदेशी

निपजावे। ओगाढंति। असंख्येयप्रदेशावगाढ सर्व। अप्पबहुत्ति। सर्वथी चक्षुअवगाहनायी तिवारपछी श्रोत्र घ्राण रसन अनुक्रमे संख्यातगुणा स्पर्शन

द्रिय असंख्यातगुणो अवगाहनायी। पुट्ठपविट्ठत्ति। शब्दादिक चक्षुरहित सर्वो स्पर्श प्रवेश्या जाणवो। विसयंति। सर्वथी जघन्यथी अंगुलना असंख्यात

ति ॥ श्रोत्रादीनि चक्षुर्रहितानि स्पृष्टमर्थं प्रविष्टं च गृह्णन्ति ॥ विसयत्ति ॥ सर्वेषां अपन्यतो कुलस्या मङ्गुलयज्ञागो विषय उत्कपतस्तु श्रोत्रस्य द्वादश मोजनानि चक्षुषः मातिरेकं लक्षं शेषाणां नवयोजनानीति ॥ अणगारस्स ॥ अनगारस्य समुद्घातगतस्य ये निर्जरापुद्गला सा स्म छद्मस्थो मनुष्या नद्यतीति ॥ आहारेत्ति ॥ निर्जरापुद्गला नारकादयो न जानन्ति नपश्यन्ति, आहारयन्ति चे त्येवमादि वक्तव्यं अथ किमन्ताय मुद्देशक इत्या

स पाव इमोको अ्लोकमूर्त सबदं-भलोगेर्यं भते। किणाफुडे कइहिया कायेहि फुडे ? गोयमा। णोधम्मत्थिकायेण फुडे जाव नो आगास त्थिकायेणं फुडे आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पएसहि फुडे णोपुढविकायेणं फुड जाव नाअद्धासमएणं फुडे एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणंतहि अगुरुलहुयगुणेहि संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणेत्ति ॥ नासोको धर्मास्तिकायादिना पृथिव्यादिकायैः समयेनच स्पृष्टो व्याप्त स्तेषां तत्र मत्वात् आकाशास्तिकायदेशादिभिः स्पृष्ट स्तेषां तत्र सत्त्वात् एक एवासावजीवद्रव्यदेश आकाशद्रव्यदेशत्वा त्तस्य ॥ इतिद्वितीयशते चतुर्थ उद्देशः समाप्तः ॥ ४ ॥ अनन्तरमिन्द्रियाण्युक्तानि तद्वांश्च परिचारणास्यादिति, तन्निरूपणाय पञ्चमोद्देशकस्य इमादि

ण आहाह पोहत्त जाव अलोगो इंदियउद्देसो ॥ विइयसए चउत्थो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥

अण्णउत्थियाणं भंते ! एवं माइक्खंति पन्नवेंति परूवेंति, एवंखलु नियंठे कालगए समाणे देवब्भूएणं अप्पा

मामाग विषयके उत्कृष्टतो याबना १२ योजन बहु साधिक लक्षयोजन शेषना ८ योजन। अणगारेत्ति। अणगार समुद्घातगतना जे निर्जरापुद्गल तेह प्रते मनुष्य छद्मस्थ। आहारेत्ति। निर्जरापुद्गलप्रते नारकादि नदेखे नजाणे आहारे इत्यादि वक्तव्यता ॥ किंवलोकतो अर्थ एवंदेश कहवो ते कहिये— अलोक भगवन् ! यावत् अनन्तमूर्त पेत ते इम। भगवन् अलोक किणे फर्शो कतिकाए फर्शो ? गोयम। आगासत्थिकायप्रदेशे इत्यादि कहवो। द्वितीयशतकमा चउ था उद्देशो। शब्दार्थ ज्ञाना भावार्थ उद्देशो ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ ४ ॥ पाछिले उद्देशे इन्द्रियकह्या तेहने विषे परिचारणा कहिये— अन्य तीर्थिक अहो भगवन्त एहवा कहे छे भाखे छे पन्नवे छे परूवे छे। अन्यतीर्थी ते शाक्यादिकवादि, हे भगवन् ! एम कहे सामान्य बोले भाषे प्रज्ञापे प्ररूपे। एवं खलु नियंठे। इम

मूत्र ॥ अन्नउत्थियमहत्यादि ॥ देवभूयवत्ति ॥ देवभूतेन आत्मना करणभूतेन नोपरिचारयतीतियोगः ॥ सेवत्ति ॥ असौ निग्रन्थदेव तत्र देवलोके नो अन्य ॥ अन्नेत्ति ॥ अन्यान् आत्मव्यतिरिक्तान् देवान् सुरान् तथा नो अन्येषां देवानां सम्बन्धिनी देवीः ॥ अभिजुंजियत्ति ॥ अभियुज्य वशीकृत्य आश्लिष्य वा । परिचारयति परिभुङ्क्ते ॥ नोअप्पणिच्चियाओत्ति ॥ आत्मीया ॥ अप्पणामेवअप्पाणं विउव्वियत्ति ॥ स्त्रीपुरुषरूपतया विकृत्य एवमस्थिते ॥ एगेवियणमित्यादि ॥ परउत्थियवत्तव्वयाअवधुति ॥ अत्र चेयं ज्ञातव्या ॥ जं समयं इत्थिवेयं वेयइ तंसमयं पुरिसवेयं वेयइ जंसमयं पुरिसवेयं वेयइ तंसमयं इत्थिवेयं वेयइ इत्थिवेयस्स वेयणयाए पुरिसवेयं वेयइ पुरिसवेयस्स वेयणयाए इत्थिवेयं वेयइ एवंखलु एगे वियणमित्यादि ॥ मिथ्यात्व

णेणं सेणतत्थ नो अण्णदेवे नोअण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, णो अप्पणिच्चियाओ देवीओ अभिजुंजिय अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ, एगेविय णंजीवे एगेणसमएणं दोवेदे वेदेइ, तंजहा—इत्थिवेयंच पुरिसवेयंच, एवं अण्णउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेयंच पुरिसवेयंच सेकहमेयन्नंत! एवं? गोयमा! जन्नंते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव इत्थीवे

लिंगे निर्ग्रन्थ साधु । श्रामणपणसाथे । काल पर्हते करे । देवपूर्व । देवतात्रय करे । यमाथेव सर्वतत्रमा ममदेवे अन्नेसिंदेवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परिचारेइ । आमायि करणभूतकरी परिचारणा न करे इतिवाम ते निर्ग्रन्थसाधु देवत देवमाननेविषे नहो अन्यदेवप्रतें तथा बीजा देवसंबंधी देवीप्रतें वशिकरी ने अथवा आलिंगीने भावे । आमणपणिचियाओदेवीओ अभिजुंजिय २ परिचारेइ । नहो आपसंबंधी देवीप्रतेवशिकरी अथवा आलिंगी परिचारणा करे आपणे आपणपो आत्मायेज्यो एवा रूपप्रतें विकुर्वीने २ परिचारणाभागवे इम रक्षावता । एगेवियणंजीवे । एकपणि य अपुन वं वाज्यामवारे, सो व । एगेणसमएणंदोवेदेवेदेइ तंजहा । एके समये वावेद वेदे तेकहेछे । इत्थीवेदय । स्त्रीवेद नवमो भने । पुरिसवेदय । पुरुष वेद । एवंपरउत्थियवत्तव्वयाये णमा । इम परतीर्थी इमकहे तेहनो वक्तव्यता जाणवी । जाव इत्थीवेदय । यावत् स्त्रीवेद अपुन पुरुषवेद । सेकहमेयंभंतेएवं । तेहथी अन्यतीर्थी इमकहेछे—

चेपा मेवं स्त्रीरूपकरणपि तस्य देवस्य पुरुषस्या त्पुसपवेदस्यै वैकत्र समये उदयो न स्त्रीवेदस्य वेदपरिवृत्त्याषा स्त्रीवेदस्यैव न पुरुषवेदस्यो दय
परस्परविरुद्धत्वादिति ॥ एयमाख्सुति ॥ दयजमपु मध्ये ॥ उववत्तारो भवन्तिति ॥ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति दृश्य ॥ महिड्डिए ॥ इत्यत्र या
वत् करमा दिर्वदृश्यं-महज्जुइए महायसे महाजसे महासोक्खे महाणुभागे हारविराइयवत्थे कडयतुडियथंभियभुए ॥ त्रुटिका बाहुरक्षिका ॥ प
गयकुंडलमट्ठगण्डकण्णपीठधारी ॥ धारयामि बाहाभरणविशेषान् कुंडलानि कर्णाभरणविशेषान् मृष्टगंडानि चाभिरिलतकपोलानि कर्णपीठानि कर्णा
भरणविशेषान् धारयती त्येवशीलो य सतथा ॥ विचित्रवत्थाभरणे विचित्रमालामउलिमउडे ॥ विचित्रमालाच कुसुमस्रक् मौली मस्तक मुकुटच य

यच पुरिसयेयंच जतेएयमाहसु मिच्छातेएवमाहंसु, अहपुण गोयमा ! एयमाइक्खामि जाव परूवेमि, एव
गलुनियठे कालगएसमाणे अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो जवति महिड्डिएसु जाय महाणुजागेसु

नमिमर्चे एव हेममउत् । इम तेवडी । गायमा अवतेपकरछियया एयमाइक्खति । हेगौतम ! जेमाटे अन्यतीर्थी इमकहे । जावइस्त्रीवेदस्य परिसवेदंच जेते
भूठू कहेछे—तेविम जोइपकरछे तापणि ते देवने पुरुषपणामाट पुरुष वेदमात्र एकसमयनेविषे उदयछे पणि स्त्रीवेदनो उदयमद्यो अथवा वेदपाम्टे
ता स्त्रीवेदमात्र उदयछे पणि पुरुषवेदनो उदयनही मांहोमांहि विरुद्धभावथी । अहपुण गोयमा एयमाइक्खामि । हे वली हेगौतम ! इमज कहुं छु सा
हित वामगत एतले मरणपाम्याथका । अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताएउववत्तारोभवति । अन्यतर कोइएक देवलोकनेविषे देवतापणे उपजे अथवा । म
हिड्डिए । मोटाछे ऋद्धि परिवार जेहने । जावमहाणुभागेसु । यावत्शब्दे मोटा अत्यन्त प्रतिवर्तमेविषे एतलामाने अथवा । दूरगईसु दूरठिईसु सेवत
ग्रवेभवर महिड्डिए । वेमनोगतिने पर्वात् ऊपरदेवलोकनेविषे षवीस्थितिछे षायुकमनी जिहां ते जिवीव च वात्यार्थकारे, तिहां देवपणेहुये मज्जापरि

स्य मतया इत्यादि यावत् द्वितीय तृतीय पश्चात् वायार मयोर सेएव लसाए दसदिसाउ उज्जोएमाणेति ॥ तत्र ऋद्धिः परिवारादिका युति रि ष्टायसमाम प्रज्ञा यानादिदीप्ति च्छाया शोभा अर्चिः शरीरस्थरत्नादितेजोज्वाला तेजः शरीरशोचि लश्या देहवर्णः एकार्थावेते उद्द्योतय त्प्रका शकरणम ॥ पासादीयेति ॥ प्रज्ञासयम् मोजयम् इव यावत्करणा दिदृश्यं ॥ पासाइए ॥ स्पृहा चित्तप्रसादजनक ॥ दरसणिज्जेय ॥ पश्यचक्षु र्न श्राम्यति ॥ अभिरूये ॥ मनोज्ञरूपः ॥ पडिरूवेति ॥ प्रतार प्रतार प्रतिरूप यस्य स तथति एके नैकदा एकएव वेदोवेद्यत इत कारणमाह ॥

दूरंगतीसु चिरठितीसु सेणतत्थ देवेभवइ महिड्ढिए जाव दसदिसाउ उज्जोवेमाणे पत्तासेमाणे जाव पडिरूवे सेणतत्थअण्णेदेवे अण्णेसि देवाण देवीउ अभिजुजिय अभिजुजिय परियारेइ , अप्पणिच्चियाउदेवीउ अभि जुजिय अभिजुजिय परियारेइ , नोअप्पणामेवअप्पाण वेउव्विय परियारेइ ! एगेवियण जीवे एगेण समए ण एगवेद वेदेइ , तजहा—इत्थिवेदवा पुरिसवेदवा , जसमय इत्थिवेद वेएइ णोतसमय पुरिसवेद वेदेइ ,

वारमाणी । जावदसदिसाउज्जोवेमाणे पभासेमाणे । यावत् शब्दे तावत कहवा दशदिशिनेविषे देहनोकांतिकरी तथा आभरणनो कांतिकरी उ द्योत करतावका तेजकरतावका । जावपडिरूवे सेणंतत्थअण्णेदेवे । यावत् प्रतिरूप जाणवायोग्य एतलासमे कहवो, ते निश्चेत्र त आलावाकारे, तिहां बीजादेव । अण्णेसिदेवाणदेवीओआयभिजुजिय २ परियारेइ । अनेरा देवनी देवी तेहने आलिंगनोने तथा वशीकरीने परिचारणाकरे भजवा । अप्पणिच्चिया ओदेवीओआयभिजुजिय २ परियारेइ । आपणीपोतानी देवीओ ते आलिंगनोने तथा वशीकरीने परिचारणा भोगकरे । णोअप्पणामेवअप्पाणविउव्विय २ प रियारेइ । पणिनहो आपणपेइज आत्माने स्त्रीरूपें विकुर्वी आणवे एतावतादेवता स्त्रीरूपनो विकुर्वी भाग नकरे इमज तेमाटे । एगेवियणंजीवेएगेणं समएणं एगवेदंवेदेइ इत्थीवेदंवा । एकजीव, अपि निश्चे अपुनर्व आलावाकारे, जीव एक सूक्ष्मकालवर्ती समयनेविषे एक वेदवेदे अनुभवे भोगवे तेकहेछे— स्त्रीनावेद भजवा । पुरिसवेदवा । पुरुषवेद भजवा । जसमयइत्थीवेदवेदेइ । जेसमयनेविषे स्त्रीवेदवेदे भोगवे । णोतसमयपुरिसवेदवेदेइ । ते समयनेविषे पु

इत्थीइत्थियवणगमित्यादि ॥ परिचारणाया किल गर्भः स्यादिति गर्भप्रकरणं तत्र ॥ उदगगब्भेणं, क्वचिदुदगगब्भेणंति दृश्यते, तत्र उदकगर्भः कालान्तरेण प्रवर्षणहेतुः पुद्गलपरिणामः तस्य चावस्थानं जघन्यतः समयः समयानन्तरमेव प्रवर्षणात्, उत्कर्षतस्तु षण्मासान् षण्मासानामुपरि वर्ष

जसमयं पुरिसवेदं वेदेइ णोतसमयं इत्थियेयं वेएइ, इत्थियेयस्स उदएणं नोपुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेयस्स उदएणं नोइत्थियेयं वेएइ, एवंखलु एगेजीवे एगेणं समएणं एगवेदं वेदेइ, तंजहा—इत्थियेदं वा पुरिसवेदं वा, इत्थी इत्थियेएणं उदिन्नेणं पुरिसं पत्थेइ, पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिन्नेणं इत्थिं पत्थेइ, दोवेते अन्नमन्नं पत्थेइ, तंजहा—इत्थी वा पुरिसं पुरिसो वा इत्थिं, उदगगब्भेणं भंते! उदगगब्भेत्ति कालओ केवच्चिरं

जिस समये वेदप्रतें वेदेशे भागवे नही। जसमयपुरिसवेदवेदे। जेसमयनेविषे पवयवेद वेदे भागवे। नातसमय इत्थीवेदवेदे। नहो तेसमयनेविषे स्त्रीवेदप्रतें वेदे भागवे। इत्थीवेयस्स उदयेण। स्त्रीवेदने उदयें करीने। नापुरिसवेदवेदेइ। नहो पुरुषवेदप्रतें वेदे भागवे, मांहोमांहि विरोधपणो। पुरिसवेयस्स उदयेण नाइत्थीवेदवेदेइ। पुरुषवेदने उदयें करीने नही स्त्रीवेदप्रतें वेदे भोगवे। एवखलु एगेजीवे एगेणसमएण। इम निश्चे एकजीव एकेसमये। एगवेदं वेदेइ। एक वेदप्रतें वेदे भोगवे। इत्थीवेदवा पुरिसवेदवा। ते कहेछे—स्त्रीवेदप्रतें अथवा पुरुषवेदप्रतें एक समये एकजीव वेदवेदे इहां कारण कहेछे—इत्थीइत्थीवेदेण उदिन्नेण पुरिसंपत्थेइ। स्त्रीकते स्त्रीवेदने उदयथकी पुरुषवेदप्रते प्रार्थे वांछे। पुरिसोपुरिसवदेण उदिन्नेणइत्थियपत्थेइ। तथा पुरुषछे ते पुरुषवेदने उदयथकी स्त्रीवेदप्रतें प्रार्थे। दोवितेअन्नमन्नपत्थंति तंजहा। बेजण मांहोमांहि प्रार्थनाकरे तेकहेछे—इत्थीवापुरिसं पुरिसोवाइत्थिं। स्त्रीपुरुषप्रतें पुरुषस्त्रीप्रतें प्रार्थे परिचारणाथकीगर्भहुवे, तेमाटे गर्भप्रकरण कहेछे—उदगगब्भेणंभंतेउदगगब्भेतिकालओकेवच्चिरंहोइ। किहां एक सूत्रे उदगगब्भेण एहवोपाठ होशे, तिहां उदकगर्भ कालान्तरे जल वरसवानोहेतु पुद्गलपरिणाम ते उदकगर्भ। हेभगवन् ते कालथी केतलो काल थिरहवे इतिप्रश्न उत्तर जघन्यथी एकसमय उत्कृष्टथी छमास। हेगोतम! उदकगर्भ जघन्यथकी एक समयने पछांतरे वरसे उत्कृष्टथकी छमासे तो छमहीनापछे वरसे एम

मान् यथैव मागशीर्षपौषादिषु वैशाखान्तेषु सन्ध्यारागमेघोत्पादादिलिङ्गो भवति यदाह–पौषेसमार्गशीर्षे सन्ध्यारागोम्बुदा सपरिवेषाः । ना त्यर्थमागशिरे शीतंपौषेतिहिमपातः ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ कायभवत्थेणंभंतेइत्यादि ॥ काये जनन्युदरमध्यव्यवस्थितनिजदेहस्य यो भवो जन्म स काय भवः तत्र तिष्ठति यः स कायभवस्थः स च कायभवस्थइति एतेन पर्यायेणेत्यर्थः ॥ चउवीसंसंवच्छराइंति ॥ स्त्रीकाये द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन र्मृ

होइ ? गोयमा ! जहन्नेण एक्कंसमयं उक्कोसं छम्मासा । तिरिक्खजोणियगब्भेणंभंते ! तिरिक्खजोणियगब्भेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नंअंतोमुहुत्तं उक्कोसं अट्ठसंवच्छराइं । मणुस्सीगब्भेणं भंते ! मणुस्सीगब्भेत्तिकालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं बारससंवच्छराइं । कायभवत्थेणंभंते ! कायभवत्थेत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउवीससंवच्छराइं । मणुस्सप

थिर मासादिकमेंविषेहूवे ते वेगाभ पोतानेविषे सन्ध्याराग मेघउपजाववना चिह्न हवे । हिव पचेंद्री गर्भनो अधिकार कहेछे—तिरिक्खजोणियगब्भेणभ ते । तिर्यंचयोनिया गर्भगभ हेभगवन् ! तिरियजोणिय । तिरयजोणिय । गर्भेतिकालथी केवचिर होय । गर्भपणे कालथकी केतलोकाल गर्भमांहे स्थिरहारहे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं । हेगौतम । जघन्यथकी अंतमुहूर्तरहे घडीदायमान । उक्कोसेणअट्ठसंवच्छराइं । उत्कृष्टथकी आठ वरसलगे तिर्यंचनो गर्भकालजाणवा । मणुस्सीगब्भेणंभंतेमणुस्सीगब्भेतिकालथीकेवचिरहोय । मनुष्यनी स्त्रीगर्भ हेभगवन् ! मनुष्य स्त्रीनेविषे गर्भपणे का लथीकेतलाकालस्थिररहे इतिप्रश्न उत्तर, गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तं । हेगौतम ! जघन्यथकी अंतर्मुहूर्तलगेरहे घडीदोय प्रमाण । उक्कोसेणंदुवालससं वच्छराइं । उत्कृष्टथकी बारवरसलगे मनुष्यनोगर्भ रहे जाव । कायभवत्थेणंभंते कायभवत्थेतिकालथी केवचिरहोय । कायनेविषे पतले माता ना उदरमांहिरह्या जेजीवतेनाशरीर तेहनेविषेज जिकाभवजन्म ते कायभव कहीये तेहनेविषे जेरहे तेकायभवस्थ कहीये एणेहीज पर्याये इत्यर्थ, हेभगवन् । कालथी केतलेकालरहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तंउक्कोसेणंचउवीसंसंवच्छराइं । हेगौतम । जघन्यथी अंतमुहूर्तरहे उत्कृष्ट

गा तस्मि येगा स्वशरीरे उत्पद्यते द्वादशावर्षस्थितिकतया इत्येवं चतुर्विंशतिवर्षाणि भवति, केचिदाहुः द्वादशवर्षाणि स्थित्वा पुन स्वशेषा न्य बीजेन स्वशरीरे उत्पद्यते, द्वादशवर्षस्थितिरिति ॥ गर्भजीवेषमते । इत्यादि ॥ मनुष्याणां तिरश्चां च बीजं द्वादशमुहूर्तान् यावद्योनिभूतं भवति त सय गवादीनां शतपृथक्त्वस्यापि बीजं गवादियोनिप्रविष्टं बीजमेव, तत्र च बीजसमुदाये एको जीव उत्पद्यते स च तेषां बीजस्वामिनां सर्वेषां पुत्रो भ वती स्यात युक्तं ॥ उक्कोसेणंसयपुहत्तस्सेत्यादि ॥ सयसहस्सपुहत्तंति ॥ मत्स्यादीनां मत्स्ययोनेरपि शतसहस्रपृथक्त्वं कुर्मे उत्पद्यते निष्पद्यते चेत्येक

चिंदियतिरिक्खजोणियबीएणं भंते ! जोणियब्भूए केवइयं कालं संचिट्ठइ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उ क्कोसेणं बारसमुहुत्ता । एगजीवेणं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! जह न्नेणं इक्कस्स वा दोण्हं वा तिण्हं वा उक्कोसं सयपुहत्तस्स जीवाणंपुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ एगजीवस्सणं भंते एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति? गोयमा ! जहन्नेणं इक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्को

बो जागी गर्भमाहे बारे बरसरहो मरे मरीने वली तिणि हीज शरीरनविषे ऊपजे वली बारे बरस रहे एव २४ बरस भवना एकजीव बारे बरस रही मू या तेहनसरीरे वली बीजे बरीरे तेहज सरीरमाहे आय ऊपजे बारे बरस शरीरहै एव २४ बरस पर्यो बाबरस । मनुस्सपंचेंद्रियतिरिक्खजोणिय । मनुष्य पंचेंद्रिय तथा तिर्यंचयोनिक पंचेंद्रिय तेहने । बीएणभंतेजोणिभूए केवइयकालसंचिट्ठइ । बीज कहता वीरज ते हेभगवन् ! योनिभूत योनिनेविषे रह्याउ का केतलाकालतांई रहे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जहन्नेणंअंतोमुहुत्तउक्कोसेणंबारसमुहुत्ता । हेगोतम ! जघन्यथकी अंतमुहूर्त्त मेघकी सोम रहै उत्कृष्टथकी बारे महूरतां रहे पछे सोमवजातो हे बीजभूतरहै पछे केतला बरसमांहि पीना विनस जाय इत । एगजीवेणभंतेएगभवग्गहणेणकेवइयाणपुत्तत्ताएहव्वमागच्छइ । एकजीवन बाबाअहो पैर भवन अधिकारी केतलाना प्रपणे ऊताउसी पावे एतमे केतलाविताना पचमुवे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जह न्नेणइक्कस्सवादोण्हवा तिण्हवा उक्कोसेणसयपुहुत्तस्सजीवाणंपुत्तत्ताएहव्वमागच्छइ । हेगोतम ! जघन्ये एकना अथवा दोयना अथवा तीनना उ

स्य प्रकमरगरय मवपणक पुराणां भवतीति मनुष्ययोनौ पुनरुत्पन्ना अपि बहवो नतिष्पद्यन्तइति इत्थीएपुरिसस्सयइत्येतस्य मेहुणवत्तिए नामं मग्राण ममुष्याणां इत्यनेन मम्यन्ध यस्या मना मुत्पद्यत इत्यार्थ ॥ कम्मकडाएजोणीएति ॥ नामकर्मनिवर्त्तितायां योनौ प्रथवा कम्म भवमो दीपकाप्यापार स्तत्कृत यस्यां सा कम्मकता ऽत तस्या मैथुनस्य वृत्तिः प्रवृत्ति येसि असौ मैथुनवृत्तिको मैथुनथा प्रत्ययो हेतु यस्मि असौ

मेण नयसहस्सपुहत्तं जीवाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति । सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव हव्वमागच्छइ ? गोयमा ! इत्थीए य पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिएनाम संजोए समुप्पज्जइ , ते दुहओ सिणेहं चि

रक्तथा मत पत्रमंत्रार्थ तेमनुष्यना तथा तिर्यचना बीज बारमहूर्त्त यानिभूतथय तिवार मायममध्ये शतपृथक्त्व नवमय नीपजि बीजयोनि प्रविष्ट बीजबीजकजीवे तिहां तेबीजना मध्यनेविषे एकजीव उपजे ते जीव बीजस्वामी मथमाबो पुत्रहुवे तेमाटे कह्यो उत्कृष्टथी नवसयनो पत्रपणे सता थमा उपजे इति । एगजीवस्मणभंतेएगभवग्गहणेणकेवइया जीवापुत्तत्ताएहव्वमागच्छति । एकजीवने भं बाहमानकारे हेभगवन् ! एक भवने पहवेकरी के तमाजीव पत्रपणे उत्पन्नथावे एतमे एकपितानां पीतमापगन्न इतिप्रश्न उत्तर । मायमा जहन्नेणइक्कोवादोवातिन्निवाउक्कोसेणसयसहस्सपुहत्तंजीवा णंपुत्तत्ताएहव्वमागच्छति । हेगौतम ! जघन्यै एक अथवा दोय अथवा तीन उत्कृष्टथको लाख पृथक्त्व एतले नवलाखजीव पत्रपणे उत्पन्नथावे उपजे तै मरमाक्रियते एकने मयाने पछि माहणीनो योनिनेविषे नवलाखजीव गर्भपणे उपजे पने भोपजे पछि तेमाटे एकनेभवग्रहणे नवलाखपुत्रपणे हुवे, मनुष्य योनिमे घना उपजे पछि घनाभोपजेमधो इतिभाव बलीगौतम पूछे—सेकेणट्ठेणंभंतेएवंवुच्चइ जावहव्वमागच्छति । तेकिसेपणे किसे प्रयोजने रमकहुं यावत् नवलाखजीव उत्पन्ना मध्यवियेपुत्रपणे उपजे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा इत्थीएपुरिसस्सयकम्मकडाएजोणीए मेहुणवत्तिएणामसंजोएस मयग्यइ तेदुहओसिणेहंचिणति । हेगौतम ! स्त्रीपरुषने कर्म नाम कर्मनिवर्तित योनिनेविषे अथवा मदनोद्दीपनव्यापार तेजोवो जेहनेविषे तिका कम जनामानि कहीये ते व्यापारकरतेअत तेहने मैथुनवाहति प्रवृत्ति जेहनेविषे ते मैथुनहेतिकहीये अथवा मैथुननाहेतुके जेहने तेमैथुन प्रत्यविक इसे

स्वापिपके कमत्यये मैथुनप्रत्ययिक ॥ नामति ॥ नामनामवतो रभेदोपचारा देतत्नामेत्यर्थ संयोग सम्पर्क तेइति स्त्रीपुरुषौ ॥ दुरुठीति ॥ उभय तः स्वई रेतः शोणितलक्षण सचिनुतः सवधयतइति ॥ मेहुणवत्तिएनामसञ्जोएत्ति ॥ प्रागुक्त मथ मैथुनस्यै वासयमहेतुताप्ररूपयसूत्र ॥ रूयनालि यंवत्ति ॥ रूतंकर्पासविकार सम्भृता नालिका शुषिरवंशादिरूपा रूतनालिका ता एवबूरनालिकामपि नवर वर्र वनस्पतिविशेषावयवविशेष ॥

णत्ति, तत्थण जहन्नेण एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेण सयसहस्स पुहत्त जीवाण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति सेतेणठेण जाव हव्वमागच्छइ । मेहुणेणभंते ! सेवमाणस्स केरिसेअसंजमे कज्जइ ? गोयमा ! से जहानामए केइपुरिसे रूयनालियया बूरनालियवा तत्तेण कणएण समभिधंसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमा

नामे सभाग सपक्ष सपक्ष तेसृापवय वेञ्चवणो घेव ह्यक रुधिरवमच तेहमत विषे एकबारे हत्यव। तत्यमज्ञहस्सएकबादोशतिस्तिवा उत्कासेवसय सहस्सपहत्तजीवाचपुत्तताएहव्वमागच्छंति। तिहां सवयवसामेविषे च वाक्यासकारे जघन्यथकी एक प्रथवा दोय अथवा तीन जीवपर्णे गर्भमांहे ऊप जे उत्कृष्टथी शत सहस्र पृथक्त्वमांहे ते नवलाख जीव वं वाक्यासकारे पुत्रपणें उतावला ऊपजे पावे हत्यव। सेतेणठेणजावहव्वमागच्छति। ते तेण पणे हेगौतम! यावत् नवलाखजीव गर्भनविषे पुत्र पणे उतावलापणे ऊपजे। हिवे मैथुनना अधिकारथकी, मैथुनना असंयमपणा प्ररूपेछे। मेहुणे णभंतेसेवमाणस्सकेरिसेअसंजमेकज्जइ। मैथुन च वाक्यासकार, हेभगवन्! सेवतामथकाजीव केहवा असंयमकरे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा सेजहानामएकेइ पुरिसेरूयनालियावूरनालिया। हेगौतम। ते यथा दृष्टांते नाम इति वाक्यमामनव कांइएक कपासनाविकार ते रूत वाहोसे ते भरी वांसनी भूंग ली अथवा वनस्पती विशेषना अवयव ते बूर कहीये तेणे भरीवांसनी भूंगली मो। तत्तेणकणएणं समभिधंसेज्जा। तप्त आकंपमान अग्निकरी तपा वी लोहनी शोभा ग्रसाका ते भूंगलीमांहे घते तिवारे तेरूत तथा बूर सर्व विध्वसपामे विनाशपामे इत्यर्थ। एरिसएणं गोयमा मेहुणसेवमाणस्सअसंजमे कज्जइ। एहवो च वाक्यासकारे हेगौतम। मैथुनसेवतांथकां योनिमाहेरह्याछे जीव ते प्रते मेहनपुरुषलिंग तेणेकरी विनाश पमाडे एहवो असं

समभिचसेज्जत्ति ॥ रुतादिसमभिध्वंसना दिह वा यं वाक्यशेषो दृश्य एव मैथुन सेवमानो योमिगतसत्वा न्मेहमेना विध्वसये देतेच किल यं यानारे पञ्चेन्द्रियाः मूयन्तइति ॥ परिसएकमित्यादिव ॥ मिनमर्मामति पूर्वं तिर्यग्मनुष्योत्पत्ति विचारिता अथ देवोत्पत्तिविचारणाया प्र

गस्स अ्रसजमे कज्जइ, सेव भंतेभंते! त्ति जाव विहरइ । तएण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्कमइ पडिनिक्कमइत्ता वहिया जणवयविहार विहरइ, तेणकालेण तेणसमए ण तुंगियानाम नयरी होत्था, वण्णओ, तीसेण तुंगियाए नयरीए वहिया उत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए पुप्फवइ एनाम चेइए होत्था, वण्णओ, तत्थणतुंगियाएनयरीए बहवेसमणोवासया परिवसंति, अ्रड्ढा दित्ता विच्छिन्न

नमस्करे। सेवभंत२ त्ति जावविहरइ। तहत्ति हेभगवन्! तुमेकह्या ते सवसत्य छे एमकही यावत् नमस्कार करी संयमेतपेकरी आत्मानेभावता थका विचरे। तएणसमणे भगवंमहावीरे रायगिहाओनयराओ गुणसिलाओ चेइयाओ। पहिला तिर्यंचमनुष्य उत्पत्ति विचारणाकीधी। हिवे देव उत्पत्तिनी विचारणाना प्रस्तावथी एकहेछे—तिवारे श्रमण भगवंतश्रीमहावीरस्वामी राजगृहनामा नगरथकी गुणशिलानाम चैत्यथकी। पडिणिक्खमइ २त्ता। नीकले नीकलीने। वहियाजणवयविहारविहरइ। बाहिर जनपददेशने विषे विहारकरी विचरे। तेणंकालेण तेणंसमएण। ते अवसर्पिणी चौथा आराकप काल तेहवे समयनेविषे। तंगियानाम नयरीहोत्थावणओ। तंगीया इसेनामे नगरीहुवे तेहनो वर्णक उवाई उपांगथी जाणवो। तीसेणंतुंगियाएनयरीए। तेहवे बाह्यादेशारे, तंगियानाम नयरीनेविषे। वहियाउत्तरपुरच्छिमेदिसीभाए। बाहिर उत्तरपूर्वदिशिना विभागनेविषे एतले ईशानकूणनेविषे। पुप्फवइ एणाम चेइएहोत्था वण्णओ। पुष्पवती इसेनाम चैत्य यक्षायतन हुआ, तेह वर्णक उवाई उपांगमाहिथकी तिमजाणवो। तत्थणंतुंगियाएणयरीए। तिहां वली ते नगरे, तंगीयानामे नगरीनेविषे। बहवेसमणोवासयापरिवसंति अड्ढा दित्ता। घणा श्रमणसाधु तेहना उपासक सेवक एतले श्रावक वसेछे रहेछे ऋद्धिवंत धन धान्यकरी परिपूर्ण प्रसिद्ध तथा समर्थ। विच्छिन्नविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा। विस्तारसहित भवनमाहिं पलंगादि सुतादि

सावमाये वमाह ॥ तएवंसमबेइत्यादि ॥ अड्ढे त्ति आढ्या धनधान्यादिभिः परिपूर्णा ॥ दित्तत्ति ॥ दीप्ता प्रसिद्धा दृप्ता वा दर्प्पिताः ॥ विच्छिन्नविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा ॥ विस्तीर्णानि विस्तारवन्ति विपुलानि प्रचुराणि भवनानि प्रशस्तानि शयनासनयानवाहनैराकीर्णानि ये पां ते तथा अथवा विस्तीर्णानि विपुलानि भवनानि येषां शयनासनयानवाहनानि च कीर्णानि गुणवन्ति येषां ते तथा तत्र यानं गन्त्र्यादि वाहनं त्वश्वादि ॥ बहुधणबहुजायरूवरयया ॥ बहु प्रभूतं धनं गणिमादिकं तथा बह्वेव जातरूपं सुवर्णं रजतं च रूप्यं येषां ते तथा ॥ आओगपओगसंपउत्ता ॥ आयोगो द्विगुणादिवृद्ध्या धनप्रदानं प्रयोगश्च कलान्तरं तौ सम्प्रयुक्तौ व्यापारितौ यैस्ते तथा ॥ विच्छड्डियविउलभत्तपाणा ॥ विच्छर्दिते विविधं मुज्झिते बहुलोकभोजनात् उच्छिष्टावशेषसम्भवात् विच्छर्दितवा विविधविच्छित्तिमद्विपुलं भक्तं पानकं च येषां ते तथा ॥ बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया ॥ बहवो दासीदासा येषां गोमहिषगवेलकाश्च प्रभूता येषां ते तथा गवेलका उरभ्रा ॥ बहुजणस्सअपरिभूया ॥ बहो

विपुलत्थणसयणासणजाणवाहणाइण्णा बहुधणबहुजायरूवरयया आओगपओगसंपउत्ता विच्छड्डियविउल भत्तपाणा बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूया बहुजणस्सअपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकु सला असहेज्जदेवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसग

जावत् अमट वाको प्रमुख धनादिक तिर्येकरा पाश्चोप आसबे। बहुधना। बपा धन मबमादिक। बहुमासरूवरमया। बभी जातरूप सवण रयय रूपो बेशनो। भाभाय पभासपउत्ता। विसुमा भिगमा बधारमा मभो देवा बनादिक विम प्रमहपपाये विसयमा पांचमबहेस् दमबको बमदेवो ते पाबो मबदोये ब्यापारादिक तेवमरो समयुक्तसहित। विच्छड्डियविपडभत्तपाणा। घपांसोक जोमपबी मबा भमादिक मूठामाधिबे पहवा के बेहमावर। बहु दासोदास गोमहिसगवेलगप्पभूया। बर्बा दासीदासबे बहमे माव भेस पहरा माहरप्रमुख प्रभूत बबाबे बेहाने। बहुजणस्सअपरिभूया। बपासो बाने पडि भति बमर्थतमाटे कुबरी पू पराभव्या नथाय। अभिगयजीवाजीवा। जांसाबे जीव अजीवना स्वरूप जवे। उबलद्धपुण्णपावा। भासवा

सौकम्या परिज्ञवनीया आमयत्यादौ क्रिया कायिक्यादिका अधिकरणं अधीयघकादि ॥ कुसलत्ति ॥ भाश्रवादीना हेयोपादेयतास्वरूपवेदिनः ॥ असहेज्जत्यादि ॥ अविद्यमान साहाय्यं परसाहायिक अत्यन्तसमर्थत्वा द्यषां ते असाहाय्या स्तेच ते इवादयश्चेति कर्मधारय अथवा व्यस्त मे वम् तेन असाहाय्या आपद्यपि देवादिसाहायकामपेक्षा स्वयकृतं कर्मस्वयमेव भोक्तव्य मित्यदीनमनोवृत्तयइत्यर्थः अथवा पाखण्डिभि प्रारब्धाः सम्यक्त्वाविचलनंप्रति न परसाहायक मपेक्षंत स्वयमेव तत्प्रतिघातसमर्थत्वा जिनशासनात्यन्तभावितत्वाश्चेति तत्र देवा वैमानिका ॥ असुर त्ति ॥ असुरकुमाराः ॥ नागत्ति ॥ नागकुमारा ॥ उभये प्यमी भवनपतिविशेषाः ॥ सुवण्णत्ति ॥ सद्वर्णाः ज्योतिष्का यक्षराक्षसकिन्नरकिंपुरुषाव्यन्तर विशेषा ॥ गरुलत्ति ॥ गरुडध्वजाः सुपर्णकुमारा भवनपतिविशेषा गन्धर्वा महोरगाश्च व्यन्तरविशेषा ॥ अणतिक्कमणिज्जत्ति ॥ अनतिक्रमणीया

रुलगंधव्वमहोरगाईएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुराय

जेणे पुण्य शुभप्रकृतिरूप पापअशुभ प्रकृतिरूप तेहनाजाण । आस्रवसंवरनिर्जराक्रियाअधिकरणबंधमोक्षकुशला । आत्मबलम आवकानास्थानक असर ते असहाय राजना असहायरूप वाविकादिशिक्षा साहायकादिक अणअपेक्षति बधादि आरभदे माथ सबका अयरूप एतलागेविषे पतिढाशाले । असहेज्जदवा सर नाग सुवण्ण जक्ख रक्खस किंनर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगादि एहि देवगणेहि निग्गंथाओ पावयणाओ अ नतिक्कमणिज्जा । आपदाकाले पणि जिनशो देवताने मतरेतशो आपणाश्रोधामम आपणभागवोवे एहवो मनोहत्तिवे जेहनो अथवा पाखंडी ए प्रारंभ्यो समकितथको चलाववो तिवारे बोलाचो मदाव नवाछे एतल पातेज तेहने अवायदेवाने समर्थ एतावता जिनशासन अत्यंत परिणम्यो छे जेहने, देववैमानिक असुरकुमार नागकुमार एवेक भवनपतीविशेष । सुवण्णत्ति । सवर्ण ते ज्योतिषी यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष ए व्यंतरनिकाय ना देवजाणवा गरुड चिन्हछे जेहने एहवा सुवर्णकुमारविशेष गंधर्व महोरग एवेव्यंतर विशेषजाणवा एणादिके देवने गवेसमूहे साधुना प्रवचन सि

यथाननीषा ॥ मट्ठेति ॥ अर्थप्रवक्तात् ॥ गहियट्ठेति ॥ अथावधारणात् ॥ पुच्छियट्ठेति ॥ संशयितार्थप्रश्नकरणात् ॥ अभिगयट्ठेति ॥ प्रश्नितार्थस्याभिगमनात् ॥ विणिच्छियट्ठेति ॥ ऐदंपर्यार्थस्योपलम्भात् ॥ अतएव ॥ अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता ॥ अस्थीनिच कीकसानि मिञ्जाच तन्मध्यवर्ती धातु रस्थिमिञ्जा सा प्रेमानुरागेण सार्वज्ञप्रवचनप्रीतिरूपकुसुम्भादिरागेण रक्ताइव रक्ता येषा ते तथा अथवा ऽस्थिमिञ्जासु जिनशासनगत प्रेमानुरागेण रक्ता ये ते तथा, केनो प्रेखेमेत्याह ॥ अयमाउसोइत्यादि ॥ अयमिति प्राकृतत्वा दिदं ॥ आउसोत्ति ॥ आयुष्मन्निति पुत्रादे रामंत्रण ॥ सेसेति ॥ शेष निर्ग्रन्थप्रवचनव्यतिरिक्तं धनधान्यपुत्रकलत्रमित्रकुप्रवचनादिकमिति ॥ उसियफलिहेति ॥ उच्छ्रित मुन्नतं स्फटिकमिव स्फटिकं चित्तं यषा ते उच्छ्रितस्फटिका मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमानसा इत्यर्थ इतिवृद्धव्याख्या, अन्यत्वाहु , उच्छ्रितो ऽर्गलास्थाना दपनीयो गोकसो

रत्ता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयपरमट्ठे सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा चियत्तंतेउर

होतथको मतिक्रमावी मसथोये पतसे ते श्रावक निर्ग्रन्थना प्रवचनथको एतला वेचना भलावा भलेमको। विश्यवेपावयणे । निर्ग्रन्थना प्रवचननेविषे ए तावता मागनेविषे जीवादितत्वने जिना मारोने । विस्तविया पितवियाविनितिगिच्छा लडामहियट्ठा पुच्छियट्ठा । एहवो शंका तिर्थंकरो रहित निस्संकित १ अन्यदर्शनीनीवांछा तेवांछा तिर्थंकरोरहित २ शमादिक फलनासंदेह तिर्थंकरोरहित ते निश्चितिगिच्छा कहीये ३ सुत्रथावी अर्थाने पच लेवे अवधारयो अर्थाने भवजेनें संशयनो पूछी जीधाछे अथवा। अभिगतट्ठा विणिच्छियट्ठा । अन्नना भव आपोने विरपरिचय जोधा अयसेवे निश्चयको वा विशेषकरीने भवना भर्योस। अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ता। हाडमिंजा ते हाडमध्यवर्ती धातु ते सभाग वचन प्रीतिरूप कुसुम्भादिरागेकरी रंग्यानोपरे रंग्याछे अहना भवना अस्थिमिंजानेविषे जिनशासनगत प्रेमानुरागरत्ताछे जिके। अयमाउसो निग्गंथेपावयणेअट्ठे। ए भास्म पुत्रादिकना आमंत्रण साधुना प्रवचनमाय ते मथाजनके एहीज मोक्षसाधनहेतु परमार्थसे गोपवावता। अयपरमट्ठेसेसेअणट्ठे। अनेवे निर्ग्रन्थप्रवचनथी वीजो धनधान्य पच कलत्रादिक अवाकवनादिक ते भवन मोक्षमागना रापयके। उसियफलिहा। भला स्फटिक जिम निर्मळचित्त तथा दानदेवानेशाथ आमसदोंषी

तिरश्चीन कपाटपश्चाद्भागा द्वारनीत इत्यर्थ परिघो र्गला येषां ते उच्छ्रितपरिघा अथवा उच्छ्रितो गृहद्वारा दपगत परिघो येषां ते उच्छ्रि तपरिघा औदार्यातिशयतया दानदायित्वेन भिक्षुकाणां गृहप्रवेशाय अनर्गलितगृहद्वारा इत्यर्थः ॥ अवगुयदुवारेत्ति ॥ अप्रावृतद्वारा कपाटा दिभि रस्थगितगृहद्वारा इत्यर्थ सम्यग्दर्शनलाभेन न कुतोपि पाखण्डिका द्बिभ्यति शोभनमार्गपरिग्रहेणोद्घाटशिरस तिष्ठन्ती तिभाव इतिवृद्धव्या ख्या अन्यस्त्वाहु भिक्षुकप्रवेशाय मौदार्यो दस्थगितगृहद्वारा इत्यर्थ ॥ चियत्तंतेउरघरप्पवेसाचियत्तात्ति ॥ लोकानां प्रीतिकर एव अन्तःपुरे वा परगृहे प्रवेशो येषां ते तथा अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीया स इत्यर्थः अन्यस्त्वाहु ॥ चियत्तोत्ति ॥ नाप्रीतिकरो ऽन्तःपुरगृहयो प्रवेश शिष्टजनप्रवेशनं येषां ते तथा अनीर्ष्यालुतामतिपादनपरं चेत्थं विशेषणमिति अथवा ॥ चियत्तात्ति ॥ त्यक्त अन्तःपुरगृहयोः परकीययो यथा कथंचि त्प्रवेशो यै स्ते तथा ॥ बहूहिइत्यादि ॥ शीलव्रतानि अणुव्रतानि गुणा गुणव्रतानि विरमणानि औचित्येन रागादिनिवृत्तय प्रत्याख्यानानि पौरुष्यादीनि पौषध अष्टम्यादिनानुष्ठानं तत्रो पवासो वस्थानं पौषधोपवास, एतेषां द्वन्द्वो ऽत स्तै र्युक्ता इतिगम्य पौषधोपवा सरत्युक्तं पौषधस्य यदा यथाविधम्य ते कुर्वन्तो विहरन्ति तदुर्शयन्नाह ॥ चाउद्दसत्यादि ॥ उद्दिष्टा अमावास्या ॥ पडिपुन्नपोसहंति ॥ आहा

परघरप्पवेसा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मंअणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपा

मतो । अवगुयदुवारा । उघाडा ते द्वारा बारणा जिमाइ । चियत्ततेउरघरप्पवेसा । प्रीतिकारिया छेत पुरनेविषे तथा परघरनेविषे प्रवेश जेह ना एतावता विकारीने मने तेहना अविश्वासनथी । बहूहिंसीलव्वयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं । अणु नेशीलवृत अणुव्रत गुणवृत वेरमण उचित तपे मानापवारे रागादिक ज्ञानो निवृत्त पच्चक्खाण पोरसोपमुख पोषध पर्वदिनानुष्ठान तेहनेविषे उपवासरहवो तिणे सहितछे एतावता अष्ट महित पापथकीता विपरेछे ते पोषधदिन कहेछे—चाउद्दसठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसुपडिपुन्नपोसहंसम्मअणुपालेमाणा । चवदश आठम दर्श उद्दिष्टगर्स्ने

रान्निरा मनुयिपमपि मयतः ॥ यत्यपडिग्गपकयनपायपुच्छेवति ॥ इय पतद्गुपद पाप्र पान्मोयन रमोहरण पीठ मासा फलक मयहस्स गक्यर्के गम्यायमति एइरमम्नारक्रोया; मस्तारका सपुतर एर्वा समाहारहन्द्वो स सन ॥ मझापडिग्गहिएर्हिति ॥ यया प्रतिपये न पुन एा मयातेः ॥ परति ॥ यनगृद्दा ॥ सूयमंपजति ॥ इय रूप सुविचिंतितपष्यगरीरसुदरताका; तेन सम्पया युक्ता रूपसम्पया ॥ सक्रासापयसंपजति ॥

यपुक्रणेण पीढफलगसेज्जासथारएण हंसहज्जेसजेण पडिलाभेमाणा ग्रहापरिग्गहिएर्हिं तवोकम्मेहिं ध्यप्पा ण जायेमाणा विहरति। तेणकालेण तेणसमएण पासायच्चिज्जा थेराभगवतो जाइसपण्णा कुलसपण्णा यलस

पमाशम्पातथा पूर्निम ए पदद्गिमनेविषै पूरापाशार १ मरीर सत्कार २ ब्रह्मचय ३ अभ्यापार ४ ए चार मवनो परिहारकरता पोषध पमुपालताथकाथे । ममथे। गमन तपयो । विमयपामूरमविञ्जेय पमणपाकणारममारमेव वत्यपडिग्गहकंबलपायपुच्छणेण पीठफलगसेज्जासथारएण भोसहभेसज्जेन पडि लाभेमाना। निर्ग्रंथ साधाभतर पस्यपितमे जनेमेसाधुने मासू मयाजोम दूषणरहित पचाम माका सातु प्रमुख सुधा गमायवानेसमयतेश्रासोपाखो म य इपुरमाजि ते १ भेर तथा नपगमावे २ मायको प्रमग स्थाय ३ सूंठ हरड़े पोपल चायफल प्रमुख ४ एचार पाशारेकरी वस्त्रो वस्र पडघोपासो का म्बा रजोहरण पाया पामन उठोमव मस्तामापाटोया पमति पवना माटा संथारा नाग्धासथारा तिनेकरो वलो भोषध भेषज्य पूर्वोदिक तिणेकरी पतिमाभता विहरावता थका प्रवर्ते छे। भाशापरिग्महिएहि तवाकम्मेहि भप्पाणभावेमाणाविहरति। जेहवा भादरया तेहवा पाले एहवा जेतपकर्म किया तेणेकरी पापाने भावपणो पहर गुणधम धम्य इम तोमतस्य पभमात्ना थका विचरतेथावक। तणकालेण तेणसमएण। तेकालनेविषे ते समय न विषे। पासावच्चिज्जा। पासनाथ स्वामोना चपस्यमतानिया प्रशिष्यादिक। थेराभगवता जातिसपन्ना कुलसपन्ना बलसपन्ना रूपसंपन्ना विणयसंपन्ना। गुरुत्र प्रावरियय मायपक्ष तिणेकरो माभता भला पवना मलित पितापक्ष तिणकरो शाभन भला उत्कृष्ट सघयन तिणेकरो युक्त यरोर सुन्दरपणो तेणे शाभन भला सुवतन नमरू मशाकरो तिणकरी शाभन भला। आणसपन्ना दसणसपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना। मस्यादिक

मत्रा प्रमिद्गा मयमाया मायत्र तृप्यतो ऽप्योपचित्यं जावती गौरवत्याग ॥ ओयंसीति ॥ ओयस्विनो मानसावष्टम्भयुक्ता ॥ तयसीति ॥ तेज स्विनः शरीरप्रभायुक्ताः ॥ वचसीति ॥ वचस्विनो विशिष्टमज्ञायापेता वचस्विनोवा विशिष्टवचनयस्ता ॥ जससीति ॥ ख्यातिमन्तो सुस्वार ग्रैतपु प्राहतथ्यान ॥ जीवियामामरणमयविप्पमुक्कत्ति ॥ जीविताशया मरणभयेनचविप्रमुक्ता ये ते तथा इह यावत्करवा दिद तृप्य – तवप्पधानागुण प्रधाना मुनाय मयमगमाः तपः मयमयरवच तपः सुयमयाः प्रधानमोक्षाङ्गताभिधानार्थं तथा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा तत्र करणं पिण्डविशुध्यादि चरणं व्रतश्रमणधर्मादि निगहप्पहाणा निग्रहो ऽन्यायकारिणां दण्डो निच्छयप्पहाणा निश्चयो वस्तुङ्कुरभ्युपगम सत्व निर्णयोवा । मन्तप्पहाणा वञ्जप्पहाणा ननु जितक्रोधादित्वा न्मार्दवादिप्रधानत्व मवगम्यतएव तत्कि मार्दवत्यादिना ? उच्यते तत्रो दयविफ ममालाः मार्दवादिप्रधानत्वं दयानावप्यति सापवप्पहाणा साधव क्रियासु दक्षत्व खतिप्पहाणामुत्तिप्पहाणाएवविज्जामतवेयबंभनयनिय मसच्चमायप्पहाणाणारुप्पथा सरमप्पः साई सुद्धिसुत्तेन भाषय सुहदाया मित्राणि जीवानामिति मम्य भविमायो मप्पुस्सुया समवि

पराणा रूव्यसपरणा यिणयसपरणा णाणसपणा दसणसपणा चरित्तसपणा लज्जालाघवसपणा ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जियइंदिया जियपरीसहा जीवियासा

भाव तिनकरी गामनुत मध्यम तिचेकरी मामनुत मामाविकादि चारित तिचेकरी मामन मता ख्यातिमि ग्राम पावना समम तेचेकरी सुत इनको पण्य उपवियना मावना गारमाग तेचेयुत । पामकी तेयसो वचसो जससी । चित पावभसवित शरीरममा सचित विशिष्ट भवियमसचि न पनना विशिष्ट भनारनमवित नाममाने जमवत । क्रिमकारा जिवमाया जियमाया जियलोभा जियनिद्दा । तम्याके क्रापमायाने पवापवित गा नम्या माम पडकार, उने भवियाभाव माया परवमा जिने जोत्या पामकोधादि काम मामन जिने जोतो पमकोधादि निद्रापंचक जिने । जितिंद्रि या क्रियवोमरा । जाचार्य मादिक पाचइन्द्रो जने जोम्याच बावीस परीसहजेने । जीवियामसरणभयविप्पमुक्का । जीवितमनोभावा मरणमा भ

ब्रमा सुमामग्गरया थांचिद्दयमिम्यागरमति थांच्चित्रा पयायिरलाभि निदूपयानिया प्रश्नव्याकरणानि येषा ते तथा ॥ कुत्तियावणभूयत्ति ॥ कुत्रिक स्वर्गमर्त्यपातालमलक्षण भूमित्रय तत्सम्भव वस्त्वपि कुत्रिक तत्सम्पादक आपणो हट्ट कुत्रिकापण सद्भूता समीहितार्थसम्पादनलब्धियुक्तत्वेन सकलगुणोपेतत्वमथवा ; तदुपमाः ॥ मर्हिंति ॥ साह सबेत्यथ सम्परियूता सम्यक्परिवारिताः , परिकरसार्थेन परिकरितात्यथः पञ्चभिः

मरणजयमोकयिप्पमुक्का बहुस्सुया बहुपरिवारा पचहिंअणगारसएहिं सद्धिं सपरियुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामंदूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव तुंगियानयरी जेणेव पुप्फवईएचेइए तेणेव उवागच्छति उवागच्छइत्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणंभावेमाणा विहरंति , तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु जाव एगदिसाभिमुहा णिज्झायंति ,

य ए वेजयबार रहित एतम सयमकरे मनाबिगण सम । आवर्जितयावसभूया। मावत् स्नग मत्य पाताम मांहि लेसु ते जिवें हाटे लाभे ते वणिका पण कहीन मरोता मात्र मसमृत सदकके । बहुश्रमा बहुपरिवारा । घणां सुतला धारक छे घणा परिवारई ओहामे । पचहिंपचधारमएहिंसपरिव डा । पाचमे साध तेमेंमहित परिकराश्रया अने परिवारसहित । अहाणुपुव्विचरमाणा । यथा पूर्वे मगयमे सासताबवा विचरताबका । गामाणु गामदूइज्जमाणा । एकगामथो बीजगामे आतावका । सहसुहेंविहरमाणा । सखे सखेकरी विचरतावका सच्चायें पमतिवा विशारो परवसेनकी अपेक्षितमिरागमरो । जिहां तुंगियानामेनयरी । जहांपुप्फवतीचइए । जिहां पुष्पवतीनामे चैत्य यक्षायतनछे । तेणेवउवागच्छतिउवागच्छइत्ता । तिहां आवी आवीन । अहापडिरूवउग्गहउगिण्हिताए । यथा प्रतिरूप यथा योग्य अभिग्रह ग्रहीने । संजमणतवसाअप्पाणंभावेमाणा विहरति । भावतावका शरीर ते मयम सूमभाव तिजतोवे ते तपते सयमेंतपेकरी भाभामे भावतावका विचरेछे । तएणतुगियाएणयरीए । तिवारे तुंगियानाम नगरीनेविषे । सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहेसु। सिंघाडा मयने आकारे स्थानक तीन गली मिले ते स्थानक चार गली मिले ते स्थानक घणो गली मिले ते स्थानक राजमार्ग

ममगतेरव ॥ मिपाळ्यति ॥ शृङ्गाटकफलाकार स्थान त्रिक रथ्यात्रयमीलनस्थान चतुष्क रथ्याचतुष्कमीलनस्थान चत्वर बहुतररथ्यामीलनस्थान महापथो राजमार्गः पन्थारथ्यामात्र यावत्करणात् बहुजनसद्देवाइत्यादिपूर्वव्याख्यात मत्रदृश्य ॥ पाठिसुर्णेतित्ति ॥ अभ्युपगच्छन्ति ॥ सयाइति ॥

तएण तसमणोवासया इमीसेकहाए लद्धठासमाणा हठतुठा जाव सद्दावति , सद्दावित्ता एवंवयासी , एव खलु देवाणुप्पिया पासावच्चेज्जा थेरानगवंतो जातिसपन्ना जाव अहापडिरूव उग्गह उगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाणंनावेमाणा विहरति , तमहाफल खलुदेवाणुप्पिया तहारूवाण थेराण जगवताण नामगोय स्सयिसवणयाए किमगपुण अभिगमणवंदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए जाव गहणयाए तगच्छामो

एक मनीमाच। आवपनटिसाभिमुखाविभ्यावर्तति। यावत् मन्दबको बहुजनसद्देवा इत्यादि पूर्ववत् एकदिशि सामम सुखवे जेहमा इम यथाम्नाव आवेहै तएणतेममणावासया। तिवारे ते श्रमणोपासक मावसेवक श्रावक इमद। इमोसेकहाए। एहवो कथा वार्त्ता मवर। लद्धट्ठासमाणा हठतुठाजावसद्दा वेति। मानुपाजाति नाभिबवे थप सतोय पाम्या सतुष्टचा यावत् मांहोमांहि तेडावे तेडावीने। एववयासी। इम कहतांहुया। एवंखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे देवताने पिण वल्लभ। पासावच्चिज्जा। पार्श्वनाथना अपत्यशिष्यादिक। थेराभगवंता। स्थविर भगवंत। जातिसपन्ना। जातिवंत सहुम्न। जावअहापडिरूवंउग्गहंउग्गिण्हित्ताण। यावत् यथाप्रतिरूप अभिग्रह ग्रहीने। सजमेणतवसाअप्पाण भावेमाणाविहरति तमहा। संयमेकरी तपेकरी आ त्मा भावतायका विचरेछै तेमाटे। महाफलखलुदेवाणुप्पिया। महाफल उत्कृष्टफल माटाफल निश्चे देवनेपिण वल्लभ। तहारूवाणथेराणभगवताणं। जे हवा पूर्वोक्त। तेहवा स्थविर गुणवंत भगवंत। नामगोयस्सविसवणयाए। तेहना नामगोत्रने पिण सांभळवे एतले नामगोत्रसांभल्या पिण महाफलछे। किमगपुणअभिगमणवंदणनमसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए। वं कहवो शुं इति कोमलामंत्रणे वळी साहमोजइ पांच अभिगम साचवे वांदवे नमस्का र करवे प्रश्नागम सदेह वार्त्ता पूछवे सेवा वेयावृत्तिने करवे। जावगहणयाए। यावत् अर्थोन्विको गृहवा लिवे तेवे। तंगच्छामोणदेवाणुप्पिया। ते

स्वकीयानि ॥ कयबलिकम्मत्ति ॥ स्नानानन्तरं कृतं बलिकर्म यैः स्वगृहदेवतानां ते तथा ॥ कयकोउयमंगलपायच्छित्तत्ति ॥ कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थं अवश्यकरणीयत्वात् यैस्ते तथा अन्येत्वाहुः ॥ पायच्छित्तत्ति ॥ पादेन पादेवा छुप्ता चक्षुर्दोषपरिहारार्थं पादच्छुप्ताः कृतकौतुकमङ्गलाश्च ते पादच्छुप्ता श्चेतिविग्रहः तत्र कौतुकानि मषीतिलकादीनि मङ्गलानि तु सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि ॥ सुद्धप्पावेसाइंति ॥ शुद्धात्मानो वेष्यानि वेषोचितानि अथवा शुद्धानिच तानि प्रावेश्यानि च राजादिसभाप्रवेशोचितानि सद्धप्रावेश्यानि ॥ वत्थाइंपवरपरिहियत्ति ॥ क्वचित् दृश्यते क्वचित् ॥ वत्थाइंपवरपरिहियत्ति ॥ तत्र प्रथमपाठो व्यक्तः द्वितीयस्तु प्रवरं यथाभवती त्येवं परिहितानि वस्त्राणि यैस्ते तथा॥

णं देवाणुप्पिया थेरेभगवंते वंदामो णमसामो जाव पज्जुवासामो , एयणं इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव सयाइं गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं

भणी आदर थई बाबालाकारे एकवचन। थेरेभगवंते वंदामो नमसामो। वच सुत तपे करीने प्रामवत मस्तक नमावीने वांदा थे। करव आद नमस्कार करीने। जावपज्जुवासामो। यावत् सेवा करीये तेहभणी, परिहत मत्थे धर्मादि विचार अंगीकार करे। एयणो इहभवे परभवे। एह आपणे इहलोकने विषे परलोकने विषे। आणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु। अनुगामीपणाने यावत् पुण्य इसा करीने। अण्णमण्णस्स अंतिए। एक एकने पासे। एयमट्ठं पडिसुणेति। एहवा अर्थ प्रते अंगीकार करे। जेणेव सयाइं सयाइं गिहाइं। जिहां आप आपणा घरछे। तेणेव उवागच्छंति उवागच्छइत्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। ण्हाया। स्नानकीधा। कयबलिकम्मा। आपणा घरना देवता ने बलिकर्म कीधे। कयकोउयमंगलपायच्छित्ता। कौतुक मंगल प्रायश्चित्त तिलक प्रमुख लोका करे कीधे—वस्त्र आभरणादि पग ठामे पुस्तक पहिर्या जिम दृष्टि नलागे। सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया। राजसभाप्रवेश उचित मंगलीक वस्त्रवस्त्र प्रधान पहिर्या। अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा। भारमां

हिता प्रवरपरिहिताः ॥ पायविहारचारेणेति ॥ पादविहारेण न यानविहारेण य चारो गमनं स तथा तेन ॥ अभिगमेणंति ॥ प्रतिपत्त्या छ निगच्छन्ति समीपं गच्छन्ति ॥ सचित्ताणंति ॥ पुष्पताम्बूलादीनां ॥ विउसरणयाएत्ति ॥ व्यवसर्जनया त्यागेन ॥ अचित्ताणंति ॥ वस्त्रमुद्रिकादीनां अविउसरणयाएत्ति ॥ अत्यागेन ॥ एगसाडिएणंति ॥ अनेकोत्तरीयशाटकानां निषेधाय मुक्तं ॥ उत्तरासंगकरणेणंति ॥ उत्तरासङ्ग उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेषः चक्षुः स्पर्शे दृष्टिपाते ॥ एगत्तिकरणेणंति ॥ अनेकत्वस्य नेकासनमत्यस्य एकत्वकरणं एकासन्नमत्यकरणं एकत्वीकरणं तेन ॥ तिवि

यत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं सएहिं गेहेहिंतो पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमइ त्ता एगयओ मेलायंति, पायविहारचारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छइत्ता जेणे य पुप्फवईएनामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छइत्ता थेरेभगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभि गच्छंति, तंजहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिएणं उ

अल्प मालसो महमा दवरा ते आभरण तेणेकरो आमावमान क्रियाछे शरीरजेने । सएहिं २ गेहहिंतापडिनिक्खमंति २ त्ता । आपणा आपणा घर थकी नीकले आपआपरखको नोकलोने । एगयओमिलायंति । एकठा एकठा सबमिले मिलोने । पायविहारचारेण । पगविहार चालवेकरी एतले अ गाडि वाहन विना । तुंगियाएनयरीएमज्झंमज्झेणंनिग्गच्छंति २ त्ता । तुंगियानाम नगरीनको मध्ये मध्यमार्गेकरीने पधमार्गे नीसरे नीसरीने । जेणेवपु प्फवतीचेइए । जिहां पुष्पवतीनाम चैत्य । तेणेवउवागच्छंति २ त्ता । तिहांआवे तिहां आवीने । थेरेभगवंतेपंचविहेणं अभिगमेणंअभिगच्छंति । त जहा वय श्रुत तप इत्यादि स्थविर भगवंत गुणरूपम प्रते पंचप्रकारने अभिगमेकरी तेपासे आवे ते अभिगमकहेछे—सचित्ताणंदव्वाणंविउसरणयाए । पुष्प तांबूलादिक जेसचित्तद्रव्य तेहना तजवो छांडवा तिणेकरी १ । अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए । वस्त्र मुद्रिकादिक जे अचित्तद्रव्य तेहनो नांछवानो तिणेकरी २ । एगसाडियउत्तरासंगकरणेण । एकासहित एकपटाकनो उत्तरीयनो देहेनेविषे न्यासविशेष ते करवो ३ । चक्खुफासेणं

सरासगकरणेण , चक्कुप्फासेअंजलिपग्गहेण , मणसा एगत्तीकरणेण । जेणेव थेराभगवतो तेणेव उवागच्छ ति उवागच्छइत्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति , तएण तेथेराभगवतो तेसि समणोवासयाण तीसेयमहइमहालियाए परिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेंति जहा के सिसामिस्स जाव समणोवासइत्ताए आणाए आराहए भवइ , जाव धम्मो कहिउ । तएणतेसमणोवासया थेराण भगवताण अंतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेंति ,

---

[illegible] । हटिदेवे तिवारे शावआवो मस्तवे वठावे ४ । मवसाएगत्ताकरवे । धमेकावर्वंवो ममने एकवचरवो ठामेरावना ५ हमकरो । थेरे थेरोभगवंता । जिहा स्थविरभगवंतहे । तेथेमउवागच्छंति २ त्ता । तिहा थावे तिहापावोमे । तिक्खुतोआयाहिवकरेंति २ त्ता । तोमचार वोमना पामाधी प्रानउगम चारित्रमहित्रे मबे तोम प्रदक्षिणा करे करोने । जावतिविहाएपज्जुवासणाएपज्जुवासेंति । यावत् त्रिविध मन वचन कायाभो से वनाने नमो करावे वहुमोदे स्तोम भगे सेवावे उपासनाकरे । तएणथेराभगवता तेसिसमणोवासयाणतोसेयमहतिमहालियाए । तिवारे ते स्थविर भग वत ऐमवंत ते तेहने श्रमणोपासकोने यावतोमे ते सर्वोत्कृष्ट महतिमोटीमधा धमपर्वा तिर्थंकरो । चाउज्जामधम्मपरिकहेंति । चार महाव्रतरूपधर्म पार्श्वनाथना संतानियाह तेभणी कहे । जहाकेसिसामिस्स । जिम केसीकुमार श्रमणे वखो तिमवही । जावसमणोवासइत्ता । यावत् श्रमणोपासक श्राव कपणे पामी । आणाएआराहएभवइ आणधमाआराहिपो । आज्ञाने आराधक हुवे इस यावत् धमकहा धमे श्रमणोपासक ऊंगीकारकोधो । तएणतेसम णोवासका । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक ते । थेराणंभगवताण अंतिए । स्थविरने भगवंतने समीपे । धम्मंसोच्चा । त्रिविधधर्म सांभलीनेवली । निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियया । अतिघणे सम्यक प्रकारे अर्थपाम्या अर्थहृदयमेविषे निश्चयसे तेहना यस्तत सांभलवाने आदरखे तेहना ते यावत् हृदयमेविषे साधु उपदेश सांभलवाथी आयथया धम्ममानतावन्ता । तिक्खुत्तोआयाहिणपयाहिणकरेंति २ त्ता । तोमवार वोमनापामाणो प्रदक्षिणाकरे करीने ।

मायः ॥ पुव्वतवणति ॥ पूर्वतपः सरागावस्थाभावितपसा वीतरागावस्थापेक्षया सरागावस्थायाः पूर्वकालभावित्वात् एवंसयमोपि यथाख्या तचारित्रमित्यर्थः ततश्च सरागकृतेन संयमेन तपसा च देवत्वावाप्तिः रागांशस्य कर्मबन्धहेतुत्वात् ॥ कम्मियाएत्ति ॥ कर्म विद्यते यस्या सौ कर्मी तद्भाव स्तत्ता तया कर्मितया अन्यत्वापि कर्मणा विकारः कार्मिका तया अक्षीणेन कर्मशेषेण देवत्वावाप्ति रित्यर्थ ॥ संगियाएत्ति ॥ सङ्गो

तसमणायासए एयब्रयासी, पुव्वसजमेणश्रज्जो देवा देवलोएसु उववज्जति, तत्थण श्राणदरक्खिएनामथेरे तेस मणोवासए एयवयासी कम्मियाए श्रज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जति, तत्थण कासवेनामथेरे तेसमणोवासए एयवयासी संगियाए श्रज्जो! देवा देवलोएसु उववज्जति। पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए श्र

तसमणोवासए एववयासो। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहता हवा। पुव्वतवेणभज्जोदेवादेवलोएसउववज्जति। पूर्व तपेकरी महाभागो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे, पूर्वतप सरागभावे तपकरे, पूर्वमन्ह भा भवो? केकारवे वीतरागावस्थापेक्षावे सरागपणो तप पहिलो। तत्रतमेहलेखाम मणभज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जति। पूर्व सयमेकरी महाभागो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे एतले सरागकृत सयमेकरी तथा तपेकरी देवपणू पा मे रागांशने कर्म बन्धनाहेतुपणो एतले यथा ख्यातपणो सामायिकादि यथाख्यातचारित्रथी पूर्वले। तत्रतमाणदरक्खिरनामथेरे। ते साधुना समुदाय माहे मानंदरक्षितनाम स्थविर। तेसमणोवासए एववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहताहवा। कम्मियाएभज्जोदेवादेवलोएसउववज्जति। कमपणे कर्मनेविकारे महाभागो। साधु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे एतले समस्तकर्मक्षय थोयानथो कोईएककर्म शेषरह्याथी तिणेकरी देवथवे। तत्र संगियाएभज्जोदेवादेवलोएसउववज्जति। समेकरी महाभागो! स धु देवलोकनेविषे देवपणे ऊपजे मनुष्यादिकनेसमे वर्तता सरागपणो भवो कह्यादिमि कासवनामथेरे। तिहां साधुना समुदायमाहि काश्यपनामे स्थविर। ते समणोवासएएववयासी। ते श्रमणोपासक श्रावकाप्रते इम कहताहवा।

हायपज्जुवासणयाएत्ति ॥ इह पर्युपासनात्रैविध्य मनोवाकायभेदादिति ॥ महप्फलासिमाएत्ति ॥ आसमत्यपस्य स्वार्थिकत्वात् महासिमहत्या ॥ अणण्हयफलेति ॥ न आश्रवो ऽनाश्रव इतिपाठोपि दृश्यते अनाश्रवो नवकर्मानुपादान फलमस्यै त्यनाश्रवफलः संयमः ॥ वोदाणफलेति ॥ दा पूसयने अथवा दैपशोधने इतिवचनात् व्यवदान पूर्वकृतकर्मवनगहनस्य लवन प्राक्कृतकर्मकचवरशोधनंवा फल यस्य तद्व्यवदानफल तपइ ति ॥ किंपत्तियंति ॥ कः प्रत्यय कारणं यत्र तस्मि न्प्रत्ययं निकारणमेव देवा देवलोकेषु उत्पद्यन्ते? तपःसंयमयो सकरीत्वा तत्कारणत्वा दित्यभि

करेंडता एववयासी, सजमेण भंते! किंफले, तवेण भंते! किंफले? तएण थेरा भगवंतो तेसमणोवासया एववयासी, सजमेणअज्जो! अणण्हयफले, तएण तेसमणोवासया थेरेभगवंते एववयासी, जइणभंते! सजमेअणण्हफले, तवेवोदाणफले, किंपत्तियंभंते! देवादेवलोएसु उववज्जति? तत्थण कालियपुत्तेणाम अणगारेथेरे तेसमणोवासए एववयासी, पुव्वतवेण अज्जो देवा देवलोएसु उववज्जति, तत्थण मेहिलेनामथेरे

एव वदासी। हम वक्ताइवा। संजमेणभंतेकिंफले। संयमना हेभगवन्! पूज्य प्रपकहुवे। तवेणभंतेकिंफले। अने तपनो हेभगवन्! ए पूछकहुवे इतिम त्र। तएण तेथेराभगवंतो तेसमणोवासए। तिवारे तेस्थविर भगवंत श्रावक ते श्रमणोपासक श्रावकप्रते। एववयासी। इमकहे। संजमेणअज्जोअण ण्हयफले। संयमना भला भाई अनाश्रवफल एतावता नवा पापकर्म पारीये। तवेवोदाणफले। तपना पूर्वकृतकर्मनो छेदवो एतावता मूलमाकर्म छेदे। तएणंतेसमणोवासया। तिवारे ते श्रमणोपासकश्रावक प्रश्नना एहवा उत्तर सांभली। थेरेभगवंतेएववयासी। स्थविर ते भगवंतप्रते इम कहताहु या। जइणंभंतेसजमेअणण्हयफले। जो यं वाक्यालंकारे, हेभगवन्! संयमना अनाश्रव कहतां संवरफल नवें पापकर्म पारीये। तवेवोदाणफले। तपना पूर्व सचितकर्म छेदवा। किंपत्तियंभंतेदेवादेवलोएसुउववज्जति। किसेकारणे भंभवें हेभगवन्! देवता देवलोकनेविषे उपजे तपसंयमने उत रोतें तेहना अकारणभो इत्यभिप्राय। तत्थणकालियपुत्तेणामअणगारे। तिहां ते साधुना समुदायमाहे य वाक्यालंकारे, कालियपुत्र इसेनामे साधु।

पम्पाणिन म मझी तद्भाव माता तया मगितया द्रव्यादिपु सत्स्वपि सयमादियुक्तोपि कर्म्म बघाति तत सक्तितया देवत्वावाप्तिरिति ' भाइन- पुव्वतवसंजमाण्हों तिरागिणापच्छिमावरागस्स । रागोसंगोवुत्तो सयाक्कममन्नोतेर्ब ॥ १ ॥ सचेवमित्यादि ॥ सत्योपमर्थ कस्मा दित्याइ ॥ नोचेव

ऊो ! देया देयलोएसु उयवज्जंति , सच्चेण एसमठे नोचेयण आयजावत्तव्वयाए । तएण तेसमणोवासया थेरेहिं जगयतेहिं इमाइ एयारूयाइ यागरणाइ यागरिया समाणा हठतुठा थेरेजगवते वदंति णमसंति , यदइत्ता णमसइत्ता पसिणाइ पुच्छति , अठाइ उयादियंति , उठाएउठेंति , थेरेजगवते तिक्खुत्तो जाय वंदति णमसति , वदइत्ता णमसित्ता थेराणजगयताण अतियाउ पुप्फयईयाउ चेइयाउ पडिनिक्खमति , पडिनिक्ख

संयमरता मयमारियुमवता बमराचे देवो देवदूर्व । पयतवेव पुन्नसामर्व सम्ययाए । इम सरागसपेलागी सराम सयमेयारित्रेवारी कर्मसंगेपकारी । स निवाए । मनुष्य द्रव्यादि सकेकारो । पञ्चादेवादेवलोणमउववज्जति । भयामार्मी ! देवपर्ने देवत्वाकमेविपे उपजे । सत्येपसमर्थ । सांधू च वाक्यार्थकारे, एव पव ममसे एव पव यमाव वाच्याचे । भावेतत्पायमाववत्तव्ययाए । नही निचे च वाक्यासवारे, भात्मभाव वक्ष्यतावेकारी कथा, एतले भापणो अपभावे पर्भाव बुद्धि पर्बेनमी कथा एवपच परमावणी कथाचे एमर्व । तएणंतेसमणोपासया । तिवारे ते श्रमणोपासक श्रावक । थेरेहिंभगवते हिं । स्थविरे भगवते । इमाइएयारूवाइ । एव एताइनरूप । वागरणाइ वागरियासमाणा । प्रश्नाण्पच कथावको । हठतुठा । हर्षपाम्या । थेरेभगव तो । स्थविर भगवतमते । वसमंति वंदतिणंदित्ता । वांदे नमस्कारकरे वांदीने । णमंसित्ता । नमस्कारकरीने । पसिणाइ पुच्छति २ त्ता । प्रश्नप्रते पूछेप्रश्नप्रते पूछीने । अठाइ उवाद्दियंति २ त्ता । पूर्वोक्त अर्थपर्वे धार धारीने । उठाएउठेंति २ त्ता थेरेभगवंते तिक्खुत्तावंदति णमसंति २ त्ता । उठो उभाथाय उभाथ ने स्थविर भगवंत तेहाप्रते त्रणवार वांदे नमस्कारकरे वांदीने नमस्कारकरीने । थेराणंभगवताण । स्थविरने भगवतने । अतियाओ समीपथको । पुप्फ वतीयायोचेइयाणा । पधरतो नाम चैत्यथको । पडिनिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । जामेवदिसिंपाउब्भूया । जेदिसिथी आव्याहता । तामेवदि

कमित्यादि थ नैवा स्मनावक्तव्यतया उपमर्ने आत्मभावस्य स्वाभिप्रायएव न वस्तुतत्वं वक्तव्यो वाच्यो अभिमाना थैया ते आत्मभाववक्तव्या

महप्ता आमेवदिस पाउब्भूया तामेवदिसं पडिगया । तएण तेथेरा भगवतो श्रुमयाकयाइ तुंगियाउ नयरी उ पुप्फवइयाउ चेइयाउ पडिनिम्गच्छति , पडिनिग्गच्छइत्ता बहिया जणवयविहार विहरति , तेणका लेणं तेणसमएण रायगिहेनाम नयरे जाय परिसापडिगया , तेणकालेण तेणसमएण समणस्सभगवउ महा वीरस्स जेठेश्रुतेवासी इंदभूइणाम श्रुणगारे जाय संखित्तविउलतेउलेस्से छठछठेण श्रुनिक्खित्तेण तवोकम्मे ण संजमेण तवसा श्रुप्पाण भावेमाणे विहरइ , तएण सेभगवगोयमे छठक्खमणपारणयसि पढमाए पोरि

सिपडिगया । त दिगिने मार्गे पाछागया । तएवं तेथेरा । तिवारे ते स्थविरसाधु । श्रणगार । एकदा प्रस्तावे । तुंगियापा नगरीथी । तुंगिया नाम नगरी थकी । पुप्फवतियापा चेइयाथो । पुप्फवती नाम चैत्यथकी । पडिनिक्खमति २ त्ता । नीसरे नीसरीने । बहियाजणवयविहारं विहरति । बाहिर जनपद देशनेविषे विहारकरो विचरे एतावता बीजे स्थानकेजाय । तेणंकालेणं तेणंसमएण । ते कालनेविषे ते समयनेविषे । रायगिहेनामंन यरेहोत्था । राजगृहनामे नगर हूयो, तिहां श्रीवर्द्धमान स्वामी समोसर्या । जावपरिसापडिगया । यावत् पर्षदाश्रावी धर्मकथा परिषदा पाछीगई इत्या दि सर्वकहवा । तेणं कालेणं । ते कालनेविषे । तेणंसमएणं । ते समयनेविषे । समणस्सभगवश्रोमहावीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीनो । जेठे श्रंतेवासी । वडाशिष्य चेला । इंदभूतीनामंश्रणगारे । इंद्रभूती इसेनामे साधु इत्यादि । जावसंखित्तविउलतेउलेस्से । यावत् संक्षेपीछे विपुल मोटीतेजोलेश्या जेणे । छठ्ठछठ्ठेणं । छठ्ठछठ्ठ तपे पारणाकरेछे । श्रनिक्खित्तेणंतवोकम्मेणं । अंतरारहित निरन्तर इसाछ, तपकर्मेकरी । संजमेण तवसाश्रप्पाणं भा वेमाणेविहरइ । सत्तर सतरेभेद तप बारेभेदे ते सयमे तपेकरी आत्माप्रत भावताथका विचरेछे । तएणं सेभगवगोयमे । तिवारे तेभगवंत गोतम । छठ्ठखमणपारणगसि । छठभत्तना पारणानेविषे । पढमाएपोरिसीए । दिवसनी पहिली पोरिसीनेविषे । सज्झायंकरेइ । सज्झायकरे । बीयाएपोरिसी

न्नेषां भाव घात्समायवत्कमता मवमामिता तया मवप मवमानितयैव ग्रुमो पितु परमार्थपणा य मेयविध इतिजायना ॥ मतुरियाति ॥ कायिक स्थरारहित ॥ चपवर्सति ॥ मानसचापसर्वित ॥ घसंजतेति ॥ मसद्यामप्रानः ॥ परसमुदाबस्स ॥ गृहेषु समुदान जैच गृहमसुदान स्तस्मै गृहमसदा

सीए सज्झाय करेइ , बीयाए पोरिसीए झाण झियाए , तइयाए पोरिसीए श्चतुरियमचवलमसन्नते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ , पडिलेहेइत्ता भायणाइं वत्थाइं पडिलेहेइ , पडिलेहेइत्ता भायणाइं पमज्जइ , पमज्जइत्ता भायणाइं उग्गाहेइ , उग्गाहेइत्ता जेणेव समणेभगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ , उवागच्छइत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ , वंदइत्ता णमंसइत्ता एववयासी इच्छामिणंभंते ! तुब्भेहिं श्चब्भणुण्णाए समाणे छठक्खमणपारणयंसि रायगिहे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए श्चडित्तए ?

प । बीजो पारिसायें । ध्यानध्यावे । ध्यानध्यावे धर्मविचारे । तईबाएपारिसोए । त्रीजी पारिसी वर तिवारे । भतुरियमचवलमसंभतेमहपोत्तियंप डिलेहेइ २ त्ता । कायाय बरी उतावलाभरी मने चपलमरो पसंभ्रातभ्रम रहीत एतले अथवा पूर्वक हलवे २ मुख वस्त्रिकामतें पडिलेहे पडिलेहीने । भायणाइ वत्थाइ पडिलेहेइ २ त्ता । भाजन तीमपात्रा वस्त्र पडिलेहे पडिलेहीने । भायणाइ पमज्जइ २ त्ता । भाजन पात्रा प्रमार्जे पूंजे प्रमार्जीने । भायणाइ उग्गाहेइ २ त्ता । भाजनपात्रा ग्रहे ग्रहीने । जेणेवसमणे भगवंमहावीरे । जिहां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी । तेणेवउवागच्छइउवागच्छइत्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । समणं भगवं महावीर । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें । वंदइ णमंसइ २ त्ता । वांदे नमस्कार करे वांदीने नमस्कार करीने । एववयासी । इम कहताहवा । इच्छामिणंभंतेतुब्भेहिंअब्भणुणाएसमाणे । वांछुं छुं । हेभगवन् ! तुमने आज्ञादीधाथका एतले तुमारी आज्ञा थायतो । छठक्खमणपारणगंसि । छठक्षमणा पारणानेविषे । रायगिहेनयरे । राजगृहनामे नगरनेविषे । उच्चनीयमज्झिमाइंकुलाइं । उंच नीच मध्य म दिवस । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए । घरनेविषे समुदान ते भिक्षा तेहनेग्रहवे एतले आहारलेवानें भिक्षानेअर्थें फरुं विचरुं, एतेपूछ्या भगवंत

ञ्रहासुहंदेवाणुप्पिया मापकियंधं । तएणं जगवगोयमे समणेण जगवया महावीरेण ञ्रञ्रणुण्याएसमाणे सम णस्स जगवउ महावीरस्स ञ्रतियाउ गुणसिलाउ चेइयाउ पक्किनिस्कमइ, पक्किनिस्कमइत्ता ञ्रतुरियमच यलमसज्जंते जुगमतरपलोयणाए दिठीए पुरउरिय सोहेमाणे सोहेमाणे जेणेव रायगिहेनयरे तेणेव उयाग च्छइ उवागच्छइत्ता रायगिहेनयरे उच्चनीयमज्जिमाइं कुलाइं परघरसमुदाणस्स जिरकायरियं ञ्रमइ , तए णं सेजगवगोयमे रायगिहेनयरे जाव ञ्रममाणे वहुजणसद्दं निसामेइ , एवखलु देवाणुप्पिया तुंगियाए न यरीए वहिया पुप्फवईयाए चेइयाए पासावच्चिज्जा घेराजगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूयाइं वागर

वर्थे—पशासर्वसंवाउप्पियामापडिबंध । जिम सुखउपजे तिमकरा हेदेवानुप्रिय । वारेमा प्रतिवंध मकरस्यो व्याघात मकरस्यो । तएणभगवगोयमे । तिवारे भगवत गोतम । समणेणंभगवयामहावीरेणं । श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामी । भगपुणाएसमाणे । भाज्ञादीधाथका । समणस्सभगवओमहा वीरस्स । श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीना । भंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ । समीपथकी गुणशिलानाम चैत्यथकी । पडिनिक्खमइ २ त्ता । नीक ले नीकलीने । अतुरियमचवलमसंभते । उतावलकरी उतावलनथी मनेकरी चपलनथी असम्भ्रांत भ्रान्त नथा । जुगतरपलोयणाएदिट्ठीएपुरओरियंसोहे माणे । भ्रूमरी तेहमात्र धंसर मापयासरीर देश पर्यंतद्दष्टिपात तेहने अवधान दिशे जेहवी द्रष्टिकरी आगे इर्यासमिति सोधता पालताथका । जेणेव रायगिहेनयरे । जिहा रायग्रहनामा नगरछे । तेणेवउवागच्छइ २ त्ता । तिहां आवे तिहां आवीने । रायगिहेनयरे । राजग्रहनामा नगरनेविषे । उच्चनीयमज्झिमाईकुलाइ । उंच नीच मध्यम कुलनेविषे । घरसमुदाणस्सभिक्खायरियंअडइ । घरनेविषे समुदान भिक्षाभिक्षाचर्यां अटे फिरे । तएणं सेभगवंगोयमे । तिवारे ते भगवंत गोतम । रायगिहेनयरे । राजग्रह नगरनेविषे । जावअडमाणे । यावत् फिरताथका । बहुजणसद्दंनिसामेइ । घणा

प्रस्तावनति यामा वनामरज्ञनोक्ता तपा वृत्या ॥ रियति ॥ इयोगमर्म ॥ मेकहमेममसेएयति ॥ मय कथमेतत् स्यविरयचम मन्ये इति वितर्कार्यो

णाई पुच्छिया , मजमेणज्जंत । किफले तये किफले ? तएण तेथेरा नगवतो समणोवासए एव वयासी सज मेणाअज्जो ! अणण्हयफले , तये योदाणफले , तचेव जाय पुव्वतयेण पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो । देवा देवलोएसु उववज्जति , सच्चेण एसमठे णोचेयण आयभावचत्तव्वयाए । सेकह मेय मन्ने एव ? तएण नगवगोयमे इमीसकहाए लद्धठे समाण जायसढ्ढे जाय समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गिराहइ

मद्धसा मगवो वचम बांधमे । पवणमुदशापुच्छिया । इम मिवे देहेवामुमिय । संमियायचयरोप । तुंगियागाम मगरीने । वश्चियापुप्फवतोएचेइए । वाहिर पचवतोमामा चेवमरिवे । पामावच्चिमावेराभमवता । पावमामभा संतामिवा मग्मिथादिक स्थविर भमवंतमते । समणोवासएहिं । श्रमणो वावके नावके । इमार पवाचवार वागरवारपच्छिया । एवमा एताइमकप पासे कहसे ते प्रश्नगाथम पूच्छा ते कहेहे—संजमेषमंते किफले । संजमना देवलप मं पम । तवस्तिमने । तपमा मंपम । तएपथेराभमवंता । तिवारे ते श्रमण भगवंत । ते समणोवासए । श्रमणोपासक याव वाचने । एवमवाओ । इम बवता बवा । अजमेवपमा । नबमना पदोपार्यो । पचवरयफले तवेवोदाणफले । पनाग्रवफल मवा पावताकर्म वारीवे त पवा मूलमावअहेतोचे न पम । तचेवजावपुमतवेणपुमसजमेनकम्मियाए । इम तिमवोम बचवो, यावत् सराम तपेंकरो सरामचारित्रेकरों कमीय सेव एदा नवेंबरो । मतिवाएपमा । मनुष्य इम्याने मवेवरो पदापार्यो । देवादेवलाएसुउववज्जति । देवपने देवमोकनेविपे ऊपजे । सचेणएसमठे । सत्य प एव मवई पति । नाचावयायभावचमचाए । मनो मिवे न बाबामकारे भावनो कम्पनावे मवभावयुत पच्छेमवो ममा एमम परमावको बचा वे—मेकहमेमवेरा । दिवे विम ए मदिरमा वचममायोबे एवमा नितकरूपना इत्येषवारे वचजम बवा मनुचमा वचम वामभ्या । तपवमेभगवमीय ने । तिवारे न मवरन गोतम । इमोमेकदाएलदे अमावेआयसढ्ढे । एदवो कवावासो तेवमा भवनाधावको पतमे पवात वामभोमे जमनी ममा वाव्वा

गिएहइत्ता रायगिहाउ नयराउ पकिनिरकमइ श्रतुरिय जाव सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव सम
णे जगवमहावीरे तेणेवउवागच्छइ २ समणस्स जगवउ महावीरस्स श्रदूरसामते गमणागमणाए पक्कि
मइ एसणमणेसण श्रालोएइ, जत्तपाण पकिदसेइ २ समण जगव महावीर जाव एववयासी, एवखलु जंते!
श्रहंतुझेहिं श्रज्ञणुणाए समाणे रायगिहे नगरे उच्चनीयमज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स जिस्कायरिया
ए श्रमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ एवखलु देवाणुप्पिया तुगियाए नगरीए बहिया पुप्फवईए चेइए पासा

जेहने। जावमनुष्यनाउडके। यावत् जपना कोतुक भयरव जेहने। घरसमुदानसमुदायमेषइ २ त्ता। मथा पर्यास एतले भिक्षा आहार संपूर्ण ते म
तें घरे पहोने। रायगिहाथोनयरामापडिनिक्खमइ २ त्ता अतुरियचावलसोहेमाणे। राजग्रहनामा नगरथकी मोकले नोकलोने वायगो चपलपणानहो
मनथी उतावलानथी यावत् ईर्यासमिति साधतावका। जेणेवगुणसिलएचेइए। जिहां गुणसिलानाम चैत्यछे। जेणेवसमणेभगवंमहावीरे। जिहां श्रम
ण भगवत श्रीमहावीरस्वामीछे। तेणेवउवागच्छइ २ त्ता। तिहां आवे तिहां आवीने। समणस्सभगवयामहावीरस्स। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी
ने। श्रदूरसामते। घणुं वेगलानहो घणुं टुकडानहो। गमणागमणाएपडिक्कमइ २ त्ता। गमनागमन आसी आविवी आलोवे नियस थइने जेणोव वि
राधनाहइहूवे, ते सघलो पडिक्कमे पडिक्कमीने। एसणमणेसणआलोएइ। जे दोष घरे अथवा अघरे थयो तोदूषण आलोई। भत्तपाणंपडिदंसेइ। भा
त पांणो निर्दोष विहरी ते देखाडे देखाडोने। समणंभगवंमहावीर। श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीप्रतें वांदो। जावएववयासो। यावत् इम बोल
ताहवा। एवखलुभंतेअहंतुज्झेहिं। इम निश्चे हेभगवन्। हूं तुम्हे। अब्भणुणाएसमाणे। आज्ञादीधाछतां। रायगिहेनयरे। राजग्रहनामा नगरनेविषे।
उच्चनीयमज्झिमाणिकुलाणि। ऊंच नीच मध्यमकुलनेविषे। घरसमुदाणस्सभिक्खायरियाए अडमाणे। घरसमुदाय भिक्षा आहारनेविषे फिरतावका।
बहुजणसद्दंनिसामेइ। घणां मनुष्यनिमुखथी शब्द सांभल्या। एवंखलुदेवाणुप्पिया। इम निश्चे हेदेवानुप्रिय देवनावल्लभ ? तुगियाएनयरीएबहिया। तुंगिया

निपातः, एव ममुना प्रकारेणेति, बहुवचन ॥ पचूवति ॥ ममवः समयों से ॥ समियावंति ॥ सम्यमिति प्रशंसार्थो निपात स्तेम सम्यक्ते व्या कर्तुं म्हलंते भविपर्यासा स्तद्र्स्यर्थः समन्वलीतिवा ; सम्यञ्चः समितावा ; सम्यक् मवृत्तयः भमितावा म्यासवतः ॥ भाउज्जियत्ति ॥ भायोगिकाः

चञ्जिज्जा थेरा जगवतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया, सजमेण जंते ! किंफले, तवे किं फले ? तचेव जाव सञ्चेव एसमठे णोचेवणं आयजावयत्तञ्चयाए तपजूण जंते ! तेथेरा जगवंतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । उदाञ्ज, अप्पजूसमियाण जंते ! तेथेरा जगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । उदाञ्ज, असमिया आउज्जियाण जंते ! तेथेरा जगवतो तेसिं समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरित्तए । उदाञ्ज, अणाउज्जियापलि

नगरीने बाहिर । पुप्फवतीएचेइए । पचसयोनामा चैत्यनेविषे । पासावच्चिज्जा । पार्श्वनाथना सतानिया । थेराभगवंतो । स्थविर भगवत । समणोवास एहिं । श्रमणोपासके । इमाइं एयारूवाइं । मकन मवमिहित भाषोना वचनतत्त्व । पुच्छियाइपुच्छिया । मत्र हेय गेय उपादेय वस्तु पूछ्या । सजमेणंभंतेकिं फले । सयमनी हेभगवन् हेपूज्य ! स्यं फलहे ? तवेकिंफले । तपनो स्युंफलहे ? तचेवजावसच्चेवएसमट्टे । तिमहीज सयमसयो यावत् एपच सत्यहे सम मछे पषि । णोचेवणंआयभाववत्तव्वयाए । नथी गिवे व आमार्थनारि, पामवुधि करीने नथी कह्या एपर्वं । तपमूणंभंतेथेराभगवंतो । ते मयी प्रभू स मवहे हेभगवन् ! ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासयार्ण । ते श्रमणोपासक भगवंतोने यावकना । इमाइएयारूवाइ । ए सिखाम्योर्त वाणी मासिव रूप । वागरणाइं वागरेत्तए । मत्र अनावदेवाने पतावता स्थविर त यावकोना सदेह टालिवाने समर्थहे स्थाव । उदाञ्जुपप्पम् । पवला वे समर्थगयी थव बचनाने । समियाणंभंतेथेराभगवतो । भवीभांत अभ्यासवंत हेभगवन् ! स्थविर भगवंत । ते सिंसमणोवासयार्ण । तेश्रमणोपासकना । इमाइंए यारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । एहवा एतादृशरूप मत्र ते मतें जनावदेवाने । उदाञ्जुपसमिया । भवला समापर्व बचनाने समर्थगयी । आउज्जियार्ण

उपयोगयन्तो प्राणिनइत्यर्थः, आनमतीतिभाव ॥ पलिउज्झियत्ति ॥ परिसमन्तात् योगिकाः परिग्रामिमइत्यर्थ, परिआमन्तीतिभाव अमन्तर भ

उज्झियाण भंते ! तेथेराभगवंतो तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । उदाज्ञ, अणाउज्झिया पलिउज्झियाण भंते ! थेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाणं इमाइ एयारूवाइं वागरणाइ वागरेत्तए । उदाज्ञ, अपलिउज्झिया पुव्वतवेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसंजमेण कम्मियाए संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति, सच्चेणं एसमठे णोचेवण आयभाववत्तव्वयाए पभूण गोयमा ! तेथेराभगवंतो तेसिसमणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए णोअप्पभू तहचेव नेय

भंते । एवंवा उपयामवत प्रामवतके आर्येद्रे हेभगवन् । ते थेराभगवंता । ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ । एवंवा एताद्रशरूप । वागरणाइ वागरेत्तए । प्रश्न प्रते जवावदवाने । उदाहु पचाउज्झिया । अथवा उपयोगवतनहो आपेनहो । पलिउज्झियाण भंतेथेराभगवंता । जोपयवालो द्रव्या जिम द्रव्या सम्यकभावश्री एहवो आर्ये समस्तपणेआर्ये हेभगवन् ! ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासयाण । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । एहवा एताद्रशरूप प्रश्न प्रते जवावदेवाने । उदाहु अपलिउज्झिया । अथवा किंविशेष ज्ञानवतनहो । पुव्वतवेण पूर्वतपेदेवलोएसु उववज्जंति । पूर्वतपे एतले सरागतपे महोभार्यो ! देव देवलोकनेविषे उपजे । पुव्वसंजमेण । पूर्व सरागे सराग संयमे । कम्मियाए संगियाए । मेव कर्मीपणेकरी मनुष्य द्रव्यादिसंगेकरी । अज्जोदेवादेवलोएसु उववज्जंति । महोभार्यो ! देव देवलोकनेविषे उपजे सचेणंएसमठे । णोचेवण । णोचेवणंआयभाववत्तव्वयाए गोयमा । नहो निश्चे न आत्मासंबंधि भावभाव वक्तव्यताये अहंकृतिभावे यथार्थ कथा कहतिप्रश्न, समवत हेगोतम । तेथेराभगवंता । ते स्थविर भगवंत । तेसिसमणोवासयाणं । ते श्रमणोपासकना । इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ । एहवा एताद्रशरूप प्रश्न प्रते । वागरित्तए । जवाव देवाने । णोअप्पभू तहचेवनेयव्व । नहो असमर्थ इत्यादि, तिमहोज जाणवो । अवसेसियआयपभूमसिय

मवपयपासनासविधानञ मुक्त मय सा मत्कसा तदर्थनार्थमाह ॥ तहारूवमित्यादि ॥ तथारूप मुचितस्वजाव कम्लनपुरुपं श्रमणवा तपोयुक्त मुपमक्षणत्वा दस्यो त्तरगुणवन्तमित्यथ ॥ माहनवा स्वय हननमिवृतत्वा स्परम्प्रति माहनेति यादिम मुपलक्षणत्वा देव मूलगुणयुक्त मितिजाव

ह, श्रवसेसिय जाव पजूसमिय श्राउज्जियपलिउज्जिय जाव सञ्चेण एसमठे गोयेमण श्रायन्नायवत्तव्वयाए। श्रहपिण गोयमा ! एवमाइक्खामि जासेमि पन्नवेमि परूवेमि, पुव्वतवेण देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वसजमेण देवा देवलोएसु उववज्जंति, कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति, पुव्वतवेण पुव्वसजमेण कम्मियाए संगियाए श्रज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चेण

जाणता मय यावत् समय पय्यासवत। पाउब्धिव पलिउब्धिव। उपयोगवंत समस्तपणे उपयोगवत। श्रावसवेपएसमठे। यावत् मांदू एपव। श्रात्मवाप भावपत्तव्वयाए। नथी निचे च श्रात्मानेश्रारे, श्रात्मभाव वक्तव्यताये परबुद्धिभावे एपणवश्रा। श्रहंपिणं गोयमा। हु पणि हेगोतम। एवमाइक्खामि। एम कहुं छु। भासामि पम्नवेमि परूवेमि। माहरुं विशेषेकरी कहुं छुं प्ररूपुं छुं। पुव्वतवेणदेवादेवलोएसुउववज्जति। पूर्वतपे एतले सरागसयमे देवता देवलोकनेविषे उपजे। पुव्वसजमेण देवादेवलोएसुउववज्जति। पूर्वसंयमे सरागसयमे देवलोकनेविषे देवपणे उपजे। कम्मियाएदेवादेवलोएसुउववज्जंति। येद कर्मशेषकरी देवलोकनेविषे देवपणे उपजे। संगियाएदेवादेवलोएसुउववज्जति। मनुष्य १ आदिकनेसगे देवलोकनेविषे देवपणे उपजे। पुव्वतवेणंपुव्वसंजमेण। पूर्वतपे पूर्वसंयमे। कम्मियाए संगियाए। कर्मीम रह्याले तेणेकरी द्रव्यमनुष्यादि संगेकरी। श्रज्जोदेवादेवलोएसुउववज्जंति। श्रहोश्रार्यो! एतलेश्रावे देवता देवलोकनेविषे उपजे। सच्चेणएसमठे। साचुछे एपव। नाणेवयायभाववत्तव्वयाएतहारूवेयणंतेसमणंमाहणंवा पज्जुवासमाणस्स। न थी निचे एपण आत्मभावनाथी कह्यो परमावथी कह्यो नमस्करे साधुसेवा करतोथको। जिके ते सेवानोफल देवताफलनेविषे कहिये—तथारूप यो ग्य स्वभाववंत श्रावकारेस्वकारे, हेभगवन्! श्रमण तपयुक्त पाते हणवाथी निवृत्तथया धर्मरागे करी श्रयोमत तेश्रमणे भेवताने सेवा करतांने। किंफला

वागश्रीसमुचये ॥ अथवा श्रमणः साधु माहनः श्रावकः ॥ सवणफलेति ॥ सिद्धान्तश्रवणफला ॥ नाणफलेति ॥ श्रुतज्ञानफल श्रवणाद्धि श्रुतज्ञान-
फल भवति हि श्रुतज्ञान मवाप्यते ॥ विण्णाणफलेति ॥ विशिष्टज्ञानफल श्रुतज्ञाना द्धि हेयोपादेयविवेककारिविज्ञान मुत्पद्यत एव ॥ पच्चक्खाणफ
लेति ॥ विनिवृत्तिफलं विशिष्टज्ञानोहि पाप प्रत्याख्याति ॥ संयमफलेति ॥ कृतप्रत्याख्यानस्यहि संयमो भवत्येव ॥ अणण्हयफलेति ॥ अनाश्रवफ
लः संयमवान् किल नवं कर्म नो पादत्ते ॥ तवफलेति ॥ अनाश्रवोहि लघुकर्मत्वा त्तपस्यतीति ॥ वोदाणफलेति ॥ व्यवदानं कर्मनिर्जरण तपसा

एसमठे णोचेयणं श्रायजावयत्तमुयाए। तहारूवेण जते ! समणवा पज्जुवासमाणस्स किफला पज्जुयासणा ?
गोयमा ! सवणफला , सेण जते ! सवणे किफले ? णाणफले । सेणजंते ! नाणे किफले ? विण्णाणफले ।
सेण जते ! विण्णाणेकिफले ? पच्चक्खाणफले , सेणजते ! पच्चक्खाणे किंफले ? संजमफले । सेणजते ! संजमे
किफले ? अणण्हयफले , एव अणण्हए तवफले , तवे वोदाणफले , वोदाणे अकिरियाफले , सेणजते !

पर्युपासनावन्ता । पर्युपासकानां, एतत्फले साधुसेवा कीदृशा फल भवति । गौतमसत्वफला । हे गौतम ! सिद्धांत सांभलवानोहुइ । सेभंतेसवणे
किंफले साणफले । ते वा बायात्कारे, हेभगवन् ! सिद्धांत सांभलवानो किं फल थाय ? सांभलवानो श्रुतज्ञानप्राप्तिनो फल । सेभंतेणाणेकिंफले । ते च
भाषासकारे, हेभगवन् ! ज्ञान पाम्यानो किं फल थाय । विण्णाणफले । ज्ञानथी हेय ज्ञेय उपादेय विवेककारी विज्ञानफलहुइ । सेभंतेविण्णाणेकिंफले ।
ते वे वाक्यालंकारे हेभगवन् ! विज्ञानथी किं फल पामिये । पच्चक्खाणफले । विशिष्टज्ञानपाम्या पापनो पच्चक्खाणकारे ते फलहुइ । सेभंतेपच्चक्खाणेकिं
फले संजमफले । ते वे वाक्यालंकारे, हेभगवन् ! पच्चक्खाणनो किं फल थाय ? पच्चक्खाणथीसंयम पामिये तेफलहुवे । सेभंतेसंजमेकिंफले । ते वाक्या
लंकारे, हेभगवन् ! संयमनो किं फल थाय ? अणण्हयफले । संयमवंत नवाकर्म उपार्जनथी ते अनाश्रवफल । एवअणण्हएतवफले । एम अनाश्रवनो त
पफल लघुकर्मथवो तपकरवोहुइ । तवेवोदाणफले । तपथकी पुरातनकर्म निर्जरेछे इत्यर्थ । वोदाणेअकिरियाफले । पुरातन निर्जराथी क्रियारहित

हि पुरातन कर्म निज्जरयति ॥ अकिरियाफलेति ॥ योगनिरोधफल कर्म्मनिर्ज्जरातोपि योगनिरोध कुरुते ॥ सिद्धिपज्जवसाणफलेति ॥ सिद्धिस एव पर्यवसानफल मकलफलपर्यन्तवर्त्तिफलं यस्या सा तथा ॥ गाहत्ति ॥ सकृत्गाथा एतद्यर्थं चैत श्रिपमाचरपाद वेत्यादि अन्य शास्त्रप्रसिद्ध मिति तथा रूपस्यैव श्रमणादेः पर्युपासना यथोक्तफला भवति ना तयारूपस्या सम्यग्भापित्वा वित्य सम्यग्भापितामेव केषाञ्चि दृश्ययचाह ॥ अन्नउत्थियत्यादि ॥ पब्वयस्समहेति ॥ अवसा तस्योपरि पवतस्यर्थः ॥ हरएत्ति ॥ ह्रदः ॥ अघेति ॥ अघाजिधाम क्वचित्तु हरएति मद्वयते

अकिरिया किंफला ? सिद्धिपज्जवसाणफला पन्नत्ता गोयमा ॥ गाहा ॥ सवणेणाणेयविन्नाणे पच्चक्खाणेय संजमे । अणण्हएतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खंति भासंति प न्नवंति परूवंति एवंखलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे एत्थणं महं एगेहरए अप्पे पण्णत्ते, अणेगाइंजोयणाइं आयामविक्खंभेणं नाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए जाव पडिरूवे , तत्थणं बहवे उदारा बलाहया संसेयंति संमुच्छियंति वासंति तव्वतिरित्तेवियणं सयासमिउ उसिणे आउकाए

पूर्यागक थे। सेवभंतेअकिरियाकिंफला। ते हेभगवन्! अक्रिया किंफला ? सिद्धिपर्यवसानफला। सिद्धगमन समस्तफलसमाप्ति ले गा तत्क्षरा फल यतसे समस्तकर्मक्षयरूप मोक्षफलपामे। गौतम गाथा। हेगौतम! एहोज अर्थनो संग्रह गाथा कहेछे—सवणेणाणेयविन्नाणे पच्चक्खा णेयसंजमे अणण्हयतवेचेव वोदाणेअकिरियासिद्धी ॥ १ ॥ सेवाथी श्रवणफल १ श्रवणथी ज्ञानफल २ ज्ञानथी विज्ञानविशेषफल ३ विज्ञानथी विरतिरूप फल ४ पच्चक्खाणथी संयमफल ५ संयमथी अनाश्रवफल ६ अनाश्रवथी तपफल ७ तपथी व्यवदानफल ८ व्यवदानथी अक्रियासिद्धिफल । १ तथा रूप साधुनीसेवाथी यथोक्तफलहुवे, पणि अयथारूप नी सेवाथी नही विपरीतभावपणाथी तेमाटे विपरीतभावो केटलाएक देखाडेछे—अन्नउत्थियाणंभंते एव माइक्खंति भासंति पन्नवेंति परूवेंति। अन्यतीर्थी व आख्यानकारे, हेभगवन्! इसकहे सामान्यपणाथी कहे विशेषपणाथी कहे हेतुकरी कहे भेद

अपेक्ष्यमव स्वामे अप्येति दृश्यते तत्र प्राप्य आपां प्रभवः ह्रदएववेति ॥ उदारासति ॥ वसीर्माः ॥ बलाहयन्ति ॥ मेघाः ॥ संस्वेयतिति ॥ वर्षि यन्ति ॥ तत्पादाभिमुखीभवन्ति ॥ समुच्छंतिति ॥ सम्मूर्च्छन्सुत्पद्यन्ते ॥ तद्वहरितेयन्ति ॥ ह्रदपूरणा दतिरिक्तय उत्कलितहत्यर्थः ॥ आउयाएति ॥ अप्कायः ॥ पत्तिभिरसवहति ॥ पतिनिभवति वरति ॥ मिच्छतेएवमाइक्खतितित ॥ मिथ्यात्व चैतदाख्यानस्य विभङ्गज्ञानपूर्वकत्वा त्प्रायः सर्वे

अन्नउत्थियह्, सेकह मेयन्नते ! एवं ? गोयमा ! जणते अन्नउत्थिया एव माइक्खंति जाव जेते एवमा इक्खंति मिच्छंते एवमाइक्खंति, अहपुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भा० प० परू० एवखलु रायगिहस्स

करवेवारी थई। एवछतुराबमिहरसबयरस्थविवा। इम जिवे राजगृहनामा नगरने बाहिर। वैभारपर्वतसमीपे। वैभारनामा पर्वत छेठे। एतर्व महहरएअप्पेपत्ते। इहां च वाक्यालंकारे, मोटा एक द्रहछे जलना उत्पत्तिना कारण अप तिहांथको पांची भरीछेते द्रह। अनेगाइजोमबाद मा यामविक्खंभेण। अनेक योजन दोषपणे विपुलपणेछे। नाबाद्रुमखण्डमंडियउद्देसे। अनेक प्रकारनो वृक्ष बनखण्ड मंडित शोभित उदेश प्रदेश एहवो शो भा सहितछे। सस्सिरिए। पासादीयछे। आरुपडिरूवे। यावत् प्रतिरूप वारणा माफकछे एतव पाणया। ततथवणवेउराला। विशाल घना विस्तीर्ण। वसा हया। मघ वाहना। सभेयति समुच्छति वासति। अपजणने सनमृगदवेछे अपनेछे वरसेछे। तव्वतिरित्तेय सयासमियं २ उसिणेआउकाएअभिनि स्सिवइ। ते द्रहने भरीने अधिका पांणीहुवे ते पांणीनोव नवे भरे सदेव उपयातवंत उष्णयोनिका अप्काय एहवे द्रहना भरणाथी अधिको जाणवो निकल्या एहवा अप्काय ज्वेछे भरेछे। सेकहमेवंमतेएवं। ते किम एपवन हेभगवन्! इस इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा जणतेअन्नउत्थिया एवमाइक्खति। हेगौतम! जेमाटे ते अन्यतीर्थी भवयन अतिरिक्तमानताववा इम कहेछे—जावजेतेएवमाइक्खति मिच्छतेएवमाइक्खति। यावत् जिके इम कहेछे मि था भूठा एवचनने विभंग ज्ञान पूर्वक पणांथी मावे सर्वज्ञ वचनविरुद्ध पणाथी ते भूठो कहछे अन्यतीर्थीनामत निरास करवानेअर्थे प्रश्नने उत्तर करवेकरो गोतमप्रते श्रीमहावीरस्वामी इम कहेछे—अहपुण गोयमा एवमाइक्खामि। हुं वली हेगौतम। इम कहुं।भासेमि पन्नवेमि परूवेमि

प्रवचनविरुद्धत्वा द्यावहारिकमत्यतेव मायो म्यपोपतम्माद्या समन्तव्य ॥ मधूरसामंतेत्ति ॥ मातिदूरे नाप्यतिसमीपइत्यर्थः ॥ एत्यपति ॥ प्रज्ञापकेनो
पदश्यमाने ॥ महातवोवतीरप्पभवेनामंपासवणत्ति ॥ आतपइव आतप उष्णता महाश्चासा वासपयेति महातपो महातपस्य उपतीरं तीरसमीपे प्र

णयरस्स यहिया वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते एत्थण महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते, पचधणु
सयाइ आयामविक्खंभेणं नाणादुमखंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, त
त्थण बहवे उसिणजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति, तव्वति
रित्तेवियणं सयासमियं उसिणेउसिणे आउआए अभिनिस्सवइ, एसणं गोयमा! महातवोवतीरप्पभवे पा

माऊँ, एम प्रज्ञापक कहूँ, एम प्ररूपूँ। एवमहुरायगिहस्स बाहिर भेआरपर्वतनामा पर्वतने। अदूरसामंते एत्थण महातवोवतीरप्पभवेनामपासवणेपण्णत्त। अतिदूरनहीं अतिढूकडो नहीं एहवी जगां महातप अत्यंत उष्णता जेहनु ते आतप तीरने समीपे उपनावे ते महातपावतीरप्रभवनामे भरणानु भरणो छे ते झरणो। पांचसोधनुष्य आयाम लांबपणुं विष्कंभपहोळपणुं छे। नानादुमखंडमंडितडहसे। अनेकप्रकारना झाडना वनखंडथी शोभित प्रदेश छे। सश्रिरीए पासाईये दरसणिज्जे। शोभायमान मनप्रसन्नताय देखवा योग्य। अभिरूवे पडिरूवे ततपयइवे। अतिमनोहर प्रतिरूपछे देखता हर्षित पामीये तिहां बहुत्तावंतः,१। उसिणजोणिया जीवायपोग्गलायउदगत्ताएवक्कमंति। उष्णयोनिया जीव अपुन पुद्गल उदकपणे पाणीरूपे उपजे छे। विउक्कमति चयंति उववज्जंति। व्य [illegible] पामे छे। तव्वतिरित्तेवियणसयासमियं। ते शरीरने पाणी अविरतपणे ते पाणी सदासदैव समित। उसिणेउसिणेआउआएअभिनि स्सवति एसणं गोयमा। आतापकारी अप्काय झरे छे। ए कथाकारके, हे गौतम! ते पाणी निगम करे छे—महातपोवतीरप्पभवेपासवणेपण्णत्ते गोयमा। ए अध्ययन कहित आपस्य महातपोपतीरप्रभव अप्काय झरी जे तथा अजीव अनन्तरोक्त उष्णयोनिक इत्यादि हे गौतम। महात

प्रत्र उत्पादो यस्या सौ महातपोपतीरप्रभव प्रभवति परतीति प्रभवश्च प्रस्यन्दमहत्यय ॥ वाक्रमति ॥ उत्पद्यन्ते ॥ विसक्कमाते ॥ विनश्यन्ति एत सैव व्यत्ययेमाह व्ययन्ते उत्पद्यन्तेचेति उत्तमेवार्थं निगमयन्नाह ॥ एसणमित्यादि ॥ एपो मन्तरोक्तरूप एयवा मन्ययूथिकपरिकल्पिता प्यसक्ता महातपोपतीरप्रभवः प्रभवश्च उच्यते तथा मय योय मनन्तरोक्तः ॥ उसिणजोणिएइत्यादि ॥ स महातपोपतीरप्रभवस्य प्रभवपस्या र्थो ऽन्नियाना न्वयः प्रग्रहः ॥ इति द्वितीय शते पञ्चम उद्देश समाप्तः ॥ ५ ॥ पञ्चमोद्देसकस्यान्त मन्ययूथिकामिथ्याभाषिण उक्ताः मथ षष्ठे भाषास्वरूप मुच्यते, तम्र सूत्र ॥ सेनूणंभंतेमन्नामीति ॥ ओहारिणीभासत्ति ॥ सेशब्दो ऽथशब्दार्थे सच वाक्योपन्यासे नून मुपमामावधारणत क्रमश्रहेतुषु इहा धारणे मन्त्राइति मुर्वामन्त्रणे मन्ये मवबुध्यत इति एव मवधार्यते मवगम्यते ममये त्येव धारणी मववोधवीजभूतत्वर्थ न्नाप्यत इति भाषा तद्योग्यतया परिणामितनिसृष्टनिसृज्यमानद्रव्यसंहतिरितिहृदय एप पदार्थो ऽय पुन र्वाक्यार्थः मथ मवन्तएव मह मन्ये ऽवधयमवधारणीभाषेति एव ममुमासूत्रक्रमेणमापापद प्रज्ञापनाया मेकादश भणितव्य मिहस्थाने, इहच भाषाद्रव्यक्षेत्रकालभावैः सत्यादिभिय

सवणे , एसण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पन्नत्ते , सेवन्नतेभंते ! त्ति , भगवं गो यमे समणभगवं महावीर वंदइ नमसइ ॥ बिईयसए पचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ५ ॥ सेणूण

पाशतोरपभवपासवणस्स प्रपचते। महातपापतीरप्रभव प्रस्रवण झरणाना भववडा। सेवभंते २ त्ति । तहत्ति हेभगवन्। तुम कह्या ते सत्यछे। भ मवगोयमे। भगवत गौतम। समण भगव महावीर वंदइ नमसइ। श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांदे नमस्कारकरे। बितियसयस्सपंचमो। ए बीजा शतकना पांचमाउद्देसा पूराथया ॥ ५ ॥ पाछिले उद्देसे मिथ्याभाषीकह्या, तेमाटे भाषास्वरूप कहेछे—सेणूणभंते मन्नामो तिभाषारिणी भासा भाषापद भाणियव्व बितियसयस्सकहा। ते निश्च हेभगवन्। हमहमानू छूमोघए भाषाअववोध बीजभूत इत्यव मवधारं मवधारणी भाषा भाषीये ते भाषाकहीये इत्यंकारे सूत्रानुक्रमे पंनवणाना इग्यारमा भाषापदमाकह्या, इहांभाषा द्रव्य क्षेत्र काल भाव इत्यादिक भेदेकरी भमेरे

मरे रम्येव मनुनि पयापे निषायत ॥ इति द्वितीयशतेपष्ठम उद्देशः समाप्तः ॥ ६ ॥ ज्ञायायिशुद्धे देवत्व जवतीति देयो देशः समारभ्यते तस्यचद सूत्रं ॥ करणमित्यादि ॥ करकति ॥ कति दया आत्यपेक्षये तिमम्य कतिविधा देयाइति सूदय ॥ जहाठाणपएत्ति ॥ पया पस्त्रकारा पादूनी प्रज्ञापनाया द्वितीयेस्थानपदाख्ये पदे देवानां वक्तव्यता सेति तथा प्रकारा जविसव्यति नवरं ॥ भवणापन्नत्तति ॥ क्व निवृत्ते तस्यच चनं भ मम्य भवमम्यते दयवक्तव्यतावैव ॥ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एग जोय

जंत ! मणामीति उंहारणीजासा , जासापद जाणियव्व ॥ बिइयसए छठोउद्देसो सम्मत्तो ॥ ६ ॥
कइयिहाणजते ! देवा पणत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा देवा पणत्ता तंजहा—जवणवइवाणमंतर जोइसवेमा णिया । कहिणजते ! जवणवासीण देवाण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! इमीसेरयणप्पजाए पुढवीए जहाठा णपदे देयाण वत्तव्वया सा जाणियव्वा , नवर जयणा पणत्ता , उववाएण लोयस्स असंखेजइजागे , ए

वमे पर्वातेसरो निवारिवे । इति ए बीजा शतकमा बहा उदेशा पूरोथया ॥ ६ ॥ भाषा विशुद्धयी देवतापुवे, तेमाटे सातमो उद्देशो देवता कहे छे—कइयिहादेवापन्नता । केटला हेभगवन् । कति प्रकारे देवताकह्या, अर्थात् केटलेभेद देवकह्या इतिप्रश्न । गोयमा चउव्विहादेवा पन्नत्ता तंजहा भवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया । हेगौतम ! चारभेदे देवकह्या ते कहे छे—भवनपती १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी ३ वैमानिक ४ । क हिणभंतेभवणवासीण देवाण ठाणा पन्नता गोयमा । किहां हेभगवन् ! भवनपती देवना स्थानक कह्या इतिप्रश्न हेगौतम ! इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए जहाठाणपदेदेवाणवत्तव्वयासाभाणियव्वा नवरंभवणा पन्नत्ता उववाएणंलोगस्स असंखेज्जइभागे एवंसव्वंभाणियव्वं । एणीज रत्नप्रभानाम पृथिवीनेविषे इत्यादि जहा ठाणपदेति यथा जेहवो पन्नवणा सूत्रना बीजा स्थान पदनेविषे देवनोवक्तव्यताछे सेति तेहवो कहवो नवर भवना पन्नता ए पाठवडे ते हमाहे भणीतरे न जाणिये ते कहता इमके पारप्रभा पृथिवीनेविषे एकलाख असीहजार योजन जाडपणा छे तेमांहे ऊपर एक एक हजार योजन वर्जीने

गमइरम मुंमाशिता दिकाचेर्ग आयवनाइरलं यत्रेता मळे भठइतर ओयवसयसहस्से इत्यर्थ भवणवासीण देवाण सत्तमयकोडीओ वावत्तरिं च भ
ममवाममपनइरमा भवनीति मकार्य इत्यादि तद्रतमेवा जिपेयविशेषं विशेषेण दयायति ॥ उववाएणं लोयस्स असंखेज्जभागेसि ॥ उपपातो भ
वमपतिनस्थानमास्याभिमुख्यं तेन उपपात माश्रित्यत्यथ लोकस्या सङ्ख्येयतमे भागे वर्तन्ते भवनवासिनइति ॥ एव सद्य मासियप्रति ॥ एय मु
त्स्यापेमा मद्यपि भवितव्यं तथर-समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे मारणान्तिकादिसमुद्घातवर्तिनो भवमपतयो लोकस्या सङ्ख्येयएवजागे व
र्तन्ते तथा ॥ सठाणेणं लोयस्स असंखेज्ज भागे स्वस्थानस्यो सप्तयमायासातिरेककोटीसप्तकसयवस्य लोकासङ्ख्येयजागवर्तित्वादिति एव असु
रकुमाराणां एवं तथामेव दाक्षिणात्यानां मौदीच्यानां एवमागकुमारादिभवनपतीनां यमी चित्येभ व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां वैमानिकानां च स्था
नानि वाच्यानि किमहूरं यावदित्याह यावत्सिद्धगण्डिकासिद्धस्थानप्रतिपादनपरं प्रकरणं तावेव ॥ कडियं भते । सिद्धाणं ठाणा पन्नता इत्या
दि इदम स्थानाधिकारप्रसिद्धगण्डिकाभिधानं तत् स्थानाधिकारवता दित्यवसेय तथेद मपरमपि जीवाभिगमप्रसिद्ध वाच्य तद्यथा—म

यं सद्य नाणियव्व , जाय सिद्धगण्डिया सम्मत्ता । कप्पाणपइठाण बाहल्लुच्चत्तमेवसठाण ॥ जीवाभिगमे जा

मध्ये दसनाश पण्यातर मइस योजन पिडहे इहां भवनपती देवतामा सातक्रोडो बहुतरलाख भवनकह्या, बसो विशेष कहीछे—भवनवासीना भवन
पती उपजवा आश्री आवने असंख्यातमेभागे उपजाके इम उत्पन्नावेकरी भवनीजू पणि कहवो, ते इम समुग्घाएण लोगस्स असखेज्जइभागे, मारणां
तिकसमुद्घात वर्तो भवनपतीआवने असंख्यातमेभागे वर्त्तेछे तथा समुद्घायेणंलोगस्स असखेज्जइभागे, स्वस्थान सातक्रोडो बहुतरलाख भवन कह्या ते आ
वने असंख्यातमेभागे वर्त्तेछे इम असुरकुमारना इम तेहमांज दक्षिणना उत्तरना इम नागकुमारादिक भवनपतीना तथा व्यन्तरना तथा ज्योतिषी
ना तथा वेमानिकना स्थानक कहवा। जावसिद्धिसंडियासमत्ता कप्पाणं पइठाण । यावत् सिद्धिगंडियत्ति, सिद्धस्थान प्रतिपादक प्रकरणतांई कहवो,
ते इम किहा इमकयम् । सिद्धाण्यानकह्या इत्यादि, इहां देपस्थानाधिकारवडो सिद्धिगण्डिकानाम ते स्थानक सांपणा जीवाभिगम उपांगनो ए गाथा

प्याकपदठाणं कल्पविमानाना माधारो वाच्यइत्यर्थः सवैव सोहम्मीसाणेसुणं भंते कप्पेसु विमाणपुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता । गोयमा ! घ णोदहिपइट्ठिया पण्णत्ता इत्यादि आह च-घणउदहिपइठाणा सुरभवणाहोंतिदोसुकप्पेसु । तिसुवाउपइठाणा तदुभयसुपइठियातिसुय ॥ १ ॥ तव परंउवरिमगा आगासंतरपइठियासव्वेत्ति ॥ तथा ॥ बाहल्लेति ॥ विमानपृथिव्याः पिंडडोवाच्यः सवैवं—सोहम्मीसाणेसुणं भंते । कप्पेसु विमाणपु ढवी केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्ता वीस जोयणसयाइं इत्यादि ॥ आह च—सत्तावीससयाइं आइमकप्पेसुपुढविबाहल्लं । एक्केक्कहाणिसेसे दुदुगयदुगचउक्केय ॥ १ ॥ ग्रैवेयकेषु द्वाविंशति योजनाना शतानि अनुत्तरेषु त्वेकविंशतिरिति ॥ उच्चत्तमेवत्ति ॥ कल्पविमानोच्चत्वं वाच्यं, तत्रैव— सोहम्मीसाणेसुणं भंते । कप्पेसु विमाणा केवइयं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचजोयणसयाइं इत्यादि आह च—पंचसयउच्चत्तेणं आइमकप्पेसुहोंति विमाणा । एक्केक्कवुड्डिसेसे दुदुगेयदुगेचउक्केय ॥ १ ॥ गैवेयकेषु दशयोजनशतानि अनुत्तरेषु एकादशेति ॥ संठाणंति ॥ विमानसंस्थानं वाच्यं तत्रैव—सोहम्मीसाणेसुणं भंते । कप्पेसु विमाणा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! जे आवलिया पविट्ठा ते वट्टा तंसा चउरंसा जे आवलिया बाहि

बगाणोतेवे, कल्पविमाननो आधारकहवा ते इम सोधर्म ईशाननेविषे हेभगवन् ! कल्पनेविषे विमान पृथिवी कोनाआधारछे हेगोतम ! घनोदधि प्रति ष्ठितकही इत्यादि । यावत्सर्वमवसठाण । विमान पृथिवीनो पिंड कहवो, ते इम हेभगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमानपृथिवी केतले बाह ल्यपणें कही हेगोतम ! सत्तावीससय योजन इत्यादि उच्चत्व कहवा, सौधर्म ईशान देवलोकनेविषे विमान केतला उच्चपणेंकह्या, गोतम पंचसय योजन इत्यादि तथा संठाणत्ति विमाननो संठाण कहवा, ते इम सौधर्म ईशानना विमान किं आकारेछे गोतम जे आवलिका प्रविष्टछे ते वृत्त त्र्यंस चउरंस आठ मांहे जे आवलिका बाहिर ते नाना प्रकार संठाणेछे । हिवे कह्या अथवा मेव देखाडेछे—जोयाभिमनेकाक्केमादिबयडे साभाविय्यो । बाव वेमा

रा ते णायासंठियत्ति उक्तार्थस्य ग्रप मतिदिशन्नाह ॥ जीवाभिगमेइत्यादि ॥ अथ विमानानां प्रमाणवर्णप्रभागंधादिप्रतिपादनार्थः ॥ इतिद्वितीय शतेसप्तमः ॥ ७ ॥ अथ देवस्थानाधिकारात् चमरचंचाभिधानदेवस्थानादिप्रतिपादनाया अष्टमोद्देशक स्तस्य चेद सूत्र ॥ कहिणं भित्यादि ॥ असुरिंदस्सत्ति ॥ असुरेन्द्रस्य स चेश्वरतामात्रेणापि स्यादित्याह असुररायस्य तथावर्यसुरनिकायस्येत्यर्थः ॥ उप्पायपव्वएत्ति ॥ तिर्य

य वेमाणिउद्देसो भाणियव्वो ॥ विईयसए सत्तमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ७ ॥ कहिणंभंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सभासुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता अरुणवरदीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो तिगिच्छिकूडेनाम उप्पाय

विय सब विमानना प्रमाण वर्णप्रभा गंधादिप्रतिपादक वैमानिक उद्देशो जाणवा । वितियशतकसप्तमशो । एवीजा शतकना सातमा उद्देशा टब्बाथो लिख्यो । ७ । पाछिले उद्देशे देवस्थानाधिकार कह्यो, इहां चमरचंचाभिधान देवस्थानाधिकार कहेछे—कहिणंभंते चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सभासुहम्मापण्णत्ता । किहां च कहणाहारे, हेभगवन् । चमरेंद्र असुरेंद्रनी असुरकुमार राजा वलियवर्त्तीछै असुरनिकाय छै इने तेहनी सभासुधर्मा कही इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जंबूदीवेदीवेमंदरस्सपव्वयस्सदाहिणेणं । हेगोतम । जंबूदीपनामा द्वीपनेविषे मेरुनामा पर्वतने दक्षिणपासे । तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्दे वीतीवइत्ता अरुणवरदीवस्स । तीछा असंख्याता द्वीप तथा समुद्रप्रते अतिक्रमीने जाईने अरुणवरद्वीपनो । बाहिरना वेइयंताओ । बाहिरलो वेदिकाथी । अरुणोदयंसमुद्द । अरुणोदकनामा समुद्रनेविषे । बायालीसजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ताए । बायालीस सहस्रयोजन अवगाहीने जाईने । एत्थणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो । इहां ए आधारे, चमरेंद्रना असुरेंद्रना असुरकुमार राजानो । तिगिच्छिकूडेनामउप्पायपव्वएपण्णत्ते । तेगिच्छिकूटनामे तिरछाथी आववाने जिहां आवीने वैक्रियशरीरकरी जाय आवे ते कह्यो । सत्तरसएक्कवीसजोयणसएउड्ढंउ

ग्लोकगमनाय यत्रा गत्यो त्पतति स उत्पातपर्वतइति ॥ गोथूभस्सेत्यादि ॥ तत्र गोस्तुभो लवणसमुद्रमध्ये पूर्वस्यां दिशि नागराजावासपर्वत स्त स्यादिमध्यान्तेषु विष्कम्भप्रमाणमिदं—कमसोविक्खम्भोसे दसवावीसाइजोयणसयाइ १। सत्तसएतेवीसे २ चत्तारिसएयचउवीसे ३ ॥ १ ॥ इहैव विशे षमाह ॥ नवरमित्यादि ॥ तत यद मापत मूलेदसबावीसे जोयणसएविक्खम्भ। मज्झेचत्तारिचउवीसेउवरिंसत्ततेवीसे ॥ १ ॥ मूले तिन्नि जोयण सहस्साई दोन्निय बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं मज्झे एग जोयणसहस्स तिन्निय इगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खे

पन्नए पन्नत्ते , सत्तरसएक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोसच उव्वेहेण गोथूभ स्स आवासपव्वयस्स पमाणेण णेयव्व , नवर उवरिल्ल पमाण मज्झे नाणियव्व , मूले दसवावीसे जोयण सए विक्खम्भेण, मज्झे चत्तारिचउवीसे जोयणसए विक्खम्भेण , उवरिंसत्ततेवीसे जोयणसए विक्खम्भेण , मू ले तिन्निजोयणसहस्साइ , दोन्नियबत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण , मज्झे एग जोयणस

वत्तेवं। सतरेसे एकवीसयोजन १०२१ ऊचा उंचपणेछे। चत्तारितीसेजोयणसए कोसचउव्वेहेण गोथूभस्सआवासपव्वयस्सपमाणेणेयव्व। चारिसे तीस योजन ४१ धने एककोस धरतीमाहे ऊडा लवणसमुद्रनेविषे पूर्वदिशि नागराजनो आवासपर्वत तेहना प्रमाणसरीखो जाणवा तेहनो प्रमाण यादि एकसहस्र बावीसयोजन मध्ये सातसे तेवीस योजन ऊपर चारसे चउवीस योजन ते इहां पणि जाणवो। नवरउवरिल्लपमाणमज्झे भाणियव्व। एतलो विशेष गोथूभपर्वतनेविषे जे मान ऊपरकह्याछे ते मान तमिसिह्वकूट पर्वतनेविषे मध्यभागे जाणवा एतोज विशेषछे—मूलेदसबावीसेजोयणसएविक्खम्भेणं। मूले एकसहस्र बावीस योजन विस्तारछे १ २२। मज्झेचत्तारिचउवीसेजोयणसएविक्खम्भेणं। मध्यभागे चारसे चउवीस योजन विस्तारछे ४२४। उवरि सत्ततेवीसेजोयणसएविक्खम्भेणं। ऊपरि सातसे तेवीस ७२३ योजन विस्तारछे। हिवे परिधि कहेछे—मूलेतिन्निजोयणसहस्साइं। मूले तीनसहस्र योज न। दोन्नियबत्तीसुत्तरेजोयणसए। दोयसेबत्तीस योजन। किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेण मज्झेएगंजोयणसहस्स तिन्नियइगयालेजोयणसए। कांइक विशेषो

वेम उवरि दाहिणेयसहस्साई दोन्निमवलसीए आयमसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पुस्तकान्तरे स्वेतस्सकल मस्त्येवेति ॥ वरवइरविग्गहि एति ॥ परवज्रस्येव विग्रह आकृति यस्य स स्वार्थिकप्रत्यये सति वरवज्रविग्रहिको मध्यक्षाम इत्यर्थः एतदेवाह ॥ महामउदेत्यादि ॥ मुकुंदो वा घविमय ॥ पच्चेति ॥ स्वच्छ आकाशस्फटिकवत् यावत्करणा दिदंदृश्य, सण्हे सण्हः, श्लक्ष्णपुद्गलनिर्वृतत्वात् लण्हे, मसृणः, घट्ठे घृष्टइ व पृष्ठः खरशाणया प्रतिमेव मट्ठे मृष्टइव मृष्टः सुकुमारशाणया प्रतिमेव प्रमार्जनिकयेववा। शोधितो ऽतएव नीरए नीरजा रजोरहितः, नि म्मले कठिनमलरहित, निप्पंके आर्द्रमलरहितः निक्कंकडच्छाए निरावरणदीप्ति सप्पभे समप्रभावः, समिरिईए, सकिरणः, सउज्जोए, प्रत्यासन्नवस्तूद्योतकः पासाइए ४ ॥ पउमवरवेइयाए वण्णओस्सय वक्तव्यस्सय वक्तव्यति ॥ वेदिकावर्णको यथा—साव पउमवरवइया अद्धं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं

हस्स तिणियइगुयाले जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, उवरिं दोण्णियजोयणसहस्साइं दोणियछल सीए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, जाय मूले वित्थिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पि विसाले, मज्झे वरव इरविग्गहे, महामउदसंठाणसंठिए, सव्वरयणामए, अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए थण

स परिधि जाणवा विशाले एकसहस्र तीनसे इकतालीस १३४१ योजन। किंचितविसेसूणपरिक्षेवेण। कांइक विशेषो ऊणपरिधे जाणवो। उपरिदोवि सहस्र जोयनसहस्साइ। ऊपरि दोय सहस्र योजन। दोणियछसीएजोयणसए। दोयसे छियासी २८६ योजन। किंचिविसेसाहियपरिक्खेवेण। कांइक वि शेषा मपरिधे जाणवा। जावमूलेवित्थिन्नेमज्झेसंखित्त। यावत् मूलनेविषे विस्तारवंत मध्यभागे सांकडा। उप्पिविसालेमज्झेवरवइरविग्गहे। वली ऊ ऽव विस्तीर्ण जिहांमि प्रधान वज्रनोपरे आकारछे जेहना एतलेविषे सांकडाछे पछोल ऐसाछेव। महामुउदसंठाणसंठिए। माटाछे मृदंग वाद्य विशेष तेहने संस्थाने रह्याछे। सव्वरयणामए अच्छेजावपडिरूवे। सर्वरत्नमयछे अच्छ निर्मल आकाश स्फटिकनोपरे यावत् शब्दथी सण्हे घट्ठे मट्ठे इत्यादि, प्रतिरूप नाहिं कहना। सेणएगाएपउमवरवेइयाएगेणयवणसंडेणसव्वओसमंतासंपरिक्खित्ते पउमवरवेइया एगपक्खवणसंडयवसमो। ते तिगिंछिकूटपर्वत एक पद्मवरवेदिका

पवपणसयाई विक्खंभेणं सव्वरयणामई तिगिच्छकूडउवरितलपरिक्खेवसमापरिक्खेवेणं तीसेणं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते वण्णओ व्यामा वण्णकविस्तरः वइरामयानेमाइत्यादि ॥ नेमत्ति ॥ सामानां मूलपादा नवरं, वणसंडवण्णेण रयण–सेम वयणाई देसूणाई दो जोयणाई चक्क वालविक्खंभेणं पउमवरवेइयापरिक्खेवसमे परिक्खेवेणं किण्हे किण्होभासे इत्यादि ॥ बहुसमरमणिज्जत्ति ॥ अत्यन्तसमो रमणीयश्चेत्यर्थः ॥ यावत् करणात् ॥ वण्णओ तस्य वाच्यः सचाय–से जहानामए आलिंगपुक्खरेइवा आलिंगपुष्कर मुरजमुख तद्वत्समइत्यर्थः मुइंगपुक्खरेइवा सरतलेइवा करतलेइवा आयंसमंडलेइवा चंदमंडलेइवेत्यादि ॥ पासायवडिंसएत्ति ॥ प्रासादो ऽवतंसकइव शेखरकइव प्रधानत्वा त्प्रसादावतंसकः ॥ पासाय

सकेणयसव्वठसमंता संपरिक्खित्ते, पउमवरवेइयाए वणसंडस्सयवण्णओ, तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स उप्पाय पव्वयस्स उप्पि बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, वण्णओ, तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं महं एगे पासायवडिंसए पण्णत्ते, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं जोयणसयाइं वि

एक एक पद्मवरवेदिका, तिहां पद्मवरवेदिका अने वनखंड सर्वोपरि बेहुय विष्कंभ सर्वरत्नमय छे ते वेदिका तेगिच्छिकूट पर्वतना ऊपरलो तलो तेहनेप रिक्षेपरे वीटी रह्यो छे ते पद्मवरवेदिका पहवो छे सेपउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते। वर्णव्यास। वर्णक विस्तार। वइरामया नेमा इत्यादि नेमा कांमाना मूलपाया वर्णक कहवो ते वनखंडने कांइक ओछा दोय योजन चक्रवाल विष्कंभे, पद्मवरवेदिका वीटीरह्यो छे इत्यादि। तस्सणंतिगिच्छिकूड उप्पायपव्वयस्स उप्पि बहुसमरमणिज्जेभूमिभागे पण्णत्ते वण्णओ। तेहने तिगिच्छकूट पर्वतने ऊपर घणुं समतल सरीखो रमणीक मनोहरभूमितल कह्यो तेहनो वर्णक इम कहवो, सेजहानामए आलिंग पुक्खरेइवा, मुरजवाद्य विशेष तेहना मुख सरीखो सम इत्यादि वर्णक कहवो। तस्सणंबहुसमरमणि ज्जस्सभूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए। तेहने बहु समरमणीक भूमिभागनेविषे घणुं मध्यदेशभागनेविषे एतले विचाले इहां। एत्थणंमहंएगेपा सायवडिंसएपण्णत्ते। इहां ए वाक्यालंकारे, मोटो एक प्रासादावतंसक प्रासादमांहे प्रधानपणाथी मुकुटसरीखो प्रासादछे। अड्ढाइज्जाइंजोयणसयाइं

यमनुत्ति ॥ प्रासादवतको माष्य: सर्वैर्व–मङ्गगयमूसियपडमिए यभ्युद्गत मत्तोद्गतेवा यथा जव त्वैव मुच्छितो उयवा मकारस्या गमिकत्वा
त् यभ्युद्गत मामावृच्छित येत्यभ्युद्गतोच्छितः मत्ययमूवत्ययः प्रथमैवत्वमलोप यात्र दृश्यः, तथा महसितहव प्रमापटलपरिगततया महसि
ता प्रजया यामिताः शुक्लः सम्वद्धोवा प्रनासितइति ॥ मविकचमरयवजतिविते ॥ मविकनकरत्नानां पत्तिभि विच्छिलिनि इ चित्रो विचित्रो यः
म तया इत्यादि ॥ उल्लोयमूमियवण्णुत्ति ॥ उल्लोकवधक प्रासादस्यो परिमागवर्णक सर्वैर्व–तस्सणं पासायवडिसगस्स इमयारूवे उल्लोए पन्नत्ते प

एक्तेण, पासायवन्नठं, उल्लोयनूमियवन्नठं, श्रठजोयणाणि मणिपेढिया, चमरस्स सीहासण सपरिवार न्ना
णियद्, तस्सणं तिगिच्छिकूडस्स दाहिणेणं छक्कोडिसएप णवणउचकोडीद पणतीसचसयसहस्साइ पन्नासच
सहस्साइ जोयणाइं श्ररुणोदए समुद्दे तिरिय वीतिवइत्ता श्रहे रयणप्पनाएपुढवीए चन्नालीस जोयणसह

वहह सयसव। पचर्वेसे योजन २१ जया संचपर्वेई। पचवीसंजोयणसयं विषयमेव पासायवधयों। एवसो पचवोस योजन १२५ विपुलपर्वेई मासा
दमा वचह चहवा, ते इम पद्मुमवमूसिवपडसिए। पतिशी जया हवव, इत्यादि। उलाव भूमिवधयो महुआमयाविमविपेठया चमरस्यसीहासर्व स
परिवारं भाविवाय। मामाएला अपरिभामला पचवा ते इम—तस्सवपासायवडिमवस्स इसेएयाकवे उल्लोएपचत्ते पउमसयमत्तिचित्ते जावसव्वतवणिज्जम
ए पचवेत्रावपडिरूवे इत्यादि उल्लोकवधक तथा भूमिवधक तेइम—तस्सवपासावडिंसयस्स बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पचत्ते पालिंगपुक्खरेइवा इत्यादि,
पाठ पाउसनो मणिपीठिकावैं, चमरसंबंधो परिवारना सिंहासन सहित कहवा ते इम—तस्सवसिंहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तर पुरच्छिमेणं एत्यवं चम
रस्स चसमोप मामाणियमाहस्सोएणं चउसट्ठीभद्दासणसाहस्सोभो पचत्ताभो इत्यादि। तस्सर्वतिगिच्छिकूडसदाहिणेणं। तेहने यं वाक्यालंकारे, ति।
गिच्छिकूट उत्पातपर्वतने दक्षिणदिशि। छक्कोडिसएयचचपचउकोडोभो। छसय कोडी पचावनकोडी। पचतीसंचसयसहस्साइं। पेंतोसलाख। पचासस
हस्साइं जोयणाइं। पचास सहस्र एतला योजन। पचणोदयेसमुद्रे। अरुणोदयनामा समुद्रमेविषे। तिरियंवोतिवइत्ता। तिरछा अतिक्रमता जातावको

उमसपज्ञतिचित्ते जाव सव्वतविक्कमए मध्ये चावपठिरवे, भूमिवर्णेव स्वेवं–तस्सवं पासायवडिंसयस्सबहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते तंजहा था
तिमपुस्करेरवेत्यादि ॥ सपरिवारत्ति ॥ चमरसम्बन्धिपरिवारसिंहासनोपेतं तत्रैव–तस्सव सीहासवस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण चम
रस्स चउसट्ठीए सामाणिय साहस्सीणं चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ एव पुरच्छिमेण पचवइ अग्गमहिस्सीणं सपरिवाराण पचभद्दासणा
इं सपरिवाराइ दाहिणपुरच्छिमेणं अभ्भितरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीणं चउव्वीस भद्दासणसाहस्सीओ एव दाहिणेण मज्झिमाए च
ठावीस भद्दासणसाहस्सीओ दाहिणपच्चच्छिमेण बाहिरियाए बत्तीस पच्चच्छिमेण सत्तण्हं अणियाहिवईणं सत्तभद्दासणाइ चउद्दिसिं आयरक्खदेवा
ण चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओत्ति ॥ तत्तीसं भोमत्ति ॥ वाचनान्तरे दृश्यते तत्र भौमानि विशिष्टस्थानानि नगराकाराणीत्यन्ये ॥ उवरि
यतलेणत्ति ॥ गृहस्य पीठबन्धबन्धं ॥ सव्वप्पमाणं वेमाणियपमाणस्स अद्धं नेयव्वंत्ति ॥ अयमर्थो यत्तस्यां राजधान्यां प्राकारप्रासादसमादि वस्तु तस्य

स्साइ उग्गाहित्ता, तत्थण चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचचानाम रायहाणी पण्णत्ता, एग जोय णसयसहस्स आयामविक्खंभेण जंबूदीवप्पमाणा उवरियतलेण सोलसजोयणसहस्साइ आयामविक्खंभेणं,

चत्तारि च प्रमाणपठवीए । वैठे रत्नप्रभा पृथिवीने । चत्तालीसचत्तापचसहस्साइउग्गाहित्ता । चालीस सहस्र जोजन अवगाहीने । एत्थणंचमरस्सअसुरिंद
स्सअसुररन्नोचमरचंचानामरायहाणी पण्णत्ता । इहां ए ठामाठामारे, चमरेन्द्रनो असुरेन्द्रनो असुरराजानो चमरचंचानाम राजधानी कही । एगजोय
णसयसहस्सआयामविक्खंभेणं । एकलाख जोजन लांबपणें तथा पिहुलपणेंइं । जंबूदीवप्पमाणा । जंबूदीप जेवडे प्रमाणेंइं । दिवड्ढजोयणसयउच्च
त्तेण । एकसोपचास जोजन ऊंचा ऊंचपणेंइं । मूलेपन्नासंजोयणाइंविक्खंभेण । मूलने विषे पचास जोजन पिहुला । उवरिंपन्नतेरसजोयणाइं च वि
क्खंभेण । ऊपरि साढीबारे जोजन चालीसा जाणवा । अड्ढजोयणपायामेण चारसविक्खंभेण । अढजोजन लांबपणें एककोस पिहुलपणें । देसूणमड्ढ
जोयणउड्ढउच्चत्तेणं । देसे ऊणा अढजोजन ऊंचा ऊंचपणेंइं । पण्णसेआएवाराएपण्णत्तदारसया । एकेकी बाहा पांचसेपांचसे बारणाइं । अक्कारअक्खजोग

सबस्यो न्यूयादिममार्थ सौधर्म्मवैमानिकविमानप्राकारप्रासादप्रमाणस्य प्रमाणमेतव्यं तथाहि—सौधर्म्मवैमानिकाना विमानप्राकारो योजनाना नीविशता त्तुचत्वेन एतस्यासु सामयतं तथा सौधर्म्मवैमानिकानां मूलप्रासादः पञ्चयोजनानां शतानि तदन्ये चत्वार तत्परिवार भूताः सार्द्धे द्वे शते मत्यच तेषां चतुर्णां मध्यन्ये परिवारभूता चत्वारः सपादं शतं एव मन्ये तत्परिवारभूताः सार्द्धो द्विषष्टि रेव मन्ये सपादै कत्रिंशत् इत्तु मूलप्रासादः सार्द्धे द्वे योजनशते एव मर्द्धार्द्धहीना सदपरे यावदन्तिमाः पञ्चदशयोजनानि पञ्च योजनस्या ष्टांशा एतदेव वा चनान्तरे उक्तं—चत्तारि परिवाडीओ पासायवडिंसयाणं पण्णत्ताओ ति एतेषाञ्च प्रासादाना चतसृष्वपि परिपाटिषु त्रीणि शता न्येकचत्वारिंशद

पन्नास जोयणसहस्साइं पंचयसत्ताणउय जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण , सहुप्पमाण वेमाणियस्स

चसमार उठठ श्यतेच। ते बारवा पढाईसे बाजन साचा छ चपर्वेछे। एमपचवीसजोयणसए १०१ विक्स भेच। एवसा पचोत्तर योजन विक्खम्भपणें १०१। उत्तारिवमेयसामसजोयणसहस्सार आयामविक्खंभेच। घरना पोठ मघसरोचो १६ सहसू बाजन दोयपणें पिहुलपणेंछे। पचासजोयणसहस्सार पंचयसत्ताणउज्जोयणसए। पंचास सहस्रजोजन पांचसे सत्ताणवे बाजन। किंचिविसेसूणेपरिक्खेवेणं। कांइक विशेषे उणी परिधि जाणवी। सहुप्पमा णं। एमय से ते राजधानीनेविषे प्राकारगढ प्रासादघर सभादिकवस्तुछे, ते सघली यथाविक्त प्रमाण ते सौधर्म वैमानिक प्राकार प्रासादादिकनो जे प्रमाणछाछे तेहथी अर्द्धनाचा ते देखाडेछे—सौधम वैमानिक चार विमानगो प्राकार तीनसे ३ योजन उ चपणेंछे तेमाटे एहनो १३, तथा सौधम वैमानिकने मूलप्रासाद १ याजनना तेहथो थोडा ४ तेहनो परिभूत २१ याजन, ते चारिना प्रत्येके थोडा चार २ विमान तेहना परिवारभूत २१ योजन एम थोडा ते परिवारभूत साठोवासठबाजन एम थोडा सवाएकत्रीस बाजन एम विमान परिपाटी सौधर्म देवलोकनेविषेछे, एहां मूल मा सार २१० याजन तेहयो मन २ बीन चरतो बेहना पनरेयोजन अने एकयोजनना आठमायकोसे एहवा पांचभाग प्रमाणछे, एहीज बाचनान्तरे चत्ता रि परिवाडीओपासायवडिंसयाण पण्णत्ताओत्ति। एह प्रासादनो चार परिपाटीमेंविषे तीनसय इकताळीस प्रासादछुये, १ २१ सो । ४ १२५ सो

चित्राणि भवन्ति एतेभ्यः प्रासादेभ्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि सभा सुधर्मा सिद्धायतन मुपपातसभा ह्रदो ऽभिषेकसभा अलङ्कारसभा व्यवसायसभा चेति एतानि च सुधर्मसभादीनि सौधर्मवैमानिकसभादिभ्यः प्रमाणतो ऽर्द्धप्रमाणानि तत्र योऽर्थ इहैवं षट्त्रिंशद्योजनानि पञ्चाशद् आयामो विष्कम्भ पञ्चविंशतिरिति एतेषां च विजयदेवसम्बन्धिनामिव अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा अभ्युद्गतसुकृतवज्रवेदिकेत्यादि वर्णको वाच्यः, तथा दाराणां उप्पिंबहवे अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता इत्यादि रसङ्कारश्च सभादीनां वाच्यः सर्वं च जीवाभिगमोक्त विजयदेवसम्बन्धिचमरस्य वाच्य यावदुपपातसभाया मुत्पन्नस्य शान्तिमोत्पन्नस्य किं मम पूर्वं पश्चाद्वा कर्तुं श्रेय इत्यादिरूप मभिषेक श्चाभिषेकसभायां महर्द्ध्या सामानिकादिदेवकृतः विभूषणं च अलङ्कारकृता अलङ्कारसभायां व्यवसायश्च व्यवसायसभायां पुस्तकवाचनतो ऽर्चनिका च सिद्धायतने सिद्धप्रतिमादीनां सुधर्मसभायाममन सामानिकादिपरिवारोपेतस्य चमरस्य परिवारश्च सामानिकादि ऋद्धिमत्त्वं च एवं महर्द्धिक इत्यादिवचनं वाच्य मस्येति एतच्च वा

---

१९ ९२॥ भो । ९४ ३१। वा । २९९ १२। ५ भाग सव १४२ वला एह प्रासादथी ईशान कूणि सुधर्मा सभा सिद्धायतन उपपातसभा ह्रद अभिषेकसभा अलङ्कारसभा व्यवसायसभा छे, ए सुधर्मासभा आदिदेई सौधर्म वैमानिकसभादिकना प्रमाण थकी अर्द्धप्रमाण एहनो जाणवो तिवारे एहने अर्थ इहां ३६ जोजन ५ योजन आयामे २५ योजन विष्कम्भे एहने विजयदेवसमबन्धीनीपरे अनेक थंभसयसन्निविट्ठा इत्यादि, वर्णक कहवो एवो आलावो, विजयदेवसबंधे तिम इहां चमरने सबंधे कहवूं यावत् छत्राधाछत्रा इत्यादि । छत्रातिछत्रा । देवता उपपात सभा उपजे कवण पहिलो करवो कम य पछेकरवो इत्यादि । अभिसेक विभूसणाओ ववसाओ अच्चणिअसुहम्माय चमरपरिवारइड्ढित्त आवमिवरा । अभिषेक जोवा देवते ठकुराइ इत्यादि सक अलंकार पहिरा अलंकारसभा व्यवसायसभा पुस्तकवाचा सिद्धायतन प्रतिमादिकनो पूजाबोधी सुधर्मासभा क्रिडा परिवारमिषे सामानि

चमरस्स यावत् मायो अवसोकयत एव॥ इति द्वितीयस्याष्टमउद्देशः ॥ ८ ॥ चमरचञ्चालयाय क्षेत्र मष्टमोद्देशके उक्त मथ क्षेत्राधिकारादय नवमे समयक्षेत्र मुच्यतइत्येव सम्बद्धस्या स्येद सूत्र ॥ किमित्यादि ॥ तत्र समय कास स्तेनो पलक्षितं क्षेत्रं समयक्षेत्र कालोहि दिनमासादिरूप सूर्यगतिसमभिव्यग्यो मनुष्यक्षेत्रएव न परतः परतोहि मादित्याः सध्यरिध्रवइति ॥ एवं जीवाजिगमवक्तव्यपामेयवृति ॥ एषा चैव—एगं जोयणसयसहस्स मायामविक्खंभेण मित्यादि ॥ जोइसविहूणंति ॥ तत्र जम्बूद्वीपादिमनुष्यक्षेत्रवक्तव्यतायां जीवाभिगमोक्तायां ज्योतिष्कवक्तव्यता ध्यस्ति, तत्स्त्विहीनं यथा भय त्येव जीवाभिगमवक्तव्यता मतव्येति, वाचनामतरेतु जोइसचउविहूणस्त्यादि मदृश्यते तत्र—जम्बूद्वीवेणं भंते! कइ चंदापभासिसु ३ कतिसूरियातविंसुवा ३ कइनक्खत्ताजोइजोइसुवेत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्कसूत्राणि तथा—एकेकचंदे भंते! एव सुचव जम्बूद्वीवे दीव गोयमा! जम्बूद्दीवस दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरवं सयवस्स दाहिणेणं जाव तत्थ २ बहवे असुरकुमारा असुरवना जाव उवसोहेमाणा चिठंति

पमाणस्स श्वद्द नेयव्व ॥ इइ विईयसए श्वठमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ८ ॥ किमिदं भंते! समयरकेत्तेत्ति पवुच्चइ? गोयमा! श्रद्धाइज्जा दीवा दोयसमुद्दा एसण पवइए समयखेत्तेत्ति पवुच्चइ, तत्थ

चादि परिवारसहित चमर परिवार सामानिक त्रायस्त्रिंश प मविद्वउप इत्यादि कहना, यावत् विचरे। द्वितीयशतकको अष्टमो। एबोसा शतकमा पाठमो उद्देशो पूरो थयो ॥ ८ ॥ ते आठमा अधिकारको नवमे उद्देशे समयक्षेत्र कहियछे—किमिदंभंतेसमयक्खेतेत्तिपवुच्चइ। अं हेभगवन्! समयक्षेत्र कहीये समय कहतां काल तिण उपलक्षितक्षेत्र ते क्षेत्रकाल ते दिन मासादिरूप सूर्य गतिकरी जाणिये ते मनुष्यक्षेत्रविषेजाणे ते वाहिर नथी तेणे पाहिरमादित्यो सवाउसो स्थिरमाठे। तत्थणमयजंबूदीवे २। तिहां ए बाह्याभ्यंतर, एक जंबूदीपनामादीप। सम्बद्दीवसमुद्दाणंसव्वभंतरे एवंजोवाभिमगमगमवत्तव्वया जाव पडिरूपुत्तरजोइसविहूणं। सब दीप समद्रने सब भभ्यंतर माहेथी एम जीवाभिगमसूत्र व वक्तव्यता जाणवी ते

मतयष्ठ्यं गोयमा । एव पुष्कर जम्बूद्वीपेद्वीपे इत्यादीनि प्रत्येक सर्वसूत्राणि सन्ति तत चैतद्द्वितीय यथा भव त्येवं जीवाभिगमवक्तव्यतया नेय मम्नो इयवस्य सूत्र ॥ जावसमागाइति ॥ सपरमाया साव-भरहतममयवायर विज्जुयविपावसाइनामगवी भागरनिविणवउवरा गनिग्गमेशुम्भिव पतव ॥ १ ॥ यस्ता दाय सवा मम सम्वेवेता यातो जम्बूद्वीपादीनां मानुषोत्तरान्ताना मर्यानां वर्षकस्याते इदमुक्त-जावबव मानुसुत्तरेपव्वए तावंचवं परिसंसोयति पवुबर ॥ ममुष्यलोक उप्पतइस्यर्थ स्यार्थ ॥ परहंतेति ॥ जावचवं परहंता चक्कवट्टी जाव सावियाउ मणुया पगइजणुया विपीया तावंचवं परिसंसोयति पवुबर समयति जावचव समयाइवा भावलियाइवा जावलोएत्ति पवुबर एव जावचवं बायर विज्जुयार बायरे पणियमइ जावचव बहवे उराला बलाहया संसेयति वासंविति जावचव बायरे तउयाए जावचव भागराइवा निहीइया मइइवा उवरागत्ति, चंदो वरागाइया सूरोवरागाइया तावचवं परिससोयत्ति पवुबर उपरागोग्रहण ॥ निम्मसे वुष्ठिवयर्वचति ॥ याव निर्गमादीनां पचनं प्रज्ञापन तावन् मनु ष्यलोकइति मरुतं तत्र-जावंचवं चंदिमसूरियाणं जाव ताराख्वाणं भइगमणं निगमणं वुष्ठिनिवुड्डी भापविल्लाइ तावचवं परिससोयत्ति पवुबइ पतिगमन मिदासरायणं निर्गमन दविवायनं वृद्धि दिनस्य बहुत्व निवृद्धि तस्यैव हानिः ॥ इति द्वितीयशते नवमउद्देशः ॥ ९ ॥

ण श्रय जम्बूद्दीवेद्दीवे सप्तदीवसमुद्दाण सद्दाभितरे एव जीवाभिगमवत्तव्या नेयव्वा, जाव अभितर पुक्खरद्द जोइसविहूण ॥ इइ बिइयसए नवमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ ९ ॥ कइण भंते ! अस्थि

रम—एवं भावचचममवर्मं पायामविस्रमेव इत्रा है, यावत् तारामे बहुला, जामनी भभ्यतर पुष्करार्ध जोदस बद्रोप भागिदेर मनुष्यलोक वक्तव्यता जीवा भिगमेकरो तेहमविषे भा निरामो पनि वक्तव्यतावहोवे तेमाटे ते इहां त्यातिप वक्तव्यता मकहवी बीजी जीवाभिगमोक्त वक्तव्यता सब कहवी । बिति यसमनवमयो। ए बीजा सतकना नवमों उद्देसोपूरो थयो ॥ ९ ॥ नवमे उद्देसे क्षेत्रकह्या ते अस्तिकाय हैअरूपछे तेमाटे अस्तिकाय निरूप य इसमा उद्देसा कहेछे—कायभंते अस्तिकाया पन्नता भावनो पन्नता अस्तिकाया पन्नता तंजहा । केतलो हे भगवन् । अस्तिकायकहो प्रतिमत उत्तर हे गौतम । पंच

घनमार्ह तेभ्रमुक्त तथास्तिकायदेशरूप मित्यस्तिकायाभिधानपरस्य दृगमोदृभकस्या दिसूत्रं ॥ कइणमित्यादि ॥ अस्तिशब्देन प्रदेशा उच्यन्ते अत्र सोपा
घनमार्ह तेभ्रमुक्त तथास्तिकायदेशरूप मित्यस्तिकायाभिधानपरस्य ... ततो मस्तीति सन्ति भासन् भविष्यन्ति च येकामा प्रदेशराशय से ऽस्ति
काया रासया ऽस्तिकाया अथवा अस्तीत्ययं निपातः कालत्रयाभिधायी ततो अस्तीति सन्ति भासन् भविष्यन्ति च ये काया प्रदेशराशयस्ते ऽस्ति
कायाइति धर्मास्तिकायादीमा चोपन्यास अमेय क्रम सथाहि–धर्मास्तिकायादिपदस्य माङ्गलिकत्वात् धर्मास्तिकाय आदा युक्त सदनन्तरं च तद्वि

काया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचअत्थिकाया पण्णत्ता, तंजहा—धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए। धम्मत्थिकाएणं कतिवन्ने कतिगंधे कतिरसे कतिफासे ? गोयमा ! अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—

अस्तिकाय कह्या, अस्तिशब्दे प्रदेश कहीये ते प्रदेशना समूह कहीये राशि ते अस्तिकाय अथवा अस्ति अव्यय कालत्रय वाचक तिवारे अस्ति ते थया छे थसे अने कायप्रदेश
राशि ते अस्तिकाय ते कहेछे—धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पोग्गलास्तिकाय धर्मास्तिकायएधर्मतेकहवथीपणछे । धर्मास्तिकायने
हेभगवन् ! केतलावर्णछे । धर्मास्तिकाय धारेमिति परिणत जीव पुद्गलने गमन स्वभावछे तेभणी धर्म अस्ति कहिये प्रदेश तासकहीये समूह धर्मास्तिकाय
जीवपुद्गलने गमन करताने जेम जल माछलाने तिम सहायीभूत १। तेहथी विपरीत ते अधर्मास्तिकाय स्थिरस्वभाव २। अवकाशरूप ते आकाशास्तिकाय ३
आधार ते जीव चेतनालक्षण ४। पूरणगलन स्वभावछे जेहनो ते पुद्गलास्तिकाय ५। अथ सगले पुठिलोपरे कहवो इहां धर्मास्तिकायादिकना एहीज अनुक्रम
कहवा जेभणी धर्मास्तिकाय मंगलीकछे ते भणी पहिले कह्यो १ तेहथी विपरीत ते अधर्मास्तिकाय २ तिवार पछी ते बेहना आधार भणी आकाशास्तिकाय
३ तिवार पछी अनंत मूर्त्त साधर्म्यथी जीवास्तिकाय ४ तिवारपछी तेहना उपष्टंभपर्यायो पुद्गलास्तिकाय ५ कह्यो ए अनुक्रम धर्मास्तिकायनेविषे व
कायनेविषे, हेभगवन् ! केतलावर्ण । कतिगंधे कतिरसे कतिफासे गोयमा अवन्ने अगंधे अरसे अफासे अरूवे अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे । केतला गंध
केतला रस केतला स्पर्श इतिप्रश्न उत्तर हेगौतम । धर्मास्तिकायनेविषे वर्ण ५ छे ते मांहिलो एकेकोनथी, गंध २ नथी, रस ५ नथी, फरस ८ नथी, जिसाटे

पचस्था दध्र्मास्तिकाय' सतय तदाधारत्वा दाकाशास्तिकाय, सतो ऽनन्तत्वाऽमूर्तत्वसाधर्म्यो ज्जीवास्तिकाय सत सदुपष्टम्भकत्वात् पुद्गलास्तिका

दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ, दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगेदव्वे, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ न कयाइ नासि न कयाइ नत्थि जाव निच्चे, भावओ अवन्ने अगंधे अरसे अफासे, गुणओ गमणगुणे। अहम्मत्थिकाए वि एवं चेव, नवरं, गुणओ ठाणगुणे। आगासत्थिकाए वि एवं चेव, नवरं खेत्तओ णं आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंते चेव जाव गुणओ अवगाहगुणे। जीवत्थिकाए णं भंते! कइवन्ने कइ

धर्मादि मही ममाडे मदूपोछे वेवगणरहित द्रव्यो सासताछे मदयपो पर्यवितछे, माकी पंचास्तिकायात्मक तेहना भेदभूत द्रव्याछे। सेसमासयोर्पष दिव पनाते नगरा। त धर्मास्तिकाय मवेपयो पांचभेदे कह्या ते कहेछे—द्रव्यथा खेतयो कालयो भावयो गुणयो। द्रव्यथी १ खेतथी २ कालथी ३ भावथो ४ गुणथो ५। द्रव्यथाधर्मास्तिकाए एगेदव्वे। द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य। खेतयोलोगप्पमाणमेत्ते। खेतथी धर्मास्तिकाय चउद राजलोक प्रमाणछे कालथो धर्मास्तिकाय। कालथा नकया।नपानिनकयाइनत्थि। अतीतकाले कदापि नहुतो इमनहो वर्तमानकालेनछे आगामिकालेनहुसे इमनहो। भावनिचे भावथा अवन्ने अगंधे अरसे अफासे गवपोअमलगुण। यावत् नित्यछे भावथी धर्मास्तिकाय वर्णवथी वर्णरहित गंधरहितछे रस रहितछे स्पर्शरहितछे गुणथो कायथो जीव पुद्गलने गति परिणतने गतिउपष्टम्भ हेतु जिम माछलाने जल तिम। अधर्मास्तिकाएविएवंचेव। अधर्मास्तिका य पणि तिमे इमज पंचप्रकारे धर्मास्तिकायनी परे कहवा। नवरं गुणयोठाणगुणे। एतलोविशेष गुणथी आधर्मास्ति जीवपुद्गलने स्थितिपरिणतने स्थितिउपष्टम्भ हेतु जिम मार्गने छाया तिम। आगासत्थिकाएविएवंचेव। आकाशास्तिकाय पणि पांचभेदे इमज कहवो। नवरखेतयोणंआगासत्थिकाएलोयालोयप्पमाणमेत्ते। एतलोविशेष खेतथी आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण प्रदेश अनंता भाव कहवो। अणतेचेव। अनन्ताछे नित्यछे। जावगुणथोअवगा

गधे कइरसे कइफासे ? गोयमा ! अवन्ने जाव अरूवी जीवे सासए अवठ्ठिए लोगदव्वे से समासओ पंच विहे पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ जाव गुणओ , दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं , खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते , कालओ नकयाइ नआसि जाव निच्चे , भावओ पुण अवन्ने अगंधे अरसफासे , गुणओ उवओगगुणे , पोग्गलत्थिकाएणं भंते ! कइवण्णे कइगंधरसफासे ? गोयमा पंचवन्ने पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवठ्ठिए लोगदव्वे , से समासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ , दव्वओ

वर्णे। यावत् अरूपो यावत् जीवादिकने अवकाशहेतुवे। जीवास्तिकाय एवंभतेत्यादयस्त। जीवास्तिकाय व याच्यात्वकारे, हेभगवन् । केतलावर्ण। कहर्ग धे कतरसे कतफासे। केतला गंध केतलारस केतला फरस इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा अवर्णजावअरूपी। हेगौतम। वर्णरहित यावत् अरूपी अमूर्त। जी वेसासए अवठ्ठिए लोगदव्वे सेसमासओ पंचविहे पण्णत्ते तंजहा। चेतन्यरूप सदा शाश्वत स्थिर नियत अवस्थित जीवद्रव्य ते जीवास्तिकाय संक्षेपथी पांच भेदे ते कहेछे—दव्वओ जावगुणओ दव्वओणंजीवत्थिकाए। द्रव्यथी यावत् गुणथी द्रव्यथी जीवास्तिकाय। अनंताइंजीवदव्वाइं खेत्तओलोगप्पमाण मत्ते। अनन्ता जीवद्रव्य क्षेत्रथी जीव लोकप्रमाणमात्रछे। कालओनकयाइनआसि। कालथी कदेइ जीवद्रव्य नथी एमनथी। भावथी भावओपुण अवन्ने। यावत् नित्य भावथी वलीपर्यायथी वर्णरहित। अगंधे अरसे अफासे गुणओउवओगगुणे। गंधरहित रसरहित फरसरहित गुणथी उपयोग चैतन्य साकार अनाकार तद्रूपजीव। पोग्गलत्थिकाएणंभंतेकसे। पुद्गलास्तिकाय व याच्यात्वकारे, हेभगवन् । केतलावर्ण। कइगंधरसफासे। केतला गंध रस फरसछे इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा पंचवन्ने। हेगौतम पांचवर्णछे। पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए। पांच रसछे दोगंधछे आठ फरसछे रूपी चैतन्यरहित शाश्वताछे। अवठ्ठिए लोगदव्वे सेसमासओपंचविहे पण्णत्ते तंजहा दव्वओ। अवस्थितछे लोकद्रव्यछे ते पुद्गलास्तिकाय संक्षेपथी पांचभेदछे ते कहेछे—द्रव्यथी। खेत्तओ कालओ भावओ गुणओ दव्वओपोग्गलत्थिकाए। क्षेत्रथी कालथी भावथी गुणथी, द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय

पइति ॥ पवकइत्यादि ॥ यतएवा वर्णादि रतएवा रूपी अमूर्तः ' ननु निःस्वभावो नञःपर्युदासवृत्तित्वात् भावतो द्रव्यतो ऽवस्थित प्रदेशतः ॥ लोगव्वृति ॥ लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्यां समूत इव लोकद्रव्य भावतइति पर्यायत ॥ गुणओत्ति ॥ कार्यतः ॥ गमणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलानां गतिपरिणतानां गत्युपष्टम्भहेतु मत्स्यानां जलमिवति ॥ ठाणगुणेत्ति ॥ जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणतानां स्थित्युपष्टम्भहेतु र्मत्स्यानां स्थलमिवेति ॥ अवगाहणागुणेति ॥ जीवादीनां अवकाशहेतु बदराणां कुण्डमिव ॥ उवओगगुणेति ॥ उपयोगश्चैतन्यं साकारानाकारभेदं ॥ गहणगुणेति ॥ ग्रहणं परस्परेण

णं पोग्गलत्थिकाए अणताइं दव्वाइं, खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते, कालओ नकयाइनआसि जाव निच्चे, भावओ वण्णमंते गंधरसफासमंते, गुणओ गहणगुणे, एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णोइणठेसमठे, एवं दोन्निवि तिन्निवि चत्तारि पंच छ सत्त अठ नव दस संखेज्जा असंखेज्जा भंते ! धम्मत्थिकाय प्पदेसा धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? गोयमा ! णोइणठे समठे, एगपदेसूणेवियणं धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ? णोइ० सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ, एगे धम्मत्थिकाय पदेसे

पजनार करनार पनपामाणप्पमाणमत्ते। पूद्गल द्रव्य अनंताछे क्षेत्रथी लोकप्रमाण मात्र एतले चउद राज प्रमाणछे। कालथकी अनादिकालनोपासि। कालथी करेनथी रमनथी तोनेकानेछे। यावनिश्चे भावथी वर्णमंते। यावत् निसछे भावथी वर्णसहितछे। गंधमंते रसमंते फासमंते गुणथी ग्रहणगुणछे। मंधरोय महितछे रस पांचसहितछे फरस आठसहितछे कायथी परस्पर सबंध करवो जीवे औदारिकादि प्रकारे धर्मास्तिकायना अधिकारथीज कहेछे—एगे भंतेधम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकायेतिवत्तव्वंसिया। एक हेभगवन् ! धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहमात्र धर्मास्तिकाय एहवुं कहवाय इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा णोइणठे समठे। हेगोतम ! एअर्थ समर्थ नथी। एवदोन्निवितिन्निविचत्तारियंचछ सत्तअठनवदससंखेज्जाअसंखेज्जाभंतेधम्मत्थिकायप्पदेसा। एम बीजप्रदेश ने त्रीजप्रदेशमने चारप्रदेशमने पांचप्रदेशमने छप्रदेशमने सातप्रदेशमने आठप्रदेशमने नवप्रदेशमने दशप्रदेशमने संख्यातप्रदेशमने असंख्यातप्रदेशमने हेभगवन् ! धर्मास्ति

सम्यग्धर्म जीवेन वा औदारिकादिभिः प्रकारैरिति ॥ एकदेशक्षेत्यादि ॥ यथा खण्डचक्र चक्र न भवति शकलचक्र मित्येवं तस्य व्यपदिश्यमानत्वा दपितु सकलमेव चक्र चक्रं भवति एव धर्मास्तिकायः प्रदेशेना न्यूनो न धर्मास्तिकायइति वक्तव्यः स्या देतस्य निश्चयनयदर्शनं व्यवहारनयमतन्तु

नोधम्मत्थिकायेत्ति वत्तव्व सिया , जाव एगपदेसूणेवियण धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया। सेणूण गोयमा ! खंडेचक्के सगलेचक्के ? भगव ! नोखंडेचक्के सगलेचक्के । एव ठत्ते धम्मे दंडे दूसे आउहे

यावत्पद । धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । धर्मास्तिकाय इस् कहनाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाइणट्ठेसमट्ठे । हेगोतम ! एग्रथ समर्थनहो युक्तनही। एगपदेसूणेवियणंभतेधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एक प्रदेशे ऊणा पिण ऊपन न थाय्याकारे, हेभगवन् । धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय इमा कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा णाइणट्ठेसमट्ठे । हेगोतम ! ए अर्थसमर्थनही युक्तनही तिवारे गोतमे कहेहे—सेकेणट्ठ णभंतेएववुच्चइ । त कें प्रशो भने हेभगवन् ! इम कहे । एगे धम्मत्थिकायपदेसेनोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एक धर्मास्तिकायना प्रदेश तेहने धर्मास्तिकाय एहवु कहवायनही इ त्यादि । जावएगपदेसूणेवियणधम्मत्थिकाए । यावत् एक प्रदेशे ऊणा पणि, सम्पुन थाय्यासंकारे, धर्मास्तिकाय तेहने । नोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया धर्मास्तिकाय एहव् नकहिये इतिप्रश्न । सेणूणं गोयमा खंडेचक्के सगलेचक्के । ते निश्चे हेगोतम । चक्रनाखण्डने चक्र कहोये, अथवा सगमा चक्रने चक्र कहीये, एतद्वक्ता तहमा कहवा इमा भगवतेपूछ्या तिवारे गोतम बोल्या । भगवंणोखंडेचक्के सगलेचक्केएव छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोयए । हेभगवन् ! नही चक्रनाखण्डने चक्र कहीये सकलने चक्र कहीये, इम छत्रना खण्डने छत्रनकहोये सकलने छत्र कहीये, इम चर्मना खण्डने चर्म नकहीये दण्डनाखण्डने द ण्डनकहीये वस्त्रना खण्डने वस्त्रनकहीये आयुधखण्डने आयुध नकहीये, मादकना खण्डने मोदक नकहीये, एतावता सकलसने चक्र इम एक वस्त पारन मादक मदनकहीये जेमाटे हेगोतम । जिम चक्रना खण्ड खण्ड करोये पणि तेहने चक्र नकहवाये सगलाछोय चक्र तेहने चक्रकहीये । तेमें ध में हेगोतम । इम धर्म एक धर्मास्तिकाय प्रदेश तेहन धर्मास्तिकाय नकहीये इत्यादि । जावएगपदेसूणेवियणंधम्मत्थिकाएनोधम्मत्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया ।

प्रकृष्टो गोणमपि वस्तु वस्त्वेव यथा एकलोपि घटो घटएव विसंस्थुलोपि सार्थैव भवतिच—प्रकदेशाविकृतमनन्यवादिति ॥ सेकिंखाइति ॥ अथ किं पुनरित्यर्थ ॥ सव्वत्ति ॥ सर्वस्ता स्रेच देशापेक्षयापि भवन्ति प्रकारकात्स्न्येंपि सवसद्प्रवृत्ते रित्यतआह ॥ कसिणत्ति ॥ कृत्स्ना ननु तदेकदेशापे क्षया भवत्यत आह स्वस्वभावरहिता अपि भवन्तीत्यतआह प्रतिपूर्णा आत्मस्वरूपेण विकला सेच प्रदेशान्तरापेक्षया स्वस्वभावन्यूनाअपि त थाप्यनताप्स्याद ॥ निरवसेसत्ति ॥ प्रदेशान्तरतोपि स्वस्वभावेना न्यूनाः तथा ॥ एगग्गहणगहियत्ति ॥ एकग्रहणे नैकप्रदेन धर्मास्तिकायइत्येव मनवेन गृहीता य ते तथा एकशब्दाभिधेया इत्यर्थ एकार्था येतेशब्दाः ॥ एयसाधम्मताधावियव्वत्ति ॥ धर्मास्तिकायी इत्युक्त्या प्रदेशा उक्ता आक्ता

मोयए । सेतेणठेण गोयमा ! एववुच्चइ एगेधम्मात्थिकायपदेसे णोधम्मात्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया जाव एगपदे सूणेवियण धम्मात्थिकाए नोधम्मात्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया। सेकिंखाइएणन्नत ! धम्मात्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया? गोयमा ! असखज्जा धम्मात्थिकायपएसा तेसव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एक्कग्गहणगहिया एसण गोयमा ! धम्मात्थिकाएत्ति वत्तव्वसिया । एवअहम्मात्थिकाएवि आगासत्थिकाय जीवात्थिकाय पोग्गलत्थि

यावत् एक प्रदेशे ऊना धर्मास्तिकाय नकहीये एणिजे मपइनेमते किया पणि व्यवहार नयनेमते एक देशेकरी न्यून पणि वस्तु ते वस्तुहीज कहीये जि मघोडो पणि घडो घडाहीज कहीये, जथा कामनो पणि कूतरो कूतराहीज कहीये इम चोराइपुरष इत्यादि जाणवा। सेकिंखाइएणभते धम्मात्थिका एत्तिवत्तव्वसिया । ते प्राणे ज्याति प्रभिशे भणें हेभगवन् । धर्मास्तिकाय इमो कहवाय, इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा असखेज्जाधम्मात्थिकायपदेसातेसव्वे कसिणापडिपुण्णानिरवसेसा । हेगौतम असंख्याता धर्मास्तिकायना प्रदेश ते सर्व समय प्रतिपूर्ण आत्मस्वरूपे करी विकलनही ते पणि प्रदेशान्तरथकी पणि स्वस्वभावेकरी न्यून नही एतले एक प्रदेशना पणि अंतरनही । एगग्गहणगहिया । एक शब्दे धर्मास्ति एहवे ग्रहवेकरी जे एगग्र शब्द एकार्थ्य । एसण गोयमा धम्मात्थिकाएत्तिवत्तव्वसिया । एहने हेगौतम । धर्मास्तिकाय कहीये इहां एमापार्य धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशथ तेमाथि को एक

मादीनां पुनः प्रदेशा अनन्ता यास्या अनन्तप्रदेशकत्वा धयाकाशमपीति उपयोगगुणो जीवास्तिकाय मापृच्छितो ऽसंख्येयप्रदेशो जीव उत्थानादि गुच्छति इमयत्वाइ ॥ जीवेवमित्यादि ॥ इत्थ सउठाणेइत्यादीनि विशेषणानि मुक्तजीवव्युदासार्थानि ॥ आयभावेणति ॥ आत्मभावेन उत्थानादय मगमनमोजनादिरूपेवा त्मपरिणामविशेषत्व ॥ जीवभावति ॥ जीवस्य चैतन्य मुपदर्शयति प्रकाशयति इतिवक्तव्यस्यात् विशिष्टस्यो त्मभावे धि

काएवि एयचेव , नवर , तिरहपि पएसा अणता भाणियद्वा । सेस तचेव । जीवेण भंते ! सउठाणे स कम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदंसेईति वत्तव्वसिया ? हता गोयमा ! जीवेण सउठाणे जाव उवदंसेइति वत्तव्वसिया । सेकेणठेणजाव वत्तव्वसिया ? गोयमा ! जीवेण अणंताणं

णो प्रदेश आकाशायता तेहने धर्मास्तिकाय कहीये । एवमधर्मास्तिकायेपि । इम धर्मास्तिकायनी परे अधर्मास्तिकाय पणि कहवो । आकाशास्तिकाय । आकाशास्तिकाय पणि । जीवास्तिकाय । जीवास्तिकाय । पुद्गलास्तिकाएविएमचेव । पुद्गलास्तिकाय पणि १ ए तीनेई इमहीज जाणवा । नवरंतिहुं वि पएसा अणंता भाणियव्वा सेसंतचेव । एतला विशेष धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ एकेकना प्रदेश असंख्याता मकेइ कह्या अने ए तीनना अन तापदेश कहवा, बाकी सर्व तिमज कहवा । जीवेणंभंते सउठाणेसकम्मे । वली गुण जीवास्तिकाय पूर्वकह्यो । हिवे तद्भूत जीवने उत्थानादि गुण ते देखाडे—जीवेणंभंते । सउठाण उठीयाभा ते सहित गमनादि क्रियासहित ते सकम । सबले सवीरिए सपरिसक्कारपरक्कमे । शरीरनो समर्थता वीर्यहित आत्मा उत्साह तेमहित पुरुषना अभिमान ते सहित कामपूरा जीवो । आयभावेणजीवभावेउवदंसेतीतिवत्तव्वसिया । आत्मभाव उत्थान गमन गमनादिरूप आत्मपरिणाम विशेष तिणेकरी जीवभाव जीवपणा एतावता चैतन्यपणा देखाडे प्रकाशे इतिएहवा कहवाय इतिप्रश्न उत्तर । हंता गोयमा । हां गौतम । जीवभाव उवदंसेतीतिवत्तव्वसिया । जीव उत्थान गमनादि आत्मपरिणामविशेष तेणे सावत् जीवभाव चैतन्यपणो दे खाडे—एहवा कहवा हुवे । सेकेणट्ठेणं जाववत्तव्वसिया । ते स्ये अर्थे यावत् चैतन्यपणा देखाडे इम कहवा इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा जीवेण अनंता

शिष्यतना पुवकत्यादिति ॥ सर्वस्तावमाभिनिबोहियेत्यादि ॥ पयवाः प्रकारता अविभागाः परिच्छेदा इत्येता नन्ता आभिनिबोधिकज्ञानस्या तो अनन्ताना माभिनिबोधिकज्ञानपर्यवाणां सम्बन्धिन मनन्तामाभिनिबोधिकज्ञानपर्यवात्मकमित्यर्थः उपयोगं चेतनाविशेषं गच्छतीतियोगः, उत्थानादा वात्मभावेयतमान इतिद्रपस्यं अथ अथुत्थानाद्यात्मभावे वर्तमानो जीव आभिनिबोधिकज्ञानाद्युपयोगं गच्छति तस्मि मेतावतैव जीवभाव मु पदर्शयतीति वक्तव्य स्या दित्याशङ्काह ॥ उवओगेत्यादि ॥ यत उपयोगलक्षणं जीवनाव मुत्थानाद्यात्मभावमो पदर्शयतीति वक्तव्य स्या देवेति, अ

आोहियनाणपज्जयाण एय सुयनाणपज्जयाण ओहिनाणपज्जयाण मणपज्जवनाणपज्जयाण केवलनाणपज्जयाण मइअन्नाणपज्जयाण सुयअन्नाणपज्जयाणं विभंगनाणपज्जयाण चक्खुदंसणपज्जयाण अचक्खुदंसणपज्जयाण ओहिदंसणपज्जयाण केवलदंसणपज्जयाण उवओगंगच्छइ , उवओगलक्खणेण जीवे सेएणठेण एव वुच्चइ ,

णं आभिनिबोहियनाणपज्जवाण। हे गौतम ! जीव अनंता मतिज्ञान पर्यायात्मक उपयोग चेतना विशेष प्रतें पामे, इतियोग, उत्थानादिक आत्मभाव निविषे वर्ते एहवा जीवा भाग मदाय ते पर्याय कहीये। एवंसुयनाण पज्जवाणं। इम अनंता श्रुतज्ञानना पर्याय। आहिनाणपज्जवाणं। अनंता अव धि ज्ञानना पर्याय। मनपज्जवनाणपज्जवाणं। अनंता मनपर्यव ज्ञानना पर्याय। केवलनाणपज्जवाणं। अनंता केवलज्ञानना पर्याय। मइअन्नाणपज्ज वाण। अनंता मति अज्ञानना पर्याय। सुयअन्नाणपज्जवाणं। अनंता श्रुत अज्ञानना पर्याय। विभंगनाणपज्जवाण। अनंता विभंगज्ञानना पर्याय। चक्खुदंसणपज्जवाण। अनंता चक्षुदर्शनना पर्याय। अचक्खुदंसणपज्जवाण। अनंता अचक्षुदर्शनना पर्याय। ओहिदंसणपज्जवाण। अनंता अवधिदर्शन ना पर्याय। केवल दंसणपज्जवाणं उवओगंगच्छइ। अनंता केवलदर्शनना पर्याय उपयोग चेतनभाव प्रतें पामे, उत्थानादि आत्मभावने विषे वर्तमा न। उवओगलक्खणेणं जीवे। उपयोग लक्षण चेतनामात्र उपयोगलक्षण जीवपणें उत्थानादिक आत्मभावेकरी देखाडे एहवं कहवाय। सेतेणट्ठे णं गोयमा एवबुच्चइ। ते तेणे अर्थे गौतम ! इम कह्यु। आयमाकारे सउट्ठाणे आयतभावेसिया। हे गौतम ! जीव उत्थान यावत् कहवाय अनंतदेखी

नमरं जीवविभागसूत्र मुक्त मथ तदाधारस्वेमा काशचिन्तासूत्राणि ॥ कतिविहेणं भंते । इत्यादीनि ॥ तत्र लोकालोकाकाशयो लक्षण मिद्-धर्मा दीनाप्रवृत्ति द्रव्याणांजवतियत्रतत्क्षेत्रं । तद्विपरीतमलोकाख्य मिति ॥ १ ॥ लोयागासेणमित्यादि प्रश्नमा तत्र लोकाकाशे ऽ धिकरणे जीवाति सम्पूर्णानि जीवद्रव्याणि ॥ जीवदेसत्ति ॥ जीवस्यैव बुद्धिपरिकल्पिता द्व्यादयो विभागा ॥ जीवप्पएसत्ति ॥ तस्यैव बुद्धिकृता एव प्रकृष्टतमाः प्रदेशा निर्विभागा भागा इत्यर्थः ॥ अजीवत्ति ॥ धर्मास्तिकायादयः ननु लोकाकाशे जीवा अजीवा येत्युक्ते तद्देशप्रदेशा सद्रोक्ता ए

गोयमा ! जीवे सउठाणे जाव वसहंसिया । कइविहेणन्नते ! आगासे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे आगासे प० त०—लोयागासेय अलोयागासेय, अलोयागासेणन्नते ! किंजीवा, जीवदेसा, जीवपएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपएसा ? गोयमा ! जीवावि जीवदेसावि जीवपदेसावि अजीवावि अजीवदेसावि

भाषा।र्थ। हिव तेआकाश आधार आकाशविचारसूत्र कहेछे—कइविहेणभंते आगासेपन्नत्ते लोयागासेय अलोयागासेय । केतले प्रकारे हेभगवन् ! आकाशकह्या ? तिसत्र हेगौतम ! बिहुभेदे आकाश कह्यो ते कहेछे—लोकाकाश १ अलोकाकाश २ तिहां लोकाकाशनो लक्षण धर्मास्तिकायादि द्रव्य जिहांहुवे ते लोकाकाश, तेहथी विपरीत ते अलोकाकाश कहीये । लोयागासेणभंते किंजीवाजीवदेसाजीवपदेसा । लोकाकाशनेविषे हेभगवन् ! स्यूं जीव इत्यादि प्रश्न तिहां लोकाकाश अधिकरणनेविषे 'जीवत्ति, सपूर्ण जीवद्रव्य जीवदेश जीवनीबुद्धि कर कल्पित देश ते प्रदेशनिर्विभाग इत्य र्थ । अजीवा अजीवदेसा अजीवपदेसा । अजीव धर्मास्तिकायादिक ४ अजीवदेशादिक विभाग ५ अजीवनिर्विभाग ६ । गोयमा जीवावि । हेगौत म ! जीव पणिछे १ । जीवदेसावि । जीव देशपणिछे २ । जीवपदेसावि । जीवना प्रदेश पणिछे ३ । अजीवावि । अजीवपणिछे ४ । अजीवदेसावि अजीवनादेश पणिछे ५ । अजीवपदेसावि । अजीवना प्रदेश पणिछे ६ । जेजीवातेनियमाएगिंदिया । जे जीवछे निश्चे एकेंद्रीजीव । बेइंदिया तेइंदि या चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया जेजीवदेसा । बे इंद्रीजीव ते इंद्रीजीव चउरिंद्रीजीव पंचेंद्रीजीव सिद्धजीव जे जीवना देश । तेनियमा एगेंदिय

व भवन्ति जीवाद्यव्यतिरिक्तत्वा देशादीनां ततो जीवाजीवग्रहणे किं देशादिग्रहणेनेति? नैव निरवयवा जीवादय इति मतव्यवच्छेदार्थत्वा दस्येति प्रश्नोत्तरं ॥ गोयमा। जीवावीत्यादि ॥ अनेन चाद्यप्रश्नत्रयस्य निर्वचनमुक्तं अथा त्यस्य प्रश्नत्रयस्य निर्वचनमाह ॥ जेअजीवेत्यादि ॥ रूवीयत्ति ॥ मूर्ताः पुद्गला इत्यर्थः ॥ अरूवीयत्ति ॥ अमूर्ता धर्मास्तिकायादय इत्यर्थः ॥ खंधत्ति ॥ परमाणुप्रचयात्मकाः स्कंधाः स्कंधदेशा द्व्यादयो विभागाः स्कंधप्रदेशा स्कंधस्यैव निरंशा अंशाः परमाणुपुद्गलाः स्कंधभाव ममापन्नाः परमाणव इति ततो लोकाकाशे रूपिद्रव्यापेक्षया अजीवावि अजीवदेसा

अजीवपदेसावि । जेजीवा तेनियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अणिंदिया, जेजीवदेसा तेनियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियपदेसा । जेअजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—रूवी य अरूवीय, जेरूवी ते चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । जेअरू

देसा। ते निश्चे एकेंद्रीजीवना देश इत्यादि। यावत् अनिंद्रियदेसा। यावत् सिद्धनादेशछे। अजीवपदेसा तेनियमाएगिंदियपदेसा। जे आत्मना प्रदेशछे ते निश्चे एकेंद्रीना प्रदेश। यावत् अनिंदियपदेसा। यावत् अनिंद्रीना प्रदेश सिद्धना प्रदेशछे। जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीय अरूवीय। जे अ जीवछे तेहना बेभेद कह्या तेकहेछे—रूपी अजीव अरूपी अजीव अमूर्त्त धर्मास्तिकायादि इत्यर्थ। जेरूवी ते चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा। जेरूपी अजीव ते पुद्गल तेहना चारभेद कह्या तेकहेछे—खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला। परमाणु प्रचयरूप १ द्व्यादिक विभाग २ तेहनानिर्विभाग अंश ३ स्कंधभाव प्रते नपाम्या ते परमाणु कहीये ४ एतला माटे आकाशमध्ये रूपी द्रव्यापेक्षाये अजीवावि अजीवदेसावि अजीवपदेसावि एपण कह्यो अथ ने अवश्य कल्पने जीवअजीवनोपरी ग्रह्या। जेअरूवी ते पंचविहा पन्नत्ता तंजहा धर्मास्तिकाए। जे अरूपी ते पंच प्रकारना कह्या ते कहेछे—जीवने कालने अरूपी दशप्रकारना कह्या तेहिज धर्मास्तिकाय १ तद्देश २ तत्प्रदेश ३ एवं अधर्मना ३ आकाशना ३ अद्धासमय १ ते दश तीनभेद सहित आकाश ने आधारपणे कह्या तेहना आवेश सात भेद कहवा पणि ते दश नकह्या पचमाव आश्रयबली ते कहेछे पचेति। लोकाकाशमां अवश्येसे अकाशमाव

वि धर्मीयप्पगमाधि, इत्येत दयतःस्या इचूमो स्कधामाम्या जीवपक्षयेन प्रदेशात् ॥ जेमरूवीतेपंचविहेत्यादि ॥ धम्मत्राप्यरूपिणो यथाविधा तथा न्यथा-धाराधास्तिकाय सदेश सप्रदेश येत्येव धर्माधर्मास्तिकायौ समयथेति वग्न इहतु सभेदस्या काशस्या धारत्वेन विवक्षितत्या तदाधे पाः मात्र यस्त्या भवन्ति, नच तेत्र विवक्षिता भस्यमासकारका, धेतुर्विवक्षिता स्थानाद' पञ्चति कथमित्याह ॥ धम्मत्थिकायेत्यादि ॥ इह जी धाना पुद्गलानांच युक्त्वा देकस्यापि जीवस्य पुद्गलस्यवा स्थाने सङ्कोचास्तितथाविधपरिणामवशात् इवको जीवा पुद्गलाश्च तथा तद्देशा स्तत्प्र देशाय भक्ष्यन्ती तिरुक्ता जीवाय जीवदेशाय जीवप्रदेशाय, तथा रूपिद्रव्यापेक्षया धजीवाश्चा जीवदेशाश्चा जीवप्रदेशाश्चेति सङ्कृत संयत्ना प्याश्रये प्रदवत्ता वस्तुत्रयस्य सद्भावात् धम्मास्तिकायादौतु द्वितयमेव युक्तं यतो यदा सम्पूर्णं वस्तु विवक्ष्यते तदा धर्मास्तिकायादी त्युच्यते तदवस्थि यथायात्तु तत्प्रत्यादेति तथा मयस्थितरूपत्वात् तद्देशकल्पना स्वयुक्ता तेषां मनयास्थितरूपत्वादिति यद्यपिचा नवस्थितरूपत्वं जीवादिवस्था ना मप्यस्ति तथापि तेषां मकश्चा मये प्रदेश सम्भयः प्रसूपकाकारस्य मिदतु न त्वास्ति, धम्मास्तिकायादे रेकस्या दस्कूरोयादि धर्मैकत्वाद्वेति भत

थी तेपचायिहा पयासा, तजहा—घम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपदेसा । स्त्राधम्मत्थि

एसदेसा । इहां जीवना पहला बहुत जभो एकजीवने तथा घरूभने स्थानके संकोचादि तथाविध परिणामवशथको घणाजीव तथा पुद्गल तेहना देश तेहनाप्रदेश अभवे एमहोने जीव १ जीवदेश २ जीवप्रदेश ३ तथा रूपोद्रव्यनी अपेक्षायें अजीव १ अजीवदेश २ अजीव प्रदेश ३ हुवे, ते स्त्रीभ को एक पायसने भेदपत वस्तु तीनना सद्भावथी तिम धर्मास्तिकायादिकनेविषे बहीज भेद युक्त जेमाटे जिवारे सपूर्णवस्तु विवक्षिये तो धर्मास्तिकाय एहव कहाये एवं तेहना धमनो विवक्षाकीजेतो तेहना प्रदेश इम कहीये, तेहने अवस्थितरूप पणाथी तेहनोदेशनि इविनथी पवि तेहना देशनो कल्प ना पयुक्त न देसने जानि उचितपणाथी यद्यपि अनवस्थितरूपपणो जीवादि देशने पवित्र तथापि एकत्र भाजने भेदैकरी सभवे प्ररूपणाम् कारण तेहवा नयो प्रमाणिक धर्मास्तिकायादिकने एकपणाथी एकजीवादिपणाथी एतवामाटेज धर्मास्तिकायादि देशनिषेधनामेकाजे कहीछे—नोधम्मत्थिकायस्सद

थव धर्मास्तिकायादिदेशनिषधायाह ॥ नोधम्मत्थिकायस्सदेसे ॥ तथा ॥ नोअधम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति ॥ पूर्विकारो प्याह, यद्गुविधो द्या समुदय सद्व भवति नीसेसापएसहि वा नीसेसानवेक्खा नो दुसेव तस्स यवविधपमायत्तयव तेव नदसेव निद्देसो नोपुग्गदेससद्दो एएसु कओ सो सवि षयमयववहारत्वं परसमुस्वादिगयववहारत्यवेति ॥ तत्र स्वविषये धर्मास्तिकायादिविषये यो देशस्य व्यवहारो—यथा धर्मास्तिकाय स्वदेशेनो द्वे लोकाकाश व्याप्नोती त्यादि सत्यं तथा परद्रव्येव कर्द्धलोकाकाशादिना यः स्वस्य स्पर्शमादिगतो व्यवहारो यथा ऊर्ध्वलोकाकाशेन धर्मास्तिका यस्य देशः स्पृश्यते इत्यादि सत्यमिति ॥ अद्धासमएत्ति ॥ अद्धाकाल तस्य समय अद्धासमयः सर्वेकएव वर्तमानलक्षण अतीताना गतयो रसत्वादिति अत लोकाकाशगतप्रदेशस्य निषधम यथा लोकाकाशप्रतिप्रमय आह ॥ पुच्छातहचेवत्ति ॥ यथा लोकाकाशप्रश्ने तथाहि— अलोकाकासेणं भंते ! किं जीवा जीवदेसा जीवप्पएसा अजीवा अजीवदेसा अजीवप्पएसत्ति ॥ निषधर्म स्वेषा पक्षामपि निषध सत्या ॥ एगअजीव दव्वदेसत्ति ॥ अलोकाकाशस्य देशस्य लोकालोकरूपाकाशद्रव्यस्य भागरूपत्वात् ॥ अगुरुयलहुयत्ति ॥ गुरुलघुत्वाव्यपदेशत्वात् ॥ अनंतेहि अगुरुयल

काए नोअधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपदेसा । अद्धासमए । अलोयाकासेण भंते ! किंजीवा ? पुच्छा तहचेव, गोयमा ! नोजीवा जाव नोअजीवप्पदेसा । एगेअजीवदव्वदेसे अगुरुयलहुए अणंतेहिं

से ना धम्मत्थिकायस्सदेसेत्ति । ते देश शब्द धर्मास्तिकायादिकने कह्या ते स्वविषयमतव्यवहारमेभणी तथा परद्रव्य आगमादिगतव्यवहारमेभणी ति णो स्वविषयेणे देशव्यवहार ते कहेछे—जिम धर्मास्तिकाय असंख्येयरो जग लोकाकाशमते व्यापे, तथा परद्रव्य स्पर्शनादिगतव्यवहार कहेछे—जिम ऊर्ध्वलोकाकाशेकरी धर्मास्तिकायनो देशस्पर्शीये तेहने सर्व देशकह्यो । अद्धासमए अनागतातीतअतेकिंजीवापुच्छा तहचेव । काल ते वपव समय यथ ते एकवार वर्तमान मतवरूपे अतीत अनागतनेविषे असत्त्वकह्यो लोकाकाशगतअप्रश्नो उत्तर कह्यो । हिवे अलोकाकाश मतें पूछेछे—अलोकाकाशमने विषे हेभगवन् ! स्यूजीव इत्यादि प्रश्न विम अपूछा । गोयमा नोजीवा जाव नो अजीवप्पदेसा एगेअजीवदव्वदेसे । हे गौतम ! अपनो निषेध कह्यो नो

गुरुलघुपेहिंति ॥ अनन्तैःस्वपर्यायपरपर्यायरूपैः गुणैः अगुरुलघुस्वभावैरित्यर्थः ॥ सव्वागासे अणंतभागूणत्ति ॥ लोकाकाशस्य अलोकाकाशापेक्षया अन नानागरूपत्वादिति यथा समरोत्तान् धर्मास्तिकायादीन् प्रमाणतो निरूपयन्नाह ॥ धम्मत्थिइत्यादि ॥ केमहालएत्ति ॥ सुत्रमावप्रत्ययत्वा किंमं हत्त्वं कि महत्त्वं यस्य सौ किमहत्त्वः ॥ लोएत्ति ॥ लोको लोकप्रमितत्वात् लोकव्यपदेशो ह्यं उच्यतेच ॥ पचत्थिकायमइयलोयमित्यादि ॥ लोके मात्रो वतत इदंता प्रतिपत मव्युत्तं द्विव्यवितत्या रानायस्येति लोकमात्रो लोकपरिमाणः स च किञ्चिन्न्यूनोपि व्यवहारतः स्या दित्यत आह ॥ लो यप्पमाणत्ति लोकप्रमाणो लोकप्रदेशप्रमाणस्य तत्प्रदेशानां सदा न्योन्यानुवंधेन स्थित इत्येतदेवाह ॥ लोयफुडेत्ति ॥ लोकेन लोकाकाशेन सकलस्व प्रदेशैः स्पृष्टो लोकस्पृष्ट तथा लोकमेव सकलस्वप्रदेशैः स्पृष्टातिष्ठतीति पुद्गलास्तिकायो लोकं स्पृष्ट्वा तिष्ठती त्यनन्तर मुक्त मिति स्पर्शनाधिका

अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे । धम्मत्थिकाएणं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ? गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयचेवफुसित्ता णंचिट्ठइ , एवं अहम्मत्थिकाए लोयाकासे , जीव

त्थिकाए इत्यादि, तथा एव अत्रोच्च दृश्यता टीकाके तेषां अलोकाकाशमें देशतया लोकालोकरूप आकाशद्रव्यनाभाग रूपीछे। अगुरुय लहुय अनंत अगुरुय लहुय गुणहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूण धम्मत्थिकाए अणंते केमहालए पण्णत्ते। गुण सहुपणाको अभावको अगुरुलघुछे अनंत स्वपर्यायरूप अनुक्रमनु अभावे करी सहितछे आकाशाय अलोकाकाशनी अपेक्षायें अनंतभाग रूपछे तेवें सर्वा अलोकाकाशछे तेहथी सर्वाकाशने अनंतमीभागे वर्त ना। हिवे धर्मास्तिकायादिक प्रमाणथी कहेछे—धर्मास्तिकाय हेभगवन्। केतलो एकमोटो कह्यो इतिप्रश्न उत्तर। गोयमा लोय लोयमेत्ते लोयप्पमा णे। हेगौतम। धर्मास्तिकायमध्य तेतलाछे लोकमात्रछे लोकप्रदेश प्रमाणछे। लोकव्यापकथयेव फुसित्ताचिट्ठइ। धर्मास्तिकायनाप्रदेश लोकाकाशे क री सकल स्वप्रदेश सहछे तथा लोकमते समस्त स्वप्रदेशे फर्शी रह्योछे। एवमहम्मत्थिकाए। इम अधर्मास्तिकाय पणि कहवा। लोयागासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंचविएवाभिलावा। इमजावाकाशपणि जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय एपांचिएना एकसरीखा आलावा कहवा, पुद्गलास्तिकाय लोक

रा दधोलोकादीना धर्मास्तिकायादिगतां स्पर्शना दर्शयन्निदमाह ॥ अहेलोएणमित्यादि ॥ सातिरेगमद्धंति ॥ लोकव्यापकत्वा द्धर्मास्तिकायस्य सा तिरेकसप्तरज्जुप्रमाणत्वा दधोलोकस्य ॥ असंखेज्जइभागंति ॥ असंख्यातयोजनप्रमाणस्य धर्मास्तिकायस्या ष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्लोको संख्य तभागवर्तीति तस्य सा असंख्येयभाग स्पृशतीति ॥ देसोणंमद्धंति ॥ देशोनसप्तरज्जुप्रमाणत्वा दूर्ध्वलोकस्येति ॥ इमाण भंते । इत्यादि ॥ इह प्रतिप

त्थिकाए पोग्गलत्थिकाए आगासत्थिकाए । अहोलोएणं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसइ, गोयमा ! सा तिरेगं अद्धं फुसइ । तिरियलोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसइ । उड्ढलोएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसइ । इमाणं भंते ! रयणप्पभाणं पुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइ भाग फुसइ, असंखेज्जइभाग फुसइ, संखेज्जेभाग फुसइ, असंखेज्जेभाग फुसइ, सव्वं फुसइ ? गोयमा ! णो

भते धर्मास्तिकाये एकथी मांडीने बधुं तेमांना विचारथी अधोलोकादिकने धर्मास्तिकायादिकनी स्पर्शना देखाडे छे—अहेलोएणंभंतेधम्मत्थिकायस्सकेवइयं फुसइ । अधोलोक हे भगवन् । धर्मास्तिकायने केटलुं स्पर्शे इतिप्रश्न उत्तर । गोयमा सातिरेगअद्धंफुसइ । हे गौतम । धर्मास्तिकाय लोकव्यापक छे माटे अ धोलोकसाधिक सातराज प्रमाण छे तेमनो साधिक अर्धभाग । तिरियलोएणंभंते पुच्छा । तिर्यग्लोक हे भगवन् । केटलो स्पर्शे इम पूर्वे । गोयमा असं खेज्जइभागफुसइ । हे गौतम । धर्मास्तिकाय असंख्याता योजन प्रमाण छे अने तीर्च्छालोक १८ सो योजनछे तिवारे असंख्यातमे भागे स्पर्शे । उड्ढलोएण भंतेपुच्छा । उर्ध्वलोक हे भगवन् । केटलो स्पर्शे इम पूछा । गोयमादेसूणंअद्धंफुसइ । हे गौतम । देशेउणा सातराजप्रमाण उर्ध्वलोकछे तेमाटे देशउण अ र्धभाग स्पर्शे । इमाणंभंतेरयणप्पभापुढवीधम्मत्थिकायस्सकिंसंखेज्जइभागफुसइ । एम ज आलापकार्थे, रत्नप्रभानामा पृथिवी धर्मास्तिकायनो स्युं संख्य तमो भाग स्पर्शे । असंखेज्जइभागफुसइ संखेज्जेभागेफुसइ । अथवा असंख्यातमोभाग स्पर्शे अथवा संख्यातमाभागनेविषे स्पर्शे अथवा । असंखेज्जेभागेफुसइ । असंख्यातमा भागनेविषे स्पर्शे अथवा । सव्वंफुसइ । सर्व स्पर्शे इतिप्रश्न उत्तर गोयमा णोसंखेज्जइभागफुसइ । हे गौतम । नथी संख्यातमोभाग स्पर्शे ।

मग्गेजाइज्जाग फुसइ , श्रमखेज्जाइज्जाग फुसइ । णोसखेज्जोन्नाग फुसइ , गोश्रसखेज्जोन्नाग फुसइ , नोसव्व फुसइ । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही घम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जाइज्जाग फुसइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए तहा घणोदहिघणवायतणुवायावि । इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरे धम्मत्थिकायस्स कि सखेज्जाइज्जाग फुसइ, असखेज्जाइज्जाग फुसइ पुच्छा ? गोयमा ! सखेज्जाइज्जाग फुसइ णोअसखेज्जाइज्जाग फुसइ नोसखेज्जे नोअसखेज्जे नोसव्व फुसइ । उवासतराइ सव्वाइ जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहे सत्तमाए जम्बूद्दीवाइयादीवा लवणसमुद्दाइया समुद्दा एवं

असंखेज्जभागमफुसइ । असंख्यातमा भागफरसे एकमाएं असंख्यातमा भाग पिण नाटे । नोसंखे नोअसंखे नोसव्वफुसइ । संख्यातमाभागनेविषे असंख्यातमाभागनेविषे स्पर्शनयो सर्व स्पर्शनयो नथीपूछे—इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएघणोदही । एह हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो घणोदधि । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जभागफुसइ । धर्मास्तिकायने स्यूं संख्यातमाभाग फरसे पूछवि । जहारयणप्पभातहाघणोदहि घणवाय तणुवायावि । जिम रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कह्या तिम घणोदधि १ घनवात २ तनुवात ३ एतीन कहवा, एतले प्रत्येके असंख्यातमेभागे फरसे । इमीसेणभंतेरयणप्पभाएपुढवीएउवासंतरे । एह हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर ते । धम्मत्थिकायस्स किंसंखेज्जइभाग फुसइ । धर्मास्तिकायनो स्यूं संख्यातमोभाग फरसे किंवा । असंखेज्जइभागफुसइपुच्छा । असंख्यातमो भाग फरसे इत्यादि पूछ्यू । गोयमा संखेज्जइभाग फुसइ । हे गौतम । संख्यातमे भागे फरसे ए असंख्यात आकाशने नेमाटे । णोअसंखेज्जइभागंफुसइ । असंख्यातमो भाग फरसेनही । णोसंखेज्जे णोअसंखेज्जे णोसव्वफुसइ । संख्यातमोभागनेविषे फरसेनही असंख्यातमाभागनेविषे फरसेनही सर्व फरसेनही । उवासतराईसव्वाइ । आकाशांतर सर्व । जहारयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भाणियव्वा एवंजावअहेसत्तमाए । जिम रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशांतर कह्या, तिम सातेइ नरक पृथिवीना कहवा, एतले संख्यातमोभाग फरसे इत्यर्थं, इम यावत् नीचे सा

पितिपम्पमूत्राणि, देवलोकसूत्राणि द्वादश ग्रैवेयकसूत्राणि त्रीणि, अनुत्तरेषत्प्राग्भारासूत्रे द्वे एवं द्विपञ्चाशत्सूत्राणि धर्मास्तिकायस्य किं सङ्ख्ये भागं स्पृशन्ती स्यादित्यभिलापेना वसेयानि तत्रा वकाशान्तराणि सङ्ख्येयभाग स्पृशन्ति सेषा स्त्वसङ्ख्येयभागमिति निर्वचन एतान्येव सूत्रा स्य धर्मास्तिकायलोकाकाशयोरिति इतो चार्थसङ्ग्रहगाथा भावितार्थैव ॥ इतिद्वितीयशतदशमः ॥ १० ॥ समाप्तद्वितीयशत ॥ २ ॥

सोहम्मेकप्पे जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए तेसव्वेवि असखेज्जइ भाग फुसइ । सेसा पडिसेहेयव्वा । एव अध म्मत्थिकाए एवं लोयागासेवि ॥ गाहा ॥ पुढवोदहीघणतणू कप्पागेवेज्जणुत्तरासिद्धी सखेज्जइभागश्च तरे सुसेसाअसंखेज्जा ॥ बितियस्सदसमो उद्देसोसम्मत्तो ॥ १० ॥ बितियसय सम्मत्त ॥ २ ॥

तमीतरव पृथिवीतांई सर्वजइवा । जम्बूद्वीपादिकद्वीपा । जम्बूद्वीप आदिदेई असख्यातद्वीप । लवणसमुद्रादयासमुद्रा । लवण समुद्र आदिदेई असख्याता समुद्र । एवंमाद्यवेकल्पे । इम सौधम आदिदेई बार देवलोक नव ग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान । आवइमिप्पभारापढवीए । यावत् सिद्ध शिला तांई । तेसव्वेविअसखेज्जइभाग फसइ । ते सगलाई धर्मास्तिकायनो असंख्यातमोभाग फरसेछे । सेसापडिसेहेयव्वा । शेष सख्यातमोभाग आदिदेइ बारभागा प्रतिनिषेध करवा । एवअधम्मत्थिकाए । इम अधर्मास्तिकायनो पणि स्पर्शना कहवी । एवलोयागासेवि । इम लोकाकाशनो पणि जाणवा कहवो । गाहा । संग्रहगाथा कहेछे—पुढवीउदहिघणतणू कप्पगेवेज्जणुत्तरासिद्धो संखेज्जइभागम्मि तरेसुसेसाअसखेज्जा ॥ १ ॥ सात पृथिवी सात घनोदधि सात घनवात सात तनुवात । बार देवलोक नव ग्रैवेयक पंच अनुत्तरविमान सिद्धशिला एसर्वमांहे जे आकाशांतर ते धर्मास्तिकायादिक ना संख्यातमोभाग फरसे गाथा पदसूत्रकहवा, पृथिवी १ घनोदधि २ घनवात ३ तनुवात ४ आकाशांतर ५ तिवारे सातेइ पृथिवीना ३५ सूत्रथया वा रदेवलोकना १२ सूत्र नव ग्रैवेयकना ३ सूत्र पंचअनुत्तरना १ सूत्र ईषत्प्राग्भाराना १ सूत्र इम ५२ सूत्र थया ते धर्मास्तिकायनो संख्यातमोभाग फरसे इत्यादि आलावेकरी कहवा, तिहां आकाशांतर सख्यातमेंभागे फरसे बीजा सव असख्यातमेंभागे फरसे । बितियसयस्सदसमोउद्देसो सम्मत्तो । एम बी जा शतकना दशमो उद्देशो पूर्णथयो ॥ १ ॥ बितियंसयंसमत्त । एबीजो शतक पूर्णथयो ॥ २ ॥